प्रकाशक : गोस्वामी श्याम मनोहर.
६३, स्वस्तिक सोसायटी
४था रस्ता, जुहुस्कीम
विले-पार्ला, मुंबई.४०००५६

प्रकाशनार्थ आर्थिकसहयोग :
गोस्वामी श्रीश्याम मनोहर,६३, स्वस्तिक सोसायटी
४था रस्ता, जुहुस्कीम,विले-पार्ला, मुंबई.४०००५६
श्रीश्याम कीर्ति कटारिया,८,दत्तप्रसाद सोसायटी,हनुमान रोड,
विलेपार्ले,मुबंई-५७
श्रीअतुल महेता,१००५,कालीन्दि नीलकंठ,घाटकोपर,७७
श्रीमती सुधाबेन शायर,नीलकंठ वेली,घाटकोपर,७७

प्रवचनकार : गोस्वामी श्याम मनोहर

प्रथमसंस्करण : शरदोत्सव वि.सं.२०७०

निःशुल्कवितरणार्थ

प्रति : ५००

मुद्रक :
शैलेश प्रिन्ट्र्स्,
१४, चुनावाला इन्डस्ट्रिअल् एस्टेट्,
कोंडिविटा, अंधेरी (पूर्व),
मुंबई : ४०० ०५९.

।। अहंकार मीमांसा ।।

गोस्वामी श्याम मनोहर

पुरोवाक्

'नानाशास्त्रप्रक्षालितमतिवैभव'से आपूरित पूज्य बाबाजी की सारस्वत साधना में निगमागमिक शास्त्र परम्पराओं का आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक स्वारस्य अभिधा, लक्षणा और व्यंजना की तरह प्रकट होता है. बाबाजी के लेखन एवं प्रवचनों का समानरूप से साधक, विद्वान और जनसाधारण के लिए उपकारी होने का रहस्य यही त्रि-आयामी निर्वचन है.

यद्यपि साधारण व्यक्तियों की व्यवहारानुरक्त चेतना में शास्त्रों के निहितार्थ को संक्रान्त कर पाना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य होता है, परन्तु यह बाबाजी का सामर्थ्य-वैशिष्टच ही है कि वे शास्त्रों के गूढ़ार्थ को अक्षत रखते हुए आम आदमी को भी उसके विधि-निषेधरूप तात्पर्य की अवगति करा देतें हैं. बाबाजी के ऐसे प्रवचनों के भाजक अधिकांशत: पुष्टिमार्गीय ही हुआ करतें हैं, परन्तु उनका प्रवचन साम्प्रदायिक सीमाओं को पार करता हुआ एक आधुनिक मनुष्य को आधुनिक-भाषा और वैज्ञानिक पदावली में संबोधित करता हुआ प्रतीत होता है.

लगभग दो वर्ष पूर्व बाबाजी ने श्रीरूपचन्द्र खण्डेलवाल 'भूप' की स्मृति में अपने जबलपुर प्रवचन के द्वारा भारतीय वाङ्मय में पुरुषार्थ-व्यवस्था के स्वरूप एवं उसकी समसामायिक उपादेयता को प्रविचित किया था. वह प्रवचन जब पुस्तकाकार रूप में लिपिबद्ध हुआ तो संभवत: पहली बार पुरुषार्थविषयक वैदिक चिंतन का मर्म 'स्वस्तिकोचित पुरुषार्थ संतुलनवाद' के रूप में प्रकट हुआ.

प्रस्तुत 'अहंकार मीमांसा' भी बाबाजी के अष्ट दिवसीय प्रवचन का ही लिपिबद्ध संपादित रूप है. इस प्रवचन के माध्यम से अहंकार ही आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक मीमांसा करते हुए उसकी फलश्रुति 'अहंकारप्रबन्धन' के रूप में प्रकट की गई है. माना कि अहंकार एक जैव धर्म की तरह है लेकिन मानवीय स्तर पर

अहंकार का रूपान्तरण अथवा अतिक्रमण उतना ही मानवोचित धर्म है. अत: अहंकार की अमिशा और उसके प्रबन्धन के बिना मनुष्य के जीवन को आत्मचेतन और प्रामाणिक जीवन कहा ही नहीं जा सकता. वास्तव में यह स्वयं के प्रति और स्वयं के समस्त व्यवहारों के प्रति निर्णिमेष आत्मचेतन होने की एक मानवोचित मांग है.

इसे आधुनिक जीवनशैली की पदावली में सॅल्फ्-अकाउन्टिन्ग्, सॅल्फ्-एडिटिन्ग् और सॅल्फ्-ऑडिटिन्ग् की प्रक्रिया में भी समझा जा सकता है. हम जीवन में आहंकारिक भौतिक उपलब्धियों की अकाउन्टिन्ग्, एडिटिन्ग् और ऑडिटिन्ग् न्यूनाधिकरूप से अवश्य करतें हैं लेकिन आत्मचेतन प्राणी होते हुए भी अहंकार की गणना, संपादन और अंकेक्षण नहीं करतें हैं. बाबाजी का यह प्रवचन न केवल हमे इसके लिये तैयार करता है बल्कि तकनिक भी प्रदान करता है.

अहंकार का पारमार्थिक उत्स चाहे जैसा भी क्यों न माना जाये, परन्तु व्यावहारिक धरातल पर उसका अस्तित्व चैतसिक और भक्तित्व अन्य परिहारक नितांत वैयक्तिक होता है. इस कारण अहंकार का प्रबन्धन उतना आसान नहीं जितना की समझा जाता है. यह जैव धर्म के रूप में व्यक्ति के समस्त व्यवहारों में संभवित होता है. इस की विशिष्टता ही ऐसी है की अहंकार अपने प्रत्येक प्राकट्यमें उत्तरोत्तर अपने को छिपाता ही जाता है. मानों आत्मगोपन में ही इस का उत्तरोत्तर पुनरोत्पाद होता है. यह जब हमारे कर्मो के द्वारा क्रियान्वित होता है अतिक्रमण अथवा रूपान्तरण की दु:साध्यता का ही सामना किया है. अहंकार एपिफिनोमिना जैसी कोई चीज हो और हमारी कॅमेस्ट्री से उसका कोई अन्त:सम्बन्ध हो. परन्तु इसके साथ उन्होंने अहंकारकी गहरी छानबीन करतें हुए उसका पुंखानुपुंख विवेचन भी किया है ताकि उसके प्रबन्ध में दक्षता हासिल की जा सके. अन्यथा यह संभव है कि हम अहंकार का प्रबन्ध करने के बजाय अहंकार से ही प्रबन्धित होते रह जायेंगे. अहंकार का

प्रबन्धन एक बहुस्तरीय क्रिया है और हर एक स्तर पर उसके लिए अपलक जागरुकता अपेक्षित है. इसका प्रथम सोपान है उसके प्रति आत्मचेतन होना. अहंकारकी आत्मचेतना कोई चित्त की पराङ्मुख वृत्ति नहीं बल्कि प्रत्यङ्मुख गति है. चेतना की प्रत्यङ्मुखता में ही अहंकार की स्वरूपावगति संभव है. बाबाजी ने 'को-अहम्'? 'कुत्र-अहम्'? और 'कुतो-अहम्'? नामक त्रिविध पहलुओ के माध्यम से अहंकार की प्रत्यङ्मुखी आत्मचेतना का सुंदर विवेचन किया है.

इसका दूसरा सोपान है उसके स्वरूप अर्थात् विविध प्रकारों की पहचान और विश्लेषण. बाबाजी के इस प्रवचनमें इस पक्ष की विशद विवेचना की गई है. अहंकार के जितने रूप-कलापों की मीमांसा बाबाजी ने की है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है. आश्चर्य की बात तो यह है की भारतीय दर्शन परंपराओं में अहंकार की मीमांसा अधिकांशतः तत्त्वमीमांसीय दृष्टि से की गई है, परन्तु बाबाजी ने इसके मनोवैज्ञानिक एवं जीववैज्ञानिक पहलुओं की चर्चा भी अहंकार विषयक तात्त्विक दृष्टि के तारतम्य में ही की है. साथ ही साथ सॅमेटिक् धार्मिक परंपराओं में अहंकार के स्वरूप की विवेचना उन्होने मूलपाप की अवधारणा के संदर्भ में किया हैं और यह दिखाया है की उनका अहंकार रूपान्तरण का हेतु नहीं बन सकता बल्कि उसे अभिशप्त बने रहने का हेतु कहना अधिक उचित होगा.

अहंकार प्रबन्धका तीसरा सोपान है उसकी कार्यप्रणाली को समझना. तो इसके ताने-बाने इतने जटिल होते है कि संभवतः इसी कारण कबीर को भी "माया महाठगिनी हम जानी" कहना पड़ा होगा. बाबाजी भी अहंकार के प्रबन्धन की इस दुःसाध्यता को भली-भांति समझतें हैं. इसी लिये उन्होंने अपने प्रवचन के प्रारंभ में ही इस दुःसाध्यता की मनोवैज्ञानिक स्थिति का निरूपण महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य के एक वचन को उदाहरित करतें हुए सुंदर तरीके से किया है. महाप्रभु का वचन है "**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना,**

अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्" अर्थात् श्रीकृष्ण की भक्ति-साधना में अहंकार के लिये कोई अवकाश नहीं, क्योंकि यह सारा संसार ही कृष्णमय है (सर्वं कृष्णमयं जगत्). कर्ता, कर्म, करण इत्यादि सातों विभक्तियों और आठों कारकों में कृष्ण ही अभिव्यक्त पातें है.

फिर भी अहंकार की चौर्य वृत्ति में यह सम्भव है कि कोई व्यक्ति कृष्णभक्ति के नाम पर कृष्णभक्ति की साधना का अहंकार अन्दर ही अन्दर पाले रखा हो और परिणाम स्वरूप कृष्णभक्ति में दृढ़ता नहीं बल्कि कृष्ण-भक्ति-साधना के अहंकार को ही दृढ़ से दृढ़तर करता जा रहा हो. सचमुच यह अहंमूलक आत्मछलना और आत्मप्रवंचना का कितना गहन रूप है. प्रायः ही ऐसा कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति श्रीकृष्ण का बहुत बड़ा भक्त है. परन्तु इस कथन में इस बात का नीर-क्षीर विवेक कठिन होता है कि उसका बड़प्पन कृष्णभक्ति में है अथवा कृष्ण-भक्ति-साधना के अहंकार में उसका बड़प्पन सिद्ध है. वास्तवमें कब हम अपनी उदारता के आवरण अपने अहंकार को पुष्ट कर रहे होते हैं और कब परार्थ के आवरण में स्वार्थ का पोषण कर रहे होते हैं, यह जानना साधारण जनों के लिये क्या, बड़े-बड़े प्राज्ञ व्यक्तियों के लिये भी दुःसाध्य होता है.

वस्तुतः बाबाजी ने इस पूरे प्रवचन में अहंकार के इस प्रसंग में अहंकार के अनुप्रयुक्त रूपों का जिस तरहसे विश्लेषण किया है उससे मनुष्य के कर्तृत्व मनोविज्ञान के ऐसे पहलु उजागर हुए हैं जिनकी ओर सहसा ध्यान ही नहीं जाता है. इस प्रसंगमें अहंकार और फॉइड् के लिबिडो का तुलनात्मक विवेचन अभिनव दृष्टि प्रदान करनेवाली विवेचना है.

अहंकार-प्रबंध का चौथा सोपान उसका रूपान्तरण अथवा अतिक्रमण

है. वास्तव में देखा जाय तो अहंकार का अतिक्रमण उसका ज्ञानमार्गीय प्रबन्धन है परन्तु इस मार्ग में प्रबन्धन का कोई विशेष औचित्य नहीं दिखता. इसमें अहंकार का निरास ही लक्ष्यभूत होता है. इस रूप में निरास्य अहंकार भ्रमात्मक ही हो सकता है, परन्तु अहंकार को भ्रममात्र मानना निवृत्तिमूलक जीवन दृष्टि के लिये भले ही उचित लगे, प्रवृत्तिमूलक जीवन दृष्टि के लिये उसे कदापि अच्छा नहीं माना जा सकता. अवधेय हो कि वैदिक जीवन-दृष्टि में प्रवृत्तिमूलकता का ही प्राधान्य रहा है. इसलिए बाबाजी ने उचित ही अहंकार-प्रबन्धन का स्वारस्य उसके रूपान्तरण में देखा है. अहंकार स्वरूपतः कोई निषिद्ध अथवा हेय वस्तु नहीं. उसकी दोषरूपता उपादानगत नहीं बल्कि अहंकर्ता के चलेत है. अतः अहंकार-प्रबन्ध का विषय अहंकर्ता है और उसकी फलश्रुति अहंकार के रूपान्तरण में है.

इस रूपान्तरण की साधना में ज्ञान, कर्म और भक्ति की अपनी-अपनी उपयोगिता है, परन्तु इन तीनों में भक्तिमार्ग ही सर्वजन सुलभ और सहज है. वस्तुतः दोषरूप अहंकार का मूल अहंकर्ता है और वह कर्म, करण इत्यादि विभक्तियों द्वारा स्व से पर तक संक्रमित होता है.

भक्तिमार्ग का वैशिष्ट यह है कि वह दोषरूप अहंकार के मूल का ही क्षय कर देता है और तब अहंकार का सारा प्रसार सर्वसर्वात्मक कृष्ण के प्रसार में रूपान्तरित हो जाता है. पुष्टिमार्गीय अहंकार-प्रबन्ध और उसकी देखभाल का यही मूलभूत सूत्र और माहात्म्य है.

दीपावली, २३।१०।२०१४
सागर,मध्य-प्रदेश.

अम्बिकादत्त शर्मा

कृतज्ञताज्ञापन

इस ग्रन्थके प्रकाशनमें प्रवचनको सीडीसे लिपिबद्ध करनेमें सहयोग प्रदान करनेवाले, कम्प्युटर् संबंधित सहयोग एवं मुद्रणोपयोगी उत्तरदायित्व सम्हालनेवाले श्रीधर्मेन्द्र-श्रीमती पद्मिनी झाला, श्रीपरेश-श्रीमती मनीषा शाह, श्रीअनिल भाटिया, श्रीअतुल्य शर्मा, श्री जगदीश शेठ, श्रीकेतन गांधी, श्रीमती ख्याति भुला, श्रीमनीष बाराई के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूं. पुरोवाक् लेखक श्रीअम्बिकादत्त शर्माजीका भी हम आभार व्यक्त करतें है. तदुपरांत प्रकाशनार्थ आर्थिक सहयोग प्रदान करानेवाले श्रीश्याम कटारिया, श्रीअतुल महेता, श्रीमती सुधाबेन शायर के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूं.

गोस्वामी श्याम मनोहर

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्टक्रम
प्रथमदिवसीय उपक्रम...	१
एक अहंकारके रूप अनेक...	७
मूलकारिका...	८
पुष्टिमार्गीय भक्ति या प्रपत्ति दोनोंमें श्रीकृष्ण ही साधन, साध्य और सिद्धि भी!...	९
श्रीकृष्णके सामने अहंकार न करवेको मनोवैज्ञानिक भाव...	१०
अहंकारकी अनेकविध जड़ें और उनकी गहराई...	१३
अहंकारकी भक्तिमार्गीय देखभाल...	१४
निजानुभूतिमें 'अहम्' सर्वदा एकवचन...	१७
मत पूछ के क्या हाल हे मेरा तेरे आगे, तू देख के क्या रंग हे तेरा मेरे आगे...	१८
'पुष्टि-अस्मिता'गान क्या अहंकारगीति हे!...	१९
प्रश्नोत्तरी...	२४
अहंकारको स्वरूप क्या?...	२८
क्या अहंकार कोई क्रिया हे?...	३०
क्या अहंकार एक भान हे?...	३७
क्या अहंकार अपने भीतर स्रवित होनेवालो कोई बायोकॅमिकल् तत्त्व हे?...	३९
क्या अहंकार कोई एपिफिनोमिना अर्थात् मिथ्याभास हे?...	४०
मिथ्याभासरूप अहंकार रुआब हे अथवा आबरु?...	४२
क्या अहंकार अपने भीतर निगूढ़ कोई पारमार्थिक तत्त्व हे?...	५२
क्या अहंकार अपनी चेतनाके साथ संयोजित कोई उपकरण हे?...	५४
अहंकार क्या नहीं हे!...	५६
हकीकतकी कहानी और कहानीकी हकीकत...	५६
अस्तित्वके तीन प्रकार...	५९
रूप देशकालवर्ती सत्, नाम देशवर्ती कालातीत सत् और मूलतत्त्व देशकालातीत सत्...	६२
प्रश्नोत्तरी...	६६
अहंकारके विभिन्न रूप...	८२
उपादानरूप अहंकार...	८५
उपादेयरूप अहंकार...	८८
उपादान-उपादेयके संबंधको विचार...	८९
वैज्ञानिक नज़रीया...	९३
औपनिषदिक नज़रीया...	९६
सॅमेटिक् और अपने नज़रीयाकी तरतमता...	९८
अहंकारकी अद्भुत सामर्थ्य...	१००
ब्राह्मिक अहंकार...	११२
पारमात्मिक अहंकार...	११८
भागवत अहंकार...	१२४
द्वापरकालीन लीलामें श्रीकृष्णस्वरूपको अहंकार...	१२९
अपने घरमें बिराजते श्रीकृष्णके स्वरूपको अहंकार...	१३३
प्रश्नोत्तरी...	१३५
कृष्णकृपाको 'स्पंदन' और भक्तिको 'अनुस्पंदन'...	१४२
क्या ब्रह्म परमात्मा आदिको विश्लेषण निरर्थक?...	१४४
श्रौत और वैज्ञानिक तत्त्वधारणाकी समानता...	१४७
अहंकारको द्वेधीभाव...	१५५
ब्राह्मिक अहंक्रियाको स्वरूप...	१५९
पारमात्मिक अहंक्रियाको स्वरूप...	१६१
भागवती अहंक्रियाको स्वरूप...	१६३
दोषादिको निवारण पंचपर्वाविद्यासु...	१७३
काष्णीं अहंक्रियाको स्वरूप...	१८७

गृहठाकुरकी अहंक्रियाको स्वरूप... १८९
तिरोभावकी प्रक्रिया... १९२
चेतनाको प्रथम आयाम अहंता-ममता और अहंताको रोल्... १९४
चेतनाको स्वरूप... १९७
चेतना अहं विषय को पारस्परिक प्रभाव... १९९
ममताकी प्रक्रिया और ममताको ब्राह्मिकरूप... २०३
चेतनाको दूसरो आयाम काम-क्रोध... २०५
काम-क्रोधको सदुपयोग एवं दुरुपयोग... २०८
अहंता-ममताकुं 'स्वस्थ' करवेके उपाय... २१०
शुद्ध उपादान मानें सच्चिदानन्द ब्रह्मकी विवेचना... २३३
'तम्'की अपनी तात्त्विक दृष्टि... २३८
कृष्ण गृहठाकुर और अपने अहं कुं मॉल्ड् करवेकी प्रक्रिया... २४६
स्वस्थ अहंकारके लिये रोल्-मॉडेल्को महत्व... २४८
चित्तको स्वरूप... २५२
चित्तको आधिदैविकरूप... २५६
उपादेय सृष्टिके तीन पहेलु—आधिभौतिक आध्यात्मिक
आधिदैविक... २५७
अहंकारको लक्षण... २६३
अहंकाररूप कार्यमें कालकी भूमिका... २६४
अहंकाररूप कार्यमें भगवद्वीर्यरूप शक्तिकी कारणता... २६६
भौतिक पदार्थकी चेतनरूपता और चेतनकी भौतिकरूपता... २६६
नाइट्रोजनचक्रमें आत्माको प्राकट्य... २६७
सर्वभवनसामर्थ्यरूपा एकमात्र भगवत्शक्ति ही नियत... २६९
अहंकारको आध्यात्मिक लक्षण... २७०
अहंकारको आधिदैविक लक्षण... २७१
द्वैतवादीकी समस्या... २७२
महाप्रभुजीकी ब्रह्मवादी दृष्टि... २७३
अहंकारको स्वाभाविक रूप... २७५

अहंकारको आधिभौतिक लक्षण... २७६
'कर्तृत्व' आधिभौतिक अहंकारको सात्त्विक लक्षण... २७६
क्या कर्तुत्व या कर्ता, क्रियाको समाहार हे?... २७७
अहंकारके तीन पहलू... २८६
को अहम्... २८७
कुत्र अहम्... २८८
कुतो अहम्... २९८
'को अहम्'को मॅनेजमॅन्ट्... २९९
'कुतो अहम्'को मॅनेजमॅन्ट्... ३०१
'कुतोहम्'को अस्वास्थ्य : 'शेम् टू यु'... ३०२
महाप्रभुजीको अहंकारको सायकॉलॉजिकल् सिद्धान्त... ३०४
मॉडर्न साइकॉलॉजिस्ट् फ्रॉइड्की दृष्टिसु अहंकारको स्वरूप... ३०७
'ईड्' : शारीरिक अहंता... ३०८
सुपर्-ईगो : परम अहंता... ३१०
'ईगो' : अहंता... ३११
फ्रॉइड्की दृष्टिसु चेतनाको स्वरूप... ३१६
अन्-कॉन्शिअस्को रोल्... ३१९
फ्रॉइड्के और महाप्रभुजीके 'अहंकार'के स्वरूपमें तरतमता... ३२०
अहंकी लीला... ३२४
अहंक्रिया... ३२४
स्वभाव और प्रभाव सु अहंक्रिया... ३२६
अहंकर्म... ३२८
अहंव्यवहार... ३३०
पुष्टिअस्मिताको क्लाइमॅक्स् क्या?... ३३२
अहंके स्तर... ३३५
जीवोहं = तत्त्वात्मक अहं... ३३५
तदीयोहं = आत्मरत्यात्मक अहं... ३३६
त्वद्दासोहं = भजनात्मक अहं या समर्पणात्मक अहं... ३३७

त्वत्सेवकोहं = विनियोगात्मक अहं... ३३८
रूपरेखाके आधारपे अहंकारकी दोषरूपता या निर्दोषता... ३४१
अहंता-ममताके स्वस्थ रखवेको प्रोग्राम् : विवेकधैर्याश्रय... ३४२
'अहंता-ममता' स्वस्थ रखवेको महाप्रभुजीको प्रोग्राम् गीतासु... ३४२
ज्ञान ज्ञेय परिज्ञान सु 'कर्मविधि' और करण कर्म कर्ता सु 'कर्मसंग्रह'... ३४७
तामसकर्ताके लक्षण... ३४९
सात्त्विककर्ताके लक्षण... ३५०
कर्ताके अहंमान अहंकार अहंवाद के कारण प्रकट होती अहंकी सत्क्रिया या विक्रिया... ३५२
स्वस्थ अहंकार या ममकार के लिये विवेककी महत्ता... ३५५
चेतनाके चरणरूप या करणरूप अहंता-ममता... ३५७
अहंविक्रियाको सायकॉलॉजिकल् एप्लाइड् फॉर्म... ३५८
अहंविक्रिया और वाके लक्षण उदाहरण उपाय... ३५९
[१] डिनायल् ऑफ् रियालिटीको लक्षण... ३५९
पुष्टिमार्गीय रियालिटी... ४६०
डिनायल् ऑफ् रियालिटीको उदाहरण और वाको दुष्परिणाम... ३६१
रियालिटी स्वीकारवेको महाप्रभुजीको स्वस्थ अहम्... ३६४
डिनायल् ऑफ् रियालिटीको उपाय... ३६५
[२] फॅन्टसीको लक्षण... ३६७
फॅन्टसीको उदाहरण... ३६८
फॅन्टसीको उपाय... ३६९
फॅन्टसीको उदाहरण... ३७०
फॅन्टसीको उपाय... ३७२
[३] रिप्रेशन्को लक्षण... ३७२
रिप्रेशन्को कारण... ३७३
रिप्रेशन्को उदाहरण... ३७५

रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी और उदाहरण... ३७६
रिप्रेशन्को उपाय... ३७६
[४] रॅशनलाइज़ेशन्को लक्षण... ३७८
रॅशनलाइज़ेशन्को उदाहरण... ३७९
रॅशनलाइज़ेशन्को उपाय... ३८०
[५] प्रोजेक्शन्को लक्षण... ३८०
प्रोजेक्शन्को उदाहरण... ३८०
प्रोजेक्शन्को उपाय... ३८२
डिस्टॉर्टिड् प्रोजेक्शन्को दुष्परिणाम... ३८३
[६] रिएक्शन् फॉर्मेशन्को लक्षण... ३८७
रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उदाहरण... ३८८
रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उपाय... ३९०
रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उदाहरण... ३९१
[७] डिस्प्लेसमॅन्ट्को लक्षण... ३९२
डिस्प्लेसमॅन्ट्को उदाहरण... ३९३
डिस्प्लेसमॅन्ट्को उपाय... ३९५
[८] अनुडुइंग्को उदाहरण... ३९६
अनुडुइंग्के लक्षण... ३९७
अनुडुइंग्को उपाय... ३९८
अनुडुइंग्को उदाहरण... ३९८
अनुडुइंग्को उपाय... ३९८
[९] आइडेन्टिफि केशन्को लक्षण... ३९९
आइडेन्टिफिकेशन्को उदाहरण... ३९९
आइडेन्टिफिकेशन्को उपाय... ४००
[१०] इन्ट्रोजेक्शन्को लक्षण... ४००
इन्ट्रोजेक्शन्को उदाहरण... ४०१
इन्ट्रोजेक्शन्के उपाय... ४०२
[११] कॉम्पेन्सेशन्को लक्षण... ४०२

कॉम्पेन्सेशन्को उदाहरण... ४०२
[१२] एक्टिंग्-आउट्के लक्षण... ४०३
एक्टिंग्-आउट्को उदाहरण... ४०४
महाप्रभुजीके द्वारा उपदिष्ट 'अहंकार'कुं स्वस्थ रखवेके उपाय... ४०५
परिशिष्ट... ४१०-४४७
पुष्टि-अस्मिता... ४१०
पुष्टि-अस्मिताको प्रतिवर्षीय लेखाजोखा... ४१२
गीत-गोविंदकी भूमिका... ४४३
उद्धृतवचनानुक्रमणिका... ४४८

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

॥ अहंकारमीमांसा ॥

(सर्वनिर्णयसाधनप्रकरणप्रवचन)

(प्रथमदिवसीय उपक्रम)

हर बखतको अपनो एक नियम हे के अपन् पुष्टि-अस्मिताको जो ऐतिहासिक और तात्कालिक संदर्भ चल रह्यो हे वाकी भी पहेले दिन थोड़ी ऑडिटिंग् (मीमांसा) करें हें, वाके बाद अपन् ग्रंथपे स्वीच्-ओवर् होवें हें. थोड़ी वो चर्चा करके ही अपन् आगे बढ़ें हें. या बखतको अपनो विषय अहंकार हे. गये बखत भी मैंने प्रश्न कियो हतो के अपनी पुष्टि-अस्मिताके गानमें जो अपन् अहंकार प्रकट करें हें वो निन्दनीय अथवा अभिनन्दनीय कैसे प्रकारको अहंकार हे? कई लोग कहें हें के यामें अपन् अपनो निन्दनीय अहंकार ही प्रकट कर रहे हें. ये गीत गावेमें मैंने भी ये ही बात कही हती के यामें प्रकट होती अपनी अहंता वस्तुतः अहंता नहीं परन्तु वयंता हे. याको मतलब ऐसे समझ सको हो के "अमे एवा रे!" हे, नकि "हुं एवो रे!" हे. यासु ये तो अपनी वयंता हे. "हुं एवो रे!" कहुं तो अहंता होवे "अमे एवा रे!" कहुं तो वयंता भई. पर अहंकारको स्वरूप बहोत गजबको हे!

एक सामान्य बात बताउं के कोई आक्षेप करे के तुम बहोत अहंकारी हो, तो ना पाड़ें तो भी फंसे; और हां पाड़ें तो भी फंस ही गये! अपन् ना पाड़ें के अपन् अहंकारी नहीं हें तो कितनो बड़ो अहंकार भयो! ये अपनो कितनो बड़ो अहंकार हे के अपन् ना पाड़ रहें हें के हम अहंकारी नहीं हे. हां पाड़ें तो सब लोग कहे के तुम बड़े नफ्फट (निर्लज्ज) हो! एक तो अहंकारी ऊपरसु

वाकुं केह और रहे हो. शरम नहीं आवे! तो अहंकारको विषय इतनो कॉम्प्लिकेटेड् हे. आपसी गाली-गलोचमें ही नहीं, ये तो गाली-गलोचकी बात मैंने कही; पर अपन् खुद अपनेसु अहंकारके बारेमें मुखातिब होवें, तो भी ऐसे ही लफड़ा मिलें. अपन् सोच रहें होंय के अपनी अहंता नहीं हे वयंता हे, तो भी क्या ये संभव नहीं हो सके के अपनी वयंतामें भी पाछी अहंता छूपी भयी होय! ना कैसे पाड्यो जा सके? ना पाड़ें तो फंसे—हां पाड़ें तो फंसे! तो छुटका ही नहीं क्योंके अहंकारको जो विषय हे वो अपने-आपमें हर पहेलुमें एक तरेहको इतनो अजब विषय हे के वाको कोई ओर-छोर नहीं हे.

सचमुचमें यदि अहंकारको कोई काव्यात्मक वर्णन अपनेकुं करनो होय तो ऐसो अहंकारको काव्यात्मक वर्णन; यद्यपि कविने अहंकारके लिये नहीं कह्यो, कोई और बातके लिये कह्यो हे. फिरभी अपने अहंकारपे लागू हो सके हे. वो शायर यों कहे हे :

"कुछ हक़ीकत हे कुछ कहानी हे.
कितनी पेचीदा ज़िंदगानी हे.
तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश.
ए दिले-नादां ये बदगुमांनी हे.
राज़े-दिल हमदमसे पूछने जो चला.
मैंने क्या खुदकुशी की ठानी हे!"

"कुछ हकीकत है" मानें अपने जीवनमें अहंकारसु भी जुड़ी कुछ बातें सत्य होवें हें. साथ ही साथ कुछ घड़ी भयी कहानी जैसी बातें भी होवें ही हें. ज़िंदगानी जैसी सचमुचमें अहंता भी पेचीदा होवे हे! या बातकुं सोचें तो न तो जीवन शुद्ध हकीकत होवे हे और न शुद्ध कहानी ही. हकीकत होय तो अपन् जांच-पड़ताल

कर सकें. कहानी होय तो भी अपन् जांच-पड़ताल कर सकें. आश्वस्त रेह सकें के कहानी हे. कवि जीवनके बारेमें केह रह्यो हे के यामें कुछ हकीकत हे और कुछ कहानी हे, यासु ज़िंदगानी कितनी पेचीदा बन जावे हे. ये अहंकार भी अपनो सचमुचमें ऐसो ही हे.

अहंकारमें भी बहोत सारी हकीकत होवें हें और बहोत सारी कहानी भी होवें हें. यासु अहंकार भी सचमुचमें पेचीदा होवे हे. 'पेचीदा'कुं गुजरातीमें 'वळवाळो' मानें बहोत पेच जामें होंय. जो सिम्पल् नहीं पर बहोत कॉम्प्लिकेटेड़ होय. तो अहंकारको ये बड़ो अजब स्वरूप हे. शायर वाके बारेमें आगे भी कुछ कहे हे. वो बहोत सारी बाते अहंकारपे भी लागू होवें ऐसी ही बातें हें.

"तू जो रखता है हरजाईसे वफाकी ख्वाईश.
ए दिले-नादां ये बदगुमांनी है."

'हरजाई' मानें जो हर कोई जगे जातो रहे—कोई एक जगे कायम न रहे. अपने अहंकारसु ज्यादा हरजाई दुनियामें दूसरो कोई हो नहीं सके. अहंकार सबसु बड़ो हरजाई हे. 'वफा' मानें जो अपनेकुं कभी दगा नहीं दे-दे. हरजाईसु तोकुं जो वफादारीकी इच्छा हे. 'ए दिले-नादां' मानें खुद दिलकुं कवि केह रह्यो के ये तेरी बदगुमांनी हे. लग रह्यो हे के तू खुद अहंकारके वशमें आ गयो हे. अहंकारने तोकुं कॅप्चर् कर लियो हे. तेनें बैठे-बिठाये दिलमें एक ऐसो अहंकार घड़ लियो हे के तोकुं कोई दगा नहीं देगो. कोई हरजाईसु वफा के कामना रखे पर हरजाई वफा कर कैसे सके? ये बात अहंकारपे एकदम ऐसे ही लागू होवे हे के अहंकारसु कुछ अपन् दिलमें वफादारीकी अपेक्षा रखते होंय तो ए दिले-नादां ये बदगुमांनी हे. तो पाछो ये अहंकार ही बोल रह्यो हे. कोईको

भी अहंकार वफादार कैसे हो सकेगो! वाके बाद भी बहोत अच्छो एक शेर हे.

"राज़े-दिल हमदमसे पूछने जो चला.
मैंने क्या खुदकुशीकी ठानी है!"

'राज़े-दिल' मानें हृदयको भाव या रहस्य. जो मेरो अभिन्न मित्र होय, एक प्राण दो देह वाकुं भी यदि हृदयको भाव या रहस्य पूछवेको साहस करें तो वो अपनी बात आत्महत्या करवेके जैसी दुर्घटना बन जावे! 'खुदकुशी' मानें सुसाइड़. मानें दिलको रहस्य कभी स्वयं अपन् अपने ही दिलकुं भी बता दें तो वो एज़् गुड़ एज़् खुदकुशी हे. ये बात भी अहंकार पे लागू हो जावे. अब बोलो के वस्तुतः अपनो जीवन पेचीदा अर्थात् जटिल हे के नहीं? ये अपनो अहंकार भी वस्तुतः इतनो ही जटिल हे. या रहस्यकुं कभी भूलनो नहीं चहिये.

ये तो मैंने शेरो-शायरी आपकुं सुनायी पर एक बड़ी मज़ेदार बात और आपकुं सुनाउं : आपकुं आश्चर्य होयगो के अहंकार कैसे-कैसे काम करे हे! वाके बाद अपन् पुष्टि-अस्मिताको एकाउन्ट् ऑडिट् करेंगे. पेहले अपने अहंकारको तो थोड़ोसो परिचय पा लें!

अपने बचपनकी एक मज़ेदार बात आपकुं बताउं. बचपनमें हमारे घरमें एक नियम हतो के मुंडन संस्कारके बाद यज्ञोपवीत संस्कार तक बच्चान्के माथेके बाल काटे नहीं जाते. यासु हम लोगन्के बाल कटते नहीं थे. मैं समझुं हुं पांच-छे बरस तक तो लगभग ये हाल हतो. रोज सांझकुं भृंगराज तेल माथेके बालन्में डाल्यो जातो. और फिर तीन लटवाली चोटी गूंथी जाती. आजकल तो फॅशन्में नहीं रही. बुढ़ी ओरतें करें हें. तीन लट लेके ऐसी गूंथी जाय

और वो इतनी कड़क गूंथी जाती के बचपनसु मोकुं वा प्रक्रियासु बहोत नफरत हती. मैं बचपनसु ही सोचतो रेहतो के मैं भी एक दिन बड़ो होउंगो वा दिन तेल डालनो बंध कर दूंगो और चोटी नहीं गुंथवाउंगो.

जब थोड़ो बड़ो भयो मानें दस-बारह सालकी बात होयगी तब तो बाल कटवेकी फॅशन् आ गयी थी. अब तो बाल कटवाने पड़ते थे. ये एक दूसरी तकलीफ शुरु हो गयी! मोकुं तकलीफ क्या हती के जब बाल कटवाने जावे तो नाई कानके ऊपर, मोटरके टायरके ऊपर वो मड्गाई जैसो शेप् बालनको बना देतो उस्त्रासु. वो बहोत खराब लगतो. फिर मैंने सोची के एक तो चोटी बनती थी वासु छूटे तो ये कानके ऊपर मड्गाईके चक्करमें और फंस गये! कानके ऊपर उस्त्रा फिरवेकी फिलींग् बचपनमें अच्छी नहीं लगती थी. अब तो खैर अभ्यास हो गयो. फिर मैं ऐसी भावना करवे लग्यो के कभी तो अपन् भी इतने बड़े हो जायेंगे के अपन् ये भी नहीं करवायेंगे. लिहाज़ा ऐसो भयो के जनोई जब मेरी भई वाके बाद फिर शादी न होवे तब तक बाल कटवेकी मनाई हो गयी! सो तब मैंने धोनीके जैसे बड़े-बड़े बाल रखने शुरु कर दिये. कई मेरे दोस्त ऐसे हते के उनकुं मेरे बड़े बाल बहोत पसंद आते थे. वे कहते के "तुम्हारे बाल कितने रेशम जैसे हें!" और मूंछ तो उगती नहीं हती पर उन बालनपे मोकुं भारी अहंकार हतो. ये धोनीने भी अब तो कटवा लिये, मूरख हे! मेरे तो बाल भी शादीके बखत जबरदस्ती काटे गये. शादीके बखत दादाजीको ऑर्डर् भयो के पाग बंधवानी पड़ेगी यासु बाल कटवाने पड़ेंगे. फिर मेरे झगड़ा हो गयो. मैंने कही इतने प्यारसु कंधा तकके बड़े-बड़े बाल रखे. ये अचानक शादीकी आपत्ति कैसी आ गई! मैंने दादाजीकुं कही के पाग बंधवानेके लिये मुंडन क्यों नहीं करवा दो हो? तो दादाजी और गुस्सा हो गये के ऐसी बात करे हे शादीके बखत.

और कुछ चली नहीं पर बाल तो कटवाने ही पड़े.

खैर, हमारी सगाईके फोटोमें मेरे बाल ऐसे ही थे. और एक बड़ी मज़ेदार बात आपकुं बताउं के एक दिन मैं बैठ्यो भयो हतो और हमारी बड़ी बेटी ढब्बुने अचानक लक्ष्मीसु पूछ्यो "भाभी! ये काका आपकुं पसंद कैसे आये?" वाने सगाईकी फोटो देखके इतनी नाक-भोंह सीकोड़ी. लक्ष्मीको जवाब बड़ो इन्टेलिजेन्ट् हतो : "चल मूरख! हमने कोई पसंद करके शादी थोड़ी करी! तुम्हारे जैसे हम नहीं हते के लड़का देखके पसंद करके शादीकी हां पाड़ें. हमारे दादाजीने कही करो तो कर ली!"

मैंने कही के अच्छी बात करी! राज़े-दिल हमदमको पूछने जाऊं मैंने क्या खुदकुशीकी ठानी हे. यदि कभी राज़ेदिल लक्ष्मी मोकुं केह देती के मैं वाकुं पसंद नहीं हतो फिर भी वाने अपने दादाजीके केहवेसु मेरे साथ शादी कर ली तो लफड़ा हो जातो के नहीं? बड़ो इन्टेलिजेन्ट् जवाब दे दियो के ढब्बुकी बोलती बंध हो गई. और ढब्बुपे ही एटेक् कर दियो "तुम्हारी तरेह हमने लड़का पसंद करके सगाई-शादी नहीं करी हती". ईश्यु छूप्यो रेह गयो के सचमुचमें लक्ष्मीको राज़ेदिल हतो क्या? मेरी भी, आज तक, पूछवेकी हिंमत नहीं भई के वाको राज़े-दिल हतो क्या? मेरो भी कुछ अपनो अहंकार हे. कही खोल दे तो मेरे पति होवेको गुब्बारा ही फूट जावे और पचका हो जाय. वो तो ढब्बुके प्रश्नसु ही पचका हो गयो पर याको रहस्य और खुल गयो होतो तो और गंभीर समस्या पैदा हो जाती. फिर मैंने भी खुलासा नहीं चाह्यो के या सूत्रको भाष्य अच्छो नहीं. क्यों मैं खुदकुशीकी ठानुं. बोलो अहंकार खतरनाक हे के नहीं? बड़े-बड़े छूपे रूपमें अपने सामने आवे. अपन् केह नहीं सके के अहंकारको सच्चो स्वरूप क्या हे.

ये तो मैंने अपनी बात बताई पर आप भी पति-पत्नी आपसमें

एक-दूसरेकुं कभी पूछ लो के "ते मने पसंद केम कर्यो?" तो बड़े-बड़े रहस्य वामें छूपे मिलेंगे. समझो के कोई केह दे के "रूपने कारणे पसंद कर्यो" तो रूप तो मारा करतांय एक्टर् के एक्ट्रेस् नुं सारुं हशे. घर-पैसाने पसंद कर्यो, तो मुकेश अंबाणी सारो. तो जवाब क्या देनो? जवाब देनो भारी पड़ जाय. पति-पत्नी आपसमें ऐसे सवाल-जवाब करवे लगें तो भयंकर नारदविद्या हो जाय. यासु राज़े-दिलकुं मौनके परदामें रहवे देनो ही अच्छी बात होवे हे. परदा जो उठ गया तो भेद खुल जायेगा. तो ये सारो अहंकारको चक्कर ऐसो ही हे.

(एक अहंकारके रूप अनेक)

कई रूपनमें अपनेकुं अहंकार छले हे. अपन् सोच रहें होंय के वयंता हे पर वयंताको रूप धारण करके अहंता अपनेकुं छल नहीं सकती होय ऐसी बात नहीं हे. या पूरे सत्रके दरम्यान सातों-सात दिन अहंकारकी ही मीमांसा अपन् करेंगे.

या अहंकारके एक सायकोलोजिकल् एस्पेक्ट्के बारेमें मॉर्डन् सायकोलोजीने बहोत सारी बातें सोची हें और अहंकारकी बड़ी अच्छी मीमांसा की हे. वाके अन्तर्गत एक खास टॅक्निकल् टर्म उनकी हे 'ईगो डिफेन्स् मॅकेनिज़म्'. आदमी अपने अहंकारकुं कैसे-कैसे ढंगसु सुरक्षित रखे हे. वाके स्वस्थ/अस्वस्थ कई प्रकार होवें हें. और उन प्रकारनमें सहज/औपाधिक कई प्रकार होवें हें. और उन प्रकारनमें कोई सायकोलोजिस्टके हिसाबसु बारह तो कोईके हिसाबसु चोदह-पंद्रह सोलह-अठारह तकके प्रभेद हें. अपन् डेफिनेटलि अभी नहीं पर जब वो मोका आयगो तब वो सब भी देखेंगे. ये अपनेकुं भक्तिमार्गमें कैसे साधक या बाधक हो सकें! क्योंके अपनो मुद्दा सिर्फ सायकोलोजी या सायको-एनेलीसिस् नहीं हे. अपनो मुद्दा ये हे के अहंकार, ईगो या सेल्फ के डिफेन्स्-मेकेनिज़म्की भक्तिमार्गमें कितनी उपयोगिता या

बाधकता होवे हे! उन सबको भी विचार अपनकुं जब वाको प्रसंग आयगो तब करनो हे. पर वासु पहेले अहंकारको जो श्लोक हे ये तो आपके सामने हे :

(मूलकारिका)

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना।
अंहकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

(त.दी.नि.२।२४१)

ये प्रश्न यहांसुं उठ्यो हतो के "**यथा-यथा हरिः कृष्णो मनसि आविशते निजे, तथा-तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते**" साधनमें अपनी निष्ठा और कृष्णको अपने हृदयमें स्थिर होनो, ये एक-दूसरेके साथ रॅसिप्रोकेट् करवेवाली बातें हें. रॅसिप्रोकेट् ऐसे करे हें के श्रीकृष्णके भजनानन्द पानेके साधनमें जितनी अपनी निष्ठा होयगी ठीक उतनो ही कृष्ण अपने हृदयमें ज्यादा स्थिर होयगो. जितनो श्रीकृष्ण अपने हृदयमें ज्यादा स्थिर उतनी अपनी साधनमें निष्ठा!

तो सबसु पहेले तो अपन् ये फंडा या पचका कुं ही देख लें. आपकुं बड़ो मजा आयेगो. क्योंके अपन् यों समझें हें के अपनो साधनमार्ग नहीं हे अपनो तो फलमार्ग हे. अपनो तो प्रमेयमार्ग हे, अपनो ढीकड़ो मार्ग हे, अपनो पूंछड़ो मार्ग हे. अरे भाई! पर महाप्रभुजी क्या केह रहे हें :

"**यथा-यथा हरिः कृष्णो मनसि आविशते निजे।**
तथा-तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते॥"

(त.दी.नि.२।२४०)

तुम अपनी साधननिष्ठाकुं चॅक् करो. जैसे अपन् थर्मामीटरसु

चॅक् करें के शरीरमें ताव कितनो हे. थर्मामीटरमें अपन् ताव देखें. पुराने वैद्य लोग नाड़ीमें देखते थे. आजकल अपन् थर्मामीटरमें देखें हें. तो भक्तिमार्गीय साधनन्में अपनी परिनिष्ठाके थर्मामीटरसु चॅक् करो तो तुमकुं पता चल जायेगो के श्रीकृष्णको बुखार तुमकुं कितनो चढ्यो हे. **''यथा-यथा हरिः कृष्णो मनसि आविशते निजे तथा-तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते''**. महाप्रभुजी कुछ और बात केह रहें हें. अपन् पुष्टिमार्गकुं जा तरहसु समझ रहे हें वा तरहसु महाप्रभुजी नहीं केह रहें हें.

(पुष्टिमार्गीय भक्ति या प्रपत्ति दोनोंमें श्रीकृष्ण ही साधन, साध्य और सिद्धि भी!)

महाप्रभुजी या तरेहसु केह रहें हें के साधन बराबर कृष्ण और कृष्ण बराबर साधन, फल बराबर साधन, और साधन बराबर फल. फल तुम्हारे हृदयमें छुप्यो भयो होय **''यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि ततः किम् अपरं ब्रूहि लौकिकैः वैदिकैः अपि!''** (चतु.३) तो ही तुम्हारे भीतर सच्ची साधननिष्ठा पनपेगी. साधननिष्ठाको पारा कितनो ऊपर चढ्यो वो चॅक् कर लो, उतनो तुम्हारे भीतर श्रीकृष्ण बिराज रह्यो होयगो. आश्वस्त रहो. कोई चिंताकी बात नहीं हे.

ये कोई बहोत बड़ी आधिदैविक बात या श्रीकृष्णके प्रकट मुखारविंद होवेके नाते महाप्रभुजीने आशीर्वाद या वरदान के रूपमें कही होय ऐसी भी बात नहीं हे. ये तो एक कॉमन्सॅन्स्की बात हे. अपनी दुकानके निभाव या बढ़ोत्तरी की भावना तुम्हारे हृदयके भीतर कितनी भरी भयी हे, उतनी ही तुम अपने दुकानकी देखभाल ज्यादा करोगे. अपन् अपनी बॉडीको ख्याल कितनो रखें हें! फिजिकल् फिट्नेस्की सेल्फ्-अवेरनेस् अपने भीतर जितनी होयगी उतनी तो तुम अपनी बॉडीकुं अच्छी तरेहसु मेइन्टेइन् करोगे. अपनी अक्कलके निभावमें

तुमकुं जितनी निष्ठा होयगी वा तरेहसु ही तुम अपनी अक्कल मेइन्टेइन् करोगे. अक्सर मैं देखुं हुं, चश्मा तो कई लोग पेहनें हें, आप भी पेहरो हो मैं भी पेहरूं हुं. पर कई लोग अपनी चश्माकी सफाई इतनी रखते होवें के अपनेकुं लगे के सचमुचमें चश्मामें कितनी निष्ठा हे! चश्मा इनके हृदयमें बिराज्यो भयो लगे! और कई लोग अपने चश्माकुं ऐसे रफ्ली ट्रीट् करें के वामें स्क्रेच् आ जाय टूट-फूट भी जाय. मानें चश्मा उनके दिलमें बिराज्यो नहीं हे, केवल आंखपे बिराजमान हे! वोही बात मैंने अपनी बालन्की भी बात बताई के मेरे लंबे बाल मेरे दिलमें बिराजमान हते यासु माथेके बालनकुं निभावेकी मेरी निष्ठा कितनी ज्यादा हती! मेरे बालन्के लिये मैं हर तरेहसु संघर्ष करतो रह्यो क्योंके वो बाल मेरे लिये अहंकार बनके माथेपे बढ़े हते. मैं जो कुछ हुं, अपन् यों केह सकें के सेल्फ-आइडेन्टीफिकेशन्, धोनीने तो कटवा लिये और मैंने भी बादमें कटवा लिये पर वा बखत नहीं कटवाये थे. वा बखत वो मेरे सेल्फ-आइडेन्टीफिकेशन्के टेग् हते. क्योंके तब मेरे दिलमें बिराजे भये हते. अब दिलमें नहीं बिराजे हें तो बात खतम हो गई. तो ये कोई गंभीर बात नहीं हे कॉमन्सॅन्स्की बात हे. बच्चापे भी अपनेकुं जितनो प्यार होयगो उतनो ही अपन् बच्चाकुं एटेन्ड् करेंगे. वोही बात ठाकुरजीपे भी लागू हो रही हे. ठाकुरजी अपने हृदयमें जितनो बिराज्यो हे उतनी अपनेकुं ठाकुरजीके सेवा भक्ति शरणागति संबंधी साधनान्में परिनिष्ठा निरंतर वर्धमान रहेगी और जितनो ठाकुरजी कम बिराज्यो होय उतनी अपनी निष्ठा साधनामें कम होती चली जायेगी.

(श्रीकृष्णके सामने अहंकार न करवेको मनोवैज्ञानिक भाव)

या संदर्भमें महाप्रभुजीने एक शंका ऐसी उठाई हे के क्या कारण हे के कई लोगनकुं साधनन्में बड़ी निष्ठा दीखवेके बावजूद चहिये जैसी कृष्णप्रवणता हांसिल नहीं हो पावे हे? याको कारण क्या? कारणकी मीमांसा करते-करते महाप्रभुजीने अचानक ये श्लोक

केह दियो हे—"**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना. अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्**" या श्लोककुं आप जरा ध्यानसु देखो. ये सायकोलोजीको बहोत बड़ो रहस्य महाप्रभुजीने अपनेकुं समझायो हे. वो रहस्य क्या हे? वो रहस्य ये हे के जा बखत तुम अपने जिन साधनन्में निष्ठा बढ़ा रहे हो उन साधनन्में तुम्हारी निष्ठा या कमिट्मेन्ट् स्ट्रोंग्सु स्ट्रोंगर् करते चले जा रहे हो के नहीं? चॅक् करो अपने-आपकुं, इन्ट्रोस्पेक्शन् (अंतर्निरीक्षण) करो के साधनकी निष्ठा तुम अहंकारके कारण बढ़ा रहे हो अथवा श्रीकृष्णस्नेहके कारण बढ़ा रहे हो?

अपन् कहें के महाप्रभुजी पुष्टिधर्म-संप्रदायके आद्याचार्य हते पर मनोविज्ञानके भी बहोत बड़े आचार्य हें. ये श्लोक हकीकतमें अचानक नहीं आयो हे. महाप्रभुजीकी गेहरी पकड़ हे अपने मानसपे या कारण आयो हे.

जा बखत तुम साधनन्कुं एकदम दृढतासु पकड़ रहे हो, साधनन्के प्रति टोटली कमिटेड् होते जा रहे हो, वामें दोनों तरहकी पॉसिबिलिटीस् हें : तुम अपने खोटे अहंकारके वश ही साधनन्कुं इतनो स्ट्रोंग्ली पकड़ रहे हो अथवा श्रीकृष्णके प्रेमके कारण उन साधनन्कुं पकड़ रहे हो. यदि तुम श्रीकृष्णके प्रेमके कारण साधनन्कुं पकड़ रहे हो तो तुम्हारे भीतर खोटो अहंकार पनपेगो ही नहीं. कृष्णभक्ति ही पनपेगी. यदि तुम अहंकारके कारण साधनन्कुं पकड़ रहे हो तो तुम कर रहे हो साधन श्रीकृष्णकी शरणागतिके, वाकी सेवाके वाकी भक्तिके; पर कहीं ना कहीं वो अहंकार पाछो तुमकुं छल रह्यो हे. और फिर वो ही स्टोरी "कुछ हकीकत हे कुछ कहानी हे, बड़ी पेचीदा ज़िंदगानी हे." ये बात पेचीदगीमें आ गयी के कुछ यामें हकीकत हे; क्योंके, इन्कार तो अपन् कैसे कर सकें जब याकुं महाप्रभुजी खुद अपनो कर्तव्य बताते होंय के "**यथा-यथा हरिः कृष्णो मनसि**

आविशते निजे तथा-तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते" पर साथमें पॅरलल् कहानी कुछ और चल रही हे के वो जो साधन हे, वा साधनाचरणमें अपन् अपने अहंकारसु अपनी श्रीकृष्णकी भक्तिकुं ही दबावेकुं साधननिष्ठाकुं बढ़ावा दे रहें हें. यासु श्रीकृष्ण सब्-ऑर्डिनेट् हो रह्यो हे और अपनो अहंकार बढ़ रह्यो हे. और वो पाछो तैलीके बैलके जैसो वहांको वहां ही चक्कर काट रह्यो हे. ये बात समझावेके लिये महाप्रभुजी केह रहें हें के "**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना, अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्.**"

याकुं एक कैसो मजेदार थर्मामीटर महाप्रभुजी प्रोवाइड् कर रहें हें देखो! कृष्ण तो सर्वात्मक हे. बहोत सुन्दर शब्दावली हे कृष्णको सर्वात्मक होनो. कृष्णके सर्वात्मक होनेको मतलब क्या?

जगत्में जो भी नाम रूप या कर्म हें, वे कृष्णके नाम रूप या कर्म हें. या अर्थमें कृष्ण सर्वात्मक हे. कृष्ण या अर्थमें भी सर्वात्मक हे के कृष्ण ही प्रमाण हे, कृष्ण ही प्रमेय हे, कृष्ण ही साधन हे; और, कृष्ण ही फल हे. तो जा बखत तुमकुं ये हकीकत समझमें आ जावे के कृष्ण ही प्रमाण आदि सभी कुछ हे वा बखत अहंकार करवेकी कोई बात कहांसु पैदा होयगी! अब जा कृष्णकुं तुमने ऐसे जान्यो, वा जानवेमें तुम्हारो इन्स्ट्रुमेन्ट कृष्ण हे. जा इन्स्ट्रुमेन्ट्सु जान रहे हो वो क्या हे? वो कृष्ण हे. वा कृष्णकुं जानवेके बाद पानो क्या चाह रहे हो? कौनसे साधनसु पानो चाह रहे हो तो महाप्रभुजी केह रहें हें के साधनरूप भी वो कृष्ण हे तो फलरूप भी वो ही कृष्ण हे. अब बोलो के तुम अपनो अहंकार क्या-कैसे करोगे! तुमसु यदि कोई लियो भयो व्रत निभ रह्यो हे तो वा अर्थमें कृष्ण कोई तरेहसु एवेलेबल् हे. यालिये वो व्रत या साधना तुमसु निभ रही हे. कृष्ण तुमकुं यदि एवेलेबल् नहीं होतो तो वो साधना तुमसु निभ नहीं सकती थी. तो या

स्थितिकुं समझोगे तो तुम्हारो अहंकार डायल्यूट् हो जायेगो. नहीं तो साधना परायणको अहंकार बढ़े हे बढ़े हे और बढ़े ही हे, घट नहीं सके. क्योंके साधनको अनुष्ठान अपने-आपमें एक एक्स्ट्राओर्डिनरी फिनॉमिना हे.

छोटेसे साधनकी, खाली बाल बढ़ावे जैसेकी, बात बता रह्यो हुं. धोनीके जैसे आदमी चाहे के मैं बढ़ा लऊं पर कई सारी सरकम्स्टेन्सीस् ऐसी आ जावें के अपनेकुं कटवाने पड़े. जब के मुशर्रफने धोनीकुं केह दी थी के बाल मत कटवाइयो. तो भी वाने कटवा लिये! अपन् रख नहीं सकें.

अभी मैंने एक बच्चाको इन्टर्व्यु पढ़्यो. बहोत मज़ा आई पढ़के, ब्रह्मज्ञान हो गयो. तारे ज़मीनपर फिल्मको हीरो बच्चाने एक बात कही के "मैं बड़ो होके कभी फिल्ममें काम नहीं करूंगो" क्यों क्या लफड़ा हो गयो? तो वाने कही के "सब लड़कियां मेरे गाल खींचे हें! सबसु खराब जात लड़कीन्की होवे हे!" अभी देखो बिचारेको अहंकार कितनो साफ-सुथरो हे. जबकि धोनी बिचारो तरसतो होयगो. ये अहंकार तो ऐसो ही हरजाई हे. बचपनमें अपन् कुछ सोचते होंय, बड़े होके कुछ और सोचवे लग जांय. "तु जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश. ए दिले-नादां ये बदगुमांनी हे" ये अहंकार तो ऐसो ही हे. बच्चा अभी तो ऐसो सोच रह्यो हे पर बड़े होके पता नहीं क्या सोचेगो. तो ये अहंकारको बहोत बड़ो ड्रामा हे. बहोत सारी याकी स्टोरीस् हें और ऐसे ही अपने जीवनकी अपने सायकोलोजीकी बहोत सारी ट्रुथ् हें.

(अहंकारकी अनेकविध जड़ें और उनकी गहराई)

ये अंकिता यहां बैठी भयी हे, याने बायोलॉजिकल् सेल्में भी अहंकारके विद्यमान होनेकी खोज करके बतायी हे. तो अपने

स्थूल अहंकारकी रूट्स् वा सूक्ष्म स्तर तक भीतर फैली भई हें. याकुं देखें-सोचें तो परेशानी होवे के अहंकारको साम्राज्य कितनो व्यापक हे! सो **"अहंकारं न कुर्वीत"** ठीक हे नहीं करेंगे पर कर रहें या नहीं ये कैसे पता चले? यासुं वाको थर्मामीटर् महाप्रभुजी बता रहे हें के तुमकुं खुदकुं पता चले के तुम अहंकार कर रहे हो के नहीं कर रहे हो : **"मानापेक्षां विवर्जयेत्"**. तुम जो कछु काम कर रहे हो, दूसरेन्के द्वारा वाके रिकॉग्निशन्की अपेक्षा ही मत रखो. तुम जो भी कोई काम कर रहे हो वाकुं ऐसी मस्तीसु करो के कोई वाकुं रिकॉग्नाईज् करे वाकी अपेक्षा तुमकुं नहीं होय केवल काम करवेकी मस्ती होय तो समझ जाओ के तुम्हारे भीतरको अहंकार विकृत नहीं भयो हे. या तरेहको दृष्टिकोण रखवेसु थोड़ो-बहोत अस्वस्थ भयो भी होयगो तो वो अपने-आप डायल्यूट् हो जायेगो.

जब तुम्हारे भीतर ये भाव हे के हम इतनो भजन कर रहें हें, आठ प्रहरकी सेवा कर रहें हें, मरजाद लेके भगवत्सेवा कर रहें हें. अरे! नेग-भोग-रागके वैभववाली सेवा कर रहे हो, छप्पनभोग भी कर रहें हें. गामकुं बुलाके दिखावेके लिये ही तो भगवत्सेवा कर रहे हो! तुम सेवा तो कर रहे हो या नहीं पर मानापेक्षाको परित्याग तुमने निश्चय ही नहीं कियो हे. मतलब के या तरीकेकी सेवा करवेमें तुम्हारे भीतर श्रीकृष्णभक्तिकी अपेक्षासु ज्यादा खुद तुम्हारे ईगोकुं सेटिस्फाई करवेकी ही तो हे.

(अहंकारकी भक्तिमार्गीय देखभाल)

महाप्रभुजी आगे ये भी केह रहें हें **"मनसि स्वस्य दीनता भावनीया"**(त.दी.नि.प्र.२।२४१) क्यों दीनता भावनीया, ये मैंने आपकुं बता दियो के दीनताकी भावना अपनेकुं यालिये करनी चहिये के प्रमाण प्रमेय साधन या फल सर्वात्मक यदि श्रीकृष्ण ही होय तो वा सर्वात्मक श्रीकृष्णके सामने अपन्में प्रमाणकुशल होवेकी अपनी

कोई बहोत बड़ी एचीवमेन्ट् होय तो वो वास्तविक नहीं हे. मैं सात दिन अहंकारपे प्रवचन कर सकुं हुं ये तो मेरो बड़ो भारी एचीवमेन्ट् हे. अरे भाई! वो एचीवमेन्ट् का बातको हे? भागवतमें आवे हे **''यो अन्तः प्रविश्य मम वाचि इमां प्रसुप्तां सञ्जीवयति अखिलशक्तिधरः स्वधाम्ना''** (भाग.पुरा. ४।९।६) यदि मेरी बात प्रामाणिक होय तो प्रमाण कौन हे? वो तो कृष्ण ही हे तो यामें मेरो एचीवमेन्ट् क्या!

''मनसि स्वस्य दीनता भावनीया सर्वाधिष्ठानेषु सर्वलोकेषु यत्र-यत्र भगवद्बुद्धिः भवति; बुद्धिः च कर्तव्या.'' (वहीं) देखो, महाप्रभुजी दो बहोत खूबसूरत ऑल्टरनेटिव्स् समझा रहें हें. ये तो अपनेकुं अपने दिलकुं, दिले नादांकुं, साक्षी बनाके पूछनो पड़ेगो. बदगुमांनीसु काम नहीं चलेगो. अपने दिले-नादांकुं पूछनो पड़ेगो के तुमकुं ऐसी भगवद्बुद्धि कहां हो रही हे; या, कहां नहीं हो रही हे? जहां हो रही हे वहां तो कमसु कम मानापेक्षाकी अपेक्षा मत रखो. चॅरीटि बिगेन्स् एट् होम्, ऐसे कमसु कम वहांसु पेहले मानकी अपेक्षाको त्याग करो. अन्तमें महाप्रभुजी ये भी केह रहे हें **''बुद्धिः च कर्तव्या''** क्योंके यदि तुम कहो के ऐसी बुद्धि तुमकुं कहीं भी नहीं हो रही हे तो महाप्रभुजी केहनो चाहेंगे के नहीं भी हो रही होय तो करवेको प्रयास करो.

''अन्यकर्तृकापमानेऽपि न अहंकारं कुर्याद्, भगवतः सकाशाद् मानापेक्षां च वर्जयेत्.'' (त.दी.नि.प्र.२।२४१) अपन् खुद मानापेक्षा नहीं रखे पर कोई अपनो अकारण इन्सल्ट् करे तो व्यर्थमें क्यों सहन करनो? महाप्रभुजी केह रहें हें के सहन कर लो, क्या तकलीफ हे! कोई न कोई बातपे कोई न कोई तो अपनो इन्सल्ट् करेगो ही. कहां-कहां झगड़ा करवे जाओगे? सहन कर लो. सेवा तो श्रीकृष्णकी कर रहे हें गामकी नहीं. गामसु मानापेक्षा नहीं रखेंगे पर जा श्रीकृष्णकी सेवा कर रहे हें वासु तो वाकी सेवाकी मानापेक्षा रखी जा सके

क्या? तो ये और केह दे हें के **''भगवतः सकाशाद् मानापेक्षां च वर्जयेत्.''** (त.दी.नि.प्र.२।२४१) भगवान्सु मानकी अपेक्षा मत रखो.

वाके बादको श्लोक हे **''सर्वथा तद्गुणालापं नामोच्चारणमेव वा सभायामपि कुर्वीत निर्भयो निस्पृहः तथा''** (त.दी.नि.२।२४२) भगवान्के गुणालाप करवेसु, भगवान्के नामन्को उच्चारण करवेमें कोई तरेहको भय या स्पृहा नहीं होय तो अपनो अहंकार लेशतः भी अस्वस्थ नहीं हे. भगवान्के गुणन्को या नामन्को गान भरी सभामें अपन् कर सकें. मानें भरी सभामें भगवान्कुं अपन् प्रोक्लेम् कर सकें हें पर दो बातकी यामें अपेक्षा हे : एक निर्भयताकी और दूसरी निस्पृहताकी. भगवान्कुं प्रोक्लेइम् अन्य कोई स्पृहाके साथ मत करो और भगवान्कुं प्रोक्लेइम् कोई भयके साथ भी मत करो. निर्भय और निस्पृह होके भगवान्कुं प्रोक्लेइम् करो. तो कृष्ण तुम्हारे हृदयमें आविष्ट हो जायगो. जब भय या कोई स्पृहा के कारण कर रहे हो तो गेरंटी नहीं हे के जो भगवन्नाम ले रहे हो, वो भगवन्माहात्म्यको गुणगान हे. तुम भगवान्के लिये कर रहे हो याकी कोई गैरंटी नहीं हे. जब तुम निर्भय और निस्पृह होके कर रहे हो तो गैरंटी मिल गयी समझो. अब देखो ये बात सीधीसी ऐसी ही हे के अपने दिलके सिवा दूसरे कौनकुं पता चले. दूसरो कोई तो आक्षेप लगायेगो लगायेगो और निश्चित ही लगायेगो.

अब क्यों लगायेगो वाको कारण समझो. क्योंके अहंकारको अपने-आपमें मॅकेनिज़म् जटिल हे. ये इतनो जटिल मॅकेनिज़म् हे के आदमी वासु बच नहीं सके. अभी तो मैंने बतायो के दस-पंद्रह डिफॅन्स् मॅकेनिज़म् सायकॉलोजिस्ट् बतावें हें. वो जब आयेंगे तब आयेंगे, पर एक सामान्य थियॉरिटिकल् बात आपकुं समझाऊं. जा तरेहको अहंकार करते होंय या नहीं करते होंय वा अहंकारको अहंकार होनो कभी अपनेको प्रतीत नहीं होवे. दूसरेकुं ही प्रतीत होवे, ये

और खूबसूरती हे पाछी अहंकारकी. महान्सु महान् अहंकारीकुं पूछ लोगे तो वो भी कहेगो के अहंकार हे ही नहीं, यामें अहंकार क्या? अपनो अहंकार कितनी विलक्षण घटना हे. सायकॉलोजिकली विचारोगे तो या घटनाको रहस्य समझमें आयेगो.

(निजानुभूतिमें 'अहम्' सर्वदा एकवचन)

अपन् यों समझें हें के अहंकार तो एस्क्लुज़िवली अपनी कोई पर्सनल् चीज हे के जाकुं अपन् कोईके साथ शॅअर् नहीं करें. कन्सेप्ट्की ये खूबसूरती देखो. जैसे 'वो'+'तु'='तुम' हो जाय. 'वो'+'वो'='वे' हो जाय. 'मैं'+'तुम'='हम' भी हो सके पर 'मैं' को बहुवचन नहीं होवे. 'मैं' को बहुवचन बतावो क्या? अपन् सोचें के 'मैं' को बहुवचन 'हम' पर गलत बात हे. जब अपन् 'हम' केह रहे होंय तब 'मैं' और 'वो' अथवा 'मैं' और 'तु' आ गयो. तो 'मैं' और 'वो' घूमने जानेवालें हें मतलब हम घूमने जानेवालें हें. 'तु' और 'मैं' जानेवालें हें मतलब ''हम जानेवालें हें''. पर 'मैं' और 'मैं' नॉट् पॉसिबल्. एक अजीब इम्पॉसिबिलिटी हे. 'मैं' और 'मैं' हो ही नहीं सके. यासु 'मैं' को बहुवचन होवे नहीं. और सबन्को बहुवचन होवे. 'वो'+'वो'='वे' तो 'तु'+'तु'='तुम'. 'मैं' 'मैं' 'मैं' तो बकरी ही होवे बाकी बहुवचन नहीं होवे. ये खूबसूरती हे अहंकारकी के 'मैं' को बहुवचन नहीं होवे. यालिये अपन् 'मैं'कुं दूसरे कोईके साथ शॅअर् नहीं करें. 'मैं' के कारण कोई दूसरेकुं ''ये मेरो हे'' या तरीके शेअर् कर सकें, बावजूद याके 'मैं' की ये कितनी बड़ी खासियत हे के मैं अपने 'मैं'कुं कभी पहेचान नहीं पाऊं! दूसरेकुं ही लगे के तुमकुं अहंकार हे. अपन् सुबेह उठें और अपने मुंहमें बास आती होय तो वो बास अपनेकुं आवे. दूसरेके पास गुफ्तगु करवे जाय तो बोले के मुंहसु बड़ी बास आवे. अरे मेरे मुंहकी बास मोकु क्यों नहीं आयी? ये नाक तो मुंहके कितनी पास हे! मेरे मुंहकी बास मोकु नहीं आवे, ऐसे मेरे अहंकारकी जो भी कुछ

दुर्गन्ध होय वो मोकु पता नहीं चले. जाके सामने बात करूं "अमे एवा रे" तो तुरत कोई कहेगो के बहोत अहंकारी हो. अब क्या करनो! अहंकारको चक्कर बड़ो जटिल हे. अपन् केह भी दे, खुलासा भी कर दें के हम अहंकार नहीं कर रहें हें. अहंताकी बात नहीं केह रहें हें वयंताकी बात केह रहें हें. पर वाकी दुर्गन्ध तो दूसरेकुं आवे ही हे और हन्ड्रेड् पर्सन्ट् गेरंटी अपन् कैसे ले सकें! अपन् "अमे एवा रे" केह रहे हे वामें अपनेकुं गर्व नहीं हे. अपनो अहंकार भी अपनो हरजाई होवेके कारण आपकुं बात बता दी हे के "तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश ए दिले-नादां ये बदगुमांनी हे." तो अपने हरजाई अहंकारसु अपन् जो वफादारीकी ख्वाईश रखते होंय तो ये अपने दिले-नादांकी बदगुमांनी हे.

अपन् समझ नहीं सकें ऐसी बात नहीं हे. अब या जंक्चरपे समझमें आयेगो के अहंकारकी समस्या अपने भीतर सायकोलोजिकली, सोशियोलोजिकली या स्पिरिच्युअली कितनी जबरदस्त समस्या हे! अहंकारकी रेंज् क्या हे? और वो रेंज् ये अहंकारमें छूपी भयी सारी प्रॉब्लेम् हें, उन प्रॉब्लेमपे अपन् ध्यान दें तो अपनेकुं पता चलेगो के अहंकारको स्पॅक्ट्रम् कितनो बड़ो हे! सतरंगीसु भी अधिक बहुरंगी स्पॅक्ट्रम्वालो ये कोई फिनोमिना अपने अंदर भर्यो भयो हे.

(मत पूछ के क्या हाल हे मेरा तेरे आगे, तू देख के क्या रंग हे तेरा मेरे आगे)

मनुष्यकी आंख बहुरंगग्राही मानी जाय हे. बावजूद याके सारे रंग मनुष्यकुं गृहीत नहीं होवे हे. कुछ कलर्-ब्लाइंड् होवेके कारण या कलरके प्रति नॉन्-सॅन्सिटीविटीके कारण भी. अपनी आंखमे रॉड्स् और कॉन्स् होवें हें. कभी उनके भी इन्-एक्टिव् होवेके कारण भी कई रंग अपनकु गृहीत नहीं भी होवे हें. इतने सारे रंग अहंकारके भी हें. उन सारे रंगनमें अहंकारकु खुद अपने रंगकु पहेचाननो बहोत

जटिल कथा हे.

अपन् सिर्फ अहंकारके क्या-क्या स्पॅक्ट्रम् हें, अहंकारके क्या-क्या प्रोस्पॅक्टिव्स् हें, ये इन सात दिनन्में देखवेको जरूर प्रयास करेंगे. ये तो मैंने खाली आपकुं बतायो के रनवे क्या हे. जापेसु अपनेकु टेकऑफ् करनो हे. या बखत अपन् या विषयकी चर्चा करेंगे. सहज संभव हे के विषय शायद केटेगरीके हिसाबसु कुछ भी नयो नहीं होय. नयो नहीं होयगो वो एक दूसरी कथा हे पर उन सारे विषयनकुं इतने सालनसु सुनते आयें हें और विचारते आयें हें. उन सारे विषयनके ऊपर, उन सारे विषयनकुं एक तरेहके अहंकारकी हाइट्के पॅनोरॉमिक् व्यू सु देखवेको या बखत अपन् प्रयास करेंगे.

अहंकारकी ऑल्टिट्युड्पेसु वाको पॅनोरॉमिक् व्यु अपनेकुं क्या मिल रह्यो हे, वो अपन् देखवेको प्रयास करेंगे. ये अपनो रनवे हे, जापेसु अपनकुं टॅक्ऑफ् करनो हे. प्रतिवर्षको अपनो नियम हे के साधनप्रकरणके स्वाध्यायमें अपनी पुष्टि-अस्मिताको अकाउन्ट् भी ऑडिट् करे हें. थोड़ीसी वा बातकी भी चर्चा मैं आपके साथ जरूर आज करनो चाहुंगो.

('पुष्टि-अस्मिता'गान क्या अहंकारगीति हे!)

वो चर्चा जैसे मैंने आपकु बताई के अपने या गानमें अपने अहंकारको गान हे के नहीं? ये बड़ो प्रॉब्लेमेटिक् ईश्यु हे, जाकु अपनेकु भी सॉल्व् करनो पड़ेगो. सॉल्व् करनो, इन् द् सेन्स् अपनकुं खुद समझनो हे के प्रॉब्लेम् क्या और वाको सॉल्युशन् क्या हो सके. इन्-नट्-शॅल् अपन् ये केह सकें के अपनी पुष्टि-अस्मिताके गानमें सहज संभव हे के अपनो अहंकार प्रगट हो रह्यो होय. क्योंके जा तरहकी जटिलता हे, वा जटिलताकुं देखते भये अपन् खुद गॅरन्टी जब नहीं ले सकतें होंय तो अपन् कैसे इन्कार कर

सकें के यामे अहंकार नहीं हे. याको डाइलेमा ऐसो हे, जैसे कोर्टरूम्में वकील क्रॉस् करते बखत पूछे के तुम्हारे भीतर अहंकार हे के नहीं तो लफड़ा हो जाय. ना पाड़्यो तो भीतर बहोत अहंकार हे और हाँ पाड़यो तब तो फंस ही गये, निर्लज्ज हो. कितने अहंकारी हो के स्वीकार करवेमें भी शरमा नहीं रहे हो! तो ये बड़ो डाइलेमिक् प्रॉब्लेम् हे के जाकुं न हां पाड़यो जा सके हे और न ना पाड़यो जा सके. आदमी जाये तो जाये कहां? या तरीकेको ईश्यु हे. या ईश्युके डाइलेमामें अपनेकुं पुष्टि-अस्मिताको इवेल्युएशन् भी डेफिनेटली करनो चहिये क्योंके अपन् अपनी पुष्टि-अस्मिताको उत्सव मना रहें हें और जो भी कुछ महाप्रभुके ग्रंथन्को अवगाहन अपन् कर रहें हें वो सचमुचमें ये पुष्टि-अस्मिताके उत्सवकुं मनावेके लिये कर रहें हें. तो वा दृष्टिसु भी अपनो परम कर्तव्य हो जाय हे के अपन् अपनी पुष्टि-अस्मिताके अकाउन्ट्कुं ऑडिट् करे.

वामें सीधीसी बात अपन् इतनी सोच सके हें के या पुष्टि-अस्मिताको गान कोईके ऊपर आक्षेपके अर्थमें कर रहे हें या महाप्रभुके सिद्धान्तकुं गावेके लिये कर रहें हें? आप गुजराती लोगन्में एक बड़ी अच्छी कहेवत हे के एक उंगली तुम कोईके सामने करो तो तीन उंगली तुम्हारे तरफ आवे हे. कोईके तरफ आरोपकी एक उंगली तुम तानों तो तीन उंगली तुम्हारे तरफ तन जायेंगी. एक्ज़ेक्ट्ली, वा एन्गल्सु अपन् सोच सके हें के अपन् कोईके ऊपर आक्षेपके अर्थमें ये यदि गान करते होंय तो डेफिनेट्ली अपनेपे भी तीन उंगली तन जायेंगी. याही लिये मैंनें आपकुं बतायो के कोईके ऊपर आक्षेपके अर्थमें ये गान नहीं करते होंय और महाप्रभुको सिद्धान्त क्या हे वाको गान करते होंय, वामें यदि अपनो अहंकार अपनेकुं छल रह्यो हे तो मनमें आश्वस्तता रखनी चहिये के छल रह्यो हे तो भले छले **''कामं क्रोधं भयं स्नेहम् ऐक्यं सौहृदमेव वा नित्यं हरौ विदधतो यान्ति तन्मयतां हि ते''** (भाग.पुरा.१०।२९।१५). पर वो यदि महाप्रभुके

सिद्धान्तमें अहंकारको विनियोग कियो हे तो महाप्रभुके सिद्धान्तके अंगीकाररूप वो अहंकार हो जायेगो. वो अपने लिये प्राइड् पज़ेशन् (गौरवयुक्त अधिकार) हे हे और हे, रेहनो ही चहिये. **''भूल जिन जाय मन अनत मेरो, अन्यसम्बन्धतें अधिक डरपत रहों, अन्य साधन हुं तें कर निवेरो, भूल जिन जाय मन अनत मेरो''**.

महाप्रभुके सिद्धान्तमें अहंकारको यदि **''कामं क्रोधं भयं... यान्ति तन्मयतां हि ते''** (भाग.पुरा.१०।२९।१५) न्यायसु अपन् विनियोग कर रहे होंय तो जैसे महाप्रभु आज्ञा करें हें **''गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना, गंगात्वे न निरूप्या स्यात्, तद्वद् अत्रापि चैव हि''** (सि.र.८) वैसो होयगो. भले अपनो अहंकार गटरके जैसो गंदो होय पर जा बखत समर्पणकी प्रक्रियाद्वारा भगवान्के दास्यभावमें अपन्ने वाको विनियोग कियो, भगवान्के प्रति समर्पणकी प्रक्रियामें शरणागतिके भावमें वाको विनियोग कियो, तो गटर भी गंगामें मिलनेके बाद गंगारूप हो जाय, वैसे अपने अहंकारको यदि भगवदर्थ विनियोग अपन्ने कियो होय तो वो तो अभिलषित प्रक्रिया ही हे, अष्टाक्षरदीक्षामें भी और पंचाक्षरदीक्षामें भी. तब पुष्टि-अस्मिताको अपनो अहंकार भी, अहंकार नहीं परन्तु वयंता सिद्ध होयेगी.

यदि ये अहंता भी होय, तो भी अपन् अपने सिद्धान्तमें वाको विनियोग कर रहे होंय तो, अपनेकुं आश्वस्त रेहनो चहिये. सबसु बड़ी बात यामें आश्वस्त रेहवेके लिये ये हे : यदि कोईकुं अपनो अहंकार तोड़नो अभिलषित होय तो, क्योंके अपने अहंकारकी दुर्गन्ध अपनेकुं नहीं आवे वो तो दूसरेकुं ही आयेगी. दूसरेकुं यदि अपनी पुष्टि-अस्मितामें अहंकारकी बास आती होय तो, सबसु सरल उपाय अपने अहंकारकुं तोड़वेको सर्वथा सुलभ हे. वो ये हे के वाकु अपनी पुष्टि-अस्मिता गीत गाने लगनो चहिये : ''अमे एवा रे...'' तमे ज शामाटे एवा रे अमे पण एवा रे.

कोई नथी गातुं एटले अमारो अहंकार वधी शके छे. बधां ज गावा लागे तो आपणो अहंकार पोते ओगळी जशे.

पुष्टि-अस्मिताके गानमें आपत्ति क्या हे? क्या कोई अपसिद्धान्त हे? कोई अपसिद्धान्त यदि मानतो होय तो अपन्ने महाप्रभुके वचन भी साथ-साथ धरें हें. पुष्टि-अस्मिताकी हर लाईन्के वीसाविस (एक दूसरेके सामने) महाप्रभुको कोई न कोई वचन रख्यो हे. ये तो महाप्रभुके ग्रन्थन्मेंसु कोई न कोई वचनको केवल काव्यानुवाद हे. महाप्रभुके वचननकुं ही पुष्टि-अस्मिता तरीके गा रहे होंय तो अपन् अपनी पुष्टि-अस्मिताको अपने अहंकारको महाप्रभुके सिद्धान्तमें विनियोग कर रहें हें. जा बखत विनियोग कर रह हें वा बखत अपनो अंहकार गटर जैसो भी होयगो तो वो "**गंगात्वे सर्व दोषाणां ...**" सिद्धान्तानुकूल अहंतामें सुधर जायेगो. इतनी केअर् अपन् यामें डॅफिनेट्ली ले सकें हें और लेनी ही चहिये.

महाप्रभुके सिद्धान्तकी अपन् कॅअर् नहीं लें वाके कारण ही संप्रदायमें बहोत सारी गड़बड़ चल पड़ी हें. यदि महाप्रभुके सिद्धान्तके प्रति उतनो कमिट्मेन्ट्, उतनी निष्ठा अपने भीतर होती तो, खुदकुं या दूसरे कोईकुं अहंकार करवेको कोई विषय ही नहीं रेह जायेगो.

अपन् सब बम्बईमें रेह रहे हें परन्तु अपनेमेंसु कोईकुं बम्बईमें रेहवेको अहंकार कभी होवे हे क्या?

पर ऐसो अहंकार प्रकट भी हो सके यदि अपन् कहीं गांवमें पहोंच जायें तो. जो बिचारो बम्बईमें नहीं रहेतो होय, ऐसो गामको कोई भोलो आदमी, अपने पास आवे तो अपनेकुं लगे के "तमे गामड़ानां छो!" बचपनमें एक गुजराती गाना सुन्यो हतो "*अमे मुंबईनां रहेवासी, चर्नीरोड़पर चंपानिवासमां रूम-नंबर इक्यासी, अमे मुंबईनां रहेवासी*"

चर्नी रोड़पे 'चंपानिवास' बिल्डिंग्के इक्यासी नंबरके रूम्में रहवेको अहंकार भी हो सके हे. कितनी बड़ी चाली के जाकी इक्यासीमीं एक छोटीसी कोठड़ीमें रेहवेवालो भी गाममें जाके पाछो दादागीरी कर सके के "अमे मुंबईनां रहेवासी". बम्बईके रहेवासी होंय भी तो वाको अपनो अहंकार बम्बईके निवासीन्के बीच निभ नहीं सके फिरभी दूसरी जगा जायें तो प्रकट हो सके. ऐसे ही सिद्धान्तको अहंकार भी कौनके बीच प्रकट हो सके जो सिद्धान्ताचरण नहीं करतो होय.

आओ! आज अपन् सब मिलके कहें के हम अब महाप्रभुके सिद्धान्तकुं पूरी निष्ठासु निभायेंगे और जियेंगे, तो अपन् सभीन्को अहंकार खतम हो जायेगो! जो निष्ठा सभी निभाते होंय तो कोईके भीतर अहंकार क्यों और कैसे हो सकेगो? बम्बईमें रेहवेवालेकुं कभी बम्बईमें रेहवेको अहंकार हो नहीं सके. ऐसे सिद्धान्त सब पालते होयेगें तो "अमे एवा रे!" सिद्धान्तके गानमें अहंकार निभ नहीं सकेगो, ये रहस्य अपनकुं स्पष्ट समझ लेनो चहिये. ❊

❊ यहांसुं पुष्टिअस्मिताको लेखाजोखावाले प्रवचनको अंश परिशिष्टके रूपमें जोड्यो गयो हे (सम्पादक).

आज हम गुसांईन्कुं भी ऐसे ही महाप्रभुके सिद्धान्तनकुं दफन करनेको ईगो पनप गयो हे. या प्रकारकी आज अपन् प्रॅक्टिस् करें हें. ये एक नग्न सत्य हे. शुरुआत अपन्ने करी हती के हम महाप्रभुके सिद्धान्तको पालन करेंगे. पर आज अपन् या बातके लिये रो रहें हें के हम दफन क्यों नहीं कर सकें हें? जो दफन नहीं करवे दें, जो दफनकी ना पाड़े वाकु अहंकार हे. ईगो तो हरजाई हे "तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश. ए दिल-ए-नादां ये बदगुमांनी हे". क्योंके दिलको पता नहीं चले के कौनसी बातपे दिल कब चल जाय. जा बखत जा तरहसु दिल चल जाय वा तरहसु अपनो ईगो कन्वर्ट् हो जाय. ईगो अपनो मॅइन्टेन् तो होवे नहीं हे ये बेज़िक् ईश्यु हे.

एक मजेदार बात बताउं : कोई परिवारमें कोई बच्चाने कछुवा पाल्यो. कछुवाकी बायोलॉजीकल् क्लॉक् होवे हे. कछुवा हाइबरनेशन्में (सुषुप्तावस्था) या इनर्शियामें (निष्क्रियतामें) गयो. बच्चाकुं लग्यो के वो मर गयो. बच्चाने रोनो शुरु कियो के मैंने कछुवा पाल्यो और वो मर गयो. वाकु समझानो कैसे? वाके ईगोको प्रश्न हो गयो के जो कछुवा मैंने पाल्यो वो मर्यो कैसे? देखो अहंकारकी बात बता रह्यो हूं. बच्चाने रोनो-धोनो शुरु कियो तो मां-बापने उलटी-पटूटी पढ़ा दी "कोई चिन्ताकी बात नहीं अपन् ये कछुवाकी जुलुस निकालके दफनविधि करेंगे". और फिर उन्होंने जुलुसको वर्णन कियो के "जुलुसमें याकुं बुलायेंगे वाकुं बुलायेंगे, गाड़ीमें ले जायेंगे" बच्चाको ईगो भी तो पाछो हरजाई हे न! "तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश.' बच्चाको लग्योकी कछुवाको पाल्यो वामें तो कोईने इतनो रिकग्निशन् नहीं दियो. कछुवा मर गयो वाकी दफनमें इतने सब लोग आयेंगे. तो बच्चाकुं तो मजा आ गई. वाने कही करो दफन. सब एनाउन्स् हो गयो. इतनेमें वो कछुवा चलके तालाबमें चल्यो गयो. वो तो जिंदा निकल्यो. सुषुप्तावस्था छोड़के जाग्रदवस्थामें आ गयो. बच्चा दोबारा रोवे लग गयो "याकु दफन करो, याकु दफन करो". बाय् धेट् टाइम् कछुवाको पालक होनेके बजाय कछुवाको दफन करनेको ईगो पनप गयो.

(प्रश्नोत्तरी)

प्रश्न :

आपने कही के कृष्णको बुखार कितनो चढ्यो हे वो देखनो होय तो अपनी साधननिष्ठाकुं चॅक् करें तब पता चले परंतु प्रथम तो हरिकी ओरसु जितनी कृपा होयेगी उतनी साधननिष्ठा बढ़ेगी तो साधननिष्ठाके कारण कृष्णको आवेश होयगो या कृष्णावेशके कारण साधननिष्ठा होयेगी, ये कन्फ्युज़न् हे. साधननिष्ठामें "**हरिः मनसि आविशते निजे**" जो कह्यो वामें प्रथम तो हरिकी ओरसु हरि ही अपने हृदयमें

बिराजेगो तभी तो उतनी साधननिष्ठा बढ़ेगी.

जवाब :

एक 'रेशिओ-असेन्डाइ' होवे और दूसरो 'रेशिओ-कॉग्निसेन्डाइ' होवे. आग पेहले होवे, धुआँ बादमें पैदा होवे. आगकु 'रेशिओ-असेन्डाइ' कहें. क्योंके आग धुआँको कारकहेतु होवे. धुआँके कारण आगको अनुमान होवे यासुं धुआँ आगको ज्ञापकहेतु 'रेशिओ-कॉग्निसेन्डाइ' होवे. अन्डरस्टेन्डिन्ग्के साइड्सु धुआँ अपनेकुं पहेले दिखे हे और वाके कारण अपनेकुं आग हे वो समझमें आवे हे. धुआँ उठ रह्यो हे तो कहीं न कहीं आग होयगी. यासु रेशिओ-कॉग्निसेन्डाइ हे. वाकी जो प्रायोरिटी हे वो नोट् एज़् ए फॅक्ट् बट् एज़् ए आइटम् ऑफ् अन्डरस्टेन्डिन्ग् वो पहेले आवे हे. कृष्णको मनमें आविष्ट होनो रेशिओ-असेन्डाइ हे और साधनकी परिनिष्ठा रेशिओ-कॉग्निसेन्डाइ हे.

प्रश्न :

साधननिष्ठाको मतलब साधन करनो ऐसे समझनो? कैसे?

जवाब :

या ईश्युकु क्लियर् करवेको हर बखत मैंने काफी प्रयास कियो पर फिरसु रिमाइन्ड् कर दऊं. साधनन्की साधनताकी स्वीकृति सबसु प्रायमरी ईश्यु हे. वो स्वीकृति, क्योंके अपन् मनुष्य हें, कुछ रॅशनल् भी और कुछ इर्रॅशनल् भी. अर्थात् अपन् दोनोंके चोंचोंके मुरब्बा हें. तो मोस्ट् ऑफ् द् टाइम् अपनी सारी बातें अपनी अन्डरस्टेन्डिन्ग्सु रिलेटेड् हें के अपने एटीट्युड्सु? या इन्क्लिनेशन् (रुचि)के कारण अपन् उनकुं सिलेक्ट् करें हें, ये अपन् खुद समझ नहीं पाते होवें. जब अपन् खुद नहीं समझ पाते होंय तो दूसरेकुं क्या बता पायेंगे?

पर सबसु पहेले अपने भीतर साधनकी एक्सेप्टिबिलिटि आवे हे. जो कुछ मोकुं चहिये हे वाको साधन ये हे. जैसे पैसा इमीडिएट् चहिये हे तो मटका लगानो एक साधन हे. तो मटकाकी एक्सेप्टिबिलिटि

पेहले आनी चहिये. लीडर् बननो हे तो इलेक्शन् लड़नो. वो साधनता समझमें आवे हे. तो साधनकी स्वीकृति हे वो रुचिमूलक हे के बुद्धिमूलक हे, या तो आइधर् इट् कुड् बी चोंचोंको मुरब्बा दोनों हो सके हे. वामें अपनी श्रद्धा पनपे. ये साधनसु मैं ये फल प्राप्त कर सकु. श्रद्धा नहीं पनप रही हे तो साधनको स्वीकार करनेके बावजूद भी सच्चाईसु पकड़ नहीं पाओगे. वो फॉर्स् नहीं आयेगो. जब आपकु श्रद्धा पनप गई तब आप प्रॅक्टिस् करोगे. वो करवेसु आपकु कुछ भी पोज़िटीव् रिझल्ट् मिले तो आपके भीतर विश्वास जागेगो. क्योंके श्रद्धा एडवेन्चर् हे. वो साहस तो आप कर लो हो. पर वाके बाद वामें बिलीफ् पैदा होनी सेकन्ड् स्टेप् हे. जब तक एक्सपेरिमेन्ट् नहीं करो तब तक आपकुं वापे विश्वास नहीं आयेगो. मैं अक्सर ये कहुं के जा दिन पति-पत्नीकी शादी हो जाय वा दिन दोनोंके भीतर श्रद्धा तो प्रकट हो जाय के ये मेरो पति हे या ये मेरी पत्नी हे. पर विश्वास लाइफलोन्ग् तक कभी नहीं होवे. यदि विश्वास होतो तो *''क्यां जाय छे, रात्रे मोड़ी केम आवी?''* ये प्रश्न होनो ही नहीं चहिये, श्रद्धा होवे परन्तु विश्वास कहां होवे? विश्वास कब आवे? श्रद्धा साहस करनेके बाद अपन्ने रिपीटेटिव् एक्सपेरिमेन्ट् कियो होय तो वा फिनोमीनाके लिये आपके भीतर विश्वास जगे. विश्वासमें साहस नहीं हे विश्वासमें रिपीटेड् एक्सपीरियन्स् काम आवे. रिपीटेड् एक्सपीरियन्स् हे तो विश्वास आ जायेगो. श्रद्धा एक एड्वेन्चर् हे के चेलो हम हिमालय चढ़ेंगे. पर चार बखत हिमालय चढ़के आये तो विश्वास होयेगो और नहीं तो सिर्फ श्रद्धा हे. वा विश्वासके कारण जो भी कोई साधन हे वामें निष्ठा आपकी तब पनपेगी जब लाइफ्में प्रॅक्टिस्में लाओ. तब वाकी निष्ठा पनपेगी. अक्सर मर्डर् करवेवाले आदमी क्यों कांप जाय मर्डर् करवेके बाद. पेहले नहीं कियो हे मर्डर्, अनुभव नहीं हे, वाके बाद कांप जाय. और जो प्रॉफेशनल् मर्डरर् होवे वाकु लाइ-डिटेक्ट्रपे पकड़नो भी मुश्किल हो जाय. क्यों मुश्किल हो जाय? उनके भीतर निष्ठा हे.

मारवेके लिये मार्यो. कोई शेर थोड़ी मार्यो? धंधा हतो मारनो तो शूट् कर दियो. अपनकुं भी चूहा या कॉक्रोच् कुं मारवेमें गिल्ट् फील् होवे? मार दें जैसे सुपारी लेनेवाले मारे. सुपारी लेनेवालेके लिये अपनी कीमत वा चूहा या कॉक्रोच् सु ज्यादा नहीं होवे. वो उतनी ईज़िली मार सके. क्योंके उनमें रिपीटेडली मर्डर्की निष्ठा डेवलप् भयी हे. महाप्रभुने खुलासा कियो के **''निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येव इति विनिश्चयः निष्ठा च साधनैरेव न मनोरथवार्तया''** (त.दी.नि.१।१८) कोई चीजकुं आप रेग्युलरली अपनी लाईफ्में जीयोगे तो वाकी निष्ठा पनपेगी, नहीं जी रहे हो तो श्रद्धा हो सके हे, विश्वास हो सके हे, पर निष्ठा नहीं पनपेगी. निष्ठा तो इम्प्लिमेन्टेशन्सु ही आवे.

अक्सर मैं एक बात कहेतो रहुं के अपन् कराटेको अभ्यास करें तो वामें ईंट तोड़वेकी होवे पर अपन् कोईकु कराटेको अभ्यास करते देखके ईंट तोड़वे जायें तो हाथकी हड्डी ही तूट जायेगी. क्यों तूट जाये? क्योंके अभ्यास नहीं हे. रोज अपन् पथ्थरकुं मारते रहें तो हड्डीमें भी कठोरता आ जायेगी. वाके लिये निष्ठा चहिये.

(अहंकारको स्वरूप क्या ?)

''अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्''

याको बेज़िक् एक्स्प्लेनेशन् हतो वो तो मैंने कल बतायो हतो. आज जा फ्रेज़्पे अपनेकु ज्यादा कॉन्सन्ट्रेशन् करनो हे वो फ्रेज़् हे **''अहंकारं न कुर्वीत''** मानें अहंकार मत करो. ये निषेध हे के अहंकार मत करो. ''मत करो!'' केहवेसु हि अपनेकुं लगे के अहंकार कोई काम हे, अहंकार क्रिया हे जाकुं करवेकी मनाई की जा रही हे. जा क्षण अपन् सोचें के अहंकार कोई कर्म हे या कोई क्रिया हे जो अपनेकुं नहीं करनी हे, तो अपनी या अन्डर्स्टेन्डिंग्के साथ एक बात और आयेगी. जो संस्कृत पढ़े हें उनकु तो कोई प्रॉब्लेम् नहीं होयेगी. कोई भी काम (क्रिया) जब अपन् करतें होंय तो कामको (क्रियाको) कोई कर्ता होयगो. ''जाय छे'', कोण जाय छे? कर्ता जाय छे. ''ते जोवे छे'', शुं जोवे छे? तो कर्म हो गयो. ''जोवे छे'', शेनाथी जोवे छे? कोई न कोई वाको साधन होयगो. तो करण हो गयो. कायके लिये या क्या हेतुसु? तो कोई न कोई वाको सम्प्रदान होयगो. जैसे हि क्रिया आवे वाके साथ सारे ईश्यु जुड़े भये आवें. ''अहंकार मत करो'' कौन अहंकार नहीं करे? कर्ताकुं कह्यो जाये के ''अहंकार मत करो'' क्या नहीं करनो? कर्मरूप अहंकार नहीं करनो. कायसु अहंकार नहीं करनो? तो करणको खुलासा देनो पड़ेगो अथवा वो करणसु अहंकार मत करो. का प्रयोजनसु अहंकार नहीं करनो? तो संप्रदान बतानो पड़ेगो के या अथवा वो प्रयोजनसु अहंकार मत करो. कहां अहंकार मत करो. तो अधिकरण बतानो पड़ेगो के व्यवहारमें वाणीमें मनमें बुद्धिमें अथवा चित्तमें अहंकार नहीं करनो. ये सारे क्रियाके साथ जुड़े भये प्रश्न हें. जैसे ही अपन् ''न कुर्वीत'' कहें वैसे ये सारे प्रश्न खड़े हो जायें. सारे प्रश्न क्रियाके नेचरसु ही डिराइव् हो रहें हें. जब ये प्रश्नापेक्षायें अपनी खड़ी होवें, बात यहीं खतम नहीं हो जा रही हे. प्रत्युत

अधिक समस्या पैदा हो जावे हे. तो अहंकारको सच्चो स्वरूप क्या?

जैसे ही कहें के ''अहंकार मत करो'' तो पहेलो सवाल हे के क्या अहंकार क्रिया या कर्म हे? क्या अहंकार अपनी फीलिंग् हे के जा फीलिंग्कुं अपन् अहंकार केह रहें हें. एपरन्ट्ली देखें तो अहंकार अपनी फीलिंग् हे. अपन् कुछ फील् कर रहे हें. ''मैं हुं'' मेरे होवेकी फीलिंग् हे. याकु ऐसे समझो, जैसे अपन् कहें 'साक्षात्कार'. कोई चीजकु आंखके सामने लानो. ऐसे ही अहं करवेकी क्रियाको नाम 'अहंकार'. तो क्रिया लगे हे. पर क्रिया लग रही हे तो क्रियाको कर्म भी आ रह्यो हे.

यदि अहंकार अपनी 'फीलिंग्' हे तो भी कुछ प्रश्न पैदा होवे हें. एक जस्ट् पॉसिबिलिटी हे के अहंकार फीलिंग् हे पर सब लोग अहंकारकुं इतनी गाली दे रहे हे तो कबूल कैसे करनो के फीलिंग् हे. जब शरम आती होय तो अपन् शतुर्मुर्गकी नीति करें. मतलब रनमें शिकारी आतो होय तब वो अपनो माथा बालुके भीतर घुसा देवे. वाकुं नहीं दीखे तो समझे शिकारी गायब! ऐसे अहंकार हो रह्यो हे तो वाकुं शतुर्मुर्गकी पॉलिसीसु देखो मत. तो अहंकार एक तरहकी मिथ्या फीलिंग् हे. क्योंके इतने सब लोग मिलके गाली देते होवें और इन सबके बीच अपन् अचानक उठके कहें के *''अमने खरेखर अहंकार जेवुं कांईक थाय छे''* तो सब लोग कहें के *''हरामखोर हे अहंकार करे छे ने पाछो शेखी वघारे छे''*. तो तो मुश्किल हो गई. तो अपन् भी सेफ् साइड्में क्या सोचें? ऐसे अहंकारकुं स्वीकारवेके बजाय यों केह देनो के ''मिथ्या हे''. वामें दोनों प्रॉब्लेम्को सोल्युशन् आ जायेगो, 'छे पण अने नथी पण' वो शतुर्मुर्गकी नीति हे. तो अहंकार एक मिथ्याभास हो सके हे. अहंकार सचमुचमें एक अपने शरीरके भीतर रह्यो भयो कोई

अंगको फिनॉमिना भी हो सके हे. जैसे हार्ट् ब्रेन् किड्नी हे. शरीरके कोई एक पोर्शन् ग्लेन्ड् या सेन्टर् को नाम अपने बॉडीके भीतर अहंकार धर सकें. परन्तु, एज् अ मॅटर् ऑफ् फॅक्ट्, ऐसो कोई सेन्टर् अभी तक तो मिल्यो नहीं हे. फिर भी टॅन्टेटिवली ऐसी एक हाइपॉथिसिस् कर सके के अहंकार नामको कोई एक फिनॉमिना हे. अहंकार अपनो इन्स्ट्रुमेन्ट् भी हो सके. ये सारी पॉसिबिलिटीज् हें.

यामें जरा ध्यानसु देखो के क्या-क्या पॉसिबिलिटीज् हें. अपन् इतनो तो समझ गये के महाप्रभु **"अहंकारं न कुर्वीत"** कहें हें, मतलब कुछ न कुछ यामें करने जैसो तो हे ही.

(क्या अहंकार कोई क्रिया हे?)

सबसु पहेले क्रियाकु लेवे. क्रिया दोनों तरहकी हो सकें : कुछ क्रिया आन्तर होवें तो कुछ क्रिया बाह्य होवें. अपन् जानें हें अपने शरीरके भीतर ब्लड् सर्क्युलेशन्की क्रिया चल रही हे, डाइजेशन्की क्रिया चल रही हे और भी कई तरहके कॅमिकल् सीक्रेशन् चल रहें हें. वो सब क्रियाएं आन्तर ही होवें हें. अपन्कु कोई चीजकी याद आ रही हे, कोई चीजकी इच्छा हो रही हे, कोई वस्तुके बारेमें अनुराग प्रकट होतो होय, कोईपे द्वेष आ रह्यो हे, ऐसी कई क्रियाएं अपने भीतर ही चलती होवेपे बाहर भी प्रकट हो जायें. कुछ बाहर प्रकट होनेवाली क्रियान्के सोर्स् कभी भीतर होंय तो कभी बाहर भी होंय, कई पॉसिबिलिटीस् यामें होवें; क्योंके कुछ क्रियाएं बाहर प्रकट होती होवें, सोर्स् उनके भीतर ही छुपे रहें; और कुछ क्रियाएं भीतर प्रकट होवें पर सोर्स् उनके बाहर ही होवें. कुछ क्रिया ऐसी भी हो सकें के भीतरसु बाहर प्रकट होती होवें पर अपने भीतर उनके सोर्स् खोजवे जाओ तो मिले नहीं.

चार्ट-१

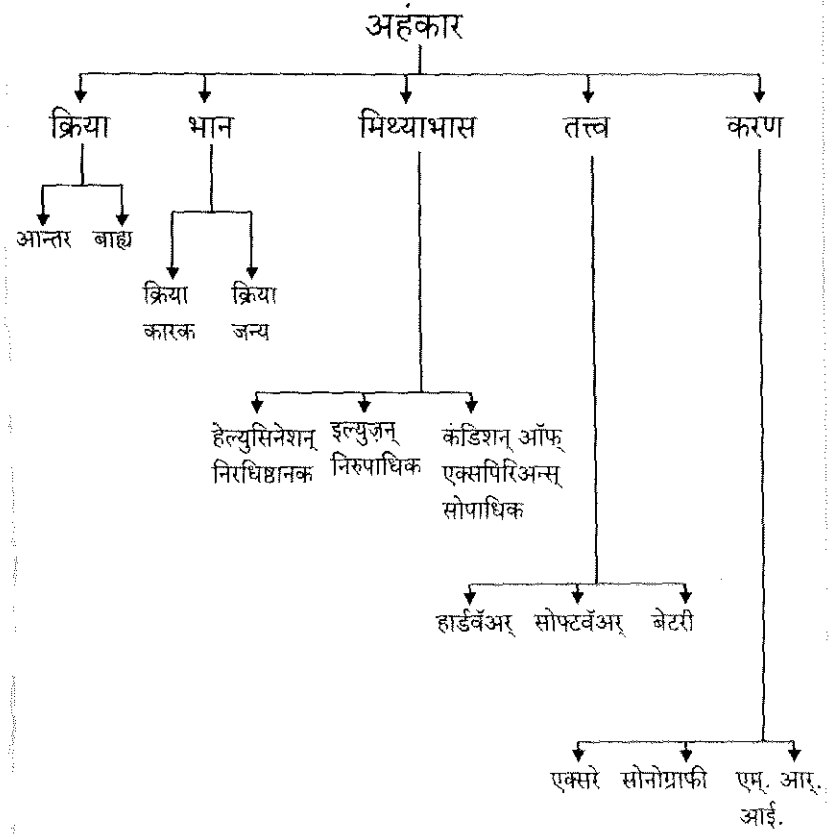

पहेले अपन् बाहर या भीतर के बारेमें सोच लें : मानों के अहंकार अपने भीतर चलती कोई क्रिया हे. अपनो अहंकार अपनेकुं टोटली अपनी पर्सनल् फीलिंग लगे हे और वो अपन् कोईके साथ शेअर् करनो भी नहीं चाहें. जैसो अपनो अहंकार होवे हे, वैसो ही सभीन्को अहंकार होवे तो हे ही.

एक बहोत प्रसिद्ध उदाहरण हे : जैसे चिड़ियान्में मादा चिड़िया नर चिड़ियाकुं अपने पति तरीके तब तक सिलेक्ट् नहीं करे जबतक वो घोंसला बनाके न दिखा देवे. पति तरीके या पत्नी तरीके सिलेक्शन्की जो प्रोसेस् हे वो पूरी अहंकारपे बेस्ड् हे : मैं चिड़िया हुं और मेरे नरकुं घोंसला बनानो आतो होय तो ही मेरे लायक. पक्षी या जानवर भी या तरीकेको ऑडिटेड् अकाउन्ट् नरन्को मांगतें होवें. घोंसला बनाके बता तो जोड़ी जुड़े नहीं तो नहीं जुड़े. चिड़ियाके सामने चीड़ा नाचतो होय तब चिड़िया न जाने कैसे कन्वे करे के घोंसला बनाके बता. जो नर चिड़िया घोंसला बना सके तो मादा चिड़ियाकुं लगे के अब वाके साथ अपनी शादी हो सके. वो तिनका लेके घोंसला बनावें और चिड़ीया चुचुड़ चुचुड़ करती रहे. शायद् कुछ मीनमेख, कम-ज्यादा करवेकी सलाह देती होयगी, गलती भी काढ़ती होयेगी के यामें ये घासको तिनका ऐसो नहीं लानो चहिये थो, या ऐसो लानो चहिये थो. कुछ वा तरहसु करती रहे जब तक नर घोंसला बनावे. पर सक्सेसफुल घोंसला बना दे तो फिर वापें अहंकार स्थापित कर दे के तु मेरो चीड़ा मैं तेरी चिड़िया. अब देखो ये एक अहंकारको प्रकार हे. अहंकार प्रकट कैसे हो रह्यो हे? घोंसला बनायो और यामें अंडा आ रहे होंय तबतक चिड़िया-चिड़ा वाकी जोइन्ट्ली केअर् लेते होवें हें. वा तरीकेको बाह्य क्रियात्मक अहंकार स्पष्ट देख्यो जाय हे. घोंसला बना रह्यो हे तो चीड़ा होवेको अहंकार कामको, नहीं तो बेकारको!

"बाप दाखव नहितर श्राद्ध करा" अहंकार कैसे बाह्य क्रियाके रूपमें प्रकटे हे! पर खुदके बायोलॉजिकल् डिफॉल्ट्सु वा घोंसला जा अंडाके लिये बन्यो हे उन अंडान्मेंसु चिड़िया पैदा नहीं हो जाय तब तक वो मौज निभे हे और तभी तक वो अहंकार भी कायम रहे. ये मेरी चिड़िया—ये मेरो चीड़ा. या तरहसु बाह्य क्रियात्मक अहंकार कायम रहे हे. वा अहंकारके कारण ये घोंसला मेरो. कोई दूसरो चीड़ा आवे तो वो चीड़ा चोंच मार-मारके दूसरे चीड़ाकुं भगावे. हट! ये मेरो घोंसला हे.

उनके यहां जो नॅचरल् सिस्टम् हे वो अपने मानवसमाजमें भी सोशिअल् सिस्टम्, रिलीजियस् ऑब्लिगेशन्/प्रोहिबिशन्; या फॅमिलीकी कस्टम्के रूपन्में काफी कॉम्प्लीकेटेड् बन जावे हे. मगर अपने यहां भी यामें हकीकतकी और कहानीकी कुछ न कुछ पोलंपोल तो दिखाई देगी ही. मगर जैसी भी हे, एज् इट् इज् व्हॉट् इट् इज्, वो अहंकारकुं उठाके चले हे ये बात तो उतनी ही साफ हे. वा तरहको अहंकार अपने भीतरसु प्रकट होवे हे और वा तरीकेके अहंकारसु सारो कोर्स् गाइड् होतो होवे हे.

पुराने जमानेमें अमेरीकाके रेड-इन्डीअन्स्में ये नियम हतो के कोई लड़का दावा करवे लगे के ये लड़कीके साथ मेरी शादी करो और लड़की भी मंजूर करती होय तो वा गरीबकी बड़ी इन्ट्रेस्टिंग् टेस्ट् ली जाती. लड़कीको बाप वा लड़काकुं कहेतो *"जहां लाल चींटीन्को बिल होय वहां जाके सो के दिखाओ! सारी चींटी तुमकुं काटे और सहन कर सकते होव तो मॅरेज् करनेके लायक माने जाओगे"*. या परीक्षामें पास् हो जावे तो लड़कीको बाप मानतो के यामें पति होनेको सच्चो अहंकार हे. वामें यदि भाग गयो तो फेल्. वा पीड़ाकुं सहन कर लेतो वाको अहंकार बूस्ट् होतो. कोई मफतमें थोड़ी लड़की ब्याही हे, इतनी लाल चींटीन्सु शरीरकुं कटवायो

तब लड़की मिली. एक छोटोसो अहंकार के या लड़कीसु मोकुं शादी करनी हे और वाके कारण वाकी बाह्य अभिव्यक्ति चींटीसु कटवाके देनी पड़ती. बाह्य प्रकट होते क्रियात्मक अहंकारको अपन् ऐसे भी उदाहरण दे सकें हें.

अभी कल-परसों ही अखबारमें आयो के पुणे शहरके पास एक बन्दरने एक कुत्ताके बच्चाकुं भगाके ले जावेको प्रयास कियो. मनुष्यन्कुं देख-देखके या बंदरके भीतर मैं भी कुत्ताके बच्चाकुं पाल सकु ऐसो अहंकार हो गयो होयगो. मज़ेदार बात हे! मनुष्य बंदर पाल सके, कुत्ता पाल सके, तो बन्दर क्यों मनुष्यकुं पाल नहीं सके? बंदरको तो काम ही नकल करनो. अब लानो कहांसु? वाने पेड़न्सु उछलकूद करके छोटे कुत्ताके बच्चाकुं किड्नॅप कर लियो! या कुत्ताके बच्चाकुं भगवान्ने मेरे लिये ही जनमायो होयगो, जैसे अपनी पुष्टिमार्गीय हवेलीन्में जो भी भूले-चूके आ जाये वाकुं अपन् पुष्टिजीव मानके भेंट-मनोरथके रुपया ऐंठ लेवेको अपनो भगवत्प्रदत्त या पूर्वजन्मके कर्मन्की लेनी-देनी मान लें! पर वा बंदरको पाल्यो कुत्ताको बच्चा मर गयो सो बंदरने दोबारा खोज करवेकी रु करी.

अब क्या करनो? वा बंदरने मेटरनिटी हॉस्पिटल्के पास जाके एक मनुष्यको बच्चा उठा लियो, जोश आ गयो होयगो. मनुष्य ही पाले ऐसो नियम थोड़े हे? सबके पॅट् हो सकें हें : कोईके घोड़ा होवें, कोईको कुत्ता होवें, कोईके पोपट-चिड़िया होवें. तो बन्दरको पॅट् कोई मनुष्यको बालक क्यों नहीं हो सके! बंदरकी बिचारेकी समझ कितनी? परंतु अहंकार स्वस्थ पैदा भयो के याकुं मेरो पॅट् (पालतु) बच्चा बना लऊं. अब मनुष्य बंदरके बच्चाकुं पालतु बनावे तो कोई अपराध नहीं पर बंदर मनुष्यके बच्चाकुं उठा जाय तो मनुष्यन्कुं लज्जा आवे! मनुष्यके बच्चाके माता-पिताने पुलिसमें कम्प्लेइन् करी के बंदर हमारे बच्चाकुं उठा के ले गयो. सारी टास्क् फोर्स

जुड़ गई और वाके सामने कुछ खावेको डाल्यो. वो बिचारो नीचे उतर्यो तो अचानक झपट मारके वा बिचारेकुं पकड़के झूमें भिजवा दियो. अहंकार देखो कैसे पैदा होवे हे? मनुष्य सब ऐसे ही करतें होयें तो बिचारे बंदरकुं इच्छा होनी नहीं चहिये ऐसे अपन् कैसे केह सकें? क्योंके मनुष्यकी दादागिरी ज्यादा चले यासु बंदरकुं वाके अहंकारको पनिशमेन्ट् झेलनो पड्यो. अपनकुं भी अपने अहंकारके पनिशमेन्ट् मिलते ही होवें. वो तो स्वाभाविक बात हे : **"कही गयो ते कही गयानो वसवसो, रही गयुं ते रही गयानो वसवसो. जिंदगी एक वसवसानुं नाम छे. जिन्दगी बेकार खाली जाम छे"** अहंकार करें तो वसवसो तो रहेगो ही! स्वाभाविक कथा हे. वो अहंकार अपनकुं पता नहीं चले पर वाकी क्रियाके रूपमें जो अहंकार स्पष्ट प्रकट होवे वो दूसरेकी दृष्टिसु छुप नहीं सके.

ऐसे ही आफ्रिकामें सुनामी आयी हती तब एक जमीनके कछुवाकी मां सुनामीमें बह गई. बादमें अचानक एक राइनोसोर् (गेंडा) समुद्रमेंसु निक्ल्यो तो बच्चा कछुवाकुं भ्रांति हो गई के मेरी मां ही तो ये कहीं नहीं? वो वाके पीछे चलवे लग गयो. राइनोसोर् मादा हती. वाने वाकुं अपनो बच्चा मान लियो. मादा गेंडाने वा बच्चाकुं अपनो बच्चा मान लियो और वा बच्चाने मादा गेंडाकुं अपनी मां मान लियो. और वो दोनों मां-बच्चा की तरह रहवे लगे. जैसे मुर्गीके बच्चाकुं बतक होनेको अहंकार हो गयो क्योंके बतकने पाल्यो हतो. परंतु वा अहंकारकी मर्यादा आवे कबतक? वो तलाब तक नहीं जावे तबतक. क्योंके मुर्गीको दादा पिता मां कोई भी तलाबमें नहीं उतरे. हमारे भी पीढ़ीनसु हवेली चल रही हें. भक्तिकुं व्यावसायिक रूप दे दियो गयो यासु सांसारिक अहंकार बढ़ गयो और भक्तिके तालाबमें तैरवेको अहंकार प्रकट हो नहीं पायो. ये सब अहंकारकी बाह्य क्रियाएं हें.

ऐसे ही अहंकार, अपने भीतर ब्लड्सर्क्युलेशन् टाइपकी, केवल आन्तरिक क्रिया भी हो सके हे. आन्तरिक क्रियाकी सबसु मजेदार बात मेंरें दोहित्र निमिने समझायी. निमिकुं मैंने ब्रह्मसम्बन्ध दियो. वाने आके एक दिन मोकुं कही *"नाना! आपकुं याद हे न के आज आपने मोकुं ब्रह्मसम्बन्ध दियो?"* खुद मैंने ब्रह्मसम्बन्ध लियो वो दिन भी मोकुं याद नहीं तो वाकुं दियो वो दिन कहां याद रखवे जाउं? वाकुं पता नहीं कैसे याद रेह गयो! मैंने कही *"बेटा याद नहीं हे."* वाने कही *"आप भूल कैसे गये?"* अब निमिके लिये ये एक अच्छे अहंकारको विषय हतो के "आज मैंने ब्रह्मसम्बन्ध लियो हतो" और यासु वो दिन वाकुं याद हे. सुबह-सुबह उठते ही वाने मोकुं ग्रीटींग् दे दी परन्तु वो नानाकुं याद नहीं जानके वाने सोचनो रु कियो और बोल्यो *"मुझे ऐसा लगता हे नाना के आपका पेट बड़ा हे तो जितना खाते हो उसका खून पेटमें ही घूमते रहेता होगा, सिर तक पहुंचता नहीं होगा. इसलिए भूल गये लगते हो!"*

अहंकार कैसी आन्तरिक क्रिया हे तो अहंकारके बारेमें या तरीकेकी हाइपॉथिसिस् कर सके के अहंकार भी या तरहको अपनो कोई इन्टर्नल् फन्क्शन् हे. मे बी निमि इज् राईट्. वाके ब्रेन्में सर्क्युलेशन् ज्यादा जा रह्यो होयगो. हो सके के वाके नाना भीतर बताये कारणसु ही भूल जातो होय. अहंकार भी ऐसी कोई आन्तरिक क्रिया क्यों नहीं हो सके हे? ये अपन् समझ सकें हें, विशेषतया तब के जब महाप्रभु आज्ञा करें हें के **"अहंकारं न कुर्वीत"**.

अब यदि अहंकार आन्तरिक क्रिया होय तो अपनो बस नहीं चल सके. योगकी बहोत साधना करें तो ब्लड्-सर्क्युलेशनपे अपनो कन्ट्रोल् ला सके. यदि अहंकार आन्तरिक क्रिया हे तो क्या करवेसु अहंकार नहीं होयगो? ये प्रॉब्लम् तो आयेगी.

यदि अहंकार बाह्य क्रिया हे तो जो भी बाह्य क्रिया अपन् प्रकट करें हें वाके अपनेकुं रिवॉर्ड या पनिश्मॅन्ट् मिलते होवें हें. और इन्सिडेन्टली अपने साथ ये सुविधा हे के बाह्य क्रिया प्रकट करनेके पहेले अपन् वा क्रियाकुं चाहे तो विद् ड्रॉ कर सकें हें. कोई बखत प्रकट हो जाय हें पर जरूरी नहीं हे के हर बाह्य क्रिया अपनेसु इन्वॉलन्टरी ही होती होय. बाह्य क्रियाके साथ अपने वॉलन्टरी फन्क्शन् भी जुड़े होनेके कारण. यासु अहंकार यदि एक बाह्य क्रिया होय तो वापे अपनो कोई न कोई वॉलन्टरी कन्ट्रोल् आवे हे. १००% नहीं आतो होय तो ५०% या ३०% तो आयेगो ही. क्यों आयेगो? क्योंके हर बाह्य क्रियाको कुछ न कुछ रिवॉर्ड होवे हे या कुछ न कुछ पनिशमॅन्ट् होवे हे. जैसे बंदरकुं अपनी स्वतन्त्रता खोनी पड़ी. बाह्य क्रियाके रूपमें यदि अहंकार होवे तो वो रिवॉर्ड या पनिशमॅन्टसु अपनी क्रियाको कन्ट्रोल्में आ जाती होवे हें. भय या काम सु क्रियान्पे कन्ट्रोल् आवे हे.

(क्या अहंकार एक भान हे?)

नेक्स्ट् बात भानकी अपनकुं देखनी हे. अहंकार अपनी क्रिया नहीं होके अपने भीतर घटित होती कोई फीलिंग् हो सके हे. फीलिंग् पाछी दो तरहकी हो सके हे. कुछ फीलिंग्स् ऐसी होवें हें के क्रियाकुं पैदा करती होवें हें. कुछ फीलिंग् क्रियाकुं रॅसिप्रोकॅट् करती भयी भी होवें हें. क्रिया पैदा करवेवाली फीलिंग् कैसे? सायकॉलॉजीमें याको बहोत विचार मिले हे, अपने यहां भी याको बहोत विचार हे. अपन् अपनी टर्मिनॉलॉजीमें सोचें. काम क्रोध लोभ मोह प्रभृतिकी अपनी फीलिंग्स्के हिसाबसु अपनी बाह्य क्रिया प्रकट हो जायेगी. कुछ-कुछ फीलिंग्स्कुं आउट्लेट् मिल जावे. भीतरकी फीलिंग्स् हें वो क्रियाकुं पैदा करें हें. और कई बखत भीतरकी फीलिंग् इतनी स्ट्राँग् होवें के उन फीलिंग्स्के कारण वाकुं एक्स्प्रेस् करवेवाली क्रियापे अपनो कन्ट्रोल् रेह नहीं जाय. जैसे गुस्सा आ रह्यो हे तो गाली निकल

जायेगी. हंसी आ रही हे तो "हाऽ हाऽऽहा" हो जाय. अपन् चाहें के कन्ट्रोल् करे पर कन्ट्रोल् नहीं कर सके.

पोरबन्दरबाले श्रीद्वारकेशलाल काकाजी लीला पधारे और उनकी शोकसभा भयी. वामें दादाजी मैं तथा अन्य भी कई शामिल भये हते. वामें एक शास्त्रीजी भी आये. उन्ने शोकसभामें बोलनो रु कियो *"पोरबन्दरवाला महाराजश्री अमारा ऊपर बहु कृपा राखता ऊंऽऊंऽऊंऽऽ... ज्यारे पण जाउं त्यारे मने प्रसाद लीधा विना जवा न दे ऊंऽऊंऽऊंऽऽ..."* मैंने कही शोकसभामें ये 'ऊंऽऊंऽऊंऽऽ' क्या हो रही हे! अब मोकुं हंसी आनी शुरु भयी. बहोत कोशिश करी के शोकसभामें हँसनो नहीं चहिये पर करूं क्या? वक्ताके भाषणमें 'ऊंऽऊंऽऊंऽऽ' निकले तो हँसी कैसे रोकी जा सके? फिर भी हँसी रोकवेके सारे प्रयास कठिन लगते होवेसु मैंने दादाजीकी तरफ ताक्यो तो देख्यो के दादाजीकुं भी हँसी तो आ रही थी और हँसीके मारे दादाजीको चहेरा एकदम लाल तमतमायो भयो हतो पर चहेरा गंभीर हतो और हंसीके कारण खाली पेट हिल रह्यो हतो. दादाजीके हिलते पेटकुं देखके तो मेरी हँसी अन्तमें छूट ही गई! बहोत डाँट पड़ी पर क्या कियो जा सके जब पेट हिलतो दीखे तो अधिक हँसी आनी स्वाभाविक हती. यामें अपनो वॉलेन्टरी कन्ट्रोल् कैसे रह सके? क्रियाकारक भान ऐसे होवें हें. या तरहकी कुछ क्रियाएं जैसे बियॉन्ड् कन्ट्रोल् होवेसु प्रकट हो जायें ऐसो ही अहंकार भी हो सके हे.

कहीं न कहीं जो शास्त्री उंऽउंऽऽ कर रह्यो हतो वो एब्नॉर्मल् लग्यो परन्तु साथ ही साथ मेरेकुं मेरे नॉर्मल् होनेको अहंकार हतो. यदि मेरेकुं भी उंऽउंऽऽ करवेकी आदत होती तो मोकुं अहंकार नहीं होतो. अपनेकुं दूसरेपे हँसी आवे? क्योंके मेरेकुं वो आदत नहीं हती यासु मोकुं लग्यो के एब्नॉर्मल् कॅरॅक्टर् हे. वो एब्नॉर्मल् कॅरॅक्टर् जज् करवेके लिये "मैं नॉर्मल हूं" ऐसो अहंकार मेरे भीतर काम

कर रह्यो होयगो.

यदि अपने पुष्टि-अस्मिताके गानमें कोईकुं अहंकारकी गंध आती होय तो सब गाने लगो. नॉर्मल् हो जायेगो. फिर हँसनेको कोई चान्स् नहीं रह जायेगो. अहंकार एक भान हे, एक ऐसो भान हे जा भानके कारण अपनी कोई क्रियाएं बियॉन्ड् कन्ट्रोल् एक्स्प्रेस् हो जाती होंय. अहंकार भी या तरहसु अपनो आउट्लेट् खोज ले हे, फीलिंग् होनेके कारण.

(क्या अहंकार अपने भीतर स्रवित होनेवालो कोई बायोकॅमिकल् तत्त्व हे ?)

कुछ फीलिंग्स् क्रियाकी जनक नहीं भी होती होंय पर जो क्रिया अपने भीतर प्रकट होती होंय वा क्रियाकी कॉरस्पॉन्डिंग् अपनी इमोशनल् स्टेटस् होवे हें. ये बात मैं पहेले भी बता चुक्यो हुँ. जॅम्स् लेंग् करके बहोत बड़े सॉयकॉलॉजिस्ट् भये. उनने ये बात बताई हे. अपने शरीरमें बहोत सारे एक्शन्स् या तरीकेके होवें के जो अपने शरीरकी सर्वाइवल्की किट् होवें हें. वो अपने भीतर इम्प्लान्टेड् होवें हें और वा किट्स्के हिसाबसु अपने शरीरमें कुछ न कुछ कॅमिकल् सीक्रेशन् होतो रहे हे. यासु जो सिच्युएशन् अपनो शरीर फेस् करे तब इमीडियेट्ली याने परसॅप्शन्के अथवा वैसे जजमॅन्ट्के साथ ही के ये शरीरके लिये डेन्जरस् सिच्युएशन् पैदा भई हे तो तुरंत बॉडीमें वा तरीकेके स्राव होने शुरु हो जायें. कई सारी ग्लेन्ड्स् अपने भीतर होवें जिनमेंसु शरीरमें जगह-जगह अन्तःस्राव होतो रहे. जैसे सरदीमें अपनी नाक बहे तो वो एक जातको स्राव हे. नाकमेंसु कोई चीज़ सांसनलीमें न चली जाय यासु तुरंत नाक बहने लग जाय. यासु सांसनली प्रॉटेक्टेड् रहे. जो कुछ तकलीफ हे वो नाक तक रहे. या तरहसु अपनी बॉडीके हर पार्टमें स्रावकी अनेक व्यवस्था हें. उन सीक्रेशन्के कारण अपनी बॉडी ऑल्मोस्ट् मॅकॅनिकली फंक्शन्

करे हे. याको प्रसिद्ध उदाहरण सॉयकॉलॉजिस्ट् ऐसे देवें के जैसे तुम रोड क्रॉस् कर रहे हो और सडन्ली तुमको बस दीख गई. वा बखत फिलोसॉफी छांटने लगोगे के बस कितनी देरमें यहां तक आयेगी, बसकी चपेटमें आये तो क्या परिणाम हो सके... तो बस तो चढ़ेगी ही तुम्हारे ऊपर. अपन् रोड़ क्रॉस् करते होंय और बस आ रही हे तो अपने ब्लड्में या तरीकेके कॅमिकल् सीक्रेशन् हो जावें के अपनी गति क्रॉस् करवेकी तेज़ हो जाय और अपन् रोड् क्रॉस् कर जायें. वा बखत जज्मेन्ट् लेवको टाइम् नहीं हे.

मेरे साथ कई बार ये प्रॉब्लम् होवे. मैं गाड़ी यही लिये नहीं चला सकुं क्योंके जब कोई ऐसी सिच्युएशन् आ जाय तो मेरी थॉट्प्रोसेस् पेहले स्टार्ट हो जाय बजाय सीक्रेशन्के. एक बार बोरिवलीमें मैं पीवेको जल कहीं दूसरे कुआसु लेके गाड़ीमें आ रह्यो हतो. अचानक बीचमें खंभा आ गयो. मोकुं इतनो गुस्सा आयो के अभी गाड़ी चला रह्यो हुं तब बीचमें खंभा कैसे आ गयो ? तो खंभाकुं धक्का मार्यो, खंभा तो सरक्यो नहीं पर मेरो हाथ छिल गयो. स्टीरिंग्पे कन्ट्रोल् करवेको सीक्रेशन् होनो चहिये हतो वो नहीं भयो. बहोत सारी क्रियान्में या तरीकेको फिनॉमिना घटित हो जावे हे. अपन् कोई क्रिया करे वाके कॉरस्पॉन्डिंग् अपनी फीलिंग् तुरंत प्रकट हो जाय. वो फीलिंग् क्रियाकुं पैदा करवेवाली नहीं होवे परन्तु क्रियाके अनुरूप पैदा होती होवे हे. यासु अहंकार कोई तरहकी अपनी सर्वाइवल् किट्स् हे ऐसी के जो अपन् क्रिया करते होंय उन क्रियान्कुं भलीभांति कर पावें वाके लिये अपनी सिर्फ कॉरस्पॉन्डिंग् फीलिंग् हे.

(क्या अहंकार कोई एपिफिनोमिना अर्थात् मिथ्याभास हे ?)

अंग्रेज़ीमें याके लिये बहोत अच्छो शब्द हे 'एपीफिनॉमिना'. जो फिनॉमिना नहीं हे पर मिरर्में रिफ्लेक्शन्के जैसो होवे वो एपीफिनॉमिना.

एक्च्युअली नहीं हे फिरभी कुछ प्रकट होतो लगे. अपनो अहंकार एक्च्युअली फिनॉमिना नहीं हे पर स्टिल् इट् इज अॅन् एपीफिनॉमिना. दॅट् इट् अपीयर्स् टु बी अक्रई व्हेर् एक्च्युअली इट् डज् नॉट् एक्जिस्ट्. जो सचमुचमें हे नहीं पर वा तरीकेको एक झांसा—एक फॉल्स् फीलिंग् पैदा करे हे. क्रियाके कॉरस्पॉन्डिंग् एक अहंकारकी फीलिंग् हो जाय. कुछ क्रियाएं अपनूंकु अपने सर्वाइवल्के लिये करनी पड़ें हे.

'जन्मभूमि' समाचारपत्रके सम्पादक हरीन्द्र दवेको एक अच्छो गुजराती शेर हे :

''मारुं स्वमान रक्षवा जातां कदी-कदी
हुं करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी.''

हर आदमीको एक स्वमान होवे हे. वो स्वमान कोई खतरामें पड़े तो आदमी पैर भी कोईके चूम ले. वो पैर चूम रह्यो हे या लिये नहीं के वामें सचमुचमें वा तरीकेकी महत्ता हे पर अपने अहंकारकुं कथंचित् बचाये रखवेको वो उपाय बन जावे. अपने स्वमानकुं बचावेके लिये वा बखत रेडीमेड् डिवाईस् अपने पास वो ही हे. अपन् पैर पड़के कोई तरहसु भाग निकलें वहांसु के चल छूट यहांसु **''मारुं स्वमान रक्षवा जाता कदी कदी हुं करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी''** तो अहंकार एग्ज़ॅक्ट्ली अपोज़िट् तरहसु भी काम कर सके हे. प्रश्न हो सके के ''अहंकार हे तो पैर क्यों पड्यो?'' पर वास्तविकता ये ही हे के अहंकारी हतो यासु पैर पड्यो. क्योंके वाकुं लग्यो के कहीं मेरो ईगो हर्ट् न हो जाय. तो पैर पड़के कोई तरहसु ईगोकुं बचा सकते होय तो बचा लेनो चहिये.

पैरमें पड़वेकी क्रियाके कॉरस्पॉन्डिंग् अपने भीतर जागती स्वमानकी

एक फीलिंग् हे. पर्शीयन्में याके लिये दो अच्छे शब्द हे : एक शब्द हे 'रुआब' और दूसरो शब्द हे 'आबरु'. 'रु' को मतलब पर्शीयन्में होवे हे मुंह, 'आब'को मतलब होवे हे पानी. रुआब= चेहराको पानी. 'आबरु' को मतलब भी आबे-रु मने पानी. वहां भी वो ही अर्थ हे. पर 'रुआब' और 'आबरु' दोनोंके मतलबमें बहोत फर्क हे. रुआब अहंकारके साथ जाती कोटि भई. और आबरु **''मारुं स्वमान रक्षवा जातां कदी-कदी हुं करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी''** वो आबरुवाली बात हे, रुआबवाली नहीं. यामें आदमी सबसे पहेले अपनो पानी दिखा रह्यो हे के अपनो फेस् दिखा रह्यो हे? पहेले पानी दिखा रह्यो मतलब आबरु और पहेले फेस् दिखा रह्यो हे तो रुआब. अन्तर इतनो ही हे.

आदमी दिखानो क्या चाह रह्यो हे? मेरे साथ मज़ेदार घटना भई हती. एक सितारवादक, मैं किशनगढ़में हतो तब अचानक आये. आके मोसु कही के ''महाराज सितार सुनो''. मैंने कही के ''सुन लेंगे शामको''. वाने कही ''सब सर्टिफिकॅट् देखो''. मैंने कही ''सर्टिफिकॅट् क्यों देखें, सितार सुनवे तैयार हुं, सितार ही सुन लेंगे शामको''. बोले ''नहीं, सर्टिफिकॅट् देखो सब''. तब मेरो पित्ता उछल गयो. मैंने कही ''एक शर्तपे मैं सर्टिफिकॅट् देखवे तैयार हूं के फिर सितार नहीं सुनुंगो''. वाने निकाले २००-२५० सारे सर्टिफिकॅट् स्कूल्के बच्चानूंके प्रिन्सिपल्के हते. बच्चाके सामने सितार बजाई हती. वाने शायद मोकुं गोस्वामिबालक समझके सारे सर्टिफिकेट् दिखाने चाहे होयेंगे और मैंने भी बहोत सिन्सीयर् होके १५०-२०० सर्टिफिकॅट् ध्यानसु पढ़के देखे. फिर मैंने कही ''अब सितार नहीं सुनुंगो''.

(मिथ्याभासरूप अहंकार रुआब हे अथवा आबरु?)

आदमी कभी पानी दिखानो चाहे हे. यासु कोईके भीतर रुआब होवे हे कोईकी आबरु होवे हे. जो पेहले फेस् दिखानो चाहे तो

रुआब हो गयो. पानी वहांको पीछे चल्यो जाय. आबरुमें पानी पेहले दीखे अपनेकुं. फेस् पानीदार होयगो तो पानी तो पीछे दीखे ही. कोई पार्ट्ली दीखे, कोईको पेहले फेस् दीखे. अहंकारके दोनों ही फॅसॅट्स् हें. रुआब भी एक फॅसॅट् हे और आबरु भी एक फॅसॅट् हे. हरीन्द्र दवे यामें केह रह्यो हे **''मारु स्वमान रक्षवा जातां कदी-कदी हुं करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी''** और महाप्रभु देखो वो ही बात बता रहे हें **''अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्''** तो मान विसाविस् अहंकार. रूआब और आबरू दोनोंकुं महाप्रभुजीने यहां कोई तरहसु पकड़नो चाह्यों हें. वो टेक्सट्की लाइन् हे वाकी ये खुबसूरती आप देखोगें तो बड़ो मजेदार एस्पॅक्ट् हे.

सो अपन् समज सकें के ये जो अहंकार एक भान हे तो वो क्रियाको पैदा करवेवालो भी हो सके हे और क्रियासु जन्य कोई कॉरस्पॉन्डिंग् भान भी हो सके हे. जेम्स लेंग् ये कहतो थो के भयकी अपनी फीलिंग्स् अपन् दौड़ रहें हें यालिये पैदा होवे हे. अपन् दौड़नो बंद कर दें तो भयकी फीलिंग् घटने लग जायेगी. अपन् झगड़ा करें हें वा लिये क्रोधकी फीलिंग् बढ़ती चली जाय. झगड़ापे काबू पा लो, क्रोधकी फीलिंग् धीरे धीरे कम होती चली जायेगी. अपन् हा हा हा करके हंस रहे हें करके मनमें कोई टिकलिंग् होवे हे. अपन् हसवेपे काबू पा लें तो मनमें जो टिकलिंग् हो रही हे वो ऑटोमॅटिकली सबसाइड् हो जाय हे. ऐसे ही अपन् रोनो शुरु करें तो दुःख अपनो बढ़तो चल्यो जाय. अपन् रोनो बंद कर दें तो वो दुःख भी धीरे-धीरे सबसाइड् हो जातो होवे हे. तो बहोत सारी अहंकारकी अपनी फीलिंग्स् हें वो यही तरहसु हे. अहंकारकी जो क्रियाएं हें उनकुं करवेकी महाप्रभु ना केह रहें हें **''अहंकारं न कुर्वीत.''** ऐसे करें तो ऑटोमॅटिकली जो रुआबवालो अहंकार हे वो धीरे-धीरे सबसाइड् होवे लगेगो. ये वाको सायकोलोजिकल् फॅसॅट् हे. अपन् जो क्रिया प्रकट कर रहे हें वासु वाके कॉरस्पोन्डिंग्

अपनी केवल एक फीलिंग् अहंकार हो सके हे.

अहंकार एपिफीलिंग् जैसो भान हे अर्थात् मिथ्याभास हे. याके साथ ही साथ मिथ्याभास जो होवें हें वाके तीन तरेहके स्वरूप संभव हें :

(१)कुछ मिथ्याभास अपने शरीरमें हॅल्युसिनेशन् टाइप्के होवे हें.
(२)कुछ मिथ्याभास अपने इल्युजन् टाइप्के होवें हें.
(३)कुछ मिथ्याभास अपने कन्डीशन् ऑफ् एक्स्पीरिअन्स्-के जैसे भी हो सकें हें.

ऐसे तीन तरीकेके मिथ्याभास होवे हें. अहंकार उनमेंसु क्या हे? ये अपनेकुं सोचनो चहिये के क्या अहंकार अपनेकुं होतो भयो एक हेल्युसिनेशन् हे. क्या अहंकार अपने भीतर होतो भयो कोई इल्युज़न् हे. या क्या अहंकार अपने भीतर कोई या तरीकेकी एक्स्पीरिअन्स्की कन्डीशन् हे के जब भी कोई एक्स्पीरिअन्स् अपनुकुं होयेगो तो ऐसे ही होयेगो. अहंकारके इन तीन रूपनमेंसु भी कोई रूप हो सके हें.

(१-२)जैसे एक सामान्य बात बताऊं : दो दोस्त हें. समझ लो के एक दोस्त आशावादी हे और दूसरो दोस्त निराशावादी हे. अब उन दोनों दोस्तन्ने कोई दिन क्रिस्मस्पार्ट्रीमें या कोई पार्ट्रीमें बोटल् चढ़ाई और वो चढ़ गई. तब वो दोनोंन्को अहंकार, एकको आशावादी अहंकार (ऑप्टिमिस्टिक् ईगो) एकको निराशावादी अहंकार (पॅसिमिस्टिक् ईगो) बूस्ट् हो जायेगो के नहीं? क्योंके बोटल्को माहात्म्य ही ऐसो होवे हे के अपने भीतर जो फीलिंग्स् होवें उनकुं बूस्ट् करे. तो एकके भीतर पॅसिमिस्टिक् टेन्डन्सि होय तो वाको पॅसिमिस्टिक् ईगो बूस्ट् हो गयो. दूसरेके भीतर ऑप्टिमिस्टिक् टेन्डन्सि

होय तो ऑप्टिमिस्टिक् ईगो बूस्ट् हो जायेगो. वो बोटल्के कारण अब दोनों घूमने चले. नदीके ऊपर एक पुलपें आये. पुलपें आके उनने नीचे देख्यो के चंद्रमाको प्रतिबिम्ब नीचे नदीमें दीख रह्यो हतो. पॅसिमिस्टिक् जाको ईगो हतो वाने कही के *''अरे यार! गड़बड़ लग रही हे, चंद्रमा नदीमें नीचे गिर गयो लगे हे. क्या चक्कर हे आज? आसमानमेंसु नदीमें कैसे आ गयो चंद्रमा!''*. दोनों ही बोटल् तो चढाये भये ही हते सो ऑप्टिमिस्टिक् ईगो हतो वाने कही *''बेवकूफ! तु समझे नहीं हे. आज अपन् चंद्रमासु भी ऊपर आकाशमें अधिक ऊंचाईपे पहुंच गये हें''* अब बताओ कौन सच्चो और कौन खोटो? कौनको अहंकार सच्चो या कौनको अहंकार खोटो? बड़ी मजेदार बात हे. दोनोंन्के भीतर भावनान्की कुछ-कुछ गड़बड़ी हो रही हें. दोनोंन्के ईगो कोई-कोई तरहसु जो घटना या अनुभूति हो रही हे वाकी अपनी-अपनी व्याख्या दे रहे हें. नदीमें चंद्रमाको जो रिफ्लॅक्शन् पड़ रह्यो हे वो तो एक कॉमन् फिनॉमिना हे पर वो कॉमन् फिनॉमिनाको इन्टर्प्रिटेशन् दोनों बाट्लीबाज अपने-अपने ईगोके ढंगसु कर रहे हें. एकके लिये चंद्रमा नीचे आ गयो हे और दूसरेके लिये वे खुद दोनों चंद्रमासु भी ऊपर पहोंच गये हें अहंकार इतनो बूस्ट् हो गयो.

मूलमें या दृष्टान्तमें समझवेकी बात ये हे के एककुं हेल्युसिनेशन् हो रह्यो हे तो दूसरेकुं इल्युज़न्. अब पता लगाओ. यामेंसु कौनकुं हेल्युसिनेशन् हे और कौनकुं इल्युज़न् हे? मैं तो आपकुं बता ही रह्यो हुं पर आप स्वयं भी ट्रायल्-एरर् मेथड्सु सोचो. एक जनो हॅल्युसिनेशन्सु सफर् कर रह्यो हे और दूसरो इल्युज़न्सु सफर् कर रह्यो हे. कौनको हॅल्युसिनेशन् हे और कौनको इल्युज़न् हे? देखो मैं हॅल्युसिनेशन् और इल्युज़न्को डिफरॅन्स् आपकुं समझाउं तब आपकुं सारी बात क्लीअर् होयेगी. इल्युज़न् एक ऐसो कन्फ्युज़न् होवे के जामें अलग-अलग वस्तु एक-दूसरेसु रिज़ेम्बल् करती होंय, जैसे साँपपें

रस्सीको इल्युज़न् या रस्सीपे साँपको इल्युज़न्. रिज़ेम्बलन्स्कुं अपन् जा वखत बराबर मार्कआउट् नहीं कर सकें और कोई कारणसु अपनी मेन्टल् फॅकल्टी बराबर कॉन्सन्ट्रेट् नहीं कर पाती होय, तो रिज़ेम्बल्न्स्की अवेरनेस् इल्युज़न् बनके प्रकट होवे. अपन् वाकुं रिज़ेम्बल्न्स् तरीके रिकॉग्नाइज़् करवेके बजाय दोनोंकुं एक दूसरेसु आइडॅन्टिफाय् कर ले.

और हेल्युसिनेशन् तो रिज़ेम्बलन्स्को मोहताज नहीं हे. हेल्युसिनेशन् तो क्या हे? जो बिना कोई रिज़ेम्बल्न्स्के कन्फ्युज़न् हो जाये. कोईकुं भूत दीखे, कोईकुं प्रेत दीखे हे, कोईकुं पिशाच दीखे हे. ये सब क्या हे? जहां दीखते होंय वहां कोईको भूत प्रेत या पिशाच सु रिज़ेम्बल्न्स् होवे हे का? पर दीखते होंय तब तो दीखते ही होंय. देखो मैंने क्लू दे दी हे के कहां हेल्युसिनेशन् हे? और कहां इल्युज़न् हे? जाकुं नीचे दीख रह्यो हे वाकुं इल्युज़न् हो रह्यो हे और जाको मैं ऊपर उठ गयो लगे वो हेल्युसिनेशन् हे. क्यों? क्योंके चंद्रमा जो ऊपर हे वाको रिफ्लॅक्शन् नीचे दिखाई दे रह्यो हे वो इल्युज़न् ही तो हे. वा इल्युज़न्पेसु वाकुं ईगो बूस्ट् होके केह रह्यो हे के *''ये चंद्रमा कैसे नीचे आ गयो''*. क्योंके वाको ईगो बेज़ीकली पॅसिमिज़्ममें ही सोचे हे. हर चीज़ जो हे वो या तरीकेसु डाउन् फॉल् हो रही हे.

अभी मेरेकुं बहोत अच्छी एक बात सुननी मिली के पेहले हमलोग ऐसे सोचते हते के ठाकुरजी हमारे हे वो हमारे माथेपे बिराज रहें हें. ठाकुरजी यदि मेरे माथेपे बिराजते होय, मेरे होंय तो उनकी तो मेरे घरमें मोंकुं सेवा करनी चहिये. मेरे पैसासु करनी चहिये. गामकुं बुलायो, गामसु पैसा लेनो रु कियो, गामने ऐसो दावा मांड दियो के ये तो हमारे ठाकुरजी हें. अब गामने दावा मांड दियो, काफी गुसांईएं कोर्टमें लड़-लड़के सब हार गये. क्योंके भक्तिके व्यापारिक प्रदर्शनके काम खोटे हते. जीतते कैसे कोर्टमें? कोर्टने यही पूछी के यदि तुम्हारे हें तो गामसु पैसा क्यों लिये?

गामको दिखाये क्यों? खुदकी बहुजीनूकुं तो परदामें रखी पर ठाकुरजीनूकुं बेपरदा कर दिये! कोर्टके समझमें नहीं आयी बात. कोर्टने कही के तो फिर गामको दिखायो और गामसु पैसा लियो तो ठाकुरजी गामके ही हें. अब बालक यों केह रहें हें के हां गामके ही तो हें, हमारे नहीं हें. कानून ही ऐसो हे के हमारे हें ही नहीं!

अब देखो के या बातको भी सच मानके चलें के गामके ही ठाकुरजी हें, फिर आपके ही ठाकुरजीके पास ब्रह्मसम्बन्ध लेवेकी जरूरत क्या? कोई भी गामके ठाकुरजीके पास कहीं भी कोई ब्रह्मसम्बन्ध ले सके. फिर तो किरीटभाईके पास क्यों ब्रह्मसम्बन्ध नहीं लियो जा सके? ऐसो सवाल उठते ही पुष्टिमार्गके एकमात्र ठेकेदार होवेको हम गुसांईनूको हेन्गओवर् कम हो जाय और केहनो पड़े *"नहीं-नहीं ब्रह्मसम्बन्ध तो हमसु ही लेनो."* याको सॉल्युशन् कैसे आ सके. निरंतर हेल्युसिनेशन् और इल्युज़न् को जीवनमें चक्कर चलतो ही रहे. कभी हम अपने बारेमें सोचें के हम साक्षात् पुरुषोत्तम हें, कभी अपने बारेमें सोंचे के हम तो गुरु भी नहीं हें खाली पुरुषोत्तमके हेरिडिटरी ट्रस्टी-कम्-सेवायत हें. कभी अपनेकुं कुछ और सोचें. पर अरे भई! तुम अपने महाप्रभुको ही सिद्धान्त क्यों नहीं सोच पाओ हो? खोटे-खोटे हेल्युसिनेशन्-इल्युज़नके शिकार क्यों बनो हो?

कल मैं आपकुं एक बात बता रह्यो हतो. बड़ी मज़ेदार बात हे. आपकी बातपे मैं केह रह्यो हुं के अपन् सब जानें हें के **"चतुःसागरपर्यन्तं गोब्राह्मणेभ्यः शुभं भवतु! आंगीरसबार्हस्पत्यभारद्वाजेति त्रिप्रवरान्वितभारद्वारजगोत्रोत्पन्नोऽहं श्याममनोहरदेवशर्माहं भो गुरो अभिवादये"** हर ब्राह्मणके या तरेहके टाइटल् हते ही. वो टाइटल् बेज़िकली क्या हते? कौन कौनसे ऋषिकी संतति हे? कौनसे ऋषिकी वंशपरंपरामें पैदा भयो हे. कौनसो शास्त्र पढ़नो कौनको कर्तव्य हे? और अन्तमें व्यक्तिनाम? दो ही बात तो हती.

तो **''कृष्णयजुर्वेदान्तर्गत-तैत्तिरीयशाखाध्यायी''** और फिर क्या आतो थो **''श्याममनोहर...शर्माहम्''** अब बालकन्के ऐसे बड़े-बड़े लीतर्या-पीतर्यान्के सर्टिफिकेट् अपने नामके आगे लगाने पड़ें के दीमाग खराब हो जाय. इतने लम्बे टाइट्ल् हो कैसे गये? क्या महाप्रभुजीकी कोई भी इतिश्रीमें अपन्कुं ऐसो मिले हे? अणुभाष्यमें देखोगे तो वामें ''वेदव्यासविष्णुस्वामिमतानुवर्तिवल्लभाचार्य'' सुबोधिनीमें देखोंगे **''श्रीलक्ष्मणभट्टात्मजवल्लभट्टविरचिता सुबोधिनी''**. षोडशग्रंथ देखोगें तो खाली **''श्रीवल्लभाचार्य''** लिख्यो मिलेगो. महाप्रभुने कोई टाइटल् लगायो नहीं. क्योंके बेज़िकली महाप्रभुजी कोई अहंकारसु सफर् नहीं कर रहे थे. अपन् लोगन्की प्रॉब्लेम् क्या हो गई हे के बड़े-बड़े अहंकार अपन्ने अपने भीतर पाल लिये हें के हम महाप्रभुके वंशज बालक हें, ढीकड़े हें, पूछड़े हें. और यों एकके बाद दूसरे टाइटलन्को दौरा पड़ गयो हे. पता ही नहीं चले के सच्चो नाम कब आयेगो, धीरज ही खूट जाय टाइटल् पढ़ते-पढ़ते :

''अखंडभूमण्डलाचार्य-जगद्गुरु-अनन्तश्रीविभूषित-लस्टक पुस्टअनुष्टकतुष्टकघटाटोपटंकार-कोकिलानंदरायश्री १०८ चिरायुष्मान पब्लिकट्रस्टहवेलीकी आयमें २०/३०% लाभग्राही युवाधर्माचार्य पू.पा.बावाश्री... महोदय''.

अरे भाई! ये क्या नाटक चला रख्यो हे? अखिलभूमण्डलाचार्य तो जगद्गुरुसु बड़ो होवे. वो टाइटल् जब स्वयं ही लगा लियो तब जगद्गुरु होवेकी पदावनति खुद क्यों स्वीकारो हो! 'अनन्तश्रीविभूषित' जब हो गये तो फिर 'श्री १०८' क्यों लगा रहे हो! सचमुचमें महोदय हो तो पब्लिकट्रस्ट बनी हवेलीकी आयमें २०/३०% लाभग्राही बन क्यों गये? सो टाइटल् इतने बड़े-बड़े पर देखें तो साव अर्थहीन लगें हें!

महाप्रभुजीने तो कभी नहीं वापरे. क्यों ऐसे टाइटल् वापरो हो? भीतरसु स्वाभिमान खतम हो गयो हे और बाहर वाको हउवा खड़ो करनो चाहो हो. 'रुआब' और 'आबरु' को आखो ईश्यु या तरीकेसु समझें तो खोटो रुआब हम छांट् रहे हें. बाकी इतने सब लम्बे टाइटल्सु कुछ गौरव बढ़े नहीं हे. नाम सीधो ही बता दो क्या हे? पर भीतरसु नर्वस् फील् होतो होय तो फिर अपनेकुं ऐसे ताम-झाम पैदा करने ही पड़ें हें, अपने खोटे अहंकारकी सुरक्षाके लिये. महाप्रभुकी आबरु हती पर उनमें रुआब नहीं हतो. अब रुआब बढ़ गयो पर आबरु एकदम ज़ीरो पॉइन्ट्पे गिर गयी हे. ट्रस्टी आके केह दे के हमारे ठाकुरजी हे तो हम ये मान लें के हां ठाकुरजी तो ट्रस्टके ही होवें.

हमारो घर भी ट्रस्टको ही हे. हमारी व्यवस्था भी ट्रस्ट ही चलावे हे. और तो और यहां तक कहें के हमारे एस.टी.डी. कोल् कट् कर दिये हे लोकल् कॉल् ट्रस्टीन्ने फ्री रख्यो हे. तो ये कोई घमंडकी बात हे के दैन्यकी बात हे? उत्सवपे तेजाना हमकुं फ्री मिले. ये कोई रुआब हे के आबरु! पता ही नहीं चले अपनेकुं. ट्रस्टियें हमारे सेव्य ठाकुरजी ले जायें और हम केह रहे हें के हम साक्षात् पुरुषोत्तम लटष्कपुष्टअनुष्टकतुष्टकघटाटोपटंकारकोकिलानंदराय ... पू.पा.१०८ चिरायुष्मान बावाश्री हें. अहंकारके लफड़ा ऐसे ही सब होवें हें.

ये अहंकारपीड़न हम गुंसाईन्में ही होय ऐसो नहीं, आप लोगन्में भी बहोत हें, उदाहरणतया, आप लोग स्वयंकुं 'दासानुदास' कहो हो. दासानुदासको सच्चो शॉर्टफोर्म् क्या होनो चहिये? 'दा.अ.' होनो चहिये दास अनुदास. आप सब लोग क्या करो हो? 'दा.दा.' लिखो हो. अरे भई! दादागीरी कर रहे हो के दासानुदास हो? जो देखो दासानुदासको शॉर्टफोर्म क्या करे हे दा.दा. अमुक दादा तमुक दादा.

ये दादागीरी क्यों करो हो? आज दादागीरी कर रहे हो तो कल गुंडागीरी भी करोंगे. परसों भाईगीरी करोगे. कोई प.भ हो जाय, कोई दा.दा. हो जाय, कोई कुछ हो जाय तो पुष्टिमार्ग कहां जायेगो?

अपने अहंकारके खेल ऐसे ही होवे हें. अपनो अहंकार अपनेसु खेल रह्यो हे और वा अहंकारकी बदोलत अपन् दुनियासु खेल रहें हें. कोई समझ रह्यो हे के चांद नीचे आ गयो हे, कोई समझ रह्यो हे के 'ना-ना' हम ही खुद ऊंचे उठके इतने ऊपर आ गये के चांद हमकुं नीचे दीख रह्यो हे. ऐसे अनेक झगड़ा हें अहंकारके. पर यामें मिथ्याभासको स्वरूप मैंने आपकुं बतायो के हॅल्युसिनेशन् और इल्युज़न् को बेज़िक् डिफ़रेन्स् ये बाटलीबाजन्के उदाहरणसु आप समझ गये होगे.

(३)कन्डिशन् ऑफ़ ॲक्स्पीरिअन्स्के रूपमें भी मिथ्याभासात्मक अहंकार हो सके हे. अपने ॲक्स्पीरिअन्स्की या तरीकेकी आहंकारिक कन्डिशन् ही हे के वासु कन्डिशन्ड् होके ही जो भी कोई ॲक्स्पीरिअन्स् होवे सो होवे. याकुं यों समझ सके हे के कोई माइक्रोस्कोपिक् स्ट्रक्चर् अपनेकुं देखनो होय तो वाकी कन्डिशन् माइक्रोस्कोप्के उपकरणके अनिवार्य उपयोगमें प्रकट होयगी. कोई बहोत दूरको तारा अपनेकुं देखनो होय तो वाकी कन्डिशन् हे के टॅलिस्कोप् होनो चहिये. विधाउट् टॅलिस्कोप् अपन् वाकुं देख नहीं सकें. शरीरके अंदर हड्डीको ढांचा देखनो होय तो ॲक्सरेसु ही दीख सके. आंखसु, अपनेकुं हड्डीको स्केलेटन् दिखाई नहीं देगो. ऐसे अपनी पर्सनालिटीकुं देखवेकी कोई एक नॅसेसरी कन्डिशन् अहंकारकुं मानी जा सके हे. वस्तु कुछ भी नहीं पर केवल कन्डिशन् हे. वो फुलफिल् होवे तो अपनेकुं सेल्फ़्-अवेरनेस् आयेगी.

९९% जितनी कन्डिशन्स् अपन् पैदा करते होवें वो सब टेन्टेटिव्

ही होवे हें, ॲडहॉक् होवे हें. कोई पर्मनेन्ट् तो होवे नहीं हे. आज ये होवे हे कल वो हो जाय तो कल-परसों तीसरी हो जाय. जैसे पहेले पांच दिनकी टेस्ट्मेच् होती थी, बादमें तीन दिनकी भई. अब पचास ओवर्की हो गई. कल दिनके तीन या चार घंटा की भी खेली जा सके हे. ये तो कई तरहकी केवल कन्डिशन्स् हें के इन कन्डिशन्समें ही कौन जीत्यो या कौन हार्यो वाको फैसला कियो जायेगो. एज् सच्, बेट् बॉल् और विकेट् सु इनको कोई रिलेशन् नहीं हे. अपन् सोचें के क्रिकेट तो पांच दिनकी या तीन दिनकी या पचास ओवर्की अथवा दस ओवर्की होनी चहिये, याको बेट् बॉल् और विकेट् सु अथवा खेलके मैदानसु क्या रिलेशन्? कुछ भी नहीं. तुमने एक कन्डिशन् बना या मान ली के या कन्डिशन्के तेहत क्रिकेट् खेली जानी चहिये. याही तरीकेसु अहंकार तुम्हारी कोई एक ॲड्होक् टेन्टॅटिव् कन्डिशन् हे. हर चीज़कुं ॲक्स्पीरिअन्स् करवेकी तुमने एक कन्डिशन् अहंकारके ॲक्स्पीरिअन्सकुं बना या मान ली हे. अब सोचवेकी बात हे के बैठे-बिठाय कोई एल्.बी.डब्ल्यु आउट् हो जाय, कोई रन्-आउट् हो जाय, कोई क्लीन् बोल्ड् हो जाय, ये हारवेकी कन्डिशन्स् हें. बॉल् थोड़ी ही केह रही हे के कोई एल्.बी.डबल्यु हो गयो. वो तो अपनी घड़ी भई एक कन्डिशन् केवल हे, हार-जीतको कुछ फेंसला लावेके लिये. कल ऐसो भी नियम आ सके हे के एल्.बी.डबल्यु अथवा रन्-आउट् वालो आउट् नहीं मान्यो जायेगो, जो क्लीन्बोल्ड् होय वो ही आउट् मान्यो जायेगो. तो खतम हो गई बात. फिर वा दिनसु जो क्लीनबोल्ड् होयगो वो ही आउट् मान्यो जायगो. अपन्ने अपने खुदके और अपने सराउन्डिन्ग् जो आखो वर्ल्ड हे वाकुं जांचवेके लिये कोई पॅरामीटर् कोई कन्डीशन् बनानेके लिये अपन्ने अहंकारकी कोई एक कन्डिशन्, बाय् बर्थ अथवा बाय् सोशियल् कन्डिशन्सु, पैदा करी हे. यों अपनो अहंकार अपनी कन्डिशन् भी हो सके हे.

मैं समझुं हुं के मैंने खुलासा कियो. कुल मिलाके मैं आपकुं बता दऊं के शांकरमत बौद्धमत ऐसे ही और भी कई सारे मत अपने भारतके ऐसे हें जो अहंकारकुं कहीं न कहीं इन्हीं केटेगरीमें देख रहे हें. सवाल अपनो हे वो अभी मैं आपको नहीं बताउंगो. अपन् (श्रीमहाप्रभु) क्या केह रहें हें वो आपको बादमें बताउंगो. अभी या टॉपिक्कुं पोस्ट्पोन् रखो. मगर जैसे अहंकार क्रिया हे या भान हे या मिथ्याभास हे. ये सारी अहंकारकी पॉसिबल् वॅरायटीज् मानी या सोची जा सकें हें.

(क्या अहंकार अपने भीतर निगूढ़ कोई पारमार्थिक तत्त्व हे ?)

अहंकार अपने भीतर रह्यो भयो कोई तत्त्व हे. मैं आपकुं एक ॲक्ज़ाम्पल्के तोरपें बता रह्यो हुं : कम्प्युटर् काम कर रह्यो हे, तो वामें कोई हार्डवेर् हे कोई सोफ्टवेर् होवे हे और वामें कोई बेटरी हे. कोई वाको इलेक्ट्रिक्को कनेक्शन् भी होवे हे, जाके तहेत वो काम कर रह्यो हे. वा तरीकेको अपने भीतर काम करतो भयो कोई चित्त हे, या कोई सोफ्टवॅर् हे, या हार्डवॅर्की कोई स्लोट् हे, या कोई ड्राइव् हे, या कुछ याके जैसो अपने भीतर हे. जा तत्त्वको नाम अपन् 'अहंकार' केह रहें हें. पर जरूरी नहीं हे के जा बखत अपन् कम्प्युटर् ऑपरेट् करते होंय वा बखत चित्तको ज्ञान अपनेकुं होनो ही चहिये. ये जरूरी नहीं हे के जो सोफ्ट्वेर्के द्वारा अपन् कम्प्युटरकुं ऑपरेट् करते होंय वो सोफ्टवेर्को ज्ञान होवे. हार्डवेर्को ज्ञान होनो भी जरूरी नहीं होवे. क्योंके ऐसे ज्ञानके बिना भी अपन् वाकुं ऑपरेट् तो कर सकें. ऐसे अपने भीतर कोई एक अहंकार जैसो कोई मिस्टीरियस् तत्त्व हे ऐसे मान लो. वो मिस्टीरियस् (रहस्यमय) अहंकाररूप तत्त्वके कारण ही अपन् खुद वाके बारेमें और सारी दुनियाके बारेमें अवेर्नेस् रखें हें. फिरभी अहंकारके परिपूर्ण स्वरूपके बारेमें अपनेकुं अवेर्नेस् नहीं हे के अपने भीतर जो अहंकार हे वो क्या बला हे. कम्प्युटर्वाले उदाहरणसु अपन् वा बातकुं समझ

पायेंगे.

वो बायोलोजिकल् हार्डवेर् टाइप्को या सोफ्टवेर् टाइप्को तत्त्व हो सके हे, अपने ब्रेइन्के भीतर कोई ऐसो सेन्टर् हो सके. अपने ब्रेइन् अथवा अपनी बॉडीकुं घड़नेवाले जो सेल्स् हें, उन सेल्स्की कोई या तरीकेकी प्रिवेलिन्ग् कन्डिशन् हो सके हे के जो कन्डिशन् अपने भीतर अहंकार जनरेट् करती होय. वे सेल् आपसमें एक-दूसरेसु कैसे ॲग्री और डिस्ॲग्री होती होंयगी, वासु अपनेमें अहंकार जनरेट् होतो होयगो. जैसे अक्सर आपने सुन्यो होयगो के किड्नी ट्रांस्प्लांट् करी और शरीरने वाकुं ॲक्सेप्ट् नहीं करी. क्यों नहीं ॲक्सेप्ट् करी ? क्योंके जिन सेल्ससु अपनी बॉडी बनी हे वे सेल्स् किड्नीकुं घड़वेवाले सेल्सुकुं ॲक्सेप्ट् नहीं करनो चाहती होवें. वो मानती होवें के ये कोई फोरेन् ॲलीमेन्ट् हे. अपने बॉडीके सेल्स्की ईगोके साथ आरोपित किड्नीकुं घड़वेवाली सेल्स्की ईगो तालमेल बिठा नहीं पावे सो रिजेक्ट् कर दें. ब्लड्-ट्रान्स्फ्युज़न् करवेमें भी ऐसी ही सिच्युएशन् आवे हे के ब्लड् अपने ग्रुपको नहीं होवे, तो अपने ब्लड्के सेल्स् तुरन्त रिजेक्ट् कर दें. तो वा तरीकेको अपने भीतर काम करतो भयो कोई एक प्रिन्सीपल् हे, जा प्रिन्सीपल्को तत्त्व हे, वा तत्त्वको नाम भी 'अहंकार' हो सके हे. ये अपन् इज़ीली समझ सके हें.

अहंकार कितनो बड़ो विषय हे! कितनी सारी पॉसिबिलिटीज् यामें अपन् सोच सकें हें और कितनी सारी पॉसिबिलिटीज् अपने महाप्रभु वगेरे पुराने दार्शनिकन्ने सोची हें. ये खाली आजको सायन्स् सोचे ऐसी बात नहीं हे. सायन्स् तो अब पनप्यो हे. अपने इन पुराने चिंतकन्ने इतने सालन्सु ये सब बातें सोची हें. वेद उपनिषद् पुराण तंत्र बुद्ध महावीर सबन्ने या बारेमें बहोत-बहोत सोच्यो हे के अहंकार क्या फिनोमिना हे. अपने महाप्रभुको ही मत या बारेमें खाली कम्पाइल् करें तो भी मैं समझुं हुं पचास-साठ पेजिस् तो हो जायेंगे. इतनो तो खाली महाप्रभुको अहंकारके बारेमें लिटरेचर्

अपनेकुं मिले हे. अपने यहां भी या बारेमें लिटरेचर् कम नहीं हे. खैर, तो वो तत्त्व भी हो सके हे.

(क्या अहंकार अपनी चेतनाके साथ संयोजित कोई उपकरण हे ?)

एक लास्ट् ऑल्टरनेटिव् अहंकारके बारेमें ये भी सोच्यो जा सके हे के अहंकार कोई एक डिवाइस् हे. जितनी भी डिवाइसिस्, उदाहरणतया, ॲक्सरेकी, सोनोग्राफीकी, एम्.आर्.आइ. की या और भी जितने तरीकेकी डिवाइसिस् हें वे प्रायः अपने बाहर होवें हें और बाहरसु भीतर झांकवेमें मदद करती होवें. मगर यासु अपोज़िट् केरेक्टर्की अहंकाररूप भीतरकी डिवाइस् भी हो सके के जो बाहरकी सारी बातकुं देखनेमें अपनेकुं हेल्प् करती होय. जा डिवाइस्सु अपन् सारी दुनियाकुं देख सके हे. मैं अपने अहंके बारेमें सबसे पेहले देखुं के मैं कौन हुं. "मैं कौन हुं?" ये प्रश्न पैदा होवे तो सबसु पेहलो जवाब क्या आयेगो? के "मैं 'मैं' हुं" ओर तो बाकी सारी बातें ओढ़ी भयी हे कपड़ाकी तरेह. सारी बातें 'मैं'के बॉडीपे कपड़ाकी तरेह ओढ़ी भयी हे. वो चाहो तो पहेरो, चाहो तो उतार दो.

कल मैंने आपकुं धोनीकट् बालकी समझाई के मेरो बड़ो अहंकार हतो वो मूल अहंकार क्यों पैदा भयो? क्योंके वो चुभतो नाईको उस्त्रा, वाके द्वारा दोनों काननूपे बालन्को मड्गाई बनानो वासु मैंने सोच्यो के ये रोज-रोजके लफड़ा हर महिना कौन करे? बड़े-बड़े बाल रखो. सो धोनीकट् बाल रख लिये. तब लोगन्ने बालन्पें हाथ फिराके केहनो शुरु कियो के बड़े अच्छे बाल हें आपके, बस वैसो अहंकार हो गयो के मेरे बाल बहोत अच्छे हें. कितनो अहंकार भयो! कल मैंने आपकुं ये बात समझाई के दादाजीने जब कही के ये बाल कटवावो. तो मैंने दादाजीके सामने क्या बात कही? मैंने कही "दादाजी टका ही करा लउं तो?

बिचारे दादाजीमें अहंकार नहीं हतो. क्योंके नोर्मली टका कब करावे बेटा? जब बाप मरे तब. दादाजीमें अहंकार नहीं हतो, उनें मोकुं उलटी झाड़ लगाई *"हट शादीके बखत ऐसो नहीं बोल्यो जाय. चुपचाप बाल कटवा ले"*. कटवाने पड़े बाल, पर मेरे भीतर वो धोनीकट् बालन्को अहंकार कितनो हतो के सगे बापके सामने मैं अपने अहंकारके वश यों बोल गयो *"दादाजी! ये शादीमें बाल कटवानो इतनो ही कम्पल्सरी होय तो टका ही करवा लउं तो क्या खोटो?"* मेरे मनमें ऐसो मेलाफाइड् इन्टेन्शन् नहीं हतो पर यदि दादाजीमें थोड़ो भी अहंकार होतो तो दादाजीने बहोत बुरी तरह मेरी पीटाई करी होती. क्योंके बहोत कठोर बात मैंने दादाजीकुं फेसपे केह दी थी. अपनेकुं बालको ईश्यु छोटो लगें मगर अपनी पुरानी कल्चरके हिसाबसु सोचो तो कितनी बड़ी बात हती? मेरे भीतर वो अहंकार हतो के शादीकी आपत्ति आ गई के ये मेरे लम्बे बाल व्यर्थमें कटवाने पड़ेंगे! अहंकार या तरीकेकी हरजाई एक फिनोमिना हे. अब मोकुं वो अपने बालन्की याद भी नहीं आवे.

कल जैसे मैंने ढबु और लक्ष्मी के संवादकी बात बताई. वाके बाद अब तो मोकुं भी डर लगे. बढ़ाउं और फिर कछु लोचा हो जाय. अब तो बॉब्कट् बाल रखवेकी हिंमत ही नहीं. अब "न गंगदत्तः पुनरेति कूपम्" हो गयो. अपन् समझ सकें हें के कैसी छोटी-छोटी बातन्के कैसे-कैसे खुंखार अहंकार अपने भीतर पैदा होवे हें. और वो कितने डेन्जरस् होवें हें! बाहरसु भीतर देखनो होय तो सोनोग्राफी या एम्.आर्.आइ.सु भीतरके अंगप्रत्यंग देखे जा सकें. ऐसे भीतरसु बाहर देखवेकी विलक्षण डिवाइस् अहंकार हो सके हे.

ऐसी विस्तृत अपने अहंकारके टॉपिक्की रेन्ज् हे.

थोड़ो मेरो विषय रेह गयो. अपन्ने ये बहोत सारी पॉसीबिलिटीज् देखी के अहंकार क्या-क्या हो सके हे? याके तहेत फिरसु वल्लवालो

शेर याद दिलानो चाहुंगो ''कुछ हकीकत हे कुछ कहानी हे कितनी पेचिदा ज़िंदगानी हे'' यामें सोचवेकी मुख्य बात ये हे के हकीकत क्या हे और कहानी क्या हे?

जैसे-जैसे विषय आगे बढ़ेगो वा ढंगसु वो सब अपन् सोचेंगे. पर यामें समझनेकी मुख्य ये बात हे के अहंकार क्रिया होय, मिथ्याभास होय, तत्त्व होय या करण होय जो भी कुछ होय वाके साथ साथ यामें हकीकत क्या हे और कहानी क्या हे? ये भी पाछो या ईश्युकुं डबल् बना दे हे! माने कोई भी आइटम् यामें हकीकत हो सके, कोई भी आइटम् यामें कहानी भी हो सके. जैसे मैंने पेहलेसु बतायो ॲपिफिनोमिना, ऐसे ॲपिफिनोमिनाकी तरेह ॲपिएक्शन् ॲपिइमोशन् या ॲपिफीलिंग् या ॲपिफिनोमिना या ॲपिडिवाइस् कुछ भी होय वो कहानीको ही चक्कर हे ऐसे अपन् मान सकें हें.

जब अपन् हकीकत और कहानी के विकल्पनकी टर्मिनोलोजीमें अहंकारकुं इवेल्युएट् करनो चाहते होंय तब शुद्ध हकीकत और शुद्ध कहानी इन दो पोइन्ट्सकुं लेके अपन् सारी बात सोच रहें हें. अहंकार एक अपने भीतरकी हकीकत हो सके हे जैसे शेरमें सबसु पहेले वर्णन कियो हे. अथवा एक कोरी कहानी भी हो सके हे. वो मैंने ॲपिफिनोमीना वगेरेसु बतायो.

(अहंकार क्या नहीं हे!)

यामें एक तीसरी संभावना ये भी सोची जा सके हे के अहंकार हकीकत भी हे और कहानी भी हे. क्योंके दुनियाकी कोई भी हकीकत ऐसी नहीं हें के जाकी कोई कहानी नहीं बनती होय. हर कहानीके पीछे कुछ न कुछ हकीकत छुपी होवे हे.

(हकीकतकी कहानी और कहानीकी हकीकत)

अब खूबसूरती या बातकी देखो. कोई कहानी ऐसी नहीं हे के जाकी कोई हकीकत नहीं होय. कोई बखत क्या होवे के घटनाएं कल्पित होवें हें, पात्र सच्चे होवें हें. कोई बखत पात्र कल्पित होवें हें, घटनाएं सच्ची होवें हे, पर कभी घटना पात्र दोनों भी कल्पित हो सकें हें पर उन स्टोरीके भीतर रहे मेसेज् हकीकत होवें. तो ऐसी तो कोई भी कहानी नहीं हो सके के जाकी अपनी कोई हकीकत न होवे. तो हर कहानी कोई हकीकतकुं प्रिसपोज् करे हे. हर हकीकतकी कोई न कोई एक कहानी घड़ जाती होवे हे. या बातकी खूबसूरतीकुं समझो.

ये बातकी खूबसूरतीको आप समझे तो आपकुं महाप्रभुजीको सिद्धान्त बराबर समझमें आ जायेगो. क्योंके महाप्रभु जो कुछ केहनो चाह रहें हें वो तो अहंकारके बारेमें इन् टर्ममें नहीं केहनो चाह रहें हें के या तो ये हकीकत हे या कहानी हे अथवा आधी हकीकत हे और आधी कहानी भी हे. महाप्रभुजी जो केहनो चाह रहें हें वो तो ये बात हे के हर हकीकतकी कुछ न कुछ कहानी बन जावे हे. हर कहानीके पीछे कोई न कोई हकीकत छुपी भई होवे हे. वो हकीकत कौनसे जातकी हे?

जैसे मैं पहेले भी या बातकुं समझा चुक्यो हुं पर फिर वाकुं अहंकारके पेनोरमिक् व्यूसु देखोगे तो खबर पड़ेगी के बहोत सारी बातें दुनियामें टाइम् और स्पेस् के भीतर होवें हें. और जो टाइम् और स्पेस् के भीतर होवे वाकुं अपन् एक हकीकत मानें हे. जैसे ये टेबल् अभी यहां हे, वासु अपन् कहेंगे के ये टेबल् हकीकत हे. क्योंके टाइम् और स्पेस् को रेफरन्स् अपनकुं यामें मिल रह्यो हे.

अपन्, परन्तु, यदि रिआलीटिकी परिभाषा इतनी छोटी या क्षुद्र घड़ लें के जो टाइम् और स्पेस् में होय वो ही सत्य बाकी

मिथ्या तो एक बड़ो ईश्यु ये पैदा होयगो के टाइम् और स्पेस् कायमें हे? व्हेर् डज् द टाइम् ॲग्ज़िस्ट्? व्हेर् डज् द स्पेस् ॲग्ज़िस्ट्? डु दे ॲग्ज़ीस्ट् इन् टाइम् एन्ड स्पेस्? नो. तो टाइम्-स्पेस्की सत्यकी परिभाषाके आधारपे टाइम् और स्पेस असत्य सिद्ध हो जायेंगे. जो खुद मिथ्या होंय वो तुम्हारी कोई चीज़कुं सत्य कैसे करेंगे? तो अपनेकुं एक बात कबूल करनी पड़ेगी के या स्थितिमें अपनी बात जिच्च हो गयी. शतरंज खेलते भये जैसे मोहरान्की चालें जिच्च हो जाय न! जिच्च होनो माने कोई मूवमेन्ट् नहीं रेह जाय. यों अपनी थोट्-प्रोसेस् जिच्च हो जाय हे. टाइम्-स्पेस् यदि ॲग्ज़िस्टेन्स्के पेरामीटर्पें सत्य नहीं हे, हकीकत नहीं हे, तो क्या टाइम्-स्पेस् यदि खुद कल्पना हें, कहानी हें?

ऐसे बहोत फिलोसोफर् हें अपने देशमें भी और युरोपमें भी जिननें टाइम्-स्पेस्कुं कहानी मानी हे, हकीकत नहीं मानी हे. अपने महाप्रभु, परन्तु, टाइम् और स्पेस् कुं हकीकत मानके चले हें हों! ये बात मत भूलियो के महाप्रभु कहानी नहीं मानें हें. पर ऐसे बहोत सारे चिन्तक अपने देशमें भी भये हे और वहां युरोपमें भी भये हें जिनने टाइम् और स्पेस् कुं सिर्फ कहानी मानी हे.

अब ये तो आइन्स्टीन्ने ऐसो कबाड़ा कर दियो के लोग अब डरें हें ना पाड़वेमें के टाइम्-स्पेस् नहीं हे. क्योंके रिलेटिवीटिकी थीयरीको बेज़िक् फाउन्डेशन् टाइम् और स्पेस् में फंस्यो भयो हे. अब यासु लोग डरें हें. फिलोसोफर्स् भी थोड़ी चुप्पी लगा लें हें के *''मारुं स्वमान रक्षवा जतां कदी-कदी हुं करगरी गयो छुं पण मने याद तो नथी''* जावा द्यो ने, टाइम्-स्पेस्नी वातो छोड़ो. जे टाइम्-स्पेस्मां होय एनी ज वातो करो. अब या तरेहसु लोग सोचें हें. मगर ये तो शतुर्मुर्गी चाल हो गई न! जब अपन् सत्यकी परिभाषा कर रहें हें के जो टाइम् और स्पेस् में हे वो ही सत्य हे तो या परिभाषाकुं स्वीकारते ही अपने ऊपर एक लॉजिकल् रिस्पोन्सिबिलिटी

आ जाय हे वो अपनेकुं मेइन्टेइन् करनी पड़ेगी. डिफिकल्टी समझमें आयी?

यासु अपनेकुं ये बात भी कबूल करनी पड़ेगी के नहीं नहीं ऐसो नहीं हे. बहोत सारी वस्तुन्के होवेको पॅरामीटर् टाइम् और स्पेस् हे परन्तु बहोत सारी ऐसी वस्तु भी हो सके हें के जो टाइम् और स्पेस् के पॅरामीटर् या उनकी फूटपट्टी सु मापी नहीं जा सकती होंय परन्तु होनी तो चहिये.

(अस्तित्वके तीन प्रकार)

याके लिये युरोपिअन् चिन्तनमें एक अच्छो शब्द घड़्यो गयो के जो टाइम् और स्पेस् में हे उनकुं अपन् 'ॲग्ज़िस्टेन्ट्' कहें. टाइम् और स्पेस् में जो नहीं होंय उनकुं 'सबसिस्टेन्ट्' कहें. और जो बियोन्ड् टाइम् और स्पेस् होंय उनकुं खाली 'बिइन्ग्' कहें. ऐसे तीन टर्मीनोलोजी प्रस्तुत भयी हें. कोईके भी होवेकी तीन वेरायटी होवें : एक वेरायटी बिइन्ग् होवेकी हे. दूसरी वेरायटी वाकी सबसिस्टेन्ट् होवेकी हे. तीसरी वेरायटी वाकी ॲग्ज़िस्ट् होवेकी होवे. ॲग्ज़िस्ट् होवेकी जो वेरायटी हे वाकुं अपने यहां टाइम् और स्पेस् में कन्फाइन्ड् कियो गयो हे. जो टाइम् और स्पेस् में होय वाकुं अपन् कहेंगे के ये ॲग्ज़िस्ट् करे हे. यहां एक सवाल उठेगो के ये टेबल् हे ये तुम पहेचाने कैसे? वो कॅरेक्टर् क्या हे? वो क्राइटेरिया क्या हे? जा क्राइटेरियाके कारण टेबलकुं टेबल् तरीके ॲक्सेप्ट् करवेके लिये तुम्हारी बुद्धिमें कोई तरीकेको कम्पल्शन् आ रह्यो हे. जो टेबलकुं टेबल् तरीके सिद्ध करतो होय वो खुद टेबल् तो नहीं 'टेबलनेस्' मानी जा सके हे. गुजरातीमें अपनेकुं केहनो होय तो ''टेबल् होवुं''. पर टेबल् होवुं एटले शुं? शुं होवुं? घोड़ो होवुं के गधेड़ो होवुं के बीजुं शुं होवुं? 'टेबल् होवुं' टाइम्-स्पेस्में डिफाइन् नहीं कर्यो जा सके. टेबल् टाइम् और स्पेस् में हे पर टेबल् होनो कोई एक

टेबल्में कन्फाइन्ड् नहीं हे. दुनियाके सेंकडो हजारो टाइप्के टेबल् हो सकें हें. उन सबकुं देखके अपन् पहेचान जाय के ये भी टेबल् हे. फिर वो चाहे गोल टेबल् होय या त्रिकोण होय अथवा चोरस होय. हां! सब टेबल् ही तो हें. ये कौनसो फिनोमिना हे जो टेबल्कुं टेबल् बना रह्यो हे? कुछ एक अपनी अंडरस्टेन्डिंग् हे टेबल्के बारेमें. जा अंडरस्टेन्डिंग्के बलबूतेपें अपन् टेबल्कुं टेबल् तरीके पहेचान रहे हें. आपकुं लगे के अहंकारसु पाछी टेबल्पे चर्चा क्यों मुड़ गई? नहीं नहीं! ध्यानसु समझो के कुछ अपनी अंडरस्टेन्डिंग् हे जो अपनेकुं अहं बना रही हे. मैं टेबल्की चर्चा नहीं कर रह्यो हुं, अहंकी ही चर्चा कर रह्यो हुं. आप घबरा मत जाइयो.

हमारे दादाजीने एक बखत ब्रह्मवादपें प्रवचन कियो और लंबे-चोड़े टेबल्स् बनाये. यामें यहां सगुण ब्रह्म और यहां निर्गुण ब्रह्म हे. छे महिना तक प्रवचन चल्यो. वाके बाद एक डोकरीने खड़े होके पूछ्यो *''आपे जे टेबल्नी वात कही ते क्यांय पण देखायुंज नहीं. टेबल् क्यां गयुं आमां? दररोज आप 'टेबल्-टेबल्' करतां हतां पण टेबल् तो आव्युं ज नहीं. आ बधां श्रुतिनां वचनो आव्यां पण टेबल् न आव्युं''*. दादाजीने कही *''माजी! श्रुतिके वचनको टेबल् बनायो हतो मैंने''*. वो डोकरी सामान रखवेको टेबल् कभी ला जायेगो ऐसे सोचती रही!

या तरीकेको टेबल् तो एक कॅरेक्टर् हे वो सोलिड् नहीं हे. जाकुं देखके अपनेकुं पता चल जाय के अच्छा याकुं 'टेबल्' कह्यो जाय. वो सॉलिड् टेबल् होवे हे. टेबल् प्लास्टिक्को, लकड़ाको, कांचको, लोहाको अथवा चांदी-सोनाको होनो कोई जरूरी नहीं हे. टेबल् इज् ए टेबल् इज् ए टेबल्. और अपनेकुं पता चले के अच्छा ये टेबल् हे.

टेबल् अपन्ने कभी नहीं देख्यो होय तब भी अपन्कुं पता

चले के हां ये टेबल् ही हे. कभी अपने दिलसु पूछो वो क्या-कैसो फिनॉमिना हे? जो फिनॉमिना तुमकुं टेबल्कुं टेबल् पहेचानवेमें हेल्प् कर रह्यो हे. तुम्हारे लिये वो फिनॉमिना इन्डिफाइनेबल् ही रहेगो. तुम वाकुं डिफाइन् करने बैठोगे तो गोल आकारको जो होवे वो टेबल् होवे तो चोरस भी टेबल् मिलेगो, त्रिकोण या लंबगोल लंबचोरस भी टेबल् हो सके हे. चार पायाको, तीन पायाको भी टेबल् हो सके हे. काले पीले धोले सभी रंगके टेबल् हो सकें हें. पचास ओप्शन् वाके तुम खड़े कर लो. अपनेकुं पता नहीं चले के यामें कौन सो कॅरेक्टर् सभी टेबलन्के बारेमें सच ठहरनेवालो इन्-एवोइडेबल् कॅरेक्टर् हे के जो टेबल्कुं टेबल् बनावे हे. केहनो बहोत मुश्किल हे पर अपनो दीमाग समझ रह्यो हे के ये टेबल् हे. जा बखत कोई टेबल् अपने सामने आवे वा बखत अपन् खटसु पहेचान जावें के हां देखो ये टेबल् हे. ऐसो टेबल्, परन्तु, वो हे कहां?

ऐसो टेबल् हर टेबल्में हे पर कोई टाइम् और स्पेस् में वो टेबल् नहीं हे. ऐसो वो कोई आइडियल् टेबल् हे. आइडियल् माने 'आइडियल्'के दो अर्थ होवें : १.जैसे एक अपन्ने निकष घढ़्यो होय के ऐसो होय तो कोई टेबल्कुं अच्छो टेबल् मान्यो जायेगो और ऐसो नहीं होय तो अच्छो टेबल् नहीं मान्यो जायेगो. वाकुं भी अपन् 'आइडियल्-टेबल्' या 'आदर्शटेबल्' कहेंगे. २.दूसरो अर्थ ये के देशकालमें अवस्थित सत्य टेबल् नहीं होय फिरभी अपने चिदंशरूप माइन्ड्में वो विज्ञानरूपसु जो विद्यमान होय. ऐसो भी टेबल् होय हे.

वाकुं 'कन्सेप्च्युअल् टेबल्' केह सके हे. ॲक्च्युली स्पेस् और टाइम् में रहवेवालो टेबल् नहीं हे फिरभी या टेबल्के कारण अपन् हर टेबल्कुं टेबल् तरीके पहेचान पावें हें. और यदि माइन्ड्में वो टेबल् नहीं होय तो या टेबल्कुं पहेचान पानो मुश्किल हो जाय.

ऐसो वो आइडियल् टेबल् हे. 'आइडियल्' माने आदर्शवाले अर्थमें नहीं पर देट् विच् बिलोंग्स् टु आइडिया. ऐसो अपने माइन्ड्को टेबल् हे. वो मेन्टल् टेबल् टाइम् और स्पेस् में नहीं होवे तो भी कहीं न कहीं सबसिस्ट् तो करे हे. जैसे हर टेबल्में वो टेबल् होवे हे वैसे ही तुम्हारे माइन्ड्में भी होवे हे. वा टेबल्के साथ बाहरको टेबल् कोरस्पॉन्ड् करतो होय तो वाको कारण वामें माईन्ड्के टेबल्को सबसिस्ट् होनो हे. तभी तुम वाकुं को-रिलेट् कर पाओ हो. जैसे बच्चान्के लिये जनरलनोलेज्को वो खेल आवे के एक चित्रके पास पिन घुसानी होय और दूसरी नामके पास दोनों बराबर होंय तो बत्ती जुड़ जाये. ऐसे ही तरेहसु आडियल् टेबल् और रियल् टेबल् आपसमें मेच हो जायें तो अपने दीमागमें भी बत्ती जुड़ जाये के हां ये टेबल् हे.

तो एक टेबल् बाहरके टाइम-स्पेस्में ॲग्जिस्ट् करतो और दूसरो माइन्ड् और बाहरके टेबल्के भीतर सब्सिस्ट करतो टेबल्. यामें कोई चीज़ ऐसी भी हो सके के जिनके कारण इन दोनों तरहके टेबल्को ॲग्जिस्टेन्स् या सबसिस्टेन्स् सिद्ध होतो होय, वो फिनॉमिना भी तो कोई होनो चहिये. वो फिनोमिना क्या हे? आखिर टेबल् बन्यो हे तो कोई चीज़को बन्यो हे. जैसे टेबल्को कोई आइडिआ बन्यो हे तो माइन्ड्में. वो चीज़ कौनसी चीज़ हे? जो टेबल् और टेबल्के आइडिआ कुं घड़ रही हे? चीज़को नाम पश्चिमी चिन्तक 'बिइन्ग्' कहे हे और वा 'बिइन्ग्'के पर्यायकुं उपनिषद् 'सत्' कहे हे **''सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म''** (तैत्ति.उप.२।१). ब्रह्म अपरिच्छिन्न सत्य ज्ञान रूप हे. अर्थात् सच्चिदानन्द हे.

(रूप देशकालवर्ती सत्, नाम देशवर्ती कालातीत सत् और मूलतत्त्व देशकालातीत सत्)

सच्चिदानन्द ब्रह्मके सदंशमेंसु जो सत्य प्रकट भयो वाकुं मूलतः

'सत्' मान्यो जाय हे वो 'बिइन्ग्'के अर्थमें हे, ऍग्ज़िस्टेन्स् या सब्सिस्टेन्स्के अर्थमें नहीं, या बातकुं ध्यानसु समझो. 'बिइन्ग्' ब्रह्म जो हे वा ब्रह्मको ऍग्ज़िस्टेन्स् तुमकुं कहीं दीखेगो नहीं. यहां कहीं कोई टाइम् या स्पेस् के कोई अंशमें ब्रह्म दीख रह्यो हे? यासु अपन् ये बात केहनी चाहें हें के ब्रह्म एक ऐसो बिइन्ग् हे के जामें खुद टाइम् और स्पेस् रहे हे. वो ब्रह्मन् टाइम् और स्पेस् मे नहीं रहे हे. वा ब्रह्ममें भी सब मूल आइडिआ भी रेह रहे हे. यासु माइन्ड्को जो मेन्टल् टेबल् हे वाकुं अपने महाप्रभु 'नाम' कहें हें. और ये प्रत्यक्षसु दीखते टेबल्कुं महाप्रभु 'रूप' कहें हें :

''नमो भगवते तस्मै कृष्णाय अद्भुतकर्मणे।
रूपनामविभेदेन जगत् क्रीड़ति यो यतः॥''
(त.दी.नि.१।१)

ये सामने रख्यो भयो टेबल् 'रूप'को टेबल् हे. अपने भीतर माइन्ड्में जो टेबल् हे वाकुं महाप्रभु 'नाम' कहें हें. यों रूपके और नामके दो टेबल् हें. वे दोनों जा बिइन्ग्में हे वा बिइन्ग्को नाम 'ब्रह्म' हे **''रूपनामविभेदेन जगत् क्रीड़ति यो यतः''** जामेंसु ये मेन्टल् टेबल् और मटीरिअल् टेबल् बनते होंय वो टेबल्को प्राइमोर्डिअल् कॉज़् हे. सच्चिदानन्द ब्रह्मके जा सत्कुं अपन् 'बिइन्ग्' कहे हें वा सत्में हरेक पदार्थ हें और हरेक पदार्थ वामें हे. जो हकीकत हे सबकी, वा हर हकीकतमें एक कहानी बन रही हे और हर कहानीमें वाकी हकीकत छुपी भयी हे.

या बातकुं अपन् सिम्प्लीफाइड् कर लें. मेरे एक परिचित हें, उनने मोसु पूछी के ''जीवन क्या हे?'' मैंने कही ''आप बताओ वो क्या हे?'' तो उनने कही ''जीवनकी हकीकत बहोत छोटी हे''. मैंने पूछी ''क्यों छोटी लगे हे?'' उनने बड़ो अच्छो फोर्म्युला बतायो

के ''आके नहाये और नहाके गये. बस इतनो ही तो जीवन हे''. मैंने पूछी ''जीवन इतनो सो कैसे रह गयो?'' बोले ''बच्चा जनमे तब वाकुं नहवावे हे और मरे तब भी नहवाके वाकुं जलावेके लिये ले जावे. सो आके नहाय और नहाके गये इतनो ही तो जीवन हे''. बहोत छोटो हो गयो जीवन. अपनेकुं पता ही नहीं चले के एग्ज़िस्ट् कर रह्यो के सब्स्टिट् कर रह्यो हे! ये जीवनको आधाररूप कोई बिइन्ग् हे या नहीं! हकीकत देखो बहोत छोटी हो गई. मैंने मनमें कही के आपने बात तो बड़े पतेकी कही हे. हकीकतकी बात कही हे के जीवन सोचे तो सचमुचमें ऐसो ही हे. एक बात पर और सोचनी चहिये के जीवनकी या छोटीसी हकीकतके जैसी कुछ लंबी कहानी भी तो हो सके हे के नहीं? सोचो, इतने छोटेसे जीवनकी बन-बनके कितनी लंबी कहानी बन पायेगी? मैं आपकुं एक बड़ो मज़ेदार शेर सुनाउं **''माँकी कूखसे कब्रका रस्ता दूर नहीं पर चलते-चलते एक ज़माना लगता हे.''** कोई सत्तर बरसको हो जाय, कोई अस्सी बरसको हो जाय हे. चलते-चलते एक ज़माना लगता हे. आके नहाये और नहाके जावे पर वो डिस्टेन्स्कुं पार करवेमें कोईकुं पचास साल लगे. अब सड़सठ बरसको तो मैं भी हो गयो. देखो तो कितनो टाइम् ले लियो. तो ''चलते-चलते एक ज़माना लगता हे. हम दोनों (जीवन और अहंकार) का प्यार पुराना लगता हे'' तो ये हकीकतमेंसु कहानी बन गई के नहीं! हर हकीकत जो इतनी छोटीसी हकीकत हती के ''आके नहाये और नहाके गये''वामेंसु कहानी कितनी लंबी बन गई!

महाप्रभु यामें ये केहनो चाहें हें के हकीकत और कहानी में जा तरेहको अपनूने द्वैतवाद सोच लियो के ''यदि कहानी हे तो हकीकत नहीं हे और हकीकत हे तो कहानी नहीं हे'', ये तो नॅरो कन्सेप्ट् हे या कन्सेप्ट्मेंसु अपनेकुं बहार आनो पड़ेगो. क्योंके हर हकीकतकी कोई एक कहानी होवे हे और हर कहानीकी अपने

आपमें कोई हकीकत होवे हे. ये प्रिंसीपल् समझ जाय तो अपनेकुं अहंकारके बारेमें महाप्रभुको एप्रोच् क्या हे वो समझमें आ जायेगो. वरना अपन्ने इतने सारे आइटम् चेक् किये और अपन् नर्वस् हो जायेंगे के ये अहंकार क्या बला आ गई?

देशके बंटवाराके समय लखनउमें हिन्दु-मुस्लिम दंगा भये तो एक बूढ़े मुसलमानकुं हिन्दुन्ने बचावेके लिये घरमें छुपा लियो. अब जो लोग खोज रहे थे "कहां गये मियांजी? कहां गये मियांजी? लावो बतावो" उनकुं शक हो गयो के या घरमें ही छूपे होंयगे. मियांजीने कही के "अब कैसे बचना?" हिन्दुन्ने कही के "तुम धोती-दुप्पटा पहेरो तिलक लगा के भाग जाओ यहांसु" तो मियांजी बिचारे धोती-दुप्पटा पहेरके तिलक लगाके बाहर निकल गये. वो गुंडाएं तो बाहर खड़े ही थे, उनने पूछी "कौन हो?" मियांजीने कही "बम्मन हुं बम्मन" अब वो 'बम्मन' बोल्यो तभी पता चल गयो के मुसलमान हे, ब्राह्मण नहीं हे. वाकुं बिचारेकुं क्या पता? गुंडान्ने पूछी "कौनसे बम्मन?" मियांजीने कही "या अल्लाह! बम्मनमें भी बम्मन होते हें क्या?" बिचारो फंस गयो "माँ की कूखसे कब्रका रास्ता दूर नहीं, चलते चलते एक ज़माना लगता हे" और यों कहानी बन गई के नहीं?

ऐसे हर अहंकारमेंसु दूसरो अहंकार यहां भी निकल रह्यो होय तो घबरा मत जाओ!

या लिये महाप्रभुजी साफ-सुथरे तौरपें ये बात कहें हें के जैसे ब्रह्म परमात्मा भगवान् को सच्चिदानन्द स्वरूप पारमार्थिक हे, ऐसे ही उनकी कोई आनन्दात्मिका लीला भी पारमार्थिक हे. सच्चिदानन्दात्मक जो स्वरूप हें वामेंसु आनन्दात्मिका लीला प्रकट हो रही हे. वो हर लीला प्रभुकी एक कहानी नहीं तो और क्या हे? और जो

सच्चिदानन्द ब्रह्म हे वो क्या हे? हकीकत हे. ब्रह्ममें ये लीला छूपी भयी हे और लीलामें ब्रह्म छूप्यो भयो हे. हर कहानीमें हकीकत छूपी भयी हे. हर हकीकतमें एक कहानी छूपी भयी हे. ये इतनो बेज़िक अभी आप समझ लो.

(प्रश्नोत्तरी)

प्रश्न :

इल्युज़नकुं निरुपाधिक कैसे केह सकें?

जवाब :

निरुपाधिकको मतलब क्या? 'निरुपाधिक'को मतलब होवे हे के जा वस्तुकुं समझवेकी अपनी फेकल्टीके जो भी कुछ फंक्शन् होंय, उन फंक्शनकुं वापरके सत्यपें नहीं पहोंचके कोई मिथ्याभासपें पहोंच जातो होय तो वो निरुपाधिक भ्रम कह्यो जाय. जैसे मैं आपकुं उदाहरण बताउं के अपने पास टेबलकुं टेबल् तरीके पहेचाननेके कुछ तो अपने भीतर टेबलके आइडियल् कन्सॅप्ट् हे, जिनसु अपन् टेबलकुं पहेचान रहें हें, और ये प्रत्यक्ष टेबल् रिअल् टेबल् हे. रिअल् वर्सिस् आइडियल् ऐसे सोचोगे तो बात एकदम साफ हो जायेंगी. उन दोंनों टेबलके अन्तर्गत जब अपने सामने या तरीकेको प्रसंग आवे के अपने पास कोई एक टेबल् आयो हे. तब अपन् क्या करें? वाको मॅच् ही तो करें. जैसे डाइ बनावें वामें मॅटर् भरी जावे, वामें डाइको आकार उभर जावे. वो छाप वामें उभर जावे. ऐसे अपने मनमें जो टेबलकी डाइ हे, वा डाइमें कोई फिट् हो रह्यो हे के नहीं? वा डाइमें फिट् हो रह्यो हे तो वो टेबल् हे. वा डाइमें फिट् नहीं हो रह्यो हे तो वो टेबल् नहीं. अब ये फेकल्टीके अलावा दूसरी कोई फेकल्टी नहीं वापर रहे हें. पर या फेकल्टीकुं वापरनेमें अपन् जा बखत कुछ मिस्-कल्क्युलेशन् कर लें और जो टेबल् नहीं वाकुं टेबल् तरीके पहेचानवे लगें तो वो 'निरुपाधिक भ्रम' कहेवावे. जब कोई वस्तुकुं समझनेकी अपनी इन्टरनल्

फेकल्टीज़ जो भी होंय उनकुं वापरनेके बजाय दूसरी कोई एक्स्टर्नल् फॅकल्टीके कारण कोई चीजकुं पहेचाननो चाहें तो इल्युज़न् हो जाय हे वो 'सोपाधिक' माने 'कन्डीशन्ड् एक्सिपीरीअन्स्' कहेवायेगो. जैसे दूरकी वस्तु दूरबीन्सु देखेंगे तो पास दीखेगी. अब वो पास या करीब में दीखनो क्या हे? सचमुचमें वो इतनी करीब आपके पास होवे नहीं. खाली दीखतो करीब होवे. पर वा दीखनेको टोन् उतनी ही रिआलिटी लिये भये होवे, जितनी रिआलिटीको टोन् आप वाकुं करीबसु देखते होते तो होतो. ये देखवेके लिये जो डिवाइस् बाइनॉक्युलर् वापरी वो आपकी बिल्ट्-इन् सिस्टम्में नहीं हे. आपकुं एक्स्टर्नली हेल्प् लेनी पड़ी हे. वाके कारण वाके करीब होवेको आपकुं अनुभव हो रह्यो हे. ये सोपाधिक भ्रम हो गयो जामें बाइनॉक्युलर् उपाधि हे. याको प्रसिद्ध उदाहरण पीलीयाको रोग हे जामें शंख भी पीलो दीखे. तो पीलीया अपनी आंखन्को फंकशन् नहीं पर आंखमें पैदा भयो रोग हे. वाके कारण अपनी दृष्टिमें पीलोपन छा जाय हे जासु शंख सफेद होते भये भी पीलो दीखने लगे हे. ये औपाधिक भ्रम हे.

ऐसे एक्स्टर्नल् कोई डिवाइस्के वापरे बिना भी कुछ इल्युज़न् होवे हे. याको प्रसिद्ध उदाहरण सायकॉलॉजीमें या तरीकेसु दियो जाय के रेलकी दो पटरी अपनेकुं दूर कोई एक पोइन्टपे मिलती भयी दीखें. अब अपन् जानते होंय के हकीकतमें रेलकी दो पटरी मिले नहीं हें पर वो एक्स्टर्नल् कन्डीशन् ही ऐसी हे. जब इतनी लम्बी दूरीकी कोई चीजकुं देखनी हे तो सारी लाइन् कन्वर्ज् हो जाती होवे हे. ये कन्वर्ज् होनेके कारण वा तरीकेको भ्रम होवे हे. और भी एक वाको बड़ो अच्छो प्रसिद्ध उदाहरण या तरीकेको बतायो गयो हे :

देखो मैंने नाप लेके दोनोंकुं एक जैसो बनायो पर एक छोटो दीखे हे और दूसरो बड़ो. क्योंके एककुं ॲन्कलोज़र् दियो हे और दूसरेकुं ओपनर् दियो हे. तो ओपनर्की वेल्यु वामें ॲड् हो जावे हे आँखके हिसाबसु. कारण सिर्फ क्या हे? कन्डीशन्. यासु कन्डीशन्ड् एक्सिपीरीअन्स् हे. क्योंके वाकु बंद कियो हे यासु अपनेकुं छोटो लगे हे. जाकुं खोल दियो वहां अपनी आँख कोई लंबाई एक्स्पॅक्ट् करने लगे हे. ऐसे बहोत सारे कन्डीशन्ड् एक्सिपीरीअन्स् होवें हें. जाके कारण जो रिआलिटी हे वो रिआलिटी नहीं दीखके कोई कहानीसी बनके दीखने लगे.

प्रश्न :

तो कन्डीशनकुं अपन् 'निरुपाधिक' केह सके के नहीं?

जवाब :

ये निरुपाधिक नहीं हे जैसे रस्सीपें साँप दीखनो. वामें बाहरकी कोई कन्डिशन् काममें नहीं आ रही हे. अपन्ने मनमें साँपको बीबा जो धर रख्यो हे वा बीबाकुं अपन् साँपके बजाय रस्सीपें लागु करके देखनो चाहे तो वो 'निरुपाधिक भ्रम' कहेवावे. याको सबसु सुंदर उदाहरण बताउं जो श्रीशंकराचार्यने बहोत अच्छो कह्यो हे **''नच त्वं नच अहं नच अयं प्रपंचः अनैकान्तिकत्वात् सुषुप्त्यैकसिद्धस् तद् एको अवशिष्टः शिवो अहं शिवो अहम्''** (दशश्लो.) न तू हे, न मैं हुं और न ये प्रपंच हे. पर ''मैं नहीं हुं'' ये कहेवेके लिये 'मैं' कहींसु तो लानो पड़ेगो. वो 'मैं' कौनसो हे? श्रीशंकराचार्य कहें हें वो इल्युज़न् हे, जैसे रस्सीपें साँपको इल्युज़न् होवे, ऐसे ही मेरी चेतनामें मोकुं 'अहं'को इल्युज़न् हो रह्यो हे. यामें कोई बहारकी फेकल्टी नहीं वापरी. अपनी चेतनामें मेरे होनेकी भ्रमणा हो रही हे वो 'निरुपाधिक भ्रम' कहेवावेगी.

प्रश्न :

लास्ट् टाइम् आपने स्वत्वके बारेमें बतायो हतो तो वो स्वत्व और अहंकार में क्या रिलेशन् हे? वो स्वत्व ही अपने अहंकारकुं घड़े हे या क्या-कैसे होवे हे?

जवाब :

खुद तेरे स्वत्वकी बात समझावेके लिये मैं एक वाक्यको प्रयोग करूं के *''जगदीश अभी प्रोजेक्टरकुं ऑपरेट् कर रह्यो हे''* यामें मैं दूसरेन्के लिये तेरे स्वत्वकुं और तेरेलिये अहंकारकुं सीधो इन्वोक् कर रह्यो हुं. क्योंके दूसरो कोई प्रोजेक्टरकुं ऑपरेट् नहीं करतो होय अथवा 'जगदीश' नामवालो न होय तो ये बात समझवेमें तकलीफ नहीं आयेगी के कौन ऑपरेट् कर रह्यो हे और जो ऑपरेट् कर रह्यो हे वा व्यक्तिको नाम क्या हे? याकुं अपन् 'प्रॉपर्नाउन्'को प्रयोग केह देंगे. दुनियामें, परन्तु, जैसे प्रॉपर्नाउन् होवे हे ऐसे प्रोनाउन् भी तो होवे ही हे. मैं ऐसे नहीं केह रह्यो हुं *''कल जो भी प्रोजेक्टरकुं ऑपरेट् करेगो वो मोसु कुछ प्रश्न कर सकेगो''* अब ऐसे वाक्यको अभिप्राय 'जगदीश' नामवालेके बारेमें सोच्यो नहीं जा सकेगो. ऐसी वाक्यरचना प्रोनाउन् जैसी हो नहीं गयी क्या? क्योंके 'वो' तो कोई भी हो सकेगो. कोई भी सूरतमें जगदीश यहां दो नहीं हो सकें. 'वो' शब्द तेरे 'अहं'कुं, क्योंके यदि, यों सोचे के कल भी तोकुं प्रोजेक्टर् ऑपरेट् करनो हे तो, फिर प्रॉपर्नाउन्के जैसो काम करेगो. ऐसे ही जब अपन् 'स्वत्व' कहें तो वो प्रॉनाउन् हो गयो 'अहं'कुं रिफर् करवेके लिये. वही स्वत्वकुं रिफर् करवेकु जब अपन् 'जगदीश' के स्थानपें डिस्क्रिप्टिव् फ्रेझ् *''प्रोजेक्टरकुं ऑपरेट् करवेवालो''* वापरें तो वो प्रोनाउन् होनेके बजाय तोकुं तेरे 'अहं'के प्रॉपर्नाउन् जैसो लगेगो. अन्यथा वो सबके लिये वापर्यो जा सके हे पर तोकुं वो तेरे 'अहं'को प्रॉपर्नाउन् जैसो लगेगो. पर 'स्वत्व' सबके बीचमें कॉमन् हे वाको प्रोनाउन् होनेके कारण. ये एक डिफ़रेन्स् हे.

'स्वत्व'को एक दूसरो सिनॉनिम् सोचें, उदाहरणतया, 'पर्सनालिटी' को अर्थ व्यक्तित्व होवे, पर पर्सनालिटी क्या खाली कोई एक ऐसो पर्सन् हे जो व्यक्तिमें कछु अहं होवे हे. तेरे ईगोके अलावा तेरो परसन् क्या हे बता? यदि तु कहे के हाथ पैर माथा, तो वो तो मेरे भी हें. हाथ-पैर-माथा होनो पर्सनालिटी होती तो अपन् एक ही होने चहिये थे. तो अपन् कहेंगे के कोई अलग आकार रंग और परिणाम वाले हाथ-पैर-माथा, तो वो मूर्ति या चित्र में भी होवें पर उनकुं तु तेरे मानेगो पर तु खुद हे ऐसे नहीं. हिलते-डुलते हाथ-पैर-माथा माने तेरी वर्च्युअल् रियालिटी भी डिजिटली घड़ी जा सके हे. ऐसे झगड़ा तो चालु ही रहेगो. कहांसु खोजें के परसन् क्या हे? पर जो तेरो 'स्वत्व' हे वाके लिये एक शब्द अंग्रेजीमें रख्यो जाय हे के ये तेरी 'पर्सनालिटी' हे. 'पर्सनालिटी' माने वाको पर्सनल् एक स्वरूप हे ''एन् एन्टिटी इन् फॉर्म् ऑफ़् ए पर्टिक्युलर् पर्सन्'' तो वो प्रॉपर्नाउन्के बजाय प्रोनाउन् जैसे काम करने लगे.

प्रश्न :

बिइंग्को कॅन्सेप्ट् समझमें नहीं आयो?

जवाब :

मैंने आपकुं बतायो के साक्षात् या परंपरया एग्ज़िस्टेन्स् और सब्सिस्टेंस् तो टाइम् और स्पेस् में ही होवें परन्तु जो उनको औपादानिक आधार होय वो 'बिइंग्' केहवावे. और जो टाइम्-स्पेस्में होय वो एग्ज़िस्टेंस्. सब्सिस्टेन्स् जहां रेहतो होय वो खुद टाइम्-स्पेस्में रहवेवालो हो सके हे. इन दोंनोकुं आधार प्रदान करतो होय वो बिइंग् हे. यदि कोई चीज एग्ज़िस्ट् कर रही हे, तो वाके एग्ज़िस्ट् होनेको कोई आधार तो होयगो के नहीं के निराधार होयगो. ऐसे ही जो जहां सबसिस्ट् करतो होय तो वाकुं भी आधारकी तो अपेक्षा होवे ही हे. जैसे टेबल्नेस् कायमें होवे हे? इन द् टेबल्. ऐसे तु नहीं केह सके के टेबल्नेस्में टेबल् हे. टेबल्नेस् इज़ देअर् इन् द् टेबल्.

तो ये टेबल् और टेबल्नेस् कुं आधार देनेवाली जो चीज हे वाकुं 'बिइन्ग्' कह्यो जावे हे. अपने यहां 'सत्' कहें हें. जा सच्चिदानंदमेंसु सत् प्रकट होय वो बिइन्ग् हे. टाइम्-स्पेससु बियॉन्ड् हे. एक ऐसो प्लेटफोर्म हे, जापे एग्ज़िस्टेन्स् और सब्सिस्टेन्स् को ड्रामा चल रह्यो हे. यदि प्लेटफॉर्मकी अपनेकुं मॅटाफर् मेनटेइन् करनी हे तो.

प्रश्न :

जो फीलिंग् हो रही हे वो टेबल्नेस् हे?

जवाब :

हां.

प्रश्न :

वो कौनसो जो तत्त्व हे वो टाइम् और स्पेस् सु बियॉन्ड् होय. अंश तत्त्व होय तो अपन् भी टाइम् और स्पेस् सु बियॉन्ड् जा सके हें, फिज़िकल् मेटर् तो जा नहीं सके हे.

जवाब :

सबसे बड़ी प्रॉब्लेम् ये हे के जो बिइन्ग्को फिनॉमिना हे, वाकुं अपन् दो तरेहसु एप्रोच् कर सके हें. एक तो ये के अपन् वा बिइन्ग्कुं कोई न कोई एग्ज़िस्टन्स् या सब्सिस्टन्स् के मोड्में इन्टर्प्रिट् करनो चाहें. तो ऐसो प्रयास तो जब भी करने जाओगे वो तो विफल ही होयगो. क्योंके यदि वो इन्टर्प्रिट् हो जा रह्यो हे सक्सेस्फुली तो वो बिइन्ग् नहीं रेह गयो. नहीं हो पा रह्यो हे यासु तो वाकुं बिइंग् मान्यो जाय हे. अपनी डिफिकल्टी ऐसी हे के जो अपनी अंडर्स्टेन्डिंग्को होराइज़न् हे वो विदिन् द बिइन्ग् और सब्सिस्टेन्स् में कन्फाइन्ड् हे. और होराइज़न्के बियॉन्ड् जो होय वाकुं दृष्टिकी परिधिमें कैसे लानो? होराइज़न्पे क्या होवे हे? आकाश पृथ्वीकुं छूतो सो दीखे हे. अब वा पोइन्ट् तक अपन् पहोंच भी जावें तो होराइज़न् पाछो उतनी दूर सरक जावे. गधाके माथाके ऊपर बंधे गाजरकी तरेह. जितनो दौड़ो उतनो वो आगे-आगे सरकतो जाय और

गाजर मुंह आवे नहीं! ऐसे ही अपन् कभी क्षितिज तक पहोंच नहीं पावें फिर भी दूर कहीं अपनेकुं लगे के आकाश और भूतल वहां जुड़े भयें हें.

अहंकारपे घटायो जा सके ऐसो एक बहोत अच्छे पोयटिक् एक्स्प्रेशन्वालो शेर हे :

''कभी तो सोच के वो शख्स किस कदर था बुलंद।
जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमांकी तरह॥''

अब यामें समझवेकी बहोत मजेदार बात हे. एक बड़ो रहस्य ये हे के आसमां कभी झुके ही नहीं, पर हर बखत क्षितिजपे झुकनेको झांसा पैदा करे. झुके वाको नाम आसमां नहीं. वो तो गधाके माथापे बंध्यो गाजर जैसो हे. अपन् वहां पहोंचेंगे तो आगे सरक जायेगो. पर दूरसु देखें तो अपनेकुं लगे के अच्छा झुक गयो आसमां और क्षितिज पैदा हो गयो. 'क्षितिज'को मतलब क्या? 'क्षिति'=पृथिवीसु जहां आकाश जुड़्यो दीखतो होय वो क्षितिज. वो जुड़े क्यों नहीं? ध्यानसु समझो बहोत खूबसूरत बात हे. जुड़े कौन जो छुट्टो या बिछुड़्यो होय. ऐसे आसमां और ज़मीन हो नहीं सके. अब वाके सामने डिमान्ड् रखो के तुम बहोत बड़े आसमां हो तो झुकके दिखावो तब वो झांसा पैदा कर दे के अच्छा देख ले क्षितिजपें मैं झुक गयो हुं ''जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमांकी तरह''. तुम्हारे झुकवेकी या तनके खड़े होवेकी बात एग्ज़िस्टेन्स् और सब्सिस्टेन्स् में होवे हे. जो आसमांकी तरेह व्यापक बिइन्ग् हे वो तो न झुके हे, न बिछड़े हे, न कभी जुड़े हे, वो तो सब जगह हे. पर सब जगह वाको एक्स्पीरिअन्स् मुश्किल हे. झांसा वाको पैदा होनो बहोत ईज़ी हे. मोकुं भी बैठे-बिठाय हो जाय के **''यो अहम् अस्मि ब्रह्म अहम् अस्मि! अहम् अस्मि ब्रह्म अस्मि''** अरे! मेरी देश-कालमें परिच्छिन्न चेतनाके साथ एक ब्राह्मिक

क्षितिज पैदा हो गयो के मैं ही ब्रह्म हूं. ब्रह्मज्ञान होते ही मेरे अहंकी रेन्जमें मोकुं ब्रह्म झुक्यो भयो, क्षितिज बनातो भयो, दीखवे लगे! मेरी चेतनारूपी क्षितिमें जो मेरे अहंकी गोल रेखा अनुभूत हो रही हे वाके साथ-साथ देशकालातीत व्यापक होनेसु ब्रह्म जुड्यो भयो दीखने लगे के **''अहं ब्रह्म अस्मि''** वो क्षितिज पैदा हो गयो पर मेरो 'अहम्' जैसे मेरी क्षुद्रचेतनामें अधिष्ठित हे ऐसे ही मूलतः तो वा अपरिच्छिन्न देशकालातीत चेतनामें ही अवस्थित हे. यु कॅन् नॉट् बी विधाउट् ब्रह्मन्. वो आधार प्रदान करनेवालो बिइन्ग् ब्रह्म आसमांकी तरेह हे. यासु झांसा पैदा हो जाय और फिर अपन् वाकी मूछपें भी ताव देखने लगे ''कभीतो सोचे के वो शख्स किस कदर था बुलंद''.

प्रश्न :

जे साधननिष्ठानी वात आपे शुरुआतमां करी कृष्णप्रेमने कारणे साधननिष्ठा छे के पछी आपणां पोताना अहंकारने कारणे साधननिष्ठा छे, ए बे वस्तुने व्यक्तिए सेल्फ्चेक् करवानी छे. एम आपे वात करेली. अहंकारना सेल्फ्चेक् करवा माटेनी थर्मामीटरनी पण वात करी. पछी आगळ एवी वात थइके अहंकार पोतानामां छे के नहि ते व्यक्तिने पोताने ज प्रतीत थइ शके. उच्छवासना उदाहरणथी आपे समजाव्युंके खरेखर व्यक्तिने पोताने पण खबर न पड़े. सामा माणसने ज खबर पड़े के अहंकार थई रह्यो छे के नहीं. तो इन् धेट् कॉन्ट्राडिक्टरी सिच्युएशन् पेलु सेल्फ्चेक्नुं थर्मोमीटर यूज् केवी रीते करवुं? सेल्फ्चेक् केम करवुं के अहंकारने कारणे साधननिष्ठा छे के कृष्णप्रेमने कारणे साधननिष्ठा छे? हवे जो अहंकार व्यक्तिने पोताने प्रतीत थतो ज न होय, सामा माणसने ज प्रतीत थतो होय तो सेल्फ्चेक् केवी रीते करी शकाय?

जवाब :

फाइन्! बहोत इन्टेलिजेन्ट् क्वेश्चन् हे. कल थोड़ी बातको खुलासा

मैंने कियो हतो के कुछ रेशियो-एसॅन्डाइ होवे हे और कुछ रेशियो-कॉग्निसॅन्डाइ होवे हे. आग रेशियो-एसॅन्डाइ होवे हे. आग हे तो धुंआ पैदा होवे. आग और धुंआँ बाह्य अस्तित्वके ऑर्डरमें आग पेहले हे और धुंआँ बादमें आवे हे. पर अंडरस्टेन्डिंग्के आन्तरिक ओर्डरमें आग पेहले आती होय तो धुंआँकी गरज ही नहीं रेह जायेगी. यदि तुमकुं आग दीख रही होय तो अनुमान करवे बैठनो तर्कमूढ़ता हे. धुंआँ हे यासु भले दीखती नहीं होय तो भी आग होनी चहिये. पर आगकुं देखके पहेचान न पानो और फिर ऐसे सोचनो के हां-हां धुंआँ निकल रही हे. यासु आग जरूर होनी चहिये ये तो टॉप्फ्लोरके वेकन्ट् होवेको हेतु हे आगको नहीं. अंडरस्टेन्डिंगके ओर्डरमें धुंआँ पेहले आवे और आग बादमें आवे हे. अब क्या आगे और क्या पीछे हे? ये तो अपन् रिलेटिव् ओर्डरमें समझ सकें हें.

एक्जेक्ट्ली यालिये ही कृष्णको अपने भीतर निवेश होनो, वो आगकी तरेह हे. अपनेमें साधननिष्ठा पनपनी धुंआँकी तरह हे. अब जितने तुम्हारें भीतर साधननिष्ठाकी धुंआँ हे, उतनी कृष्णानुभूतिकी तड़पनकी आग भीतर जलती होनी चहिये. बस सीधीसी बात हे **''देख तो दिलके जांसे उठता हे ये धुंआँ सा कहांसे उठता हे!''** सो तुमकुं खुद ही चॅक् करनो पड़ेगो के भक्तिमयी साधनाको धुंआँ उठ कहांसु रह्यो हे, मनमोहनके मनमें बसवेके कारण के अपने क्षुद्र साधनाचरणके सामर्थ्यकी बुद्धिमें भरे होनेके कारण. अब जहांसु उठ रह्यो हे वो तो बता ही दियो हे. कल वा विषयपे और अधिक जाउंगो.

जब ''अहंकार होवे ही हें'' अथवा ''अहंकार मत करो'', ऐसे अपन् कहें-सोचें तो ये प्रश्न होयगो ही के कर कौन रह्यो हे? कायके लिये कर रह्यो हे? कहां या कौनके सामने कर रह्यो हे? जब भी करवेको प्रश्न आयेगो तो ये सारी क्वेरीज् तो वाके

साथ जुड़ी भयी आवेंगी ही. जब इन क्वेरीज़्को अपन् समाधान करेंगे तब ऑटोमेटिकली ये समाधान भी हो जायेगो के अपने भीतर जो साधननिष्ठा प्रकट हो रही हे वो अहंकारके कारण हे अथवा श्रीकृष्णके अन्तर्निविष्ट होवेके कारण हे? जब अपन् ये पता लगा लेंगे तब इन प्रश्नन्को खुलासा भी ऑटोमेटिकली हो जायेगो. इतनी देर तो धीरज रखनी पड़ेगी.

प्रश्न :

अहंकार यदि तत्त्व हे, वाके लिये समझायो के हार्डवॅर् सॉफ्ट्वॅर् और बॅट्री, वो अहंकारपे कैसे लागू कर सकेंगे?

जवाब :

देखो अहंकार तत्त्व हे वो मैंने या अर्थमें कही के जो अपन् क्रिया सोच रहें हें, या फीलिंग् सोच रहे हें, या कोई ॲपिफीलिंग् सोच रहे हें, उन सबकुं अपन् तत्त्वसु बाकात रख देंगे. वो सब तत्त्व नहीं हें. क्यों तत्त्व नहीं हे? क्योंके अपन्में पैदा होती भयी कोई फंक्शन् हे या अपन्में पैदा होती कोई फीलिंग् हे, या अपन्में पैदा होती भई कोई मिस्अंडर्स्टेन्डिंग् हे. वो सब वाके ॲस्पॅक्ट्स् हो सके हें. 'तत्त्व'को मतलब, अपन् जानें के नहीं जानें पर जो अपने भीतर या बाहर होवें ही. जैसे अपन् जाने के नहीं जाने पर भीतर ब्लड् सर्क्युलेट् हो रह्यो हे. अपन् जाने के नहीं जाने के किड्नी हे, पर किड्नी भीतर तो हे. अब वो तत्त्व हे, क्योंके अपन् तो जान ही नहीं रहें हें, अपनी इच्छासु वो गवर्न् नहीं हो रह्यो हे, वॉलन्टरी फंक्शन्के तहेत जो काम नहीं करतो होय तो वॉलन्टरी फंक्शन्सु वाकुं कंट्रोल् करनो भी मुश्किल हो जाये. वो तो ऑटोनॉमस् नर्वसिस्टम्सु कंट्रोल् होवे. अब वो तो बॉडीकी चीरफाड़ करें तभी दिखाई दे. तो ऐसे ही अहंकारकी भी चीरफाड़ करनी पड़ेगी. वो जिनने चीरफाड़ करी उनकुं दिखाई भी दियो हे. पर नॉर्मल् आदमीकुं वो नहीं दीख पड़े के अंदर तत्त्व क्या हे?

इतने सालन्सु अपन् खून-खून करते थे. खूनकुं लोग खून ही समझते थे और कुछ भी नहीं समझते. आज खूनकी टेस्ट् करावो तो लिस्ट्की लिस्ट् वामेंसु निकले हे. ब्लड्-कोलेस्ट्रोल् इतनो हे, ट्राइग्लिसिरिन् इतनी हे, आयर्न इतनो हे, शुगर् इतनी हे. अपनेको लगे के खून हे के कोई भयंकर जगड्वाल हे. इतनो लंबो लिस्ट्, बम्मनमें भी बम्मन! अपन् लेबोरेटरीमें खूनकी कुछ बूंदकुं दे देवें और वहांसु बूंदमेंसु ये कितनी लंबी लिस्ट निकले! न जाने क्या क्या निकालके बता दें के ये कम हे, वो जादा हे. खूनकी कुछ बूंदन्में इतनी सारी बात कहांसु आयी? पर डिनाय् कर सकें अपन्?

प्रश्न :

कल जब ब्राह्मणवर्ग और गोस्वामिवर्ग की चर्चा कर रहे थे, तो वा समय मेरे मनमें ये प्रश्न हतो के सैद्धान्तिक रूपसु वल्लभवंशजकी पुष्टिमार्गमें क्या भूमिका हे?

जवाब :

मैं या प्रश्नकुं दो तरेहसु डील् करनो चाहुंगो. क्योंके जब अपन् संप्रदायके बारेमें कहते होंय तो वो कोई एक हकीकत ही नहीं होवे वाकी कहानी भी तो कुछ होंयगी ही. हर कहानीके कुछ अपने प्लॉट्स् भी होवें हें, वामें कुछ डायलॉग् भी होवें हें, कहानीकी कुछ अपनीकी बीजपताकासु शुरू करके निष्कर्ष या क्लाइमेक्स् तककी डेवलप्मेन्ट् भी होवे ही हे. वो नेसेसरिली हकीकतकुं इन्डिकेट् करती होवे हे परन्तु हकीकत ही होवे ऐसे अपन् केह नहीं सकें. महाप्रभुने वल्लभसंप्रदाय प्रवर्तित कियो के नहीं कियो, ये प्रश्न अपन् विचारें. महाप्रभुको एंगल् बिलकुल साफ हे. वो जो कुछ केहनो या समझानो चाह रहें हें, वाकुं वो 'वल्लभसंप्रदाय' नहीं केह रहें हें. महाप्रभु तो साफ-सुथरे तौरपें कहे हें :

''अर्थो अयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यैः

रामायणैः सहितभारतपञ्चरात्रैः।
अन्यैः च शास्त्रवचनैः सह तत्त्वसूत्रैः
निर्णीयते सहृदयं हरिणा सदैव॥''

(त.दी.नि.१।१०४)

सारे शास्त्रनूमें ये ही बात कही गई हे जो मैंने सिर्फ तुमकुं कन्क्लुजन्के तौरपे बताई हे. महाप्रभु कोई भी मोनोपोलिस्टिक् रिस्पोन्सीबिलिटी नहीं ले रहें हें के ये मेरो हे. महाप्रभु तो केह रहें हें ये मेरो नहीं प्रत्युत शास्त्रको कथन हे. अपनी महाप्रभुके प्रति श्रद्धा हे, भाव हे के जो महाप्रभुने इन्टरप्रिटेशन् शास्त्रको दियो वाकुं अपन् ये केह रहें हें के ये वल्लभसंप्रदाय हे. तो नेचरली महाप्रभुसु जब कोई पूछने जायेगो तो महाप्रभु तो दो टूक बात ही करेंगे. उनने यों नहीं कह्यो के मेरे वंशजनूकुं तुम गुरु मानो. कहीं नहीं कह्यो, उनने साफ-सुथरी इतनी बात कही :

''कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरम्।
श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेत् जिज्ञासुः आदरात्॥''

(त.दी.नि.२।२२७)

जो कृष्णसेवामें परायण होय, दम्भादिसु रहित होय, जो श्रीमद्भागवतके रहस्यनूको तत्त्वज्ञ होय, वाकुं तुम आदरसु गुरु तरीके भजन करो. ऐसो गुरु नहीं मिले तो महाप्रभुकी दृष्टिकी विशालता तो देखो के आज्ञा करें हें के ''चिंता मत करो गुरुकी. ब्रह्म तुमकुं हर समय एवेलेबल् हे, आसमानकी तरेह. जस्ट् स्टार्ट करो कृष्णभजन :

''तदभावे स्वयं वाऽपि मूर्तिं कृत्वा हरेः क्वचित्।
परिचर्यां सदा कुर्यात् तद्रूपं तत्र च स्थितम्॥''

(त.दी.नि.२।२२८)

यासु जहां तक सिद्धांतको सवाल हे तो वो तो महाप्रभुके

वचनसु एकदम स्पष्ट हे. जामें कोई शंकाको या *ननु-नच* को प्रश्न नहीं उठ सके. अब रही बात के जो वल्लभसंप्रदाय चल्यो, वामें तो कुछ परम्परा कोई ट्रेडिशन् चल्यो ही हे. या बारेमें यों यों विचार्यो जा सके के जा बखत गंगोत्रीमें निकलके गंगा आगे चले तब वो धारा उतनी बड़ी तो नहीं होवे, जितनी बड़ी अपनेकुं मैदानमें गंगाकी धारा लगे हे. वो इतनी बड़ी कैसे हो गयी? क्या फुग्गाकी तरेह फूली हे? फूली नहीं हे पर अन्य भी कयी धारायें वामें संम्मिलित हो जावें हें. अलकनंदा यमुना आदि अनेक धारायें सम्मिलित हो जावें, पर 'गंगा' नाम रिटेन् हो रह्यो हे. अब देखो के यामें क्या प्रमाण के गंगा-यमुना जब मिलीं, तब यमुना आगे नहीं बहे और गंगा ही बहे हे? कोई प्रमाण नहीं हे. यदि तुम यमुनावादी हो तो सहेजरूपसु यों केह सको के अब गंगा यमुनामें मिल गई. अब आगे गंगाजी नहीं बहे हे यमुनाजी ही बहे हे. पर गंगाजीको कोई ऐसो जादु हे के जो सिरपे चढ़के बोले के यमुनाजी मिल गई तब भी 'गंगाजी' ही कहेवावे. ऐसे ही महाप्रभुको कोई जादु सिरपे चढ़के बोल रह्यो हे. बाकीतो यामें बहोत सारी बातें अब आई हें. वो बातें कहांसु आई हें?

अप्रामाणिकतया नहीं आयी, प्रामाणिकतया आयी हें, क्योंके शास्त्रमें एक सिद्धान्त हतो के **''गुर्वभावे गुरुपत्नीः तदभावे तत्पुत्रः तदभावे तत्कुलम्''** (भाष्यप्रका.३।४।४७) जब तुमकुं योग्य गुरु नहीं मिले तो गुरुपत्नीकुं अपनो गुरु मानो. गुरुपत्नी भी वा लायक नहीं होय तो गुरुपुत्रकुं अपनो गुरु मानो. गुरुपुत्र भी वा लायक नहीं होय तो गुरुके कुलमें जो भी लायक होय वाकुं अपनो गुरु मानो. ऐसो एक शास्त्रवचन हे जो अपने ब्रह्मसूत्रभाष्यमें भी उद्धृत कियो गयो हे. और वा क्वोटेशन्के तेहत गुसांई बालकें सब गुरुपदपें आरूढ़ भये. ये तो बड़ी इनोसॅन्ट् और सच्ची ही बात हती. बहोत पायस् कॉन्फिडेंस् हतो कोई गुरुके बारेमें. सब जगह ऐसे ही हो रह्यो

हे यामें कोई प्रिविलेज्की बात नहीं हती. ये तो एक सीधीसी बात हती. सब जगह होयगो तो ऐसे ही तो होयगो.

आज ही टाटाने एक बहोत अच्छी बात कही के टाटाकी कंपनीमें वो व्हील्-चेअरपे बैठके रिटायई होनो नहीं चाहे हे, वो ऐसे रिटायई होनो चाहे हे के वासु ज्यादा अच्छो कोई वाको सक्सेसर् आके वाकी कंपनीकुं चलावे. तो हर चलानेवालेकी ये भावना तो होवे ही हे के वासु बेटर् वाको सक्सेसर् कोई आवे. यालिये शास्त्रमें भी कह्यो गयो हे **''सर्वत्र जयम् इच्छेत् शिष्यात् पुत्राद् इच्छेत् पराजयम्''** ( ) पिता और गुरु कुं पुत्र और शिष्य सु पराजयकी कामना करनी चहिये, जीतनेकी कामना नहीं करनी चहिये. अन्यत्र दुनियाकुं जीतनेकी इच्छा कर सको हो. तो या कारणसु अपने यहां वल्लभसंप्रदाय चल्यो.

या संप्रदायमें अपन्ने ये बात मान्य रखी के महाप्रभुके वंशज गुरुपदपें आसीन होवें हें. साथ ही साथ अपन् लोगन्ने वा पवित्र भावनाकी सेंक्टिटी निभावेके बजाय जालसाज़ी करी हे. कैसी जालसाज़ी? ये जालसाज़ी करी के महाप्रभुके अनुसार गुरुपदकी शरत हती : खुदके घरमें, खुदके परिवारजनन्के साथ, खुदके तनसु और खुदके धनसु, 'कृष्णसेवापर' होवेकी. पर अपन् कहें के ऐसी कृष्णसेवा तो बाप-बेटा कर गये, अब वो कर ही गये सो हम क्या करेंगे! अच्छा जाने दो. गुरुपदको भोग कर रहे हो तो कमसु कम 'भागवततत्त्वज्ञ' होवेकी शरत तो निभाओ. तो बोलें के सच्ची भागवततत्त्वज्ञता तो जो कृष्णसेवा कर रहें हें वामें ही आ जावे हे! क्योंके भागवतके अनुसार ही तो कृष्णसेवा कर रहें हें. वामें अलगसु भागवत पढ़वेकी जरूरत क्या हे? सो भागवततत्त्वज्ञता भी निवृत्त हो गई. फिर तो एक ही शरत बची के 'दंभादिरहित' होनो चहिये. वाके बारेमें कहें के हमारी निन्दा मत करो, नहीं तो सम्प्रदायमें गुरुपदको अनादर हो

जायेगो. हम तो साक्षात् पुरुषोत्तम हें और दोषदृष्टि रखके बालकन्की निन्दा करोगे तो बहिर्मुख हो जाओगे.

वास्तविकता जब के ये हे के व्यक्तिके गुणदोष परखके ही गुरु बनावेके महाप्रभुके सिद्धान्तनुकुं अपने अनुगामीन्की दृष्टिसु ओझल करनो चाहते होंय तो कौन सी जातके अपन् गुरु हें! न तो कृष्णसेवापर हें, क्योंके कृष्णसेवा स्वयंके तनुवित्तसु तो वैष्णव ही करें हें, अपने यहां तो तनुजा मुखिया-भीतरिया-बालभोगिया-दूधघरियान्की बटालियन् ही करे हे. वित्तजा सेवा करवेवाले वैष्णवनुकुं अपन् कहें के वो यदि वित्तजा नहीं करेगो तो भगवत्सेवासु वंचित रह जायेगो और वाको जन्म ही विफल हो जायेगो. अरे! तब आप क्या कर रहे हो? बोलें टी.वी. देखते-देखते विश्राम करें हें, 'अनन्तशयनम्' भगवान्की तरेह पोढ़े ही तो रहें. भगवान् विष्णु तो वा स्थितिमें भी पूजार्थ उपलब्ध रहें पर हम जिज्ञासु वैष्णवसु मिलनो भी तब पसन्द नहीं करें. फिर कैसे गुरु? याको खुलासा तो करो! गुरुकी स्टेटस् चहिये हे, गुरुकी सारी प्रिविलेज् अपेक्षित हें पर रिस्पॉन्सिबिलिटी अपने माथेपे लेनी नहीं हे. वामें क्या केह सकें अपन्!

आज अपने संप्रदायके सामने जो कछु समस्या पैदा भयी वो या डाइलेमाके कारण भयी हे के प्रिविलेज् अपनुकुं सब चहिये हें और रिस्पॉन्सिबिलिटी कोई भी निभानी नहीं हे. जबकी हकीकत क्या हे के प्रिविलेज् और रिस्पॉन्सीबिलिटी साथ-साथ चले हें. आजकी तारीखमें अब तू ही बता के अपनी स्टेटस् क्या माननी? सीधीसी बात हे के महाप्रभु जो क्राइटेरिया बता रहें वामें कोई ऐसी बात तो नहीं हे के घर छोड़के हिमालय चले जाओ या दिगंबर साधु बन जाओ. घरमें रेहके कृष्णसेवा करो. जो आवे वाकुं कृष्णसेवाको उपदेश करो. वो उपदेश करनेको अपनो राईट् (अधिकार) और ड्युटी (कर्तव्य) दोनों ही हें. अपन्ने अपनी कृष्णसेवाको एग्ज़िबीशन्(प्रदर्शन)

करके सन्तोष मान लियो के हवेली भगवत्सेवा सिखावेकी पाठशाला हे. उपदेश नहीं पर एग्ज़िबीशन् करनो. तब तो फिर लफड़ा होंयेंगे ही वाके कारण गुसांई बालकन्में टेन्डेन्सी पनपी के कायकुं पढ़नो? नीचे ग्राउन्ड् फ्लोरपे, फर्स्ट् फ्लोरपे अपनो धंधा तो चल ही रह्यो हे. चैनसु ए.सी.में मौज क्यों नहीं मारनी! या कारणसु अपन् अयोग्य हो गये. अपने अनुयायीन्के ये हाल हो गये के सब छप्पनिया दुकालकी मरी भयी जीवात्मायें पुष्टिमार्गमें आ धमकी! अब यामें अपन् इन्क्वायरी करें के अपनी स्टेटस् क्या? तो क्या जवाब देनो!

अपनो रोल् क्या? तो सीधीसी बात हे के जब वियेतनाम् और अमरीका को युद्ध चल रह्यो हतो तब जॉन कॅनॅडीकुं पूछ्यो गयो के या युद्धको सोल्युशन् तो निकालो. आज बीस-बीस सालसु युद्ध कर रहे हो वाको कैसे सोल्युशन् आयेगो? वाने कही सोल्युशन् निकालनो होय तो एक टेबल् और दो कुर्सी की ज़रूरत हे. बैठो आमने-सामने सोल्युशन् आ जायेगो. अपन् आज बैठ जायें वैष्णवके सामने के भई तुम ये छप्पनीया दुष्कालकी वृत्तिकुं छोड़ो और हम हमारी एग्ज़िबिशनिस्टिक् वृत्तिकुं छोड़वे तैयार हें तो मैं नहीं समझुं के सिद्धान्तके स्पष्ट स्वरूपकुं समझने-समझावेमें आजकी देश-कालकी परिस्थिति आड़े आयेगी. कौन ऐसो वैष्णव आजकी तारीखमें हे के गुसांईकुं नहीं मानतो होय? एक साधारण बात बताऊं ओसतन अपन् गुसांईन्की इन्कम् एम.बी.ए. करवेवालेसु ज्यादा होवे हे के नहीं होवे हे? अपने पिता-पितामह मनिमिन्टिंग इन्डस्ट्री छोड़ गये हें के नहीं? महाप्रभुकी गुड्विल् चल रही हे जाकुं अपन् कॅश् कर रहें हें. ये गुड्विल् कितने दिन तक कॅश् कर पायेंगे? जब अपन् अपनी गुड्विल् महाप्रभुके प्रति नहीं जता रहें तब प्रॉब्लेम् तो सामने आयेंगी ही. अब यामें स्टेटस् क्या? बात तो सीधीसी हे, स्टेटस् ये हे के अपन् एक दिन सब मिलके साथ बैठें और डिसाइड् करें के महाप्रभुके अपनसु क्या एक्स्पेक्टेशन् हें? वा एक्स्पेक्टेशनुकुं अपन् जीके बतावें,

वा एक्स्पेक्टेशनकुं अपन् वैष्णवकुं समझावें.

आजकी तारीखमें वैष्णव भले किरीटभाईकुं मानतो होय पर ऐसो तो जरूरी नहीं हे के अपनकुं माननो बंद कर दियो होय. मान रह्यो हे तो फिर कौनसे बातकी शरम अपनकुं आनी चहिये, कौनकी शरम आनी चहिये? एक वैष्णवने तो मोकुं फेसपें यहां तक कही के *''हमारे गुरुदेव हाथकी कोनीसु सब वैष्णवनकुं शहद चटावें, साक्षात् पुरुषोत्तम हें'' मैंने पूछी के ये निंदा हे के स्तुति? तो बोल्यो ''ना अमारा गुरुदेव एवा ज छे''.* अपनी हकीकतकुं बराबर जानके भी खुदकी श्रद्धा-निष्ठाकी कोई अजब गट्सके साथ वैष्णव अपनकुं मान रह्यो हे. वो अच्छी तरहसु अपनी नालायकी जान रह्यो हे साथ ही साथ ये भी मान रह्यो हे के अपन् साक्षात् पुरुषोत्तम हें. वल्लभ चाहे सो करे. या हद तककी फोलॉइंग् अपनकुं मिली तब भी सिद्धान्त केहवेमें शरम आती होय तो उपाय क्या! महाप्रभुके बखत ऐसी सिच्युएशन् नहीं हती, चरित्र पढ़ो. तब तो महाप्रभुकुं लोग पीटवे भी तैयार हते. रातकुं अंधेरामें गुजर रहे थे तो मर्डर् करने तककी तैयारी करनेके उल्लेख मिले हे. आज अपनेकुं ऐसी कोई प्रॉब्लेम् फेस् नहीं करनी पड़े. कितनी डोसाइल् फॉलोइंग् हे. तो भी अपन् अपने सिद्धान्त समझा नहीं पावें तो अन्यकुं क्या समझा पायेंगे? सवाल ये हे. अब अपनो रोल् कैसे डिसाइड् करनो? खोटी-खोटी बिरुदावली ''पू.पा...नरेश चि. लस्टकपुष्ट-अनुष्टकतुष्टक-घटाटोपटंकार-कोकिलानंदरायजी महोदय'' के बलपे पुष्टिमार्गके सिद्धान्त जनता कैसे समझ पायेगी! कोई वैष्णव समझ नहीं पावे के इतने लंबे-चौड़े नामनको मतलब क्या? कोई तापीनरेश बन रह्यो हे तो कोई पापीनरेश. कोई युवाधर्माचार्य तो कोई शिशुकर्माचार्य तो कोई प्रौढ़चर्माचार्य बन बैठ्यो हे. ये क्या चक्कर चला रख्यो हे? अपन् महाप्रभुके वंशज क्यों रेहनो नहीं चाहे हें! कहीं न कहीं अपनी वीक्नेस् अपनकुं भीतर कचोट रही हे. मोकुं तो येही लगे हे.

(अहंकारके विभिन्न रूप)

कल तक जो अपन्ने देख्यो वामें मुख्य बात ये विचारी के अहंकारके क्या-क्या स्वरूप हो सकें हें. क्या-क्या पॉसीबिलिटीज् हो सके हें. साथमें वो शेरके आधारपे मैंने आपकुं हकीकत या कहानी के पॉसिबल् फॉर्मेशन् क्या हो सके हें, ये भी बतायो.

आज अपन् वा संदर्भमें बात शुरु करें : या तो कछु हकीकत होवे अथवा कहानी होवे. अथवा कोई बात थोड़ी हकीकत भी और थोड़ी कहानी होवे. अथवा एक हकीकतकी जैसे कुछ न कुछ कहानी और वा कहानीमें भी कोई न कोई हकीकत छुपी भयी तो होवे ही, या तरीकेसु एक-दूसरेमें अंतर्भूत होवेको भी आपसी सम्बन्ध हो सके हे.

इन सम्बन्धनके आधारपे अहंकारके कितने अर्थ हो सकें हें उन सारे अर्थनकुं लेनो चहिये.

जब महाप्रभु **''अहंकारं न कुर्वीत''** यों केह रहे हें तो अहंकारके क्रिया होवेको स्वभाव ध्वनित हो रह्यो हे. अहंकार कोई तरेहको कर्म हे जाकुं अपन् करनो चाहें तो कर सकें और नहीं करनो चाहें नहीं भी करें. या बारेमें अपनी स्वतन्त्रता हे.

स्वाभाविकतया अहंकार यदि क्रिया या कर्म होय तो वाको कोई कर्ता भी क्रियाके साथ लग्यो भयो आयेगो ही. साथ-साथ वाके करण और कर्म भी आयेंगे. प्रत्येक क्रियाके तहेत ''कः करोति'', ''किं करोति'', ''केन करोति'', ''कथम् करोति'' वगैरे आते होवें हें. जब अपन् इन अपेक्षाकी पूर्तिके प्रश्न पूछें हें तो उत्तर भी खोजने पड़ेंगे. विभक्तिके बहोत सारे प्रकारनकी अपेक्षाएं यामें जागें जब क्रियारूप अपन् केहते होंय तब. यामें महत्वपूर्ण बात ध्यान देवेकी हे देखो : चार्ट २.

(चार्ट २)

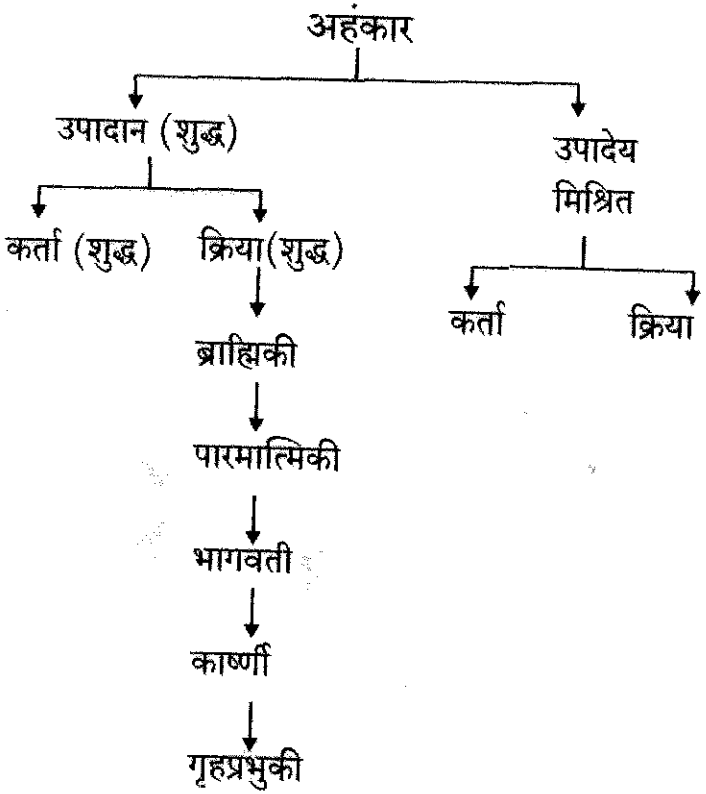

(उपादानरूप अहंकार)

अहंकारको एक रूप उपादानात्मक हो सके हे. जैसे सोना गहेनाको उपादान हे, मट्टी घड़ाको उपादान हे या सूत कपड़ाको उपादान होवे हे ऐसे. उपादानको कछु उपादेय होवे हे. जैसे सोना मट्टी या सूत कुं उपादान माने तो गहना घड़ा या कपड़ा कुं उपादेय माननो पड़ेगो. उपादान पाछे शुद्ध कर्ता रूपी भी हो सके अथवा क्रियारूप भी.

आपके मनमें ये प्रश्न उठतो होवे के जहां भी उपादानकी बात आयेगी वहां प्रायः सब लोग उपादानके तहेत द्रव्य ही माने क्रियाकुं नहीं माने. वो, परन्तु, अन्य लोगन्को सिद्धान्त होयगो अपनो नहीं हे. ये रहस्य आपकुं ज्ञान लेनो आवश्यक हे. क्योंके अपने यहां क्रिया और कर्ता के बीचमें वा तरीकेको वॉटरट्टाइट् कम्पार्टमेन्ट् नहीं मान्यो गयो हे. जो क्रिया हे, वो ही कोई तरेहसु कन्सोलीडेट् होके द्रव्य बन जाय हे और द्रव्य होय वो ही कोई तरेहसु एक्टिव् होके क्रिया बन जाय हे. तो क्रियामें और क्रियाश्रित या क्रियाश्रय द्रव्यन्में वा तरीकेको बहोत बड़ो भेद नहीं हे. ये बादमें आपकुं डिटेइल्में समझाउंगो.

यालिये उपादानके दोनों रूप हो सकें हें कर्ता या क्रिया भी. यहां भी वो दोनों रूप हो सकें. अपने यहांके प्राचीन व्याकरणमें तो नहीं मिले हे पर नये व्याकरणमें अपन्ने ये प्रभेद अंग्रेजीसु उधार लियो हे. अंग्रेजीके व्याकरणमें ये एक रिमार्केबल् प्रभेद हे. वाक्यके मूलमें तीन भेद वहां माने जाय हें : सिम्पल् सॅन्टेन्स्, कम्पाउन्ड् सॅन्टेन्स् और कॉम्प्लेक्स् सॅन्टेन्स्.

'सिम्पल्'को मतलब क्या? एक कर्ता और एक क्रियापद कुं वापरके वाक्यरचना करनी जैसे "राम जाता हे" ये सिम्पल् या

शुद्ध वाक्य हे.

पर ''राम जाता हे और लक्ष्मण आता हे'' तो ये वाक्य कम्पाउन्ड हो गयो. दो वाक्यनकुं अपन्ने 'और' लगाके यामें जोड़्यो हे. क्योंके मूलमें दो वाक्य हें पर दोनोंके बीचमें 'और' डालके उन दोनों वाक्यनकुं अपन्ने एक वाक्य बना दियो. यों दो वाक्य यहां कम्पाउन्डेड् हो गयें हें.

तीसरो प्रकार कॉम्प्लेक्स् वाक्यको होवे जैसे ''राम, जो दशरथको पुत्र हे, वो वनवासके लिये जा रह्यो हे''. यामें एक वाक्यकुं दूसरे वाक्यसु जोड़्यो नहीं, पर एक वाक्यके भीतर दूसरो वाक्य जमा दियो गयो हे. यासु एक वाक्य पार्ट् बन गयो और दूसरो वाक्य होल्. ये तीसरो मॉडेल् हे.

शुद्ध जब मैं यहां केह रह्यो हुं तो मेरो मतलब अपरसवाले शुद्ध या अशुद्ध होवेको नहीं हे. शुद्धको मतलब अपरसवालो जैसे होवे हे वैसे ही दूसरो मतलब केवल भी हो सके हे, जैसे शुद्ध सोना. संस्कृतमें 'शुद्ध' को मतलब 'केवल' भी होवे हे. यासु जो केवल एक वाक्य हे, वाकुं अपन् 'शुद्ध-वाक्य' कहेंगे. जाकुं इंग्लिशमें 'सिम्पल् प्रपोज़िशन्' कहें हें.

यासु शुद्ध उपादान ऐसो होवे के जा उपादानमेंसु कोई कार्यकुं पैदा करनो होय तो दूसरी कोई चीज़ मिलानी नहीं पड़े. मैं एक सवाल सामने रखुं हुं : मट्टीमेंसु अपनकुं घड़ा बनानो होय, तो घड़ा बनावेके लिये मट्टी शुद्ध उपादान हे के नहीं? नहीं हे. क्योंके मट्टीमें पानी तो मिलानो पड़ेगो ही. खाली मट्टीको घड़ा बन नहीं सके. तो मट्टी घड़ाको उपादान हे पर शुद्ध उपादान नहीं हे. कुछ न कुछ वामें ड़ालनो पड़े याके कारण उपादान बनें. अब सावधानीसु

सोचो के सूत कपड़ाको शुद्ध उपादान हे के नहीं. सूतमेंसु कपड़ा बनावेके लिये सूतमें और कछु मिलावेकी ज़रूरत पड़े नहीं. सूत यासु कपड़ाको शुद्ध उपादान हो जायेगो. कुछ लोग ऐसे कहें के जैसे डोंगरे महाराज केहते हते के ''शुद्ध सोनानो घाट घड़ाय नहीं, एमां थोड़ुं तांबु उमेरवुं पड़े''. फिर गेहनाको शुद्ध उपादान कारण सोना हो नहीं सके, अशुद्ध हो गयो. शुद्ध-अशुद्धको भेद यों समझनो.

जैसे कॅमेस्ट्री(रसायनशास्त्र)में जो कॅटलिस्ट् (उद्दीपक) मान्यो जाये वाके कारण कुछ वामें उपादानता आती होय तो वो शुद्ध उपादानता नहीं हे. वाको अपन् अशुद्ध नहीं कहें पर मिश्रित उपादान तो मान सकें हें.

शुद्ध उपादानमेंसु कर्ता और क्रिया को स्वरूप प्रकट होवे हे. यामें कर्ताकुं अपन् एकदम शुद्ध मानेंगे और क्रियाकुं कम्पाउन्ड्, क्योंके जब कर्तामेंसे क्रिया उत्पन्न भयी, तो एक कर्ता तो हतो ही. वाके होते दूसरी क्रिया और आ गई. पर यदि क्रियाके स्वरूपकी थोड़ी और एनेलिसिस् करे तो एक चक्र पैदा होतो लगे. क्रिया यदि सकर्मक हे तो वा क्रियाको कर्म क्या? जैसे मैं कहुं ''मैं पुस्तक पढ़ रह्यो हुं'' तो एक 'मैं' और एक 'पुस्तक', दोके बीचमें पढ़वेकी क्रिया सम्पन्न हो सके. अकेलो पुस्तक होय तो पढ़वेकी क्रिया सम्पन्न नहीं हो पायेगी. अकेलो मैं होउं तो भी पढ़वेकी क्रिया सम्पन्न नहीं हो पायेगी. तो या क्रियामें एक पढ़वेवालो और दूसरी पढ़ी जा सके ऐसी वस्तु की मिनिमम् आवश्यकता हे. क्रियाकी आकांक्षाके हिसाबसु ऐसी दस चीज हो सकें पर मिनिमम् दो तो होवें ही हे, जब सकर्मक क्रिया हे तो.

जो भी क्रिया सकर्मक होय तो वाके कारण दूसरो और एक तत्त्व आ जाये क्रियाके साथ-साथ, वासु कम्पाउन्ड हो रह्यो हे.

वाकी खूबसूरती ये हे के अशुद्ध कुछ नहीं हे. एक शुद्ध और दूसरो भी शुद्ध वहां मिश्रण कुछ नहीं हे सिर्फ कम्पाउन्ड् हो रह्यो हे. अपने यहां उपनिषदने बहोत अच्छो बतायो के **''स वै नैव रेमे... स द्वितीयम् ऐच्छत्''** (बृह.उप.१।४।३) वो अकेले रेहनो नहीं चाहतो हतो वाने दूसरेकी इच्छा करी यासु दो चीज पैदा भयी **''सः आत्मानम् द्वेधा अपातयत्''** (वहीं) वाने अपने आपकुं दो तरेहसु स्प्लिट् कियो और दोको यों कम्पाउन्ड् सिद्ध हो गयो. यासु उन दोके बीचमें जो क्रिया प्रकट हो रही होय वो ''शुद्ध + शुद्ध'' कम्पाउन्ड्सु पैदा होती क्रिया हे. ये बात मत भूलियो.

(उपादेयरूप अहंकार)

नेक्स्ट् उपादेय आ रह्यो हे. वा उपादेयके बारेमें कल यालिये भूमिका बांधके केह दी के हकीकतसु एक कहानी बने हे और कहानीमेंसु पाछी कोई हकीकत प्रकट होवे हे. वा तरीकेकी कॉम्प्लेक्स् सिच्युएशन् उपादेयमें होवे ही हे. अपनो कर्ता कौन हे. क्रिया कौनसी हे वो अपन् समझ लेंगे. अहंकारको कर्ता, अहंकारकी क्रिया, अहंकारको उपादेय और अहंकारको उपादान. क्योंके वो ऊपरसु अपन् ले रहें हें.

अहंकारके दो भेद : एक उपादान अहंकार और एक उपादेय अहंकार. उपादान अहंकार शुद्ध मट्टी या सोना या सूत के जैसो. उपादेय अहंकार कपड़ा गेहना या घड़ा के जैसो. वाकुं जब अपन् 'शुद्ध' कहें तो मतलब ऐसो उपादान के जाकुं कोई दूसरेकी अपेक्षा नहीं हे **''सः आत्मानं द्वेधा अपातयत्''** कह्यो गयो होवेसु वो अपने आपको द्विधा आपादन करे हे. द्विधा आपादन करवेके कारण वो उपादान कर्ता भी बन रह्यो हे और कर्मरूपेण खुदके सामने प्रकट होके क्रिया प्रकट करे सो क्रियारूप भी वो खुद ही बने हे. ये अपन् चार्ट्की लिनिअल् (वंशागत/स्वशाखीय) कन्टीन्युटीके कारण अच्छी

तरहसु समझ सकें हें.

उपादेय अहंकारकुं शुद्ध नहीं मिश्रित मान रहें हें. उपादेय अहंकार कोईसु मिश्रित होके ही कर्ता बन पावे हे. सो वो कर्तृत्व भी मिश्रित हे, शुद्ध नहीं रेह गयो. वाके कारण जो क्रिया पैदा होयेगी वो भी मिश्रित क्रिया ही होयेगी. कभी शुद्ध क्रिया नहीं होयेगी. मानें अब कॉम्प्लेक्सिटी यहां आके पैदा हो जाय. सेन्टेन्स्के जो मैंने आपकुं तीन मॉडेल् बताये सिम्पल्, कम्पाउन्ड और कॉम्प्लेक्स्. वा तरेहकी कॉम्प्लेक्सिटी यहां भी हे. ये मुख्य बात मनमें जम जाय तो फिर आगे सारी बात चल सके. क्योंके या विवेचनाको ये मुख्य स्वरूप हे.

(उपादान-उपादेयके संबंधको विचार)

यामें समझवे लायक एक बात ये हे के अहंकारके या तरीकेके दो रूप केहते होंय तो अपने देशमें या विदेशमें सर्वत्र दर्शन या विज्ञान में आज जो भी समस्या पैदा हो रही हे, वो या तरीकेकी हे के जा भी रूपमें उत्पन्न भयो होय ये जगत् अपने सामने एज् ए डेटा एवेलेबल् हे के अपन् वाकुं काफी हद तक समझ पावें हें. ये अपनेकुं उत्पन्न जगत् दिखलाई देवे हे. ये जगत् यदि उत्पन्न भयो हे तो वाको कोई उपादान हे के नहीं हे? यदि उत्पन्न भयो हे तो उपादेय हे. मानें 'उपादेय'को मतलब जाकुं अपन् ए प्रोडक्ट् ऑफ् सम्थिंग् माने. अपन् ये तो नहीं केह सकें के जगत् उत्पन्न भी हे फिरभी प्रोडक्ट् नहीं हे. और प्रोडक्ट् हे तो 'प्रोडक्ट् ऑफ्' या 'प्रोड्युस्ड् फ्रॉम्' या 'प्रोडक्ट् आउट् ऑफ्' ये सवाल तो पैदा होयेंगे ही. ऐसो सवाल उठते ही उपादान अपने-आप आ जावे. या उपादान और उपादेय के बारेमें एक समस्या ये भी सामने आवे के जगत् पैदा भयो और जामेंसु पैदा भयो उनमें कोई तरीकेकी समानता होनी चहिये या नहीं?

एक सामान्य बात बताउं के ब्रह्मकुं **''सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म''** (तैत्ति.उप.२।१) अर्थात् 'सच्चिदानन्द' केहके ब्रह्मको स्वरूप जान्यो. पर मानके चलो के ब्रह्म नहीं हे तो जो भी या जगत्को उपादान होय वो उपादान पॉसिबली क्या हो सके? अब एक सीधीसी बात ये हे के यदि जगत्को कोई उपादान होय 'जगत्'को मतलब पृथ्वी मत लो! जगत्को मतलब ब्रह्माण्ड=युनिवर्स्. अनन्तकोटी ब्रह्मांड. तो ऐसे जगत्में जो भी कुछ प्रकट भयो होय वामें उपादानके स्वरूपके बारेमें कुछ इशारा तो मिले के नहीं?

पहले ये बात सबकुं बहोत अटपटी लगती थी पर आजकी तारीखमें अपन् तो जानें ही हें के अपने जो भी पर्सनालिटी ट्रेइट्स् डिजीस् फीचर्स् साइज् शेइप् कलर्-कॉम्पलेक्शन् आदि होवें हें उनके बीज स्टेम्सेल्में माने जायें हें के नहीं? यदि स्टेम्सेल्में नहीं होय तो अपनेमें कैसे आयेंगे? याके विरोधमें एक सम्भावना मिश्रित होवेकी करी जा सके. ठीक बात हे पर यदि दो स्टेम्सेल्स्, ओवम् और स्पर्म के तरेहसु मिश्रित भयी होंय, तो वैसे ही एकपे अपन् सारो भार रख रहे थे सो दोपें रखनो पड़ेगो. अन्तमें अपन् जो भी हें, कहीं न कहीं उपादानमेंसु वा तरेहके घड़े भयें हें. अपन् ऐसे तो नहीं केह सकें हें के अचानक कुछ हो जाय. ये बात केवल बायोलोजिकल् ही तथ्य होय ऐसे नहीं. थोड़ोसो पीछे धकेलते चले जावे तो बायोलोजिके पहले कॅमिकल् स्ट्रक्चर्में भी ये बात आयेगी ही. कॅमिकली भी क्या ऐसो नहीं हे के जो भी कुछ एक कॅमिकल् फोर्म्युलासु कोई एक सेल् बनी होय, वा सेल्में जो भी कुछ गुण प्रकट हो रहे हें, वाके कुछ न कुछ हिन्ट् वाके कॅमिकल् मोलेक्युल्में होवें के नहीं? यदि नहीं होय तो बायोलोजिकल् सेल्में कहांसु आये? और पीछे धकेलो. कॅमिकल्के बजाय फिज़िकल् स्ट्रक्चरपे आ जाओ वो भी अपने ॲटमिक् स्ट्रक्चर्के अनुसार घड़्यो भयो मिलेगो. सबन्के आणविकभार विज्ञान गिनके बतावे हे. ऐसे ही सब्एटमिक् स्ट्रक्चर्

तक समस्याकुं धकेलें तो भी प्रॉब्लेम् पीछे धकेलते जावेसु नियमको अस्वीकार शक्य नहीं हे. वस्तुको जो स्ट्रक्चर् कार्यमें प्रकट होवे वाको इदमित्थंभाव कारणसु नियत नहीं ऐसे केह पानो मुश्किल काम हे. स्टेम-सेल् रूपी उपादानमें कोई न कोई क्रॉमोज़ोम् टाइप्के प्रकट या अप्रकट सूत्र नहीं होंय तो गवर्न् कैसे हो पायेगो के ये ही चीज़ पैदा होयगी और दूसरी चीज़ पैदा नहीं होयगी. तो ये अपन् सब्ॲटमिक् फिज़िक्ससु लेके सोशियोलॉजी तक भी याकुं स्ट्रेच् करें तो उनमें एक कन्टीन्युटी ऑफ कॉज़ेशन् अर्थात् कारणन्की शृंखलाकी अनेक कड़ी मिलेंगी ही.

अपन् जैसे देख सकें हें के सब्-एटमिक् पार्टिकल्स्के आपसी ॲट्रेक्शन्के हेतु सब-ॲटमिक् स्ट्रक्चर्में जो न्यूक्लीअस्के इर्दगिर्द वीक् फोर्स् होवे वो पिण्डके गुरुतर घनत्वमें संघटित होके बड़ो पदार्थ बनते ही ग्रेवीटेशनल् फोर्स् बन जाय. वो ग्रेवीटेशनल् फोर्स् बन जाय तो अपन् समझें के वो बात खतम हो गई! अरे खतम कहां हो रही हे! वो बात तो बायोलोजीमें भी आवे ही हे. घोड़ा, घोड़ाके साथ ही रहे, कोई न कोई ॲट्रेक्शन्को सिद्धान्त काम तो करतो ही होयगो के नहीं? वाकुं ग्रेवीटेशनल् ॲट्रेक्शन् नहीं माने पर घोड़ा घोड़ाके साथ रेह हे. चिड़िया चिड़ियाके साथ रेह हे. ये ॲट्रेक्शन् कहांसु पैदा हो रह्यो हे? कहीं न कहीं वाके सोर्स् तो पीछे तक जाने चहिये. अपन् बात और आगे बढ़ावें तो सोशियल् ॲट्रेक्शन्पे या सायकोलॉजिकल् ॲट्रेक्शन्पे कोई न कोई सोर्स् तो अपनेकुं स्वीकारनो ही पड़ेगो. एक बार ये फ्रेम् अपनेकुं समझमें आ जाय के उपादान और उपादेय के बीच कोई न कोई को-रिलेशन्के बिना उपादेयमें कोई क्वालिटी नहीं आ सके.

बहोत सिम्पल् एकज़ाम्पल्सु समझनो होय तो अपन् यों समझ सकें हें के यदि मट्टी लाल हे तो घड़ा लाल बनेगो. यदि मट्टी

सफेद हे तो धड़ा सफेद बनेगो, मट्टी काली हे तो धड़ा भी कालो बनेगो. घड़ाको जो कालोपन हे वो अचानक तो नहीं आयेगो. कोई न कोई वाके उपादानमें वाके सोर्स् तो होने ही चहिये. सूत यदि सफेद हे तो कपड़ा भी सफेद होयगो. सूत लाल हे, तो कपड़ा लाल होयगो. जैसे आमको पेड़ हे तो आमके पेड़के जो भी सूत्र होयेंगे वो सूत्र वाके गुटली या बीज में होयेंगे के नहीं होयेंगे. यदि नहीं होयेंगे तो वो आमके पेड़में आये कहांसु?

उपादान और उपादेय में या तरीकेको एक आपसी सम्बन्ध कॉमन् सेन्सुसु समझमें आवे. बहोत सायन्स्की जरूरत नहीं हे. ये तो अपने पास रेडीमेड् एक मॉडेल् अवेलेबल् हे वा लिये सायन्स्की बात करी. अपन् अपने-आपकुं समझ लें. अपन् सब उपादेय अहंकर्ता हें. क्योंके अपन् प्रोडक्ट् हें. विश्वमें जो भी कुछ हे वामें अपन् एक प्रोडक्ट् हें. और अपनो अहंकार भी कोई न कोई उपादानको प्रोडक्ट् हे. हर एकको अपनो-अपनो अहंकार होवे हे. यासु 'मैं हुं'-'मैं हुं' ऐसो अहंकार यदि प्रोडक्ट् होय तो याके सोर्स् याके उपादानमें भी होने चहिये.

अपनी बोलचालकी केहवतमें भी बात उतनी स्पष्ट हे *''बाप तेवा दीकरा''* तो ये कॉमन् मॉडेलिटि हे. ऐसे जो भी कोई उपादेय अहंकारमें, कर्ताके रूपमें या क्रियाके रूपमें अथवा करणके रूपमें जो गुणधर्म अनुभूत होते होंय वाके सोर्स् उपादानमें होने तो चहिये ही.

या धारणाके विरोधमें भी एक पॉसिबिलिटीको विचार कर लें के कोई एक उपादानमें नहीं पर एक उपादानके साथ अन्य उपादानको जा तरीकेको कॉम्बिनेशन् भयो वाके कारण एक ॲडीशनल् क्वालिटी उपादेयमें प्रकट हो सके हे. यासु ओरिजनली उपादानमें कोई अहंकार

नहीं हतो पर उपादेयमें आयो. तो उपादेय अहंकर्ता कौन हे? अपन् समझ सकें हें के तरल होवेको स्वभाव न हायड्रोजन्में हे न ऑक्सिजन्में हे. फिरभी पानीके मॉलेक्युल्में तरल होवेको स्वभाव आ गयो. अब वो उपादेयमें तो आयो पर उपादानमें नहीं हे ऐसो एक मॉडेल् हो सके हे. उपादेयमें अचानक अहंकार आ गयो और यासु उपादेयकी ही कोई स्पेसिफिक् क्वालिटी हे. उपादानमें वो ॲवेलेबल् नहीं हे.

दूसरो इन्टरप्रिटेशन् ये भी हो सके के उपादेयमें हे तो वाके उपादानमें भी कहीं न कहीं वाको सोर्स् भी होनो चहिये. अब ये सब विषय मेटाफिज़िक्स्को हे. और वामें मैं भी समझुं हुं के बहोतनूकुं उबासी आयेगी और तकलीफ होयगी. पर मेरे पास और कोई उपाय नहीं हे. सो याकुं समझवे या समझावे में जो तकलीफ होय मेरे साथ आप भी झेलो. क्योंके अन्तमें तो अहंकार अपनेकुं वा तरेहसु समझनो हे जा तरेहसु महाप्रभुने उपनिषद् गीता भागवत वगैरेके आधारपें समझायो हे.

(वैज्ञानिक नज़रीया)

अहंकार सिर्फ उपादेयमें प्रकट भयो होय या उपादानमें भी होय. अपनूकुं तो ये विचार करवेको हे के अपनो शास्त्र क्या केह रह्यो हे. वाकुं देखवेसु पहले अपन् सायन्स्के ढंगसु एक बखत याको पॅनोरॉमिक् व्यू लेके देखें तो आपकुं पूरो पिक्चर् साफ हो जायेगो.

एक बात देखो के सब्-एटमिक् लेवल्सु लेके और सायकॉलॉजी या इकोनोमिक्स् तक ले लो, जो भी कुछ युनिवर्सके उत्पन्न होवेकी, स्थित होवेकी, बढ़वेकी प्रोसेस्कुं सायन्स्ने इवोल्युशन् मान्यो हे के नहीं मान्यो हे? चार्ल्स् डार्विन्ने तो बायोलोजीकल् इवोल्युशन्को ही सिद्धान्त स्थापित कियो हे. सायन्स्ने इवोल्युशन् मान्यो हे के नहीं! 'इवोल्युशन्' माने विकास. जो चीज बीजमें हे वा बीजको वृक्षके

रूपमें विकसित होनो भी तो इवोल्युशन् ही हे.

ध्यानमें रखनो चहिये के सायन्स् एक अलग शास्त्र हे और सायन्टिफिक् फिलोसोफी एक अलग शास्त्र हे. सायन्टिफिक् फिलोसोफिमें बहोत सारे कॉम्प्लेक्स् आइडियावाले लोग आ जाते होवें हें यासु वो शुद्ध सायन्स् नहीं रेह जाय. वो मिश्रित सायन्स् हो जाय. अशुद्ध नहीं कहुंगो पर मिश्रित सायन्स् हो जाय, क्योंके जो जा बायस्सु आयो होय, वा तरेहसु वो सायन्टिफिक् फिलोसोफी घड़े. बहोत सारे ऐसे सायन्टिफिक् फिलोसॉफर्, नामशः, फ्रित्ज काप्रा जैसे बहोत सारे हें. एक नहीं पच्चीसों नाम सायन्टिफीक् फिलोसॉफीके फील्ड्में हे.

सायन्टिफिक् फिलोसॉफर् और साय्न्टिस्ट् भी दो बाटलीबाजन्के जैसे ऑप्टिमिस्टिक् और पॅसीमिस्टिक् अहंकारवाले होवें हें. यासु दोनों तरेहके बल्कि और ज्यादा तरीकेके उनके सम्प्रदाय चल पड़े हे. कुछ सायन्टिफिक् फिलोसॉफर् कहें हें के ये जरूरी नहीं के इवोल्युशन् हो रह्यो हे. क्योंके कोई चीज इवोल्व् होती होय तो अपने पास एक कम्प्लीट् मॉडेल् होनो चहिये हे के अपन् यहांसु लेके वहां तक याकुं विकसित करेंगे. जैसे महीन सूतके धागाकुं पहेनवे लायक कपड़ा बनवे तक विकसित करेंगे, तो वाकी फ्रेम् पहले ही बनानी पड़े के ये इतनो बड़ो कपड़ा बनेगो सांचामें. कपड़ा बुनवेको सांचा बनावेके पहले फ्रेम् बनानी पड़े. वो फ्रेम् अपने सामने नहीं होय के कहां तक याको विकास करनो तो अपन् डिसाइड् कैसे कर पावेंगे कितनो इवोल्व् होनो हे. क्योंके कोई भी इवोल्युशन् वाकी आइडियल् स्टेज्के तरफ आगे बढ़े तो इवोल्युशन् हो सके हे. अन्यथा अपोज़िट् डायरेक्शन्में बढ़तो होय तो डिटिरियोरेशन् ही मान्यो जावे. तो अब डिसाइड् कैसे करनो के इवोल्व् हो रह्यो हे के नहीं हो रह्यो हे ?

कुछ लोग कहें के इतने सारे लाखन् बरसन्में मनुष्य इवोल्व्

भयो. अब ये कैसे पता चले के इवोल्व् हो रह्यो के बिगड़ रह्यो हे. आज जा तरेहसु अपन् झगड़ रहें हें, एक-दूसरेकुं समझ नहीं पावें हें, वाके कारण आज जा तरेहकी अपने समाजमें अशांति रागद्वेष छीनाझपटी हताशा आदिके शोकमोहदुःख या तकलीफ हें, उनकुं देखते भये लगे के बहोत सारे जंगली प्राणी अपने बजाय ज्यादा समझदार हते! एक-दूसरेकी आपसमें पाकिट् तो काटते नहीं थे. एक-दूसरेको आपसमें मर्डर् तो नहीं करते थे, एक-दूसरेको शोषण-प्रतिशोध तो नहीं करते थे. अपन् तो कैसे-कैसे निष्ठुर काम करवे लग गये, अपन् जंगली जानवरसु भी ज्यादा जंगली हें. तो इवोल्युशन् भयो के नहीं भयो कैसे केह सकें हें!

ये एक पॅसिमिस्टिक् नज़रीया हे. मनुष्यमें कोई अवगुण होंय तो उनकुं इतनो एन्लार्ज करो के मनुष्यको इवोल्युशन् दीखवेके बजाय डिटिरियोरेशन् लगने लगे.

परन्तु समझवेकी बात ये हे के बहोत सारे फंक्शन्स् जो सब्-ह्युमन् स्पिशिस्में हते नहीं वो मनुष्यमें प्रकट तो भये के नहीं? अपने ब्रेइन्ने जो लेंगवेज्-लॉजिक्-मॅथेमेटिक्स् इन्वेन्ट् करके अक्वायर् करी, जो टॅक्नोलॉजी इन्वेन्ट् करी, इनके आधारपे अपनुकुं लगे के अपनो विकास तो निश्चित भयो ही हे.

एक सीधी सी बात समझवेकी ये हे के अपनो विकास भयो होय के ह्रास भयो होय, दोनों तरेहसु सायन्टिफिक् फिलॉसफीके स्टेंड् लिये जा सकें हें.

या चिन्तनमें एक तीसरी पार्टी ऐसी भी हो सके के न विकास भयो हे और न ह्रास. कोई एक सीधी सी रेखा चलती जा रही हे. आजकी तारीखमें अपनुकुं ऐसे लगतो होय के कुछ बदल रह्यो हे पर विकासके लिये बदल रह्यो हे के ह्रासके लिये, ये पता

कैसे चले? क्योंके कोई दो टर्मिनल्स् होंय बम्बई और दिल्ली जैसे; और अपन् गाड़ीसु दिल्ली जानो चाहते होंय और गाड़ी बम्बईसु दिल्लीके तरफ आगे बढ़ती होय तो विकास मानेंगे. अपनुकुं, परन्तु, खुदकुं पता ही नहीं हे के कहां जानो हे और न ये खबर होय के जा गाड़ीमें सवार भये हें वो कहां जा रही हे! तब विकास या ह्रास को पता लगानो मुश्किल काम बन जायेगो. वा स्थितिमें डिसाइड् कैसे करनो? कहीं परिवर्तनशील जगत्में अपन् ट्रॅप् तो नहीं हो गये के प्रतिक्षण कुछ परिवर्तन तो अवश्य हो रह्यो हे और अपने भीतर भी कुछ परिवर्तनको दौर चल ही रह्यो हे. यासु तीनों पॉसिबिलीटीज् हो सकें.

(औपनिषदिक नज़रीया)

अपने उपनिषदनके एंगल्सु भी देखें तो एक फॅन्टास्टिक् व्यू अपनेकुं ये मिले हे के विकास भयो होय के ह्रास भयो, ये बात ही इम्पोर्टेन्ट् नहीं हे. जाकुं अपन् 'ब्रह्म' कहें हें वा ब्रह्ममेंसु जगत् वाकी लीलाके रूपमें परिणत भयो, बस औपनिषदिक ध्रुव सत्य तो इतनो ही हे. अतः ब्रह्मके स्वरूपकी दृष्टिसु ह्रास होवेपे भी भगवल्लीलाकी दृष्टिसु लीलापरितोष पर्यन्त विकास भी मान्यो जा सके हे.

मैं अपने यहांकी बात आपकुं बता रह्यो हुं सायन्स्की नहीं. ब्रह्मके स्वरूपके एंगल्सु देखे तो ह्रास भयो हे, विकास नहीं भयो हे. ब्रह्मने अपने-आपकुं यदि अब्रह्म तरीके ढाल्यो होय तो विकास कहाँ भयो? ब्रह्म अपने-आपसु बॅटर् ब्रह्म तरीके जगत्कुं घड़्यो होतो तो अपन् यों केह सकते के ये जगत् ब्रह्मको विकास हे. पर ब्रह्मने तो अपने आपमेंसु अपरिच्छिन्न आनन्द आदि गुणधर्मनुकुं तिरोहित करके ये दुनिया बनाई हे.

मोकुं बहोत प्रिय ऐसे सूफी सरमद्की एक रुबाईमें, वो कितनी

अच्छी बात केह रह्यो हे :

''हक़-तआला चे कर्द पैदा मारा
मा पैदा करदेम हक़-तआला रा।
इन्साफ बकून कीस्त रुतबे बुलंद
उ अदना आफरीन व म आला रा।।''

अर्थात् लोग कहें हें के परमेश्वरने मेंरेकुं पैदा कियो पर मेंरे मनोभाव भी तो सुनो के ''मा पैदा करदेम हक़-तआला रा'' मोकुं तो लगे हे के मैंने वाकुं पैदा कियो हे. अरे! ऐसी अटपटी बात कहांसु आ गई! परमेश्वरकुं तुम कैसे पैदा कर सको? सरमद् बहोत अच्छी बात केह रह्यो हे के ईश्वरकी तुलनामें मैं उत्तम कोटीको कर्ता हुं क्योंके मैंने परमेश्वर पैदा कियो जबकि वाने तो मेंरे जैसो अदना व्यक्ति पैदा कियो! वाने मेंरे जैसो एक निर्बल मनुष्य बनायो. मैंने जब वाको भजन शुरु कियो तो मैंने वाकुं मेरो भगवान् बनायो, तो वाकुं मैंने माहात्म्यज्ञानसु मंडित कर दियो. मैंने वाकुं परमेश्वर बनायो. मैं वाकी शरणागति नहीं स्वीकारतो तो वो सर्वसमर्थ ईश्वर कैसे सिद्ध हो पातो? मैं भक्त नहीं होतो तो वो भगवान् कैसे सिद्ध हो पातो? भतीजा नहीं होय तो कोई बापको भाई काका थोड़े ही बन पावे! तुम समझ रहे हो काका बड़ो होवे हे पर काका तो भतीजाके जनम लेनेके बाद ही पैदा होवे हे न! अब न्याय करो के काका बड़ो के भतीजा बड़ो? ऐसे ही सरमद् भी केह रह्यो हे के यार! बड़ो उत्तम कोटिको कर्ता तो मैं ही हुं क्योंके वाने तो मेंरे जैसो केवल एक निरीह प्राणी पैदा कियो हे. जबकि मैंने तो वाके जैसो आला ग्रांड् फिनोमिना पैदा कियो हे. मैं ईशितव्य हुं यासु मेंरे रिलेशन्में वो ईश्वर हे. मैं जीव या जीवात्मा हुं, यालिये वो परमात्मा हे. मैं नाम रूप कर्म हुं यालिये वो ब्रह्म हे. मैं न होऊं तो वो इन गुणधर्मवालो कैसे सिद्ध हो पायेगो

''मा पैदा करदेम हक़-तआला रा. इन्साफ बकुन कीस्त रुतबे बुलंद!'' यासु उत्तमकोटीको कर्ता मैं हुं. अब देखो के हे तो ये भी अहंकार ही पर ये कितनो मीठो स्वरूप हे अहंकारको! यासु मीठो कोई अहंकार दुनियामें हो नहीं सके. ये नास्तिकको अहंकार नहीं हे. ये तो भक्तको, भक्तिके सहज दैन्यसु पनप्यो अहंकार हे! या दृष्टिकोणमें विकास या ह्रास के मुद्दा गौण बन जावें. मगर अपने यहांके हिसाबसु अपन् यों सोच सके के ब्रह्मके हिसाबसु ह्रास भयो हे.

(सॅमेटिक् और अपने नज़रीयाकी तरतमता)

सॅमेटिक् एप्रोच् सृष्टिके बारेमें ह्रासको हे क्योंके आदमको भूतल पे जनम या विकास स्वर्गसु अधःपातके रूपमें ही मान्यो गयो हे. ये एक सिन्गल् स्ट्रेइट् लाइन्को एप्रोच् हे. पर अपने उपनिषदन्की दृष्टिकी महत्ता कछु अलग ही हे. अपन्ने सृष्टिके निरूपणमें कभी सिन्गल् स्ट्रेइट् लाइन् नहीं मानी हे. अपन्ने तो क्रिएशनल् प्रॉसेस् या क्रिएटिव् फॉर्स् को सदा सर्क्युलर् पाथ् मान्यो हे. उनकुं हर बखत ऐसे लगे के जगत् पैदा करके भगवान्ने बहोत सारे नियम (कोड् ऑफ् कन्डक्ट्स्, टेन् कमान्डमेन्ट्स् जैसे) जगत्कुं बताये. जगत्में उन नियमन्कुं या कोड् ऑफ् कन्डक्ट्स्कुं कोई भी सचाईसु पाले नहीं यासु वो यहोबा होय के होली फादर होय के अल्लाह होय, अन्तमें न पालनेवालेन्पे गुस्सा होके और पालनेवालेन्पे खुश होके स्वर्ग या नरक देवेकु (देवेके लिये) जगत्कुं खतम कर देगो. उनकी आधिदैविक कथा या स्टोरी यों एक बखतके सृष्टिके निर्माण और संहार में खतम हो जावे हे. उनकी हकीकत इतनी सी हे के *''आके नहाये और नहाके चले गये''* सो उनकी कहानी भी छोटी सी हे. अपने यहांकी कहानी तो अन्तहीन कहानी हे. यद्यपि उनके ही जैसे निर्माण और संहार के कोष्ठकमें घिरी होवे तो भी बिल्कुल वैसी ही के जैसो आपकुं शेर सुनायो **''माँकी कूंखसे कब्रका रास्ता दूर नहीं. पर चलते-चलते एक ज़माना लगता हे''** वा तरेहसु अपने

यहां एक लम्बी कहानी बन जावे हे. निरन्तर ब्रह्ममेंसु जगत् पैदा होतो रहे हे, निरन्तर वो परमेश्वर अन्तर्यामी होनेके रूपमें जगत्में भीतर भर्यो रेहके वाको नियमन करतो रहे; और निरन्तर ये जगत् वा ही ब्रह्ममें लीन भी होतो रहे हे. ये उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयके सायकल् जहां चले हे वाकुं अपन् 'ब्रह्म' कहें हें. ये वाको स्वभाव होतो तो वो ब्रह्म जड़ पदार्थकी तरह लाचार होतो और ये वाकी क्रीड़ा होती तो वाके भीतर अज्ञान और अपूर्णता आती पर अपन् क्रीड़ात्मक स्वभाव या स्वभावानुपाती क्रीड़ा मानें हें.

तो क्रिएटिव् प्रोसेस्को अपनुकुं मान्य पाथ तो सर्क्युलर् हे. स्ट्रेइट् लाइन्को नहीं हे. सो था तरहके सर्क्युलर् पाथ्में विकास और ह्रास के क्वेश्चन् निरर्थक बन गये. तुमकुं झगड़नो होय तो झगड़ते रहो हम तो कुछ ऐसे कहेंगे के **''ब्रह्मज्ञानी ने मुक्तिमारगी स्वप्ने नहीं व्यवहार''** अपनो उनसु कोई व्यवहार ही नहीं हे. ये सारी प्रॉब्लेम् खड़ी क्यों हो रही हे? क्योंके तुमने क्रिएटिव् प्रोसेस्की लाइन् एकदम सीधी मान ली. अपने यहां ये प्रॉब्लेम् क्यों खड़ी नहीं होवे वाको सीधो सो कारण सर्क्युलर् पाथ हे :

> **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति, तद् विजिज्ञासस्व तद् ब्रह्म इति.''**
>
> (तैत्ति.उप.३।१).

या तरेहसु निरंतर कछु चलतो रहे तो वामें तो का ह्रास और का विकास!

कहांसु तुम देख रहे हो? जहांसु देख रहे हो, सरमद्के एंगल्सु देख रहे हो तो विकास हे. और वोही दो बाटलीबाजन्की बात

फिर आ गई. तुम यदि निराशावादी हो तो ह्रास हे और तुम आशावादी हो तो ''मा पैदा करदेम हक़-तआला रा'' के जैसो विकास हे. इनके चक्रकुं निरन्तर चलते मानो तो न ह्रास और न विकास, ये अपनी प्रोसेस् हे.

(अहंकारकी अद्भुत सामर्थ्य)

या प्रोसेस्में अपन् अहंकारकी जो कल्पना करें हें वो कल्पना भी ऐसी ही करें हें के अहंकारको भी एक सर्क्युलर् पाथ् हे. अपने प्रत्येक क्षुद्र अहंकारमेंसु एक परिपूर्ण ब्रह्मांडको अहंकार पैदा हो सके हे वाके भीतर छुप्यो होवेके कारण. और हर ब्रह्मांडके विराट अहंकारमेंसु अपनो क्षुद्र अहंकार पैदा भी होतो ही रहे हे. ऐसो सर्क्युलर् पाथ् हे. ये कोई स्ट्रेइट् लाइन् नहीं हे.

यासु पिन्पोइन्ट् अपन् यों नहीं केह सकें के अच्छा ये उपादान हतो और ये उपादेय बन्यो. ये तो अपन् कन्सेप्च्युअली समझावेके लिए केवल एक क्लासिफिकेशन् देवें हें क्योंके जहां सर्क्युलर् पाथ् हे वहां स्टार्ट् क्या और एन्ड् क्या? स्टार्ट् और एन्ड् तो स्ट्रेइट् लाइन्में होवे. सर्क्युलर् पाथ्में तो जहांसु एन्ट्री ली वहांसु स्टार्ट् हो जावे और लौटके दुबारा वहीं तक आ जाओ तो पाछो स्टार्ट् करनो पड़े. कोई पिन्पोइन्टेड् स्टार्टिन्ग् पोइन्ट् नहीं हे. ये खासियत हे अपने कन्सेप्ट्की.

सृष्टिके सर्क्युलर-पाथ्में कोई आधारभूत ग्राउंड् हे. अपन् कोई भी एक सर्कल् ड्रॉ करें तो एक ग्राउंड् सरफेस् चहिये जापें अपन् ड्रॉ कर सकें ऐसो ग्राउंड् सरफेस् ब्रह्मको स्वरूप हे. जो सर्कल् ड्रॉ करें वो सृष्टिकी उत्पत्ति स्थिति और नाश की लीला बने. ये तो ब्रह्मकी कहानी हे. हर कहानीमें एक हकीकत हे और हर हकीकतमें एक कहानी हे. वो बात मैंने आपकुं कल बताई हती.

बराबर को-रिलेट् करते रहोगे तो सारी बात समझमें आयेगी. अपन् ये बात मान रहें हें.

याके लिये अपने अहंकारकी खूबसूरती देखो : अहंकारकी बहोत सारी मजाक उड़ाई. कई तरेहके चुटकुला अपन्ने अहंकारकुं नीचे गिरानेवाले कहे-सुनाये. कभी शान्तिसु या बातको भी विचार करो के अहंकार कितनी गजबकी चीज हे. कैसो अहंकार अपने भीतर भर्यो भयो हे वाको स्वरूप समझो.

ये सामने धरे टेबल तक मैं मेरे हाथकुं फैला सकुं पर मेरे अहंकारकुं मैं टेबल तक नहीं फैला सकुं. अपनो अहंकार बहार आवे नहीं हे. मैं पैर फैला सकुं. मैंने कराटे सीख्यो होय तो किक् भी मार सकुं. पर मेरे अहंकारके कारण पैरकी किक् मार भी सकतो होउं पर अनारोपित अहंकारकी किक् दूसरे कोईकुं कैसे मार पाउंगो! मेरो अहंकार तो मेरे भीतर ही रहेगो. कितनो छोटो हे अहंकार!

ऐसे छोटेसे अहंकारके भीतरी सामर्थ्यकी आप काउन्टिन्ग् शुरु करो. काउन्टिन्ग् कैसे शुरु करोगें? एक छोटो सो एक्सपेरिमेन्ट् बताउं : आप किन-किन व्यक्तिन्के नाम जानो हो जरा गिनके तो देखो! आप घबरा जाओगे याद करते-करते. अपन् सात दिन याको सेशन् यहां चलावें तो एकके बाद दूसरे नाम याद आते ही चले जायेंगे. आपकी वोकॅब्युलरीके हिसाबसु खाली नामन्की बात कर रह्यो हुं. रिलेशन्की बात करूं तब तो और ज्यादा. रूपकी बात करूं तो और ज्यादा. तो अहंकारको जो आपको ड्रॉवर् हे वामें कितनी फाइल्स् भरी भयी हें! सोचो के ये कैसो थेला अपनेकुं प्रकृतिने प्रदान कियो हे के जामें कितनी चीज समा जावें हें. कितनो छोटो थेला और भीतर भरी वस्तुन्की गिनती खतम होनी मुश्किल्! आप कहोगे यामें क्या शेर मार्यो! अरे एक छोटेसे मोबाइल्में भी हाथीको फोटो समा तो जावे के नहीं? सात दिनको प्रवचन आ सके हे. पर मोबाइल्की

तुलनामें अहंकार तो कितनो जादा छोटो हे. एक मोनोसेल्में अहंकार होवे हे के नहीं होवे हे? वा सेल्में जो अहंकार होवे हे, वो अहंकार दूसरे कितने बायोलॉजिकल् सेलकुं जानवेको प्रयास नहीं करे क्या? एक सेलको विरोधी कोई दूसरो सेल् आ गयो, तुरत अपने अहंकारसु वो सेल् दूसरे सेलकुं पेहचान जाय के ये मेरे लायक सेल् आयो हे या मेरो विरोधी सेल् आयो हे! इतने छोटे सेल्में अहंकारकी फाइल् कितनी बड़ी हे. कितनी बातें जान रह्यो हे.

एक छोटेसे सेलकुं कितनी बातें पता हें : "मोकुं आंखमें आंखके सेल् बननो हे. नाकमें नाकके सेल् बननो हे. कानमें कानके सेल् बननो हे". कितनी फाइल् रखे हे. कितनो ऑर्गनाइज् करे हे एक सेल् अपने-आपकुं. इन फाइलन्कुं ऑर्गनाइज् करनी होय तो कितनी जी.बी. अर्थात् गिगा बाइट्स्की आवश्यकता पड़ेगी! छोटेसे अहंकारमें कितनी गीगा-बाईट्स् होंयगी के जिनके कारण ये इतनी फाइल् ऑर्गनाइज् कर पावे हे. सोचो के यदि यामें कभी मिस्-मॅनेजमेन्ट् हो जाय, अथवा अपने भीतर कोई दूसरी टेररिस्ट् सेल् घुस जाय, ऐसी कॅन्सरस् के वो सब उथल-पुथल कर दे. जैसे कह्यो जावे के *"चोर चोरीसु जाय हेरा-फेरीसु नहीं जाय"* तो स्टेइम् सेल्में जो कुछ फाइल्स् होंय वो करप्ट् हो जायेंगी और आंखमेंसु नाक उगवे लग जाय और कानमेंसु हाथें निकलवे लग जाय तो क्या हाल होवें या शरीरके! प्राणीन्की प्रजातिके विकासके सोपानान्तरपे ऐसो होतो होवे फिरभी कोई प्राणी व्यक्तिमें ऐसो प्रायः नहीं होवे हे.

एक छोटीसी सेल् अपने अहंकारसु कितनो बड़ो एकाउन्ट् मेइन्टेइन् करे हे. ऐसे सेल्स् अपने बोडीमें कितने? अबजों खरबों सेल्स् हें. उन सारे सेलन्कुं एकदम अपनी आत्मचेतनामें अप्रकट अज्ञातसत्ताक अपने अहंकारको एक पहलू मेइन्टेइन् करे. तुमकुं खुदकुं पता भी नहीं चले के ऐसो कछु अपने भीतर मेइन्टेइन् हो रह्यो हे. तुमकुं

ये भी पता नहीं हे के तुम्हारो अहंकार मेइन्टेइन् कर रह्यो हे. ये तुम्हारो पर्सनल् सेक्रेटरी या एसिस्टेन्ट् हे, जो हर बात ऐसी कुशलतासु, मेइन्टेइन् करे हे. अद्भुत सामर्थ्य हे अहंकारकी! जो अधर्वाइस् पॉसिबल् नहीं हती. या सारी बोडीकुं तुम अपने अहंकारसु मेइन्टेइन् कर रहे हो विधाउट् नोइन्ग् के कितने सेल् हें? कौनकुं पता हे के या बॉडीमें कितने सेल् हें अपने? उन सारे सेलनूकुं मेइन्टेइन् कौन कर रह्यो हे? एक अहंकार. और उतनो ही मेइन्टेइन् कर रह्यो हे, ऐसी बात नहीं हे. खुदके अंदरकी खाली पंचायत करतो होय ऐसो नहीं हे, बाहरकी भी सारी पंचायत करतो रहे हे अपनो अहंकार.

देखो एक मजेदार बात बताऊं : ये टेबल् टाइम् और स्पेस् में एग्जिस्ट् कर रह्यो हे, पर यामें टेबल्नेस् हे, या बातकुं कौन मेइन्टेइन् कर रह्यो हे? आपके अहंकारकी अनुभूतिमें दृश्य होवे के *''मोकुं टेबल् दीख रह्यो हे''* ऐसे तरेहके सम्बन्धसु कभी टेबल्नेस्को साक्षात्कार भयो होय तो और वाकी फाइल् अहंकार टेबल्पे रख देतो तो आपकुं पता नहीं चलेगो के ये टेबल् हे. आप कहोगे मोकुं अपने होनेके अर्थात् आत्मभानमें टेबल् क्या होवे ये स्फुरित नहीं हो रह्यो हे. अहंकार नहीं मेइन्टेइन् करतो होय और केवल मेमोरी मेइन्टेइन् करती होय तो ऐसो सम्भव हे. जब आपकुं आपके आत्मभान, अर्थात् अहंकारमें, कब कहां और कैसे कभी टेबल्के होवेकी भी अनुभूति भयी वाकी याद दिलायी जावे तो आपके अहंकारकुं याद आते ही आप झटसु केह दोगे *''हां! अब याद आयो के अमुक जगह अमुक दिन मैंने एक ऐसो टेबल् देख्यो हतो''*. आपके संस्कारमें मेइन्टेइन्ड् होते भये भी अहंकारमें पुरानी अनुभूतिनूको उभरनो कितनो आवश्यक हे!

यदि भूलेचूके अहंकार ऐसे केह दे के याद आ रह्यो हे

पर मोकुं क्या लेनो-देनो? *''मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किञ्चन''* तो जो बात याद भी आ गयी होय वो तुरत ही इच्छया भुलायी भी जा सके हे. यासु कोई हकीकत होय के कहानी होय उन सारी बातनूकुं अपनो अहंकार मेइन्टेइन् करे हे. ये कितनी अद्भुत सामर्थ्य हे अहंकारकी.

या दृष्टिसु जब आप सोचोगें तो अपनेकुं लगेगो के वो परब्रह्म या महाब्रह्म होय तो अपनो अहंकार भी एक अपर या मिनि ब्रह्म हे. क्योंके या अहंकारमें कितनी-कितनी वस्तुएं उत्पन्न होवें हें, कितनी-कितनी वस्तुएं स्थित होवें हें और न जाने कितनी-कितनी वस्तुएं लीन हो जावें हें. ये तो ब्रह्मको लक्षण अहंकारपे भी लागू हो गयो के नहीं? **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति, तद् विजिज्ञास्व तद् ब्रह्म''** लक्षणके अनुसार अहंकार भी एक एक मिनि ब्रह्म जैसो और साथ ही साथ कितनी छोटीसी चिप्स् हे. अपने मनुष्यनूके मस्तिष्ककी बात जावे दो, एक छोटे सेल्में भी अहंकार तो होवे हे तो कितनी गजबकी याकी कॅपेसीटि हे. इलास्टिसीटि याकी कैसी हे के आवश्यकताके अनुसार चहिये जितनो फूलनेके बाद फूल्यो ही नहीं रह जाये हे. इतनोको इतनो सिकुड्यो भयो रहे हे और न जाने क्या-क्या अपने भीतर भरके रखे हे **''अणोर् अणीयान् महतो महीयान् आत्मा अस्य जन्तोः निहितो गुहायाम्''** (कठोप.२।२०) या वचनमें निरूपित ब्रह्मकी तरह अहंकार भी सिद्ध होवे के नहीं? छोटे-मोटे अपने अहंकारके हर लेवलूपे ये लागू होवे के नहीं?

यदि लागू होतो होय तो अपन् ये पूछ सकें के यदि उपादानीभूत अहंकारमें ये गुण नहीं होते तो अपने उपादेय अहंकारमें ये गुण आये कहांसु?

अपन् ना पाड़ देवें के अहंकार मत करो और समझो के

कोई कबूल कर ले के अहंकार नहीं करूंगो तो भी एक और अहंकार, अहंकार नहीं करवेके लिये, करनो पड़ेगो. यासु उपनिषद् जैसे ब्रह्मके अस्तित्वके बारेमें कहे हे के ब्रह्मके अस्तित्वकुं अस्वीकार करवेवालेकुं भी अस्वीकार करवेके लिये पुनः ब्राह्मिक अस्तित्वको सहारा तो लेनो ही पड़ेगो यासु ब्रह्मके अस्तित्वकुं अमान्य करवेवालो ब्रह्मके बजाय खुदके ही अस्तित्वको ही अस्वीकार करे हे **''असन्नेव स भवति असद् ब्रह्म इति वेद चेत्''** (तैत्ति.उप.२।६). ऐसे ही अहंकार न होय तो अहंकार न करवेकी बात भी कन्वे (व्यक्त करनो) नहीं हो पायेगी. ''अहंकार मत करो'' कहने-सुननेको अधिकारी कोई अहंकार करवेवालो ही हो सके हे. यासु अहंकार तो पाछो आ ही गयो. अतः यदि ये इविल् हे तो नेसेसरी इविल् (दुष्ट/खराब) हे. और यदि अहंकार ब्रह्म हे तो मिनि ब्रह्म हे.

ब्रह्मसु कौनसे अर्थमें अहंकार कम हे या तत्त्वकुं समझो. कोई अर्थमें अहंकार कम नहीं हे. तब एक अपने सामने सवाल उठे हे के क्या ये अहंकार अपनो अपने बलबूतेपें हे? अपन् या बातकुं अच्छी तरेहसु समझें हें. जब आप बचपनमें पैदा भये, शास्त्रके हिसाबसु माँके गर्भमें भी बच्चाकुं अहंकार होवे हे. वा बखतको अहंकार आजकी तारीखमें अपनेकुं याद रेहनो मुश्किल हे. कोई शुकदेवजी होय तो याद रख सकें. बाकी अपनेकुं नहीं याद रहे हे. पर आप आपकी स्मृतिमें भूतकालमें यात्रा करो. कहांसु आपकुं अपनो अहंकार याद आ रह्यो हे, वहांसु आप याद करके सोचो के सबसु पहले आपकुं कौनसी बात याद आ रही हे? वहांसु आप अपने अहंकारकुं सोचो तो वहांसु आजतकके आपके अहंकारमें कितनी-कितनी इन्फॉर्मेशन् स्टोर् भयी हें! उदाहरणतया पहेले आपकुं लगतो होयगो के ''मैं हुं'' बस और कुछ नहीं. वाके बाद आपकुं लग्यो होयगो के नहीं ये मेरे मम्मी-पप्पा हें यासु ''मैं इनको बच्चा हुं'' नयी बात आपके अहंकारमें जुड़ गयी के नहीं? घरमें भाई-बहेन होयेंगे तो अचानक

वो बात भी अहंकारमें जुड़ जायेगी ''ये मेरो भाई हे मैं याको भाई हुं'' सो भाई होवेको अहंकार जुड़ गयो. जैसे-जैसे बड़े होते जावें ''ये मेरो दोस्त हे'', ''ये मेरो क्लासमेट् हे'' या ''ये मेरो टीचर् हे'' ऐसी अनुभूतिनके साथ अपने अहंकारमें एडिशनल् फाइल्स् जुड़ती चली जावें. एक केहवत हे के ''छेल्लो तिनका ऊंटकी कमर तोड़ दे'' पर अहंकारकी कमर कभी नहीं तूटे! कितनो भी बोझ यापे लादते चले जाओ सारो बोझ ढोतो ही चल्यो जाय अपनो अहंकार. कितनी गजबकी वाकी ढोवेकी सामर्थ्य हे. कितने सारे नामके रूपके कर्मनके बोझनकुं ढोवेकी अपने अहंकारकी सामर्थ्य हे. या तरीकेकी एक अद्भुत सामर्थ्यपे अपन् ध्यान देवें तो कबूल करनो पड़े के जो उपादेयमें इतनो हे तो उपादानमें भी कुछ न कुछ जबरदस्त अहंकार होनो चहिये.

और वैसो कारणीभूत अहंकार यदि उपादानमें हे तो अपने उपनिषद्की बात शुरु हो जाय. अपने उपनिषद् ये बताके चलें हें के उपादानको अहंकार कैसो हे? उपनिषदन्ने बहोत पहेले एक ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरी बताई हे. अब ये स्टिफेन् होकिन् जैसे वैज्ञानिक खूब कड़ाकुट करें हें ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरीकी. 'ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरी'को मतलब जितने भी फोर्सिस् हे; हीट्, लाइट्, साउंड्, इलेक्ट्रोमेग्नेटिक्, ग्रेविटेशनल्, न्यूक्लिअर्स् के वीक् और स्ट्रॉन्ग् फोर्सिस्, उन सारे फोर्सिसकुं युनिफाय् करके; अर्थात् पार्टिकल्स् और फिल्ड्स् को सिर्फ एक कन्सेप्ट् प्रस्तुत करनो. आखे ब्रह्मांडमें एक यूनिफाइड् थियरी देवेको ये प्रयास हे. अभी तक उनके सामने कोई परफॅक्ट् सॉल्युशन् नहीं आयो हे पर काफी स्ट्रोंग् हाइपोथिसिस् लेके वो लोग चल रहें हें. याकुं वो लोग 'गट्' कहें. सो 'गट्'की थियरी पोस्ट्-आइन्स्टिन् डॅवलपॅन्ट् हे.

अपने उपनिषदन्ने बहोत पहले एक ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरी

बताई हे. वा थियरीपे भी अपनकुं ध्यान देनो चहिये. सचमुचमें चमत्कार लगे के क्या दीर्घदृष्टि हे! क्या आन्तरदृष्टि हे उपनिषद्की! उपनिषद्ने अपनेकुं एक दृष्टि बताई :

''तत् सृष्ट्वा तदेव अनुप्राविशत्. तद् अनुप्रविश्य सच्च त्यच्च अभवत्, निरुक्तञ्च अनिरुक्तञ्च, निलयनञ्च अनिलयनञ्च, विज्ञानञ्च अविज्ञानञ्च, सत्यञ्च चानृतञ्च सत्यम् अभवत्. यद् इदं किञ्च तत् 'सत्यम्' इति आचक्षते''.

(तैत्ति.उप.२।६).

ये ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरी उपनिषद्ने अपनेकुं बताई हे. दुनियामें जो भी कुछ तुमकुं एवेलेबल् हे, जो भी कुछ दुनियामें तुमकुं दिखलाई दे रह्यो हे, **''तत् सृष्ट्वा''** वो वा उपादानमेंसु प्रकट भयो हे. **''तदेव अनुप्राविशत्''** वो उपादान दिखलायी देती सत्ता या असत्ता आदिके सभी प्रकारनमें स्वयंकुं प्रकट कर रह्यो हे और प्रविष्ट भी भयो हे. सिर्फ वाने पैदा ही नहीं कियो हे. वो केवल उपादान नहीं हे कर्ता भी हे. कर्ता ही नहीं हे पर उपादान भी हे.

खाली कर्ता जैसे कुंभार घड़ाको केवल कर्ता ही होवे हे उपादान नहीं. कुंभार घड़ाकुं पैदा करे पर घड़ामें घुस नहीं सके. मट्टीमेंसु घड़ा पैदा हो जाय पर मट्टी घड़ाकुं पैदा नहीं कर सके. एक यूनिफिकेशन् उपनिषद् कहे हे के पैदा करवेवालो और पैदा होवेवालो खुद हे. **''तद् आत्मानं स्वयम् अकुरुत''** सबसु पहेलो यूनिफिकेशनको प्रिन्सिपल् ये हे के पैदा करनेवालो और पैदा होनेवाली चीज दो नहीं हे, चीज एक ही हे. तब सिच्युएशन् क्या हो रही हे के **''तद् सृष्ट्वा तदेव अनुप्राविशत्''** वाने वाको सृजन कियो और सर्जन करनेके बाद अपनेमेंसु प्रकटी हर हकीकतमें वो भीतर भी अवस्थित हो गयो हे. एग्ज़ेक्ट्ली वा तरह के जैसे कपड़ा सूतमेंसु

पैदा होवे हे और वा कपड़ाके भीतर सारे सूत मौजूद होवें हें.

मट्टीमेंसु घड़ा पैदा होवे हे और वा घड़ामें मट्टी मोजूद होवे हे. सोनामेंसु गेहना पैदा होवे हे और वा गेहनामें सोना होवे हे. इन सब मॉडेलनके बारेमें तकलीफ ये हे के इनमेंसु पैदा होवेवाले उपादेय खुद नहीं पैदा करें इनकुं अपने अलावा दूसरे कोई पैदा करनेवालेकी जरूरत होवे हे. जबके उपनिषद् कहे हे के जगत् जामेंसु पैदा भयो हे वो खुद ही जगत्कुं पैदा करवेवालो भी हे और जगत्के रूपमें पैदा वो ही भयो हे **''तत् सृष्टवा तदेव अनुप्राविशत्''** स्वयंसृष्ट कार्यरूपनमें वो उपादान कारणके रूपमें प्रविष्ट उन कार्यरूपनकी स्थितिके अन्तर्भूत सम्पन्न होते क्रियाकलापनकुं, यद्यपि बाह्यरूपमें लगे के वस्तु स्वयं अपने स्वभाव या वापे पड़े प्रभाव के वश वा तरीकेसु अर्थक्रिया कर रही हे, वस्तुतः आन्तरिक रूपमें उन-उन नाम-रूप-कर्मनको कर्ता ब्रह्म अन्तर्यामी परमेश्वर होवेके रूपमें कार्य करवा रह्यो हे. अर्थात् ब्रह्मके जैसे कारण-कार्यरूपनमें पूर्वोत्तरभाव होते भये भी इतरेतरात्मकता हे वैसे ही स्थित-स्थापकरूपनमें भी नियम्य-नियामकभाव होते भये भी इतरेतरात्मकता हे. क्योंके जगत्को उपादान भी ब्रह्म हे और वाको कर्ता भी वो हे.

उपादान और कर्ता दोनों वो हे ऐसे उपनिषद्में कह्यो गयो हे **''तद् अनुप्रविश्य सत् च त्यत् च अभवत्''** जो तुमकुं दिखाई दे या जो दिखाई नहीं दे वो दोनों ब्रह्म हे. **''तद् अनुप्रविश्य... निरुक्तं च अनिरुक्तं च अभवत्''** जाकुं तुम डिफाइन् कर पाओ अथवा जाकुं तुम डिफाइन् नहीं कर पा रहे हो वो भी ब्रह्म हे. **''तद् अनुप्रविश्य... निलयनं च अनिलयनं च अभवत्''** जा वस्तुको तुमकुं कोई आधार दिखलाई देवे हे या जाको तुमकुं आधार दिखलाई न देतो होय वो भी ब्रह्म हे. **''तद् अनुप्रविश्य... विज्ञानं च अविज्ञानं च अभवत्''** तुम्हारे भीतर अन्डरस्टेन्डिन्गकी फॅकल्टी या सामर्थ्य हे

और नॉन-अन्डर्स्टेन्डिन्ग्की फेकल्टी या न समझ पावेकी सामर्थ्य हे, वो भी सब **''सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म''** बन्यो हे. अपने भीतर ज्ञान और अज्ञान दोनों रूपन्में वो ही अवस्थित हो जावे हे. सरल शब्दमें केहनो होय तो, अपने भीतर भर्यो विज्ञान या अविज्ञान भी वो ही हे. और अन्तमें तो उपनिषद्ने ये लिखके तो कलम ही तोड़ दी के **''तद् अनुप्रविश्य... सत्यं च अनृतं च सत्यम् अभवत्''** चाहे सच होय या झूठ होय, हकीकत होय के कहानी होय, बन्यो तो सब कछु वो ही हे **''यदिदं किञ्च तत् सत्यम् इति आचक्षते.''** याके लिये झूठ भी अपने मूलस्वरूपमें तो सच हे और सच तो सच हे ही. ये ग्रान्ड् यूनिफिकेशन् थियरी अपने उपनिषदन्ने प्रपोज़् करी हे. स्टिफन् होकेन्की 'गट्'की मोडर्न् थियरीसु याको पॅरललिज़म् खोज्यो जा सके हे पर अभी वो अपनो सब्जेक्ट् नहीं हे.

या उपनिषद्द्वारा प्रपोज़्ड् थियरीके आधारपें अपन् अब ये देखने जायेंगे के ब्रह्ममें अहंकार क्या हे? उपनिषद् ब्रह्मके अहंकारको क्या-कैसो डिस्क्रिप्शन् दे हे वो मैं आपकुं दिखाउंगो. क्योंके आप ये बात ध्यानमें रखोगे तो ब्रह्मको अहंकार आपकुं एप्रिशियेट् करने लायक लगेगो, नहीं तो आपकुं लगेगो के ''अरे आपणी जेम पेलो ब्रह्म पण अहंकारी छे. जावा द्योनी. आव भाई हरखा! आपणे बेउ सरखा'' पर वस्तुतः ऐसी बात नहीं हे. ग़ालिबने एक बात बहोत अच्छी कही हे :

''सब कहां कुछ लाला-ओ-गुलमें नुमाया हो गई।
खाक़में क्या सूरतें होंगी जो पिन्हां हो गई॥''

सारो सौन्दर्य जगत्में कहां प्रकट हो पायो हे? कुछ फूलन्में कहीं-कहीं वो सौन्दर्य प्रकट भयो हे पर तुमने ये तो नहीं सोच्यो के ये फूलन्में जो सौन्दर्य प्रकट भयो वो मट्टीमेंसु भयो हे. मट्टीमें न जाने कितनो सौन्दर्य छुप्यो भयो होयगो के जो कुछ-कुछ फूलन्में 'नुमाया' याने प्रकट हो गयो हे. ''खाक़में क्या सूरतें होंगी जो पिन्हां हो गई''. तो मट्टीमें छुपी भयी और भी न जाने कितनी-कितनी

सूरतें होयेंगी जो अपनेकुं दीखे नहीं हें. कुछ सूरतें अपनेकुं कोई गुलाबके रूपमें कोई मोगराके रूपमें कोई डेलियाके रूपमें कुछ नुमाया हो पायी हें.

या एंग्लसु सोचो तो ब्रह्मके अहंकारको पॉइन्ट् ऑफ् एप्रिशियेशन् मिलेगो के सारो ब्राह्मिक सामर्थ्य जगत्में कहां प्रकट हो पायो कुछ-कुछ कहीं अहंकार जैसे पदार्थन्में थोड़ो-बहोत नुमाया हो पायो हे. तो ब्रह्ममें न जाने कितनी खूबसूरत सामर्थ्य होयेंगी जो जगत्में पिन्हां=तिरोहित ही हें. (कुछ जो ब्राह्मिक सामर्थ्य अपने अहंकार जैसे तत्त्वन्में नुमाया=)आविर्भूत भयी हे, उनकुं अपन् एन्युमरेट् (गिननो) नहीं कर पावें हें. गामके अहंकारकी बात जावे दो आप खुद अपने अहंकारकुं एन्युमरेट् करो के आपके भीतर कौन-कौन जातके अहंकार हे. मैं जैसे शुरु करूं के ''मैं श्याममनोहर हुं''. अरे कोई श्याममनोहर केहवेसु सारो अहंकारको एन्युमरेशन् हो जायेगो? ''मैं लक्ष्मीको पति हुं'' और पाछो दूसरो अहंकार आ गयो. ''ढबु-टीकुको पिता हुं'' ''उत्तमजीको भाई हुं'' ''तुम्हारे सामने प्रवचन कर रह्यो हुं'' ऐसे काउन्टिंग् करते जायें तो अंत ही नहीं आवे. कितनी सूरतें हें मेरे अहंकारमें **''एको अहं बहु स्यां प्रजायेय''** की तरेह के एक मैं अनेक हो जाउं. वाकी कितनी सूरतें मेरे छोटेसे क्षुद्र अहंकारमें हें, तो ''खाक़में क्या सूरतें होंगी जो पिन्हां हो गई'' वो ब्रह्मके अहंकारमें कौन जाने कितनी-कितनी सूरतें होंगी के जो अभी तक अपन् जान भी नहीं पाये. काउन्ट् करो तो एन्डलेस् काउन्टिंग् हो जावे.

तुम्हारी गुजराती भाषामें पहले एक कविता बालकें बोलतें हतें *''गण्या गण्या नहीं, वीण्या वीणाय नहीं तोय मारी छाबड़ीमां माय''* अहंकारकी छाबड़ीमें गिनवे जाओ गिने नहीं जा सकें बीनने जाओ तो बीने नहीं जा सके तो भी मेरी 'अहंकार'की छाबमें समा जावें. कैसी जातकी छाब हे ये तो सोचो तुम कभी. और अपनी ये उपादेय छबड़ी ऐसी हे तो उपादानरूप ब्रह्मकी छबड़ी कैसी होयेगी! सब त्यागी-वैरागी लोग धोका लेके धोबीकी तरेह अहंकारकुं धोते

रहें हें. अपनेकुं लगे के अेरेरे... अहंकार कितनी गन्दी बात हे. वस्तुतः पर ऐसे छीछी करवेकी बात नहीं हे. दृष्टि होनी चहिये, तो तुमकुं अपने अहंकारकुं समझवेकी सिफत आयेगी. पर एक दृष्टि नहीं हे तो हर बात छीछी हे क्योंके **''सत्यं च अनृतं च सत्यम् अभवत्''**.

अहंकारकी कुछ कहानी खोटी हे तो कुछ अहंकारकी हकीकत सच्ची भी हे. अपने छोटेसे उपादेय अहंकारमें, अपने अहंकारकी कहानी और अपने अहंकारकी हकीकतमें कितनी पेचीदगियां हें. तो उपादान अहंकारकी तो चर्चा ही क्या कर सकें! उपनिषद् समझवेके लिये आपकुं एक जम्पिंग् पेड् मिलेगो वर्ना तो कन्सेप्ट्की कुछ डिफिकल्टी हे ही. श्रोता होनेको अहंकार कायम रखो छोड़ मत दीजियो तो बात समझमें आ जायेगी!

चार्ट २

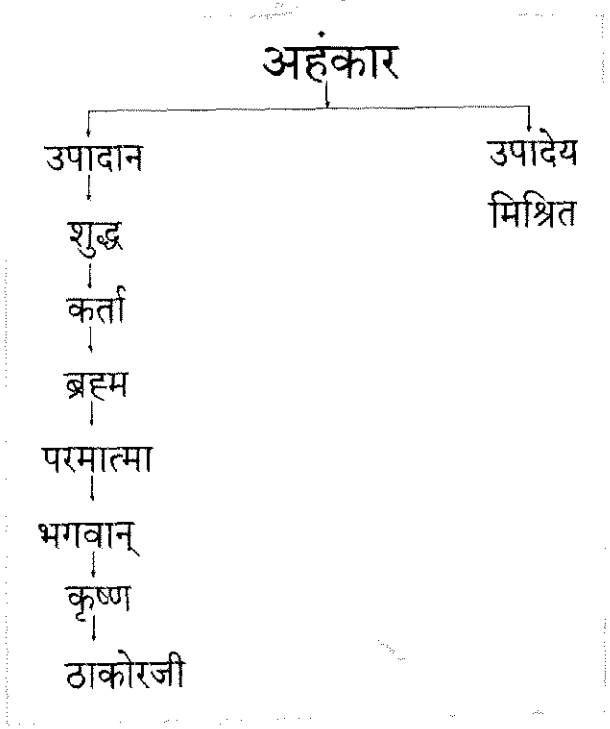

चार्टमें देखो के ये कर्ता हे. या कर्ताकुं अपन् ब्रह्मके बराबर मान लें. ब्रह्मके बाद अपने यहां ऑर्डरवाइज् परमात्मा भगवान् और कृष्ण आवें हें. क्योंके अपन् कृष्णके भक्त हें और खाली कृष्णके भक्त नहीं हें, अपितु समर्पणकी प्रक्रिया द्वारा निजगृहमें निजतनुवित्तके विनियोग द्वारा तथा पारिवारिक निजजनके सहयोगपूर्वक हृदयमें व्रजलीलाकी भाव-भावनाके रहस्यकुं संजोयेके अपने घरके ठाकुरके सेवक भी महाप्रभुके उपदेशके अनुसार हें. वस्तुतः याही संदर्भमें **''अमे एवारे''** गावें हें तो वहां तक भी अपनेकुं ये अहंकार ले जानो पड़ेगो. तबतो सारी बातकी मजा आयेगी.

(ब्राह्मिक अहंकार)

ब्रह्मको अहंकार उपनिषद् समझावे हे पर परमात्माको अहंकार उपनिषद्में खोजनो होय तो जरा गहेरो गोता लगावेकी जरूरत पड़े और उतने स्पष्ट शब्दनूमें नहीं मिलेगो पर महाप्रभुने वाही लिये अपनेकुं बोहत अच्छी एक गाइड्लाइन् दी हे **''''ब्रह्म' इति 'परमात्मा' इति 'भगवान्' इति शब्द्यते त्रितये त्रितयं वाच्यं क्रमेणैव मया अत्र हि''** (त.दी.नि.१।६) उपनिषद्में जो तत्त्व ब्रह्म तरीके वर्णित हे वो तत्त्व गीतामें परमात्मा तरीके वर्णित हे, वो तत्त्व भागवतमें भगवान् तरीके वर्णित हे. तत्त्वतः वो एक ही हे पर वाके ये अलग-अलग तीन पहलु उपनिषद् भगवद्गीता और भागवत इन तीनों शास्त्रनूमें निरूपित भयें हें. यासु इनके अहंकारनूके भी अलग-अलग पहलुनूकुं खोजनो-परखनो होय तो इन्हींमें क्रमशः गोता लगानो पड़ेगो. भगवान्को अहंकार अपनेकुं भागवतमें मिलेगो पर कृष्णको अहंकार सारी भागवतसु नहीं पर दशमस्कन्ध और विशेषतः वामें भी तामसप्रकरणमें जो व्रजकी लीला निरूपित भयी हे वहांसु मिलेगो. क्योंके **''सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः''** (चतुश्लो.१) अपनूकुं महाप्रभुने समझायो हें या 'त्रिविधनामावली' ग्रन्थके अनुसार सोचें तो तीनों अहंकारमें भी अपन् ले सकें. कृष्णको तीनों तरहके अहंकार : अपनेकुं अपने पॅरामीटरसु

नापके केहनो होय तो उनकुं भले 'तामस' 'राजस' और 'सात्त्विक' केह दो, जा भी तरेहसु केहनो होय. साथ ही साथ अपने घरके ठाकुरको भी अहंकार अपन् नहीं विचारें तो अपनेसु बड़ो नालायक कौन के अपन्ने अपने घरमें बिराजते ठाकुरके अहंकारकी परवा ही नहीं की! यासु उपादानरूप इन सभी अहंकारनुकुं भी देखनो पड़ेगो. क्योंके ये तो सारे मूल तत्त्वरूप अहंकार हें. यासु अपन् या ओर्डरके अनुसार डिस्कस् कर रहें हें.

यामें देखने लायक बात ये हे के उपनिषद् ब्रह्मके अहंकारको वर्णन कितनो अच्छो करे हे! उपनिषद् कहे हे **"आत्मैव इदम् अग्रे आसीत् पुरुषविधः"** (बृह.उप.१।४।१). अपन् ऐसे सोचतें होवें के पहले कुछ नहीं हतो तो उपनिषद् खुद ही या धारणाको निराकरण करे हे के **"तद्ध एके आहुः असदेव इदम् अग्रे आसीद्... कुतस्तु खलु एवं स्यात् कथम् असतः सद् जायेत?"** (छान्दो.उप.६।२।१-२) ऐसे अपनुकुं लग सके के पहले कुछ भी नहीं हतो पर जो कुछ भी नहीं हतो तो वामेंसु कुछ हो कैसे सके या कुछ भयो कैसे? जब कुछ होनेके लिये कुछ होनो चहिये तो उपनिषद् कहे हे **"आत्मैव इदम् अग्र आसीत् पुरुषविधः"**(बृह.उप.१।४।१) उपनिषद् ब्रह्मकुं 'आत्मा' केह रह्यो हे. उपनिषद् कहे हे के आत्मा पहले हतो पर कैसो हतो? पुरुषविध आत्मा हतो. याको मतलब क्या?

बाइबल्में हर बखत गॉड्कुं 'ही'(He) कह्यो गयो सो युरोपके फेमीनिस्ट्नुकुं बुरो लगे. उनें कही के ये मेइल्शावॉनिज़म् हे के गॉड्कुं मेइल् माननो. अब क्या करनो? क्या गॉड्कुं 'शी'(she) केहनो, तो मेइल्सुकुं बुरो लगेगो गॉड्कुं फीमेइल् मानवें लगें तो. घबरा के गॉड्कुं 'इट्' कहो. पर आदमकुं वाकी इमेज्के अनुसार घढ़्यो होनेकी जो माइथोलोजि वाकी व्याख्या कठिन हो जायेगी. गॉड्के साथ ये बड़ी प्रॉब्लेम् हे. अपनेमें कहां झगड़ा नहीं चले

हे मेइल् और फीमेइल् के आपसमें टकराते अहंकारनुको!

आज ही अखबारमें पढ़्यो के पति-पत्नीके कुछ झगड़ा हो रह्यो थो. तो पत्नी एडवाईस् लेवे गई के हमारो पति कुछ समझे नहीं कोई बात माने नहीं तो कैसे सुधारनो? तो सायकॅट्रिस्ट्ने कही *"एक काम करो पति सुधरे के नहीं सुधरे तुम सुधर जाओ"* तो वाने कही *"मैं तो सुधरी भयी हुं"* वाने कही *"तुम्हारे सोचमें ही कुछ गड़बड़ी हे"* वाने पूछी *"मेरे विचारनुमें क्या खराबी हे बताओ! मैंने आपकुं अपनी सारी कथा बता दी"* सायकॅट्रिस्ट्ने कही *"तुम्हारे सोचमें सबसु अधिक तकलीफ देनेवाली बात ये हे के तुमने व्यर्थमें अहंकार पैदा कर लियो के तुमकुं पतिकुं सुधारनो हे. ये अहंकार निकाल दो. पति सुधर जायेगो"* पति या पत्नी में जब तक ये अहंकार कायम रहे के मोकुं पत्नी या पति कुं सुधारनो हे तब तक दोनोंमेंसु कोई भी सुधर नहीं सके. ये अहंकार निकाल दो कल सब कछु सुधर जायेगो. ये सारे झगड़ा अहंकारके झगड़ा हें के कोईकुं सुधारनो हे. अपने भीतर या तरीकेके अहंकार काम करते होवें हें. सबमें ही गुरु-शिष्यमें भी ऐसो ही अहंकार होवे.

समझवेकी बात यामें ये हे के अपनो अहंकार ब्रह्मके अहंकारको प्रोडक्ट् अर्थात् उपादेय अहंकार हे. और उपादान अहंकार ब्रह्मको हे, वामें 'पुरुषविध'को मतलब पुरुष नहीं हे, वामें वो सारी पोटेन्शियालिटीज़् हें. 'पुरुष' पदको मतलब आज अपन् मेइल् समझे हें. संस्कृतभाषामें मतलब मेइल नहीं हे. वाको मतलब हे **"'पुरि शेते' इति 'पुरुषः'"** कोई पुरमें जो शयन=अवस्थान करतो होय वो पुरुष हे. या लिये अपने देशकी एक खासियत देखो के अपनेकुं कभी प्रॉब्लेम् नहीं भयी के भगवान् मेइल् हे के फीमेइल् हे? ये झगड़ा तो क्रिश्चियन् और मुसलमानन् के कारण अपने यहां भी घुस गयो. भगवान् तो सब कछु हे **"त्वं कुमार उत वा कुमारी!"**. (ऋक्सं)

वो तो सब कछु हे. नर भी नारी भी मनुष्य भी पशुपक्षी आदि अमनुष्य भी जड़ भी चेतन भी. और एक ही रूपमें वाकुं बांधवे जावो तो कुछ भी नहीं **''न स्त्री न षंडो न पुमान् न जन्तुः न अयं गुणः कर्म न सन् नच असन्''**. (भाग.पुरा.८।३।२४) या एंगल्सु देखो तो कुछ भी नहीं हे और वैसे सब कछु वो ही हे. यालिये अपने यहां कभी झगड़ा नहीं भयो **''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''** माँ भी तु हे तो पिता भी तु हे. **''त्वमेव बंधुः च सखा त्वमेव''** अपने यहां तो सब कछु जब परमात्माकुं मान्यो हे, तो वामें ये झगड़ा नहीं भयो के वो 'ही' हे के 'शी' हे के न 'ही' हे न 'शी' हे. ऐसी भी क्या खींचातानी के खींच पकड़ मुझे जोर आता हे! अरे सभी कुछ वो ही हे! तो पुरुषविधको मतलब लौकिक नरके जैसो पुरुष नहीं. 'पुरुषविध'को मतलब हे जो **''पुरि शेते इति पुरुष''. वा अर्थमें वो पुरुष हे.**

और ऐसी वा पुरुषविध आत्माने जब इन्ट्रोस्पॅक्शन् कियो, ऐसे उपनिषद् कहे हे, **''सो अनुवीक्ष्य न अन्यद् आत्मनः अपश्यत्''** (बृह.उप.१।४।१) तब वाकुं अपने अलावा कुछ दीख्यो ही नहीं. सो तब सबसु पहले वाकुं ऐसे लग्यो और वो बोल्यो के ''मैं हुं'' **''सो 'अहम् अस्मि' इति अग्रे व्याहरत्''**(बृह.उप.१।४।१) ये पहलो अहंकार हे. वाने सबसु पहले अपनी खुदकी सेल्फ्-अवॅरनेस् डॅवलप् करी. उपनिषद् याके बाद बहोत एक अच्छी बात कहे हे के या लिये सभी नामनकुं अपने गर्भमें धारण करवेवाले ब्रह्ममेंसु पेहलो नाम 'अहं' प्रकट भयो. ये सिर्फ ब्रह्मपें ही लागू होनेवाली बात नहीं हे. गर्भमें जब आप हते तब भी आपकुं खुदको अहं तो हतो ही. बाहर आनेके बाद नामकरण संस्कार भयो, वा नामकरण संस्कारके कारण अपने सब नाम प्रचलित होवें हें. अपनी चेतनामें ऐसे धरे गये नामनकुं सबसु पहले अपन् अपने 'अहम्' नामके साथ जोड़े तब धरे गये मन्नु पुन्नु चुन्नु आदि नामनकुं अपन् अपने नाम

मान पावें हें. 'अहं' नामके पर्यायके रूपमें ऐसे धरे गये नाम जुड़ न पाते होंय तो वो अपनेकुं अपने नाम नहीं लगेंगे.

उपनिषद् ये बात समझा रह्यो हे के ब्रह्ममें भी स्वयंकी आत्मचेतनाके सिवा वा बखत भी कोई विकल्प स्फुरित नहीं भयो **''न अन्यद् आत्मनो अपश्यत्''** (बृह.उप.१।४।१). अतएव अहंको कोई प्लुरल् या बहुवचन हो नहीं सके हे, ये बात तो मैंने शुरुआतमें ही समझा दी हे. 'अहं'को ड्युएल् केस् या द्विवचन भी नहीं होवे. यासु एकमेव अद्वितीय ब्रह्म 'अहं'नामा बन गयो. ये ब्राह्मिक अहंको वर्णन हे! ये अहं उपादानात्मक अहं हे.

अपनो अहं भी या मॉडेलकुं ही अनुसरवेवालो उपादेय अहं हे. उपनिषद् क्या-कैसे कहे हे देखो **''तस्मादपि एतर्हि आमन्त्रितो 'अहम् अयम्' इत्येव अग्रे उक्त्वा अथ अन्यद् नाम प्रब्रूते यद् अस्य भवति''** (बृह.उप.१।४।१). कोई बुलातो होय के *''अरे कोई हे का?''* तो अपन् क्या केहेंगे? *''हां मैं हुं!''* पहले 'मैं हुं' बोलोगे वाके बाद बोलोगे के ''श्याम हुं'' के ''धर्मेन्द्र हुं'' के ये हुं के वो हुं. ये सब बातें बादमें आवेंगी. जा बखत अपन् शयन करवे जावें तब बहोत सारी स्टेजिस् क्रमशः आती होवें हें : तन्द्रा, स्वप्न, दोनोंके बीच आती निद्रा और गाढ़निद्रा. इनमें गाढ़निद्राके समय अपनो अहं और विकल्पभूत सारे नाम खो जाते होवें हें. गाढ़निद्रामें आपकुं अपनो अहं भी अनुभूत नहीं होवे. पर तन्द्रा और स्वप्न के बीच आती निद्रामें खुदको अहं कभी भासित तो कभी अनवभासित होतो रहे. अपने अहंकी पूर्ण अनुभूति तो स्वप्नावस्था तन्द्रावस्था और जाग्रदवस्था में लौट आती होय. तन्द्रामें तो सबसु पहले अपनेकुं अपनो अहं ही स्फुरित होतो होवे, वाके बाद अपनेकुं अन्य सारे नाम स्फुरें.

एग्ज़ेक्ट् ऐसो ही स्वरूप ब्रह्मके अहंको भी निरूपित भयो

हे. वहां भी 'अहं' नाम सबसु पहले स्फुरित भयो. यालिये उपनिषद् कहे के जो 'अहं' नामकी प्राथमिकता समझ पावे वो अपने सारे पाप जला देतो होवे हे. बहोत लोग अहंकुं गाली देतें रहें पर अपने उपनिषद्में ये दमखम हे के वो अहंकुं इतनो ग्लोरिफाय् भी कर पावे हे के "या अहंकी प्राथमिकताकुं जो समझ पावे वाके सारे पाप जल जावें हें". तो फिर अपनकुं ये भी विचारनो पड़ेगो के "**अहंकारं न कुर्वीत**" कौनसे अर्थमें महाप्रभु केहनो चाहें हें? सो वो तो जब प्रसंग आवेगो तब बताउंगो ही. अभी तो अपन् उपादान कर्ताकी बात कर रहे हें.

हर व्यक्तिके भीतर अहं होवे ही हे और वो अपनी 'अहं' नामकी प्राथमिकता और प्रधानता भी समझ ही सके हे. पर जब सच्ची रीतसु समझ पावे तभी वाके सारे पाप नष्ट हो पावें. धरे भये नामनकुं धरे भये जानते भये भी अपन् 'अहं' नामकी प्राथमिकता और प्रधानता कुं भूलके दूसरे नामनके साथ जबरदस्ती कॉम्प्रोमाइज् कर लेवे, 'अहं' नामकुं बाधित करते होवें हें. फिर तो बादमें धरे भये नामनको पक्ष लेके अपने अहंसु कोम्प्रोमाइज् कर लेवेपे तो सारे पाप शक्य हो जावें. ये बात ब्रह्मके अहंको निरूपण करते समय उपनिषद् समझानो चाहे हे. साथ ही साथ उपनिषद् ये भी खुलासा दे-दे हे के आपको उपादेय 'अहं' नाम वा मौलिक सर्वोपादानरूप 'अहं' नामकी जो चेतना या आत्मावभासन हे वासु शेअर् करवेके कारण ही आप अनुभव कर पाओ हो "**एतर्ह्यपि आमन्त्रितो 'अहम् अयम्' इत्येव अग्रे उक्त्वा अथ अन्यद् नाम प्रब्रूते यद् अस्य भवति**" (वहीं) अतः जैसे आप अपने 'अहं' नामकी अनुभूतिमें आद्य पुरुषके अहंकी अनुभूतिकुं शेअर् करो वैसे ही 'ब्रह्म' नामकुं भी शेअर् करनो शुरु करोगे तो तुम्हारी आहंकारिक चेतनामें ही ब्राह्मिक आयाम भी प्रकट हो सके हे "**तद् आत्मानमेव अवेद 'अहं ब्रह्म अस्मि' इति तस्मात् तत् सर्वम् अभवत्**" (बृह.उप.१।४।१०) या लिये महाप्रभु

भी कहें हें "**आनन्दांशाभिव्यक्तौ तु तत्र ब्रह्माण्डकोटयः प्रतीयेरन् परिच्छेदो व्यापकत्वं च तस्य तत्**" (त.दी.नि.१।५४) यों अपनो ही 'अहं' नाम भी वाकी विरुद्धधर्माश्रयी ब्राह्मिक परिपूर्णतामें खिल उठे.

(पारमात्मिक अहंकार)

दूसरो फॅसेट् परमात्माको बतायो. ये परमात्माके अहंको निरूपण उपनिषद्के "**तत् सृष्टवा तदेव अनुप्राविशत्**" (तैत्ति.उप.२।६) वचनमें मिले हे. क्योंके ब्रह्ममेंसु जगत् पैदा भयो. अब ये कहानी ब्रह्मने जगत् पैदा कियो उतनी छोटी नहीं हे. ब्रह्म एक हकीकत हे पर वाकी कहानीमें ये भी बात आवे हे. ब्रह्ममेंसु पैदा भये जगत्में प्रविष्ट होके भीतर मोजूद हे, एब्सेन्ट् या तिरोहित नहीं हे, कुंभारकी तरेह. कुंभार वाके बनाये घड़ामें एब्सेन्ट् होय ऐसे ब्रह्म एब्सेन्ट् नहीं हे. वो भीतर प्रेज़ेन्ट् या आविर्भूत हे. जैसे मट्टी प्रेज़ेन्ट् हे. जैसे सूत कपड़ामें प्रेज़ेन्ट् हे. जैसे सोना गेहनामें प्रेज़ेन्ट् हे. वा तरेहसु ब्रह्म प्रेज़ेन्ट् हे, अपने कार्यरूप उपादेयमें. वाकी सक्रिय उपस्थिति अर्थात् एक्टिव् प्रेज़ेन्सकुं अपन् 'परमात्मा' कहें हें. ऐसे अपने अहंकुं वो खुद कैसे बतावे वो गीताके अनुसार देखें : बहोत खूबसूरत लाइन् हे :

"**यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।**
तस्य अहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥"
(भग.गीता. ६।३०)

कितनी अच्छी बात कही हे "**यो मां सर्वत्र पश्यति**" जो मोकुं सर्वत्र अवस्थित प्रेज़ेन्ट् हुं ऐसे देख पातो होय, जो मोकुं सर्वत्र व्याप्त ओम्निप्रेज़ेन्ट् समझ पातो होय, हर नाममें हर रूपमें हर कर्ममें मैं प्रेज़ेन्ट् हुं ऐसे जो समझे हे. और "**सर्वं च मयि पश्यति**" सब कछु मेरे भीतर हे ऐसे समझे हे. वाकुं लाभ क्या होयगो ये गीता केह रही हे "**तस्य अहं न प्रणश्यामि**" अर्थात्

वाके लिये मैं, अर्थात् मेरो अहं, कभी खतम नहीं होउंगो, मेरो पारमात्मिक अहं वाके लिये सदा मौजूद रहेगो. जो मोकुं सर्वत्र देख रह्यो होय, वाके अहंके कॉरस्पोन्डिंग् वाकुं मेरो अहं हर वक्त रॅजोनन्स्=प्रतिध्वनिके रूपमें सुनायी देगो. वो खुदकी एम.आर.आई. करातो होय तो वाके अहंमें मेरे अहंको रॅजोनन्स् मिलेगो. एम.आर.आई. अपन् अपनी करें और और रॅजोनन्स् वाके अहंको आयेगो हों **''तस्य अहं न प्रणश्यामि'** और भगवान् ये भी बात केह रहें हें **''स च मे न प्रणश्यति''** वाके अहंकुं वाके 'मैं'कुं परमात्मा भी खतम नहीं करनो चाहेगो. देखो कितनी बड़ी बात केह दी, दोनोंके अहंको कम्पाउन्ड् हो गयो! वो मेरे अहंकुं कभी खतम नहीं करेगो और मैं कभी वाके अहंकुं खतम नहीं करुंगो. हम दोनोंके अहंकार एक-दूसरेके साथ कम्पाउन्ड् होके अनुभूतिगोचर होयेंगे. अब सिम्पल् अहंकी बात नहीं रेह गई. **''यो मां पश्यति सर्वत्र''** शरत निभे तो ये बात बने! **''सर्वं च मयि पश्यति''** सब कुछ मेरेमें देखवेवालो खुदकुं भी परमात्माके अविनाशी अहंके अंश तरीके जब देखे तो खुदकी भी अविनाशिता दिखलायी देवे लगेगी यासु कह्यो के **''स च मे न प्रणश्यति''** भगवान् केह रहें हें के वाको अहं कभी खतम नहीं होयगो. वाके रिलेशन्में मैं कभी खतम नहीं होउंगो. और मेरे रिलेशन्में वो कभी खतम नहीं होयगो.

या तरेहसु प्रत्येक एग्ज़िस्टेन्ट् या सबसिस्टेन्ट् फिनोमिनामें जो भगवान्के युनीक् बिइन्गुकुं रिअलाइज़् करतो होय वो खतम नहीं होवे :

''सर्वभूतस्थितं यो मां भजति एकत्वम् आस्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते॥''
(भग.गीता.६।३१)

वो सर्वथा बन्यो रहे और वाको एग्ज़िस्टेन्स् मेरे बिइन्गुसु कभी

कॉन्ट्राडिक्शन्में जा नहीं सके. क्योंके मेरो बिइन्ग् वाको एग्ज़िस्टेन्स् हे और वाको एग्ज़िस्टेन्स् मेरो बिइन्ग् हे. ये बात भगवान् केह रहें हें. कलकी मेरी बात याद रखोंगे तो या बातकी गंभीरता समझ आयेगी के ये एग्ज़िस्टेन्स् क्या-कैसो हे. जो टाइम् एन्ड् स्पेस् की चोखटमें होय वाको एग्ज़िस्टेन्स् होवे और जो या चोखटके बाहर होवे अर्थात् देश और काल में एग्ज़िस्टेन्स् हे वो भूत हे. भगवान् भूत नहीं हे हों! भूतभावन हे. भगवान्को नाम 'भूतभावन' हे. भूतकुं भावन करवेवालो. जो भी भूत हें वो कोई न कोई देशमें या कालमें होवे हें पर उन ऐसे भूतन्को भावन या भावक होय वामें कोई तरेहको कॉन्ट्राडिक्शन् नहीं रेह जाय हे. **''सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते''** या तरीकेको भगवान्को अहं हे. ये भगवान्को अहं कोईके साथ कॉन्ट्राडिक्शन्में नहीं जावे हे, या भगवान्के अहंकुं कोई कॉन्ट्राडिक्ट् कर नहीं सके हे. कोई सायन्स्को या सायन्टिस्ट्को बाप आ जाय तो भी या अहंकुं कॉन्ट्राडिक्ट् नहीं कर सके. क्योंके सर्वभूतमें सेल्फ्-अवॅरनेस् हे. अब आपकुं ख्यालमें आयेगो के सर्वभूतमें सेल्फ्-अवॅरनेस्को मूल कहां हे?

जैसे टेबल्में सेल्फ्-अवॅरनेस् नहीं हे. पर एक बात मत भूलो के टेबल् जा तरेहसु, जड़ मेटर्मेंसु इवोल्व् भयो हे वा तरीकेकी मेटर्में, स्टेम्सेल्की तरह टेबल्के इवोल्व् होनेको कोई सूत्र हतो के नहीं? यदि नहीं हतो तो टेबल् इवोल्व् हो नहीं सकतो. और हतो तो **''सर्वभूतस्थितं यो मां भजति एकत्वम् आस्थितः सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते''** वो योगी तो भगवान्में रेह रह्यो हे, ये बात भगवान् केह रहें हें. यदि तुमने भूत और भूतभावन कुं अलग-अलग मान्यो तो तुमने द्वैतमें आस्थान कियो, द्वैतकुं पकड़ लियो. तो उपनिषद् पहले ही गाली दे रह्यो हे :

''यदा ह्येव एतस्मिन् अदृश्ये अनात्म्ये अनिरुक्ते अनिलयने

अभयं प्रतिष्ठां विन्दते अथ सो अभयं गतं भवति. यदा ह्येव एषः एतस्मिन् उदरम् अन्तरं कुरुते अथ तस्य भयं भवति. तत्त्वेव भयं विदुषो अमन्वानस्य''.

(तैत्ति.उप.२।७)

या बातकुं उपनिषद् केह रह्यो हे के भूत और भूतभावन के एकत्वकुं पकड़ोगे तो भयको कोई कारण नहीं हे. वर्ना तो भय ही भय चारों ओर दिखलायी देगो. याको सीधो कारण ये हे के हर छोटी मछलीकुं बड़ी मछली खा जाय हे. हर तुम्हारे छोटे अहंकुं तुम्हारे अहंसु बड़े, व्यापकतर, परिवार समाज राष्ट्र जगत् ब्रह्माण्ड के भयंकर अहं खा जावेकुं सन्नद्ध ही होवें हें. अन्तमें इन सब अहमनूकुं भी ब्रह्मको अहं महाप्रलयके समय खा जावे हे. पर जा बखत तुम यों मानोंगे के ये दो हें ही नहीं, एक ही हें, तो कौन खायेगो और कौनकुं खायेगो? उपनिषद्ने यालिये ही स्पष्ट खुलासा कर दियो :

''अहम् अन्नम्! अहम् अन्नम्!! अहम् अन्नम्!!! अहम् अन्नादो! अहम् अन्नादो!! अहम् अन्नादो!!!... अहम् अन्नम् अदन्तं मां अद्मि. अहं विश्वं भुवनम् अभ्यभवाम. सुवर्नज्योतीः यः एवं वेद''.

(तैत्ति.उप.३।१०।६)

मैं कैसो अन्न हुं के जा अन्नकुं मैं खा रह्यो हुं और वो मोकुं खा रह्यो हे, अन्न और अत्ता दोनों एक-दूसरेपे निर्भर हें **''अहं अन्नम् अहम् अन्नादो''** यदि या बातको मोकुं रिअलाइजेशन् हो जाय तो मैं **''अहं विश्वं भुवनम् अभ्यभवाम्''** मैं स्वयं विश्वात्मक बन गयो! एक छोटेसे रिअलाइजेशन्में मेरेमें अहंके भीतर विश्वात्मकता प्रकट हो रही हे **''सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते''**.

वा बिइन्गूके और भूतके दोनों ही अहंकारनूकुं एक-दूसरेसु इक्वेट् करो. जैसे ही तुमने इक्वेट् कियो और तुम्हारो सारो भय निकल जायेगो. तुमकुं वो खा जायेगो या तुम वाकुं खा जाओगे ऐसे डरवेको कोई कारण रेह नहीं जायेगो. कोई कोईकुं खा नहीं सके. गीतामें कितनी अच्छी बात कही हे **''आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति यो... सुखं वा यदि वा दुःखं, स योगी परमो मतः''** (भग.गीता.६।३२) मोकुं यापे भी काफी एक्सप्लेन् करनो हे. ये भी अहंकारको बड़ो एक खूबसूरत फॅसेट् हे. पर यासु पहेले मैं आपकुं एक बतानो चाहुं.

गीतामें भगवान्ने कमसु कम बीसेक बार अहंकारकुं गाली दी हे. **''यद् अहंकारम् आश्रित्य 'न योत्स्ये' इति मन्यसे मिथ्या एष व्यवसायः ते प्रकृतिः त्वां नियोक्ष्यति''** (भग.गीता.१८।५९) और **''अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः''** (भग.गीता.१६।१८) या ढंगकी. और तो और यहां तक केह दियो के अहंकार तुम्हारे भीतर आसुरी आवेश हे. खूबसूरतीकी सबसु बड़ी बात ये हे के कमसु कम दो सो छिहत्तर बार भगवान् खुद 'अहं' बोलें हें. इतनो तो जीव बिचारो अर्जुन भी नहीं बोल पायो. खुद गिनके कभी देख लो के भगवान् सारी गीतामें 'अहं' कितनी बार बोलें हें. भगवान्के अहंकुं अपन् ऑडिट् करें तो कमसे कम दो सो छिहत्तर या तीन सो बार भी बोलें होंय तो आश्चर्यकी बात नहीं हे. अब याको अर्थ कैसे समझनो? इतनी बार खुद 'अहं' केहके फिर समझाते होवे के अहंकार मत करो तो विद्यार्थी क्या सीख लेगो वासु?

अर्जुन होय अपन् होंय, एक बात साफ-सुथरे तौरपें समझनी पड़ेगी के कुछ अहं शुद्ध अहं होवे हे और कुछ ऐसे जिनकुं गाली भी दी जानी चहिये. उन दोनों अहंकुं छूटे करके देखने पड़ेंगे के कहां कौन सो शुद्ध अहं हे और कौनसो मिश्रित अहं हे.

कौनसे तरीकाके अहंकुं गाली दी जा रही हे और कौनसे तरेहके अहंकुं भगवान् खुद रिपीट् करें हें. मैंने तो ऐसे ही रफ् काउन्टिन्ग् करी एज्जेक्ट् काउन्टिन्ग् नहीं करी. कितनी जगह 'मैं हुं' 'मैं हुं' 'मैं हुं' भगवान् करते रहें हें **''अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयः तथा मत्तः परतरं न अन्यत् किञ्चिद् अस्ति''** (भग.गीता.७।६-७) इतनो अहंकार खुद क्यों प्रकट कर रहे हो? पर तीनसों बखत अहंकार करवेके बादभी अहंकारकुं गाली देते होंय तो मतलब कोई न कोई दो तरीकेके अहं हें.

अपने अहंकारकी या एनालिसिस्के तहेत अपन् नॅक्स्ट् स्टेप्पें जावे हें. भगवान्को एक अहंकार कैसो हे ये मैं गीताके शब्दन्में सुनाउं तो आपकुं मजा आयेगी. भगवान् कहें हें **''मया ततम् इदं सर्वं जगद् अव्यक्तमूर्तिना मत्स्थानि सर्वभूतानि नच अहं तेषु अवस्थितः''** (भग.गीता.९।४). सारे जगत्में मैं फेल्यो भयो हुं. देखो 'अहं' बोल रहें हें भगवान्. जितने भी भूत हें वो मेरेमें हें. पर **''नच अहं तेषु अवस्थितः''** एक एंगल् ऐसो भी हो सके हे के तुमकुं भूत मेरेमें दीखेंगे ही नहीं. क्योंके भूत तुमकुं तुम्हारे भीतर या कोई देश-कालमें दीखते होंय. **''नच मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगम् ऐश्वरं भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः''** (भग.गीता.९।५) मैं तो भूतभृत् हुं, मानें भूतन्को भरण करवेवालो मैं हुं. **''भूतभृत् नच भूतस्थो''** भूतस्थ नहीं हूं. क्योंके मैं भूतभावन हूं यासु भूतभावन होनेकी हकीकतके एंगल्सु देखें तो भूत तुमकुं मेरेमें दीखेंगे नहीं पर कहानीके एंगल्सु सोचोंगे तो प्रभु केह हें **''मया ततम् इदं सर्वं जगद् अव्यक्तमूर्तिना मत्स्थानि सर्वभूतानि नच अहं तेषु अवस्थितः''**. आकाशमें जैसे वायु सब जगह भरी रहे हे वैसे सभी भूत मेरे भीतर अवस्थित हें **''यथा आकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानि इति अवधारय''**.(भग.गीता.९।६) ऐसी फुल् ऑफ् कॉन्ट्राडिक्शन्की बात समझमें कैसे आवे? कैसे नक्की करनो के ये सॅन्सिबल् स्टेटमेन्ट्

हे या नॉन्-सेंन्सिबल्? याके समाधानार्थ भगवान् केह रहें हें के मैं तुमकुं थोड़ो मॉडेल् समझाउं जा मॉडेल्के आधारपे ये बात समझमें आ पावेगी.

आकाशमें जैसे सब जगह वायु भर्यो भयो हे, ऐसे जितने भी भूत हें वो मेरे भीतर भरे भयें हें. अब एक बात ध्यानसु समझो के यदि हवा पोल्युटेड् मिश्रित या अपवित्र या अशुद्ध हो जाय तो क्या आकाश 'पोल्युटेड्' केहवावे? नहीं. हवा पोल्युटेड् होवेसु आकाश पोल्युटेड् नहीं हो जावे. ऐसे ही भूतमें जो भी उत्पति-स्थिति वृद्धि-ह्रास लय-नाश के पोल्युशन् जैसे लगते होंय वाके कारण मेरेमें कुछ पोल्युशन् नहीं आ जावे. मेरो अहं एकदम शुद्ध हे और मेरे शुद्ध अहंमें इन सारे भूतन्की उत्पत्ति-स्थिति वृद्धि-ह्रास या लय-नाश होतें रहें हें. कोई रो रह्यो हे, कोई मर रह्यो हे, कोई जी रह्यो हे, कोई हंस रह्यो हे, कोई नाच रह्यो हे, कोई कूद रह्यो हे. अन्तमें जैसे घड़ा मट्टीमें मिल जाय ऐसे सारे भूत मेरेमें मिल जाय हें **''सर्वभूतानि... प्रकृतिं यान्ति मामिकां कल्पक्षये, पुनः तानि कल्पादौ विसृजामि अहम्''** (भग.गीता.९।७) कल्पक्षयमें मिल जावें पर कल्पके आदिमें फिर सायक्लिकली सर्क्युलर् पाथ्में उनको कन्टिन्युअस् क्रिएशन् करतो ही रहुं हूं. **''प्रकृतिं स्वाम् अवष्टभ्य विसृजामि पुनः-पुनः भूतग्रामम् इमं कृत्स्नम् अवशं प्रकृतेः वशात्, नच मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति!''** (भग.गीता.९।९) अनीश्वरवादी समझें के भूतग्राम खुदकी प्रकृतिके वश उत्पन्न-स्थित बढ़ते-घटते लीन-नष्ट होते रहें. भगवान् कहें हें के ''नहीं मेरी प्रकृतिके वश हे सारो अवश भूतग्राम और मैं ही भूतग्रामकुं उत्पन्न आदि करतो रहुं हुं.'' ब्रह्म परमात्मा भगवान् की त्रिविध हकीकतकी ऐसी हे ये अनेकविध कहानी जो भगवान् खुद सुना रहें हें.

यहां आके वो भगवान् बन रहें हें. यहां (भग.गीता.९।४-१९) तक तो परमात्मा होवेकी भूमिका समझाके अब (भग.गीता.९।२३-३४) वा परमात्मामेंसु भगवान् कैसे इवॉल्व् भये वो भगवान् समझावें हें. काफी लम्बो चॅप्टर् हे. सब मैं नहीं बता पाउंगो पर जहांसु भगवान् कैसे डॅवलप् भये वो देखवे लायक बात हे :

''समो अहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यो अस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चापि अहम्॥''.
(भग.गीता.९।२९).

सब भूतन्में मैं तो इक्वली डिस्ट्रीब्युटेड् हुं. मेरो बिइन्ग् कोई भी भूतमें अन्इक्वली डिस्ट्रीब्युटेड् नहीं हे **''न मे द्वेष्यो अस्ति न प्रियः''** यालिये मेरेलिये न कोई द्वेष्य हे. मेरे अहंकारमें मोकुं कभी ऐसे स्फुरित नहीं होवे के ये वस्तुकुं मैं द्वेष कर रह्यो हुं या ये वस्तु मोकुं प्रिय हे. यहां तक तो परमात्मा आ गयो पर याके बाद अचानक समर्सोल्ट् खा रह्यो हे परमात्मा और केह रह्यो हे के **''ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चापि अहम्''** जो मेरो भजन करे हे, वामें अपनी प्रेज़न्स् स्पेसिफिकली मैं भी फील् करूं हुं और वो भी मेरी प्रेज़न्स् अपनेमें फील् करे हे. तुम फील् नहीं कर रहे हौगे पर परमात्मा तो हे. अपन् फील् करते होंय के नहीं करते होंय, जैसे अपन् हवाकुं फील् करते होंय के न फील् करते होंय, हवा नहीं हे ऐसे कह तो नहीं पावेंगे. पर एक लम्बी सांस खींचो तो आपकुं फील् होयगो के चारों ओर हवा भरी भयी हे. नहीं तो हवा यहां भरी हे कैसे पता चलेगी? मैं सर्वत्र भर्यो भयो हूं पर भजनकी जो लम्बी सांस खींच रह्यो होय वाकुं मेरी प्रेज़न्स् खुदके भीतर भी और बाहर भी पता चलेगी. वाकुं ये रियलाइज़् होयगो के ''मैं भगवान् हुं'' बाकी 'परमात्मा'की तरेह तो मैं सब जगह भर्यो भयो हुं ही. तुमकुं पता भी नहीं

हे के परमात्मा हे के नहीं हे. अपन् लम्बी सांस नहीं खींचे तो अपनेकुं पता ही नहीं चले के सांस ले रहें हें के नहीं ले रहें हें. ऐसे एक लम्बी सांस, भगवान्के भजनकी, भजनात्मिका सांस लो तो तुरत पता चले के अच्छा ये 'परमात्मा' ही नहीं हे, ये तो 'भगवान्' भी हे, जाकुं अपन्कुं भजनो हे.

भजनमें ये सांसकी बात कहांसु आ गई? संस्कृतभाषाके अनुसार "**'भज्' = सेवायाम्**" क्रियापदको अर्थ ढोलक-मंजिरा ले के भजन-कीर्तन करनो नहीं पर सेवन=उपभोग करनो हे. वो औषधिसेवन वायुसेवन पथ्यसेवन संगीतरागसेवन सुगन्धसेवन सिगरेट-तमाकु जैसे दुर्व्यसनन्को सेवन, ऐसे सब अर्थन्में 'सेवा'शब्द कॉमन् ही हे. जाको अपन् इन्टेक् करें वाको नाम 'सेवन' हे. तो जब अपन् परमात्माको इन्टेक् करतें होंय तो वाको अपन् सेवन करें हें. इन्टेक् बेज़िकली सेवनको भाव हे. वा ऑक्सिज़न्को इन्टेक् नहीं कर रहे हो तो तुम अपने अहंकारकी कार्बन छोड़ रहे हो.

जब तुमने वाको सेवन शुरु कियो तो वो परमात्मा फिर परमात्मा नहीं रेहके भगवान् हो जाय. तुम वाको सेवन करो तो वो 'भगवान्' हें वरना तो 'परमात्मा' हे. अब 'हे' सो हे. वाकुं अपन् मानें तो 'हे' नहीं मानें तो भी 'हे' ही. अपन् वाकुं गाली दे तो भी 'हे' प्रसंशा करें तो भी 'हे'. वाको खंडन करनो होय तो खंडन करो तब भी वो तो 'हें'. खंडन करवेसु 'परमात्मा' थोड़ो खंडित हो जावेगो! यालिये भगवान् केह रहें हें :

"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे... तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥
तमेव शरणं गच्छः सर्वभावेन भारत!"

(भग.गीता.१८।६१-६२)

परमात्मा हे वो ईश्वर बनके, भगवान् बनके सबके भीतर भी बिराजमान हें. यों अपन्ने भक्तानुरागरूप अहंकार करवेवाले भगवान् होवेको पेहलु देख्यो.

पर भगवान् होनो विविध आयामकी वस्तुको कोई एक अन्यतम आयाम हे. आधुनिक विज्ञानमें मॅटर्के तीन डायमेन्शन्स् माने गये हे लॅन्थ् ब्रॅथ् और डॅप्थ्. ऐसे वा परम तत्त्वके भी अलग-अलग डायमेन्शन्स् हें. एक डायमेन्शन् हे वाके 'ब्रह्म' होनेको. जो भी कुछ वस्तु हे वाको सब्स्टेन्सियल् फाउन्डेशन् वो हे. जो भी कुछ वस्तु नाम रूप हें अथवा जो भी क्रिया हें उनको स्क्रीन् ब्रह्म हे. ब्रह्म होनेको मतलब जाके अस्तित्वको अस्वीकार वदतोव्याघात अर्थात् सॅल्फ-कॉन्ट्राडिक्शन् जैसो होवे. 'ब्रह्म' पदको अर्थ परिपूर्णता या अपरिच्छिन्नता इनकुं अपन् नॅगेट् कर ही नहीं सकें. तुम स्क्रीनकुं कैसे नॅगेट् करोगे? तुम स्क्रीन्पें लिख दो के *"दिस् स्क्रीन् डज् नोट् ॲग्ज़िस्ट्"* वुड इट् मीन् दिस् स्क्रीन् डज् नोट् ॲग्ज़िस्ट्. इफ सो व्हेर हेव् यु रीटन् इट्? ओन द् स्क्रीन् ओनली! यासु सिद्ध होवे के स्क्रीन्में शक्ति हे के तुम्हारे अस्वीकरणके लेखनकुं वो धारण कर सके पर तुम्हारे लेखनमें ये शक्ति नहीं हे के स्क्रीन्के रियालिटीकुं वो नॅगेट् कर सके क्योंके लिखनेके लिये पाछो स्क्रीन् तो चहियेगो. तो ब्रह्म भी ऐसे स्क्रीन्के जैसो हे जाकुं नॅगेट् करनो होय तो भी वाको उपयोग किये बिना वाकुं इन्कार्यो भी नहीं जा सके. वाकुं एडमिट् करनो होय तो भी वाके आधार बिना शक्य नहीं हे. ब्रह्मके स्क्रीन्पें ही अपन् ब्रह्मकुं नॅगेट् कर सकें, या तरीकेको ब्रह्मको निखिलाधार हे.

परमात्मा दूसरे आयामकी बात हो जावे या अर्थमें के वो सिर्फ ब्रह्म या निखिलाधार ही नहीं हे प्रत्युत जो कछु वापे आधारित होवे उनके अंदर भी वो विद्यमान हे. जैसे मट्टी घड़ामें विद्यमान

हे अथवा जैसे सूत कपड़ामें विद्यमान हे.

भगवान्के बारेमें कुछ केहनो होय तो तीसरे आयामकी बात आयेगी. मानें चारों ओर ऊपर-नीचे ब्रह्म सर्वत्र हे. परमात्मा, परन्तु, भीतर हे और भगवान् ऊपर हें. भगवान् होनो ऊपरको डायमेन्शन् हे क्योंके अपन् भक्त हें और वो भगवान् हें. अपनो शिर वाके चरणन्पें झुक्यो होवे यासु वो तो अपनेसु ऊंचो हे और अपन् वासु नीचे हें. या अर्थमें भगवान्को डायमेन्शन् ऊपरको डायमेन्शन् हे. यालिये अपन् ब्रह्म या परमात्मा कुं 'तु' केह सकें पर भगवान्कुं 'तु' कहो तो अपनेकुं अमिताभ बच्चनको 'दीवार' फिल्मको डायलोग् लगे *"अरे ए भगवान्! काहेको मंदिरमें बैठा हुवा हे? चल बहार आ!"* भगवान्के साथ 'तु'कारा अच्छो नहीं लगेगो. भगवान्के प्रति रिस्पॅक्ट् ही अच्छो लगे. क्योंके 'भगवान्' केहते ही कुछ एक असाधारण माहात्म्य प्रकट हो जाय : ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य जैसे सहज सर्वातिशायी गुणधर्मन्को.

'सास भी कभी बहु थी' टी.वी.सिरीयल्के बारेमें झगड़ा क्यों हो रह्यो हे? ठाकुर नाम वापर्यो यासु झगड़ा हो रह्यो हे. ब्रह्म नाम वापर्यो होय तो भाड़ भी ब्रह्म हे, *"भाड़में जाओ!"* केहवेवालो भी ब्रह्म हे और वाको अपोज़िशन् करवेवालो भी ब्रह्म हे **"सर्वं खलु इदं ब्रह्म"** (छान्दो.उप.३।१४।१) झगड़ा कहांसु होयगो? पर 'ठाकुरजी'के लिये *"भाड़में जाओ!"* पदन्को प्रयोग झगड़ा करवे लायक बात लगेगी ही. तत्त्व वो को वोही हे 'बापकी औरत' कहो के 'मां' कहो पर मां केहनेके बाद माथा झुकानो पड़ेगो. 'बापकी औरत' केहके माथा नहीं झुकाओ तो चलेगो. अन्यथा शब्द और व्यवहार को आपसमें मेल नहीं खायेगो. यासु अपन् 'भगवान्' कहते होंय तो अनादर नहीं कियो जा सके. क्योंके वो माहात्म्यको अंगीकार हे.

(द्वापरकालीन लीलामें श्रीकृष्णस्वरूपको अहंकार)

भगवान् सिर्फ भगवान् ही नहीं रेह जाये वो अपने-आपको डॅमोन्स्ट्रेशन् भी देवें हें. यासु जगत्कुं बनाके जगत्में प्रविष्ट कैसे भये वाको डॅमोन्स्ट्रेशन् जब देतो होय तब वा डॅमोन्स्ट्रेशन्कुं अपन् 'अवतार' कहे हें. भगवान्ने जगत्कुं कैसे बनायो और वा जगत्में कैसे प्रविष्ट भये वाको यदि डॅमोन्स्ट्रेटिव् प्रूफ़ अपेक्षित होय तो वो प्रूफ़ भगवान्के बजाय भगवदवतारके रूपद्वारा अच्छी तरहसु मिल सके. यालिये ही महाप्रभु निबन्धमें बहोत अच्छी आज्ञा करें हें :

"सएव परमकाष्ठापन्नः (भगवान्) कदाचिद् जगदुद्धारार्थम्
अखण्डः पूर्णएव प्रादुर्भूतः सन् 'कृष्ण' इति उच्यते".
(त.दी.नि.१।१)

वोही भगवान्, सेल्फ्-डॅमोन्स्ट्रेशन्के लिये, अखंड पूर्णतया भूतलपे प्रादुर्भूत होवें वा बखत उनकुं 'कृष्ण' कह्यो जाय. सातमें आसमानपे बेठ्यो परमेश्वर भगवान् हो सकें कृष्ण नहीं हो सके हे. कृष्ण तो ऐसो हे के—

"शेष महेश दिनेश गणेश सुरेश हु जाहि निरन्तर गावें।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अभेद अछेद सुवेद बतावें।
नारदसे शुक व्यास रटें पचिहारें तउ पुनि पार न पावें।
ताहि अहीरकी छोहरियां छछिया भर छाछपे नाच नचावें॥"

जो सिर्फ अपन्कुं नचानो ही जानतो होय पर अपने आग्रह करवेपे नाच न पातो होय वो श्रीकृष्ण नहीं हो सके. रसखानजी यालिये ही कहें :

"ब्रह्मने ढूंढ्यो पुराणन् गायन वेदरिचा सुनि चोगुने चायन।

देख्यो सुन्यो कबहुं न कहुं वह कैसो स्वरूप औ कैसो सुभायन!
टेरत हेरत हारि पर्यो रसखान बतायो न लोग लुगायन।
देख्यो दुर्यो वह कुंजकुटीरमें बेठ्यो पलोटत राधिका पायन॥''

वैकुण्ठमें वाके चरण लक्ष्मीजीकुं दाबने पड़ते होंयगे परन्तु भूतलपे श्रीकृष्णके रूपमें जब वो अवतीर्ण होवे तब तो वाकुं स्वयं 'लक्ष्मी' कहो के 'राधिका' कहो, वाके चरण दाबने पड़ें! भागवतमें तो दाउजीके चरण भी श्रीकृष्णने दाबें हें ऐसो भी वर्णन मिले हे **''स्वयं विश्रमयति आर्यं पादसंवाहनादिभिः''** (भाग.पुरा.१०।१५।१४) मुद्दाकी बात तो ये ही हे के यदि ऐसो डॅमोन्स्ट्रेशन् दे पावें के न दे पावें जो भगवान् हें सो तो भगवान् ही रहेंगे पर श्रीकृष्ण बन पानेकी लीला वो नहीं कर रहें हें जब तक या तरहकी लीला प्रकट नहीं करे.

वा कृष्णको अहंकार कैसो हे वो आप देखो :

''तस्माद् मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहं''
(भाग.पुरा.१०।२५।१८)

या व्रजको शरण/आश्रय 'मैं' हूं. अरे! आखे ब्रह्मांडके आश्रय हो वाको क्या भयो? खाली व्रजको आश्रय कैसे हो सके? पर आखे ब्रह्मांडको आश्रय, श्रीकृष्णके ब्रह्म होवेके पेहलुमें हो सके हें! सारे ब्रह्मांडके शरण्य श्रीकृष्ण भगवान् होवेके पेहलुमें हो सके हें. अपने भूतलपे प्रकटे लीलाविग्रह स्वरूपके पेहलुमें कृष्ण नहीं हे. कृष्णकी तो खूबसूरती ही ये हे के **''तस्माद् मच्छरणं गोष्ठम्''** छोटो सो एक गोकुल गाम वाको मालिक में हूं ये कबूल करके अपने-आपकी सेल्फ्-डिमोशन्की (स्व-पदावनति) जाकी तैयारी होय वो श्रीकृष्ण बन सके. परफॅक्ट् सॅल्फ् होते भये भी सॅल्फ्-डिमोशन्की इतनी तैयारी होय तो कृष्ण बन सके हे. **''तस्माद् मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम्''**.

वोही बात कल मैंने आपकुं बताई हती के **''कभी तो सोच वो शख्स किस कदर था बुलंद जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमांकी तरह''** वा तरह जो झुक जाय हे वाकुं अपने यहां 'कृष्ण' कह्यो गयो हे :

''तस्माद् मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम्।
गोपाये स्वात्मयोगेन सो अयं मे व्रतः आहितः॥''
(वहीं).

ये तो भगवान्ने व्रत लियो हे अवतारके बखत के व्रजकी रक्षा भगवान् ही करेंगे. ये कृष्ण हें हों! ये भगवान् नहीं हें. क्यों भगवान् नहीं हे? **''मुखाद् इन्द्रः च अग्निः च प्राणाद् वायुः अजायत''** (ऋक्संहि.१०।९०।१३) **''इन्द्रादयो बाहवः आहुः उस्राः''** (भाग.पुरा.२।१।-२९) इन्द्र आदि कर्मफलन्के प्रदाता देव वाकी बाहु होंय तो खुदकी बाहुकी अवमानना क्यों करवानी चाहिये? बाहुरूप स्वर्गके अधिष्ठाता ऐसे कर्मफलन्के प्रदाता इन्द्र आदि देवतान्को बाहुरूप होनो एक अलग कथा हे और वो जब कृष्णरूपमें अवतीर्ण हो गयो तब वाके अहंकारको नेचर् बदल जावे हे. कैसे अपने विराट् अहंकारकुं एडजेस्ट् कर रह्यो हे अपने लीलात्मक अहंकारके साथ!

सबसु बड़ी बात बस ये हे के तुम सुधारवेको अहंकार छोड़ दो तो सुधार हो जायेगो. ऐसे कृष्णने सुधारवेको अहंकार छोड़ दियो के मोकुं सबकुं भगवान् बनानो हे. भगवान् बनानो नहीं हे, मोकुं इनके साथ गोपाल बननो हे. ये गोपालन्के बीच मोकुं गोपाल बननो हे. ऐसे जो खुदके अहंकारकुं सुधार सकतो होय तो वो कृष्ण हे. वो कृष्ण ये बातकुं कबूल कर सके हे के **''न पारये अहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः''**(भाग.पुरा.१०।३२।२२) तुम्हारो तो ऋण मैं कभी चुका ही नहीं सकुं. असमर्थ हे क्या? असमर्थ नहीं हे.

पर समर्थ होते भये भी जाकुं असमर्थ होनो आतो होय वो कृष्ण हे.

अरविन्दोने बहोत अच्छी बात कही हे **''हां भगवान् सर्वसमर्थ हें पर वाके सर्वसामर्थ्यमें अपनेकुं एक आइटम् ये भी रखनी पड़ेगी के समर्थ होते भये भी वाकुं असमर्थ होनो आवें हें''** यदि सर्वसमर्थकुं असमर्थ होनो नहीं आतो होय तो वाके सामर्थ्यकी लिस्ट्में एक आइटम् डॅबिट् करनी पड़ेगी के ये सामर्थ्य नहीं हे, मतलब सर्वसमर्थ नहीं हे. तो जाकुं असमर्थ होनो नहीं आतो होय वो सर्वसमर्थ नहीं हो सके हे. बहोत अच्छी बात अरविन्दोने कही. भगवान्कुं जा बखत असमर्थ होनो आवे वा बखत वो 'कृष्ण' बन जावें हें!

प्रभु अपने अहंकारकुं एडजेस्ट् कर रहें हें. यहां ब्रह्ममीमांसा या भगवन्मीमांसा करने नहीं बेठो हुं, अहंकारमीमांसा कर रह्यो हुं.

कोई भी बात मैं ब्रह्मके रॅफरेन्स्में केह रह्यो होउं या परमात्मा भगवान् कृष्ण के रेफरेन्स्में केह रह्यो होउं वो मेगा स्केल्की बात हे. मिनि स्केल्में वो ही बात अपने भीतर भी होनी चहिये ये समझावेके लिये केह रह्यो हुं. मीमांसित ब्रह्मके अहंकारकी दृष्टिसु वाको नज़ारा कैसो दीख रह्यो हे वो सिर्फ आपकुं दिखा रह्यो हुं. ये बात दिखावेके लिये के मेगा स्केल्के मॉडेल्सु मिनि स्केल्के अहंकारकुं आप पहेचानो के अपनो अहंकारको 'मिनि स्केल्' क्या हे.

कृष्ण तो द्वापरमें भये हते और वैसे तो ये भी केह सकें के खाली सारस्वतकल्पमें भये हते. तो-तो बड़ी प्रॉब्लेम् हो गई!

(अपने घरमें बिराजते श्रीकृष्णके स्वरूपको अहंकार)

महाप्रभुजीने एक बात समझाई के चिन्ता मत करो. वो सारस्वतकल्पमें होय के द्वापरमें होय के त्रेतामें होय के सतयुगमें होय, अपन् कालकी फ्रेम्में हें वैसे कृष्ण नहीं हे. कृष्णमें काल और देश हें. देशमें कृष्ण प्रकट होवें हें पर कृष्ण देश-कालमें बन्धे भये नहीं हें. अब याकुं कैसे समझनो?

टी.वी.के जो भी वेव्ज् हें वो टी.वी.के डब्बामें आपके स्वीच् ऑन्-ऑफ् करवेसु प्रकट या अप्रकट होते होवें हें. वाके लिये क्या टी.वी.की वेव्ज् पेदा या खतम हो रही हे? आपने स्वीच् ऑन् कियो तो वेव्ज् पेदा हो गई आपके स्क्रीन्पे? आपने स्वीच् ऑफ् कियो तो वो खतम होती आपको लगेगी? टी.वी.की वेव्ज् खतम नहीं हो जावें हें. डब्बा रिसीव् करे के नहीं करे सिर्फ इतनीसी बात हे. आप स्वीच् ऑन् करो तो वो रिसीव् करनो शुरु करेगो. आप स्वीच् ऑफ् करोगे तो वो रिसीव् करनो बन्द कर दे. अन्यथा वो तो ऑलवेज़् हे. ऐसे कृष्ण अपने ब्रह्म परमात्मा भगवान् होनेके पहेलुमें ऑलवेज़ हें ही. आप वाकुं कोई तरहसु घरमें पधरा रहें हों तो स्वीच् ऑन् कर रहे हो. आप वाकुं ग्वाल-मंडलीमें पधरा रहे हो तो बिचारेको स्वीच् ऑफ् हो जाय. **''नन्दनन्दन कर घरको ठाकुर आप होय रहे चेरो''** तो वाको स्वीच् ऑन् हो जायेगो. जो श्रीकृष्णकी लीला हें, जो भगवान्की लीला हें, जो परमात्माकी लीला हे अथवा जो ब्रह्मकी लीला हे, सारे अहंकारन्को स्वीच ऑन् कर दोगे तो सभी प्रकट हो जायें विरुद्धधर्मन्की एक अविरुद्ध तत्त्वमें आश्रितता प्रकट करती भयी. आपने अपने डब्बामें बन्द कियो तो आपकी इच्छाकी बात हे, वाको स्वीच् ऑफ् हो जायेगो. आपने अपनो डब्बा बंद कियो यासु वो खुद ऑफ् नहीं हो जावे हे. आपके डब्बामें श्रीकृष्णकी रिसेप्टिविटी खतम होनी श्रीकृष्णको खतम होनो नहीं हें. श्रीकृष्णके स्वरूपमें भगवान्को अनुभव करवेकी आपकी

रिसेप्टिविटी कम हो जाये तो वो केवल मनुष्य लगेगो पर ऑन् होय तो वो ही भगवान् भी लगेगो. ऐसे ही परमात्मा और ब्रह्म होवेके पहेलुन्के बारेमें भी समझनो. आपको शायद एन्टेना टूट गयो के केबल् डिस्कनेक्ट् हो गयो होय तो क्या चक्कर भयो! आपके अहंकारमें कुछ लफड़ा हें यासु आपकुं लगे के वहां श्रीकृष्णमें कुछ लफड़ा हे. वहां कोई लफड़ा नहीं हे.

आपके घरमें बिराजते श्रीकृष्णके स्वरूपको अहंकार कैसो हे वाको सीधोसो उदाहरण बताउं : प्रभुदासकी वार्तामें कृष्णको अहंकार प्रकट भयो. प्रभुदास, श्रीमहाप्रभुको सेवक, वासु एक दिन सामग्री जल गई. तो जली सामग्री ठाकुरजीकुं भोग कैसे धरनी? तो वाने सोची के जली सामग्री चरणामृत मिलाके खा जानी चहिये. वो खा गयो और ठाकुरजीकुं भोग धर्यो नहीं. प्रभुदासके ठाकुरजीने महाप्रभुके सामने कम्पलेइन् करी के "मोकुं पधरा तो दियो वहां पर आज मैं दिनभर भूखो रह्यो". श्रीमहाप्रभुने पूछी *"भूखे क्यों रहें"?* प्रभुने कही *"प्रभुदासने मोकुं भोग ही नहीं धर्यो, खुद खा गयो"* उनके अहंकारकी मिठास तो देखो. प्रभुदास भोग धरे तो अरोगे नहीं तो भूखे रहे. उनको अहंकार कितनो मिनीमाइज् हो गयो हे? ऑलमोस्ट् प्रभुको अहंकार प्रभुदासके अहंकार जितनो मिनीमाइज् हो गयो हे. प्रभुदास भोग धरे तो पेट भरे नहीं तो मैं भूखो हूं. हवेलीके सब ठाकुर यों भूखे हें हों! क्योंके वहां कोई प्रभुदास हें ही नहीं, सबके सब हवेलीदास हें. क्योंके प्रभुदासके ठाकुरजी एक दिन भूखे रह गये होंगे परन्तु पुष्टिमार्गीय हवेलीन्के ठाकुर तो ३६५ दिन भूखे ही बिराजे रहें. वो आरोगे क्यों? वाकी सेवा करवेवाले कोई प्रभुदास थोड़े ही हें? वे तो सब हवेलीदास हें. ऐसो वाको मिनिमाइज्ड् अहंकार महाप्रभुकी कानीके कारण अवश्य ही आधुनिक पुष्टिमार्गकी हवेलीन्में खण्डित या आहत होयगो.

किशोरीबाईकी वार्तामें आवे **'तेने दूसरेसु मांगके क्यों धर्यो? मैं तो तेरी सत्ताको अंगीकार करवे तेरे यहां बिराज्यो हुं "** कितनो मिनीमाइज्ड् हे! जो तेरी सत्ताको हे वो तु मोकुं भोग धरे तो मैं आरोगुं. पर मोकुं भोग धरवेके लिये तु गामसु मांगे तो मैं नहीं खाउं. वाको ईगो हर्ट् हो जाये. तेने मेरे लिये गामसु क्यों मांग्यो? ईगो हर्ट् हो गयो. जा अब मैं नहीं खाउंगो भूखो रहुंगो. तेरे पास जो हतो वो तुं मोकुं भोग धरती तो मैं खातो. गामसु मांगे तो ईगो हर्ट् हो जाये अपने ठाकुरको. ये कितनो मिनीमाइज्ड् ईगो हे अपने ठाकुरको? मम्मीसु बच्चाकुं छुड़वा लो तो वाकुं नींद नहीं आवे. पोरीयाने गायो नहीं तो श्रीनाथजीके नेत्र लाल हो गये. कितनो मिनीमाइज्ड् ईगो हे! इतने मेगा स्केल्के 'अहं'कुं इतनो मिनि स्केल्को होवेमें इलास्टिसीटी जो मेइन्टेन् करतो होय वो 'अहं'को शुद्ध कर्ता हे. वामें कोई अशुद्धि नहीं हे.

(प्रश्नोत्तरी)

प्रश्न :

(प्रश्न माइकमें न बोलवेके कारण सुनाई नहीं देवे हे).

जवाब :

दरेक देवना बे पासा : एक शक्तिमान् अने बीजी शक्ति. जे शक्तिमान् छे ते देव छे अने जे शक्ति छे ते देवी छे. शक्ति अने शक्तिमान् वच्चे डिफरेन्स् शुं? जो शक्ति न होय तो कोई शक्तिमान् होइ शके? जे शक्तिमान् छे तेमां शक्ति तो होय छे ज. जेटली देवीओ छे ते बधी शक्तिओ छे, जेम विष्णु पालन करे छे तो पालन करवामां एने शुं जोइए? लक्ष्मी. लक्ष्मी एनी शक्ति छे. एटले एक ज देव, शक्ति अने शक्तिमान् बे रूपे मेल्-फिमेल् बन्या छे. शक्ति शक्तिमान् विना होई नथी शकती अने शक्ति न होय तो शक्तिमान् नथी होई शकतो. तो बन्ने म्युच्यअली एक-बीजा

ऊपर डिपेन्डन्ट् छे. जेम कहानी अने हकीकत एक-बीजामां समायेली रहे तेवी रीते शक्ति शक्तिमान्मां होय छे अने शक्ति विना कोई शक्तिमान् थई नथी शकतो. रुद्र संहारनो देव होय तो काली एनी शक्ति छे जे बधाने खतम करे छे. ए शक्ति पण शक्तिमान्मां रहे छे. ब्रह्मा जो ज्ञाननो देव होय तो सरस्वती एनी देवी छे. काम जो देव होय तो रति एनी देवी छे. तो आपणे त्यां एकज वस्तुनां बे फोर्म् छे. देवी अने देवताओ नां रूपे वस्तुओ बे नथी.

कृष्णलीलाना सन्दर्भमां तमारे जोवुं होय तो राधा-कृष्ण ऊपर पण ते नियम लागु पड़ी जशे. एकज तत्त्व बे रूपे प्रकट थयां, एकरूपे राधा अने बीजारूपे कृष्ण. राधा ए कृष्णनी शक्ति छे अने राधाने कारणे कृष्ण आराध्य बने छे. 'राधा' एटले जे आराधन करे ते; अने, 'राध्य' एटले जे आराधित थतो होय ते. अने आराधिका अने आराधित एक-बीजामां शक्ति अने शक्तिमान् नी जेम वणायेला छे. एटले मेल्-फिमेल्नो डिस्प्युट् आपणे त्यां ए रीते प्रकट नथी थयो.

प्रश्न :

कल कही हती के टेबल् टाइम् और स्पेस् में कन्फाइन्ड् हे और टेबलनेस् या टेबल्को ज्ञान टाइम्-स्पेस्में कन्फाइन्ड् नहीं हे. यासु उन दोनोंकुं परस्पराश्रित मान लेनो चहिये और तब तो बिइन्ग्को कन्सेप्ट् यदि नहीं भी बीचमें लावें तो तकलीफ क्या होयगी?

जवाब :

एक बखत यदि तु यों केह दे के वामें बिइन्ग् नहीं धेट् मीन्स् दे आर् नॉन्-बिइन्ग्. टेबल् शक्तिमान् हे और टेबल्नेस् वाकी शक्ति हे. यदि टेबल्में टेबल्नेस् नहीं हें तो टेबल्, टेबल् होवेके लिये

शक्तिमान् नहीं हे. उनको सम्बन्ध पाछो बराबर वोही सम्बन्ध हे के वे दोनों बिइन्ग्के दो फॉर्म् हें. एक बिइन्ग्को सब्सिस्टिंग् फॉर्म् टेबल्नेस् हे और दूसरो बिइन्ग्को एग्जिस्टिंग् फॉर्म् टेबल् हे.

प्रश्न :

वाके अहं और मेरे अहं में फर्क क्या हे?

जवाब :

तेरेमें एक मनुष्य होवेको अहं हे के नहीं? भारतीय होवेको अहं हे के नहीं? भाटिया होवेको अहं हे के नहीं? सतीशभाईके बेटा होवेको अहं हे के नहीं? कलिन्द होवेको अहं हे के नहीं? अब तोकुं क्या लग रह्यो हे के मनुष्य होवेको जो अहं हे और कलिन्द होवेको जो अहं हे उनमें कौन होल् हे और कौन पार्ट् हे? मनुष्य सब कलिन्द नहीं हें. यदि तोकुं यों लगे के मनुष्य होवेको अहं कलिन्द होवेको पार्ट् हे तो जितने मनुष्य हें वो सब कलिन्द हो जायेंगे. यासु तोकुं ये केहनो पड़ेगो के कलिन्द मनुष्य हे, मनुष्य कलिन्द नहीं हे. मतलब कलिन्द होवेको तेरो जो अहं हे वो तेरे मनुष्य होवेके अहंको पार्ट् हे.

ऐसे जो ब्राह्मिक अहं हे वाको पार्ट् पारमात्मिक अहं हे, पारमात्मिक अहंको पार्ट् भगवान्को अहं हे, वाके अहंको पार्ट् कृष्णको अहं हे. वाके अहंको पार्ट् धरके ठाकुरजीको अहं हे. पर एक बात समझ के वो पार्ट् हे याको मतलब ये नहीं के वाके टुकड़ा भये हें पर वा अर्थमें के वो अहं वाके बिना नहीं हो सके हे. जैसे तु यदि मनुष्य नहीं होवे तो भारतीय तो शायद हो सके हे पर भाटिया तो नहीं हो पावेगो. कोई गैर-मनुष्य भाटिया तो नहीं होवे! तेरे भाटिया होवेको अहं तेरे मनुष्य होवेके अहंको पार्ट्

हे. जैसे अपन् ढोकलामेंसु एक टुकड़ा खा लें तो वो टुकड़ा अलग हो गयो और ढोकला अलग हो गयो. वा ढंगको टुकड़ा नहीं पर कन्सेप्च्युअल् पार्ट् हो गयो.

ऐसे अपनो जितनो अहं हे वो शुद्ध अहंको पार्ट् हे, उपादेय होवेके कारण. कारण क्या? मानके चलो के घड़ाको अहं हे. तो घड़ाको अहं मट्टीके अहं, पानीके अहं को पार्ट् होयगो के नहीं होयगो? तो जो अपनो अहं हे वो ब्राह्मिक अहंको पार्ट् हे. तोकुं यों फील् हो रह्यो हे के 'तु हें'. 'तु हें' वो तेरे होवेको अहं हे वो ब्राह्मिक अहंको पार्ट् हे. तु जीवात्मा हे वो तेरो अहं हे वो पारमात्मिक अहंको पार्ट् हे. तु भक्त हे ये तेरो अहं तेरो कोई भगवान् होय वाके अहंको पार्ट् हे. तु कृष्णभक्त हे तो तेरो कृष्णभक्त होवेको अहं कृष्णके अहंको पार्ट् हे और तु ठाकुरजीकी सेवा करे हे तो वो तेरो सेवक होवेको अहं तेरे ठाकुरजीके अहंको पार्ट् हे. यदि वो ठाकुरजी नहीं हे तो तेरो अहं पैदा ही नहीं हो पावेगो.

मेरे साथ एक बखत ऐसी घटना घटी. एककुं ब्रह्मसम्बन्ध लेनो हतो. बहोत मेरे पीछे पड़ गये. मैंने कही "ठाकुरजीकी सेवा करो तो ब्रह्मसम्बन्ध दउं! सेवा करो नहीं तो ब्रह्मसम्बन्ध कैसे दउं". उनने कही "मेरी पत्नीकुं आपके पिता बहन मानते थे. यासु आपकुं 'ना' नहीं करनी चहिये". मैंने कही "मैं आपकुं फूफाजी मानवे तैयार हुं पर आपके घरमें बिराजते ठाकुरजीकी सेवा नहीं करो तो ब्रह्मसंबंध लेवे या देवे को क्या प्रयोजन?". वाने कही के "सेवा तो बहोत मुश्किल हे". तो मैंने कही "ब्रह्मसम्बन्ध लेवेकी क्या जरूरत हे?" फिर तो एक दिन उनके ठाकुरजी चुर गये सो रातके डेढ़ बजे मेरे पास किशनगढ़ आये. बोले "बावा! अब तो

ब्रह्मसम्बन्ध देनो ही पड़ेगो". मैंने कही "आपकी पत्नी चुर गई और कहो के हस्तमिलाप करानो ही पड़ेगो तो कराउं कौनसु हस्तमिलाप, चोरसु कराउं, उचक्केसु कराउं...कौनसु कराउं आपको हस्तमिलाप? पहेले वो तो लाओ. फिर आपको हस्तमिलाप करवा दउं". ठाकुरजी होंय नहीं तो सेवा करनेवालो भक्त होवेको अहं आयेगो कहांसु? सीधीसी बात हे.

प्रश्न :

भगवान्के बाद कृष्णमें जो अहं हे वो तो समझमें आयो पर आपने जो उदाहरण दियो वो ठाकुरजीके लिये दियो के कृष्णके लिये दियो?

जवाब :

तेरे ठाकुरजीको जो अहं हे वो कृष्णके अहंको पार्ट् हे. वार्ता पढ़ी होय तो कल्याणरायजी जो बड़ोदामें बिराजें वो पहले देवीभक्तनके माथे कल्याणी देवी तरीके बिराजतें हतें. तो उनके लिये वो कल्याणरायजी नहीं हते कल्याणी देवी हती. अब समझ के अपन् ठाकुरजीकी ये बात सच मानें के **"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तान् तथैव भजामि अहम्"** (भग.गीता.४।११) अर्थात् जो मोकुं जा भावसु भजे वाकुं मैं वा तरेहसु भजुं हुं. यासु वे सच्चे देवीभक्त होंय तो कल्याणरायजी देवी हते के नहीं? तो वा बखत कल्याणरायजीकुं लगतो होयगो के "मैं देवी हुं" और जब महाप्रभु पधारे तब उनकुं लग्यो, नहीं नहीं ये देवी नहीं हे ये तो कल्याणरायजी हें. महाप्रभुने क्या कियो जबरदस्ती उनके साड़ीके तरेह धरे भये वस्त्र बड़े कर दिये और धोतीके तरेह धरा दिये और कही के "ये कल्याणरायजी हें".

तो तुम्हारे ठाकुरजीको अहं कितनो सीमित हे के "आज प्रभुदासने भोग नहीं धर्यो तो मैं भूखो हुं", "तेने अपनी सत्ताको मोकुं नहीं

धर्यो तो मैं तेरी सेवा अंगीकार करवेके लिये मोहताज नहीं हुं''. कितनो सीमित अहं हे! तुम्हारो भी अहं वा ठाकुरमें सीमित होनो चहिये. सीधीसी बात हे. अपने ठाकुरकुं कृष्ण तरीके भजते होंयेंगे तो ठाकुर कृष्ण हे. तुमकुं यों लग्यो के मेरो ठाकुर कृष्ण नहीं हे मेरी कमाईको साधन हे तब तो ठाकुर भी ये ही कहेगो के *''तु हे हरजाई तो अपना भी यही तौर सही तु नहीं और सही और नहीं और सही''.*

अपन् ठाकुरजीकुं पुष्ट करें हें वामें क्या करें हें? ठाकुरजीको स्वरूप तो कृष्णको होवें हें. लड्डुगोपाल होवें या मदनमोहन होवें या द्वारकाधीश या मथुराधीश के स्वरूप पधरावें पर श्रीगिरिराजजीमें कौनसो रूप होवें हें? पर अपन् करें क्या? कृष्ण तरीके उनकी सेवा पधरावें हें. शालिग्रामजी तो साव गोलमटोल होवें हें. वहां कृष्णको रूप कहां हे? रूप तो नहीं हे पर कौनसे तत्त्व तरीके उनकी सेवा करें? हर बखत ये तो बात समझनी पड़ेगी.

लोगन्की तकलीफ क्या हे? जैसे जो लोग मूर्तिको भजन नहीं करें वो यों समझें के अपन् पत्थर पूजें हें. पर सवाल ये हे के अपन् पत्थरकुं देव समझके पूज रहें हें के देवकुं पत्थर समझके पूज रहें हें? ये बेज़िक् ईश्यु हे. अपन् पत्थरकुं देव समझके नहीं पूजें हें. वो तो उन लोगन्की मिस्-अन्डरस्टेन्डिंग् हे. देव सर्वरूप हे तो पत्थररूप नहीं हे ऐसे तो नहीं केह सकें? जो सर्वरूप हे वाकुं अपन् पत्थर या धातु के रूपमें पूजें हें, पत्थर या धातु कुं नहीं पूजें हें. सभी रूप बनवेके कारण देव ही पत्थररूप भी बन्यो हे.

जैसे तु मार्वे या जुहू या चौपाटी बीच्पे नहावे गयो होय

वा बखत तु बीच्पे नहा रह्यो हे के समुद्रमें नहा रह्यो हे? बीच् अलग-अलग हें पर समुद्र तो एक ही हे. बस कथा ये ही हे.

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्।।

(कृष्णकृपाको 'स्पंदन' और भक्तिको 'अनुस्पंदन')

या कारिकामें कृष्णकी सर्वात्मकताको पहलो आधारभूत स्वरूप हे वो मैंने कल आपकुं दिखायो. अहंकारको स्वरूप हे वो ब्रह्म परमात्मा भगवान् कृष्ण और अपने घरके ठाकुरजी तक अपन्ने देख्यो. असलमें वाके मूल अहं अलग-अलग प्रकारके होवें हें. अलग-अलग प्रकारके वाके अहंमें एक तरेहको स्पंदन हे. वो निष्पंद अहं नहीं हे स्पंदनशील अहं हे. क्योंके अपन्ने देख्यो के ब्रह्मकी लीला, परमात्माकी लीला, भगवल्लीला, श्रीकृष्णलीला और अपने घरमें बिराजतें ठाकुरकी लीलाके विविध प्रकारन्में वाके अहं भी स्पंदित होते रहें और ऐसे स्पंदनशील अहंसु अपनो अहं ट्युन् होवे तो अपन् बराबर पुष्टिभक्ति कर सकें. अपन् यों समझ सकें के वाको स्पंदनशील अहं यदि 'पुष्टि' हे तो वासु अनु-स्पंदित होतो अपनो अहं 'भक्ति' हे.

वो यदि अहं अपनेमें अनु-स्पंदित नहीं हो रह्यो हे, अनु-स्पंदित मतलब, जैसे सितारमें बजावेके कुछ तार होवें और उनके पीछे मिजराबके तार होवें. बजावेके तारकुं छेड़े तो मिजराबको तार अपने-आप अनु-स्पंदित होके बोलवें लगें. याकुं 'रेजोनॅन्स्' कहे. प्रभुको अहं जा तरहसु स्पंदित हो रह्यो होय वा तरहसु अपनो अहं भी अनु-स्पंदित होतो होय तो 'पुष्टि' और 'भक्ति' को स्वरूप वामें प्रकट हो जायेगो. सितारमें वो कभी-कभी नहीं होवे, जब बजावेके तार और मिजराबके तार एक सुरमें मिले नहीं होवें तब. यासु एककुं छेड़ो तो भी दूसरेमें रेजोनॅन्स् नहीं सुनाई देवे. महाप्रभु वा परिस्थितिमें क्या करते? *"तोसों भगवत्सेवा नाहिं निभेगी तातें तोकुं ब्रह्मसम्बन्ध नाहिं देत हुं!"* तो भगवत्सेवामें तत्पर होवेको अहं वामें महाप्रभु जगाते नहीं. वाकुं "गुड् बाय्!" केहते. *"जे जे जा रसके अधिकारी*

भरत सम्हारे न छलके". जो जा रसके अधिकारी होय उनमें ही वो रस टिक सके. तो ही वा तरीकेको अहं स्पंदित हो सके. गलत ठिकाने अपन् बाजके तार बांध दें अथवा बाजको तार कोई और सुरमें मिल्यो भयो हे और मिजराबको तार कोई और सुरमें मिल्यो भयो होवे तो स्पंदित होयगो ही नहीं, चाहे कितनों भी क्यों न बजाते रहो! बाकी स्वरसिद्धान्त तो यहां तक कहे हे कि एक तानपुरा एक सुरमें मिलावो, बाजुमें दूसरो तानपुरा रखो. और एक तानपुराकुं छेड़के दूसरे तानपुराके तुंबापे कान लगावो तो वामें अनुरणन सुनाई पड़े. ये एक्सपेरीमेन्टेड् तथ्य हे. अनुरणनके सिद्धान्त जैसो ही अपनी भक्तिके स्वरनुकुं छेड़वेको सिद्धान्त हे. या बाजु भगवान्की कृपाको सुर छिड़तो होय तो वा बाजु भक्तिको सुर अपनेमें छिड़ पायेगो. ऐसे ही या बाजु अपनी भक्तिको सुर अपन् छेड़ते होंय तो वा बाजु वाकी कृपाको सुर छिड़ पायेगो. कौन अपने तारकुं पहले छेड़े वाके बाद दूसरो तार वही सुरमें मिल्यो भयो होय तो अपने-आप बोलवे लगेगो, बिना छेड़े.

कृष्णके अहंके स्पंदनकी रेन्ज् इतनी बड़ी हे के ब्राह्मिक अहंसु लेके घरके ठाकुरके अहं तककी रेन्ज्में वो रणित या अनुरणित हो सके हे. अपन् देख सकें के वो जितनो मेक्सिमाइज्ड् हो सके हे उतनो ही मिनिमाइज्ड् भी हो सके हे. वाको अहं ऐसो जड़ नहीं हे के जहां चिपक गयो वाहीमें चिपक्यो रेह जाय. ब्रह्मके स्पंदनशील अहंको फैलाव सतरंगी जैसो अपन् सोच सकें हें. वाको रंग जहां जा रंगमें स्पंदित हो रह्यो हे वे सारे रंग वाकी लीलायें हें और दूसरो वाको स्वरूप हे.

ये बात बतावेको प्रयास कल कियो थो के कुछ ब्रह्मकी हकीकत हे कुछ वामेंसु उभरती कहानी हे. इतने सारे सतरंगी स्पंदनकी वाकी लीलायें वा ब्रह्मकी कहानी हे. तो ब्रह्मके जैसी अपनी भी कहानी और हकीकत भी हो सके हे, बशर्ते अपन् दोनोंके स्वर

एक होंय तो. याही लिये तो 'पुष्टि-प्रवाह-मर्यादा' ग्रन्थमें कितने पॉसिबल् टाइप्के इन्स्ट्रुमेन्ट् हो सकें, कितने पॉसिबल् टाइप्के स्ट्रिंग् हो सकें के जिन स्ट्रिंग्में डिफ्रेन्ट् टाइप्के अनु-स्पंदन हो सकें वाकी पूरी वॅरायटी अपने लिये वर्कआउट् करके महाप्रभुने समझाई हें.

(क्या ब्रह्म परमात्मा आदिको विश्लेषण निरर्थक ?)

सबसु महत्त्वपूर्ण बात या जंक्चरपे ये समझवेकी हे के युरोप्में आधुनिक साइन्टिफिक् डॅवलपमेन्ट्के बाद इतनी सारी साइन्स्की ब्रान्चिस् प्रकट भई और हर ब्रान्च्में साइन्स्को इतनो ट्रिमॅन्डस् डॅवलपमेन्ट् भयो. वा डॅवलपमेन्ट्के कारण साइन्स् या साइन्टिस्टन् ने जो भी दर्शनशास्त्रके विषय हते उनकुं धीरे-धीरे दर्शनशास्त्रसु छीनने शुरु कर दिये. जिन विषयनपे दर्शनशास्त्र राजाज्ञाके सुर बोलतो हतो उनमें विज्ञान बोलवे लग गयो. अब जब अपने एक्स्पेरिमेंट् या ऑब्जर्वेशन् के बाद बोलवें लगें तो नॅचरली दर्शनशास्त्रवालेनकुं इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स् जैसो आ जाय "यामें साइन्स् बोलवे लग गयो तो अब अपन् अनधिकारचेष्टा करवेकुं क्या बोल सकें?" सबकुं ऐसे लगे!

मैंने आपकुं दो बाटलीबाजनकी कथा सुनाई हती के वे दारु पीके घूमवे निकले और रिवर-ब्रिज्के ऊपर गये. एक पॅसिमिस्ट् हतो और दूसरो ऑप्टिमिस्ट् हतो. पॅसिमिस्टकुं लग्यो के चन्द्रमा नीचे आ गयो! न जाने क्या चक्कर हे आज! ऑप्टिमिस्टकुं लग्यो के चन्द्रमा थोड़े ही नीचे आ सके हे, अपन् चंद्रमासु ऊपर उठ गये!! दो ईगोके प्रभेदके कारण या तरहसु दारुड़ियानकुं अलग-अलग अनुभूति होवे लगी. अब साइन्टिस्टन्ने कौनसी दारु पी वो मोकुं पता नहीं हे, पर एक्जेक्टली मॉर्डन् डॅवलपमेन्ट्के कारण सायन्टिस्ट्में और फिलॉसॉफरन्में या तरहके दो खेमा बंट गये. खास करके ये बात छेल्ले डेढ़सौ सालकी मैं कर रह्यो हुं. साइन्स्के ट्रिमॅन्डस् डॅवलपमेन्ट्के कारण फिलोसॉफरनकुं डिमॉरलाईज् होनो पड़्यो. पहले जो भी दर्शनकी समस्या हती उनकुं दर्शनके वैचारिक दार्शनिक उन्नत गगनमें ऊपरकी तरफ

देखतें हतें. बहोत सारे दर्शनके सब्जेक्ट् जिनकुं दर्शनशास्त्र विचारनके लेवलपे उठके यों ऊंचे देखतो हतो. साइन्टिस्ट् उन्हींकुं एक्स्पेरिमेन्टल् ऑब्जर्वेशन्के ब्रिज्सु अब नीचेकी तरफ देखें हें, अच्छा ये चांद, चन्द्रयानके कारण नीचे आ गयो. नॅचरली कई पॅसिमिस्ट् फिलॉसॉफर् भी उनकुं नीचे देखवें लग गये! दूसरे कुछ ऑप्टिमिस्ट् फिलॉसॉफरन्ने ऊंचे देखवेकी आदत छोड़ी नहीं, ऐसे दो मुख्य खेमा भयें.

पर एक बात समझो के साइन्स् एक अलग तरहकी मीमांसा हे और और साइन्टिफिक् फिलॉसॉफी एक दूसरे तरहकी. साइन्टिफिक् फिलॉसॉफीकी भी दो खेमाबंदी हें. एक खेमाबंदीकुं वो 'लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्' कहे हे मानें तार्किकभाववाद. और एक दूसरी खेमाबंदी एक्जिस्टेन्शिआलिज़म्की. ये दोनों फिलॉसॉफिकल् ट्रेन्ड् या कॅम्प् छेले सौ-पचास सालमें डॅवलप् भये और खास करके वर्ल्डवॉर्के बाद एक्जिस्टेन्शिआलिज़म्ने तो बहोत जोर पकड़्यो पर बादमें वो चल्यो नहीं. वैसे युरोप्में एक बात सच हे के लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म् भी विदाय हो गयो हे. फिरभी बहोत सारे वाके उत्तराधिकारी अपने भारत देशमें वे छोड़ गयें हें. अक्सर पश्चिमी ढंगसु जो पढ़ें-लिखें लोग अपने यहां होवें. वे अभी भी लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्की विचारसरणीको बहोत जादा दबाव अपने विचारनपे महसूस करतें होवें हें. कुछ भी सोचनो शुरु करें तो हर बखत उनके सामने वोही आपत्ति आके खड़ी हो जाये. दूसरो ऐसो ही एक फेइज् हतो सन् १९४० सु लेके १९७० तक, एक्जिस्टेन्शिआलिज़म्को. अब वो ट्रेन्ड् खतम हो गयो.

सो लॉजिकल् पॉज़िटिविस्ट् यों केहते के फिलॉसॉफीके पास कोई बिज़नेस् या काम रह्यो नहीं हे. जो भी कुछ बिज़नेस् हतो वो साइन्स्ने छीन लियो हे. अब बैठके फिलॉसॉफीकुं क्या करनो चहिये? तो उनने कही साइन्स्के डिफरेन्ट् ब्रान्चिज् जो कन्क्लुज़न् देते होवे उनको अर्थ खाली समझते-समझाते रेहनो; व्याख्याके अलावा फिलॉसॉफीके पास धंधा नहीं बच्यो हे, फिलॉसॉफी और कुछ करे

तो वो अनधिकारचेष्टा हे! वे बिचारे पॅसिमिस्टिक् हतें.

जो ऑप्टिमिस्टिक् फिलॉसॉफर् हते उनमें ये भावना घर कर गई के कुछ बच्यो ही नहीं तो क्या भयो? बाह्य जगत्के बारेमें अपने नहीं बोलनो पर अपने बारेमें बोलते रहो के हम साइन्स्के अन्डर्में नहीं हें. हमारेमें इच्छास्वातन्त्र्य हे और हम जो सोचेंगे वो करेंगे. इच्छास्वातन्त्र्यको एकदम विस्फोट एक्जिस्टेन्शिआलिज़म्में भयो. क्रिश्चियन् ट्रेडिशन्में इच्छास्वातन्त्र्यको रोल् बहोत स्ट्रॉन्ग् हतो. यासु ही वो १९७० तक बहोत पॉप्युलर् भी रह्यो. बहोत सारे नाटक, बहोत सारी पेन्टिंग्स्, बहोत सारे लेख इन तीन दशकमें वा तरहसु लिखे गये. पर अब तो वहां भी भुला दियो गयो हे उनकुं. अभी भी लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्को एज्युकेशन् लेके बच्चाएं विश्वविद्यालयसु बाहर आवें हें उनसु अपन् चर्चा करके देखें, तो बोलें के नहीं बोलें पर, उनके मनमें वो लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्को चोर तो होवे ही हे के क्यों या बारेमें खोटी खटपट करो हो? जो कुछ सचाई होयगी वो साइन्स् तो बता ही देगो.

सो लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्की एक खासियत हे के वे ईश्वरकुं नहीं मानें, ब्रह्मकुं नहीं मानें, आत्मा जैसी कई चीजनकुं नहीं मानें. स्वर्गकुं नहीं मानें और तो और सच्ची बात तो ये हे के वो तो मॉरल् और ब्यूटि में भी नहीं मानें. क्योंके उनको मूल सिद्धान्त ये हे के मॉरल्के जो भी कन्सेप्ट् 'ऑट् टु डु' अर्थात् ये तो करनो ही चहिये अथवा ब्यूटिके जो कन्सेप्ट् हे के ऐसी ही वस्तु 'सुन्दर' केहवावे. ये सारी धारणा उनके अनुसार अपनी कामचलाउ धारणा हें, जब तक इनको साइन्टिफिक् प्रूफ़् नहीं मिले. अब बताओ के मॉरल्सको साइन्टिफिक् प्रूफ़् कहांसु लानो? कैसे तरीकेको कन्डक्ट् अपनो 'मॉरल्' कहेवायेगो वामें साइन्स् क्या बता सके? कुछ भी नहीं बता सके. अच्छे और पक्के लॉजिकल् पॉज़िटिविस्ट् तो मॉरल्/अॅथिकल् वॅल्यु और अॅस्थेटिकल् वॅल्यु कुं भी डिनाय् करनो चाहेंगे. यासु

स्पिरिच्युअल् वॅल्यु या डिवाइन् वॅल्यु, मतलब आधिदैविकताकी पतंगें तो ढीलमें कट जावें. वो लोग यों नहीं कहें के ईश्वर नहीं हे, न यों कहें के ईश्वर हे. "ईश्वर हे" ऐसे केहनो ही 'मीनिन्ग्लेस् प्रपॉज़िशन्' मानें निरर्थक विधान हे. यासु खंडन करवे लायक भी नहीं हे तो एक्सॅप्ट् करवे लायक मानवेकी बात तो दूर गई. मीनिन्ग्लेस् स्टेटमेन्ट् मानें "पंखा कोकाकोला पी रह्यो हे" या "एरकन्डिशन् केक् खा रह्यो हे." ये कैसे मीनिन्ग्लेस् स्टेटमेन्ट् हे या तरहके ही ब्रह्म परमात्मा या भगवान् के बारेमें जितने स्टेटमेन्ट् होंय वे सब निरर्थक विधान होवें हें. कुछ शब्दनकुं जोड़के एक वाक्य बना लियो जाय पर उन वाक्यनको अर्थ कुछ भी नहीं होवे क्योंके कोई भी वाक्य या विधान सार्थक तभी होवे वाको साइन्टिफिक् एक्स्पेरिमेन्ट् या ऑब्ज़र्वेशन् या डॅमोन्स्ट्रेशन् के द्वारा वॅरीफिकेशन् हो पावे. नहीं दे सको तो वाक्य निरर्थक. ब्रह्मसु लेके ठाकुरजी तकको जो विश्लेषण अपन्ने कियो उनकुं लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्के सामने रखें तो मीनिन्ग्लेस् होवेकी विपत्ति अपने सामने खड़ी कर देंगे. या बाधाको पार कैसे पा सके!

(श्रौत और वैज्ञानिक तत्त्वधारणाकी समानता)

अहंकारके दो भेद हें : एक उपादान अहंकार हे और दूसरो उपादेय अहंकार हे. उपादानरूप अहंकारके पाछे दो भेद हें : कर्ता और क्रिया के रूपमें. वामें भी सिम्पल्, कम्पाउन्ड् और कॉम्प्लेक्स् या तरीकेके तीन अवान्तर भेद सोचें जा सकें हें. अब लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्के हिसाबसु ये सारे निरर्थक वाक्य हें. ये मीनिन्ग्लेस् हें के नहीं हे या पोइन्टकुं फॉर् द् टाइमबिइन् बाजूमें रख देवें. जो साइन्सके प्रपॉज़िशन् या सिद्धान्त या जो वाद हें, उनकुं अपन् चॅक् करें तो अपनेकुं थोड़ोसो पॅरललिज़म् ख्यालमें आ सकें. जैसी बात अपन् करें हें वैसी ही बात वे भी करें हें के नहीं. वे वैज्ञानिकन्को विधान यदि मीनिन्ग्लेस् नहीं होंय तो अपन् भी जो

कछु केहते होंय वाकुं मीनिन्गूलेस् क्यों माननो? थालिये एक बात निश्चित समझो के ऐसी गलत धारणामें मत रहियो के यासु ब्रह्म या परमात्मा या भगवान् या अपने सेव्यस्वरूप ठाकुरजी के सद्वस्तु होवेके इतने सारे आयाम साथ सिद्ध हो जायेंगे. इन तत्त्वन्के प्रतिपादनमें जैसे अपनी कोई फ्रेइम्वर्क् हे वैसी ही साइन्स् भी एक्सेप्ट् करे हे के नहीं? और वो यदि वहां मीनिंगूलेस् या अप्रामाणिक नहीं हे तो अपन् भी हिम्मतसु क्यों नहीं केह सकें के तुम्हारी बातको मीनिंग् बतावो क्या हे? जैसो तुम्हारी वा बातको मीनिंग् हे वैसो ही हमारी बातको मीनिंग् हे.

एक सीधीसी बात समझो के मोकुं प्यास लगी हे तो मैं पानी पीके प्यास बुझा सकुं. अब तुमकुं प्यास लग रही हे वो मोकुं समझमें नहीं आयेगी ये तो बात सच हे. मैं फिरभी इतनी बात तो समझ सकुं के मोकुं प्यास लगती होय और मैं पानी पीके प्यास बुझा सकतो होउं तो तुमकुं प्यास लगी हे तो तुम्हारी प्यास भी पानी पीके क्यों नहीं बुझेगी! अब मैं कहुं के साइन्टिफिक् डॅमोन्स्ट्रेशन् दिखावो क्योंके मेरी प्यास बुझी वो तो अनुभवसु समझमें आवे पर तुम्हारी प्यास बुझी मैं कैसे समझुं? पर जैसे मेरी बुझे हे वैसे ही तुम्हारी क्यों नहीं बुझ सके! बस सीधीसी बात इतनी हे. ये तो कन्सेप्ट्स्की कॉमन् मॉइलिटिकी आर्ग्युमेन्ट् हे.

थोड़ोसो ध्यान दोगे तो ये बात समझमें आ सके हे. अपन् ये बात कैसे केह रहें हें और वाकुं डॅमोन्स्ट्रेशन् देवेवालो साइन्स् भी वाही मॉडेल्में केह रह्यो हे के नहीं. यासु जब वाकुं साइंटिस्ट् एक्सेप्ट् करतें होंय, रीजनेबल् मानतें होंय तो, अपनी बात भी क्यों वैसी हो नहीं सके? या समानताके बावजूद अपनी बात सिद्ध कैसे हो पायेगी वो तो पीछेकी कथा हे. ये तो "यक्षानुरूपो बलि" हे मानें जा देवताकुं बकरा भातो होय तो वाकुं बकराकी ही बलि चढ़ानी, यदि दूध भातो होय तो दूध चढ़ानो, माखन भातो होय

तो माखन चढ़ानो चहिये. नये साइन्स् पढ़े भये बच्चान्को पेट जा चीजकी बलि चढावेसु भरतो होय वो बलि उनकुं चढ़ानी चहिये. अपन् अपनो माखन खवावे उनकुं नहीं भावे. उनकुं केंकडा या बकरा भातो होय तो चढ़ाओ केंकडा या बकरा ही. जाकी भूख बकरा खावेसु मिटती होय वाकुं दुःखी क्यों करनो! इतनो खुलासा स्पष्ट करके चलोगे तो कन्फ्यूज़् नहीं होगें.

अपने भीतर अहंकार होनो चहिये के अपन् अपने मॉडेल्कुं केहवेमें कोईके सामने गिड़गिड़ा न जावें. व्यर्थमें दीन नहीं बननो चहिये. महाप्रभु जो आज्ञा कर रहें हें "**कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना**" कृष्णके सामने एक बार नहीं सत्रहसो साठ बार दीनभावना करें. साथ ही साथ अपनी शरणागति या भक्ति की साधना के अन्तर्गत तो अपनी बातकुं नहीं मानवेवालेके प्रति भी अपनेकुं दीनभावना रखनी चहिये. तत्त्वचर्चाके अन्तर्गत खोटी दीनभावना रखवेकी कोई तुक नहीं हे. क्योंके व्यर्थमें ही कोई साइंस्की खोटी आर्ग्युमेन्ट् करतो होय तो वाके सामने अपनुकुं दीन बनवेकी जरूरत नहीं हे. यासु मैं अपनी बात सिद्ध नहीं करनो चाह रह्यो हुं. फिर भी दोनों धारणान्में समानता दिखलानो चाहुं हुं. यासु उपादानात्मक अहंकारके कर्ता और क्रिया के जो भेद हें, सिम्पल् और कम्पाउन्ड् वाले, वो कैसे उपादेयमें कॉम्प्लेक्स् कर्ता और क्रिया के भेद बन जावें हें. ये जो अपनो सेट् ऑफ् प्रपोज़िशन्स् हे, याके जैसो ही साइन्स्को मॉडेल् क्या हे? ये मैं आपकुं समझानो चाहुं हुं.

सबसु पहेली बात यहां एक समझवेकी ये हे के अहंकारके उपादानरूप और उपादेयरूप को जो इन्टर्रिलेशन् हे, वा बारेमें श्रुतिको अपनो स्टॅन्डर्ड् वाक्य क्या हे? "**स एकाकी न रमते...**"(बृह.उप.१।४।३). देखो के यामें कितने फ्रेज़िस् हें.

[१]"**स एकाकी**" [२]"**न रमते**", [३]"**स द्वितीयम् ऐच्छत्**",
[४]"**स आत्मानं द्वेधा अपातयत्**", [५]"**पतिश्च पत्नीश्च**"

[६] **''अभवताम्''**.

इतनी बातें यामें कही जा रही हें. पहेले याको अर्थ मैं समझा दउं.

[१] वो परम तत्त्व एकमेव अद्वितीय हे **''स एकाकी''** अर्थात् जो ब्रहम होवेकी हकीकत हे.

[२] वाने अकेले रेहनो नहीं चाह्यो **''न रमते''**.

[३] वाने अपने अलावा दूसरो कछु होनो चाह्यो **''स द्वितीयम् ऐच्छत्''** हतो तो वो एकमेवाद्वितीय, वाके अलावा कुछ हे ही नहीं. पर वो खुद दूसरो हो सके नहीं ऐसो थोड़े ही हे, सो अपनी एकमेवाद्वितीयताके बावजूद वाने दूसरो होनो चाह्यो.

[४] दूसरेकी वाकी जो डिमान्ड् हती वो सप्लाय् कहांसु भयी? तो उपनिषद् कहे हे के वाने अपने आपकुं दो रूपनूमें बांट लियो **''स आत्मानं द्वेधा अपातयत्''** अर्थात् एकके बजाय दो बन गयो.

[५+६] या बातको उदाहरण दियो पति-पत्नी. यामें पिता-पुत्र, दो दोस्त, या गुरु-शिष्य वगेरे जो द्वैतके उदाहरण के जिनमें काफी इन्टीमसी एक-दूसरेके साथ होवे ऐसे भी स्वयं उपनिषद्ने और अन्यान्य धर्मनूने दियें हें. ये एक-दूसरेके साथ कन्फ्रन्टिंग् डच्युआलिटीके नहीं हें. जा तरीकेकी दोनोंनूमें इन्टीमसी हे, जा तरेहकी दोनोमें इन्टरडिपेन्डेन्सी अन्योन्यनिर्भरता हे, वा तरेहको द्वैत वहां पैदा भयो. एक ऐसो द्वैत जाके बारेमें अपने यहां कह्यो गयो हे के **''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ''** अर्थात् वाणी और अर्थ जैसे एक-दूसरेसु सम्पृक्त रहें हें, अलग नहीं हो सकें, इनूसेपरेबल् हें वा तरीकेको ''जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ'' के दाम्पत्यके मॉडेलूको उदाहरण हे ''पतिः च पत्नी च अभवताम्''. अन्योन्यपे अनिर्भर पति-पत्नीके अर्थमें मत घटा लीजियो. जामें म्युच्यअल् डिपेन्डेन्स् आती होय वैसे द्वैतको उदाहरण विवक्षित हे.

यामें एक समझवे लायक खास बात ये हे के या तरहसु अपने-आपके द्वेधा आपादनके छह स्टेज् बतायें हें. ये थोड़ो माइक्रोबायोलोजीको विषय हे, देखोगे तो आनन्द आयेगो के कितनो पैरलल् उदाहरण हे. अपन् जानें हें के माइक्रोबायोलोजीमें सेलूके रिप्रोडक्शनूके छह स्टेजिस् मानें गयें हें :

(चार्ट नं.३)

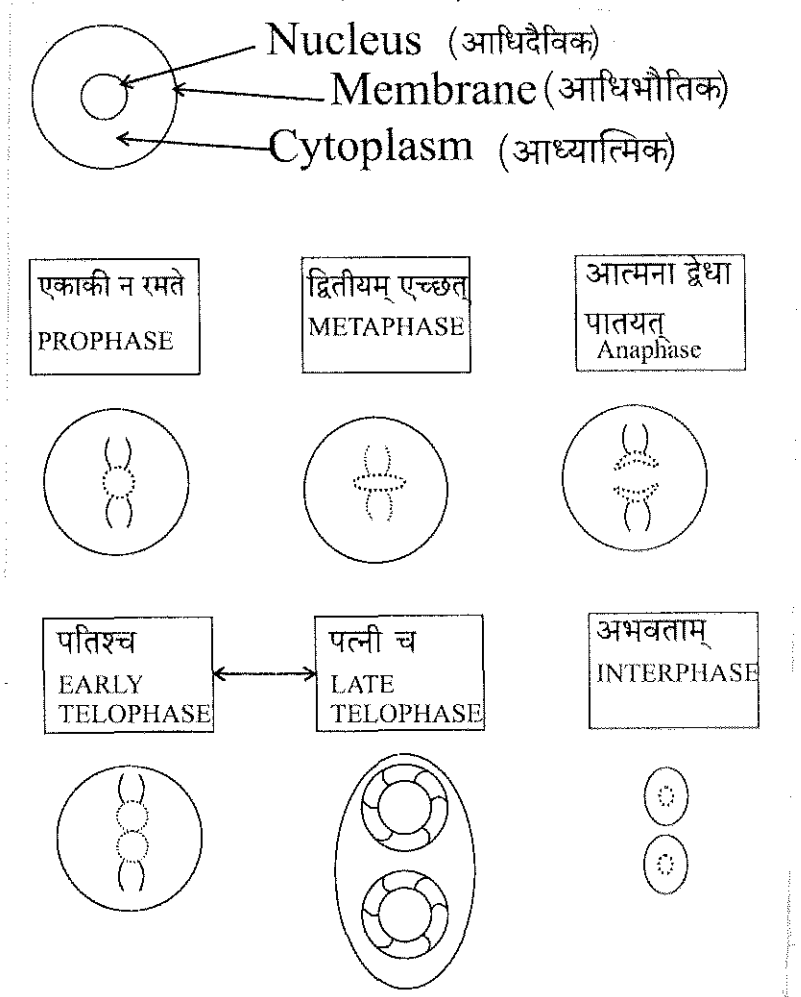

१.प्रॉफेइस् २.मेटाफेइस् ३.एनाफेइस् ४.अर्ली टेलो फेइस् ५.लेइट् टेलो फेइस् ६.रिप्रोड्युस्ड् डिविज़न्. (इंटरथ फेइस्)

ऐसे छह फेइज़िस् हें. अपन् ब्रह्मके बारेमें जा तरहकी बात करें हें वो रिप्रोडक्शन्के मॉडेल्में भी ऐसे ही लागु होवे हे.

हर बायोलॉजिकल् सेल्में एक न्यूक्लिअस् होवे, वा सेल्के इर्दगिर्द साइटोप्लाज़्म् और वाकी मेम्ब्रेइन् होवे हे. न्यूक्लिअस् जैसो एज़ेक्ट्ली अपने यहां पुरुषोत्तम हे और साइटोप्लाज़्म् जैसो अक्षरब्रह्मको मॉडेल् हे. पुरुषोत्तम जैसे खुदको द्वैधीभाव अक्षरब्रह्ममें करे, ऐसे ही न्यूक्लिअस् भी अपने आपकुं सबसु पहले साइटोप्लाज़्ममें रिप्रोड्युस् करे हे. सेल्के न्यूक्लिअस्में क्रॉमोज़ोम् होवें हें. अपनो शरीर ऐसे करोड़न् सेल्सु बन्यो भयो हे. 'सेल्' याने कोष. शरीरके अन्दर हर क्षणमें अनेक सेल् पैदा होवें और अनेक सेल् मरतें रहें, इतनो भारी जन्म-मृत्युको चक्कर चलतो रहे फिरभी वामें अपनो अहं स्थिर रहवे हे.

ब्रह्मके श्रौत लक्षण **''यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत् प्रयन्ति अभिसंविशन्ति, तद् विजिज्ञासस्व, तद् ब्रह्म''** की तरह ही या अपने अहंरूपी ब्रह्मके भीतर भी कितनो सब पैदा हो रह्यों हें, कितनो स्थित हो रह्यों हें और कितने सबको प्रतिक्षण प्रलय हो रह्यों हें, या बातसु भी पैरेललिज़म् समझ्यो जा सके. बावजूद याको अहं कैसे कायम रेह रह्यो हे!

ब्रह्म अविकृत-परिणामी हे. ब्रह्म विकृत नहीं होवे पर ये सारो जगत् वाके भीतर अपनी विकारिता या अविकारिता प्रकट करतो होय हे. इन सबके परिणत होते रहते प्रकारनमें ब्रह्म अविकृत फिनोमिनाके

जैसो कायम ही रहे हे. जैसे अपनो अहं कायम रहे हे. ये वाकी खूबसूरती पाछी देखवे लायक हे. तो न्यूक्लिअस् साइटोप्लाज़्म या ये क्रॉमोज़ोम् की संरचनाकुं अपन् यों समझ सकें के—

अक्षर(=सत्ता+चैतन्य+अपरिच्छिन्नता)

+

पुरुषोत्तम [=सत्+चित्+आनन्द (ऐश्वर्यादि षड्गुणादि)]

= ब्रह्म

अर्थात् धर्मिभूत सत् चित् और आनन्द और आनन्दके अन्तर्गत स्वरूपगत ऐश्वर्य आदि गुणधर्म तथा धर्मरूप सत्ता चेतना और इनकी अपरिच्छिन्नता दोनों एक-दूसरेमें समाहित हें. ऐसो इक्वेशन् इज़ीली समझमें आ जायगो. क्योंके अक्षर कोई पुरुषोत्तमसु अलग नहीं हे और पुरुषोत्तम कोई अक्षरसु अलग नहीं हे. पुरुषोत्तम ब्रह्मकी न्यूक्लिअस् हे और अक्षर पुरुषोत्तमके इर्दगिर्द सायटोप्लाज़्मके जैसो हे, जामें पुरुषोत्तम रहवे हे. वाकुं अपन् याही लिये 'धाम' कहे हे. अक्षर रूपी धाममें पुरुषोत्तम बिराजें हें. सायटोप्लाज़्ममें जैसे न्यूक्लिअस् रहवे हे. एज़ेक्ट् सिच्युएशन् वो ही हे. न्यूक्लिअस् हे वामें अपरिच्छिन्न ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य के क्रॉमोज़ोम् हें, जो वो रिप्रोडक्शनमें तिरोहित हो जावें.

ये पाछे मॅटोसिस् और मायोसिस्, जो रिप्रोडक्शन्के प्रकार हें उनमें पहले प्रकारमें तो एज़ेक्ट् रिप्रोडक्शन् होवे और दूसरे प्रकारमें वाके थोड़े गुण तिरोहित हो जावें. तब वाके बाद दोनों ऐसे डिपेन्डेन्ट् हो जावें जैसे **''पतिश्च पत्नी च अभवताम्''** दोनोंके कॉम्बिनेशन्सु भी फिर कुछ-कुछ पैदा हो सकें हें. दोनों परस्पर मिलें नहीं तो कछु भी पैदा नहीं हो सके हे. वा तरहकी कॉम्लेक्स् स्थिति यहां भी हे. क्रॉमोज़ोम् न्यूक्लिअसमें रह्यो भयो हे. न्यूक्लिअस् एक हकीकत हे पर वामें रह्यो भयो क्रॉमोज़ोम् कहानी गढ़वेवाली स्क्रिप्ट् जैसो होवे हे! हर न्यूक्लिअसरूप हकीकतमें क्रॉमोज़ोम् द्वारा गढ़ी भयी

कहानीकी स्क्रिप्ट छूपी भई होवे हे. और वो जा तरेहसु क्रॉमोज़ोम् फोर्म्युलेशन् करेंगे वा तरहसु वाको डॅवलप्मेन्ट् होतो चल्यो जाय. वो हकीकतमें छुपी भयी कहानी हे. वाके बाद जो भी हकीकतके रूपनमें रिप्रोडक्शन्की कहानी प्रकट होय वामें कुछ हकीकत फिर प्रकट हो जायेगी. पाछी उनमेंसु भी स्टेइम् सेल् बनाके फिर पाछी हकीकत और कहानी को एक-दूसरेमें अन्तर्भावके सायकल्की लीला चलती रहे हे. अपनो कन्सेप्ट् याके पॅरलल् जातो हे.

''स एकाकी'' या **''एकमेव अद्वितीयं''** अथवा **''तद् ऐक्षत बहु स्यां प्रजायेय''** या **''स आत्मानं द्वेधा अपातयत्. पतिश्च पत्नी च अभवताम्''** के अॅन्गल्सु बात बहोत पॅरलल् जाती लगे हे. या तरीकेको वाको स्वरूप हे.

पहले तीन स्टेजिस् देखें. वामें [१] प्रॉफेइस् [२] मेटाफेइस् या [३] एनाफेइस्. प्रॉफेस्को चित्र देखो. ये सेल् और ये न्यूक्लिअस् हे. जो अपन् यहां कहें हें के **''एकाकी न रमते''**को चित्र माइक्रोबायोलॉजीमें भी वैसो ही हे. यामें टॅन्शन् पैदा होवे **''न रमते''**को विदिन् द सायटोप्लाज्म् न्यूक्लिअस्में एक तरहको अपोज़िट् डिरेक्शन्में टॅन्शन् पैदा होवे हे. वाके कारण मेटाफेइस्में, याकुं अक्षरधाम जैसो समझ सकें हें, तनाव आयो जहां **''द्वितीयम् ऐच्छत्''**की मेटाफेइस्की ये स्टेज् आवे. तीसरी एनाफेइस्में वाको या तरहसु भीतर **''आत्मानं द्वेधा अपातयत्''** विदिन् द् सायटोप्लाज्म् न्यूक्लिअस् आत्माकुं द्वेधा डिवाइड् करे हे. विदिन् द् वन् सायटोप्लाज्म् दो न्यूक्लिअस् हो गये. वाके बाद **'पति'** आ रह्यो हे (अर्ली टॅलोफेस्) यामें क्लियरकट् लगे की ये या तरहसु एकदम छूट्टे पड़ गये. जब अर्ली टॅलोफेस् चल्यो जाय तब **'पत्नी'**(लेट् टॅलोफेस्). यामें क्लस्टर् ऐसो ही हे. ये पतिरूप हे ये पत्नीरूप हे. एकदम छूट्टे नहीं पड़े. जब ये लेट टॅलोफेस् आ गयो वाके बाद **'अभवताम्'**. ये अपनो सारो फोर्म सम्पन्न हो जाय हे. ये

पूरी सिच्युएशन् देखो तो मॉडेल् एकदम पॅरलल् लगेगो.

(अहंकारको द्वेधीभाव)

जो अपनी बात इर्रॅशनल् होय तो ये कैसे रॅशनल् रह जायगी? और ये यदि रॅशनल् हे तो अपनी बात कैसे इर्रॅशनल् कहवायेगी? हकीकत और कहानी माइक्रोबायोलॉजीकी जैसी ही तो हे. और जब अपन् मॅटोसिस् और मायोसिस् को डिविज़न् देखें तो मॅटोसिस्को डिविज़न् हे वो सिम्पल् डिविज़न् हे. जैसो वो खुद हे वैसो एक कम्पाउन्ड् दूसरो क्रिएट् करे हे पर जब मायोसिस्के लेवल्पे डिविज़न् आवे तब कॉम्प्लेक्स् सिच्युएशन् हो जाय हे. वाके लिये क्या करे के क्रॉमोज़ोम्को बटवारा हो जाय. थोड़े यहां चले जायें थोड़े वहां चले जायें फिर उनको बटवारा हो जाय. लास्ट्में जो डॉटर् सेल् होवें उनमें जाके युनिफाइ हो जावें. बात तो वोही हो गई! वोही बात अपन् भी बता रहें हें के उपादेय मिश्रित हे. शुद्ध कर्ता और आत्मभूत क्रिया एकाकी हो सके पर सब क्रिया अकेले पैदा नहीं हो सकें हें. कुछ क्रियान्को कुछ तो विषय होयेगो ही. क्रियाकर्ता और क्रियाविषय के परस्पर सहयोगसु ही क्रिया उत्पन्न हो पावे हे. जैसे कुछ मिश्रण होय तो कुछ पैदा हो सके. सिम्पल् होय वो पैदा नहीं हो सके हे. सिम्पल् सस्टेइन् नहीं हो सके हे. ये स्वरूप अपन्ने देख्यो. अहंकारके शुद्ध क्रिया-कर्ता और मिश्रित कर्ता-क्रिया के एकमेंसु द्वैधीभावकी प्रक्रिया भी ऐसी ही हे.

प्रश्न:

एक पतिरूप हे और दूसरो पत्नीरूप हे. पहले वो पतिरूप बने और बादमें वो पत्नीरूप बने तो आगेवालो कहां चल्यो जाय?

उत्तर:

यामें ऐसो होवे जब कोई एक डॉमिनेन्ट् होवे और दूसरो रिसेसिव् बन जावे हे. तू अहंकार छोड़ दे तो तेरे सामनेवालेकुं अन्तमें अहंकार

छोड़के सुधरनो ही पड़ेगो. बात थोड़ीसी कठिन हे पर धीरज तो रखनी पड़ेगी. यासु जब वाने अपने-आपकुं दो तरहसु विभाजित कियो तो एक रूपमें भर्ता और दूसरे रूपमें भार्या बन गयो. पर ये मत भूलियो के **''आत्मानं द्वेधा अपातयत्''** I am the lord in my house and my wife has allowed me to say so. यासु कोई डॉमिनेटिन्ग् बन जातो होय तो दूसरो कोई रिसेसिव् बन जातो होवे हे. इन दोनोंनूके बीचमें वॉटरटाइट् कम्पार्टमेन्ट् जैसो द्वैत नहीं होवे हे.

अपने यहां तो हर पत्नी शक्ति और हर पति शक्तिमान् मान्यो जाय हे. वाकुं 'शक्ति' नहीं केहके 'श्री' कहो तो श्रीमान्को मतलब भी शक्तिमान्. श्री, शक्ति ही तो हे और श्रीमान् हे वो शक्तिमान् हे. वैसे ये एक्च्युअली भाषाकी गलती हे के हर पुरुष या पति के साथ जैसे 'श्रीमान्' जोड़े वैसे हर पत्नीके साथ केवल 'श्री' शब्द जोड़वेके बजाय 'श्रीमती' लगायो जावे हे. पता नहीं ये क्या चक्कर हे? मोकुं लगे हे के नये जमानेमें नारियें सब शक्तिमती हो गई हें यासु 'श्रीमती' शब्द रिसेन्टली कोईन् कर लियो गयो हे. मैं समझूं ये बात आपकुं स्पष्ट भयी होयगी!

आज अपनो विषय वोही हे जो अपन्ने कल देख्यो. शुद्ध कर्ता और उपादान मेंसु क्रिया पैदा होवे हे वो शुद्ध होवे हे. क्रिया ड्युआलिटिकुं सपोज् करके चले. क्योंके कौन कर्ता क्या कर रह्यो हे, काहेसु कर रह्यो हे वगैरह-वगैरह बहोत सारी क्रियाकी अपेक्षाएं हें. हर क्रियाकुं कारकन्की अपेक्षा और कारकन्की पांच वॅरायटी तो रेडीमेड् होवें हें. जा बखत जितनी वॅरायटी अपनुकुं चहिये होंय वा बखत लेनी पड़ेगी. जो अपनो अहंकर्ता जा बखत अहंक्रियाके रूपमें... मानें जैसे चलवेवालो और चलवेकी क्रिया, देखवेवालो और देखवेकी क्रिया, ऐसे द्रष्टा और दर्शनक्रिया, ऐसे ही अहंकर्ता और

अहंक्रिया कुं भी समझो. अहंक्रियाकुं जा द्वैतकी अपेक्षा हे वो द्वैत अपन्ने कल देख्यो. वो द्वैत सिम्पल् हे. दो सिम्पलको द्वैत हे. वो कॉम्प्लेक्स् नहीं हे शुद्ध हे. वा क्रियाकुं जिन दो पॉइन्ट्की अपेक्षा हे वो बिल्कुल मॅटोसिस्की तरह डिवाइड् भयी दो सेल् हें. यासु सबसु पहले क्रियाकी एनेलिसिस् देखें.

प्रश्न:

जो उपादान हे वोही कर्ता बन रह्यो हे, उपादान ही निमित्त बन रह्यो हे, तो कर्ता निमित्त भी बन्यो हे. उपादान जब स्वयं कर्तामें और क्रियामें डिवाइड् हो रह्यो हे तो उपादान खुद निमित्तकारण भी बन रह्यो हे...

उत्तर:

ये प्रश्नके पीछे रही भयी डिफिकल्टी हे और वाको सॉल्युशन् उपनिषद् दे रह्यो हे. मकड़ी अपनेमेंसु जाला निकाले. जालाको उपादान मकड़ी हे और निकालवेवाली निमित्त भी मकड़ी हे और रेह कहां रही हे? जालामें ही! ब्रह्म उपादान और कर्ता होवेके बाद अपने उपादेयमें **''तत् सृष्ट्वा तदेव अनुप्राविशत्''** मकड़ी जाके वा जालाके बीच बैठ जाय ऐसे ब्रह्म भी जालाकी तरह जगत्कुं बुनके, युनिवर्सको नेटवर्क् बुनके, वाके सेन्टरमें ब्रह्म बैठ गयो हे. उपनिषद्ने या प्रॉब्लेमकुं या तरह टॅकल् करी हे के जो उपादान हे वो कर्ता कैसे होयगो और कर्ता हे वो उपादान कैसे होयगो? वाको सीधो उदाहरण उपनिषद्ने मकड़ीके जालाके आधारपे लियो हे.

काश्मीर प्रत्यभिज्ञा दर्शनने भी या प्रॉब्लेमकुं टॅकल् कियो हे, जड़ जीव शिव सदाशिव और परमशिव के विभिन्न अहंकारन्के रूपमें. परमशिव खुदकुं एक ऐसो कॅनवास् बनावे और वो खुदके अहंके ब्रशकुं लेके जो-जो चित्र बनावे वो ये जड़जीवसृष्टि हे. बात वोकी वोही हे. कॅनवास् खुद शिव हे, ब्रश वाको खुदको अहं हे, कौनसो अहं? **''एको अहं बहु स्याम्''** एक मैं अनेक हो जाउं.

या तरहसु ब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण और घरके ठाकुर की अहंकर्ता होवेकी विविधता देखी. ऐसे ही अहंक्रियाके भी स्टेजिस् शास्त्रके हिसाबसु देखो. अपन् साइन्सकुं "गणपतिबापा मोरिया!" करें और अपन् अपने शास्त्रकी बात करें.

क्रिया (चार्ट. ४)

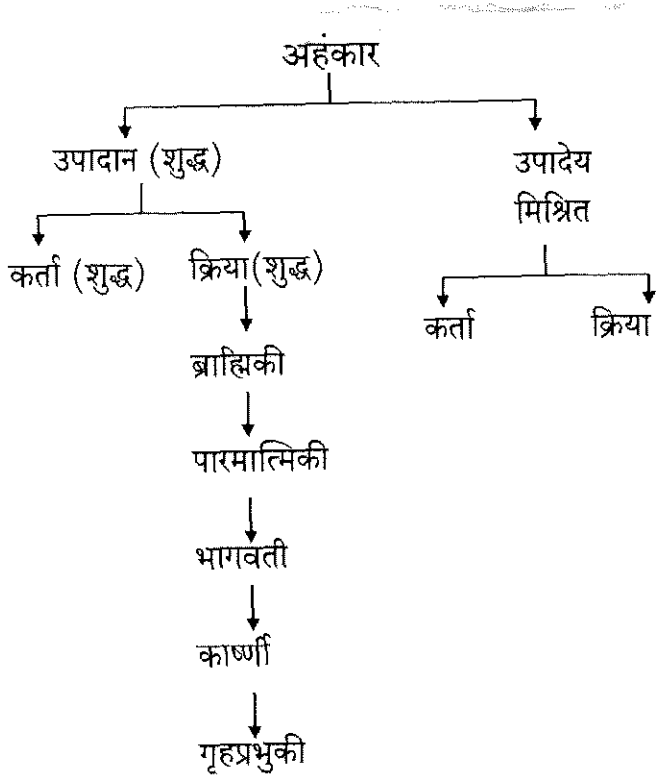

ब्रह्मसु ब्राह्मिकी, परमात्मासु पारमात्मिकी, भगवान्सु भागवती, कृष्णसु कार्ष्णिकी. 'कार्ष्णिकी' मानें कृष्णकी वो क्रिया जो मूलकृष्ण या भक्तगृहमें आराध्य प्रभुतया जो प्रकट होती होंय. इन सारे स्टेजिस्में अहंक्रिया सम्पन्न हो सके हे. अहंक्रियाके कैसे स्वरूप हें वो देखेंगे.

(ब्राह्मिक अहंक्रियाको स्वरूप)

सबसु पहले ब्राह्मिकी क्रिया देखें जो श्रुतिन्में बहोत अच्छे ढंगसु बताई गयी हे :

क. "सो 'अहमस्मि' इति अग्रे व्याहरत् ततो 'अहं'नामा अभवत्. तस्मादपि एतर्हि आमन्त्रितो 'अयम् अहम्' इत्ये अग्रे उक्त्वा अन्यद् नाम प्रब्रूते यद् अस्य भवति. स यत्पूर्वो अस्मात् सर्वस्मात् सर्वान् पाप्मनः औषत्. तस्मात् पुरुषः ओषति ह वै सः तं यो अस्मात् पूर्वो बुभूषति... सो वेद 'अहं वाव सृष्टिः अस्मि' अहं हि इदं सर्वम् असृक्षीति ततः सृष्टिः अभवत्. सृष्ट्यां ह एतस्यां भवति यः एवं वेद".

ख. "स 'भूः' इति व्याहरत् सेयं पृथिवी अभवत्. स 'भुवः' इति व्याहरत् तदिदम् अन्तरिक्षम् अभवत्... सः 'सुवः' इति व्याहरत् सा असौ द्यौरभवत्".

(क.बृह.उप.१।४।१-५, श.प.११।१।६।३)

इन वचनन्की खूबसूरती देखो! जो भी अहंक्रियाके कारण सृष्टि प्रकट करी गयी वो नामोच्चारणपूर्वक करी गयी 'नाम' मानें टेबलनेस् **"स 'भूः' इति व्याहरत्"** ये व्याहरण नामन्को सृजन हे और **"सेयं पृथिवी अभवत्"** ये रूपन्को सृजन भयो. जो अपने भीतर नाम हते उनकुं इनवोक् कियो और जिन रूपनकुं धारण करवेकी अर्थात् सर्वभवनसामर्थ्य खुदके भीतर हती उनकुं इनवोक् करके रूपसृष्टिकुं प्रकट करी. 'भुव' मानें स्पेस्=आकाश. भू और सुव के बीचको स्पेसको नाम 'भुव'

हे. 'भू' मानें पृथ्वी और 'भुव' मानें इन्टरस्पेस्. ऐसे ही 'सुवः' मानें परलोक. यों सबनके निर्माणकी सूत्रात्मक निरूपणशैलीसु तीनों लोक कवर् कर लिये हे.

गीतामें भगवान्ने भी बहोत सुन्दर बतायो हे **''भूमिः आपो अनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च अहंकारः इति इयं मे भिन्ना प्रकृतिः अष्टधा. अपरा इयम् इतस्तु अन्या प्रकृतिं विद्धि मे परां जीवभूतां... यया इदं धार्यते जगत्''** (भग.गीता.७।४-५). भगवान् कहें हें के मैं दो तरहसु कारण बनूं हूं. एक प्रकृति=उपादानकारण, जासु जगत्की सारी उपादेय=विकृति पैदा होवें. प्रकृति मानें क्या? जैसे दहीकी प्रकृति क्या? दूध. गहनाकी प्रकृति क्या हे? सोना. ऐसे जगत्की प्रकृति भगवान् कहें के मैं दो तरहसु बनुं हूं. पहलो प्रकार भूमि आप=जल अनलः=अग्नि वायु खं=आकाश मनः बुद्धिः अहंकार यों आठ तरहसु मैं प्रकृति बनूं हूं. वामें भगवान् क्रियात्मक अहंक्रिया बन रहें हें. अहंकर्ता अपनी अहंक्रिया कर रह्यो हे. 'अध्येता' याने अध्ययन करवेवालो कर्ता, जो अध्ययन कर रह्यो हे वो क्रिया. जो द्रष्टा हे वो देखवेकी क्रिया करे हे. ऐसे अहंकर्ता, अहं करनो शुरु करे हे. अहं शुरु कैसे करे? एक्शन्में वाकुं इम्प्लीमॅन्ट् कैसे करे? तो भगवान् कहें हें के आठ तरहसु मैं कारण बनूं हूं. ये सब आठ कारणस्वरूप वाके भीतर रहे भयें हें. वाके भीतर रह्यो भयो क्रॉमोज़ोम् हे और बहार सायटोप्लाज़्में प्रकट हो रह्यो हे. **''अहंकारः इति इयं मे भिन्ना प्रकृतिः अष्टधा''**. हकीकतमें रही भयी कहानी हे वो या तरहसु प्रकट कर रह्यो हे. वाके बाद भगवान् गीतामें कह रहे हें **''अपरा इयम् इतस्तु अन्यां प्रकृतिं विद्धि मे परां जीवभूतां, महाबाहो!, यया इदं धार्यते जगत्''** (भग.गीता.७।५). एक ओर अपने सदंशरूपसु मैं प्रकृति बनूं हूं और वो मेरो उपादानकारण होवेको रूप हे. ऐसे ही जीवरूपसु भी निमित्तकारण बनूं, सदंशमेंसु इन आठों रूपनको सृजन करके असंख्य चिदंशनके रूप लेके उनको धारककर्ता

बनूं हूं **''जीवभूतां, महाबाहो!, यया इदं धार्यते जगत्''**. अर्थात् जीवरूपसु. भगवान् एक जड़रूप लेवें हें और दूसरो जीवरूप लेवें हें. ये जड़रूप और जीवरूप भगवान् कहां लेवें हें? सायटोप्लाज़्में. अक्षरब्रह्ममेंसु पुरुषोत्तम या तरहसु **''द्वेधा अपातयत्''** हो रह्यो हे. जड़कुं पत्नी कहे तो चेतन पुरुष हे.

पत्नियें सारी जड़ हें ये मेरो मतलब नहीं हे. इक्वेशन्की बात कर रह्यो हूं. अपन् जड़कुं पत्नी ट्रीट् करते होय तो चेतन पुरुष हे. क्योंके वो धारण कर रह्यो हे और वो धारित हे. वो श्री हे और ये श्रीमान् हे. मन और बुद्धि कुं धारण कौन करे हे? 'चेतना'. चेतना धारण करे हे यालिये अहंकार दो तरहको हो जाय. डिविज़न् देखो कैसे हो रह्यो हे! एक जड़ अहंकार. एक अहंकार वा तरफ गयो जो रिसेसीव् हे और एक डॉमिनेन्ट् अहंकार हे जो जीवमें आ रह्यो हे. मैं धारण कर रह्यो हूं ऐसे एक 'अहंकार' अहंकर्ताको, वो दो तरहसु यहां जाके सॅल्फ़्स्प्लिटिन्ग्की प्रोसेससु डिवाइड् हो गयो. पर ये दोनों भगवद्रूप हें यासु इनको कम्पाउन्ड् होवे हे. और अभी कॉम्प्लेक्स् नहीं बन्यो हे वो स्टेज् अपन्ने देख लियो द्वेधा आपातनमें के कैसे पति-पत्नी भये. लास्ट्में दो हो गये. पर दोनों एक जैसे ही हें. दोनोंमें फर्क नहीं हे.

(परमात्मिक अहंक्रियाको स्वरूप)

ये ब्रह्मकी अहंक्रिया हे. याके बाद परमात्माके बारेमें देख्यो के वो **''तत् सृष्ट्वा तदेव अनुप्राविशत्''** (तैत्ति.उप.२।६) भयो हे. जो सृजन कियो वा सृजनमें पाछो एन्टर् भयो. रसमलाईके जैसो सिद्धान्त हे. रसमलाई दूधसु बनी होवेके कारण मूलमें दूध तो हे ही, पर दूधमेंसु पहले छेना बन्यो. छेनामेंसु गोलमटोल बने. वो गोलमटोलकुं पाछो दूधमें डालो तो वो दूधकुं ऐसे सोखे के मानों खुद दूध नहीं होय! यासु वामें दूध घुस जाय. वाको टेस्ट् अलग हो जाय.

छेनाको टेस्ट् अलग होय. जामें दूध नहीं घुस्यो होय ऐसे छेनाको अलग स्वाद होय, सो दूध घुस गयो होय ऐसे छेनाको स्वाद डिफरेन्ट् हो जाय के नहीं? **''तत् सृष्ट्वा तदेव अनुप्राविशद् तद् अनुप्रविश्य सच्च त्यच्च अभवत्''**. (तैति.उप.२।६) ये रसमलाई अपने औपादानिक रूपमें दूध भी रही और उपादेयरूपमें रसमलाई भी बन गई. अविकृत भी हे और परिणाम भी हो गयो. अब एक रूप रसमलाईको हे और एक रूप दूधके जैसो हे. गोलमटोल रसमलाई जीव जैसी हे. वा जीवके भीतर दूधकी तरह भीतर परमात्मा घुसे हे. मॉलेक्युलर् बायोलोजीमें ये सारे प्रिन्सिपल्स् आवें के सायटोप्लाज़्म् जिन बातन्सु गढ़्यो भयो होवे वो सारे फिनोमिना क्लस्टर्की तरह, जैसे ही नयो सेल् क्रियेट् होवे वाकुं घेरें और वामें एन्टर् हो जाते होवें हें. क्योंके जो न्यूक्लिअस् हे वो अपनो खुराक तो सायटोप्लाज़्मेंसु ही ले हे. वो खुराक अवेलेबल् वहां हे तो वो सब पाछे वामें खुराक बनके घुस जाय. **''अहम् अन्नं अहम् अन्नं अहम् अन्नम्''** की तरह. **''अहम् अन्नादो अहम् अन्नादो अहम् अन्नादः''** (तैत्ति.उप.३।१०।६) उपनिषद् मॉडेल् बतावे वा मॉडेलके हिसाबसु पाछो सब वामें घुस जायें. वो घुसे पाछे सायटोप्लाज़्ममेंसु ही. या तरहसु जब परमात्मा जगत्कुं क्रिएट् करके जगत्में घुस गयो तब परमात्माके अहंकारमें एक नयो स्पन्दन पैदा होवे हे.

अहंक्रियाके सन्दर्भमें परमात्माकी जो पारमात्मिक अहंक्रिया हे वो कैसी हे? गीतामें भगवान् केह रहें हें **''ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे, अर्जुन!, तिष्ठति भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया. तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन, भारत!, तत्प्रसादात् परां शान्तिं स्थानं प्राप्यसि शाश्वतम्''** (भग.गीता.१८।६१-६२) **''ईश्वरः सर्वभूतानां''** - ईश्वर सब भूतन्में, **''हृद्देशे, अर्जुन!, तिष्ठति''** जहां तुम्हारी आत्मा रह रही हे वाके भीतर परमात्मा भी रह रह्यो हे. **''भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया''** - वाके भीतरी अहंकारसु तुम्हारो बाहरी अहंकार नियन्त्रित हो रह्यो हे. कितने एक्सटेंट् तक? या बातको निरूपण भगवान् कितनो सुन्दर बतावें

हें, **''सर्वस्य च अहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर् ज्ञानम् अपोहनं च''** (भग.गीता.१५।१५), मैं भीतर बैठके तुम्हारे भीतर ज्ञान पैदा करूं हूं, स्मृति पैदा करूं हूं और अज्ञान भी पैदा करूं हूं. इन अज्ञान स्मरण और ज्ञान के आपसी कॉम्बिनेशन् और परम्युटेशन् सु परमात्मा क्या-क्या नहीं कर सके?

अहंकारमें तीन बात खास आवें, याकी खूबसूरतीपे ध्यान दो, स्मृति भूतकाल, भविष्यको अज्ञान और वर्तमानको ज्ञान. चेतनाके तीनों ही तो फंक्शन् हें. भूतकालसु जो कॅरी फॉर्वर्ड होवे वासु तुमकुं अवेयर् रखके, तुम्हारे अहंकारकुं जाग्रत रखके, याने या जानवरने मोकुं काट्यो हतो अब याके पास नहीं जानो. ये अपनी चेतनाको फंक्शन् हे वो भीतर बैठ्यो परमात्मा करवा रह्यो हे. अपनकुं लगे के ''अहं स्मरामि''. सच बात हे ''अहमेव स्मरामि'' परन्तु ''परमात्मा मां स्मारयति''. अपनकुं लगे के ''अहं विस्मरामि'' सच बात हे ''अहमेव विस्मरामि न च अन्तःस्थितः परमात्मा विस्मरति तथापि स परमात्मा मां विस्मारयति'' ये भी खयालमें रखनो चहिये. अपनकुं लगे के ''अहमेव न जानामि''. ''किन्तु को माम् अज्ञानीं करोति? अन्तःस्थितो परमात्मैव''. यासु ये वाको पारमात्मिक अहंकार हे के **''सर्वस्य च अहं हृदि सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिः ज्ञानम् अपोहनं च''** स्मृतिके कारण अपन् क्या-क्या करें हें, ज्ञानके कारण अपन् क्या-क्या करें हें, अज्ञानके कारण अपन् क्या-क्या करें हें, वो सब वा हिसाबसु अहंकारकी पोस्ट्-डॅवलप्मेन्ट् हे, कालके तीनों आयाममें सक्रिय बनाये रखवेके लिये. उनकुं ट्रेस् कर सकें यामें पर ये पारमात्मिक अहंकारको स्वरूप भगवान्ने खुदने गीतामें समझायो हे अहंक्रियाको.

(भागवती अहंक्रियाको स्वरूप)

याके बाद भागवती अहंक्रियाको स्वरूप देखो : भगवान्की भागवती क्रिया. भगवान्कुं 'भगवान्' क्यों कहें? ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान और वैराग्य जामें होय वो भगवान्. ये तो पुरुषोत्तमसहस्रनामकी तरह

चार्ट-५

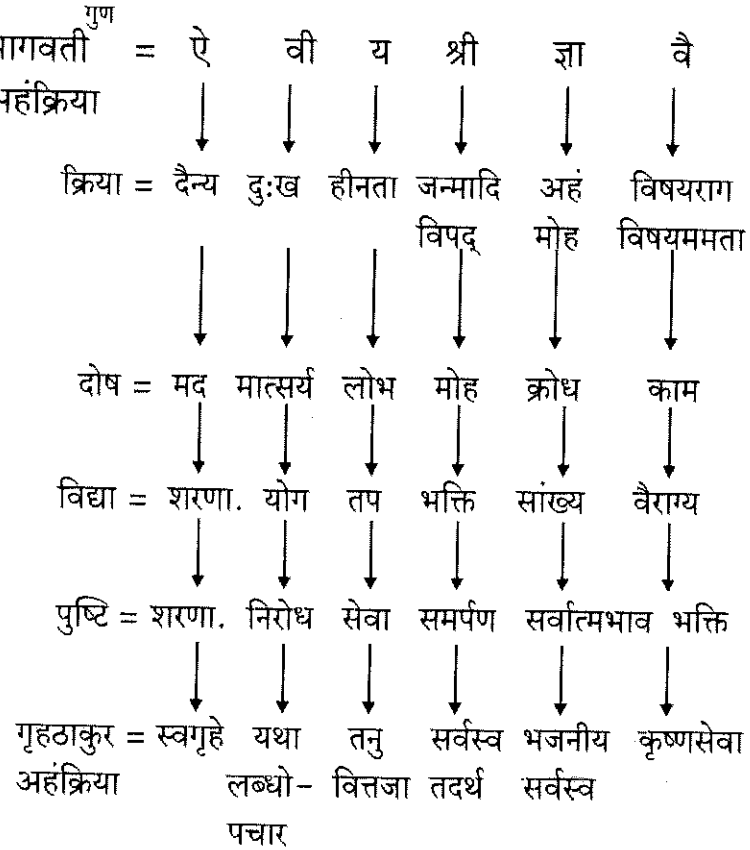

अपनो रिपीटेड् फॉर्म्युला हे. भगवान् खुद जा बखत स्प्लिट् होवें अक्षरमें; अर्थात्, पुरुषोत्तम जगत्के रूपसु क्षर और अक्षर पुरुषन्के रूपसु स्प्लिट् होवें हें वा बखत; महाप्रभुजीके निबन्धको प्रसिद्ध वाक्य हे के "**सच्चिदानन्दरूपेषु पूर्वयोर् अन्यलीनता अतएव निराकारौ पूर्वौ आनन्दलोपतः**" (त.दी.नि.१।२९) "**सति चिदानन्दधर्मयोः तिरोभावः, चिति आनन्दस्य. आनन्दांशतिरोभावस्यापि ज्ञापकम् आह अतएव**" (त.दी.नि.प्र.१।२९) चिदंशके तिरोधानसु सदंश

प्रकट हो जाय और आनन्दांशके तिरोधानसु जीव प्रकट हो जाय वा सन्दर्भकी बात हे ये. ऐश्वर्य तिरोहित होवेके कारण महाप्रभुजी वहां समझावें हें के दैन्य आवे हे. वीर्य तिरोहित होवेके कारण दुःख आवे हे. ऐश्वर्यको अपोज़िट् दैन्य हे. जामें ऐश्वर्य हे वामें दैन्य नहीं होवे, जामें दैन्य हे वामें ऐश्वर्य नहीं हे. वीर्यको अपोज़िट् दुःख हे. आदमी दुःखी कब होवे? जब वामें सामर्थ्य नहीं होवे. जामें सामर्थ्य होवे वो तो दुःखकुं खुद ही हटा सके. तो वीर्यको नहीं होनो मतलब दुःखी होनो हे. जामें वीर्य हे, सामर्थ्य हे वाके दुःखी होवेको प्रश्न ही नहीं. यशके लिये महाप्रभुजी बहोत सुन्दर बात कहें हें. यशके तिरोधानके कारण हीनता आवे, श्रीके तिरोधानके कारण जन्मादिकी विपत् आवे.

'जन्म' माने जा विपत्तिने भगवान् बुद्धकुं वैराग्य लेवेकुं बाधित कर दियो. भगवान् बुद्धके साथ प्रॉब्लम् क्या हती के उनके बारेमें भविष्यवाणी हती के वे वैराग्य ले लेंगे. उनके पिताने उनकुं बाहर ही नहीं निकलवे दियो. और तब जब एक दिन वे घूमवेकुं निकले उनने एक बूढ़ो देख्यो. तो बुद्धने अपने सारथीकुं पूछ्यो के "ये कौन ऐसो व्यक्ति हे?" ऐसो बूढ़ो कभी देख्यो ही नहीं हतो! बहोत ट्रॉमेटिक् एक्सिपरियन्स् हतो. भगवान् बुद्धके सामने बूढ़े-बीमारनकुं जावे देवेकी मनाई हती. बूढ़ो देख्यो तो बुद्धने कही "ये ऐसो कैसो आदमी हे?" सारथीने कही "ये तो बूढ़ो आदमी हे" बुद्धने कही "ये बूढ़ो क्यों हो गयो?" सारथीने कही "राजकुमार! जो जन्मे सो बूढ़े होवे ही" बुद्धने कही "मैं भी बूढ़ो होउंगो?" सारथीने कही "वो तो होनो ही पड़ेगो." आगे गये तो बीमार आदमीकुं देख्यो. बुद्धने पूछ्यो "ये भूमिपे क्यों पड़्यो भयो हे?" सारथीने कही "बीमार हे" बुद्ध भगवान्ने पूछी "बीमार क्यों भयो?" सारथीने कही "आदमी जन्मे तो बीमार और बूढ़ो तो होवे ही. जो जन्मे वो तो बीमार कभी न कभी पड़ेगो. ये तो बहोत लफड़ाकी बात

हे. अन्तमें सारी हिम्मत तोड़ देवेवालो दृश्य हतो एक मुर्दाके जावेको. बुद्धने पूछी "ये क्या जा रह्यो हे?" सारथीने कही "मुर्दा हे." उनने कही "क्यों मुर्दा हे?" सारथीने कही "जो जन्म्यो वो एक न एक दिन तो मरेगो ही!" फिर पाछो बुद्धकुं ये प्रश्न भयो "मैं भी मरुंगो? वाने कही "मरनो तो पड़ेगो ही." और बुद्ध भगवान्के हृदयमें कौंध गयो के "ये जनम बेकार हे".

"न मैं कुछ था तो खुदा था न मैं कुछ होता तो खुदा होता. डुबोया मुझको होनेने न मैं होता तो क्या होता"? बुद्ध या कन्क्लुज़नपे आ गये. ये सारो चक्कर पैदा भयो हे 'मैं' पैदा भयो हे यालिये. अब मोकुं ऐसो उपाय करनो के 'मैं' पैदा नहीं होउं जासु मोकुं ये तकलीफ नहीं भुगतनी पड़े. जो अपनो स्टेन्ड् हे वासु जस्ट् अपोज़िट् स्टेन्ड् हे. अपन् तो यहां तक कह रहें हें के ब्रह्म अपने आपमें स्वयं ही पैदा हो रह्यो हे. **"त्रायते त्राति विश्वात्मा, ह्रियते हरति ईश्वरः, आत्मैव तदिदं सर्वं, ब्रह्मैव तदिदं तथा, इति श्रुत्यर्थम् आदाय साध्यं सर्वैः यथामति, अयमेव ब्रह्मवादः शिष्टं मोहाय कल्पितम्"** (त.दी.नि.२।१८४) ये बात महाप्रभुजी केह रहें हें. या बातकुं समझके अपनेकुं ट्रॉमा नहीं होवे. पर जो या बातकुं स्वीकारने तैयार नहीं हें वाकुं तो नॅचरली ट्रॉमेटिक् एक्स्पिरियन्स् होयगो! जब भी ट्रॉमेटिक् एक्स्पिरियन्स् होवे तब अपनो अहंकार थोड़ो झुंझला जातो होवे. फिर वो स्थिर नहीं रह पावे, पॅन्डुलम्की तरह टकटकावे लग जावे. क्या करनो या स्थितिमें! या सत्ताको क्या करनो जा सत्तामें इतने लफड़ा होंय?

अपने यहां ये ही सत्ताके सारे खिलवाड़ हें. **"जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते नश्यति"** अपन् याकुं ब्रह्मकी हकीकतकी कहानी मान रहें हें लीला मान रहें हें. अब्राह्मिक चिन्तनमें ये ट्रॉमा बनके आवे हे. बात वो के वो ही हे. देख कैसे रहे हो यापे सारो दारोमदार हे. ये बात तुम्हारे ऑप्टिमिज़म् और पॅसिमिज़म्

सु निर्धारित होती कथा हे. हकीकतमें जितनो शरबत हे उतनो ही हे, पर यदि तुम पॅसिमिस्ट् हो तो आधो ग्लास् खाली लगेगो और तुम ऑप्टिमिस्ट् हो तो आधो भर्यो लगेगो. तुम ऑप्टिमिस्ट् हो तो तुमकुं लगेगो के लीला हो रही हे, पॅसिमिस्ट हो तो तुमकुं ट्रॉमेटिक् एक्स्पिरियन्स् हो जायगो. बुद्धकुं ट्रॉमेटिक् एक्स्पिरियन्स् हो गयो; पर महाप्रभुकुं लीलाको दर्शन हो रह्यो हे.

यासु भगवान् बुद्ध और महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य दो ध्रुव पैदा करें हें. महाप्रभु केह रहे हें के "जन्मादि विपत्" क्या हे? जन्मादि विपत् अपने भीतर श्रीको अत्यन्ताभाव नहीं हे पर श्री तुम्हारे भीतर हकीकतकी तरह घुस गई होवे पर कहानीकी तरह बाहर नहीं आ रही हे. हकीकतमें तुम्हारे भीतर श्री हे, 'तिरोहित'को मतलब बिहाइन्ड् द् कर्टन् हे. ऑन् द् स्टेज् नहीं हे. "तिरः पश्चात् हितं स्थितं तिरोहितं." जो ड्रामा चल रह्यो हे वाके कर्टनूके पीछे श्री हे. वासु अपनेकुं लग रह्यो हे के जन्मादि विपत् हे. जायते वर्धते अपक्षीयते म्रियते को लफड़ा लग रह्यो हे पर अपने महाप्रभु ये बात समझा रहें हें. ये श्री तुम्हारेमें नहीं हे ऐसी बात नहीं हे अपन् सबमें श्री हे. टेबलूमें भी श्री हे पर तिरोहित हे. यदि प्रकट हो सके हे तो यहां भी प्रकट हो सके हे और नहीं हो सके तो अपनेमें भी नहीं हो सके. वो कथा अलग हे. श्रीके तिरोधानसु जन्मादि विपत् आवे हे.

ऐसे ही ज्ञानके तिरोधानसु अहंको मोह आवे हे. वैराग्यके तिरोधानसु विषयको राग आवे हे. ये महाप्रभुने बतायो हे. आनन्द तिरोहित भयो क्योंके ब्रह्म अपनो सच्चिदानन्द हे. जैसे ही ब्रह्मके कोई एक पार्टमें आनन्दको तिरोधान भयो, वो चाहे सदंशको पार्ट होय या चिदंशको पार्ट होय, और वामें ये लक्षण अपनेकुं दिखलाई देवे लग जाय. जामें चेतना होयगी वामें दैन्य आवेगो. ईट-चूना-पत्थरके

घरमें दैन्य नहीं होवे. दुःख पत्थरमें नहीं आवे पर हीनता पत्थरमें आवे हे. कितनी हीनता आवे हे? जितने भी ध्यानवादी या प्रार्थनावादी हें वे सब यों समझें के पत्थरकुं पूजनो वो तो हीनता हे. अपने आपकुं परमात्मा मानो. पत्थरकुं क्यों पूज रहे हो! पत्थरमें हीनता आयी कहांसु! पत्थरकुं इतनो हीन क्यों मान्यो!

अरविन्दोने या बारेमें बहोत अच्छी कही हे के कोई भी आर्ट्के साथ तिरस्कार करवेवालो, आर्ट्को लवर् नहीं हो सके हे. यदि ये जगत् भगवान्को क्रियेशन् हे और if it is an artistic creation and if you hate the world you can not love God. आर्ट्कुं जा बखत तुम हेट् करो हो तो तुम आर्टिस्ट्को लव् नहीं कर सको हो. आर्टिस्ट्में आर्ट्के अलावा हे क्या? कुछ भी तो नहीं हे. पहले एक संगीतके ऑर्गेनाईजर् हते. उनको एक संगीतकारसु झगड़ा हो गयो. दोनोंमें तुमुल संघर्ष हो गयो. ऑर्गेनाईजरने कही "अरे! कांई थामें आर्ट् हे पर टिस्ट् नहीं हे." वाकुं लग्यो के आर्ट् कोई अलग चीज हे और टिस्ट् कोई अलग चीज हे. वो कथा अलग हे. आर्ट्कुं घृणा करे वो टिस्ट्कुं भी घृणा करे हे, जो टिस्ट्कुं घृणा करे वो आर्ट्कुं भी आज नहीं तो कल घृणा करेगो. क्योंके आर्ट् और आर्टिस्ट् मिलके एक युनीट् होवे हे. अहंकर्ता और अहंक्रिया जितनो तो फर्क हे!

ये तिरोभावकी स्किम् महाप्रभुजीने अपनूकुं समझाई हें. (ये देखो अहंक्रिया हे) ये जितनी भी बात हें के मैं दीन हुं, मैं दुःखी हुं, मैं हीन हुं, मैं जन्मादि विपत्सु ग्रस्त हुं, मैं विषयानुरागी हुं या तरीकेकी अपने भीतर अहंक्रिया हो रही हे वो बेज़िकली कायके आभारी हे? भगवान्के ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य के खाली पदमें पीछे जानेकी आभारी हे. क्रिया तो वो ही हे. मॅथेमेटिक्स्की दृष्टिसुं देखें तो नंबर वो के वो ही हे पर प्लस्के बजाय मायनस् हो गये हे.

सरमद्की एक रुबाई हे—

मुसलमां गर बेदानिश्ती के बुत चीस्त।
बेदानिश्ती कि दीं दर बुतपरस्तीस्त।।
चुं अशया हस्त हस्तीरा मजाहिर।
बुवद् जुम्ला यके बुत बाशद् आखिर।।

मुसलमांकुं समझाओ के धर्म का चीजको नाम हे? सरमद् केह रह्यो हे "मुसलमांकुं समझ पड़े के बुतको क्या स्वरूप हे तो मुसलमांकुं समझवेमें तकलीफ नहीं होनी चहिये के सच्चो दीन तो बुतपरस्तीमें ही हे. मूर्तिपूजामें ही सच्चो धर्म रह्यो भयो हे." जो भी कुरानने कह्यो वासु डायमेट्रिकली ऑपोज़िट् (विरोधी) बात सरमद् बता रह्यो हे. ये सरमद्, दारा शिकोहको गुरु हतो. दारा शिकोह औरंगज़ेबको बड़ो भाई हतो जाने उपनिषद् रामायण महाभारत भागवत को अनुवाद वा जमानामें पर्शियनमें करवायो हतो. दिल्हीमें कश्मीरी गेट्के पास वाकी मदरसा हती वामें वो अनुवाद करवातो. गुसांईजीके दोहित्र श्रीजगन्नाथजी वहां जातें हतें.

सरमद् क्या केह रह्यो हे के "चुं अशया हस्त हस्तीरा मजाहिर" कुरान केह रही हे के अल्लाहको नूर कण-कणमें प्रकाशित हो रह्यो हे. वाकी जो किरण हे वाको जो ज्ञान हे वासु जगत्को कण-कण प्रकाशित हो रह्यो हे "बुवद् जुम्ला यके बुत बाशद् आखिर" तो क्या मूर्तिकुं छोड़के प्रकाशित कर रही हे वो? ऐसो ब्लॅक्होल् होय तो खुदा कमजोर हो गयो और ब्लॅकहोल पावरफुल हे. सरमद् यों केह रह्यो हे के "एक मूर्तिकुं छोडके सारी किरण वाकी प्रकाशित हो रही हे? क्या बेवकूफीकी बात कर रहे हो! सच्चो दीन तो बुतपरस्तीमें हे". बहोत जबरदस्त बात वाने केह दी पर कट गयो गला. रहस्यकी कथा हे के हीनताको भाव हे वो अल्लाहको नूर हे, वो हर शॅहमें रोशन हे. ज्ञान नहीं होनेके कारण हीनताको भाव हे. यदि ज्ञान होय तो बुतमें हीनताको प्रश्न उठ नहीं सके. बुतमें

यदि हीनताको प्रश्न होवे तो ये प्रश्न मस्जिद तक जायेगो. यदि अल्लाहको नूर बुतमें रोशन नहीं कर पायो तो मस्जिदमें महाशय रोशन कैसे होयगो?

एक शायरने बहोत अच्छी बात कही हे *"शेखने मस्जिद बनाकर साफ बुतखाना किया, पहले एक सूरत तो थी, अब और वीराना किया."* अल्लाहकुं भज पानेकी देख पानेकी पहले एक सूरत तो थी, अब वो खतम हो गई. *"पहले एक सूरत तो थी अब ओर वीराना कर दिया"*. यदि बुतके साथ ये द्वेष करोगे तो वो द्वेष मस्जिद तक भी पहोंचेगो. क्योंके मस्जिदमें अल्लाह आ रह्यो हे तो बुतमें क्यों नहीं आ सके? सीधीसी एक बात हे के हीनताको भाव कायके कारण आ रह्यो हे? भक्त होते भये भी अल्लाहके यशसु अपन् कन्विन्स् नहीं हें.

जैसे वल्लभपंथी महाप्रभुजीके भक्त होवे पर महाप्रभुजीके वचनसु कन्विन्स् नहीं होवे हे. इनकुं सिर्फ महाप्रभुजीके वचन ही नहीं सुहावे बाकी सब सुहावे. महाप्रभुजीकी भक्ति सुहावे पर वचनको पालन कहो तो सूतक लग जाये. ये वल्लभपंथी भी ऐसे ही होवे अपने पुष्टिमार्गमें.

श्री=शोभा. जो अस्तित्व हे वाकी कोई एक शोभा हे. और जन्म मृत्यु या बिमारी वगेरे अपने अस्तित्वकी स्टेजिस् हें वो अपनेकुं श्रीहीन बना रही हे. अपने अस्तित्वकी शोभाकुं हर ले हे यदि अपन् जनम रहें हें तो फिर ट्रॉमॅटिक् ॲक्सपॅरियन्स् होयेगो के जन्मे तो मरनो तो पड़ेगो. श्री अपने अस्तित्वकी शोभा हे और जन्मादि विपत्ति अपने अस्तित्वकुं शोभाहीन बनावे.

ज्ञानको तिरोभाव अहंकी मोहात्मक क्रियामें प्रकट होवे हे. वैराग्यको तिरोभाव विषयके रागकी क्रियामें प्रकट होवे हे.

याके बाद नॅक्स्ट् स्टेप् दोष: काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य ये छह दोष हें. इनके कॉरस्पोन्डीन्ग् हें. मद कौन करे? जामें दैन्य हे. जामें ऐश्वर्य होवे वाकुं मद करवेकी जरूरत नहीं पडे. कैसे अपनो अहंकार कॉम्प्लेक्सीटीमें जाके मद बन जाय हे. वोही अहंकार ऐश्वर्यके तिरोधानसु मद बन जाय, वोही अहंकार वीर्यके तिरोधानसु मात्सर्य बन जाय, वोही अहंकार यशके तिरोधानके कारण लोभ बन जाय. जामें खुदमें यश हे वाकुं लोभकी जरूरत नहीं पड़े. ऐसे जन्मादि विपत्के कारण मोह कौनकुं होवे? जाकुं अहंकार हे. अहंकारमें जाकुं जन्मादि विपत्ति भासित हो रही हे वाकुं अपने होनेमें मोह पैदा होयेगो. जाकुं अपने अहंकारमें जन्मादि विपत्ति भासित नहीं हो रही हे. वाकुं मोह नहीं होयगो.

सरमद् जामा मस्जिदके दादरापे बैठके *''ला इलाह इल्लिलाह मोहम्मद रसूल अल्लाह''* मेंसु खाली ''ला इलाह'' जपतो हतो. 'इल्लिलाह' नहीं जपतो हतो. ''मोहमद रसूल अल्लाह'' भी नहीं जपतो हतो. मुसलमान धर्मके हिसाबसु ये कलमा पूरो नहीं जपनो कुफ्र हे. तो औरंगज़ेबने पूछवाई के ''तुम कलमा क्यों पूरो नहीं जपो?'' वाने कही ''पूरो जपुंगो, पर जितनो जानुं इतनो जपुं. अभी मोकुं इतनी समझमें आयी हे के अल्लाहके अलावा कुछ नहीं हे. अल्लाह एक हे के दो हें वो मैं समझ नहीं पायो हुं. जा दिन समझ जाउंगो वा दिन वो भी जपुंगो. समझुं तब जपुं न! इतनी समझ आयी हे के 'ला इलाह' मानें अल्लाहके सिवाय यहां कुछ नहीं हे. या लिये इतनो सो जप रह्यो हुं''. औरंगज़ेबने कही ''कतल कर दो वाकी''. वहां ही वाकी गरदन काट दी गई. गरदन काटी वा बखत भी वाने ये नहीं कही के औरंगज़ेब गरदन काट रह्यो हे. वो तो अल्लाहकुं माशुक माने हे. अल्लाहकुं कहे के ''तु कितनी निष्ठुर माशुक हे के मैं तेरो सच्चो प्रेमी हुं के नहीं वाकी टेस्ट् गरदन कटवाके लेवे हे? गरदन कटवाके यदि तु संतुष्ट होती

हे, मेरो प्रेम यदि सच्चो सिद्ध होतो हे तो गरदन कटवाने तैयार हुं क्योंके मैं तो तेरो सच्चो आशिक हुं.'' ये केहके कट्यो. ये अहं एक अलग अहं हे. अल्लाहके आशिक होनेको जो अहं हतो वो बहोत मीठो अहं हे. हरेकके बसकी बात नहीं हे. जन्मादि विपत्तिके कारण मोह होवे हे.

वैसे ही क्रोध कायके कारण होवे हे? अपनेकुं ज्ञान नहीं होवे हे तब क्रोध होवे हे. मेरी ही बात बताई आपकुं के थंभा आड़े आयो तो क्रोध आ गयो. क्यों क्रोध आ गयो? ड्राइविन्ग् करवेको ज्ञान नहीं हतो या लिये क्रोध आ गयो. ड्राइविन्ग्को ज्ञान होतो तो स्टेरिन्ग् मोडके निकल जातो हतो.

ऐसे ही काम जो पैदा होवे हे वो अपनेमें स्वस्थ वैराग्य नहीं हे तो विषयको राग पैदा हो जाय. *''तर्के समंदरका भरम और पनाहे साहिल, चाह कर मोजने फितरते फानी चाही''*. जो लहरन् समुद्रमें पैदा भयी हें, समुद्रमें लहरा रही हें, समुद्रमें लीन हो रही हें पर बैठे-बिठाये ऐसो भरम हो जाये के हमकुं ''तर्के समंदर'' करना हे या लिये विषयके किनारा तक पहोंचके समंदर छोड़ देंगे.

ऐसे अपनी आत्मरतिको जो समुद्र लहरा रह्यो हे **''आत्मानन्दसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्''** (सि.मु.१६) आत्मानन्दसमुद्रस्थ कृष्णको चिन्तन करवेके बजाय ''तर्के समंदर'' हम कर सकें हें और किनारे तक पहुंच कर समुद्रसु छुटकारा पा सकेंगें; तो ''तर्के समंदरका भरम और पनाहे साहिल'' एक भरम ये के हम समुद्रकुं छोड़ सकेंगें और दूसरो भरम ये के किनारापे जाके समुद्रसु स्वतन्त्र हो सकेंगें. या तरीकेकी मनोवृत्तिके कारण लहरनकुं क्या हांसिल होवें हें? ''फितरते फानी चाही.'' किनारापे पहोंचवेके बाद लहर, लहर नहीं रेह जाय,

लहर खतम हो जाती होय हे. आत्मानन्दसमुद्रस्थ कृष्णकुं छोड़कर जा बखत अपन् विषयरागमें जानो चाहें हें तो अपनेकुं कामको सहारा लेनो पड़ें हें. भगवान् स्पष्ट आज्ञा करें हें के **''काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणम्''** (भग.गीता.३।३७) **''कामात् क्रोधो अभिजायते, क्रोधाद् भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति''** (भग.गीता.२।६३) ये जो दोष हें वो अपने अहंकारमें या तरहसु प्रकट होवें हें.

(दोषादिको निवारण पंचपर्वाविद्यासु)

ये अहंक्रिया वाकी हे पर याको प्रोडक्ट् अपनेमें हें. भगवान्की अहंक्रियाके माइनस् होनेके कारण अपनी चेतनामें ॲज् ए प्रोडक्ट् आ रही हे. महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के आनन्दके तिरोधानसु स्वरूपविस्मृति होवे हे, और स्वरूपविस्मृति होनेके कारण पञ्चपर्वा अविद्याके कारण अपने भीतर अध्यास होवे हे. देहाध्यास अन्तःकरणाध्यास प्राणाध्यास इन्द्रियाध्यास और स्वरूपविस्मृति. अविद्याके चक्करमें अपन् जब आवें हें वाको एन्टीडोज् महाप्रभुजी विद्याके पांच पर्व मान रहें हें. विद्याके पांच पर्व इनसु कैसे एसोसिएट् हो रहे हे?

या प्रक्रियासु सबसु पहले ऐश्वर्यके तिरोधानके कारण दैन्य पैदा भयो. दैन्यके कारण पैदा होते मदको ॲन्टिडोज् शरणागतिसु होवे. **''उद्धरेद् आत्मना आत्मानं नात्मान् अवसादयेत्, आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः आत्मैव रिपुरात्मनः''** (भग.गीता.६।५) **''अत्ता हि अत्तनो नाथ को हि नाथो परो सिया''** (धम्मप.१२।४). वो मद अपन् कैसे छोड़ पावें? भगवान् और महाप्रभुजी कह रहें हें के **''दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम् एतां तरन्ति ते''** (भग.गीता.७।१४): **''मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते, एवकारेण सर्वेषाम् अनुपायत्वमाह हि''** (त.दी.नि.२।३०४) ये गुणमयीमाया जो

हे वो दैवीमाया हे, ये तुम्हारी माया नहीं हे मेरी माया हे; और **"मामेव ये प्रपद्यन्ते मायाम् एतां तरन्ति ते"** कैसे तरन्ति, विद्यासु तरन्ति. **"अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते"**(केनोप.११) सामवेदमें याके लिये बहोत अच्छो गान हे.

एक अंग्रेज हती, वाने एक बखत कही हती के यदि ताजमहल जैसो स्मारक मेरे लिए कोई बनातो होय तो मैं मरनो पसंद करूं. ऐसे सामवेदको एक गान हे मरते आदमीकुं सेन्ड्ऑफ् (विदाई) देवेको और सचमुचमें कोई ऐसो होशहवासमें सेन्ड्ऑफ् दे सकतो होय तो मरनो भी पसंद आवे ऐसो एक मधुरगान हे 'साम'को.

"सेतून् तर दुस्तरान् सेतून् तर दुस्तरान्" : ये सेतुकुं तैर जा तू. कौन-कौनसे सेतुनकुं? **"अक्रोधेन क्रोधं सेतून् तरः दुस्तरान्"**: अक्रोधसु क्रोधके सेतुकुं तैर जा. **"दानेन अदानं सेतून् तर दुस्तरान्"**: ये अदानकी जो खाई हे वाकुं दानके सेतुसु तू तैर जा. ऐसे ही **"ज्ञानेन अज्ञानम् सेतून् तर दुस्तरः दुस्तरान्"**: (अज्ञानकी खाईकुं ज्ञानके सेतुसु तैर जा) हकीकत समझ ले तो बस ये सेतुकुं तू तैर जायगो. मरते बखत बोलवेको मंत्र हे! सचमुचमें मरनो भी पसंद आवे ऐसे कोई कहतो होय तो. 'सेतु सामगान' याकुं कह्यो जाय. बहोत मीठो साम हे. मैं खास सीखवेके लिये गयो हतो गुरुजीके पास. सेतु सामगान इतनो मोकुं पसंद आयो.

यामें एक बात ध्यानसु देखो के शरणागति अपने मदके सेतुकुं तैरवेको एक ॲन्टीडोज् हे. सिमिलर्ली ये जो मात्सर्य हे वो योगसु रिलेटेड् बात हे. लोभको ॲन्टीडोज् तप हे. मोहको ॲन्टीडोज् भक्ति हे. क्रोधको ॲन्टीडोज् सांख्य (विद्याके पांचपर्व **"विद्याया पञ्च पर्वाणि तत्साधनानि आह. वैराग्यं सांख्ययोगौ च तपो भक्तिश्च केशवे"**(त.दी.नि.१।-४५) हे. और कामको ॲन्टीडोज् वैराग्य हे. विद्याके पांच पर्व प्लस्

शरणागति, ये छः वाके कैसे ॲन्टीडोज् बनें हें.

वो थोड़ो देखो (चार्टकुं देखतें भयें) के अहंता मैंने आपकुं बतायो के शरणागतिसु अपन् मद छोड़ सकें हें क्योंके जा बखत अपन् यों कहें के **"सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वतः पापपीनस्य दीनस्य श्रीकृष्णः शरणं मम"** (श्रीकृष्णशरणाष्टकम्): सर्वसाधनहीन हूं, पापपीन हूं, तो अपन् क्या कहवें के 'श्रीकृष्णः शरणं मम.' वो आत्मोद्धारके मदकुं अपन् छोड़ रहें हें.

ये योग विद्याके पांच पर्ववालो क्या हे? मात्सर्य अपनकुं क्यों हो रह्यो हे क्योंके कोई सुख अपनकुं चहिये हे वो सुख अपनकुं नहीं मिल रह्यो हे पर कोई दूसरो ले रह्यो हे. अपनकुं मात्सर्य होय पर अपन् वाकुं गाली तो नहीं दे सके और न ही अपन् केह सकें के ये सुख हमकुं चहिये हतो और वाकुं मिल रह्यो हे. तो अपन् क्या करें के जाकुं सुख मिल रह्यो हे वाकुं बदमाश मानें हें. असलमें अपन् ये कबूल करवेके लिये तैयार नहीं होवें के ये सुख हमकुं चहिये हतो और हमकुं ही नहीं मिल रह्यो हे याके लिये हमकुं वो आदमी बदमाश लग रह्यो. वाको ॲन्टीडोज् कैसे आ सके? तुम अपने चित्तकुं समाहित अपनेमें करो. दूसरेकुं क्या सुख मिल रह्यो हे वाकी चिंता मत करो. तुमकुं क्या मिल रह्यो हे, **"प्राप्तं सेवेत निर्ममः"** (वि.धै.आ.१५) इतनो योग यदि तुम करोगे तो अपने आप मात्सर्यको ॲन्टीडोज् हो जायगो. या तरहसु योगकी जो प्रक्रिया हे विद्यामें वो मात्सर्यकी निवारिका बने हे.

जितनो लोभ पैदा होवे हे वो काहेके लिये पैदा होवे हे? आदमीमें खुदके भीतर कहीं न कहीं हीनताकी ग्रन्थि भरी भयी हे. चीता और शेर कुं कभी संग्रह करवेकी जरूरत नहीं पड़े हे. पर

चीता शेरसु ज्यादा तेज दौड़तो होवे, शेर इतनो तेज नहीं दौड़ सके. और शेर बिचारो कई बखत पेड़पे नहीं चढ़ सके, चीताकुं पेड़पे भी चढ़नो आवे. फिर भी चीताकुं सेल्फ़-कॉन्फीडेन्स् नहीं होवेके कारण खानो नहीं होय तो भी मार-मारके लाश लटकाके रखे. पर शेरकी ये खासियत हे के वाकुं खानो नहीं होय तो बकरा भी सामने आवे तो आंख मींचके बैठ्यो रहे. आतो होयगो अपने क्या हे. जा बखत भूख लगे वा बखत हाथीकुं भी मार सके क्योंके वाकुं अपने हीनताको बोध नहीं हे, सेल्फ़-कॉन्फीडेन्स् हे. याही लिये एक श्लोकमें कह्यो भयो हे के "भोक्तुं गजोऽपि हन्तव्यः भोक्तव्यश्चेत् हतो यदि": खावेके लिये हाथीकुं भी मारनो होय तो मारो, कोई मारके दे जाय तो खा लो चुपचाप. बहोत ज्यादा पंचायत मत करो. मिल रह्यो हे के नहीं मिल रह्यो हे खा लो न यार! "भोक्तव्यश्चेत् हतो यदि गज भक्षणव्यापारे व्याग्रो व्याग्र वृको वृकः": हाथीकुं खावेमें जो शेर हे, वो शेर ही हे, पर जो वृक होवे ('वृक' मानें वरु), वरु कभी हाथीकुं मारवेको साहस नहीं करे! पड़्यो मिल जाय तो हाथीकुं भी खा जाय वरु. कौन मारके गयो हे? कौनके लिये मारके गयो? मेरे लिये ही मारके गयो होयगो. जो हमारी हवेलीमें भेंट आ रही हे वो हमारे ही लिये तो आ रही हे. ये एक वृकवृत्ति हे, व्याघ्रवृत्ति नहीं हे. दोनोंन्की वेल्युएशन् (स्वाभाविक गुण) अपनुकुं बराबर समझमें आवे के हाथी दोनों खा रहें हें, हाथी खावेमें कोईकी कम सामर्थ्य नहीं हे. पर कैसे खानो हाथी, वामें दोनोंन्के माद्दाको पता चले के शेर मारके खावे और वृक मर्यो खावेवालो हे.

तो वा तरीकेकी हीनताबोधके कारण आदमी समझतो ही होवे के अपन् हीन हें. जो भी मारके दे जाय; वो अपने खावे ही केलिये तो हे. मिल गयो हे तो खाओ. रसियामें बहोत अच्छो कह्यो के *"आयो होरीको त्योहार मना लें नार हवेलीपे, चरणामृतसो*

चाट जाके चाटत डोले होठ झूझ पड़े भगत तपेलीपे. आयो होरीको त्योहार मनायले नार". ये बहोत मझेदार रसिया हे. वो झूझ पड़े भगत ऐसे ही होवें सब तपेलीपे चाटवेवाले. सो चीताकी तरह वो हीनता अपनुमें लोभ तरीके जा बखत पनपे वाको ॲन्टीडोज़् होय तप. 'तप'को मतलब अपनेकुं तकलीफ देनी. ज्यादा तकलीफकी जरूरत नहीं हे पर उतनी तकलीफ देनी सीखो के जो तुम्हारे अहंकारकुं अस्वस्थ बनातो होय ऐसो लोभ करवेकी जरूरत नहीं हे. उतनो ही लोभ करो जितनो भोग करनो हे. भोगमें दोष नहीं हे. जैसे शेर भूखो हे तो हाथीकुं भी मारके खायगो वा भोगमें दोष नहीं, वाको खुराक हे. जा बखत तुमकुं खानो नहीं हे और मार-मारके लाशनुकुं लटका रखी हें. कौन जाने कब फिर मिले के नहीं मिले *'आजनो ल्हावो लीजियेजी काल कोणे दीठी छे'* वो वृकवृत्ति आ गई. तो यासु अपनुकुं बचनो चहिये. वो विद्याको एक एंगल् हे.

और भक्ति. देखो ये विद्यांग जो भक्ति हे वो नेसेसरिली अपनी कृष्णसु रिलेटेड् भक्ति नहीं हे. ये भक्ति कृष्णभक्ति नहीं होके भक्तिमयी वृत्तिको प्रश्न हे. जैसे तुम्होरेमें शरणागतिकी वृत्ति होनी चहिये, योगवृत्ति होनी चहिये, तपोवृत्ति होनी चहिये ऐसे एक भक्तिकी वृत्ति हे. तुम्होरेमें जो जन्मादि विपद्को मोह हे वो मोह खुद एक भक्ति हे पर भक्ति कौनके लिये? मोह विषयकी भक्ति हे और वो विषयके अलावा तुमकुं कोई अविषयकी जा बखत भक्ति जगे वो तुम्हारे मोहको ॲन्टीडोज़् होयगी. मानें जाके लिये यों कह्यो हे **"या प्रीतिः अविवेकानां विषयेषु अनपायिनी त्वाम् अनुस्मरतः सा मे हृदयाद् मा अपसर्पतु"**(विष्णु.पुरा.१।२०।१९) तेरेकुं अनुस्मरण करते भये मेरे हृदयमेंसु भक्ति नहीं जानी चहिये. ये बात जरूरी नहीं हे के भक्ति कृष्णके लिये ही हे. शिवको भक्त होय वाकुं शिवके लिये हे, जो देवीको भक्त होय वाकुं देवीके लिये हे, जो गणपतिको भक्त होय वाकुं गणपतिके लिये हे. जो जाको भक्त होय वाके

लिये पर यदि तुम साधना कर रहे हो तो तुम्हारेमें कोई भक्तिकी वृत्ति होनी चहिये.

सिमिलरली सांख्य. 'सांख्य' क्या हे? अहंको मोह. अहंको मोह एक बड़ी बुरी बला हे. मैंने कल आपकुं बात बताई हती के भगवान् तीनसौ बार अहं केहके फिर अहंकुं गाली दे रहें हें. वो कौनसे अहंकुं भगवान् गाली दे रहें हें? स्वस्थ अहंकुं नहीं पर अस्वस्थ अहंकुं. अस्वस्थ अहं कैसो होवे?

जैसे मैंने आपकुं बतायी हती बात के अपनो अहंकार सुबह उठके अपने मोंहमें आती भयी बास जैसी फिनोमिना हे के जो अपनकुं पता नहीं चले दूसरेकुं पता चले. पर ये वो अस्वस्थ अहंकी कथा हे. स्वस्थ अहं कैसो हे? कोई परफ्यूम् या अत्तर के जैसो. हर अत्तर या परफ्यूम कुं तुम लगाओ उतनी देर तुमकुं सुगंध आवे वाके बाद तुमकुं नहीं सुगंध आवे दूसरेकुं आवे. लगायो नहीं अत्तर परफ्यूम पाउडर्, मॅग्जिमम् वाकी रॅन्ज् पांच मिनिट् तक भी बहोत मुश्किलसु होवे. वो सुगंध तुमकुं नहीं आवे दूसरेकुं आवे. तो अपने अहंको जो स्वस्थ होनो हे वाकी सुगंध दूसरेकुं आती होवे हे और अपने अस्वस्थ अहंकी दुर्गंध भी दूसरेकुं आती होवे हे. अपने स्वस्थ अहंकी सुगंध अपनकुं पांचएक मिनिट् आवे. हर कोई स्वस्थ अहंको ये तकाज़ा हे के ज्यादा देर लिंगर्ऑन् नहीं करनो चहिये, हँग्ओवर् नहीं करनो चहिये. हँग्ओवर् कर रह्यो हे अहं तो बासवालो अहं हे, कोई अस्वस्थता हे जा अस्वस्थ अहंकुं भगवान् गाली दे रहें हें के अहंकार तुमकुं भ्रष्ट करेगो. "**अहंकार-विमूढात्मा 'कर्ताहम्' इति मन्यते**" (भग.गीता.३।२७).

मैंने एक मजेदार जोक् पढ़्यो के एक आदमी स्टीमर्में (जहाजमें) जा रह्यो हतो. तो जो फर्स्ट्क्लास्की टिकिट होवें वामें तो अच्छो

अच्छो सब मिले पर जो सेकन्डक्लास्की कॅबिन् होवे उनमें एक गोल बारी होवे. वा बारीके सामने उनकी सीट् या कॅबिन् होवे. वाकुं जैसे ही रिजर्व् सीट् मिल गई वो जाके बैठ्यो. बारीमेंसु देख्यो, प्रसन्न हो गयो. फिर वो बाहर निकल्यो तो कॅबिन् नंबर भूल गयो. वाने कॅप्टनकुं जाके पूछी के "मेरो कॅबिन् कहां?" वाने कही "तुम्हारो कॅबिन् मोकुं कैसे पता? तुमकुं पता होनो चहिये, नंबर बताओ!" "वोही तो मुश्किल हे नंबर ही तो याद नहीं हे." तो वाने कही के "तब मोकुं कैसे पता चलेगो?" तो वाने कही "ठहरो अभी मैं एक बात बताउं. वो लाईट् हाउस् (दीवादांडी) मेरे कॅबिनके सामने हती." लाईट् हाउस् (दीवादांडी) तो जब स्टीमर् चली तब सामने हती. वो तो स्टीमर् कहांकी कहां चली गई पर अहंकार कायम रह गयो के हमारे कॅबिनके सामने लाईट् हाउस् हे. अब ये अहंकुं लेके आदमी यात्रा करतो होय तो अपनी कॅबिन् कैसे खोज सके? नहीं कॅबिन् खोज पायगो. ऐसी क्षुद्र बातनपे अपनने जब अपनो अहं टिका रख्यो होय के औरनके कांचकी बारीके सामने लाईट् हाउस् नहीं हतो, हूंह.. हमारे कॅबिनके सामने तो लाईट् हाउस् हतो. पर वो तो स्टीमर् चली और दूसरेकी तरफ चली गई! *"तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश. ए दिले-नादां ये बदगुमांनी हे."*

ये तो एक फनी जोक्की बात हे पर लाइफमें देखोगे तो ऐसे कितनी सारी दीवादांडीयें अपनने अपनी खड़ी कर रखी हें के हम ये हें हम वो हें. 'गाममां कोई जाणे नहीं ने हूं वरनी फइ'. ऐसे दीवादांडी जैसे बोहत सारे अहं अपनने पालके रखे होवें हें. उन अहंकी ठाकुरजी निंदा करें हें. स्वस्थ अहंकी निंदा नहीं करें हें. स्वस्थ अहं तो एकदम भगवानके आनन्दसु मिल्यो भयो अपनी चेतनाकुं उत्तराधिकार हे. जैसे बापकी संपत्ति बेटाकुं मिले वा ढंगसु. तो ये एक रहस्य हे वाको.

सांख्य क्या करे हे के अहंके मोहके कारण जो अपनूकुं क्रोध आवे हे; देखो क्रोध क्यों आवे? क्योंके अपन् यों मानें हें के सब चीज जा तरहसु हे वा तरहसु होनी चहिये. क्योंके अपनने कोई-कोई दीवादांडीयें सामने रखी होवें हें. और अपन् जा तरहसु चाह रहें हें वा तरहसु सब चीज नहीं होवें करके अपनूकुं क्रोध आवें. अपन् एक बखत वा दीवादांडीकुं अपने सामनेसु सरका दे और समझ लें के अपन् चाहें ऐसे सब कछु होवेवालो नहीं हे. ये तो स्टीमर् चली और दीवादांडी गायब हो जायगी तो अपने आप क्रोध गायब हो गयो. फिर अपनूकुं वो अहंको मोह नहीं रह जायगो.

सांख्यको मतलब ये हे के कौनसी चीज तुम्हारे साथ रहवेवाली हे और कौनसी चीज तुमसु छूट जावेवाली हे. ॲन्युमरेट् करके देख लो. जो छूट जावेवाली हे वाको व्यर्थमें अहं पालो मत; जो रहवेवाली होय वाको अहं पालो, वो तो तुम्हारो पार्ट् हे. जा चीजकुं तुम निभा नहीं सकते हो वा चीजको अहं पालोगे तो वो अंतमें क्या करेगो? कहीं न कहीं तुम्हारेमें क्रोध पैदा करेगो. जा चीजकुं अपन् पाल सकें हें वाकुं पालेंगे तो क्रोधको कोई सवाल नहीं हे. अपन् मनमें ये फांका रखके चलें हें के जो हम चाह रहें हें वा ढंगसु सब होनो चहिये. वा ढंगसु सब होवेवालो नहीं हे क्योंके दुनियामें अकेले तुम तो हो नहीं. तुम होते अकेले तो जिंदे ही नहीं रहते. दुनियाको स्ट्रक्चर् या ढंगको नहीं हे के कोई आदमी अकेलो रेह सके. तो तुम जिंदे कैसे रहते? तुमकुं जिंदो रहनो हे तो कईनूकुं होनो पड़ेगो. जैसे तुम चाह रहे हो ऐसे सब नहीं होयगो. पर जैसे ॲक्सिडेन्ट्ली अहंकार मानें—

"अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्,
विविधाश्च पृथक् चेष्टा दैवं चैवात्र पंचमम्.

तत्रैवं सति कर्तारम् आत्मानं केवलं तु यः,
पश्यत्यकृतबुद्धित्वात् न स पश्यति दुर्मतिः."
(भग.गीता.१८।१४ - १६).

भगवान् केह रहें हें के वा दुर्मतिकुं दिखलाई नहीं दे क्योंके कई चीजनूके मिलवेपे कोई एक क्रियाकी कन्डीशन्, कोई एक रिजल्ट् पैदा होवे हे. वामेंसु बैठे-बिठाये तुमने अपने आपकुं टचस्टोन् कैसे मान लियो के मैं चाहुं वैसे सब होनो चहिये. कई चीजें मिलके एक चीज पैदा हो रही हे. अपने आप तो अकेलेसु कोई चीज पैदा नहीं हो रही हे.

एक बात समझो के खाली पिशाब भी करनी होय तो अपनी इच्छासु नहीं कर सकें. वामें भी बहोत सारी तकलीफ हे, कई फॅक्टर् अपनूकुं काममें लाने पड़ेंगे. नींद भी, अपन् सोचें के अपन् अपनी इच्छासु सो जायें पर नहीं सो सकें. मच्छर काटेगो खटमल काटेगो तो नींद नहीं आयगी. अब तुम रातकुं सोओगे या मच्छरकुं मारते रहोगे? तुम ये सोचके चलोगे के हम सोनो चाह रहें हें अच्छी बात हे, कौन ना पाड़ रह्यो हे. पर सोवेकी क्रिया तुम्हारे हाथमें टोटली नहीं हे. वामें कछु मच्छरको कॉन्ट्रीब्युशन् (योगदान) हे कछु खटमलको कॉन्ट्रीब्युशन् हे. कोई बाहरके नॉइज्-पॉल्युशनूको कॉन्ट्रीब्युशन् हे. इलेक्ट्रिसिटि गायब हो गई पंखा चल नहीं रह्यो हे वाको कॉन्ट्रीब्युशन् हे. अब लीतर्यामेंसु पीतर्या निकालते जाओ तो एक सोवेमें कितने सब लोगनूपे डिपेन्ड् होनो पड़े हे. समझो ठंडी नहीं होय और गरमीमें पंखा अचानक चलनो बंद हो गयो तो सो पाओगे? अब तुम केह रहे हो सोनो तो हमारे अधीनकी बात हे, हम चाहें जब सो जायें. अरे! सो ही नहीं सकोगे. सोने जैसी क्रिया अपने हाथमें नहीं हे. पिशाब करने जैसी क्रिया अपने हाथमें नहीं हे. और फिर क्या अपने हाथमें होयगो यहां! जो कछु

होयगो वो सबके जो नेट्रिज़ल्ट् आयगो वासु होयगो. वामें बैठे-बिठाये कोई क्रोध करे तो करतो रहे! हु कॅअर्स् फॉर् यु. दुनिया कोई तुम्हारे क्रोधसु खतम होवेवाली नहीं हे!

एक बालकने मोकुं कही के "सब बालकें अन्यथा कर रहें हें. आप कहो तो मैं किरीटभाईकुं सर्टिफिकेट् दे दूं के वो ब्रह्मसंबंध दे सके". मैंने कही "देखो एक बात बताउं आपकुं के पुष्टिमार्ग अपने पुरुषार्थसु चल नहीं रह्यो हे और अपनी बेवकूफीसु खतम नहीं हो जायगो". उनने कही "आपने मेरे बारेमें क्या कही?" मैंने कही "आपके बारेमें नहीं केह रह्यो हूं. पुष्टिमार्गके बारेमें केह रह्यो हूं. पुष्टिमार्ग अपने पुरुषार्थसु चल नहीं रह्यो हे और अपनी बेवकूफीसु खतम नहीं होयगो." बोले "नहीं आप मेरे बारेमें बताओ." मैंने कही "मैं पुष्टिमार्गके बारेमें बता रह्यो हूं. आप पुष्टिमार्गीय हो के नहीं? पुष्टिमार्ग आजकी तारीखमें अपने पुरुषार्थसु चल नहीं रह्यो हे और अपनी बेवकूफीसु खतम नहीं होयगो. बस इतनीसी बात मैं केह रह्यो हूं. अब आपके बारेमें मैं बतावेवालो कौन!" वो पिन्पॉइन्ट् करके पूछनो चाह रहे हते "नहीं! आपकुं मेरे बारेमें क्या कहनो हे?" "मैं आपकुं कछु केहनो ही नहीं चाहूं. पुष्टिमार्गके बारेमें मैं केह रह्यो हूं. आप पुष्टिमार्गमें हो तो आपपे सच्ची. नहीं हो तो झूठी." अब क्या केह सकें अपन्! तो ये एक बड़ी कॉम्प्लिकेटेड् सिच्युएशन् हे के अपनुकुं क्रोध आवे हे. क्यों क्रोध आवे हे? क्योंके अपन् यों मानके चलें हें के सब कछु अपनी इच्छाके अनुसार होनो चहिये.

वाको ॲन्टीडोज़् सांख्य हे. सांख्य आपकुं वो ॲनेलाइज़् करके बता दे के आपके क्रोधकुं आप निभा सको ऐसे फॅक्टर् आपके साथ परमॅनेन्ट् कितने हे और इम्परमॅनेन्ट् कितने हे? जो फॅक्टर् खुद इम्परमॅनेन्ट् हे दीवादांडीकी तरह, उनके आधारपे यदि आप क्रोध

करवे जाओगे तो यार माल चलेगो कितने दिन! वाके लिये सांख्य ॲन्टीडोज़् करे हे.

और जो वैराग्य हे वो कामको ॲन्टीडोज़् हे क्योंके विषयरागके कारण काम पैदा होवे हे. 'विषयराग'को मतलब समझो. विषयराग और काम एक चीज नहीं हे. 'रंजयति इति राग': जो चीज अपनुकुं खुश करें वाकुं 'राग' कह्यो जाय. रागकी जो नोट्स् हें वो अपनुकुं खुश करें हें करके वो राग हे और जो खुश नहीं कर सकते होंय वो राग नहीं हे. जहां राग नहीं हे वहां विराग आवे हे. विषय जा बखत अपनुकुं रंजित करवे लग जाय वा बखत अपनुकुं काम पैदा हो जाय. और वा कामकुं ॲन्टीडोज़् वैराग्य हे. या तरहसु महाप्रभुजीकी पंचपर्वाविद्याको यामें समावेश हे.

वाके बाद पुष्टि आ रही हे. गुण क्रिया दोष विद्या और पुष्टि. (चार्टके संदर्भ) पुष्टिमें शरणागति तो ॲज़् इट् इज़् कायम रहेगी क्योंके शरण तो पहली बात हे. पर योगके ठिकाने अपने यहां निरोध आवे हे. ॲग्ज़ेक्ट् जो योगको विद्यामें रोल् हे वो अपनी पुष्टिमार्गीय साधनाप्रणालीमें निरोधको रोल् हे जो निरोधलक्षणमें महाप्रभुजीने बतायो हे के **"दर्शनं स्पर्शनं स्पष्टं तथा कृतिगती सदा, श्रवणं कीर्तनं स्पष्टं पुत्रे कृष्णप्रिये रतिः."**(नि.ल.१७-१८) अपनो निरोध हे, वो अपने यहां योगके पेरेलल् आती भयी बात हे साधनाप्रणालीमें.

वाके बाद तप हे. तपके पेरेलल् अपनी पुष्टिमार्गीय साधनाप्रणालीमें सेवा आवे हे. **"सेवा धर्मो परमगहन योगीनाम् अपि अगम्य"**( ) १२० वचनामृतकारके वार्तामें आवे हे के एक संन्यासी हते. वो एक बखत महाराजके साथ रहवे आये. और ठंडीके दिन हते, श्रीनाथजीमें चार बजे मंगला होती हती. महाराज पलंगपे रजाई ओढ़के सोये

भये हतें और खबर आयी के ठाकुरजीके शंखनादको समय भयो हे. तो रजाईमेंसु तुरंत निकलके स्नान करके ठाकुरजीकुं जगावे पधारे. वो संन्यासीने कही के "मैं तो रजाईपे और गादीपे नहीं सो रह्यो हतो गुदड़ीपे सो रह्यो हतो पर या बखत ठंडीमें उठनो मेरे लिये थोड़ी डिफिकल्ट् बात हती और आप रजाईमेंसु निकलके नहावे कैसे चले गये?" तो जब भी अपन् कोईकी सेवा करें हें तो कछु न कछु काउन्टरपार्ट्में तप-तपस्विता अपनेमें होय तो ही अपन् सेवा कर सकें. जो तपस्विताकी आपकी वृत्ति नहीं हे और मोंजावतारकी वृत्ति हे तो हर वक्त..."जागवेकी खबर हे अन्नदाताजी!" उनें कही "पोंहचो". "मंगलाआरतीकी खबर हे अन्नदाता!", उनें कही "पोंहचो". "ठाकुरजीकी शृंगारकी खबर हे अन्नदाताजी!" वो कहें के "पोंहचो". तो पोंहचते ही रहो फिर. वामें जो चीज खतम हो जाय हे वो हे अपनो पुष्टिमार्गीय तप. जब आप 'पोंहचो पोंहचो' कर रहे हो तो फिर वो पोंहचते पोंहचते एक दिन ऐसो पोंहच जाय के अपने ठाकुरजी अपने बजाय मुखिया भीतरिया और ट्रस्टीन् के माथे पोंहच जायें क्योंके आप 'पोंहचो पोंहचो' कहते रहे और ठाकुरजीकी ही कथा नहीं हे बहुजीकी भी ऐसी कथा होवे हों! अपन् पोंहचो पोंहचो करते तो बहुजी भी कौनके साथ भग जायगी. अब पोंहचो मत कहो खुद पोंहचो. अपन् हर बखत कहते रहें 'पोंहचो पोंहचो' तो कोई पोंहच जाय वहां तक हमकुं क्या पता?

ये रहस्य समझनो चहिये के पुष्टिमार्गमें अपनी सेवा बड़ो मीठो तप हे. ऑब्जेक्ट् वा तरीकेको तप हे के जा तरीकेको तप एक माता अपने बच्चाको सेवन् करवेके लिये करे हे. रातकुं दस बार जगे हे, दसबार सोवे. वाकुं सारी बातन्पे कंट्रोल् लानो पड़े. वामें ठंडी और गरमी को भेद नहीं चल सके. जैसे मां अपने बच्चाको लालन-पालन करे वामें जितनो तप इन्वोल्व् होवे हे वो एक मीठो तप हे. वो आत्मक्लेशको तप नहीं हे पर परसुख दानको तप हे.

मानें जाकुं अपने यहां कह्यो जाय के स्वसुखको नहीं पर भगवत्सुखके विचारसु सेवा होवे हे. तो भगवत्सुखके विचारसु अपनेमें तप आवेगो. अपने तपकी एक खासियत हे के अपनो आत्मक्लेशको तप नहीं हे पर भगवत्सुखको क्लेश हे, तप हे. भगवत्सुख कैसे अपन् विचारें वाको अपने यहां 'तप' हे. अपने यहां सेवा हे वो तपको स्वरूप डॅवलप् करे हे.

और वाके बाद आवे हे भक्ति. वो जो गामकी भक्ति हे वो पुष्टिमार्गमें भक्ति नहीं हे माइन्ड् इट्. पुष्टिमार्गमें वो समर्पण बन जाय हे. मैं यामें एक ही बात केह सकूं हूं के जैसे विवेकानंद कहे हे के जहां वेस्टर्न फिलॉसॉफीको ॲन्ड् होवे हे वहांसु इन्डीयन् फिलॉसॉफी स्टार्ट् होवे हे. ऐसे जहां गामकी भक्ति खतम होवे हे वहांसु अपनो समर्पण स्टार्ट होवे हे. और ये बात कैसे हे: **''श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्, अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यम् आत्मनिवेदनम्''**(भाग.पुरा.७।५।२३) आत्मनिवेदन लास्ट्स्टेज् हे भक्तिकी वहांसु अपनी भक्ति स्टार्ट् होवे हे के समर्पणपूर्विका भक्तिके अपन् अधिकारी होवें हें.

जो गामकी भक्ति हे वो अपने यहां समर्पणके रूपमें खिलके आवे हे. या बातकुं मत भूलियो कभी, नहीं तो आपकुं लगेगो भक्ति आ गई फिर समर्पणकी क्या जरूरत हे? पर वो भक्ति पंचपर्वाविद्यावाली भक्ति हे. और वो पंचपर्वाविद्यावाली भक्ति अपने यहां समर्पण बनके आवे हे. सब कछु प्रभुकुं समर्पित अपन् कर रहें हें वो अपने भक्तिभावको समर्पण हे. वो पराजयको समर्पण नहीं हे. वो प्रभुसु कुछ काम निकालवेको समर्पण नहीं हे. पर प्रभुकुं देवेको समर्पण हे. ये एक अपनो प्रोग्राम् हे अहंक्रियाके विसा-विस्.

समर्पणके बाद आ रह्यो हे सांख्य. वो पुष्टिमें सर्वात्मभाव

सांख्यके स्थानपे आवे हे. सांख्यस्थानी हे वाको कारण समझो. सांख्य क्या करे के हर चीजकुं ॲनेलिसिस् करके अपनकुं बतावे के ये रिटेन् करो और ये रिटेन् मत करो. अपने पुष्टिभक्तिमार्गमें जो साधना हे वामें अपनी एनेलिसिस्को स्वरूप क्या हे? जो भी कछु नाम-रूप-कर्ममें अब्राह्मिकता दिखलाई दे रही हे वाकुं रिटेन् मत करो. सर्वमें ब्रह्मात्मभाव पैदा करो, ये अपनो सांख्य हे. ॲन्युमरेशन् हे. नाम-रूपकुं अपन् ॲन्युमरेट् नहीं करें ऐसी बात नहीं, ॲन्युमरेट् करें हें पर ॲन्युमरेट् करके वाके (सांख्यके) ब्रह्म नहीं होवेको जो पहलु हे वाकुं ड्रॉप् करके वामें ब्रह्म होवेको पहलु देखें हें. अपने यहां सांख्यके विसा-विस् सर्वात्मभाव आ रह्यो हे. वाके बाद लास्ट्में देखो (चार्ट्के संन्दर्भमें) वैराग्य. विषयरागके बाद काम (अविद्या) और त्याग (विद्या) हे. ''तिया गयी सब संपत्ति नासी मूंड़ मुंड़ाये भये संन्यासी'' वालो वैराग्य नहीं. पर कौनसो वैराग्य अपनो? जाकुं महाप्रभुजी आज्ञा करें हें. **''उत्कर्षश्च अपि वैराग्ये हरेरपि हरिर् यदि''**.(**''हरेः** सर्वदुःखहर्तुर् **अपि यदि हरिः** सर्वदुःखहर्ता स्यात् तदा तस्मिन् पुरुषे वैराग्योत्कर्षो ज्ञेयो.) (सुबो.कारि.१०।१८।११।२६) हरिके तुम हरि बन रहे हो! तो वैराग्यको तुम्हारो उत्कर्ष हे. **''उत्कर्षश्चापि वैराग्ये हरेरपि हरिर् यदि.''** वो अपनी भक्तिको स्वरूप हे. ये अपनी पुष्टिभक्तिसाधनाको प्रोग्राम् हे अहंकारके विसा-विस्.

या तरहसु मैंने कल आपकुं बतायो के ब्रह्म परमात्मा भगवान् कृष्ण और अपने ठाकुरजी की क्रिया. उनमें या तरहसु अपनो अहंकार प्रकट होनो चहिये. अपने ठाकुरजीके विसा-विस् ये अहंकार अपनकुं होनो चहिये के मैं शरणागत हुं. मेरो सब कछु प्रभुमें निरुद्ध होनो चहिये. मोकुं प्रभुकी सेवा करनी हे. मोकुं समर्पण करनो हे. मोकुं सर्वात्मभाव हे. मोकुं भक्ति हे. ये अपने घरके ठाकुरजीके विसा-विस् अपने अहंकारको ये स्वरूप होय तो अपनो स्वरूप वाकुं अनुस्पंदित कर रह्यो हे. जो अपने ठाकुरजीको अहं हे के ''मैं तेरी सत्ताको

अरोगवे तेरे घर पधार्यो हूं. तेने गामसु लेके मोकुं क्यों धर्यो, आज तेरी सत्ताको भोग नहीं धर्यो तो मैं भूखो रह्यो''. ये जो ठाकुरजीको स्पंदन हे के सारो राजभोग अरोग रहे हते पर उननें (गिरिधरजीने) कही के मुखारविंदपे ऐसी उदासी क्यों झलक रही हे? मथुराधीशजीनें कही के छोलाकी याद आ रही हे. कितनो सीमित/मिनिमाइज़् अहं हे! सारे भोग अरोगवेवालेकुं छोलाकी याद क्यों आ रही हे? क्योंके प्रभुको अहं पद्मनाभदासजीके अहंसु ट्युन्-अप् होवेकुं मिनिमाइज़् हो गयो हे. कितने एक्स्टेन्ड् तक मिनिमाइज़् भयो के खुद महाप्रभुजीके बहुजीने सारो सीधा (रसोईकी कच्ची सामग्री) भिजवायो और पद्मनाभदासजीकुं लग्यो के कहीं मथुराधीशजीको अहं तो गड़बड़ा नहीं गयो? आपकुं अरोगनो होय तो बिराजो महाराज! सब सामग्री तैयार हे. मथुराधीशजीने कही ''नहीं नहीं अरोगवे तैयार नहीं, चलो''. सीधा महाप्रभुजीकुं भीजवाके पाछे मथुराधीशजीकुं छोलाके /(पुष्टिभक्तिसाधनाके) प्रोग्राम्में (पधारे.) इतनो मिनिमाइज़् अहं हे अपने ठाकुरको. अपने ठाकुरको इतनो मिनिमाइज़् अहं हे के बहोत बड़े ताड़ जैसे मथुराधीश प्रगटे तब महाप्रभुजीने कही ''महाराज! कौन करेगो सेवा? होओ छोटे.'' और छोटे कर दिये. गोदमें बिराजे तो मेरो ठाकुर कहावे. गाममें बिराजे गोमटेश्वरकी तरह तो वो मथुराधीश थोड़े कहलायेंगे? अपने ठाकुरको वो मिनिमाइज़् अहंकार अपनेमें पुष्टिसाधनाको कॉरस्पोन्डन्स् पैदा करेगो. ये सारी बात भागवती अहंक्रियाके तहेत बतायी हे.

(कार्ष्णी अहंक्रियाको स्वरूप)

याके बाद कार्ष्णी अहंक्रिया बहोत मीठी महाप्रभुजीने समझायी हे. *''उनकी मरज़ी न हो तो क्या दे तूल दास्ता खत्म एक आहमें हे.''* ऐसे एक आहमें महाप्रभुजी समझा रहें हें. **''यदा कृष्णः रोचते तदैव विषयाः न रोचन्ते''**. (सुबो.१।६।२७) अपनो अहं अपनूकुं ये कहेगो के यदि **''यदा कृष्णः रोचते तदैव विषयाः न रोचन्ते यदा**

विषयाः रोचन्ते तदा कृष्णः न रोचते.'' बस ''उनकी मरज़ी न हो तो क्या दे तूल दास्ता खत्म एक आहमें हे'' वो कार्ष्णी अहंता हे. क्यों कार्ष्णी अहंता हे? वाको कारण समझो. भगवान् खुद वहां कबूल कर रहें हें **''तस्मान्मच्छरणं गोष्ठं मन्नाथं मत्परिग्रहम्, गोपाये स्वात्मयोगेन सोऽयं मे व्रत आहितः.''** (भाग.पुरा.१०।२५।१८) ये गोकुल तो मेरो हे. गामकुं छोड़के वो तुम्हारे घरमें आके बिराज्यो, तुम्हारे गोकुलमें बिराज्यो और तुम वाकुं छोड़के 'विषया रोचन्ते' करोगे तो वाकी हालत क्या होयगी ये तो देखो! *''कभी तो सोच कि वो शख्स किस कदर था बुलंद जो झुक गया तेरे कदमोंपे आसमांकी तरह''*. कभी तो सोच के कोटिब्रह्मांडको नायक होवेके बावजूद तुम्हारे घरमें आके बिराज्यो वा ठाकुरकुं तुम पूरे वॉल्टेज्को नहीं मानो. हवेलीमें बिराजते ठाकुरकुं तुम पूरे वोल्टेज्के मानो. तो ये तो सोचो के वाको अहं कितनो हर्ट् हो रह्यो हे तुम्हारे यहां बिराजवेमें! यदि तुम्हारो पति ऐसे करे, यदि तुम्हारी पत्नी ऐसे करे तो तुम्हारो ईगो कितनो हर्ट् होयगो? एज़ेक्टली तुम्हारे घरके ठाकुरको उतनो ईगो हर्ट् हो रह्यो हे के तु मोकुं छोड़के कहां जा रह्यो हे! मैं तेरे घरमें तेरे भरोसे आके बैठ्यो और तु मेरो दर्शन नहीं करके गामके दर्शन करवे जा रह्यो हे! क्या भयो वा ईगोको?

अकबर इलाहाबादीने बहोत अच्छी कही के *''बे परदा नज़र आयी जो कल चंद बीबीयां अकबर ज़मीनमें गैरतसे गढ़ गया. मैंने जो पूछा आपका परदा वो क्या हुआ? तो बोलीकी अक्लपे मर्दोंके पड़ गया''* (पुरुषोत्तमनूके) क्या हालत हे? अपन् बेपरदा हो गयें हें. नंगे अहंकारी हो गयें हें. अपन् अपने ठाकुरजीके ईगोको ख्याल नहीं रखें हें. कौनसे ईगोसु ठाकुर अपने घरमें बिराज रह्यो हे! आज पुष्टिमार्गमें वा ईगोकुं अपन् रिस्पेक्ट् नहीं करनो चाह रहें हें और फिर अपन् कह रहें हें के अपन् पुष्टिमार्गीय हें. काय बातके पुष्टिमार्गीय हें? कुष्ठिमार्गीय हें अपन् सब. पुष्टिमार्गीय नहीं हें. कोई

तरहकी कोढ़ हे जो अपनूकुं या तरहसु पराधीन कर रही हें. अपने घरमें बिराजते ठाकुरको अहं सोचो. और यदि तुम्हारेमें वाके अहंके कॉरस्पोन्डिन्ग् अहं हे तो अपने घरके ठाकुरमें सारी वृत्तिएं होनी चहिये. तब तो तुम पुष्टिमार्गीय हो. नहीं तो कुष्ठिमार्गीय. ये एक रहस्य हे. तो काष्णीको जो महाप्रभुजीने खुलासा दियो वो बहोत छोटो खुलासा दियो. **'यदा कृष्णः रोचते तदैव विषयाः न रोचन्ते''**. (वहीं)

(गृहठाकुरकी अहंक्रियाको स्वरूप)

और फिर जो गृहको ठाकुर हें ये तो अपनी थियरीकी बात भयी. घरके ठाकुरमें या थियरीकुं अपन् प्रॅक्टिस्में इम्प्लिमेन्ट् कैसे करेंगे ? वो तो घरके ठाकुरको ईगो अपनूकुं बतायगो. तो वाकुं ध्यानसु समझो के शरणागति = स्वगृह हे. कौनसी जगह तुम शरण होओगे ? **''शरणं गृहरक्षित्रोः''**.(अम.को.३।५।२४-४०) 'शरण'को मतलब हे घर. कौनसु शरण लेनो चाह रहे हो ? कौनसो रक्षक तुम खोज रहे हो ? तुम्हारे यहां जो रक्षक बैठ्यो भयो हे वाकुं तुम खोज नहीं रहे हो और तुम दूसरी एजेन्सीकुं बुला रहे हो. ''दुविधामें दोनों गये माया मिली न राम''.

स्वगृहके बाद जो अपनो निरोध हे वाके कॉरस्पॉन्डिन्ग् हे **''यथालब्धोपचार.''** ठाकुरजीकुं न ज्यादाकी जरूरत हे न कमकी जरूरत हे. तुम्हारे घरमें क्या एवेलेबल् हे, बस उतनो ठाकुरजीकुं तुम करो. ठाकुरजी उतनेमें संतुष्ट हें वो तुम्हारो सच्चो निरोध हे. **''सेवनं स्वयोग्यानुसारेण, न त्वल्पं बहु वा प्रयोजकम्''** (त.दी.नि.का.प्र.२।३१६) अपन् यों नहीं कहें हें के हमकुं सेवा करनी हे तो हम एक ताजमहल लायें. ताजमहल लावेकी क्या जरूरत हे ? तेरे घरमें तो एक तांतीके व्याजपे पालनो चाह रह्यो हे के सेवा करनी चाह रह्यो हे ? ये अपने निरोधको स्वरूप हे.

और अपनो सेवाको स्वरूप तनुवित्तजा हे. क्यों तनुवित्तजा हे ? क्योंके सेवाकी परिभाषामें महाप्रभुजीने स्पष्ट या बातको खुलासा कियो हे. **''तत्सिद्धयै तनुवित्तजा''**. खूबसूरती देखो अपने समर्पणकी के अपन् सिर्फ आत्माको समर्पण नहीं करें हें पर दारा आगार पुत्र आप्त वित्त आत्मा और मेरो जो आत्मीय हे वा सबको समर्पण कर रह्यो हूं. आत्मसमर्पण अपने यहां आत्मीयसमर्पण तक एक्स्टेन्ड् हो रह्यो हे. अपने घरके ठाकुरके लिये सर्वस्वसमर्पणको जो सिद्धान्त हे ये बात सिद्धान्तमुक्तावलीकी विवृत्तिमें श्रीगुंसाईजीने आज्ञा करी हें के **''एतेन भगवदर्थं निरूपधिस्वसर्वस्वनिवेदनपूर्वकं तत्रैव स्वदेहविनियोगे प्रेम्णि जाते सा भवति.''** (सि.मु.विवृति-२) सर्वस्वसमर्पणको सिद्धान्त वहां श्रीगुंसाईजीने समझायो हें.

याके बाद आ रह्यो हे सर्वात्मभाव. पुष्टिके तेहत जो सर्वात्मभाव हे वो अपने घरमें सेवाके प्रोग्राम्में कैसो हे ? अपने ठाकुरमें अपनूकुं सर्वात्मभाव होनो चहिये. **''सर्वोऽपि आत्मनो भावः''**(सुबो.१०।४४।२७) = 'सर्वात्मभाव'. जाको वर्णन महाप्रभुजीने वेणुगीतकी सुबोधिनीमें कियो हे के **''अक्षण्वतां फलं इदं न परं विदामः''** मानें **''इदम् एव इन्द्रियवतां फलं मोक्षोऽपि नान्यथा यथा अंधकारे नियता स्थितिर्नाक्षणोः फलं भवेत्.''** (सुबो.१०।१८।७) ये सर्वात्मभाव होय तो प्रभु अपने हृदयमें बिराजें. ये सर्वात्मभाव नहीं होय तो प्रभु अपने हृदयमें बिराजें ही नहीं. ये जो सर्वात्मभाव हे के अपने भजनीयकुं अपनो सर्वस्व माननो. वाकुं इन्वोक् (जगाने) करवेके लिये इन्वेरियेबली महाप्रभुजी जा बखत ठाकुरजी पधराते तो ये केहके पधरातें के **''मैं तोकों अपनो सर्वस्व पधराय रह्यो हूं. इनकों तु अपनो सर्वस्व करी जानियो''**. या तरीकेको एक मंत्र हतो महाप्रभुजीको. जाको अर्थ हतो के अपने ठाकुरमें अपनूकुं सर्वात्मभाव होनो चहिये और वो जब हो जाय तब अपनी भक्ति कृष्णसेवाके रूपमें प्रकट हो गई और अपनो ये अहंकार अपने मनमेंसु कभी न जाय के ''मैं तेरो सेवक हूं और

तू मेरो स्वामी हे.'' वा तरीकेको अहंकारके स्वस्थ रखवेको पुष्टिमार्गीय एंगल्सु प्रोग्राम् हे जो ब्राह्मिक अहंक्रिया पारमात्मिक अहंक्रिया भागवती अहंक्रिया कार्ष्णी अहंक्रिया और अपने घरके ठाकुरकी अहंक्रिया के कॉरस्पॉन्डिंग् अपनेमें महाप्रभुजी जगानो चाह रहें हें. वो स्टेजवाइज् या तरहसु जगे हे.

(तिरोभावकी प्रक्रिया)

कल अपन् शुद्ध अहंक्रिया कैसे होवे वा बातकुं देख रहे हते और जैसे के आप जानो हो के कोई भी क्रिया जब उत्पन्न होवे वो एकरूपमें समाप्त हो जाय तो दूसरे रूपमें कोई दूसरी क्रियाकुं उत्पन्न करती होवे हे. कोई भी क्रिया ऐसी नहीं हो सके के क्रिया होवे और वासु कछु उत्पन्न नहीं होतो होय. दूसरी क्रिया तो उत्पन्न होवे ही हे. ये अलग बात हे के अपनूकुं जो रिज़ल्ट् चहिये वो आवे के न आवे. जैसे पंखा चले तो अपनो कपड़ा हिले. पंखाकी क्रिया अपने पास आके खतम हो जावे हे पर कपड़ा हिलवेकी क्रिया उत्पन्न होवे हे. ये क्रियासु क्रिया जनरेट् होवे. वा लिये मैंने कल पूरी लिस्ट् दे दी.

यामें ध्यानसु समझवेकी बात ये हे के शुद्ध और मिश्रित को क्लासिफिकेशन् देख रहे हते. शुद्ध उपादानकी क्रियाएं कोई न कोई चीजकुं कम्पाउन्ड् करके और पैदा होवें हें, तभी वो शुद्ध होवें हें. (चार्टके सन्दर्भमें) यामें समझवेकी बात ये हे के ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य याके तिरोभावकी क्रिया शुद्धक्रिया हे. क्योंके महाप्रभुजी पंचरात्रके आधारपे ये बात खुलासा करें हें **''आविर्भावतिरोभावौ शक्ती वै मुरवैरिण:''** (त.दी.नि.२।१४०) वो भगवान्की शक्ति हे. कैसी शक्ति ? कोई न कोई क्रियाजनिका शक्ति हे. शक्ति = शक्यते. किं शक्यते ? जैसे अंग्रेजी ग्रामरमें 'कॅन्' (can) या 'मे' (may) नाउनूकुं नहीं लगके वर्ब्कुं लगे हे. 'आइ कॅन् डु' मतलब करवेकुं शक्तिमान् हूं. आइ कॅन् गो. 'कॅन्'को मतलब शक्ति. शक्ति कोई न कोई क्रियाकी होवे हे. ऐसे आविर्भाव एक शक्ति हे परन्तु कोई न कोई क्रियाकी शक्ति हे.

ऐसे ही तिरोभाव भी एक शक्ति हे और वो भी कोई न

कोई क्रियाकी शक्ति हे. आविर्भाव तिरोभाव की सिम्पल् परिभाषा अपनुकुं करनी होय तो 'भगवान् कॅन् डु इट्' और 'भगवान् कॅन् अनडु इट्'. जाकुं अपन् 'कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथाकर्तुं समर्थ' कहें हें. वो भी मैंने अरविंदोके उदाहरणसु आपकुं बतायो के यदि प्रभु सर्वसमर्थ हें तो वामें असमर्थ होवेको सामर्थ्य भी अपनुकुं स्वीकारनो पड़ेगो, नहीं तो वाके सामर्थ्यमें कोई जातकी कमी हो जायगी.

ये तिरोभावके ऍरो हें. (चार्टके सन्दर्भमें) वहां तक तो वो शुद्ध अहंक्रियाको स्वरूप हे. वाके बाद जो दैन्य दुःख हीनता विषयराग वगेरे हे वो शुद्धको नहीं पर मिश्र एरियाकी बात हे. पर वो वासु(शुद्धसु) जन्य हे. वो कन्टिन्युटीमें मैंने बता दी. यहां तक शुद्ध उपादान और औपादानिक क्रिया की वर्तुलमें बात कही हे.

वाके बाद ये (दैन्य दुःख आदि) ब्रह्मधर्म नहीं हें क्योंके ब्रह्मने अपने गुणधर्मनको तिरोभाव कियो वासु पैदा भये कुछ गुणधर्म हें, जो उपादेयमें हो रहे हे ये सारे गुणधर्म उपादेयात्मक अहंकर्ता या उपादेयात्मक अहंक्रिया में पैदा हो रहें हें. ये षट्गुण ही या चार्टमें उपादानकी अहंक्रियाके अन्तर्गत आती कथा हे और दैन्य दुःख आदि जो क्रियाएं हें वे औपादानिक क्रियाके अन्तर्गत आती कथा नहीं होके उपादानमेंसु उपादेयमें याकुं एक्सपोर्ट करनो हे.

ये मिश्रित कैसे भयी वाके पहले कुछ खुलासाके रूपमें बतानो चाहूंगो. दैन्यसु मद, दुःखसु मात्सर्य, हीनतासु लोभ, जन्मादि विपद्सु मोह, मोहसु क्रोध और विषयरागसु काम पैदा होवें हें. अब अपन् समझ गयें हें के ये कम्पाउन्ड् नहीं हे कॉम्प्लेक्स् उपादेय हे. ये कॉम्प्लेक्सिटी क्या हे? तो देखो ये बहोत सिग्निफिकन्ट् हे के ज्ञान वैराग्य को जो तिरोभाव भयो जाके लिये महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के "**आनन्दांशस्तु पूर्वमेव तिरोहितः येन जीवभावः**". (ब्र.सू.भा.३।२।५)

आनन्दांश पहले तिरोहित हो जाय हे करके आनंदके जो फंक्शन् हें, ऐश्वर्य वीर्य यश श्री ज्ञान वैराग्य वे अपने आप तिरोहित हो जायें वाके प्रेशरके (प्रभाव) तहत. पर ब्राह्मिक अहं तिरोहित नहीं भयो हे. ब्रह्मको प्रकृतिरूप अहं कैसो हे के—

भूमिः आपो अनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
'अहंकार'इति इयं मे भिन्ना प्रकृतिः अष्टधा।।

(भग.गीता.७।४)

जो ब्राह्मिक अहं हे वो तिरोहित नहीं हो रह्यो हे पर ज्ञानादि तिरोहित हो रहें हें.

वा तिरोभावकी प्रक्रियाको समझवेको प्रयास करें के जैसे अपने ह्युमन् ब्रेनमें (मानव बुद्धि) सारी फॅकल्टी अनुभवकी इन्टेक्ट् (अखंड) रहे और सडनली मॅमोरी लॉस् (अकस्मात् यादशक्ति खो जाए) हो जाय तो वाको परिणाम क्या होवे? कोई भी चीजकुं प्रॉपर्ली रॅकग्नाइज् (पहचान) करवेको अपनो पावर् (शक्ति) खतम हो जाय. ऑल्मोस्ट् वा तरहसु कोर्स् स्टार्ट् होवे के जैसे बच्चा गर्भमेंसु निकल्यो और फ्रॅशनर् होवे के हर चीजकुं वो एकदम विस्मित होके देखे के ये क्या! ये क्या! ये क्या! और सारे नये इन्पुट्के कार्यक्रममें फिरसु वाकुं जाननो पड़े क्योंके मॅमरी लॉस् हो गयो.

(चेतनाको प्रथम आयाम अहंता-ममता और अहंताको रोल्)

बहोत सारे दार्शनिक लोग हो-हल्ला मचा रहें हें के अनुभव वर्तमानकालको विषय हे. मैंने भी आपकुं बतायी हती के स्मृति भूतकालको विषय हे और इच्छा आशा ये सब भविष्यकालके विषय हे. सो अपनी चेतना या तरहसु श्री डायमेन्शनल् चेतना हे. पर दरअसल एक बात ध्यानसु समझो के कोई स्मृति ऐसी नहीं होयगी के जा स्मृतिमें कोई आशा और कोई अनुभूति छूपी भयी नहीं

होय! और अपनी लाईफ्में कोई आशा ऐसी नहीं हो सके हे के जा आशा या आकांक्षा में स्मृति और अनुभव छुपे भये नहीं होंय, नॉट् पॉसिबल्, सिम्प्ली नॉट् पॉसिबल्.

जैसे एक छोटीसी बात आपकुं बताउं के ये नेपकिन् हे, ये आपकुं अनुभूति हो रही हे. आप समझ रहे हो के हमकुं अनुभूति हो रही हे. पर अनुभूति हो रही हे वो कितनी? याको सफेद रंग याको चौरस आकार. पर सचमुचमें वो भी अनुभूति शुद्ध नहीं हे क्योंके सफेद रंग हे ये पाछो आपने पहले अनुभव कर रख्यो होय पहले के सफेद ऐसो होय तो आपकुं ये सफेद रंग समझमें आयेगो. नहीं तो बच्चाकी तरह याकुं देखोगे के ये क्या हे? और चोरसको कन्सेप्ट् आपके माइन्ड्में होय तो आपकुं चोरस समझमें आयगो. 'नॅपकिन्' नाम भी जाकुं अंग्रेज़ी नहीं आती होय वाकुं समझमें नहीं आयगो. वाकुं रुमाल समझमें आयगो. अपने यहां कोई शब्द नहीं हे नॅपकिन्के लिये पर 'हस्तमुखप्रक्षालनवस्त्रखंड' कहे तो केह सकें. पर वो नेपकिन् शब्दसु बहोत बड़ो हो गयो के जाकुं समझवेमें फिर पाछी न जाने कितनी स्मृतिन्में गोता लगानो पड़ेगो के हस्त-मुख-प्रक्षालन-वस्त्र-खंड बहोत गंभीर घटना हो जायगी! तो या तरहसु अपन् जाकुं अनुभूति समझ रहें हें वा अनुभूतिमें भी देखो के स्मृतिको कितनो रोल् हे!

जब भी इन्फॉर्मेशन् आपने रिटेन् करी तब रिटेन् करवेमें कोई न कोई आपकुं उपादेयता लगी होयगी. अपने ब्रेइन्की या बुद्धिकी इतनी गज़बकी व्यवस्था हे. न जाने कितनी अगणित वस्तु अपन् दिनमें देखें हें. सब इन्फॉर्मेशन् यदि अपन् माइन्ड्में रखें तो पागल हो जायेंगे. अपनो ब्रेइन् या बातकुं बराबर सॉर्ट्आउट् करतो रहे के कौनसी अनुभूति भयी वाकुं स्टोर् करनी हे और कौनसी नहीं करनी हे; कौनसो एस्एम्एस् आयो वाकुं फोल्डर्में डालनो हे और कौनसो

एस्एम्एस् आयो वाकुं डिलीट् करनो हे ये अपनो मोबाइल् बराबर जाने हे. मोबाइल्में तो अपन्कुं डिलीट् बटन् दबानो पड़ें हें. या फिर एक सर्टेन् नम्बर्के बाद वो ऑटोमेटिकली डिलीट् होवे हे. ब्रेइन्में तो चट मंगनी पट ब्याह. वाही बखत डिसाइड् हो जाय के याकुं रखनो हे के हटानो हे. और रखवे और हटावे को मुख्य क्राइटेरिया (मापदन्ड) तुम्हारो इन्ट्रेस्ट् हे. तुम्हारो ब्रेइन् वाकुं रिटेन् करे के अच्छा 'रिटेन् इट्', माय् फोल्डर्में डालो याकुं.

और तुम्हारो लॅक् ऑफ् इन्ट्रेस्ट् होय तो रिटेन् नहीं करें. जैसे आज जो लोग जहां-जहांसु आये हो, वहां कितनी शकल तुमने देखीं, अभी मैं पूछ लउं के चलो बताओ? बता पाओगे? क्यों नहीं बता पाओगे? इन्ट्रेस्ट् नहीं हे. अनुभूति नहीं भयी यों तो नहीं केह सको. जब तुम ट्रेन्में या बसमें आये तब सबकुं कौन रिटेन् करेगो! क्यों रिटेन् करेगो! पर जहां इन्ट्रेस्ट् आयो वहां आते ही वो स्विच् दब जाय हे के स्टोर् इट् इन् माय् फोल्डर्, तो जाकुं अपन् स्मृति केह रहें हें वामें भी अहंताको रोल् हे.

वाके बाद जब अपन् अनुभूतिपे आ रहें हें तो अपन्ने ऑल्रेडी देख्यो के वो अहंता स्मृतिके भी पीछे प्रॉक्सी तो दे ही रही हे. जब तुम कोई चीजको अनुभव कर रहे हो, टु दि एक्सटेन्ट् के रिकग्निशन्के लेवल् तक तो पाछी अहंता प्रॉक्सी देगी. रिकग्नाइज़् क्यों करोगे, क्योंके तुमने पहले वाकुं जान्यो हे, देख्यो हे. 'कग्नाइज़्' मानें जाननो. 'रि-कग्नाइज़्' मानें जाको पहले अनुभव कर्यो होय वाको फिरसु अनुभव करनो. मतलब सीधीसी बात ये आ गई के एक बखत तुमने अनुभव कियो हे और तुम्हारो मन खुद या बातकी गवाही दे रह्यो हे के हम याको फिरसु अनुभव कर रहें हें. "हां हां देखी भयी चीज हे. हम जानें हें के ये नेपकिन् हे" दॅट् मीन्स् के तुम्हारो कोई न कोई इन्ट्रेस्ट् हे यामें. फिर भविष्यमें कोई

न कोई एक्स्पॅक्टेशन् या आशा या कामना हे वाके लिये सॉर्टिंग् कौन करेगो के मेरे लायक अनुभूति भयी के नहीं? मेरे लायक अनुभूति भयी तो माय् फोल्डर्में जायगी, नहीं तो नहीं जायगी. कॉम्प्युटर्में जैसे रिसायकल्बिन् होवे वैसे रिसायकल् डस्ट्बिन्में चली जायेगी. अभी तो जावे दो कचराकुं, फिर इन्ट्रेस्ट्की प्रोसेस्सु आयेगी तब देखेंगे.

(चेतनाको स्वरूप)

या तरहसु अपनो मेन्टल् कोर्स् गवर्न् हो रह्यो हे वामें अपनकुं अहंको ज्ञान तिरोहित हो गयो हे. और अपनी जो चेतना हे वो एकदम फ्रॅशनर्की तरह अहंकुं खाली एक्स्पीरियन्स् (अनुभूति) कर रही हे. वा एक्स्पिरियन्सके साथ जब भी अपन् अहंको अनुभव करें हें, तब अहंके विसा-विस् जो नाहं हे जो मोकुं दिखलाई दे रह्यो हे, जो मेरे आसपास हे वाकुं अपन् एज् ए विषय देखें हें के ये विषय हे (नाहं). मैं अहं हूं. या ही लिये संस्कृत भाषामें अहंकुं 'विषयी' कह्यो जाय हे. 'विषय' शब्दको संस्कृतमें बहोत अच्छो अर्थ हे. ''सिनोति बध्नाति इति षयः'' ''विशेषेण सिनोति बध्नाति इति विषयः''. जो तुम्हारी चेतनाकुं या अवेर्नेस्सुकुं कोई तरहसु कॅप्चर् करे, बांधके रखे हे, फोर् लॉंगर् पिरियड् या फोर् एड्हॉक् रीज़न्. कौनसी तुम्हारी चेतना? जो 'मैं'कुं प्रकाशित कर रही हे वा चेतनाकुं जो कोई कारणसु बांधके रखे वो बांधके रखवेवाली वस्तुकुं अपन् 'विषय' कहें हें. अब वो आंखकुं बांधके रखे तो आंखको विषय हे. कानकुं बांधके रखे तो कानको विषय हे. जीभकुं बांधके रखे तो जीभको विषय हे. अक्कलकुं बांधके रखे तो अक्कलको विषय हे. स्मृतिकुं बांधके रखे तो स्मृतिको विषय हे. आकांक्षा या एक्स्पॅक्टेशन् कुं बांधके रखे तो वाको विषय हे एज् पर् केस्.

अब कहां विषय तुमकुं बांधके रखे हे ये जब प्रश्न उठेगो,

क्योंके तुमकुं वैराग्य तो हे नहीं. फ्रॅशनर् हो तुम! आनंदके तिरोधानसु ज्ञान और वैराग्य गयो. अपनी चेतना एकदम फ्रॅश् हो गई. कैसी? जैसे अपन् या बोईकुं डस्टरसु पोंछ दें. अब जो लिखनो होय सो लिखो पाछो. कछु लिख्यो भयो होयगो तो ये बोई रॅजिस्ट् करेगो, जो लिखोगे वामें अक्षर आड़े आयेंगे. अभी जैसे मैं कछु या बॉर्डपे लिखुं तो वो अक्षर आड़े आयेंगे, लिख नहीं पाऊंगो. पर पोंछ दियो तो फिर पाछो तैयार हे जो लिखनो होय वो लिखो.

या तरहसु अपनी चेतनामेंसु ज्ञान और वैराग्य पोंछ जावेके कारण अपनी चेतना फ्रॅशनर् हो जाय. बोल-चालकी भाषामें 'ज्ञान' मतलब कौनमें पैदा भयो ज्ञान और कौनको ज्ञान? या ज्ञानकुं अपन् 'अंडरस्टॅन्डिंग् या बोध' कहेंगे. ये सकर्मक होवे हे. पर जो चेतना हे वो कोईको ज्ञान नहीं हे और कोईके बारेमें ज्ञान नहीं हे. 'चेतना'को मतलब हे सिर्फ सॅन्सिटिविटी. सॅन्सिटिविटी और सॅन्सेशन् में कितनो फर्क हे?

जैसे एयरपोर्टपे ज्वेलरीकी दुकान होवे. उनमें दरवाजापे सॅन्सर् लगे भये होवें के कोई भी आवे तो खुले. कोई भी जावे तो बंद हो जाय. वामें हर वखत सॅन्सेशन् नहीं होवे हे, सॅन्सिटिविटी होवे खाली. जैसे ही कोई आवे तब वाकुं सॅन्सेशन् होवे. तो वा सॅन्सेशन्में जो इन्फॉर्मेशन् रजिस्टर् भयी वो पाछी स्टोर् होवे अथवा कहीं जाके कोईके मॉनिटरपे प्रकट होवे. या जो भी व्यवस्था होय वहां प्रकट होवे और नहीं तो वो पाछी उड़ जाय. विषय गयो नहीं और पाछी सॅन्सिटिविटी रेह जाय, सॅन्सेशन् नहीं रेह जाय. चेतना बेज़िकली ज्ञान नहीं हे पर ज्ञानके लायक एक तरहकी तैयारी हे.

जैसे रेस् होवे तो बच्चाएं सब यों (दौड़की मुद्रामें) खड़े

रहें, सीटी बजते ही दौड़नो शुरु करें. या तरहसु ज्ञानको फंक्शन् हे वाकी एक तरहकी एलर्ट्नेस् हे के कोई भी विषय आयो और सॅन्सेशन्के रूपमें डॅवलप् होयगो. चेतना सॅन्सेशन् (संवेदना/ज्ञान/अनुभव) नहीं हे, सॅन्सिटिविटी (संवेदनशीलता) हे. ये एक थोड़ो सटल् डिफरेन्स् हे. चेतनामें क्योंके ज्ञान तिरोहित हो गयो करके अपनी जीवचेतना हे वो सॅन्सिटिव् रेह गई हे.

(चेतना अहं विषय को पारस्परिक प्रभाव)

अब वाके सामने सबसु पहलो विषय आवे हे अहं. तो अहं वा चेतनाको पहलो सॅन्सेशन् होवे. अहंके सॅन्सेशन्के भरोसे अब वो चेतना क्या करे के अच्छा ये 'मैं' तो मेरे सराउन्डिंग् क्या? ऐसे जब अपनेसु कॉन्ट्रास्ट्में वो विषयको सॅन्सेशन् पैदा करे हे तब जाके अहं अपनो कन्फर्म् हो जाय. ये कन्फर्मेशन्को रोल् बहोत महत्त्वपूर्ण हे! या बातकुं ध्यानसु समझियो के अपनो अहं अन्कन्फर्मड् ही होवे हे, जब तक कोई विषयके साथ एन्काउन्टर्में अपनी चेतना उलझ नहीं रही हे. जैसे ही विषयके साथ अपनो एन्काउन्टर् भयो फर्स्ट् ऑफ् ऑल् अपनो अहं कन्फर्म् होवे और अहं कन्फर्म् होवेके बाद विषयकुं कन्फर्म् करे. प्रोसेस् ध्यानसु समझो के चेतना वो सॅन्सिटिविटी, सॅन्सिटिविटीके बाद वाके सामने अहं आयो. वो समझ लो के जवेरीको दरवाजा जामें अहं नामको पर्सन् एन्टर् भयो. एन्टर् होते ही अपनी चेतना दरवाजाके उपर लगे भये सॅन्सर्की तरह सबसु पहले अहंकुं रजिस्टर् करे के आयो अहं. पर वो आयो भयो अहं कन्फर्म् तभी होवे जब विषयको सॅन्सेशन् होवे. तब वो अहं कन्फर्म् होवे. अहं मानें 'मैं'. अहंकी खूबसूरती देखो. अहं सॅल्फ्रिफ्लेक्टिव् होवे हे और जब विषय आवे हे तब अहं कन्फर्म् होवे के "अच्छा मोकुं विषय दीख रह्यो हे". 'सॅन्सिटिविटी' मानें एक तरहकी पोटेन्शियालिटी हे, एक्च्युआलिटी नहीं हे.

जैसे छोटे बच्चामें आगे जाके बड़े होवेकी, बुद्धिमान् होवेकी, बिज़नेस्मॅन् होवेकी वगेरे कई तरहकी पोटेन्शियालिटी होयेंगी. पर एक्च्युअली वो बच्चा वा बखत वो सब (बुद्धिमान् विगेरे) नहीं हे. तो सॅन्सिटिविटी, सॅन्सेशन्की पोटेन्शियालिटी हे और वो पोटेन्शियालिटी एक्च्युअलाइज् (कार्यान्वित) हो जाय हे जा बखत सॅन्सेशन् होवे हे. पर सॅन्सेशन् अपने आप तो हो नहीं सके. सॅन्सेशन् ऑल्वेज् डिमान्ड्स् सम् सॅन्सा, सम् ऑब्जेक्ट्. (वस्तु/पदार्थ) बिना ऑब्जेक्ट्के तो वो सॅन्सेशन् होयगो नहीं. सॅन्सिटिविटी तो चेतनामें हे, सब्जेक्टिव् (व्यक्तिपरक या आत्मगत) हे; पर सॅन्सेशन्में तभी डॅवलप् होयगी जब सामने कोई ऑब्जेक्ट् आवे. तो वो अपनी सॅन्सिटिविटीके सामने सबसु पहलो ऑब्जेक्ट् अहंको प्रोवाइड् हो रह्यो हे. जब अहं प्रोवाइड् भयो तो सबसु पहलो सॅन्सेशन् चेतनाकुं क्या होवे? 'अहं'. वो शुद्धअहंकर्ताकी बात याद करो. **"सो अनुवीक्ष्य न अन्यद् आत्मनः अपश्यत्, सो 'अहम् अस्मि' इति अग्रे व्याहरत्, ततः 'अहं' नाम अभवत्"** (बृह.उप.१।४।१) और अहंके सॅन्सेशन्के बाद विषय वाकुं बांधे हे करके वो अहं कन्फर्म् होवे हे के यु आर् अहं. तुम अहं हो पर विषय अहं नहीं हे. वो विषयपेसु सॅल्फ्में रिफ्लॅक्ट् होके अहंकुं कन्फर्म् करे और तब तुम विषयकुं कन्फर्म् करो हो के अच्छा विषय मोकुं दीख रह्यो हे. ये अपने अनुभवकी प्रोसेस् हे क्योंके जब तक तुमकुं विषय नहीं दिख्यो तब तक अहं तुम्हारो कन्फर्म् नहीं होवे हे.

बहोत छोटो बच्चा, जन्म्यो भयो होवे, वाकुं अहं होवे हे पर कन्फर्म् नहीं होवे हे. वो तो निरंतर माँ वाकुं दूध पिवावे, माँ वाकी केअर् ले तब अपने अहंसु अलग माँ वाकुं दीखनी शुरु होवे के जब मेरी कोई तकलीफ हे, जो मेरी आकांक्षायें हे, जो मेरी रिक्वायरमेन्ट् हे, वो या विषयसु फुल्फिल् हो रही हे. तब वाकुं सडन्ली क्लिक् (अचानक समझमें आनो) होवे हे के जो

मेरी रिक्वायरमेन्ट् हे, भूखकी या नींद आवेकी या सुसु हो गई तो वाकुं जो त्रास होवे फिज़िकली (शारीरिक) उन सब त्रासन्मेंसु कम्फर्ट् माँ ही दे रही हे. तो माँ एज् ए विषय वा बखत वाकुं सॅन्सेशन् होवे हे. पर जन्म्यो बच्चा माँकुं पहचानतो नहीं होवे, अच्छो खासो टाइम् ले हे माँकुं पहचानवेमें, बाप तो सब बादकी कथा हे. उतनो टाइम् लेके और वो अपने अहंकुं जा दिन कन्फर्म् कर ले के 'मैं और मेरी माँ', फिर बुद्धिको सारो व्यापार शुरु हो जाय. तब तक व्यापार शुरु नहीं होवे. तो एज् एन् ऑब्जेक्ट् पहले 'माँ' कन्फर्म् होयगी वाके विसा-विस् पहले वाकुं अपनो 'अहं' कन्फर्म् होवे के मैं कछु हूं और मेरी जो रिक्वायरमेन्ट् हे वो मेंरेसु फुल्फिल् नहीं होके मेंरे अलावा कोई और चीजसु फुल्फिल् हो रही हे. ये निरंतर वाकुं जा बखत अनुभव या सॅन्सेशन् होतो रहे फिर धीरे-धीरे वो अपने 'अहं'कुं कन्फर्म् करे के अच्छा 'मैं' मानें ये. और कई सारी तकलीफें जो मोकुं होवें टाइम् टु टाइम्, वो मेंरेसु दूर नहीं हो रही हे पर या विषयसु दूर हो रही हे.

सायकॉलॉजीमें यहां तक प्रयोग किये गये हे के जनमते बच्चाकुं डॉल् (गुड़िया) दे दी गई और डॉल् देवेके बाद वाकी जो भी तकलीफें हें वो दूर करी गई. तो बच्चान्कुं डॉल्सु सारी तकलीफें दूर हो रही हें ऐसो भाव जग्यो. याको रशियन् सायकॉलोजिस्ट् पावलोको बहोत पॉप्युलर् एक्स्पेरिमेन्ट् हे के वो जब भी कुत्ताकुं ब्रेड् देतो हतो तो घंटी बजाके देतो. कुत्ताकुं ये भाव जग गयो के घंटी बजी मानें रोटी आयगी. तो रोटीमें जो लार टपकती वो घंटीके कारण टपकवे लग गई.

वो अहंको सॅन्सेशन् हे, वाके कारण विषयको सॅन्सेशन्, विषयके कारण अहंको कन्फर्मेशन्, अहंके कन्फर्म् होवेके बाद विषयको कन्फर्म् होनो ये सारी प्रोसेस् हे. विषयको और अहंको ये म्युच्युअल् कन्फर्मेशन्

हे. याही लिये संस्कृतमें अहंकुं 'विषयी' कह्यो जाय हे. जैसे ''ज्ञानम् अस्य अस्ति इति 'ज्ञानी' ''. ''धनम् अस्य अस्ति इति 'धनी' ''. ''मानम् अस्य अस्ति इति 'मानी' ''. ऐसे ''विषयः अस्या अस्ति इति 'विषयी' ''. जाकुं विषय होय वाकुं 'विषयी' कह्यो जाय. तो अहं विषयी हे और अहंको सारो विषय जगत्में निरंतर उलझतो और सुलझतो रहे हे. अपनो अहं उलझे भी हे क्योंके ''विशेषेण सिनोति बध्नाति इति 'विषय' ''.

बच्चान्पे सायकोलॉजिस्टन्ने प्रयोग करके बहोत अच्छे रिज़ल्ट् वाके दिये हे के बच्चा जनमवेके बाद किन चीजन्कुं विषय तरीके ट्रीट् करे हे? तुमने देख्यो होयगो के बच्चाकी घोड़ीपे घुमतो भयो रंगवालो कुछ टीन्-टीन् बजतो खिलौना लगा दे. वो सब क्या हे? ध्यानसु देखो, वो बच्चाके अहंकुं कन्फर्म् करे हे. और बच्चा जब वाकुं लपकनो चाहे हे तो बच्चाकुं एक्च्युअली इतनी सॅन्स् (समझ) नहीं होवे हे के वो मेंरे हाथमें आयगो. पर कोई भी पलनामें सोतो बच्चा ऐसे ऐसे (बच्चाकी हाथ हिलावेकी मुद्रा दिखातें भयें) हाथ करतो रहेगो. वाकुं पता नहीं होय के ऐसे हाथ करवेसु आयगो. पर धीरे-धीरे या तरफ वाको हाथ बढ़े और वा तरफ कोई विषयको होनो वाकुं रिलेशन् लगे हे के ''अच्छा ये मेंरे पास नहीं होके मेंरो हाथ जहां हे वहां ये विषय हें''. और भूले-चूके वो वाके हाथमें आ जाय तो फिर बच्चा निरन्तर वो ट्रायल्-एरर् मॅथड्सु वाकुं एज् ए विषय ट्रीट् करके, बजवेकी चीज होय तो बजातो रहेगो, देखवेकी चीज होयतो देखते रहेगो, घूमती होयगी तो घूमातो रहेगो. या तरहसु वाके अहंकुं कन्फर्म् करवेकी प्रोसेस् हे. या ही लिये अक्सर बच्चान्कुं नीचे सुवाके और ऊपर पंखा चला दो. फिर बच्चाकुं योगीन्के जैसी देखवेकी एक सिद्धि हो जाय के चल क्यों रह्यो हे? ये क्या बला हे जो चल रही हे?

क्योंके स्थिर वस्तुके बजाय आंखकुं चलती वस्तु ज्यादा कॅप्चर् करती होवे हे. बच्चाके सामने सब चीज स्थिर रखो तो बच्चाकी आंखकुं ॲक्साइट्मेन्ट् नहीं होयगो क्योंके वो ॲक्सेप्ट् कर लेगो के मेरी चेतनामें इतनो बॅक्ग्राउन्ड् तो हे ही. पर अचानक हिलती कोई चीज दीखे तो फिर बच्चाकी वापे दृष्टि जावे के लफड़ा क्या हे? कोई सोर्ससु लाइट् आवे तो वा तरफ बच्चा देखे. सोये भये बच्चाके सामने दूसरी दिशामें लाइट् करो बच्चा तुरत यों करेगो (आंखपें हाथ धरेगो). ये सब क्या चक्कर हे? वो विषय वाके अहंकुं कन्फर्म् करवेके लिये या प्रोसेस्में बच्चा उलझतो होवे हे. या प्रोसेस्में वो अपने अहंकुं कन्फर्म् करतो चल्यो जाय.

(ममताकी प्रक्रिया और ममताको ब्राह्मिकरूप)

जा दिन वाको अहं परफॅक्ट्ली कन्फर्म्ड् हो जाय तब फिर वो विषयकुं कन्फर्म् करे के मेरे अहंके विसा-विस् ये विषय क्या हे? विषय और अहं दोनों कन्फर्म् हो गयें वा कन्फर्मेशन्के चक्करमें वो विषय ममता बन जाय. जैसे वा दिन मैंने आपकुं कही (ऑफिसरने मोकुं कह्यो) "ये सही नहीं चलेगी." "क्यों नहीं चलेगी?" "नहीं चलेगी" (हिलाते भये हाथ मेरे साथ आये, पांचसौ रूपयाकी निशानी पांच अंगुली दिखाते पूछ्यो) "क्या बात हे? क्यों नहीं चलेगी?" वाने कही "अच्छा चलेगी, लाव." तो ऐसे कोई विषय वाकुं इशारा कर दे के क्यों नहीं चलेगी? क्यों नहीं चलेगी? वो कहे के अच्छा चलेगी. वो विषय ममता बन जाय. कोई विषय वाकुं ललचा दे. क्यों नहीं चलेगी? वो समझे के यार कुछ लफड़ा हे यामें. अपने अहंके विसा-विस् ममताकी तरह वाकुं कन्फर्म करे.

अक्सर देखों, बच्चान्के साथ बहोत तेज लाइट्, बहोत लाउड् साउन्ड्, बहोत कोई सडन् ॲक्स्पीरिअन्स्, बच्चाकुं घभरा देतो होवे हे. धीमीसी लाइट् धीमोसो साउन्ड्, प्रेज्युअल् ॲक्स्पीरिअन्स् बच्चाकुं

विषय तरीके ॲक्सेप्ट् करवेमें अनुकूल (सुटेबल्) होवे हे. याही लिये एक बात आप देखो. वैसो हेंग् ओवर् बड़ेनकुं भी रेह जाय और कई बार मोकुं भी होवे हे. पर बच्चान्की खास ये प्रॉब्लेम् हे. हम तो बालक हें तो स्वाभाविक कथा हे! पर कारमें बैठायो नहीं और बच्चाकुं आनन्द आ जाय. कारण क्या? क्योंके विषय इतनो फास्ट् जावे जितनो फास्ट् देखवेके लिये बच्चाकी आंख और दिमाग तैयार नहीं होवे और इतनो फास्ट् विषय जाय तो बच्चाको दिमाग पहले थक जाय करके आंखकुं मींच दे. जैसे प्रवचनमें आप लोगन्की आंख मींच जाय विषय फास्ट् होवे पे.

ये वाको मूल रहस्य हे के विषयकुं उतनो फास्ट् रिसीव् करवेके लिये अपनी तैयारी नहीं होवे. अपनी अंडर्स्टेन्डिंग्की प्रणाली हे वा प्रणालीके तहेत अपनेकुं विषयमें ममता जगे. वो विषयकी ममता अपने अहंकुं और कन्सोलिडेट् (घनीभाव) करे. ये कन्सोलिडेशन्में विषयकी ममताके बजाय विषयकाम पैदा हो जाय. क्योंके वो कन्सोलिडेशन् भयो हे वा बखत अपनी अहंता अपनेकुं क्लियर्कट् ये मॅसेज् देनो शुरु करे के ये विषय जो मेरे इर्द-गीर्द हे वामें ये मोकुं चहिये हे क्योंके ये मोकुं कम्फर्ट् प्रोवाइड् करे हे. ये मोकुं डिस्कम्फर्ट् प्रोवाइड् करे हे वो मोकुं नहीं चहिये हे. जो विषय नहीं चहिये वा विषयपे वाकुं क्रोध आने लग जाय. जो वाके अहंकुं अनुकूल नहीं करतो होय, वाकी ममताकुं सेटिस्फाय् नहीं करतो होय वा विषयपे वाकुं क्रोध आनो शुरु होवे. या लिये भगवान् गीतामें आज्ञा करें हें **"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणम्"** (भग.गीता.३।३७)

देखो अहंता और ममता में, ममता बहोत बड़ो ब्राह्मिक फिनोमिना हे. ममताकुं आविद्यक फिनोमिना मत समझियो. ये यहां इन्सिडेन्ट्ली जैसे अहं वहांसु कॅरिऑन् हो रह्यो हे, जैसे चोपड़ामें गये बरसके

खाताकी कोई आइटम् या फिगर् कॅरिफोर्वड् होवे ऐसे उपादानसु ही अपनी आत्मरति कॅरिफोर्वड् होके उपादेयमें ममता बन रही हे. मूलमें वो आत्मरति हे जो ब्राह्मिक अंश हे या बातकुं मत भूलियो. वो उपादानके बरसमें आत्मरति हे. पर उपादेय अहंकर्तामें वो कॅरिफोर्वड् होके ममता बन जा रही हे. और वो इन्सिडेन्ट्ली विषयके साथ इन्टरेक्शन्में इन्वोल्व् हो रही हे करके ममता बन रही हे. वो तो ब्राह्मिक हे. वो लोग मूर्ख हे जो लोग ममताकुं गाली दें हें. क्यों? शुद्ध उपादानी ममता तो भगवान्की आत्मरतिकी अभिव्यक्ति हे. निर्मम तो राक्षस ही हो सके. ॲक्च्युअली तो सचमुच कोई राक्षस, खूँखारमें खूँखार आदमी भी टोटली निर्मम हो नहीं सके हे. यदि कोई प्राणी हे तो निर्मम हो नहीं सके. इतनी बात हे के वाकी ममतामें चॉइस्की कुछ आइटम् कम होयेगी कुछ आइटम् ज्यादा होयेगी. फर्क इतनो ही पड़े हे. जाकुं अपन् निर्मम समझें वो निर्मम या अर्थमें हे के अपनी ममताके आइटम्में जितने अपन् ॲन्युमरेट् करें हें वामें अपनेकुं कम लगें तो अपन् वाकुं निर्मम समझें हें; वस्तुतः ममतारहित होनो थिओरिटिकली पॉसिबल् नहीं हे. जब तक जीव **''स्वरूपस्थो यदा जीवः कृतार्थः स निगद्यते''** (बा.बो.७) वहां न जावे तब तक ममता तो पीछा नहीं छोड़ेगी. छोड़ेगी तो अहंता पीछा छोड़ेगी. पर ममता तो पीछा वहां भी नहीं छोड़ेगी ये अपनो सिद्धान्त हे.

(चेतनाको दूसरो आयाम काम-क्रोध)

सो ध्यानसु समझो के काम और क्रोध हें ये मुख्य हे. जितनो विस्तार हे ये काम और क्रोध के अलग-अलग डिग्रीके इन्टॅन्सिफिकेशन् (तीव्रता) हे. कामको इन्टॅन्सिफिकेशन् लोभ हे. लोभको इन्टॅन्सिफिकेशन् मोह हे. मोहको इन्टॅन्सिफिकेशन् मद हे. तो मूलमें वृत्ति इन्टॅन्सिफाय् होवे हे. या लिये भगवान्ने गीतामें षड्गुण नहीं गिनायें हें पर **''काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह**

वैरिणम्'' (वहीं) ऐसो कह्यो. अपनी चेतनामें उभरते भये दो डायमेन्शन् हें. पहलो डायमेन्शन् अपनी चेतनामें आवे हे अहंता-ममताको. दूसरो डायमेन्शन् आवे काम और क्रोध को. और काम और क्रोध के फिर डिफरन्ट् लेवल्के इन्टॅन्सिफिकेशन् हे. वो मद मात्सर्य लोभ और मोह हे. और जैसे-जैसे इन्टॅन्सिफाय् होती जाय वा तरेहसु अहंताको भी इन्टॅन्सिफिकेशन् होतो जाय. पहले अहंको मोह क्रोधमें इन्टॅन्सिफाय् भयो, वो जा बखत मदमें इन्टॅन्सिफाय् हो जायेगो और अहं जबरदस्त बोलेगो. ऐसे ही ममता इन्टॅन्सिफाय् होके काम बनी और काम जा बखत इन्टॅन्सिफाय् होवे तो लोभ हो जावे हे. मैंने कल याही लिये आपकुं चीताको और शेरको उदाहरण दियो हतो के चीता और शेर को बेज़िक डिफरन्स् ये हे के काम दोनोंको कॉमन् हें. पर वामें सेल्फ् कॉन्फिडन्स् नहीं होवेके कारण चीताको जो काम हे वो लोभ बन जाय और शेरको जो काम हे वो काम तक ही रहे हे. लोभ तक नहीं जाय हे. ये चोपगे चीताकी और शेरकी कथा हे ऐसे दोपगे चीता और शेर की कथा भी ये ही हे!

जा बखत काम इन्टॅन्सिफाय् होवे हे वा बखत वो लोभ बने हे. वाको इन्टॅन्सिफीकेशन् घटा दोगे तो काम रेह जायगो. ऐसे ही लोभ और इन्टॅन्सिफाय् भयो तो एकदम नॅगेटीव् वेमें (अधोगामी) मात्सर्यके रूपमें प्रकट होयगो और उतनो इन्टॅन्सिफाय् नहीं भयो तो वो लोभके रूपमें रहेगो. मोकुं चहिये हे पर दूसरेके पास हे वामें मोकुं जेलसी (ईर्षा) नहीं हो रही हे. 'लोभ'को मतलब के जो मेरे पास हे वाकुं मैं पूरो भोगनो चाहु हुं. पूरी तरहसु रॅलिश् करनो चाहु हुं. वाको संग्रह भी करनो चाहु हुं. पर दूसरेके पास हे वामें मोकुं कोई प्रॉब्लेम् नहीं हे.

पर फिर ये मुकाम आ जाय के जो मोकुं चहिये हे वो दूसरेके पास नहीं होनो चहिये. मेरे पास ही होनो चहिये. ये जा

बखत मनमें जग्यो वो मात्सर्यकुं पैदा करे. और ऐसे हि क्रोधसु पहले पैदा मोह होवे. मोह क्यों बने क्रोध? जो चीज नहीं पसंद हे वापे क्रोध आयेगो ही ये स्वाभाविक कथा हे. उतनी अस्वाभाविक कथा नहीं हे. मानें ज्ञानीनूके लिये और बड़े-बड़े संत-महंतनूके लिये काम-क्रोध अस्वाभाविक कथा हो सके. पर एक कॉमन् आदमीके लिये काम-क्रोध कोई अस्वाभाविक कथा नहीं हे स्वाभाविक कथा हे. बल्कि सर्टन् ॲक्स्टेन्ड् सायकॉलॉजी यहां तक कहे हे के काम-क्रोधसु वर्जित बच्चा हे वो हेल्धी चाइल्ड् नहीं हे. सायकॉलॉजीकली अनहेल्धी चाइल्ड् हे. वामें कुछ न कुछ काम क्रोध होनो चहिये क्योंके एक ॲवरेज् पर्सन् होनेके लिये काम-क्रोध अपनो बहोत बड़ो ड़ायनेमिक् फोर्स् हे. क्यों डायनेमिक् फोर्स हे वाकुं ध्यानसु समझो क्योंके अपने बचपनमें अपनेमें विवेक नहीं हे सद्-असद्को शुभ-अशुभको हित-अहितको. तब तक ये काम और क्रोध डेन्जरस् भी हो सकें हें. पर जा बखत तुमकुं विवेक आ गयो के शुभ क्या हे? अशुभ क्या हे? हित क्या हे? अहित क्या हे? सत् क्या हे? असत् क्या हे? सच क्या हे? जूठ क्या हे? वा बखत ये काम-क्रोध तुम्हारे पर्सनालिटीके डॅवलप्मेन्ट्के फाउन्डेशन् बनेंगे. क्योंके यदि तुम असदसु क्रोध नहीं करोगे, यदि तुम अशुभसु क्रोध नहीं कर रहे हो, यदि तुम शुभकुं सत्कुं सुंदरकुं नहीं चाह रहे हो, कामना नहीं कर रहे हो तो तुम्हारी पर्सनालिटी डॅवलप् नहीं होयेगी.

ये प्रवचनकार जा तरेहसु काम-क्रोधकी धोका लेके धुलाई करतें होवें, ॲवरेज् पर्सनूके लिये काम-क्रोध उतनी खतरनाक बात नही हें. जाको प्रोग्राम् ही मुक्त होवेको हे वाके लिये डॅफिनेटली ये खराब बात हे. पर जाको दुनियामें मुक्त होवेको प्रोग्राम् नहीं हे; जिनेको प्रोग्राम् हे वाके लिये काम-क्रोध अपने भीतर बड़ी वाइटल् (महत्वपूर्ण) फोर्स् हे. इतनी बड़ी जबरदस्त बेटरी भगवानूकी हे. सचमुचमें तो अपनी पुष्टिभक्ति हे. 'पुष्टिभक्ति'को मतलब क्या?

पुष्टिसु पैदा होती भक्ति. भगवान्की जीवात्मापे कृपा. भगवान्की करी गई बड़ी भारी ये एक क्रिया हे जाके कारण अपनूकुं क्रोध और काम आ रह्यों हें. यदि काम-क्रोधसु अपन् वंचित हो गये तो सत्यानाश हो गयो अपनो. क्यों? क्योंके अशुभसु असत्सु अहितसु अपनो क्रोध आनो बंध हो जायेगो. क्रोध आनो बंध हो गयो मतलब विवेक जग्यो तो फायदा नहीं होयगो. सद्-असद् विवेक जग्यो तो भी फायदा नहीं होयगो. क्योंके क्रोध आ ही नहीं रह्यो हे.

(काम-क्रोधको सदुपयोग एवं दुरुपयोग)

शुभसु हितसु अपनेकुं काम नहीं जग्यो और सद्-असद् विवेक भी भयो तो वो दुर्योधनकी तरेह **"जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानामि अधर्मं न च मे निवृत्तिः"** मैं क्या कर सकुं? तो पर्सनालिटी डॅवलप्मॅन्ट्में काम-क्रोधको बड़ो भारी रोल् हे. जा बातकुं अपन् समझे नहीं हे. जैसे ए.के.४७ सिविलीयनूके लिये बुरी चीज हे वाको कोई ऐसो अर्थ करे के मिलिटरीवालेनूकुं भी ए.के.४७ नहीं देनी चहिये. मतलब के देशकी रक्षा खंडित हो गई. मिलिटरीवालेनूके पास होनी चहिये वाके लिये सिविलीयन् भी मांगवे लग जायेगो तो देशकी रक्षा तो होयगी तब होयगी, पहले देशमें आन्तरिक असुरक्षा ज्यादा हो जायेगी. क्योंके सब ए.के.४७ लेके एक-दूसरेकुं ढ़ीशूम-ढ़ीशूम करवे लग जायेंगे. तो हर चीजको सद्-असद् विवेक हे. वा विवेकके आधारपे यदि काम-क्रोध चल रह्यो हे तो अपनी पर्सनालिटीकुं डॅवलप् करवेवाली ये मेजर् फोर्स हे. पर फिर पाछी बात ये ही के अस्वस्थ अहंकार मुंहकी बासके जैसो हे और स्वस्थ अहंकार अपनेपे छांट्यो भयो परफ्युम् जैसो हे. वो जितनी देर तुमने छांट्यो हे इतनी देर तो तुमकुं सुगंध दे रह्यो हे. बाकी फोर् लोंगर् टाईम् वो तुमकुं नहीं दूसरेकुं हेल्प् करे हे.

बहोत प्रसिद्ध मजाक हे, जो आपने भी पच्चीसन् बार सुन्यो

होयगो. एक अंधे आदमीकुं कोईने टॉर्च् दे दी. तो वाने कही के "ये टॉर्च्सु मेरो क्या काम? मेरे जैसे दिन हे वैसे रात! मेरी आंखसु तो चलु नहीं हुं. लकड़ी ठक-ठकाके चलु हुं, वामें टॉर्च्में क्या फर्क पड़े?" (जाने टॉर्च् दी) उननें कही के "तुमकुं नहीं फर्क पड़ेगो पर कोई तुमसु नहीं टकरा जाय वाके लिये तो एक टॉर्च् रखो!" तो वाके भी दिमागमें जच गई बात. "हां! कोई मोसु नहीं टकरावे वाके लिये टॉर्च् जोड़नो अच्छी बात हे." अब अंधे आदमीकुं पता ही नहीं चली के टॉर्च्की बेटरी कब खतम हो गई और बुझी भयी टॉर्च लेके चल रह्यो हतो. फिर एक आदमी टकरायो तो अन्धेने कही "देखता नहीं टॉर्च्!" वाने कही "कहां हे टॉर्च्?" अन्धेने कही "हाथमें तो हे." टकरायो वाने कही "कहां हे? जल तो रही नहीं हे." अपने साथ या तरीकेकी प्रॉब्लेम् या घटना हो जाये हे. जो सद्-असद् विवेक नहीं कर सके हे वा तरीकेके जो अन्धे होय उनके हाथमें काम-क्रोधकी टॉर्च् होयगी वो फायदा नहीं करेगी. मगर इतनो विवेक हो सके हे के सद्-असद् विवेक क्या हे? शुभ-अशुभको विवेक क्या हे? हित-अहितको विवेक क्या हे? वाके लिये काम-क्रोध वाके अहंकारकी बहोत बड़ी डायनॅमिक् फोर्स् बनके आवे. जो अपने पर्सनालिटीकुं डॅवलप् करवेमें मेजर् रोल् अदा करें हें.

और मैं समझु हुं के कोई धर्म, कोई सम्प्रदाय या बातसु बचके जा सके हे के वाके पास कुछ आइटम् शुभ-अशुभकी, हित-अहितकी, सत्य-असत्यकी नहीं होय. कोई भी धर्मसम्प्रदाय होय, त्याग वैराग्य भक्ति कर्म ज्ञान, उन सबनके पास कुछ-न-कुछ ये लिस्टींग् तो हे के नहीं के ये अपने धर्मके हिसाबसु सच्चो हे, ये अपने धर्मके हिसाबसु खोटो हे, ये अपने धर्मके हिसाबसु अच्छो हे के अपने धर्मके हिसाबसु बुरो हे. वापे क्रोध नहीं आ रह्यो हे मतलब तुम अपने धर्मकुं जिने लायक समर्थ ही नहीं हो सकोगे. जो सच्चो

हे वापे तुमकुं कामना नहीं जग रही हे. मतलब के तुम अपने धर्मकुं सच्चे ढ़ंगसु जी नहीं सकोगे. काम-क्रोध इतनी बुरी चीज नहीं हे. पर काम-क्रोध कब बुरे हो जाये हे? अन्धेके हाथमें जाकुं सदसद्को शुभाशुभको हिताहितको विवेक नहीं हे वाके लिये ये काम और क्रोध नुकसान दे जाय हे. क्योंके आदमी दौड़वे लग जाय और दीखतो नहीं होय तब गिरवेके ज्यादा चान्सिस् (खतरनाक) हो जाय हे. वा बखत धीरे-धीरे कदम धरके चलवेवालो आदमी इतनी जल्दी नहीं गिरे हे, वा लिये काम-क्रोधकी निंदा करी गई हे. **"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः, महाशनो महापाप्मा विद्धि एनम् इह वैरिणम्"**(वहीं)

तो ये अपने सदसद्विवेक शुभाशुभविवेक हिताहितविवेक के साथ काममय क्रोधमय अहंकार 'स्वस्थ अहंकार' हे. पर सद्-असद् विवेकरहित अहंकार अपने लिये नुकसान दे सके हे. ये अपनेकुं या जंक्शन्पे समझनो जरूरी हे. और बाकीकी चार आईटम् हें, वो तो इनके डिफरन्ट् डिग्रीके सिर्फ इन्टॅन्सिफिकेशन् हे. और वो जितने इन्टॅन्सिफाय् होते चले जायेंगे वामें तुम्हारी अहं और मम ट्रॅप् होती चली जाय हें. और वाको नॅट् रिझल्ट् डॅन्जरस् आ रह्यो हे. वो डॅन्जरस् इन्टॅन्सिफिकेशन्के कारण आ रह्यो हे. शुद्ध अहंता और शुद्ध ममता में या तरहसु कोई डॅन्जरस् फिनोमीना नहीं हे. ये अपनेकुं उपादान अहंकर्ता, औपादानिक अहंकर्ता और औपादानिक अहंक्रिया को विवेचन यहां तक ये रहस्य समझा रह्यो हे. कोई तरहसु अपनी अहंता और ममता या बिमारीमें फंस गई उनको ॲन्टिडोज् शास्त्रने जनरल् ये दियो.

(अहंता-ममताकुं 'स्वस्थ' करवेके उपाय)

शास्त्रने ये ॲन्टिडोज् धर्मके ॲगल्सु दियो. शास्त्र धर्मात्मक भी हो सके हे, अर्थात्मक भी हो सके हे, कामात्मक भी हो सके हे, मोक्षात्मक भी हो सके हे. ये धर्मात्मकके ॲन्टिडोज् हे पर

अर्थात्मक कामात्मक मोक्षात्मक उपदेश भी वाके हो सके हे. वा पॉसिबिलीटीकुं अपनेकुं भूलनो नहीं चहिये. वामें ये आइटम्के बजाय कोई दूसरी आइटम् भी आयेगी जो प्रेज़न्ट् अपने अहंता-ममताको विषय नहीं हें.

इन्सिडेन्टली वा कन्टिन्युटीमें पुष्टिमें अपन्ने शरणागति निरोध सेवा सर्मपण सर्वात्मभाव भक्ति कुं ॲन्टिडोज़् मान्यो हे. क्योंके अपनी थियरी हे के अपनी चेतनामें शरणागतिमें 'श्रीकृष्ण: शरणं मम'को भास होनो चहिये. अपनी चेतनामें वा तरीकेकी निरोधात्मकता भासित होनी चहिये के जो कुछ हे वो कृष्णार्थ हे. वा तरीकेकी निरोधात्मकता अपनेमें भासित होनी चहिये. मानें अपनेमें स्वसुखके बजाय सेव्यसुखको भाव होनो चहिये. समर्पणको भाव होनो चहिये तो अपनी भक्ति बराबर खिल सकेगी. वाको ये सारो प्रॅक्टिकल् इम्प्लिमेन्टेशन् हे. जो अपने घरके ठाकुरमें अपन् करें हें. ये आखो अपनो प्रोग्राम् हतो.

यहांके बाद सारो विषय शुद्धको नहीं होके मिश्रितको हे. मैंने ये या लिये बतायो क्योंके ये कन्टिन्युटीमें आ रह्यो हे. और ये प्रोडक्ट् वहांको होते भये ॲक्सपोर्टके लिये हे. फॉर् लोकल् युज़् नहीं हे. ये हाफुस आमके जैसो प्रोडक्ट् हे. पैदा यहां होवे और जावे गल्फ्में. ऐसे उपादानके एरियामें ये सारे पैदा भये. औपादानिक क्रियासु पैदा भयो हे माल, पर नोट् फॉर् लोकल् युज़, फॉर् ॲक्सपोर्ट इन् टु उपादेय एरिया. बात ऐसे समझोंगे तो कोई कन्फ्युज़न् नहीं होयगो.

प्रश्न :

ममता आत्मरतिके कारण पैदा होवे. वाकुं ही इन्हियरन्ट् माने हे जो स्वाभाविक हे. यहां जो ग्राफ् दिखा रहे हे वामें ऐसो लगे

के वो स्वाभाविक नहीं होके औपाधिक दीख रही हे जैसे विषयमें रही भयी अपनी ममता. ऐसे ही अपनी अहंता स्वाभाविक नहीं होके ॲक्वायर्ड हे परन्तु ग्राफ्के हिसाबसु ॲक्वायर्ड नहीं लग रही हे, स्वाभाविक लग रही हे तो या बातमें मोकुं थोड़ो कन्फ्युज़न् लग रह्यो हे.

जवाब :

भागवती अहंता इन्हियरन्ट् लग रही हे के ॲक्वायर्ड लग रही हे?

प्रश्न :

ॲक्वायर्ड लग रही हे क्योंके मोकुं ऐसे संस्कार हे के पंचश्लोकीमें भी ये बात चली थी के अपने ब्रह्मकी अहंता हे वो मूल अहंता हे. जब वो अपनेमें कॅरीफॉर्वर्ड होय वा बखत वो ॲक्वायर्ड हे वामें शायद ये वचन आपने दियो हे के **''भूमि: आपो अनलो वायु: खं मनो बुद्धिरेव च अहंकार इति इयं मे भिन्ना प्रकृति: अष्टधा''** अहंकारकी वहां बात कही हे वो अहंकार ॲक्वायर्ड हे और यहां स्वाभाविक लगे हे तो थोड़ो कन्फ्युज़न् हे.

जवाब :

मैंने या लिये अपने पहले दिनके एक वक्तव्यमें या बातको खुलासा कियो के हर हकीकतमें कुछ कहानी छुपी भयी हे और हर कहानीमें एक हकीकत हे. ब्रह्मको जो स्वरूप हे वो अपने यहां हकीकत हे. और वामेंसे प्रकट होती भयी ये कहानी हे. सो अपनेमें जो भी कुछ स्वाभाविक हे या औपाधिक हे इन्हियरन्ट् हे या ॲक्वायर्ड हे वो ब्रह्मकी तो कहानी हे. और ब्रह्मकी कहानी हे या रहस्यकुं तु एक बार ब्रॉड सॅन्स्में स्वीकार ले फिर या बातकुं कभी मत भूल क्योंके कल मैंने याही लिये बता दियो के हर न्यूक्लियस्में क्रॉमोज़ोम् कहानीकी तरह छुपे भयें हें. वो वहां प्रकट नहीं हे. पर वासु प्रकट होनेवाले रिप्रोडक्शन्में वो कहानी प्रकट

होयगी. मैं शायद गड़बड़ नहीं करतो होउं तो सायन्समें भी ऐसो मान्यो गयो हे के कुछ सेल् ऐसी होवे हे जिनमें लाइट् रिसीव् करवेके लिये कोई एक पोइन्ट् होवे हे. वैसे पूरी सेल् होवे हे. पर वो अपने आंखके स्थानीय हे. ॲक्च्युअली आंख नहीं होवे हे; पर एक पोइन्ट् होवे हे. जा पोइन्ट्पे वो सेल् लाइट्कुं रिसीव् करे हे. समुद्रमें अलग-अलग गहेराईपे कुछ ऐसी वनस्पति होवें हें, जो हरे रंगकी होवें हें. और कुछ वनस्पति लाल रंगकी होवें हें और वामें यही कारण मान्यो गयो हे. उनमें जो रंगके भेद हे वाको मूल कारण हे के गहेराइपे वो लाइट् जा रही हे और उतनी लाइट्कुं वो ले रही हे. बाकी लाइट् वो ले नहीं पा रही हे करके उनको कलर् वा तरेहसु हो रह्यो हे. तो सेल्में भी या तरेहकी कोई तात्त्विक प्रकाशकुं ग्रहण करवेको करण होवे हे. एक सेल्में वो इतनो कॉम्प्लिकेटेड् होवे हे के वाकुं आंख मान सको, खावेको मुंह मान सको, क्योंके प्रकाश खायो भी जाय हे. अपने लेवल्पे अपन्कुं यों लगे हे के अपन् प्रकाश नहीं खा रहें हें. सिम्पल् प्रकाश नहीं खा रहें हें. पर कॉम्प्लेक्स् प्रकाश ही अपन् खा रहें हें. एक बखत वनस्पतिशास्त्रको रहस्य पूरी तरह समझ जाय तो अपन् प्रकाशके अलावा कुछ भी नहीं खा रहे हे. अपन् यों बहाना करे के हम ढ़ोकला खा रहें हें और फाफड़ा खा रहें हें. ढ़ोकला खावें या फाफड़ा खावें, खा तो प्रकाश ही रहें हें. प्रकाशके अलावा अपने यहां खाद्य पदार्थ कुछ हे ही नहीं. तो सेल्में प्रकाशग्राही जो अंग हे वो वाको मुंह हे के आंख हे? पर वामें "एको अहं बहुस्याम्"की तरह धीरे-धीरे आंख फिर मुंह भी बने हे. जैसे खटमल हे ऐसे कई जानवर जिनकुं आंख नहीं होवें हें; पर फिर भी प्रकाश उनकुं ग्रहीत होवे हे. बत्ती जोड़ते ही खटमल क्यों भग जाय? वाको मूल कारण ये हे के आंखसु वाकुं नहीं दीखे हे पर वाकुं पीठपे प्रकाश दीखे हे. जैसे सांपकुं कान नहीं होवे हे; पर पेटपे वाकुं सुनाई दे हे. तो यदि अंग या करण नहीं हे;

पर क्रिया प्रकट पहले होवे हे सायन्समें. वो क्रियाकुं निरंतर करते-करते फिर अचानक वाको करण फूटे हे. और या बातकुं वेदने इतनी खूबसूरतीसु कही हे के **"पश्यन् चक्षुर् भवति, धावन् चरणौ गृह्णन् करौ भवति"** वो देखवे लगे हे या लिये आंख बन जाय हे. पकड़वे लगे हे या लिये हाथ बन जाय हे. दौड़वे लगे हे या लिये पैर बन जाय हे. क्रियासु करण विकसित हो रह्यो हे जो शुद्ध अवस्था हे वामें और कॉम्प्लॅक्स् अवस्थामें करणसु फिर क्रिया पैदा होवे हे. याहि लिये अपने ब्लड्के जो सेल् होवें हें उनमें भी वाइट् सेल्में यही प्रॉब्लेम् होवे हे. कोई भी चीज आवे तो व्हाइट् सेल् क्या करे हे? वो जावे, उनको मुंह नहीं होवे पर वाको घेरा डालके चारो ओरसु चिपक जाय और चिपकके फिर धीरेसु मुंह बिना खावे लग जाय. वो मुंह बिना खावे लगे हे करके ॲडवान्स् स्टेज्में मुंह खावेके लिये डॅवलप् होवे हे. तो ये सुव्यवस्था वहां हे. शुद्ध अवस्थामें क्रियामेंसु करण विकसित हो रह्यो हे. वो अपने उपनिषद्में भी मॅन्शन् कियो हे के शुद्धावस्थामें क्रियासु करण विकसित हो रह्यो हे. और उपादेय अवस्थामें इतनो स्ट्रक्चर् कॉम्प्लेक्स् हो जाय हे तो उतनो वाकुं संभालवेके लिये फिर अलगसु एक करणकी जरूरत पड़े हे. महाभारतमें बहोत अच्छो कह्यो हे

"न राज्यं न च राजा आसीत् न दण्डो न च दाण्डिकः।
धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना परस्परम्"॥

(महा.भा.)

जब प्रजा धार्मिक हे तो राजाकी राज्यकी या दंडकी कोई अपेक्षा नहीं हती. पर अपनी जीवनप्रणालीमें इतनी कॉम्प्लेक्सिटी पैदा भयी के कोई आदमी धर्म चाहते भये भी धर्म नहीं कर पा रह्यो हे. कोई धर्मको छलावा करके अधर्म कर रह्यो हे. कोई अधर्मके नामपे धर्म कर रह्यो हे. इतनी सब वॅरायटी हुई तो वाको कन्ट्रोल्

करवेके लिये एक इन्स्ट्रुमॅन्ट् तो चहिये करके राजा राज्य और दंड आयो. महाभारत स्पष्ट या बातकुं कहे हे के "**न राज्यं न राजा आसीत् न दण्डो न च दाण्डिकः धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना परस्परम्**"

जैसे अपने ब्लड्-सेल्को अपनो धर्म हे के वो कोईकुं रेहवे दे हे, कोईकुं नहीं रेहवे दे. वहां कोई राजा थोड़ी हे! कोई ऑर्डर करे? कुछ नहीं हे. जितने भी ब्लड्के व्हाइट्-सेल् हें वो "**धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना परस्परम्**" पर फॉरेन् ॲलिमेन्ट् आयो तो दौड़के तुरंत खाओ पचावो खातमा करो. "धर्मेणैव प्रजा सर्वा" ये अपनेकुं जरूरत पड़ें हें क्योंके अपनो जो स्ट्रक्चर्, बिहेवीअर् हे वो इतनी कॉम्प्लेक्सिटी लियो भयो हे करके अपनेकुं एक राजाकी जरूरत पड़े हे. फिर कुछ दंडकी जरूरत पड़े हे. क्योंके वाके बिना अपनो व्यवहार ठिकाने आवे नहीं. बाकी जो जहां "धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना परस्परम्" वहां कोईकी जरूरत ही नहीं हे. करणकी जरूरत नहीं हे. वहां क्रिया सफिसीयेन्ट् हे. करणकी जरूरत कब पड़े? राजा एक करण हे. दंड राजासु भी ज्यादा एक कॉम्प्लॅक्स् करण हे. तो दंड़कुं कानूनकी भाषामें 'एड्ज्युडिकेशन्' कहे हे. वाकी कब जरूरत पड़े? जब कोम्प्लेक्सिटी बढ़ जाये तब. सब लोग शांतिसु रहे तो वामें कायकुं राजाकी कानूनकी जरूरत हें? और कायकुं पनिशमॅन्ट् पॅनल्टीकी जरूरत हे? नो एड्ज्युडिकेशन्.

मूलमें हिन्दुस्तानी लोग विदेशीनके सामने या लिये हार गये के अपने यहां सब ऐसो आनन्दको खाता ही हतो. सब लोग "धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना परस्परम्". लड़ाई होती रहेती. यहां किसान खेती करतो रहेतो. अपनेकुं पता नहीं हतो के ऐसो भी युद्ध हो सके जामें युद्धमें भाग नहीं लियो होय वाकुं भी मार्यो जा सके! अपने एक-एक धर्म हते. जो लड़ रहे हे उनकुं लड़वे दो. तो रोइके या बाजु युद्ध चलतो वा बाजु किसान खेती करतो. पर वे आततायी

लोग ऐसे आये, ये जो युद्ध कर रह्यो हे वाकुं मारो, जो युद्ध नहीं कर रह्यो हे वाकुं भी मारो, सबकुं मारो. वामें वा तरीकेकी लड़ाईके लिये अपन् तैयार नहीं हते. नालायक हते के लायक हते वह कथा दूसरी हे; मगर अपनो वा तरीकेको सेट्अप् हतो के सांज हो गई तो लड़ाई नहीं करेंगे. सूर्योदय होते पाछो शंख बजवे लग जाय "**ततः शंखाः च भेर्य च पणवानकगोमुखाः**"(भग.गीता.१।१३) सूर्यास्त होते पाछे बैठ जाते. ये तो अपनेकुं पीछेसु पता चली के रातकुं सोये होय तब भी ॲटेक् हो जायेगो. अपनकुं कल्पना ही नहीं हती के ऐसे भी युद्ध होवे. वामें लद्-पद् हार गये. लड़वेवालो आदमी शरणागत हो गयो तो लड़ाई बंध हो जाती. पॉलिटीकली बेवकूफ हतें के धर्मके हिसाबसु मोस्ट् ॲड्वान्स्ड् हतें? वो चर्चाको विषय हो सके. मगर अपन् हतें ऐसै, 'अमे एवारें'. वामें अपन् हार गयें. नहीं तो हारवेको कोई कारण नहीं हतो.

राणा सांगाके लिये कथामें आवे हे के बाबर तोप लेके आयो. सब किल्लानकी भींतें तूटवें लगीं. राणा सांगाने कही "अरे यार किल्लानकी भींत तूट रही चलो सामने चलो." तोपें चल रही हतीं, तलवार हिलाते-हिलाते सब वहां पहोंच गयें, सब मर गयें. कल्पना ही नहीं हती के ऐसो भी कुछ हो सके हे. अपने यहां तो भाग जाय तो वाको पीछा नहीं करते. सरेन्डर् हो गये तो मार्यो नहीं जातो. अपन् अच्छी तरहसु जाने हे के पृथ्वीराजने सोलह बखत महमद घोरीकुं छोड़ दियो सरेन्डर् भयो तब. और पृथ्वीराज एक बखत बिचारो हार्यो तो वाकुं छोड़यो नहीं. तो अपनी "धर्मेणैव प्रजा सर्वा नियमाना" हती वामें अपन् पता नहीं लगा पाये के क्या लफड़ा हो गयो अचानक? ट्रॉमेटिक् ॲक्स्पीरियन्स् हतो अपने लिये के नागरिकनकुं भी मार्यो जा सकें हें और टॉर्चर् कियो जा सकें, करके अपन् हार गयें. अपने यहां प्रॉपर् करण नहीं हते. उन लोगनके पास सब करण प्रॉपर् हतें करके वे लोग जीतें. क्योंके

जब भी करण डॅवलप् होवे हे तब अफॅर्की कॉम्प्लॅक्सिटी ज्यादा होवे हे. चाहे सोशियल् कमर्शियल् रिलिजीयस् अफेर् होय पर जब कॉम्प्लॅक्सिटी आ गई तो फिर करण बन जाय, फिर इन्स्टिट्युशन् बन जाय, फिर ट्रेइनिंग् बन जाय, फिर वामें सिस्टमॅटिक् काम होने लगे. वामें जो अनसिस्टमॅटिक् हे वाकुं तो खतम होनो ही पड़ेगो. सीधीसी बात हे के जो तु केह रह्यो हे वो बात क्रियाके लेवलपे सच्ची हे मगर हकीकतमें एक रहस्य वाको ये हे के अपनेकुं जो भी कुछ मिल्यो हे अहंता-ममता, वो मिल्यो तो वहांसु (ब्रह्मसु/उपादानसु) ही न! क्योंके वो कहानी वहां हे! क्रोमोज़ोम् तो वाके (न्यूक्लियस्में) हे वो (न्यूक्लियस्में) न होतो तो अपनेकुं मिलतो कैसे? या रहस्यकुं अच्छी तरहसु समझो.

प्रश्न:

आप ऐसे केहनो चाह रहे हे के यदि ये जो भागवती अहंक्रिया हे तो क्रियाके लेवलपे वाकुं स्वाभाविक मान लेनो. वाके बादमें जो अहंरूप करण पैदा होय वो अॅक्वायई होवे कॉम्प्लॅक्सिटिके कारण.

जवाब:

वो क्रिया जा बखत करणरूपमें डॅवलप् हो गई तो अॅक्वायई हो गई. वोही बात ममतामें लागु होयगी.

प्रश्न:

लेकिन ममताके लिये अपन् हर बखत कहें हें ममता इनहियरन्ट् हे याने आत्मरति वाको मूल हे. जैसे आप हर बखत कहो के **"नवा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति"** (बृह.उप.२।४।५, ४।३।२) मतलब वो जो भीतरकी अपनी रति हे और महाप्रभुजी भी केह रहे हे **"अतः स्नेहः पदार्थान्तरम्..."** तो वा स्नेहकुं अपन् कभी भी अॅक्वायई नहीं मानें हें?

जवाब:

तु उल्टी बात कर रह्यो हे. अॅकजॅक्ट् तुने ओपोज़िट् बात कर

दी. सच्ची बात देख मैं तोकुं बताउं. महाप्रभुजी जब **"अतः स्नेहः पदार्थान्तरम्"** केह रहें हें और महाप्रभुजी जा बखत आत्मरति केह रहें हें वा बखत महाप्रभुजीको विवक्षासन्दर्भ परमात्मा हे विषयमें नहीं हे. और अपनो पारमात्मिक सन्दर्भ नहीं लेके वैषयिक सन्दर्भमें वा बातकुं लेंगे तो फिर गलत होयगी. महाप्रभुजीको जो सन्दर्भ हे वो पारमात्मिक सन्दर्भमें आत्मरति हे **"अतः स्नेहः पदार्थान्तरम्"** (सुबो.१।१९।१६) पर जब तुम्हारो सन्दर्भ वैषयिकको आ गयो तो **"विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः"** (सं.नि.६) केहवेकी महाप्रभुजीकी हिंमत तूट जाती. पर महाप्रभुजीने तो दम-खमसु कही हे **"विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः"** क्यों कही? जो व्यक्ति एक बात केह रह्यो हे के **"अतः स्नेह पदार्थान्तरम्, स भगवन्निष्ठएव भगवद्विषयको"** (वहीं) वो व्यक्ति ये बात कैसे केह सके? पर केह रह्यो हे के नहीं केह रह्यो? मतलब दो सन्दर्भ अपनेकुं वाके पृथक् करके समझने पड़ेंगे. आयी न समझमें?

प्रश्न:

आपे दोषमां एम समजाव्युं के क्रोध अने काम नॅसेसरी छे. तो पछी ॲन्टिडोज़् केवी रीते? ए जो सारी वस्तु थई रही छे तो पुष्टिना लेवलमां अने गृहठाकुरना लेवलमां एनो ॲन्टिडोज़् कहीए तो रिवर्समां वात न थई गई?

जवाब:

काम और क्रोध एक लेवलपे अपनी अहंता और ममता को कोई डॅवलपमॅन्ट् हे. अहंता-ममता कायको डॅवलपमॅन्ट् हे वो अपन् पूरी टेब्युलार् फोर्ममें देख चुकें. वा डॅवलपमॅन्टके लिये, मैं बहोत सावधानीसु ये बोल्यो हुं के यदि सद्-असद् शुभ-अशुभ हित-अहित के विवेकके सहित हे तो वो वाकुं स्वस्थ कर देगो. बहोत सारी चीजे ऐसी होवे के अस्वस्थ भी होवे तो कोई फिनोमीना वाकुं स्वस्थ करवेवालो हो सके हे. और यदि शुभाशुभ हिताहित और

सदसद् के विवेकके बिना काम-क्रोध हे तो वो तो हानिकारक होयेंगे ही. तो मैंनें एक तो पहले ये बात खुलासामें स्पष्ट कही हे. अपन् जब वाकुं ॲन्टिडोज् तरीके केह रहें हें तो वो सद्-असद् विवेकके आधारपे ही तो केह रहें हें. ये काम और क्रोध को उपयोग सदसद्विवेकसु करो. और यदि सदसद्विवेकसु तुम नहीं कर रहे हे तो तुम क्रोधको और कामको दुरुपयोग करोगे. जब तुम दुरुपयोग करोगे तब कृष्ण तक पहोचवेके बजाय कहीं और पहोंच जाओंगे.

प्रश्न :

गृहठाकुरमें अहंक्रियामें सेवाको प्रॅक्टिकल् आपने तनुवित्तजा बतायो और भक्तिको प्रॅक्टिकल् कृष्णसेवा. यामें ॲक्च्युअल् थोड़ो ॲक्सप्लेनेशन् चहिये, कैसे केहनो चाह रहें हों ?

जवाब :

मैं पहले आपसु पूछनो चाह रह्यो हुं आपकुं कुछ आपत्ति हे के शंका हे ?

प्रश्न :

नहीं ! मानें मैं ऐसो सोच रह्यो हतो के ये कृष्णसेवाको मतलब चित्तप्रवणता शायद लेते होवें और तनुवित्तजाको मतलब सेवाकुं प्रॅक्टिकली अपने तनुवित्तसु कैसे निभानी और अपनी अहंता-ममता जामें हे वासु वा सेवाकुं प्रॅक्टिकली करनी हे. ये ठीक हे या मेरी समझ कछु गलत हे ?

उत्तर :

मैंनें या लिये बावा कल बात बताई हती के ये सारी आइटम् थियोरिटिकल् हें, प्रॅक्टिकल् आईटम् नहीं हें. थियोरिटिकल् होवेके कारण अपन् कृष्णभक्ति करें हें. अपन् कृष्णकुं परब्रह्म मान रहें हें करके अपनी भक्ति कृष्णभक्ति होनी चहिये पर अपन् ये तो नहीं केह सकें के सबकुं कृष्णभक्त होनो चहिये ! "**अतः शिवश्च विष्णुश्च**

जगतो हितकारकौ" (बा.बो.११) जा बखत महाप्रभुजी आज्ञा कर रहें हें तो वहां क्या केहनो चाह रहें हें ? "**तदाश्रय तदीयत्व बुद्धचै किञ्चित् समाचरेत्, स्वधर्मम् अनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यम् अन्यथा.**" (बा.बो.१९) यदि तुम अपनो आराध्य शिवकुं मान रहे हो तो शिवके प्रति तुमकुं शरणागत और समर्पित होनो चहिये. वाको मतलब के शिवके सामने अपने अहंकुं डायल्युट् करो, शिवके अहंमें अपने अहंकुं टचुन्-अप् करो, शिवके लिये अपने ममत्वकुं डायवर्ट् करो.

इन्सिडेन्टली अपने लिये अपनो आराध्य कृष्ण हे तो अपन् कृष्णके लिये वो सारी बात कर रहें हें, अपने अहंकुं अपन् कृष्णके सामने डायल्युट् कर रहें हें. **'दासोऽहम्'** जा बखत केह रहें हें वो **'सोऽहम्'**कुं अपन् डायल्युट् करवेके लिये तो केह रहें हें. 'सोऽहम्' तो अपन् केह ही सकतें हतें. अपन् नहीं केह सकें तो कौन केह सके ! एक बड़ी रिमार्केबल् बात आपकुं बताउं, जिनने अच्छी तरहसु केवलाद्वैत नहीं पढ़्यो हे उनकुं ये जनरल् भ्रांति हे के 'सोऽहम्' केवलाद्वैतको सिद्धान्त हे. जिनने केवलाद्वैत पढ़्यो हे उनकुं ये भ्रांति कभी होनी ही नहीं चहिये के 'सोऽहम्' सिद्धान्त केवलाद्वैतको हे क्योंके शंकाचार्यको स्पष्ट सिद्धान्त हे सोऽहम् = -सो + - अहम् ये इक्वेशन् हे. तो 'सोऽहम्' कहां हे उनको ? 'नाऽहम्', 'न सोऽहम्' हो गयो. अपन् वो 'न सोऽहम्' नहीं मान रहें हें, 'सोऽहम्' ही मान रहें हें. मगर 'सोऽहम्' अपन् हकीकतके तौरपे मान रहें हें. कहानीमें अपन् क्या केह रहें हें 'दासोऽहम्'. स्टोरी तो ऐसे बन रही हे अपनी ! अपने 'सोऽहम्'की हकीकतमें 'दासोऽहम्'की स्टोरी छुपी भयी हे. वो लोग क्या केह रहे हें ? "**'दासोऽहम्' इति या बुद्धिः पूर्वम् आसीत् जनार्दने 'दा'कारो अपहृतः तेन गोपीवस्त्रापहारिना**" = बड़ी मजेदार बात हे के पहले मैंने जब साधना शुरु करी तब 'दासोऽहम्' बुद्धि हती; पर भगवान् चोर हें वाने गोपीनके जैसे वस्त्र चोरे वैसे मेरो 'दा' चोर गयो और मोकुं 'सोऽहम्' बना दियो. कोई बुरी बात

नहीं हे अच्छी बात हे यदि भगवान्ने 'सोऽहम्' बना दियो होतो तो, पर ये तो बात खाली कहवेकी हे. थोड़ोसी भी शांकरवेदांतकी परिभाषा 'सिद्धान्तलेशसंग्रह'में पढ़ो तो ख्यालमें आ जायगी के 'सोऽहम्'सु उनके यहां मतलब हे के -सः + - अहम् = 'सोऽहम्'. तब तो 'सोऽहम्'को मत उनको कहां हे? 'सोऽहम्' तो अपनो मत हे. पर अपन्ने वाही लिये ब्रह्मसम्बन्धमें 'सोऽहम्'के साथ 'दासोऽहम्' जोड़्यो हे. टु मेक् इट् ए स्टोरी आउट् ऑफ् देट् ट्रुथ्. वो जो फॅक्ट् हे 'सोऽहम्'को वा फॅक्ट्मेंसु एक स्टोरी डिराइव् करवेके लिये अपन्ने वामें 'दा' जोड़्यो हे, 'दासोऽहम्', तब तो स्टोरी बनेगी. भगवान् यदि 'दा' चोरतें भी होंय जैसे गोपीन्के वस्त्र चोरे, तो अपन् पाछे यही कहेंगे

''हमारो अंबर देहो मुरारी,
लेकर चीर कदंब चढ़ बैठे
हम जल मांझ उघारी
हमारो अंबर देहो मुरारी.''

(व्रतचर्या पद)

यदि चोरतें भी होंय तो भी अपन् ये पद गायेंगे के भई मत चोरो

''जाय कहुं नंदबाबाके आगे करत अनीति ललारी!''

यहां अनीति मत करो. 'दा' चोरतें होंय तो भी अपन् उनकुं ऐसो पोलाइट्ली थ्रेट्निंग् करेंगे ही के भई! जाके रिपोर्ट् करेंगे के ये लफड़ा कर रहें हें, चोर रहें हें.

तो भक्ति अपनी 'कृष्णसेवा'के रूपमें प्रगट होनी चहिये. भक्ति कॉमन् (समान) हे. जो जाको भक्त होय वाकी भक्ति वहां प्रकट होय. अपनी भक्ति यदि 'कृष्णसेवा'के रूपमें प्रगट नहीं भयी तो वी आर मिसिंग् समथिंग्, वी लॅक् समथिंग्. और वो 'कृष्णसेवा'

मैंने क्यों कही वाको कारण समझो क्योंके अपने घरमें जा बखत सेवा करेंगे; अब वो कृष्ण हे के कृष्णकी मूर्ति हे के क्या हे? ये तो लफड़ाकी बात हे, तो वो जो स्वरूप घरमें बिराज रह्यो हे वाकुं आपने साक्षात् कृष्ण नहीं मान्यो तो, स्वरूपसेवासु कृष्णसेवा नहीं हो जायगी, मेक् इट् स्योर्! भले आपने घरमें भी पधरायो, 'यथालब्धोपचार'सु आप वाकुं विनियोग भी कर रहें होंय, तनुवित्तजा भी कर रहें होंय, अपनो सर्वस्व भी मान रहे होंय तो भी वो कृष्णसेवा नहीं होयगी!

जितने म्युज़ियम्में ठाकुरजी बिराज रहें हें वो सब म्युज़ियम्वालें सर्वस्व मानके चलें हें पर उनकी एन्टिक् वॅल्यु हे स्पिरिच्युअल् वॅल्यु नहीं हे. म्युज़ियम्में हर बिराजे कृष्ण, राधा, महादेव और पार्वती, ब्रह्मा सब स्वरूपन्की एन्टिक् वॅल्यु कछु नहीं तो वहां दस-दस करोड़ रुपैयासु भी बहोत ज्यादा हे, पर स्पिरिच्युअल् वॅल्यु वाकी नहीं हे! अपने घरमें बिराजते ठाकुरकी एन्टिक् वॅल्यु होय के नहीं होय पर स्पिरिच्युअल् वॅल्यु तो अपन् केह ही नहीं सकें. इन्वेल्युएबल् (अमूल्य) हे वो, प्राइज़लेस् हे! तो वो बात अपनेकुं समझनी पड़ेगी. वो प्राइज़लेस्नेस्को (अमूल्यता) जो भाव हे वो कब आयगो के जब घरमें बिराजतें स्वरूपकुं अपन्ने साक्षात् कृष्ण मान्यों तब, अदरवाइज़् नहीं आ सके. एन्टिक् वॅल्यु तो मानके चलें वाकी खतम हो गई.

तो वा लिये मैंने यहां 'कृष्णसेवा' कह्यो हे. पॉइन्ट् एक तो ये हे. और तनुवित्तजा सेवामें सेवाकी तो कितनी वॅरायटी हो सकें. नौकर घोड़ा कार भी अपनी सेवा कर रही हे, आजकल तो कॉन्ट्रेक्ट् सिस्टम्की सेवा हे.

प्रश्न:
तनुवित्तजा और कृष्णसेवा में क्या अन्तर हे.

उत्तर :

कृष्णसेवामें 'कृष्णकी सेवा' हे. वो तनुवित्तजामें सेवा नहीं हे वामें तो तनुवित्तके विनियोगकी बात हे. *'पोताना तनथी ने पोताना धनथी'*, विनियोगकी वहां प्रधानता हे, वहां क्रियाकी प्रधानता नहीं हे. सेवात्मिका क्रियाकी नहीं पर सेवार्थ विनियोग किये जाते तनुवित्तकी वहां प्रधानता हे. 'जा'तो पीछेसु आ रह्यो हे 'सेवा'के अर्थमें. तो वाकुं आप सेवासु कन्फ्युज् मत करो.

सेवाके तो कई प्रकार हो सकेंगे. आज-कल तो बर्थ-डेमें मॅनेजमेन्ट् करवेवालें आवें, आपकुं नहीं नाचनो आतो होय तो भी नचवा दें, गानो नहीं आतो होय तो गवा दें आपकुं, कविता बनानी नहीं आती होय तो कविता बनवा दें, मेक्-अप् करनो नहीं आतो होय तो मेक्-अप् करा दें. वे सब सेवा कर रहें हें. वो 'सर्विस्' केहवावे. और शायद मैं ऐसो समझूं हूं के सर्विस् टॅक्स् भी लगतो ही होयगो. ये तो अपनो पुष्टिमार्गके MBA पू.पा.नको माहात्म्य हे के छप्पनभोग होते ही जायें और टॅक्स् लगे ही नहीं!

प्रश्न :

यामें अविद्याके पर्व कहीं भी नहीं बतायें या कछु वाके अंतर्गत आ गये ऐसे ले रहे हो?

उत्तर :

अविद्याके पर्व मैंने या लिये नहीं बताये के जब काम क्रोध लोभ मोह मात्सर्य आ रहें हें तो वो, बिना अविद्याके पांच पर्वके तो आ ही नहीं सके हें! तो मैं कॉम्प्लिकेटेड् नहीं करनो चाहूं हूं.

प्रश्न :

कार्ष्णी अहंकार अहंक्रिया हे वो कल बहोत बतायो हतो आपने

''यदैव कृष्णः रोचते तदा विषयाः न रोचन्ते'' वाको विवेचन आज नहीं भयो.

उत्तर :

वामें ऐसी कथा हे के आपने प्रमेयरत्नार्णवम् पढ़्यो भी हे और पढ़ायो भी हे. महाप्रभुजी सौगंध खाके कह रहें हें **''विषयो भगवान् विषयता मायाजन्या''** (सुबो.२।९।३३) और वो ही महाप्रभु पाछे ये भी आज्ञा कर रहें हें **''यदा कृष्णः रोचते तदा विषयाः न रोचन्ते''** तो ये दोनों पंक्तिनको स्वारस्य जब अपन् समझेंगे तो 'कार्ष्णी अहंक्रिया' अपनेकुं समझमें आयेगी. कृष्ण ये नहीं केह रह्यो के विषय मिथ्या हे, विषय मायिक हे. विषय तो मैं हूं.

मनसा वचसा दृष्ट्या गृह्यते अन्यैरपि इन्द्रियैः।
'अहम्एव' 'न मत्तः अन्यद्' इति बुध्यध्वम् अञ्जसा।।
(भाग.पुरा.११।१३।२४)

जो मनसु, जो चक्षुसु, वाणीसु सबसु ग्रहीत हो रह्यो हे **'''अहम्एव' 'न मत्तः अन्यद्' इति बुध्यध्वम् अञ्जसा''** (वहीं) कहवेके बाद कृष्णकी अपेक्षा क्या हे? यद्यपि 'अहमेव' = मेरी अहंक्रिया वहां तक एक्स्टेन्डेड् हे, पर तुम्हारी अहंक्रियामें वो एक्स्टेन्डेड् नहीं माननो चाह रह्यों हें. **''यदैव कृष्णः रोचते तदा विषयाः न रोचन्ते''** करके महाप्रभुजीने कही **''विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः''**(स.नि.६).

तो कार्ष्णी अहंक्रिया ऐसी हे और वा कार्ष्णी अहंक्रियाकुं रिस्पॉन्स् देवेके लिये अपनने सिर्फ प्रिकॉशन् कितनो लियो हे अपनी साधनाप्रणालीमें निरूपाधिक सेवा, निरूपाधिक भक्ति ही भक्ति हे. विषयोपाधिक, विषयकामनोपाधिक कृष्णकी सेवा कर रहे हो तो कृष्ण, कृष्ण नहीं हे वो क्षुद्रदेवता हे. ये गुसांईजी आज्ञा करें हें क्योंके कृष्णके अहंकारकुं

अपनकुं रिस्पॉन्स् देनो हे. आजके आज नहीं दे सकेंगे. मगर एक प्रोग्राम्में इन्वॉल्व् होनो पड़ेगो. अब अपन् अपने घरके ठाकुरके साथ या प्रोग्राम्में इन्वॉल्व् होके सबसु पहले कृष्णकुं रिस्पॉन्स् देंगे के "भई तू यदि विषय होते भये भी हमसु ये अपेक्षा रखतो होय के हम विषयकुं नहीं चाहें और तोकुं चाहें तो हम विषयकुं नहीं चाहेंगे तोकुं ही चाहेंगे". ये कृष्णकी अहंक्रियाकुं अपने द्वारा दियो गयो रिस्पॉन्स् हे. वो सिद्ध होयगो तो भागवती अहंक्रियाकुं अपन् रिस्पोन्स् दे पायेंगे, तब पारमात्मिक आत्मरति अपनकुं रिस्पॉन्स्में खिलेगी, उभरेगी. वो उभरेगी तो ब्राह्मिमिकि अहंक्रिया अपनकुं रिस्पॉन्स्में आयगी. ऐसे रिवर्सल् ऑफ् ऑर्डर् हे वामें.

प्रश्न :

ये जो काष्णी अहंक्रिया बतायो आपने "विषयाः न रोचन्ते" वो उपादेयके एँगल्सु लेनो ?

उत्तर :

ये टॉपिक् 'कठ'को (कठोपनिषद्) हे. नचिकेता जब यमके पास जावे हे वा बखत वो जाके कहे हे के

"यो अयम् वरो गूढम् अनुप्रविष्टः न अन्यं तस्मात् नचिकेता वृणीते"

(कठोप.१।१।२९)

"जो तु सबसु अच्छी बात समझतो होय वो मोकुं समझा."

यम याकुं क्या कहे हे—

"ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्व।
इमा रामाः सरथाः सतूर्या न हि इदृशा लम्भनीया मनुष्यैः॥"

(कठोप.१।१।२५)

"बहोत अच्छी तरहसु अलंकृत सुन्दर-सुन्दर औरतें हें, इनमेंसु जितनी चहिये वो ले जा." पर वो कहे हे **"न अन्यं तस्मात् नचिकेता वृणीते"** नचिकेताने यमसु कही के "मैं तेरे पास या लिये नहीं आयो हूं, वो तो दुनियामें ॲवेलेबल् (प्राप्त) हतीं. मैं तेरेसु कछु और लेवे आयो हूं." स्वर्गमें भी अप्सरा हें, स्वर्गमें भी गन्धर्व हें. भूतलपे भी अप्सरा हें, भूतलपे भी गन्धर्व हें. अपन् भूतलकी अप्सराकुं छोड़के स्वर्गकी अप्सराकुं खोजवें जायें और स्वर्गमें चान्स् नहीं मिल्यो तो अपनी दोनों अप्सरा खो जायेंगी. ऐसे ही भूतलके गन्धर्वकुं छोड़के स्वर्गके गन्धर्वकुं पकड़वे जायेंगे तो दोनों गये. वाके लिये नचिकेता केह रह्यो हे के "मोकुं अप्सरा चहिये तो भूतलपे ॲवेलेबल् हती. मैं आपके पास या लिये नहीं आयो हूं के मोकुं अप्सरा चहिये. मोकुं तो गूढ़ वर चहिये हे वो बता." यमने वाकुं बहोत ललचायो हे.

वो यमने ही ललचायो हे ऐसो नहीं हे. पुराने जमानामें गुरु-शिष्यकी डिसीप्लिन्की बात हती. गुरु शिष्यकुं ललचाते हते के दीक्षा मत ले. जाको अपने यहां भी उल्लेख मिले हे के *"बरजे हते पर आये ताको फल पावत हे."* महाप्रभुजी बरजतें हतें. महाप्रभुजी बरजतें कैसे होयेंगे ? देवकीनन्दनाचार्यजी अक्सर सिन्धीमें आज्ञा करतें *"ब्रह्मसम्बन्ध गेन्धासी तो जातमांथी वेन्धासी, मरजाद गेन्धासी तो असामांथीय वेन्धासी"* = ब्रह्मसम्बन्ध लोगे तो जातमेंसु निकाल दिये जाओगे. सब गुरुन्की पुरानी डिसीप्लिन् हती, उनमें डिग्निटी हती. बहोत सारे शास्त्रमें तो लिख्यो हे के एक युग पर्यन्त वाकुं अपने पास रखके देखो तब वाकुं दीक्षा दो.

दूसरे धर्म पालतें होंय या नहीं पालतें होंय पर बौद्धधर्म जैनधर्म काफी हद्द तक या सिद्धान्तकुं पालें हें. इसाई लोग बारह साल ब्रदरहुड्में रखवेके बाद फादर् तरीके कॉन्सीक्रेट् करें हें. अपने यहां

ये नग्ननृत्य चल रह्यो हे *''कहत सबन्सों आवो आवो भेंट रूपैया लावो लावो''*. वो कथा और धर्मन्में नहीं हे. सब गुरु बराबर चेंक् करते हते. समझमें आतो के करेगो तब वाकुं दीक्षा देते हते. याके लिये उपनिषद् कहे के **''इमाम् अद्भिः परिगृहीतां धनस्य पूर्णां दध्याद् एतदेव ततो भूयः''** (छान्दो.उप.३।११।६) = सारी पृथ्वीकुं धनसु बिछाके यदि कोई तुमकुं दान देतो होय तो भी वा उपदेशकुं तुम मेंहगो समझो सस्तो मत समझो. इतनो मूल्यवान् उपदेश हे.

प्रश्न :

जो शुद्ध अहं हे वो सेल्फ् रिफ्लॅक्टिंग् हे. पहले अपनी चेतनामें अहं रिफ्लेक्ट् होवे वाकुं अहंको अनुभव होवे?

उत्तर :

चेतनामें अहं रिफ्लॅक्ट् नहीं होवे, अहंमें चेतना रिफ्लॅक्ट् होवे. अहं चेतनाके साथ अटेच्ड् हो (जुड़) जावे. और वा अहंमें चेतना रिफ्लॅक्ट् होवेसु चेतनाकुं सबसु पहले अहंको मोह हो जाय के 'मैं अहं हूं.'

ऑल्मोस्ट् ये नार्सिज़म् हे. जैसे चिड़िया कांचके सामने रिफ्लॅक्शन् (प्रतिबिंब) देखे फिर वाकुं पता ही नहीं चले के क्या भयो? सामने चिड़िया दीख रही हे और रिस्पॉन्स् क्यों नहीं दे रही हे? कांचमें मार-मार चोंच! ऐसे अपनी चेतनाको लफड़ा हो जाय. अहं एक मिरर्की तरह सामने आ रह्यो हे वामें चेतना रिफ्लॅक्ट् हो रही हे. रिफ्लॅक्ट् होवेके बाद चेतनाकुं मोह हो जाय.

''मैं तेरा अक्स हूं के तू मेरा(अक्स=रिफ्लॅक्शन्),
इस सवालों-जवाबोंने मारा,
सबको मारा जिगरके शेरोने,
और जिगरको शराबने मारा.''

ये मोह हो जाय. अहंमें जा बखत चेतना रिफ्लॅक्टेड् दीखे तो चेतनाकुं मोह हो जाय के 'मैं तू' के 'तू मैं'?

प्रश्न :

काम-क्रोधका इन्टॅन्सिफिकेशन् मोह-मदमें होता हे. मोह-मदका इन्टॅन्सिफिकेशन् बताया ऐसे वैराग्यमें भक्ति और शरणागति का होगा? और सांख्यमें तप और योग का?

उत्तर :

मैं अपनी बात स्पष्ट करुं. ये काम क्रोध अहंता-ममताको पहलो डॅवलप्मॅन्ट् हे और ये सब (चार्ट) वाको इन्टॅसिफिकेशन् हे. ये जो रिलेशन् हे वो मैं यहां कॅरीफोर्वर्ड् नहीं कर रह्यो हूं क्योंके इन दोषन्के प्रबल होवेकी इन्टिग्रेटेड् सिस्टम् हे और ये साधनाएं हें ये इन्टिग्रेटेड् सिस्टम् बनाके चल रहीं हें. सो इन्टिग्रेटेड् सिस्टम् बनाके चलवेसु कोई भी आइटम् तुमने ड्रॉप् करी तो मोटरके एक टायरको पंक्चर होवेके बाद तीन टायर् होवें तो भी काम नहीं आवे. वो तकलीफ हो जाय. ये पूरी इन्टिग्रेटेड् सिस्टम् हे और एक्च्युअली ये भी इन्टिग्रेटेड् दोष हे. दोषन्की कोई एक इन्टिग्रिटी हे. वो समझावेके लिये काम क्रोध की मूलरूपता बताई.

प्रश्न :

अहंक्रोधमें इन्टॅन्सिफाय् होवेसु मोह होवे तो ये वन् वे ट्राफिक् हे पर मदमेंसु अहंकुं कम करवेसु रिवर्समें भी जा सके हे?

उत्तर :

मद कम कर दें तो जरूरी नहीं हे के क्रोध कम हो जायगो. क्रोध उतनो ही रहेगो पर मद नहीं होयेगो. क्रोध कम हो गयो पर याको ये मतलब नहीं के तुमकुं अहंको मोह नहीं बच जायगो. क्रोध रहित व्यक्तिमें भी अहंको मोह इन्टॅन्सिफाय् होवे हे. रिट्रोस्पॅक्टिव् इफॅक्ट् वाकी नहीं हे.

प्रश्न :

शरणागतिको भी गृहठाकुरके प्रति अहंक्रियाके रिस्पॉन्स्में कुछ तो रोल् जरूरी हे. आपने शरणागतिको ॲक्स्टेन्शन् गृहठाकुरके रॅफरेन्स्में स्वगृहको लियो वाको कुछ स्पेसिफिक् कारण हे?

उत्तर :

वाको कारण समझो. पूजामार्गवाली जो साधारण शरणागति हे, वो मर्यादामार्गसु कॉमन् हे. जब अपन्सु भक्ति नहीं निभे तब एज् ए अनुकल्प वाकुं अपन् शॅअर् करें हें. वहां तो स्पष्ट मंदिरको विधान हे **''जगन्नाथे विट्ठले च श्रीरङ्गे वेङ्कटे तथा, यत्र पूजाप्रवाहः स्यात् तत्र तिष्ठेत् तत्परः.''** (त.दी.नि. २।२५९) तो वहां घरको इम्पोर्टेन्स् नहीं हे. जो अपनो भक्तिमार्गीय प्रोग्राम् हे वामें लायेंगे तो सबसु पहले अपने घरके ठाकुरमें अपनी शरणागति होनी चहिये. अपने घरके ठाकुरमें शरणागति नहीं हे तो अपने प्रोग्राम् तहेत शरणागति नहीं केहवायेगी. मर्यादामें 'शरणगति' हे, अपने यहां 'शरणागति' हे. ''सुबहको भूलो सांझ घर आये तो भूलो नहीं केहवावे'' जो मर्यादामार्गमें साधारण शरण हे वो 'शरणागति' नहीं हे. दरअसल 'शरणगति' हे. आगति तो घरमें होवे, जावे घरसु. अपने तो शरणागति हे. ये बेसिक् डिफरेन्स् हे.

प्रश्न :

ज्ञान तिरोहित होवेके कारण अहंमोह हो रह्यो हे तो अहं मोहको रॅफरन्स् अहं अज्ञानसु रिलेटेड् हे? ज्ञान तिरोभावसु अज्ञान हो रह्यो हे ऐसो ले सकें?

उत्तर :

दुनियामें एक ज्ञान हे एक अज्ञान हे. अज्ञानकुं अपन् ज्ञान नहीं होवेसु इक्वेट् (समान) नहीं कर सकें. जैसे कोई कलर्को (रंग) नहीं होनो क्या कालो कलर् हे? फिज़िकली जब कोई भी लाइट् रिफ्लॅक्ट् नहीं करे तो वहां वा बखत सर्फेस् अपन्कुं कालो दीखे.

नॉर्मल् अपन् क्या समझेंगे? कोई रंग नहीं दीखनो कालो हे. पर ये बात या लिये गलत हे के प्रकाशको सारो क्लस्टर् हे, सराउन्डिंग् हे वाके बीचमें कोई पॉइन्ट् यदि प्रकाशकी सारी रेंजकुं एब्जोर्ब् कर रह्यो हे वा पॉइन्ट्में विदिन् द् प्रकाश जो अपनेकुं कालो रंग दीख रह्यो हे और प्रकाश नहीं दीखनो, अंधेरा दीखनो वो अंधेराको कालो रंग हे. दो काले रंगके नॅगेटिव् और पॉज़िटिव् क्लीयरकट् दो भेद आवें हें. काले रंगकुं अंधेरा नहीं केह सकें क्योंके सारे प्रकाशकी सराउन्डिंग्में ये कालो दीख रह्यो हे. तो अपन् ये तो नहीं केह सकें ये मॅजिक् भयो हे. बड़ी खूबसूरतीसु उतनेसे सर्फेस्पे सारी लाइट् ॲब्जोर्ब् कर रही हे वाके लिये कालो रंग दीख रह्यो हे. वो बात क्या के चारों ओर प्रकाश हे याके लिये अंधेरासु इक्वेट् नहीं कियो जा सके करके कालो रंग अपने आपमें और रंग हे. वो सिर्फ सारे प्रकाशको अभाव हे ऐसे अपन् अपनी इम्पॅरीकल् एवीडॅन्स्सु (अनुभवजन्य प्रमाण) नहीं केह सकें क्योंके अपन् क्लीयर् समझें के कुछ नहीं दीखनो और कालो दीखनो वामें अन्तर हे. कछु नहीं दीखवेकुं अपन् अंधेरा कहेंगे, कालो दीखवेकुं अपन् अंधेरा नहीं केह सकें. वो तो कुछ दीखनो हे और दीखवेमें जो कुछ कालो दीख रह्यो हे याकी एक अपनी अलग स्टेटस् हे. विब्ग्योर् (सप्तरंग)मेंसु कोई भी ये आइटम् नहीं हे. यही तो खूबसूरती हे. कोई भी कलर् नहीं हे फिर भी एज् ए कलर् स्टेन्ड् कर रह्यो हे यहां, दीख रह्यो हे. जा बखत ज्ञान नहीं हे वो अंधेरा हे और मोहवश अहं दीख रह्यो हे वो कालो रंग हे.

प्रश्न :

''विषयाः न रोचन्ते'' वो अहंक्रियाके रिस्पॉन्स्में उपादेयके ऍंग्लसु कही जाती बात हे क्या?

उत्तर :

कृष्णकी अहंक्रिया हें वा अहंक्रियाकुं अपने द्वारा दियो जातो रिस्पॉन्स् हे. जगजीतकी गज़ल हे -

''मैं ज़मी पर घना अंधेरा हूं
आसमानोंकी रोशनी तुम हो
अजनबी कैसे अजनबी तुम हो?
आरज़ू अब कोई नहीं बाकी
जुस्तजू मेरी आखरी तुम हो
ऐसा लगता हे ज़िंदगी तुम हो'

ये कृष्ण होनो चहिये. भले वो विषय कृष्ण होय पर मोकुं आरज़ू कोई नहीं बाकी रही. भूले-चूके अपन् यों केह दें के ''ऐसा लगता हे ज़िंदगी तुम हो'' तो बस ''कृष्णः रोचते'' हो जायगो. कृष्णके खुदके क्या लफड़ा हे वासु अपनुकुं क्या लेना-देना! कृष्ण जगत् बन्यो हे तो बनतो रहे जगत्, वो वाको लफड़ा हे अपनो नहीं. अपनुकुं तो ''जुस्तजू मेरी आखरी तुम हो''.

धरमवीर भारती हते धर्मयुगके सम्पादक. उनने बहोत एक अच्छो काव्य लिख्यो हे 'कनुप्रिया'. वामें राधाजी यमुना तट पर बैठी भयीं हें और निरन्तर उनकुं रूमर् (अफवाह) सुनाई दे रही हे के कृष्णने महाभारतमें हिंसाकाँड़ करवायो हे. राधाजी वाकुं एनेलाइज़् नहीं कर पावें के क्या लफड़ा हे? राधाजीने कही ''अंधेरामें जावेमें कृष्ण डरतो हतो, मैंने तो कई बखत घर तक पहोंचायो हतो. इतनी सब मारा-मारी करी कैसे?'' वाने कही ''कट-कटके बॉडी (शव) आ रही हें.'' राधाजीने कही ''ये कोई और करतो होयगो. मेरो कृष्ण ऐसो काम नहीं कर सके. वो तो बहोत डरपोक हतो. अंधेरामें जावेमें डरतो हतो.'' वामें राधाकी फिलिंगुकुं धरमवीरजीने बहोत अच्छी तरहसु समझाई हे.

अपनो तो ऐसो कृष्ण हें. जब अपन् रिस्पॉन्स् नहीं दें और अपन् कहें के ''तुमने असुर कैसे मारे और नाग कैसे नाथ्यो?''

ठाकुरजीने कही ''नाग नाथ्यो और असुर मार्यो तो वाके लिये तेरे घरमें बिराजवेकी मोकुं क्या जरूरत हे? वैकुठमें क्यों नहीं बिराजुं? तेरे घरमें याही लिये बिराजुं के बिल्लीसु डर लग रह्यो हे. बिल्लीसु डरवेके लिये तेरे घरमें बिराज्यो हूं.'' जब वाने कही ''असुर कैसे मारे तुमने?'' वाने कही ''चल छुट्टी भयी.'' ईगोको रॅजोनेन्स् खतम हो गयो. अपने घरमें वो बहोत मिनिमाइज़् ईगोके साथ बिराज रह्यो हे. बिल्लीसु डरे, अंधेरासु डरे.. पता नहीं काहे-काहेसु डरतो होयगो. वाकुं अपनुकु आश्वस्त करनो हे के डर मत, हम बैठे भयें हें तोकुं बचावेवाले. सेठिया भाटीया ट्रस्टीन् सु डरवेकी कोई जरूरत नहीं हे. वो आश्वासन देनो चहिये ठाकुरजीकुं के हम बैठें हें बचावेवालें. अपन् खुद डर रहें हें तो वो और डर जायगो. जिनके भरोसे मैं घरमें आयो हूं वो खुद डरे हे. खतम भयी दास्तान.

प्रश्न :

आपने कह्यो स्मृतिमें आशा और अनुभूति सन्निहित होवे हे तो स्मृतिमें आशा कैसे सन्निहित होवे हे?

उत्तर :

स्मृतिके कई पहलू हें. स्मृतिको सबसु पहलो पहलू रिटॅन्शन्को हे. अपन् अपनी जो अनुभूति हे वाको संचय करें हें. दूसरो पहलू हे रिमॅम्बरन्स्. तीसरो पहलु हे रिकलॅक्शन्. जाको तुमकुं रिकलॅक्शन् नहीं करनो हे वाकुं तुम रिमॅम्बर् नहीं करोगे. जाकुं तुमकुं रिमॅम्बर् नहीं करनो हे वाकुं तुम रिटेइन् नहीं करोगे. तो रिटॅन्शन् रिमॅम्बरन्स् और रिकलॅक्शन् स्मृतिके पाछे तीन आयाम हें.

चेन्नईमें मेरो प्रवचन हतो वामें मैंने एक मजेदार बात बताई हती. अपने तो हिन्दी गुजराती में इतनो प्रभेद नहीं हे पर अंग्रेज़ीमें बड़ो प्रभेद हे. भूत, भविष्य, वर्तमान तीन काल हें. वा भूतमें भी पाछो वर्तमान और भविष्य; वर्तमानमें भी पाछो भूत और भविष्य;

ऐसे भविष्यमें भी पाछो भूत और वर्तमान. तो मैंने कही हम लोग सब वर्तमानके भूत हें वो बात मत भूलियो. कुछ गोस्वामी वर्तमानके भविष्य होयेंगे. स्मृतिमें जो रिटेन्शन् हे वो भूत हे, रिमेम्बरन्स् हे वो वाको वर्तमान हे और रिकलेक्शन् फ्युचर् हे. यदि रिकलेक्शन् नहीं करनो हे तो काहेकी स्मृति करेंगे?

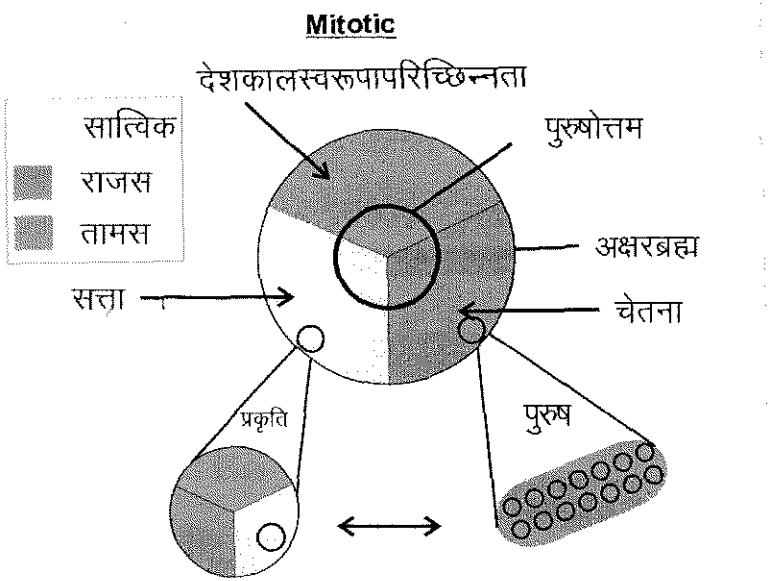

(शुद्ध उपादान मानें सच्चिदानन्द ब्रह्मकी विवेचना)

सबसु पहले या तथ्यकुं याद रखो मायटॉटिक्. ये (पुरुषोत्तम) अक्षरकी न्यूक्लियस् हे. ये अक्षरको सायटोप्लाज़म् हे. ये आनन्द सत् और चित् तीनों कॉम्पोनेन्ट् हें सच्चिदानन्द ब्रह्म होवेके कारण. ये 'ब्रह्मकी आनन्दरूपता' मानें वाकी सत्ता और वाकी चेतना की देश काल और स्वरूप में अपरिच्छिन्नता हे.

देशमें परिच्छिन्न मानें ये टेबल् यहां हे वहां नहीं हे. कालमें परिच्छिन्न मानें ये टेबल् जा दिन बन्यो, जितने दिन रहेगो उतने

दिन हे वाके बाद नहीं रहेगो. स्वरूप परिच्छिन्न मानें ये टेबल् हे पर आसन नहीं हे, टेबल् हे पर माइक् नहीं हे. परब्रह्मकी जो सत्ता हे वो चाहे अक्षरब्रह्मके लेवल्पे होय या पुरुषोत्तमके लेवल्पे होय वो देश-काल-स्वरूप के परिच्छेदसु रहित हे. सरल भाषामें समझनो होय तो कोई देश ऐसो नहीं हे के जहां परब्रह्म मानें पुरुषोत्तम और अक्षरब्रह्म नहीं होवे. कोई टाइम् (काल) ऐसो नहीं हे जा टाइम्में पुरुषोत्तम या अक्षरब्रह्म न होय और दुनियाको कोई नाम-रूप-कर्म ऐसो नहीं हे के जा नाम-रूप-कर्म अक्षर या पुरुषोत्तम को न होय. सो देश-काल-स्वरूपकी अपरिच्छिन्नता = आनन्द. अपनुकुं जो भी तकलीफ हो रही हे वो सारी तकलीफ देशिक परिच्छेदमें, अपने कालिक परिच्छेदमें और अपने स्वरूप परिच्छेदके कारण हो रही हे. यद्यपि मैंने कलर् लीजेन्ट्में सात्विक राजस तामस कह्यो हे वो यहांके लिये नहीं कह्यो हे.

मैं एक खुलासा करनो चाहु हूं जो महाप्रभुजीने कियो हे. सच्चिदानन्द ब्रह्मके सदंशमेंसु 'सत्त्व' प्रकट होवे हे, चिदंशमेंसु 'राजस' प्रकट होवे हे और आनन्दाशंमेंसु 'तामस' गुण प्रकट होवे हे. तीनों गुणनुको जो प्रपोर्शनेट् डिस्ट्रीब्युशनुको नाम 'प्रकृति' हे.

समष्टिपुरुष और व्यष्टिपुरुष को डिफरन्स् क्या? एक युनिवर्सल् कॉन्शीयस्नेस् हे और दूसरी इन्डिविज्युअल् कॉन्शियस्नेस् हे. (चार्ट समझायो हे) अपने प्रवचनकी शुरुआतमें लॉजिकल् पॉज़िटिविज़म्की (तार्किक भाववादी) बात बताई के जहां पॉज़िटिविज़म्की दादागिरी चलती हती. अब वो जमाना लद गये. अब सब लोग या बातकुं थोड़ो-थोड़ो माननो शुरु करें हें के जो जड़ सृष्टिको विस्तार हे वा विस्तारमें जा तरहसु एक सिस्टमॅटिक् डॅवलप्मॅन्ट् दिखलाई दे रही हे, वो अन्कॉन्सियस् हो नहीं सके हे. अब मॅचरली वो जो कॉन्सियस्नेस् हे वो अपनी कॉन्सियस्नेस् नहीं होयगी के क्लोरोफॉम् सूंघा दियो तो अन्कॉन्सियस् हो गये, माथेपे दंडा मार दियो तो

अन्कॉन्सियस् हो गये. वो तो अपनी कॉन्सियस्नेस्के बहोत क्षुद्र पॅरामीटर् हे. पर वो युनिवर्सल् हे या अर्थमें के वो बहोत सारी चीजनुकुं सस्टेन् कर सके हे. तो एक युनिवर्सल् कॉन्सियस्नेस् (समष्टिपुरुष या समष्टिचेतना) हे. वो युनिवर्सल् कॉन्सियस्नेस् यदि नहीं होय तो जगत्में जो भी कुछ डॅवलप् भयो हे वो ईश्वरने कियो के शैतानने कियो के मैंने कियो के अल्लाहने कियो के भगवान्ने कियो, सायन्सके हिसाबसु सब इम्मॉटीरीयल् बात हे. सायन्स् सिर्फ इतनी बात केह रह्यो हे के कोई एक युनिवर्सल् कॉन्सियस्नेस् होनी चहिये. अदरवाइज़् इतनो कल्क्युलेटेड् डॅवलप्मेन्ट् हो नहीं सके और या सारे सृष्टिके विकासमें कल्क्युलेशन् दिखाई दे रह्यो हे. जो बात मैंने आपकुं बताई के विकास जैसे ही अपन् कहेंगे तो विकास नहीं मान रहें हें सरक्युलर् मान रहें हें. 'विकास' ये टर्मिनोलॉजी स्ट्रेट् लाइन् मानवेवालेनुकी मोहकी टर्मिनोलॉजी हे. वामें भले अपनो डिफरेन्स् ऑफ् ओपिनीयन् होय पर एक बात साफ-सुथरे तौरपे समझो के सायन्स् तो हर लेवल्पे — फिज़ीकल् कॅमिकल् बायोलॉजिकल् सोशियल् इकोनॉमिकल् सायकॉलॉजिकल् — विकास मान रह्यो हे. हर लेवल्पे सायन्स् एन्थ्रोपोलोजिकली (नृतत्त्व विज्ञान/मानव विकास विज्ञान) थियरी ऑफ् इवोल्युशन् प्रपोज़् कर रह्यो हे. जब थियरी ऑफ् इवोल्युशन् यदि सच्ची हे तो इवोल्व् कहां तक होवे हे? जैसे रेस्को घोड़ा दौड़ रह्यो हे तो 'विन्'को साइन्-बोर्ड कहां हे? वो जब तक नहीं होयगो तब तक रेस् कैसे पता चलेगी के वो यहां तक दौड़के आयो तो 'विन्' कहलायगो. 'विन्' साइन्बोर्ड यदि नहीं होय तो घोड़ा दौड़्यो, ये कैसे पता चलेगी?

आइन्स्टाइन्की यही समस्या हती के यदि आकाशमें सिर्फ दो विमान हें और कुछ नहीं हे और दो विमान साथ चल रहें हें. तो वे दोनों विमान चल रहें हें के नहीं चल रहें हें सिद्ध नहीं होयगो. क्योंके चलवेको मतलब क्या हे? एक स्थिर हे और दूसरो चल्यो. पहले यहां हतो यहांसु यहां आयो. तो कोई टाईम् स्पेस्

मॅटर् में माइल्स्टोन् होने चहियें. जो स्थिर होय उनके रॅफरेन्स्में कोई चीज चलती होय तो चलती मानी जाय. यदि दो विमान सायमल्टेनियस्ली आकाशमें चल रहें हें, जहां कोई माइल्स्टोन् नहीं हे, वे चल रहें हें के नहीं चल रहें हें वो सिद्ध नहीं होयगो. सिद्ध नहीं होयगो इतनो ही नहीं हे पर; चलवेमें लफड़ा क्या हे? थियरीके हिसाबसु समझो के चलवेके लिये एनर्जी चहिये हे. अब यदि चल नहीं रहें हें तो एनर्जीको क्या भयो? करके वाने 'थियरी ऑफ् रिलेटिविटी'को सिद्धान्त दियो. 'थियरी ऑफ रिलेटिविटी'को सबसु बड़ो राज़ ये हे के वो आपसके रिलेशन्में नहीं चल रहे होयेंगे पर कोई पॉइन्ट् ऐसो हे के जामें चल रहे हे. यदि वर्ल्ड् इवोल्व् हो रह्यो हे तो 'विन् साइन्बोई' तो चहिये के नहीं चहिये? और 'विन् साइन्बोई' रख्यो कौनने? कॉन्सिअस्नेस्के बिना आयगो कहांसु? वाके लिये सायन्टिस्ट् लोग भी अब कबूल कर रहें हें के कुछ 'युनिवर्सल् कॉन्सिअस्नेस्' हे जो या इवोल्व्मॅन्ट्को आइडियल् हे. जो इवोल्व्मॅन्ट्कुं लेन्ड्मार्क् बता रही के यहां तक तुमकुं इवोल्व् होनो हे. कोई सायन्सकी ऐसी ब्रान्च् नहीं हे जामें 'विन्'को साइन् नहीं दिखातो होय! तो या रहस्यकुं जा बखत अपन् समझेंगे तो समझमें आ जायगो, एक युनिवर्सल्-कॉन्सिअस्नेस् हे और एक अपनी इन्डिविज्युअल् कॉन्सिअस्नेस् भी (व्यष्टिपुरुष या व्यष्टिचेतना) हे. वा युनिवर्सल् कॉन्सिअस्नेसकुं 'पुरुष' कहें हें और युनिवर्सल् मेटरकुं 'प्रकृति' कहें हें.

पर ये जो रिप्रोडक्शन् हे ये माय्टोटिक् हे. सिम्पल् हे. शुद्ध हे. यामें दूसरो कोई ॲलिमेन्ट् आ नहीं रह्यो हे. कोई कॉम्लेक्सिटी आ नहीं रही हे. सिम्पली ऐसे भयो हे, कुछ छुप्यो हे, कुछ प्रकट हे और वो प्रकट हो गयो हे. ये वाको स्ट्रक्चर् हे. ये मूलमें सच्चिदानन्द हे. जो आनन्द हे वो 'तम्' बन जाय हे. जो चेतना हे वो 'रज्' बने हे. और जो सत्ता हे वो 'सत्त्व' गुण बने हे. याके लिये अक्षर(ब्रह्म)को शुद्ध सत्त्व

ऐसो रॅफरन्स् आवे हे.

''विशुद्धसत्त्वं तव धाम शान्तं, तपोमयध्वस्तरजस्तमस्कम्।''

(भाग.पुरा.१०।२४।४)

''शुद्धं रजस्तमोभ्याम् असम्पृक्तं विशेषेण शुद्धं सत्त्वेन अपि असम्पृक्तम्। तत् तव धाम स्थानं ''सत्त्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितमि''ति, तत्र भगवान् आविर्भवति इति वासुदेवः किञ्च धाम तेजोऽपि सात्त्विकमेव भगवत्तेजः सत्त्वमेव वा। किञ्चेदं सत्त्वं शुद्धसत्त्वान्तरेण अपि अमिश्रितं तद् जीवस्थं तरतमभावापन्नं भवत्यत इदं सत्त्वं परमकाष्ठापन्नमेव।

(सुबो.१०।२४।४)

'शुद्ध सत्त्व'को मतलब ऐसी सत्ता याने बेअर् एग्ज़िस्टेन्स् नथिन्ग् एल्स् बट् शुद्ध सत्त्व. और 'मिश्रित सत्त्व' को मतलब के जहां तम् और रज् सु वो मिक्स्-अप् भयी. तो या लेवल्पे आके जो गाड़ी चलेगी वामें मिश्रण आनो शुरु होयगो.

क्यों यहांसु इन्ट्रोड्युस् कियो हे? यहां तक भगवान् कबूल कर रहें हें. अब अपनकुं भयो के यहां मिश्रित हो गयो पर या ही लिये शास्त्रमें याको स्पष्ट खुलासा कियो के ये सब अमिश्रित शुद्ध हे. क्योंके इनको ईक्वल् प्रपोर्शन् (समता) प्रकृति हे. पर इनमें डिस्टर्बन्सके कारण जो अनईक्वालीटी (विषमता) आवे हे वासु रेस्ट् ऑफ् द् रिप्रोडक्शन् आवे हे. तो ये एक सेट्-अप् हे. और ये आवे हे वाको भी कारण हे के ये पुरुष और प्रकृति में पाछो इन्टॅक्शन् हे. और 'इन्टॅक्शन्'को मतलब जैसे कांचके सामने अपन् खड़ें होंय तो कांचको जो फ्रन्ट हे वामें अपनो रिफ्लॅक्शन् आवे. कांचके बॅकमें जहां वो सिंदूर लगी भयी होवे वहां रिफ्लेक्शन् नहीं आवें. सो प्रकृतिको 'सत्त्वगुण' (कांचके) फ्रन्टमें हे. वामें पुरुष रिफ्लॅक्ट्

होवे. पीछे सिंदूर हे वो ग्लास्कुं मिरर् बना रही हे. तो वो रिफ्लेक्टिव् मिरर् हो जाय ऐसे प्रकृतिको जो ग्लास् हे वाकुं मिरर् ये तामस और राजस् बनावें और सत्त्व वाके कन्फ्रंटिंग् हे युनिवर्सल् कॉन्सियस्नेस्के कारण, करके वामें वो रिफ्लॅक्ट् होवे हे. ऐसे दोनोंको एक तरहको इन्टरेक्शन् बतायो हे. ये सारो माय्टोटिक् हे. (पहले) माय्टोटिक् आयो, (याके बाद) रिप्रोडक्शन् (आयो) नॅक्स्ट् (और अब) ये (METOTIC) मायोटिक् हे. ये प्रकृति पुरुषके इन्टरेक्शन् अपन्ने देख लिये.

('तम्'की अपनी तात्त्विक दृष्टि)

अब सत् चित् आनन्द हतें वामें आनन्दके बारेमें एक और बात बता दूं. महाप्रभुजीने ये प्रॉब्लेम् बड़े जोर-शोरसु उठाई हें. आनन्दांश कन्वर्ट् होके तमोगुण कैसे हो गयो? आनन्दकुं तो अपन् इतनो ग्लोरिफाय् कर रहें हें. **''आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्, आनन्दाद्धयेव खलु इमानि भूतानि जायन्ते, आनन्देन जातानि जीवन्ति''**. (तैत्ति.उप.३।६) वो आनन्द तम् कैसे हो गयो? और महाप्रभुजी बड़ी अच्छी बात वामें समझावें हें के जो देश-काल-स्वरूपकी अपरिच्छिन्नता हे वो अपरिच्छिन्नता नष्ट भयी. 'नष्ट' मानें तिरोहित भयी. तो क्या प्रकट होयगो? देश-काल-स्वरूपको परिच्छेद. वो परिच्छेद माइन्ड्कुं क्लोज़्-अप् कर देगो, स्टोप्. हवे पछी शुं? कॅन्सरवालेकुं केह दे के अब तुम मरोगे तो वाकुं दुःख हो जाय के ऐसे क्यों बोले! अरे भाई कॅन्सर् भयो तो मरवेवालो तो हे ही! वो सहन नहीं हो सके. माइन्ड् क्लोज़्-अप् हो जाय. क्योंके अपनो एग्सिस्टेन्स्को (स्वअस्तित्ववृत्तित्व) नेचर् हे. जीनेके लिये अपने भीतर अदम्य स्वभाव भर्यो भयो हे, एग्सिस्ट्कुं एग्सिस्ट् रहवेको. राधाकृष्णन् कहे हे "देट् विच् इज़् बिल्ट् फॉर् एवर्, इज़् फॉर् एवर्-बिल्डिंग्. देट् विच् हेज़् ए बिइन्ग्, इज़् फॉर् एवर् बिइन्ग्. वा तरीकेको अपनो एक नॅचरल् इन्क्लीनेशन् हे. वो इन्क्लीनेशन् ब्रह्मको स्वभाव हे. माइन्ड् इट्. वो ब्राह्मिक अहं हे. पर वो ब्राह्मिक अहं अपने भीतर या बातकुं सुनते ही एकदम स्तब्ध हो जाय जैसे मोबाइल्के जामर् जाम् कर दे हे. ऐसे सारो

जाम् हो जाय हे. अपनो इन्टरेक्शन् खत्म हो जाय वाके कारण आनन्द तम् बने हे. महाप्रभुजीको ये मेटाफिज़ीकल् एक्सप्लेनेशन् हें.

पर एक पोएटिकल् जस्टिफिकेशन् महाप्रभुजीने और दियो हे के आदमीकुं जब भी मोह होवे हे तो आनन्दमें होवे हे और जब भी मोह होवे तो तामस हे. बड़ो पोएटिकल् मीठो जस्टिफिकेशन् हे के आदमी मुग्ध काहेपे होवे हे? तो कहें के आनन्द होय तो आदमी मुग्ध हो जाय हे. जब भी तुम ढोकला खा रहे हो वाकी अवेरनेस् तुमकुं कभी मुग्ध नहीं करेगी पर; ढोकलामें स्वाद आ गयो, थोड़ी देरके लिये दुनिया भूल जाय आदमी आ हा हा! मजा आ गई, दुनियाकुं अपन् भूल जायें हें. वो आनन्दके ही कारण तो मोह पैदा होवे हे. कोई भी विषयको जामें जाकुं आनन्द आ गयो वामें वो सारी दुनियाकुं भूल जाय. महाप्रभुजी याको पोएटिक् जस्टिफिकेशन् और दे हें के ये तो आनन्दको स्वभाव हे के सब चीज भुला दे. वो आनन्द 'तम्' बन गयो तो तम् भी सब चीजकुं भुला दे और आनन्द भी सब चीजकुं भुला दे हे. पर देशतः कालतः स्वरूपतः जो अपरिच्छिन्न हतो वो परिच्छिन्न हो गयो. तेरेकुं तेरे होवेमें परिच्छेद दिखलाई दे रह्यो हे के तू यहां (प्रवचनस्थल-सुखधाम) हे, चीराबजारमें (मुम्बईके एक स्थलको नाम) नहीं हे. तेरेकुं तेरे जन्म-मरणको परिच्छेद अपनी चेतनामें भासित हो रह्यो हे. और जो भी तोकुं आनन्द आ रह्यो हे वो भी परिच्छिन्न ही तो आ रह्यो हे. वो 'परिच्छिन्न आनन्द' = सुख हे. 'अपरिच्छिन्न सुख' = आनन्द हे. जा चीजकुं अपन् चाह रहें हें वाकुं भी एक टेम्परी फ्रेम्वर्कमें ही चाह रहें हें. कितनी अपनी खतरनाक स्थिति हे के जा चीजकुं अपन् सबसु ज्यादा अच्छी मानतें होंय जैसे ढोकला ही ले लो. एक आधे घंटा खाली एक ढोकलाकुं चाबते रहो देखो कितनो कष्ट होयगो. अपन् क्या करें हें? आनन्दकी स्पृहामें वो चाबे बिना जीभपें धर्यो और डाल अन्दर. लॅटर्-बॉक्सकी तरह डालतें जायें, डालतें जायें. ऐसे अपन् पेटमें ढींच लें हें. चाबनो शुरु करें और दो-चार

मिनट् तो बड़ो मजा आवे पर आधे-पौना घंटा एक ढोकलाकुं चाबते रहो, आपकुं ढोकला भानो ही बंद हो जायगो. ये वाकी परिस्थिति हे. तो अपनो सुख या तरीकेको हे के जा चीजकुं अपन् चाह रहें हें वाकुं भी एक टॅम्परारी फ्रेम्वर्कमें ही चाह रहें हें. वासु ज्यादा वो गले पड़वे लग जाय तो भारी पड़ जाय.

प्रश्न :

चेतना तम्को अनुभव करे तो प्रकृतिमें परिछिन्नता कैसे आवे ?

उत्तर :

अपन्ने देख्यो प्रकृति खुद सदंश हे. अब प्रकृति सदंश होवेके कारण वामें चेतन पुरुष रिफ्लॅक्ट् भी हो रह्यो हे. रिफ्लेक्ट् होवेके कारण प्रकृति तो अनुभव नहीं करेगी. प्रकृतिके पास तो मटीरियल् तैयार हे, वाकी असर यहां पड़ रही हे.

Meiotic

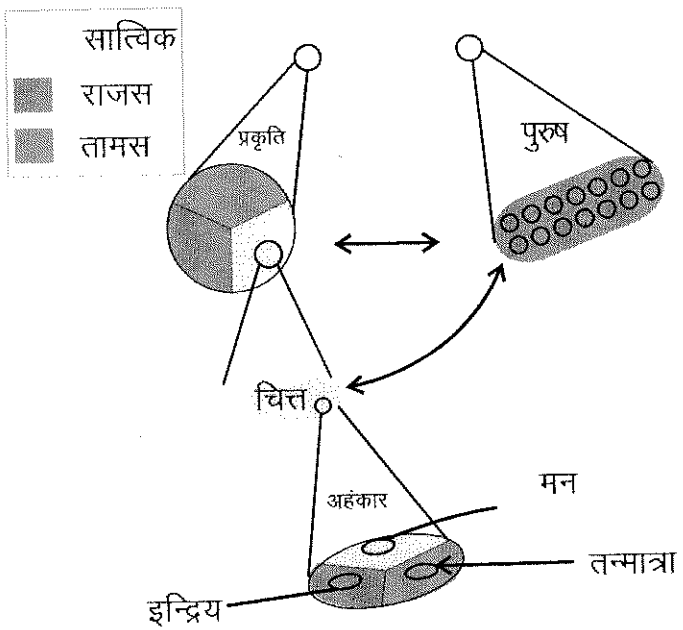

ये वाको संदर्भ हे. जब ये इन्टॅरॅक्शन् हो गयो तब यहां रिफ्लॅक्शन् पड़्यो. वाके कारण प्रकृतिके सदंशमेंसु 'चित्त' पैदा होवे हे. वा चित्तको भी पुरुषके साथ माइक्रो और मॅक्रो दोनों लेवल्पे इन्टॅरॅक्शन् होवे हे. वाके कारण चित्तमेंसु अहंकार पैदा होवे हे.

जा अहंकारके पाछे तीन प्रोडक्ट् हें: मन तन्मात्रा और इन्द्रिय. ये अपनो सॅट-अप् हे. चित्त क्या हे? चित्त प्रकृतिके सदंशमेंसु पैदा भयो हे. सदंशमेंसु पैदा भयो हे करके चित्तमें भी चेतनाकुं रिफ्लॅक्ट् करवेकी मॅक्जिमम् कॅपेसिटी हे. (मिरर्के जैसी) और जब चित्तमें रिफ्लॅक्ट् होवे हे तब वामेंसु अहंकार पैदा होवे हे. (चार्टकुं देखके) वा चित्तके भीतर अहंकार पैदा होवे हे. चित्तके बाहर अहंकार नहीं पैदा होवे. चित्तमें अचानक अहंकार पैदा होवे क्योंके चित्त जब निरन्तर याके (अहंकार) साथ कॉन्टेक्ट्में आवे तो वामें सॅल्फ् अवॅरनेस् आवे हे के "अहम् अस्मि अहम् अस्मि अहम् अस्मि". वो अहंकार जब पैदा होवे तब वामेंसु फिर चोइस् पैदा होवे के "यदा अहम् अस्मि तदा कं पश्यामि?" यदि मैं हूं तो कौनकुं देखु? अब जैसे अपने बच्चामें अहंकार पैदा भयो तो तुरंत वाकुं होवे के अब मैं कौनकुं देखु? जो चीज चुभ रही हे वाकुं देखु के जो चीज कम्फर्टेबल् हे वाकुं देखु? जो मोकुं रुवा रह्यो हे वाकुं देखु के मोकुं हँसा रह्यो हे वाकुं देखु? जो मोकुं डरा रह्यो हे वाकुं देखु? के जो मोकुं दूध पिवा रह्यो हे वाकुं देखु? वो बच्चा कैसे सिलॅक्ट् करे हे? ऐसे अपनो अहं सिलॅक्ट् करे हे.

वो सिलॅक्शन्के जो फंक्शन् हें वो 'मन' आ जाय हे और ये इन्टॅरॅक्शन्को जो फंकशन् हे, थ्रु द् (वाके द्वारा) इन्द्रिय और टुवर्डस् तन्मात्रा जो सॅन्सेशन् हे, वाके साथ अपनी इन्द्रियन्सु अपनो अहं इन्टॅरॅक्ट् शुरु करे हे. और वो ही अहंको गेमुट् हे. बुद्धि चित्तको पार्ट हे.

प्रश्न :

वैराग्यना अभावथी राग उत्पन्न थाय छे अने कामरूपी दोष आवे छे अने ए दोष दूर करवानो उपाय वैराग्य कई रीते? कारणके आपणां साधनथी कांई वैराग्य दूर नहोतो थयो तेथी आपणे वैराग्यरूपी साधन कई रीते करी शकसु?

(वैराग्यके अभावसु राग उत्पन्न होवे हे और काम रूपी दोष आवे हे. वो दोष दूर करवेको उपाय वैराग्य कैसे हो सके? क्योंके अपने साधनसु वैराग्य दूर नहीं भयो हतो. वासु अपन् वैराग्यरूप साधन कैसे कर सकें?)

जवाब :

(चार्टमें) देख! वैराग्य भगवान्के आनन्दके तिरोधानकी इच्छासु तिरोहित भयो और वाके कारण विषयमें ममता आयी, काम आयो. ये तो भगवान्ने जो तिरोधानकी क्रिया करी वा क्रियासु पैदा होती क्रिया हे. अब तुमकुं विवेक जग्यो तो तुमकुं लगेगो के नहीं; वैराग्य होनो चहिये. और विवेक तो कितनी जल्दी जग जाय हे! एक साधारण बात समझो के जरा भी अपनो काम अपन्कुं उल्टी थप्पड़ लगवावे तुरंत विवेक जग जाय. नहीं नहीं, ये हमारे लिये नहीं हतो! यामें ज्ञानकी भी जरूरत नहीं हे. दो-चार लप्पड़की जरूरत हें. अपन् तो अपने कामकुं तृप्त करवेकी प्रक्रियामें होवें हें. पर जरा भी लप्पड़ लगे तो तुरंत वैराग्य आ जाय के नहीं ऐसो तो करनो नहीं चहिये. तो वैराग्य आ जाय. वो वैराग्यको आनो, शायद तो विद्या हो सके हे. कोई कारणसु भी वैराग्य आयो—लप्पड़के कारण आयो, समझके कारण आयो—वो विद्या हो सके. पर वा वैराग्यको भक्तिमें तुमने एडवान्टेज् नहीं लियो तो पुष्टिमार्गमेंसु तुम गये.

येही लिये अपने यहां चौरासी-दोसोबावन वैष्णवन्की वार्ता उठाके देख लो के या सिच्युएशन्में जहां-जहां वैराग्य आयो हे और जब-जब

महाप्रभुजीको एप्रोच् कियो हे, तब महाप्रभुजीने टोकके कही हे के भक्ति करो. राणाव्यासको प्रसंग देख ले, वैराग्य आ गयो. कृष्णदास अधिकारीको प्रसंग देख ले, वैराग्य आ गयो. जिन-जिनकुं वैराग्य आयो उन-उनकुं महाप्रभुजीने वैराग्य आते ही पीठ नहीं थपथपाई के अच्छा बहोत अच्छी बात हो गई वैराग्य आ गयो! (चार्टमें दिखाके) तो वा लिये वो भक्ति और कृष्णसेवा वहांसु (वैराग्यमेंसु) आ रही हे. अब वो तुम्हारे विवेकसु आ रही हे के शायद एक्शन्-रिएक्शन् के प्रोसेस्में आ रही हे, ऑटोमेटीकली नहीं आ रही हे. पर कल जब अपन् सुबोधिनीपे जायेंगे तब ये रहस्य पता चलेगो के अपने अहंको मिकॅनिज़म् कितनो सुंदर हे कि जो ऑटोमेटीकली आ रह्यो हे वाकुं भी तुम अपने अहंसु जा बखत करो वा बखत तुम्हारे वॉलेन्टरी फंकशन्में ऑटोमेटीकली आ रह्यो हे.

वाको एक प्रसिद्ध उदाहरण दउं के साँस तुम्हारी चल रही हे. मानें ऑटोनोमस् नर्वस् सिस्टम्सु साँस चल रही हे. तुम्हारी इच्छासु चल रही हे? इच्छासु साँस चल रही होती तो आदमी कभी मरतो ही नहीं. लेतो ही रहतो भीष्मकी तरह साँस तो मरतो कैसे? तो इच्छाके बिना साँस चल रही हे. इच्छाके बिना साँस चलती होय तो भी तुम प्राणायाम करनो होय तो इच्छासु साँस ले सको के नहीं? भस्त्रा (भस्त्रिका प्राणायाम) कर सको के नहीं? क्यों कर सको? क्योंके जो ऑटोमेटीकली चल रह्यो हे वाको तुम्हारे अहंकारसु कोई न कोई इन्टॅरॅक्शन् भी एस्टाब्लिश् कियो गयो हे. तो एक लेवल्पे जो ऑटोमेटीकली चल रह्यो हे वाकुं दूसरे लेवल्पे तुम चाहो तो वॉलेन्टरी भी चला सको हो. वाके लिमिटेशन् होयेंगे, अनलिमिटेड् स्कोप् नहीं हे. वो बात सब जगा लागू होयगी. येहि लिये कल कही हती के पेशाब भी अपने सामर्थ्यसु नहीं कर सकें हें. जब किडनी भरे हे तब किडनीमें वो प्रेशर् आवे. और भरके जब दबनी शुरु होवे तब पेशाब आवे. अपनी कोई इच्छासु पेशाब

भी नहीं आवे हे. पर अपन् युरीन्-टेस्ट् करानें जावें तब कर नहीं सकतें होंय ऐसो नहीं हे. जो ऑटोमेटीकली आ रही हे वाकुं भी अपन् वॉलेन्टरी कर सकें हें. ऐसे कई लेवल्पे अपन्में ऑटोमेटीकली फंकशन् हो रहें हें. बच्चाकुं ऑटोमेटीकली आ जाती होवे हे. वाकुं बहोत दिन बाद वो कन्ट्रोल्में आवे. पेशाब ऑटोमेटीकली नहीं करनी चहिये, अपनुकुं वॉलेन्टरी करनी चहिये ये बात बच्चानुकुं बहोत लेट् समझमें आवे हे. तो डेथ् भी ऐसे ऑटोमॅटिक् हो सके हे वॉलेन्टरी हो सके हे. दोनों तरहकी सिस्टम् अपने यहां प्रोवाइड् करी गई हे.

बहोत सारे ऑटोनर्वस् सिस्टम्के फंकशन् हें उनकी अपने वॉलेन्टरी फंक्शन्सु थोड़ी कुछ लिंक् जोड़ी गई हे और वो कितनी खूबसूरत प्लानिंग् हे के तुम भूल जाओ तो वो (ऑटोनर्वस् सिस्टम्) खुद करेगो. और नहीं तो, तुमकुं इच्छा होय तो तुम भी कर सको. ये कितनी बड़ी प्लानिंग् हे. सोचें तो अपनुकुं चकित होनो पड़े. नहीं तो लॉजिकली सोचो के जो ऑटोमॅटिक् चल रही हे वो वॉलेन्टरी नहीं चलेगी. जो वॉलेन्टरी चल रही हे वो ऑटोमॅटिक् नहीं चले हे. पर बायोलॉजीने अपने भीतर कितनो खूबसूरत बॅलेन्स् एस्टाब्लिश् कियो हे के कितने सारे फंक्शन् ऑटोमॅटिक् चल रहें हें और उनमें कहीं-कहीं जगासु अपन् कितनो वॉलेन्टरी फंक्शन्सु कन्ट्रोल् कर सकें हें. ये कोई साधारण बात हे? वो 'ब्राह्मिक अहं'के बिना 'पारमात्मिक अहं'के बिना 'भागवती अहं'के बिना ये कैसे पॉसिबल् हो सके? मशीन् अभी तक ऐसी ज्यादा नहीं बनी के जो ऑटोमॅटिक् भी होय और वॉलेन्टरी भी होय! एक कोई व्यवस्था संभली भयी हे और वा व्यवस्थामें तुम्हारो कुछ अहंको रोल् दे दियो गयो हे. ये वाको सेट्-अप् हे. वाके कारण हो सके.

प्रश्न:

या हिसाबसु साधनरूपा वैराग्य और मूल वैराग्यमें क्या अंतर

आयगो?

उत्तर:

ब्रह्मको वैराग्य कभी सच्चो वैराग्य हो नहीं सके खोटो ही वैराग्य होय. वाको कारण क्या? ब्रह्मके अलावा कुछ होय तो वामें ब्रह्म विरक्त होयेगो. विरक्त कौन हो सके हे? अपने अलावा कोई वस्तु होय वामें व्यक्ति विरक्त हो सके हे. यदि ब्रह्मके अलावा कोई हे ही नहीं तो ब्रह्म विरक्त कैसे होयगो. विरक्त होनो वाकी सॅन्सिटिविटी हे, वाको सॅन्सेशन् नहीं हे. अपने लिये विरक्त होनो सॅन्सिटिविटी होती तो आदमी विषयानुरक्त नहीं होतो. अपने लिये वो सॅन्सेशन् हे. अपनो वैराग्य ही सच्चो वैराग्य हे. अपने पासमें अनुरक्त और विरक्त होवेके लिये दस ऑल्टरनेटिव् हें वामें जब विरक्त होवें तब अपनो सच्चो 'वैराग्य' केहवावे.

कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना।
अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्॥

(कृष्ण गृहठाकुर और अपने अहं कुं मॉल्ड् करवेकी प्रक्रिया)

कल अपन्ने जो कुछ विचार कियो यामें मुख्य मुद्दा ये हतो के उपादानात्मक अहंकर्ता और उपादानात्मिका अहंक्रिया सु उपादेयात्मक अहंकार कैसे पैदा होवे हे जा अहंकारके कारण अहंकर्ता और अहंक्रिया को बोध होवें हें.

कल ये भी बताई हती के सबसु पहले अपने अहंके बारेमें अहंको सॅन्सेशन् होवे हे. अहंके बारेमें सॅन्सेशन् होवेके बाद वो विषयको अनुभव करे हे. जब विषयको अनुभव होवे तब अहं अपनो कन्फर्म् होवे हे. वाके बाद वो विषय तरीके कन्फर्म् करे हे. या प्रक्रियामें अहंता-ममता कैसे पनपे, फिर काम-क्रोध कैसे पनपे और वाको इन्टॅन्सिफिकेशन् कैसे होवे और वाको एन्टिडोज़् क्या हे? वगेरे वगेरे कल आपकुं बताई.

एक बात ध्यान देवेकी हे के माँकुं सबसु पहले बच्चा विषय तरीके पहचाने. क्योंके वाके साथ प्रथम इन्टॅरॅक्शन्में इन्वॉल्व् होवे हे. और माँके विस्-अ-विस् वाको अहं कन्फर्म् होवे हे. अब वो नॅसेसरी कन्डिशन् नहीं हे. यदि सर्वेन्ट् या आया, या तरहसु पालते होय तो वाके विस्-अ-विस् हो सके हे. यामें माँ नॅसेसरी कन्डिशन् नहीं हे पर टॅन्टेटिवली कन्डिशन् हे. माँ याके लिये पहलो इन्टॅरॅक्शन्को पॉइन्ट् होवे हे.

वा सन्दर्भमें एक मजेदार बात बताउं. पलनाको बहोत सुन्दर पद हे. **''बारी मेरे लटकन पग धरो छतियां''** वामें मजेदार खेल

आवे हे, माँ बच्चाके साथ खेले हे. ''यह मेरी यह तेरी यह बाबा नन्दजुकी, यह बलभद्र भैयाकी, यह ताकी जो झुलावे तेरो पलना.'' ये माँ बच्चाके साथ कैसे खेले हे! बच्चाकुं जा बखत ये बात समझाई जाय के ये उँगली तेरी हे, ये मेरी हे. अब बच्चा कौनसी उँगली पकड़े हे? जो पकड़े हे वाके ऊपर बच्चाको कुछ-न-कुछ पॉइन्ट् ऑफ् अट्रॅक्शन् होवे हे. क्योंके अपन्ने वाके सामने पांचो उँगली धरीं. अब बच्चा जो उँगली पकड़े वासु बच्चाको इन्ट्रेस्ट् कहां हे वो टेस्ट् हो सके. (चाइल्ड् सायकोलोजीके हिसाबसु) कितनी खूबसूरत और मीठी वॅरायटी हे के बच्चा खुदकी उँगली पकड़े के मम्मीकी उँगली पकड़े के पप्पाकी उँगली पकड़े अथवा जो पलना झुला रह्यो हे वाकी पकड़े?

अपनी सेवामें कृष्णको ईगो जगावेकी प्रक्रिया और अपनुकुं कृष्णलीलामें ईगो जगावेकी प्रक्रिया के ''यह ताकी जो झुलावे तेरो पलना'' ये तो समकालीन संदर्भमें आती भयी बात हे. तो एकोर्डिन्ग्ली कृष्णके अहंमें ठाकुरजीके अहंकुं मोल्ड् करनो और अपने अहंकुं वा कृष्णलीलाके मूड्में मोल्ड् करनो बड़ी मीठी प्रक्रिया हे.

जो उँगली बच्चा पकड़े हे वामें बच्चाको इन्ट्रेस्ट् कौन गवर्न् कर रह्यो हे ये पता चले. वा तरहसु बच्चाको ईगो कन्फर्म् होवे हे. अपने अहंके पनपवेकी प्रक्रिया हे. बच्चाकी बचपनसु या तरहसु रोल्-मॉडेल् सिलॅक्ट् करवेकी प्रक्रिया हे. बच्चा अपनो कौनसो रोल्-मॉडेल् सिलेक्ट् करे हे. आज-कल रिवर्सल् ऑफ् ऑर्डर् हो गयो हे. आजकी तारीखमें पुष्टिमार्गमें *ये मेरी (ठाकुरजीकुं ठेंगा दिखाते भये) ये तेरी, ये बाबा ट्रस्टीजुकी, ये मनोरथीकी, ये अधिकारीकी जो लावे तेरे सब धंधा. वारी मेरे लटकन पग धरो छतियां.* अहंकी विकृत प्रक्रियाके कारण ये सब उधम भयो हे.

(स्वस्थ अहंकारके लिये रोल्-मॉडेल्को महत्व)

अपनो रोल्-मॉडेल् बच्चा फॅमिलीके एट्मोस्फियर्में चुने हे और वा हिसाबसु अपने ईगोकुं संवारे हे. माँ जब अपने बच्चासु या तरीकेसु खेलती हती तो बच्चाको वा तरीकेको ईगो संवरतो हतो. याही लिये अपने यहां ये बात कही जा रही हती के "यथा राजा तथा प्रजा". जैसे बाप ऐसे बेटा, जैसो गुरु वैसे शिष्य वगेरे बात कही जाती हती वो याहीके कारण कही जाती हती. क्योंके पुराने रोल्-मॉडेल् हते जिन रोल मॉडेलनुकुं बनाके अपने ईगोकुं लोग संवारते हते. आजकी अपनी परिस्थितिमें ये सारी विकेट् डाउन् हो गयीं हें. आज-कल अपने हीरो-हीरोइन् रोल्-मॉडेल् हें, क्रिकेटवालें रोल्-मॉडेल् हें. ऐसे रोल्-मॉडेल् बदल गये तो अपनो ईगो भी वा हिसाबसु अपन् संवारें हें. वा तरहसु बच्चा ऑटोसजेशन् देवे हे. ओवर् एक्सपोज़िशन्के कारण आखी सिच्युएशन् बदल गई हे. बच्चा पहले फॅमिलीमें बड़ो होतो हतो अब ग्लोबलाइज़ेशन्के (वैश्वीकरण) वातावरणमें बड़ो हो रह्यो हे. रोल्-मॉडेल् बदल गये. पर अपने अहंकारकुं गढ़वेमें रोल्-मॉडेल्को मेजर् रोल् हे. अपन्ने अपनो रोल्-मॉडेल् कौनसो चुन्यो? ये बात खास ध्यान देवेकी हे. अक्सर क्या होवे हे के जब अपन् कोई स्वस्थ रोल्-मॉडेल् चुनें हें तो अपनो अहं स्वस्थ विकसित होवे हे. सत्यासत्यके हिताहितके शुभाशुभके विवेकके बिना कोई जातके विज्ञापनके प्रमोशन्के कारण, वाके आकर्षणके कारण बच्चाएं या बड़े लोग अपनो रोल्-मॉडेल् चुन लें, वाके कारण अहं पनपे हे वो स्वस्थ नहीं होवे हे वो प्राय: अस्वस्थ ही होवे हे.

(चार्ट् देखते भये) अपनो रोल्-मॉडेल् ये (ब्राह्मिकसु गृहठाकुर) हतो और अपनो ईगो यहां(गृहठाकुरमें) पनपा रहे हें. वाके रोल्-मॉडेल्सु मैंने आपकुं ब्राह्मिक पारमात्मिक भागवती काष्णी और घरके ठाकुरको जो रोल्-मॉडेल् हे वा रोल्-मॉडेल्सु अपनो ईगो संवारके, सजाके अपनो अहंकार गढ़ें. वाकी एक स्वस्थता और हॅपहज़ार्ड्ली कोई एक्सिडेन्टल्

(आकस्मिक) एट्रेक्शन्के कारण अपन्ने अपनो रोल्-मॉडेल् चुन लियो और वाके हिसाबसु अपनो अहंकार संवारे सजावे तो कुछ न कुछ अस्वस्थता आनेकी सहज संभावना रहे हे. आदमी या बच्चा अपने अहंके कन्फर्मेशन्के कारण आत्मविश्वाससु भर्यो भयो होवे हे. यदि कोई सिच्युएशन्के कारण अहंकुं कन्फर्म् नहीं कर पायो होय तो वाके कारण वाको सेल्फ्-कॉन्फिडेन्स् कम होवे हे. बचपनमें होते लालन-पालनसु बच्चाको आत्मविश्वास कभी बूस्ट् हो जातो होय और कभी आत्मविश्वास लूज़ कर जातो होवे. जिनने अपनो आत्मविश्वास लूज़ कर दियो उनको अहंकार कैसे विकसित होवे और जिनने अपनो आत्मविश्वास बराबर निभा रख्यो हे उनको अपनो अहंकार कैसे विकसित होवे हे या सबको अपने अहंके विकासमें और अहंकी स्वस्थता और अस्वस्थता पे बड़ो गहरो प्रभाव पड़े हे.

एक प्रसिद्ध जोक् हे. एक गांवके मुखिया हते. वो गांववालेन्के लिये रोल्-मॉडेल् हते. वा सरपंचके लड़काकी टांग टूट गई. वो यन्ग् लड़काके सामने गहरी समस्या पैदा हो गई. बगल-घोड़ीसु वाने चलनो शुरु कियो. वाने अच्छो काबू पायो. इतनो ही नहीं बल्के वाने रेस् लगावेको, नाचवेको करतब दिखानो शुरु कियो. गांववालेनुकुं लग्यो के ये हमारो रोल्-मॉडेल् हे. जिनकुं पैर हतें वे भी बगल-घोड़ी लगा-लगाके चलवेकी प्रॅक्टिस् करवें लग गयें. एकाद जनरेशन्में तो वो फॅशन्की तरह चल्यो. दूसरे-तीसरे जनरेशन्में सबने नॉर्मल् चलनो ही छोड़ दियो, सब बगल-घोड़ीपे ही चले. कोईने पूछी "ये पैर हें तो बगल-घोड़ीसु क्यों चले?" तो बोले "हमारे यहां पाप लगे पैरसु चलवेपे! पैरसु चले तो अहंकार केहवावे. बगल-घोड़ीपे चलो तो सच्चो दैन्यभाव." वो पैर कौनसे? पुष्टिमार्गके. गृहसेवा और नित्यनियमपूर्वक भागवतकथा करनो वो खुदके पैर हते. जो अपनुकुं अपनेसु चलने हते. वे बगल-घोड़ीएं कौनसी? हवेलीके ठाकुरजी, महाराज और भागवतके सप्ताह करवेवाले कथावाचक. उनकी बगल-घोड़ीपे

अपन् चलनों चाहें, नाचनों चाहें. तो अपनो अहंकार बिगड़ गयो. अपनो अहंकार स्वस्थ नहीं रेह गयो. अपनकुं अपने पैर हें. जाकुं पैर नहीं होंय वो या तरहसु बगल-घोड़ीपे चले तो कोई जस्टिफिकेशन् हे. पर चार-पांच जनरेशन् अपन्ने बगल-घोड़ीपे चलवेकी आदत डाल दी. अब सब कहें के घरमें सेवा नहीं करनी. घरमें भागवत नहीं पढ़नी. सप्ताह होवे तब सुन लेनी. हवेलीमें दर्शन कर लेने. वो सब बगल-घोड़ीपे ही चलनो पर जिनकी टांग हें वो भी बगल-घोड़ीपे चलें ये एक जातको अस्वस्थ अहंको विकास हो गयो. बड़ी रिमार्केबल् कथा हे. ये क्यों भयो? वाको कारण अपन्ने रोल्-मॉडेल् गलत चुन लियो. कोईकी कमजोरी अपनो रोल्-मॉडेल् नहीं होनो चहिये.

एक मजेदार जोक् पढ़यो. कोई एक बच्चाकुं टीचर् लड़ रह्यो हतो. "तोकुं ड्रेस् पहनवेकी कोई तहजीब नहीं हे, ऐसे भद्दे-भद्दे ड्रेस् पहने!" वाने कही, "सर! ड्रेसमें क्या खराबी हे?" टीचरने कही "जा तेरे बापकुं देख. कितनो वेल् ड्रेस्-अप् हतो!" तो विद्यार्थीने कही के "बापको तो शर्ट् पहनके आयो हूं". बापको शर्ट् पहनके बच्चा आयो तो रोल्-मॉडेल् बापकुं चुने करके नहीं पर बापने कौनसी अवस्थामें कौनसो शर्ट् पहर्यो हतो और तुने कौनसी एज्में कौनसो शर्ट् पहन रह्यो हे? सत्यासत्यके हिताहितके शुभाशुभके सुन्दरअसुन्दरके विवेकके बिना रोल्-मॉडेल् सिलेक्ट् कियो करके ईगो अस्वस्थ हो गयो. गलत रोल्-मॉडेल् सिलेक्ट् करनो अपने अहंकारकुं विकृत बनावेमें हेतु बने हे.

याके लिये अपने यहां ब्राह्मिक अहंकार, पारमात्मिक अहंकार, भागवत अहंकार, कार्ष्णी अहंकार, घरके ठाकुरके अहंकारको रोल्-मॉडेल् बनाके अपने अहंकारकुं सजावो तो तुम्हारो अहंकार वा मूड्में स्वस्थ हो सकेगो और फिक्सेशन् (जड़ता) बिनाको होयगो. जा बखत अपन् वाको सिलेक्शन् बराबर नहीं कर पावें तो अपनो अहंकार अस्वस्थ

हो जाय हे.

बीटल् एक प्रसिद्ध सिन्गर्-चोकडी हती. उनकी हेअर् स्टाइल्, उनकी गिटार् बजावेकी स्टाइल्को ट्रेन्ड् वा बखत शुरु भयो हतो. वाके कारण बहोत सारे यन्गस्टर्को रोल्-मॉडेल् बन गयो हतो. कितने एक्सटेन्ट् तक के लोग वा तरहसु नाचवे लग गये. वा तरहसु गिटार् हाथमें रखवे लग गये. वा रोल्-मॉडेल्के कारण बाल कपड़ा सब ऐसे रख लिये. वामें एक बच्चाकुं सचमुचमें ऐसी भ्रमणा हो गई के मैं बीटल् हूं. (वाको नाम ज्होन् लॅनॉन् हतो) बच्चाने अपनो रोल्-मॉडेल् बनाके अपने आपमें 'अहं ब्रह्मास्मि' शुरु कियो. अब जो पॉप्युलरिटी, जो रेकग्निशन् बीटल्कुं मिली वो ये गरीबकुं रोल्-मॉडेल् एडोप्ट् करवेके बाद भी मिली नहीं. तो एक दिन फ्रस्ट्रेशन्में खुदकुं गोली मारवेके बजाय वाने जाके बीटल्कुं गोली मार दी. जब केस् चल्यो तब वाने कबूल कियो के मैंने वाको मर्डर् नहीं करनो चाह्यो मैंने तो स्युसाइड् (आत्महत्या) करनो चाह्यो. पर "अहं ज्होन् लॅनॉन् अस्मि" होवेके कारण खुदपे गोली चलावेके बजाय वा गरीबपे गोली चला दी. वाको कुछ गुनाह नहीं.

सदसत्के विवेकके बिना अपन् जब गलत रोल्-मॉडेल् चुन लें हें तो अक्सर अपने अहंकारमें दोषन्की प्रोग्रेस् होवेमें वो मुख्य कारण बने हे. अपन् अहंक्रियामें जायेंगे तो ये दोषन्के कैसे फरदर् डॅवलपमॅन्ट् हें वो आगे देखेंगे.

अपनकुं अहंको रोल्-मॉडेल् जरूरी नहीं हे के सीधो ब्राह्मिकीसु ही स्टार्ट् करें पर अपने घरके ठाकुरके रोल्-मॉडेल्सु अपन् स्टार्ट् करें. धीरे-धीरे वाको विकास करें हें. **"ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति"** (भग.गीता.१८।५४) भगवान् भी गीताजीमें आज्ञा करें हें **"यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति, तस्य अहं न**

प्रणश्यामि सच मे न प्रणश्यति. (भग.गीता.६।३०) तो वाके अहंको मैं कभी खतम या अस्वस्थ नहीं होवे दऊंगो. शदर् ये इम्प्लिकेशन्मेंसु निकलतो भयो अर्थ हे.

ये सारी बात अपन् महाप्रभुजीके वचनसु टेली करके देखेंगे. महाप्रभुजी आज्ञा करें हें **''अहंकारं न कुर्वीत. कृष्णे सर्वात्मके नित्यं सर्वथा दीनभावना.''** तो सर्वात्मक कृष्णमें दीनभावना करनी. या सारे उपदेशके पीछे महाप्रभुजीको मॅटाफिज़िकल् और सायकॉलोजीकल् एप्रोच् क्या हे वो अपनुकुं खुद महाप्रभुजीके शब्दन्में, सुबोधिनीमें देखनों हें.

(चित्तको स्वरूप)

यामें सबसु पहले चित्तको बहोत महत्त्वपूर्ण स्वरूप महाप्रभुजी बतावें हें. कल ये बात कही हती के प्रकृतिमें पुरुषको प्रतिबिम्ब तो पड़े हे और वो प्रतिबिम्बकी बात खोटी मैंने नहीं समझाई. पर प्रतिबिम्बकुं राइट् परस्पेक्टिव्में नहीं समझोगे तो कभी-कभी गड़बड़ हो सके हे.

क्योंके प्रतिबिम्बके साथ एक अर्थ एसो भी निकले के मिथ्या हे, सच नहीं हे. और कांचमें जैसे अपनो प्रतिबिम्ब पड़े, वो दीखे तो सच जैसो हे पर वहां अपनी प्रेज़ेन्स् नहीं हे. प्रेज़ेन्स् नहीं हे और प्रेज़ेन्स् दीख रही हे तो वो एज् गुइ एज् इल्युज़न् हे. ऐसो भी प्रतिबिम्बको अर्थ निकले हे वो अर्थ अवोइड् करनो हे.

पुष्टिमार्गी सेन्स्में रॅक्टिफाय् करनो होय तो एक बात ध्यानमें लेनी हे. जैसे प्रतिबिम्बको ये स्वरूप हे ऐसे ही; जैसे कॅमेरामें पड़ रह्यो हे तो मिथ्या नहीं हे. वहां सचमुचमें अपनो रूप और आकृति प्रकट हो जाय हें. वो मिथ्या नहीं हे. दर्पण वाकुं कॅरी नहीं करे हे, पैदा नहीं करे पर दिखावे हे या लिये दर्पणमें इल्युज़न्

बने हे और कॅमेरामें तो अपनो रूप-आकृति सचमुचमें आवे हे या अर्थमें इल्युज़न् नहीं हे. पर वासु एक सक्षम उदाहरण वा तरहसु समझ सकें. पुरुषोत्तमजीने याही इश्युकुं 'प्रस्थानरत्नाकर'में दियो हे. 'अयोगोलकन्यायेन' मानें जैसे एक लोहाको गोला हे, वा लोहाके गोलाके पास आग आवे हे तब वो आगकी गरमी लोहामें पैदा हो जाय. जितनो गरम होतो चल्यो जाय अल्टिमेट्ली लोहाको गोला खुद आग नहीं होते भये भी आगकी तरह जलतो हो जाय हे. अपने चित्त और पुरुष कुं समझावेके लिये एक्ज़ेक्ट् ये एप्रोप्रियेट् सिमिली हे. चित्त लोहाको गोला हे और पुरुष आग हे. और उनकी क्लोज़नेसुके कारण जो गुणधर्म हे वो चित्तमें प्रकट होवे हे. आजकी तारीखमें अपन् या बातकुं ऐसे समझ सकें जैसे इलेक्ट्रिसिटीको गुणधर्म हे के जितने भी इलेक्ट्रिकल् गॅज़ेट् (साधन) होवें हें उनमें प्रकट होवे हे, वाके बिना वो इन्एक्टिव् होवे हे. पर वाके कारण उनमें एक्शन् या मोशन् या फंक्शन् आ जाय हे. नहीं तो नॉन्-फंक्शनिन्ग् होवे हे. वाके लिये पुरुषोत्तमजीने अयोगोलकको उदाहरण दियो हे.

प्रतिबिम्ब मिथ्याके सेन्स्में नहीं पर आगके सामने लोहाको गोला आगके गुणधर्म लेके आगके जैसो हो जाय वा तरहसु चित्त, चैतन्यके जैसो हो जाय हे. चित्त चिदंश नहीं हो जाय हे पर चैतन्यवान् हो जाय हे. या बातकुं अभी भी बॉडीमें समझ सकें के अपनी बॉडीमें चेतना होवेपे सारी बॉडीमें चेतना जाय हे. अयोगोलकन्यायसु ही आ रही हे प्रतिबिम्बन्यायसु इल्युज़नरूप नहीं आ रही हे. चित्त जा बखत चेतनावान् हो जाय हे, पुरुषके सानिध्यके कारण, वा बखत चित्तमें अहंकार पैदा होवे हे. कल येही बात स्टोरीके रूपमें बताई. येही बात आज थियरीके रूपमें एक्सप्लेन् कर रह्यो हूं.

चित्त और बुद्धि कुं दो फिनोमिना (तथ्य) मानके नहीं चलें हें. चित्त हे वो बुद्धिकी एक ऐसी अवस्था हे के अपन् जहां

अहंक्रियाको विचार करेंगे वामें बुद्धिकी विभिन्न अवस्थाको विचार करेंगे. बुद्धिकी कोई प्रायमरी अवस्था चित्त हे और चित्तकी कोई मॉडिफाइड् अवस्था बुद्धि हे. बुद्धि और चित्त को अवस्थाको डिफरेन्स् हे. फिनोमिनाको डिफरेन्स् नहीं हे. एक अवस्थामें डॅवलप् होवेके बाद चित्त बुद्धिकी तरह फंक्शन् करे हे. वो फंक्शन् बुद्धि नहीं करती होय तो पाछी चित्तकी तरह सब्साइड् हो जाय. ये बात महाप्रभुजी आगे जाके समझा रहें हें. बुद्धि ड्रोप् नहीं हो रही हे पर चित्तके कारण इन्क्लूड् हो रही हे. सो वाको सॅपरेट् एक्सप्लेनेशन् दियो नहीं हे.

महाप्रभुजीने चित्तको बहोत सुन्दर वर्णन कियो हे. सबसु पहले चित्त क्या हे? "**वासुदेवाविर्भावस्थानत्वात्**" (सुबो.३।२६।२१) = ये चित्त तो वासुदेवके आविर्भावको स्थान हे. जन्मप्रकरणमें भी जहां ठाकुरजी जन्में वहांकी सुबोधिनीमें महाप्रभुने खुलासा कियो के ठाकुरजी सबसु पहले देवकीजीके गर्भमें नहीं आयें पर वसुदेवजीके चित्तमें पधारें. चित्तमें पधारे वासु देवकीजीके गर्भमें आयें. प्रथम आविर्भावको स्थान चित्त हे. तो सवाल ये भयो के वसुदेव क्या?

(चार्ट् देखते भये) ये अक्षरब्रह्म हे. अक्षरब्रह्ममें जो चेतना हे वा चेतनामेंसु पुरुषसमष्टि प्रकट होवे हे. जा समष्टिकुं अपन्ने युनिवर्सल् कॉन्शियस्नेस् कही. वाके बारेमें ज्यूम् ॲडलर्ने काफी सारो डिस्कशन् कियो. वो आगे करेंगे. अपने यहांको प्रिन्सीपल् समझ लो. अक्षरब्रह्मकी चेतनामेंसु पुरुष प्रकट होवे हे और वो पुरुष प्रकट होके सॅल्युलर् प्रोसेस्में स्प्लिट् होवे. वा चेतनाकुं महाप्रभुजी 'वसुदेव' केह रहें हें. वसुदेवजीके चित्तमें प्रकटे हे या लिये 'वासुदेव' हे. चित्तको फिनोमिना हे वामें सारो (समष्टि)पुरुष प्रतिबिम्बित होयगो और चित्तके जो पार्ट्स् हें वामें व्यष्टिपुरुष अयोगोलकन्यायसु आविष्ट होयगो. पहले (प्रकृतिमें) वहां गयो आवेश. वा आवेशके कारण

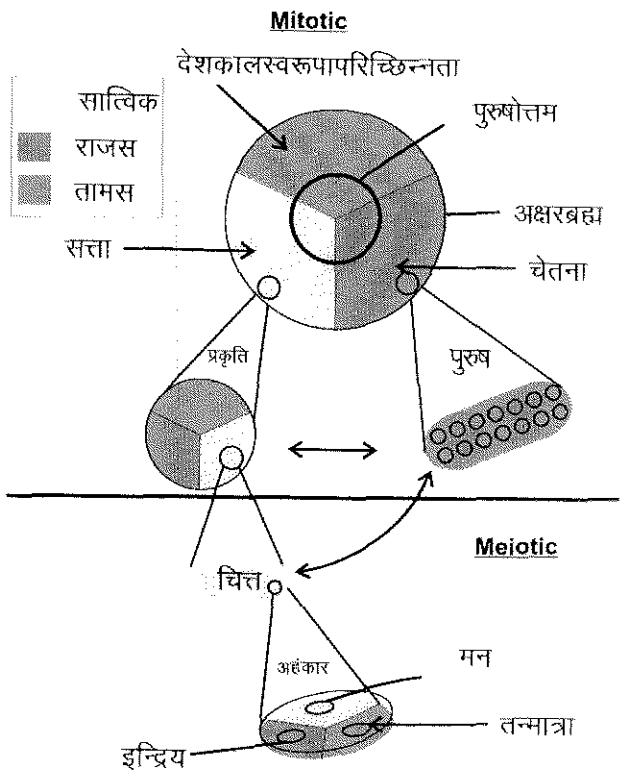

वामें (प्रकृतिमें) एक्टिविटी आयेगी. वा एक्टिविटीके कारण वामेंसु (प्रकृतिमेंसु) चित्त पैदा भयो. चित्त भी वही तरहको पैदा भयो के जामें वो (पुरुष) आविष्ट हो सके.

जैसे कई चीज बॅड्-कन्डक्टर् होवें, कई चीज गुड्-कन्डक्टर् होवें. बिजलीको तार यदि अपन् लकड़ामें लगावें तो वामें बिजलीको आवेश नहीं आयगो. पर जो मॅटालिक् तार होयगो वामें तुरन्त बिजलीको

आवेश आ जाय हे. तामस और राजस सामने भी होवें तो वो बॅड्-कन्डक्टर् होवे. तारपे प्लास्टिक लपेट देवें तो फिर वहां करन्ट् नहीं लगे. पर वहां जरा भी पानी पड़यो और तारकुं छूओ तो फिर पाछो करन्ट् आवे हे क्योंके गुड्-कन्डक्टर् हे. ऐसे सत्त्व प्रकृतिको गुण गुड्कन्डक्टर् होवेके कारण पुरुषकी चेतनाको आवेश होवे हे. वा आवेशके कारण चित्त प्रकट होवे हे.

वा चित्तमें चेतनाको आवेश आवे हे तो तुरन्त अहंकार प्रकट हो जाय. बच्चा जन्मे और गर्भमें भी सेल्की अलग अहंता हे. पर बच्चाको फिज़ीयोलोजीकल् स्ट्रक्चर् हे वामें अहंता तुरन्त गर्भस्थ होते ही नहीं आ जाय. वो तो गर्भमें पाछो अच्छो-खासो समय ले हे. सेल्वाली माइक्रो अहंता तो हर सेल्में होवे हे. पर वा सेल्को सारो संघात बन्यो हे, जो ऑर्गेनिक् स्ट्रक्चर् बन्यो हे वा स्ट्रक्चरमें पाछी अहंता तुरन्त प्रकट नहीं होवे हे. गर्भमें आवेके बाद वाकुं सारे स्पष्ट खुलासा नहीं होवे हे क्योंके गर्भमें बच्चाकुं साउन्ड् समझमें आतो होवे हे. कुछ जर्क्, कम्फर्ट्, डिस्कम्फर्ट् समझमें आते होवे हे. गर्भके वातावरणमें उतनी सारी लाइट् होवे नहीं करके स्टिम्युलेशन् कम होतो हतो. अब तो बच्चाके जनमते ही लाइट् इतनी ज्यादा होवे हे के बच्चाकी आंखमें स्टिम्युलेशन् ज्यादा होवे हे. अबके बच्चानुकुं जनमते ही सब दीखवे लग जाय. बच्चा जब आंख खोले हे तब वाकुं अहं और विषय को प्रभेद धीरे-धीरे स्पष्ट होवे लगे.

अहंकारको जो [१]सत्त्व फन्कशन् होवे हे वामें [१]मन पैदा होवे हे. [२]राजस हे वामें [२]इन्द्रियके फन्कशन् पैदा होवें हें और अहंकारको जो [३]तामस फन्कशन् होवे हे वामेंसु [३]तन्मात्राएं पैदा होवें हें. मतलब [१]इन्स्ट्रुमेन्ट् ऑफ सॅन्सेशन्, [२]सॅन्सेशन् और [३]अटॅन्शन् ये तीन फन्कशन् अहंकारमें पैदा होवें हें.

(चित्तको आधिदैविकरूप)

महाप्रभुजी कहें हें **''वासुदेवस्य आविर्भावस्थानत्वात्''** (सुबो.३।२६।-२१) = वासुदेवके आविर्भावको स्थान चित्त हे. **''वसुदेवे आविर्भवति इति 'वासुदेव':''** (वहीं) = वसुदेवमें आविर्भूत होतो होय वाकुं 'वासुदेव' कह्यो जाय. कृष्णलीलाके वसुदेवमें जा बखत आविर्भूत भयो वो कृष्ण 'वासुदेव' केहवायो. ऐसे चित्त हे वो वसुदेव हे. यामें पुरुष चेतना आविष्ट होवे हे तब वो आविष्ट चेतनाको नाम 'वासुदेव' हे. वसुदेवमें आविष्ट होवेके कारण, वसुदेवकुं अपनो स्थान बनाती होवेके कारण वो पुरुष चेतना चित्तमें आ जाय तब वाकुं 'वासुदेव' कह्यो जाय. महाप्रभुजी एक अच्छी बात कहें हें के चित्तकुं 'वसुदेव' क्यों कहे हे? याको खुलासा करें हें के चित्त शुद्ध हे. प्रकृतिके प्रोडक्ट्मेंसु कोई शुद्धतम् प्रोडक्ट् होय तो वो चित्त हे. चेतनाके लिये गुड्-कन्डक्टर् होय ऐसो विशुद्ध सत्त्व हे और वा सत्त्वमेंसु पैदा होवेके कारण चित्त एकदम स्वच्छ और विशुद्ध हे. वाके लिये वसुदेव हे. **''तदेव अस्य आधिदैविकं रूपम्''** (वहीं) = और वो चित्तको 'आधिदैविकरूप' केहवावे.

(उपादेय सृष्टिके तीन पहेलु—आधिभौतिक आध्यात्मिक आधिदैविक)

उपादान सृष्टिको वर्णन देख लियो. जितनी भी उपादेय सृष्टि हे यामें उपादेय अहंकार भी आ जायगो और उपादेय बुद्धि मन और सारो नामरूपकर्मको विस्तार हे वो सबकुं इन्क्लूड् करके उपादेयमें महाप्रभुजी तीन भेद करें हें. प्रत्येक उपादेयको कोई एक आधिदैविक रूप हे, प्रत्येक उपादेयको कोई एक आध्यात्मिक रूप हे और प्रत्येक उपादेयको कोई आधिभौतिक रूप हे. अपन् यों समझें हें के तीन फिनोमिना हें. महाप्रभुजीको मत वो नहीं हे. महाप्रभुजीको मत ये हे के एक ही वस्तु जो प्रकट भयी हे वाके तीन तरहके फंक्शन् या रोल् हें. तीन तरहसु वो फंक्शन् करे हे. कुछ आधिभौतिक रोल् करे हे, कुछ आध्यात्मिक रोल् अदा करे हे, कुछ आधिदैविक रोल् अदा करे हे.

बेसिक् डिफरेन्स् क्या? वो महाप्रभुजी बहोत सुन्दर समझावें हें. जो भी कुछ भूत (जो पैदा भयो होय वो) होय, भूतसु रिलेटेड् 'भौतिक', पैदा होनेवाली हर चीज भौतिक. वा भौतिकमें जो भी कुछ गुणधर्म होंय वो 'आधिभौतिक' कहे जाय. 'आधि' शब्दको अर्थ होवे हे अन्दर. 'आधिभौतिक' मानें भौतिकके अन्दर जो भी कुछ होय वो आधिभौतिक. ऐसे आत्मासु रिलेटेड् होय वो आत्मिक. वा आत्मिकके अन्दर जो क्रिया-कलाप होय वो सब आध्यात्मिक. (आधि+आत्मिक) ऐसे देवसु रिलेटेड् होय वो 'दैविक'. वामें जो भी कुछ होय वो आधिदैविक.

ये आधिभौतिक वस्तु पैदा भयी हे याके तीन पहलू हें. तीन तरहके वाके कोश हें. (चार्ट दिखातें भयें) आधिभौतिकके भीतर ये आध्यात्मिक हे वाके भीतर ये आधिदैविक हे. तो आधिदैविकको जो शेप् हे वो आधिभौतिक तक प्रकट होवे हे. पर दरअसल ये उदाहरण पर्याप्त नहीं हे. वाको कारण क्या? क्योंके यामें अपन् तीन चीज वापर रहें हें करके तीनों चीज अलग-अलग हें. आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक वामें तीन होवेको गुणधर्म नहीं हे पर वामें तीन तरीकेके कोश हो जाय हें. ये भी पाछो बायोलोजीको विषय हे.

बायोलोजीकली अपनी चमड़ीमें एक आवरण होवे हे. वाके भीतर एक और आवरण होवे हे और वाके भीतर भी और आवरण होवे हे. वो चमड़ी दो नहीं हें चमड़ी एक ही हे वो या तरहसु कोश बनके काम चला रही हे. जैसे आंखकी पलक एक आवरण हे. फिर आंखके ऊपर, आंखके भीतर चमड़ी एक होते भये तीन तरहको रोल् अदा कर रही हे. जो बाहरको रोल् अदा कर रही हे वो भौतिक हे वाके भीतर जो अदा कर रही हे वो आत्मिक (आध्यात्मिक) हे वो लाइवलीकुं कन्ट्रोल् करवेवालो फॅक्टर् हे वो आधिदैविक हे.

(चार्ट नं ९)

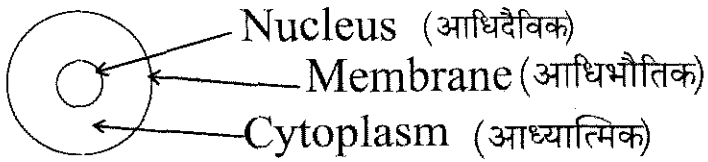

(चार्ट समझाते भये) सायटोप्लाज्म्की जो मेम्ब्रेन् हे वो आधिभौतिक हे. ये सब (सायटोप्लाज्म्) आध्यात्मिक हे. और वाके भीतर जो न्यूक्लियस् हे वो आधिदैविक हे. ये पूरो पॅरललिज़म् महाप्रभुजी समझानो चाहें हें के **"विच्छिन्नतया न तिष्ठति अविच्छिन्नतया तिष्ठति."** (त.दी.नि.२।१०१) = ये एक दूसरेसु विच्छेदमें अवस्थित नहीं हे अविच्छिन्नतया तिष्ठति हे. पर खुदको आवरण भी करे हे मानें स्वावरणकी जो सिफत हे वो बायोलोजीकल् सेल्में हे. अपनेमें तो फिर भी बहोत कम हे. स्नेल्में (घोंघा) देखो के स्वावरणकी कितनी सिफत होवे हे. शार्क दांत मारे तो भी शॅल्की बॉडी तूटे नहीं हे. भीतरी स्नेल्की खोलकुं उँगली दबाओ तो पिचक जाय इतनी कमजोर होवे. कछुवाके पेटसु भी ज्यादा नरम होवे हे. बहारकी स्वावरणकी शॅल् तोड़नी कितनी कठिन हो जाय हे. दांतसु टूट नहीं सके. खुदकुं खुदसु आवृत करनो वो जो सिफत हे के आधिदैविककुं आध्यात्मिक आवृत करे हे, आध्यात्मिककुं आधिभौतिक कोश आवृत करे हे. वो खुदकुं खुदसु आवृत करे हे वा तरीकेकी सिफत हे.

ये अपन् कैसे समझ सकें? जैसे बटाटावड़ाके फिनोमिनामें ऊपरको आवरण बेसन्को होवे हे. भीतर बटाटा होवे. ये दो चीज हो गई. पर दोनों तलवेंके कारण एक-दूसरेसु जुड़ जायें पर तत्त्वत: वे अलग-अलग हें. पर बाटी या ब्रेड् सेकें यामें बहारको आवरण कठोर हो जाय और भीतर नरम रहवे. वा तरीकेको हे. वो खुदकुं खुदसु आवृत कर रह्यो हे. वामें आवरण करवेवालो दूसरो कोई फिनोमिना नहीं

हे. एक तत्त्व पैदा भयो हे वो इन्टर्नली आधिदैविक हे वाके ऊपर एक्स्टर्नल् कवर् आध्यात्मिक हे. वाके ऊपर एक्स्टर्नल् शीट् आधिभौतिककी हे. महाप्रभुजीके हिसाबसु ये आखो स्वरूप हे. वो चित्त मन अहंकार में भी हे. महाप्रभुजीकुं तो या बारेमें इतनो ऑब्सेशन् हे के कोई चीज लाओ तो महाप्रभुजीकुं तीन चीज दिखलाई देवें ही. उनकी दृष्टिकी सिफत हे करके सिद्धान्तमुक्तावलीमें गंगाजीकुं आधिभौतिक आध्यात्मिक और आधिदैविक बता दिये. कृष्णकुं भी तीन तरहसु बता दिये. महाप्रभुजीकी ये दृष्टि हे.

या लिये भागवतको उपदेश हे

''यो आध्यात्मिकोयं पुरुषः सोऽसावेवाधिदैविकः
यस्तत्रोभयविच्छेदः स स्मृतो ह्याधिभौतिकः''

(भाग.पुरा.२।१०।८)

या उपदेशके कारण महाप्रभुजीकुं ये ऑब्सेशन् डॅवलप् भयो. **''यो आध्यात्मिको अयं पुरुषः''** = जो आध्यात्मिक पुरुष हे वो ही आधिदैविक पुरुष हे. पर उनके डिफरेन्सीएशन् अपनकुं आधिभौतिकके कारण समझमें आवें हें. वाके कारण एक ही तीनों चीज हें. वाके कारण महाप्रभुजी कहें हें के **''तत्रैव देवता-मूर्तिः भक्त्या या दृश्यते क्वचित्, गङ्गायां च विशेषेण प्रवाहाभेदबुद्धये. प्रत्यक्षा सा न सर्वेषां प्राकाम्यं स्यात् तया जले.** (सि.मु.७) गंगाके पानीमें गंगाकी मूर्ति कछुवाकी तरह रहती होय, वो मॉडेल् नहीं हे. पर **''तत्रैव देवता मूर्ति''** = गंगाकी हर बूंदमें गंगादेवी हे. यमुनाकी हर बूंदमें यमुनादेवी हे.

जब चन्द्रमापे आर्मस्ट्रोन्ग् गयो तब मालवीय शास्त्रीजी हते उनकुं आपत्ति आ गई. क्योंके गीतामें लिख्यो हे के गीताको इतने पाठ करो तो चन्द्रलोक मिले. अमेरिकावाले अचानक वहां पहुंच गये.

वा बखत अमेरिकाको प्रॅसिडेन्ट् निक्सन् हतो. मालवीजीने प्रोटेस्ट् टेलीग्राम् भेज्यो के ''ये हमारे शास्त्रसु वर्जित हे गीताके पाठ किये बिना चन्द्रमा पर जानो.'' (प्रेसिडेन्ट) वाकुं बिचारेकुं समझमें नहीं आयो तो वाने टेलीग्राम्को जवाब दियो के ''प्रभु आपका स्वास्थ्य अच्छा रखे!''

फिर शास्त्रीजी प्रसन्न हो गये. मोकुं आके दिखायो और कही के ''यहांके प्राइमिनिस्टरकुं लिखते तो जवाब नहीं देते. उनने जवाब दियो.'' पर अमेरिकावालेकुं पता हे के आप पागल हो. यहांवालेकुं पता नहीं हे के तुम पागल हो. मालवीजीकुं डर हतो के चन्द्रलोकमें चले गये और चन्द्रदेवता मिले नहीं तो फिर नीचे हल्ला मचायगो के भारतीय शास्त्र सब खोटें हें तो फिर मालवीयजीकुं प्रवचनमें क्या जवाब देनो? प्रोटेस्ट्को मूलमुद्दा ये हतो.

जा बखत तेनसिन्ग् एवरेस्ट् चढ़नो चाहते हते वा बखत भी पंड़ितनने बहोत विरोध कियो के एवरेस्टपे चढ़नो पाप हे. क्योंके चढ़ गये और वहां शिवजी और पार्वतीजी नहीं दीखे तो अपने शास्त्रकुं जस्टिफाय् कैसे करनो? प्रॉब्लेम् वहां आ जाय करके पहलेसु ही प्रॉटेस्ट् लेटर् भेजनो शुरु करते के हिमालय चढ़नो पाप हे. ऐसे उनकुं डर लगतो हतो. अहंकारके कितने-कितने रोल् हें!

पर यामें रहस्य समझो के भारतीय दर्शनकी दृष्टि हे, जाकुं अपन् 'थियोलोजी' (देवविद्या) कहें हें. वा थियोलोजीमें देव घरमें भाडुत रहे वा ढंगसु नहीं रहे हे. वो तो जैसे ब्रेड्को भीतरको भाग और बाहरको भाग वा ढंगसु रहे हे. ब्रेड्के भीतर खोजवे जाओगे के यामें देव कहां हे? तो वो दिखवेवालो नहीं हे. प्रवाहसु अभेदबुद्धि होयगी तो देव-दर्शन होयेंगे. महाप्रभुजी आज्ञा करें हें के अभेदबुद्धि नहीं होवेके कारण वाको जो कन्ट्रोलिन्ग् फॅक्टर् हे वो

अपनेकुं दीखे नहीं हे. अपन् वाकुं एनेलाइज् नहीं कर पावें हें के वाकी तकलीफ क्या हे.

महाप्रभुजीकी थियरी समझो के आधिदैविक आध्यात्मिक आधिभौतिक ये तीनों तीन तरहके फंक्शनल् रूप हें. वामें कोई तीन तरहके मटीरियल् यूज् नहीं भयें हें.

महाप्रभुजी आज्ञा कर रहें हें **"तत्र सद्रूपताम् आह - स्वच्छम् अतिनिर्मलं, शान्तं चिद्रूपं, ज्ञानमेव हि शान्तरूपं, भगवतः पुरुषोत्तमस्य पदम् आनन्दरूपम्. एवं सच्चिदानन्दरूपम्. सत्त्वस्य सत्त्वम्"** (सुबो.३।२६।२१) प्रकृतिको सत्त्वगुण हे जामें आवेश आ रह्यो हे वो स्वच्छ हे. स्वच्छ, चैतन्यके लिये गुड्-कन्डक्टर् हे. राजस और तामस गुण अस्वस्छ हें वो या लिये के चैतन्यके लिये बॅड्कन्डक्टर् हें. **"तत् चित्तं सर्वेषु प्राणिषु चेतनारूपेण स्थितम्"** (वहीं) हर प्राणीमें चेतनाके रूपमें ये (चार्टमें बतायो वैसे) चित्त स्थित हे. पुरुष तो वामें आविष्ट हो गयो. चित्तकुं फाड़के देखोगे तो पुरुष नहीं दीखेगो. क्योंके जो प्रॉब्लेम् चन्द्रमें भयी वो प्रॉब्लेम् बायपास् सर्जरीमें भी भयी. अब तो लोग हार्ट् चीरके देख लें हें, वाकुं टेबल्पे रख दे हे, आत्मा तो कहीं मिली ही नहीं.

अपनो कन्सॅप्ट् क्या हे? हर आधिभौतिकमें आध्यात्मिक छुप्यो भयो हे. हर आध्यात्मिकमें वाको आधिदैविक रूप छुप्यो हे. सब मिलके थ्री-इन्-वन् हे थ्री नहीं हें. ये अपनो आधिदैविक आध्यात्मिक और आधिभौतिक को स्वरूप हे. याही लिये पृथ्वी खोदें तो रामायणकी तरह पृथ्वी देवी नहीं निकले. **"तत्रैव देवता-मूर्तिः भक्त्या या दृश्यते क्वचित्"** (सि.मु.७) उनकुं भक्ति हती करके पृथ्वी देवी वहां प्रकट भयी. अपनेकुं भक्ति नहीं हे और खाली क्युरियोसिटी हे तो पृथ्वीकी देवी प्रकट नहीं होयगी पर पृथ्वीके भाटा प्रकट होयेंगे. ज्यादा खोद्यो

और लावारस प्रकट भयो तो तुम जल जाओगे. तो ऐसो उपद्रव करनो क्यों? अपने सिद्धान्तको स्वरूप समझो. **"तत्रैव देवता-मूर्तिः भक्त्या या दृश्यते क्वचित्"** देवता जो आधिदैविक हे वो वस्तुको इनरमोस्ट् कोर् हे. वाकी मिडल्लॅयर् आध्यात्मिक हे. और वाको एक्स्टर्नल् मॅम्ब्रेन्स् हे वो आधिभौतिक हे. पृथ्वीमें कितने सारे स्ट्रक्चरल् डिफरेन्स् हे पर वो सब मिलके पृथ्वी दो नहीं हे पृथ्वी एक हे. वो अपनो मॉडेल् हे. **"तत् चित्तं सर्वेषु प्राणिषु चेतनारूपेण स्थितम्, तस्य उपासनार्थं नामान्तरम् आह यद् आहुर् 'वासुदेवा'ख्यम् इति"** (वहीं) चित्तकुं हम वासुदेव केह रहें हें. वाकुं वासुदेव क्यों केह रहें हें? क्योंके वो गुड्कन्डक्टर् हे यामें कॉन्शियस्नेस् आविष्ट हो सके हे. चित्त भी वासुदेव हे. वासुदेव क्यों हे? महाप्रभुजी कहें हें **"वसुदेवशरीरत्वाद्"** वासुदेवको शरीर बन जा रह्यो हे ये चित्त. **"वसुदेवाधारत्वाद् वा"** (वहीं) वासुदेवको आधार बन रह्यो हे. **"महत्-तत्त्वरूपमेव चित्तं, तेन महदुत्पत्त्यैव तस्य उत्पत्तिः उक्ता इति अर्थः"** (सुबो.३।२६।२१) यहां चित्त क्यों केह रहें हें? महत् = बुद्धि. यहां बुद्धिकुं चित्त तरीके रिफर् करके केह रहें हें के बुद्धिकी ये प्रायमरी स्टेज् चित्त हे और चित्तकी एडवान्स् स्टेज् बुद्धि हे. या लिये दोनोंके लिये कॉमन् शब्द 'महत्' हे. चित्त और बुद्धि दोनोंकुं रिफर् करें हें. जब महत् नहीं बोलनो हे तो अपन् चित्त और बुद्धि अलग बोलेंगे. महत् अहंकार पंचतन्मात्रा पंचमहाभूत ऐसे बोल्यो जाय. और मन बुद्धि अहंकार चित्त, करणकी बात करें तब चारोंनकुं डिवाइड् करके बोलें हें. ये अपनी टर्मिनोलोजी हे.

(अहंकारको लक्षण)

याके बाद वा चित्तमेंसु अहंकार पैदा होवे हे.

"महत्तत्त्वाद् विकुर्वाणाद् भगवद्वीर्यसम्भवात्।
क्रियाशक्तिः अहंकारः त्रिविधः समपद्यत॥

(भाग.पुरा.३।२६।२३)

महत् तत्त्व = चित्त+बुद्धि. 'महत्' केहवेसु बुद्धि और चित्त दोनों इन्क्लुइ हो जायें हें. और 'चित्त' केहवेसु बुद्धि इन्क्लुइ नहीं होवे हे. तो महत् तत्त्व जा बखत कार्योन्मुख होवे हे, वामें कोई तरहको जामन् डालवेके बाद कुछ खलल आवे हे. ऐसे चित्तमें जा बखत पुरुष चेतनाको आवेश आवे और वाके कारण कुछ खलल-बलल पैदा होवे हे. चन्द्रमाके उगवेसु समुद्रमें ज्वार आवे वा फॅशन्सु.

(अहंकाररूप कार्यमें कालकी भूमिका)

'**विकुर्वाणात्**'के बाद महाप्रभुजी केह रहें हें ''**कालेन हि गुणक्षोभे विकृतं सत्कार्यं उत्पादयति**'' (सुबो.३।२६।२३) कालके कारण वाके गुणन्में खल-बली होवे हे. कोई भी चीज; जैसे दूध या पानी कुं गरम करवे रखे तो नीचे जो गरम होवे वो ऊपर आनो चाहे हे. तो ऊपर होवे वाकुं नीचे जानो पड़े हे.

वा मॅकेनिज़म्के भीतरको प्रिन्सिपल् देखो. वा मॅकेनिज़म्में कोई भी फंक्शन् बाहर प्रकट होतो होय वाके भीतर कोई एक ऐसो फिनोमिना होवे हे. जैसे क्वार्ट्स् होवे हे, कमान होवे हे, बॅट्री होवे हे. वामें माइक्रो चेष्टा होती होवे हे. वो माइक्रो चेष्टा धीरे-धीरे एनलार्ज होते-होते बड़ी हो जाय. घड़ीकी कमानको सिद्धान्त बहोत छोटोसो हतो. वामें कसी भयी कमान धीरे-धीरे खुले हे. कमान खुले करके वो कांटाकुं चलावे. ये कांटा दूसरेकुं चलावे. सेकन्ड्को कांटा भागतो भयो दीखे. वो एकदम मॉशन् रिवील् हो जाय. चेष्टा, क्रिया बन जाय और वो क्रियाको चेष्टारूप कमान खुल रही हे. ऐसे क्वार्टस्में कुछ चेष्टा हे क्रिया नहीं हे. क्वार्टस्के कारण जो घड़ी चल रही हे वामें क्रिया अपनेकुं दीखे हे. जैसे बॅट्रीमें क्रिया नहीं हे पर कोई चेष्टाके कारण वामें क्रिया प्रकट होवे हे. माइक्रोलेवल्पें चेष्टा पैदा होवे हे जो चेष्टा धीरे-धीरे एक्शन्-रिएक्शन्के प्रिन्सीपल्सु मॅकेनिकल् फंक्शन्में फुल्फ्लेज् डॅवलप् हो जाय हे.

प्रभुकी सृष्टिकी जो चेष्टा हे वो महाप्रभुजी 'काल' तरीके

केह रहें हें. वो चेष्टा शुरु भयी तो वो चक्कर वाकुं मूव्मॅन्ट्में लावे हे. शुरुआतमें प्रकृति पुरुषकुं मूव्मेन्ट्में लायगी. वाके बाद चित्तकुं मूव्मेन्ट्में लायगी. वाके बाद अहंकारकुं मूव्मेन्ट्में लायगी. और वो सारे चक्कर चलवें लग जायें हें. नॅट् रिज़ल्ट्में अपनकुं लगे के सूरज उग रह्यो हे और तारा चल रहें हें और पृथ्वी चल रही हे. बहोत सारी क्रियाएं हें. पर चेष्टा कौनसी हे? ''**चेष्टाम् आहु चेष्टते यस्य विश्वम्**'' (भाग.पुरा.१०।३।२६) लाइक् ए क्वार्टस्. ब्रह्ममें रही भयी चेष्टा हे वो सारी क्रिया-कलापनको मूल हे. वो ही चेष्टा कॉम्प्लेक्स् होती होती यहां(चार्ट) हो जाय. अपनकुं अहंकारके सन्दर्भमें याही तरहको सोचनो पड़ेगो. अहंकारकी कोई चेष्टा ब्रह्ममें परमात्मामें भगवान्में हे और वो चेष्टा अपने यहां फुल्फ्लॅज् क्रियाके रूपमें प्रकट हो रही हे करके अपनी अहंक्रिया समझमें आवे. पर युनिवर्सल् अहंक्रिया अपनेकुं समझमें नहीं आवे. क्यों नहीं समझमें आवे? घंटाको कांटा चलतो समझमें आवे? मिनिट्को कांटा थोड़ो समझमें आवे पर अक्कल वापरो तो समझमें आवे. यहांसु यहां आयो करके चले हे. चलतो कौनसो कांटा दीखे हे? सेकन्ड्को कांटा.

चेष्टा एक्शन्में प्रकट होवे हे तब दीखलाई देवे लगे हे. याही लिये मर्डर्की चेष्टा और मर्डर्को एक्शन् वामें(ये दोनोंमें) कॉग्निज़ेबल् क्राइम् एक्शन्में ज्यादा सिवियर् हो जाय हे. चेष्टा इतनी नहीं होवे हे. क्योंके चेष्टा कर रहे हते, कर्यो तो नहीं मर्डर्! चेष्टाको और क्रियाको डिफॅरन्स् समझवेको प्रयास करो. चेष्टा बहोत माइक्रो लेवल्पें होवे हे और एक्शन्में वाको फुलफ्लेज् डॅवलप्मॅन्ट् हो जाय हे. काल चेष्टा हे. वाके कारण वामें कुछ खद-बद होनो शुरु होवे हे. तब उनमें पाछी क्रिया प्रकट हो जाय.

महाप्रभुजीने ये अहंकारके बारेमें समझायो हे. ''**कालेन हि गुणक्षोभे विकृतं सत्कार्यम् उत्पादयति. न केवलं विकारमात्रेण.**'' (सुबो.३।२६।२३)

वो उपादेय कार्यको उत्पादन करे. ब्रह्मके आनन्दके पहलु तकको कॉन्सेप्ट् महाप्रभुजी बता रहें हें. वहां (आनन्दके पहलुमें) वो चेष्टाके रूपमें हे, यहां (अहंकारमें) वो क्रियाके रूपमें प्रकट हो जायगी. ये सिद्धान्त महाप्रभुजी बतावें हें.

(अहंकाररूप कार्यमें भगवद्वीर्यरूप शक्तिकी कारणता)

यालिये महाप्रभुजी बोलके पाछो रॅक्टिफाय् करें हें. **"न केवलं विकारमात्रेण किन्तु अन्तर्भगवत्शक्तिरपि सार्वजनिका अपेक्ष्यते"**(वहीं) जो भी कुछ कार्य उत्पन्न हो रह्यो हे वाको मटीरियल् इन्टर्प्रिटेशन् फ्रॉम् ए टु ज़ेड् मिलेगो. स्पिरीच्युअल् इन्टर्प्रिटेशन् चहिये होय तो ए टु ज़ेड् मिलेगो. डिवाइन् इन्टर्प्रिटेशन् चहिये होय तो वो भी ए टु ज़ेड् मिलेगो. कोई भी इन्टर्प्रिटेशन्पे तुम स्टक्-अप् हो गये तो तुम्हारी खोपड़ीकी खराबी हे.

(भौतिक पदार्थकी चेतनरूपता और चेतनकी भौतिकरूपता)

याही लिये मैं एक मजाककी बात करतो रहूं. बर्ट्रेंड् रसेल्की दादी वाकुं चिढ़ाती हती जब वो फिलोसॉफी पढ़वे जातो हतो. वो कहती "'फिलोसॉफी' क्या हे? गोरखधंधा हे." ऐसे मुहावरा भी हे के फिलोसॉफर् होवे वो आधो पागल होवे हे. फिलोसॉफर् दुनियाकुं पूरो पागल समझे और दुनिया फिलोसॉफर्कुं आधो पागल समझे. पर फिलोसॉफिकल् टॉपिक्सके अन्तर्गत वाकी दादी मजाक उड़ाती हती. what is matter?(भौतिक पदार्थ) Never mind. what is mind? (चेतना) does not matter.

या रिमार्क्सु रसेल्कुं टीज़् कियो गयो वाकी अहंता इतनी बूस्ट् हो गई. Mind is immaterial and matter is nonmental." करके वाने न्युट्रलमोनिज़्मकी थियरी प्रस्थापित करी. दुनियाकी रियालिटी हे वो नाइदर् मॅन्टल् नॉर मॅटर् हे. दादीकी टीज़िंगके कारण ईगो कॉन्सोलिडेट् हो गयो. रसेल्ने अभौतिक अनात्मिक अद्वैतवाद को सिद्धान्त स्थापित

कियो. दुनियामें भौतिक आत्मिक वस्तु नहीं हे. कोई भी मॅटर्को वो मॅन्टल् एक्स्प्लेनेशन् दे देतो हतो. मेटर्के कोई भी स्वरूप डेटा तरीके प्रस्तुत करो और ऐसी लॉजिक् खड़ी करी.

उदाहरणसु समझमें आयगो. ये टेबल् हे. रसेल् क्या कहे हे? टेबल् = क्या ? अ शेप्, अ साइज़, अ कलर्? वो सब मॅन्टल् परसेप्शन् हें. उन सबकुं गायब करो फिर टेबल् बताओ. माइन्ड्के जितने भी फंक्शन् हे उन सबकी मटीरियल् व्याख्या कर दे. जैसे आज भी डॉक्टर् लोग केह रहें हें के टेस्टोरोन् एस्ट्रोजन एन्ड्रोफिन के कुछ ये कॅमिकल् सिक्रेशन्सु काम पैदा होवे, ऐसे सारी मटीरियल् व्याख्या हो जायगी. जितनो भी बौद्धिक फंक्शन् हे वाकी कॅमिकल्में व्याख्या हो सके हे. तो वो मटीरियल् हो गये. ये मॅन्टल् हो गये. लेहाजा रसेल्ने कन्लुज़न् ड्रो कियो. what is matter? Neve mind. वो वाकी फिलोसॉफी हो गई.

अपने महाप्रभुजीसु पूछो. वे क्या कहें हें? तुमने नॅगेटिव् कन्क्लुज़न् ड्रॉ कियो. महाप्रभुजी केह रहें हें "what is matter? it is mental. what is mind? it is material. माइन्ड् = कॉन्शियस्नेस्. माइन्ड् और मॅटर् के इन्टॅरक्शन्सु दुनिया बनी हे. यामें माइन्ड् मटीरियली एपियर् होयगो और मॅटर् मॅन्टली एपियर् होयगी. जब दोनोंके इन्टॅरक्शन्सु सारी चीज पैदा भयी हे तो वामें तो दोनों चीज रहेंगी. वाको दोनों तरहसु व्याख्यान हो सकेगो. सिन्गल्-आउट् करके कहो के न माइन्ड् हे न मॅटर् हे. महाप्रभुजी कहें हें के पॉज़िटिव् एप्रोच् रखो. दोनों ही हें. मॅटर् मॅन्टल् हे और माइन्ड् मटीरियल् हे. वो अपन् आज भी देख सकें हें. बायपास् सर्जरी हो जाय तो भी माइन्ड् हे. कॅमिकल् सिक्रेशन् हो जाय तो भी मॅटर् हे.

(नाइट्रोजनचक्रमें आत्माको प्राकट्य)

मॅटर् माइन्ड्के तरफ; दरअसल, अपन्ने अपनी मॉडेलिटीको कभी

विचार नहीं कियो. "**तद् यथा पञ्चम्याम् आहु.**" क्या प्रोसेस् हे वो हमकुं बताओ. जा प्रोसेसुके कारण गर्भस्थ शिशुमें आत्मा आ रही हे. वा प्रोसेसुकुं उपनिषद्ने एक्सप्लेन् कैसे कियो हे? सबसु पहले आत्मा बरसातमें बरसे हे, जमीनमें जावे हे, अनाज बने हे, अनाज बनके मुंहमें जावे हे, बादमें शरीरमें जावे हे, बादमें वीर्य बने हे, वीर्य बनके स्त्रीमें जावे हे और वहांसु वो जन्मे हे. यामें आत्मा कहां आयी बताओ! स्टार्ट पॉइन्ट् कहांसु हे? बरसातसु. आत्माने एन्ट्री कहांसु ली हे? बरसातसु. अपन् हार्टकी बायपास् करके देखेंगे के यामें आत्मा कहां हे वो दिखाओ. या लिये आत्मा नहीं हे. मॉडेलिटी समझो बराबर. आत्मा बरसातके पानीसु पृथ्वीमें आयी हे. उपनिषद् कहे हे के नाइट्रोजन्की साइकल्में आत्मा प्रकट हो रही हे.

फलमें मच्छर घुस्यो ऐसे शरीरमें आत्मा घुसेगी और हार्ट खोलके देख्यो और आत्मा मिली नहीं, तब अपन् नास्तिक हो गयें. कैसे आत्मा आ रही हे यामें अपनो उपनिषद् क्या केह रह्यो हे? देखो, वो यामें (प्रकृतिमें) आविष्ट हो रह्यो हे. वो आविष्ट होके यहां (चित्तमें) आ रह्यो हे. यहां (चित्तमें) आके वो सब बन रह्यो हे. यामें या प्रोसेसुसु आत्मा रेह रही हे. वाको अपन् अलगसु प्रूफ कहांसु लायेंगे. अलगसु प्रूफ तो आयगो नहीं न! अपनुकुं प्रूफकी चिंता हो जाय.

एक गामठी आदमी अचानक बम्बईमें आयो वाने देख्यो बुढ्ढी औरत लिफ्टमें ऊपर गई और एक जवान लड़की नीचे आई. वाने कही "ये अच्छी मशीन् हे बुढ़ियानुकुं जवान करवेकी. अभी गांवसु अपनी औरतकुं ले आऊं." अरे! ये कोई लिफ्ट् बुढ़ीयानुकुं जवान करवेकी मशीन् नहीं हे. तुम्हारी समझमें खोट हे. ऐसे कोई जवान हो जायगी! गमट्टूपना हे ये. और अपन् वाको प्रूफ मांग रहे हें.

वाकी जरूरत नहीं हे. ईश्वरको प्रूफ कहांसु लायेंगे या स्थितिमें.

(सर्वभवनसामर्थ्यरूपा एकमात्र भगवत्शक्ति ही नियत)

ईश्वरको प्रूफ अलग कहांसु आ सके हे? जब ईश्वर यासु अलग ही न होय. ये जगत् बन्यो हे वो ईश्वर ही तो बन्यो हे. जगत् हे तो ईश्वर हे. ईश्वर हे तो जगत् हे. वो तो एक ही फिनोमिनाके दो पहलु हें. आधिदैविक स्वरूप हे यामें एब्सोल्युटली अपनी मॅन्टल् फ्रेम् साफ होनी चहिये के महाप्रभुजीकी क्या थियरी हे. जो हे वो विकारमात्रसु नहीं "**किन्तु अन्तर्भगवद्शक्तिरपि सार्वजनिका अपेक्ष्यते. तद् आह भगवद्वीर्यसम्भवाद् इति**" (सुबो.३।२६।२३) 'भगवद्वीर्य' मानें चेष्टाकी कुछ पोटेन्श्यालिटी हे. महाप्रभुजी वहां सुंदर आरग्युमॅन्ट् दे रहें हें "**नहि जले मथ्यमाने तत्र अविद्यमानं घृतम् उत्पद्यते**" (वहीं) एक जलको तपेला भरके दिनभर मथते रहो तो जलके मथवेसु कोई मक्खन पैदा होयगो? मक्खन कहां पैदा होयगो? जहां मक्खन होयगो. दूधकुं दस मिनिट् भी मथोगे तो मक्खन पैदा हो जायगो. "**नहि जले मथ्यमाने तत्र अविद्यमानं घृतम् उत्पद्यते किन्तु दुग्धे दध्नि वा**" (वहीं) बहोत अच्छी अच्छी बात महाप्रभुजीने यहां समझाई हे. इन ब्रीफ् महाप्रभुजी एक बात केह रहें हें "**अचेतना हि सर्वे नियन्तुं शक्याः, ईश्वरएव केवलम् अनियम्यः**" (वहीं) जो भौतिक पहलु हे वाकुं अपन् वॉलेन्टरी (ऐच्छिक) कन्ट्रोलमें ला सकें हें. इन्वॉलेन्टरी (अनैच्छिक) पहलुकी पराकाष्ठा हे ईश्वर वो अपने कन्ट्रोलमें नहीं आवे. वाकुं कन्ट्रोलमें लेनो बहोत मुश्किल काम हे. मानें जो आधिदैविक हे वाकुं कन्ट्रोलमें लेनो, वो वॉलेन्टरी फंक्शनमें नहीं आवे हे. जैसे अपनने देख्यो के बहोत सारे अपने वॉलेन्टरी नर्वस् सिस्टमसु गवर्न् होते फंक्शन्स् हें वे अपने वॉलेन्टरी फंक्शन्ससु गवर्न् हो जायें हें पर जो गवर्निंग् (नियामक) फॅक्टर् हे वो अपने वॉलेन्टरी फंक्शनके कंट्रोलमें नहीं आवें हें. याके लिये महाप्रभुजी कहें हें के "**अतो भगवद्शक्तिर् एकैव सर्वभवनरूपा, प्रतिनियता समुदाये,**

प्रत्येकं वा, यत्रएव अवतिष्ठते भगवन्नियमात्'' (वहीं) या लिये भगवान्की पोटेन्श्यालिटी हर मॅटर्में एनर्जीकी तरह अवेलेबल् हे; जैसे मॅटर्में एनर्जी अवेलेबल् हे और वो एनर्जी मॅटरसु अलग नहीं हे. मॅटर्में (द्रव्य) भी वो ही एनर्जी (शक्ति) हे. ऐसे भगवान्की जो शक्ति हे वो मॅटर्में एनर्जीकी तरह रेह रही हे. वो मॅटर् फंक्शन् कर रह्यो हे तो समझ जाओ के एनर्जी एक्टीवेट् भई हे. नहीं तो एनर्जी कोई इनरशियामें (जड़ता) गई हे.

(अहंकारको आध्यात्मिक लक्षण)

अब देखो जो अहंकारको रूप अपन् लें हें वा अहंकारके लिये महाप्रभुजी कहें हें के अहंकार त्रिविध हे. वा त्रिविधतामेंसु त्रिविध कार्य उत्पन्न हो रहें हें: तन्मात्रायें इन्द्रिय और मन. पर बेजिकली अहंकार त्रिविध हे वो अपन् तीन प्रकोष्ठसु बता रहें हें. अहंकार त्रिविध होवेके कारण **''वैकारिकः तेजसश् च तामसश् च यतो भवः,''** **''वैकारिकः सात्त्विकः''**. (सुबो.३।२६।२४) ये **'सात्त्विक'** जाकुं अपन् सफेद बता रहें हें. **'तेजस'** वो लाल और **'तामस'** वो नीलो. ये सब मैंने आपकुं बता दियो के ये क्यों सफेद लाल और नीलो हे. **''आध्यात्मिके गुणाएव सधर्माः लक्षणानि''** (वहीं) ये त्रिगुणात्मक होनो अहंकारको आध्यात्मिक स्वरूप हे के यामें तीनों गुण हें. और ये अहंकारके लिये महाप्रभुजी एक बात और केह रहें हें के पुरुष जा बखत चित्तमें आविष्ट भयो और चित्तमें ज्ञानकी पोटेन्श्यालिटी (अन्तर्निहित शक्ति) रीयलाइज् (क्रियान्वित) भयी वा रीयलाइज् होवेके बाद चित्तमेंसु पैदा होतो अहंकार कोग्नेटिव् (ज्ञानात्मक) फिनोमिना नहीं होके एक्टीव् (क्रियात्मक) फिनोमिना हे. मानें अब वो चेष्टा यहां एक्शन्को रूप ले रही हे. कल मैंने याही लिये बताई हती 'सॅन्सिटिविटी' और 'सॅन्सेशन्'. सॅन्सेशन् एक्शन्कुं इन्वॉल्व् करे हे. सॅन्सिटिविटी एक्शन्कुं इन्वॉल्व् नहीं करे हे.

यहां मोशन् अब स्टार्ट् हो रह्यो हे. वो क्वार्ट्सकी तरह नहीं रेह गयो; पर वो क्वार्ट्सके कारण पैदा होते भये जो मोशन् हे वो अब यहां प्रगट होने शुरु भये **''मनसः च इन्द्रियाणां च भूतानां महतामपि''** (भाग.पुरा.३।२६।२४) 'महतां' मानें तन्मात्राणाम्. ये या अहंकारके कार्य हे. अहंकारको स्वरूप क्या हे? आध्यात्मिक. वो त्रिविध हे. त्रिविध = तीन तरहकी क्रिया करवेमें सक्षम हे. सात्त्विकी क्रिया, राजसी क्रिया और तामसी क्रिया; और वो तीन तरहकी क्रिया करवेमें सक्षम अहंकारके कार्य क्या हे? मन इन्द्रिय और तन्मात्रा.

(अहंकारको आधिदैविक लक्षण)

और वाके बाद महाप्रभुजी केह रहें हें के **''आधिदैविकं लक्षयति...सहस्रशिरसं साक्षाद् यम् अनन्तं प्रचक्षते, 'संकर्षणा'ख्यं पुरुषं भूतेन्द्रियमनोमयम्''** (सुबो.३।२६।२५) या अहंकारकुं तुम ऐसे समझो के शेषनागके हजार फन होंय. मैंने या लिये अपने प्रवचनके आरंभमें आपकुं बात बताई के अहंकार क्या-क्या रूप नहीं ले सके! अब वो याकुं संस्कृतको 'फण' समझो या 'फन' समझो. या उर्दुको 'फन' समझो. या तीनों 'फन' समझो. तीनों तरहके 'फन' हें अहंकारमें. एक उर्दुको 'फन' अलग होवे हे. उर्दुको 'फन' मानें जैसे फनकार. फनकार मानें आर्ट्. आर्ट् भी हे और टिस्ट् भी हे यामें. तो फन भी हे और फण भी हे. सहस्रशीर्ष ये शेषनागके तरहको अहंकार हे के जामें हजारों फन हो सकें हें. हजारों तरहको आर्ट् हो सके जामें आनन्द हो सके हे. ये महाप्रभुजी केह रहें हें. मैं नहीं केह रह्यो हूं. उनने 'फन' शब्द नहीं वापर्यो हें. पर महाप्रभुजी बहोत खूबसूरत या बातकुं कहें हें **''यथा पूर्वं वासुदेवः, तथा अत्र संकर्षणः''** (वहीं) चित्तको आधिदैविक रूप वासुदेव हे तो अहंकारको आधिदैविक स्वरूप संकर्षण हे. वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये चार व्यूह हें. वे यहां आधिदैविकरूपमें कैसे काम करें हें वो बात महाप्रभुजी

समझा रहें हें. पाछो खोलते जाओगे तो अहंकारकी बायपास् हार्टसर्जरी करोगे तो कोई मिलेगो नहीं हों! मैं याही लिये खुलासासु केह रह्यो हुं के न वासुदेव मिलेगो न संकर्षण मिलेगो न प्रद्युम्न मिलेगो न अनिरुद्ध मिलेगो. वा आइडेंन्टिटीकुं समझोगे तो तीन तरहसु ये काम कर रह्यो हे. कुछ सॅल्फ-कन्ट्रोलिंग् फॅक्टर्को काम कर रह्यो हे.

(द्वैतवादीकी समस्या)

याही लिये एक बात ध्यानसु समझवेकी हे के युरोप्को जो कन्फ्रन्टेशन् हतो सायन्स्को थियोलोज़ीके साथ या रिलिजीयन्के साथ वह क्यों भयो? वाकी हिस्ट्रीमें जाओगे तो पता चलेगो के हर बखत छोटे-मोटे हर पॉइन्ट्पे सायन्स् और धर्म आपसमें एक-दूसरेसु भयंकर संघर्षमें आमने-सामने आ गये. वाके बड़े-बड़े फनी एग्ज़ाम्पल् वहां हे.

जैसे सबसु पहले ज़ियोसेन्टर्के हेलियोसेन्टर्सु झगड़ा भयो के सूरज केन्द्रमें हे के पृथ्वी. और गेलेलीयोने बिचारेने केह दियो के सूर्य केन्द्रमें हे. तो पचास हंटर् लगावेको पोप्ने ओर्डर् दियो के रोज याकुं पचास हन्टर् लगावो. एक-दो हन्टर् खाते ही वाकी अक्कल सुधर गई. वाने कही "जावा द्योने, मेरो क्या जाय! पृथ्वी केन्द्रमें हे." युरोपमें दो पीढ़ी नहीं बीतीं और पोप्कुं खुदकुं कबूल करनो पड़्यो के सूर्य केन्द्रमें हे. फिर कोईने पूछी "महाराज! वाकुं पचास हन्टर् क्यों मारे?" उननें कही "तुम नास्तिक लग रहे हो! अहंकारी हो!" हम क्यों नास्तिक? फुदड़ीमें प्लेस् बदल जाय के नहीं. पहले पोप्ने ना पाड़ी वा दिन सूर्य केन्द्रमें नहीं हतो, पृथ्वी केन्द्रमें हती. अब पोप्ने हां पाड़ दी. अब पृथ्वी सरक गई पृथ्वी भी समझदार हे. अब सूर्य केन्द्रमें आ गयो. ऐसे-ऐसे कन्फ्रन्टेशन् भये. मानें यहां तक के ॲनेस्थेसीया जा बखत डॅवलप् भयो वा बखत भी पादरीन्नें तोबा मचा दी हती के यदि प्रसवमें पीड़ा होनो परमात्माकुं अभिप्रेत

नहीं होतो तो परमात्माने स्त्री ऐसी बनाई होती के जामें पीड़ारहित प्रसव होवे. वाकुं तुम एनेस्थेसीया दे रहे हो ये परमात्माकी सामर्थ्यसु तुम झगड़ा कर रहे हो. अब तो देखो कितनें क्रिश्चअनन्ने मॅटरनिटी होस्पिटल् खोल दी! अब परमात्माको इन्सल्ट् भयो के नहीं भयो? ऐसी एक बात नहीं हे! बल्ब बन्यो वा बखत भी झगड़ा भयो के परमात्माकुं रातकुं अंधकार रखनो नहीं होतो तो परमात्मा क्या मूरख हतो के वाने दिनमें सूरज बनायो. और तुमने बल्ब् बनाके उजाला क्यों कियो? एडीसन्पे भी बहोत झगड़ा भयो और सबसु मजेदार स्टोरी बताऊं के अमेरिकाके प्रॅसिडेन्ट्ने रातकुं डिनर् दी. अब प्रॅसिडेन्ट् तो ऐसे ही होवे सब गामकी खट्-पट् रखवेवाले. वाने अपने प्रॅसिडेन्सीअल् एड्रेस्में कही के अपनो अमेरिका देश बहोत आगे बढ़ रह्यो हे और अब वो दिन दूर नहीं हे के अपन् पक्षीन्की तरह आसमानमें उड़नो शुरु करेंगें. वहां पादरी भी डिनर्में इनवाइटेड् हतो तो वाने तुरंत खड़े होके डिनर्में प्रोटेस्ट् कियो. उनके यहां डिनर्में एक स्पीच् दी जाय बादमें या पहले. तो वा डिनर्की स्पीच्में पादरीने प्रोटेस्ट् कियो. "मिस्टर् प्रॅसिडेन्ट्! ये जो तुम विधान कर रहे हो के आदमी पक्षीकी तरह उड़वे लगेगो. ये बात तुम्हारी मोकुं सहमत नहीं हे क्योंके भगवान्कुं यदि आदमी पक्षीन्की तरह उड़तो बनानो होतो तो भगवान्ने आदमीकुं पंख दिये होते. (अमेरीकाके प्रेसिडन्ट्कुं ये सौगंध खानी पड़े के गोडमें मैं बिलीफ रखके ऐसो करुंगों.) व्हॅन् यु हॅव टेकन् ओथ ऑफ् गॉड् यु कॅन् नॉट् प्रोनाउन्स् सच् एथिस्टीक् स्टेटमेन्ट् (नास्तिक वाक्य)". प्रॅसिडेन्ट् बिचारो घभरा गयो. अब वा पादरीके लड़काने पहलो प्लेन् बनायो. अब कहां जाय! "दरियामां पडुं मरी जांउ!!" ये सिच्युएशन् हती. हर बातपे इतनो कन्फ्रन्टेशन्.

(महाप्रभुजीकी ब्रह्मवादी दृष्टि)

याको धीरजसु कारण समझो क्योंके वे मानें के दुनिया यहां

हे और भगवान् वहां हें. अपने यहां ये कन्फ्रन्टेशन् क्यों नहीं होवे वाको मूल कारण ये हे के भगवान् वहां भी हें यहां भी हें, भीतर भी हें बाहर भी हें. वामें कन्फ्रन्टेशन्को सवाल क्या हे? कोई चीज कैसे भी फंक्शन् कर रही हे वो भगवान्को फंक्शन् ही तो हे. वामें दूसरे फंक्शन्की जरूरत क्या हे? यदि तुम विमानमें उड़ रहे हो तो भगवान्को फंक्शन् हे. महाप्रभुजी ये ही आज्ञा कर रहें हें. **''यत्र येन यतो यस्य यस्मै यद्-यद् यथा यदा, स्याद् इदं भगवान् साक्षात् प्रधानपुरुषेश्वरः''** (त.दी.नि.१।६९) कुछ भी तुम चमत्कार करके बताओ वामें अपन्कुं अपने जो भी थियोलॉजीकल् कन्सॅप्ट् हे वाकुं शॉक् नहीं लगे हे. वाको मूल कारण क्या हे? क्योंके अपन् मानके चलें हें के भगवान् कोई सातमे आसमानपे बैठ्यो भयो और निगरानी रखवेवालो; ''बड़ा ही सी.आय.डी. हे नीली छत्रीवाला'', ऐसो कोई भगवान् नहीं हें. भीतर बैठे भये हें, बाहर बैठे भये हें, सब जगह बैठे भये हें. सब रूपमें वो हें. जब सब रूपमें वो हें तो अपन् कोई चीजकुं कोई तरहसु भी यूज़् करें वामें वाकी ही शक्ति प्रकट हो रही हे.

अपन् या बातकुं मानके चल रहें हें और वाको सबसु बड़ो उदाहरण यद्यपि वो फनी लगे पर समझवे लायक बात हे. जा बखत टी.वी.पे रामायण आती हती तो लोग टी.वीकुं भी माला पहनाते हते. अरुण गोविल जाने रामको पात्र कियो वाकुं भी माला पहनाते हते. और दीपिका चिखलिया वो बिचारी बड़ौदामें सिगरेट् फूंक रही हती तो सब गुस्सा हो गये के ''अरे सीताजी थईने तमे सिगरेट् फूंको!'' भई! सीताजी सिगरेट् नथी फूंकती. दीपिका चिखलिया सिगरेट् फूंके छे. **''यत्र येन''** सब जगह भगवान् देखवेकी अपनी वृत्ति कितनी प्रबल हे के दीपिका चिखलियामें अपन्कुं सीताजी दीखे हे. टी.वीमें अपन्कुं पूरी रामलीला दीखें हें. अब गुसांईन्में पुरुषोत्तम बेवकूफन्कुं दीखतो होय, तो वामें घबरावेकी बात नहीं हे.

पुरुषोत्तम दीखेगो ही न! जब दीपिका चिखलियामें सीताजी दीखे और अरुण गोविलमें राम दीखे तो तुम बेवकूफन्कुं गुसांईन्में पुरुषोत्तम दीखे. पर अपने यहां वाको कोई बेज़् हे के हर जगह भगवान् देखनो.

पर तकलीफ कहां हे? अस्वस्थता कहां हे के तुम सिर्फ गुसांईन्में पुरुषोत्तम देखो और खुदमें पुरुषोत्तम नहीं देखो **''आत्मानन्दसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्''** (सि.मु.१६) वहां तुम आधो-अधूरो नियम लागू करो हो क्योंके तुम्हारी हॅबिट् खराब हो गई हे. खुदके पास तुम्हारे पैर मौजूद हें फिर भी बैसाखी लगाके चलवेकी आदत लग गई. तुम्हारो ठाकुर मौजूद हे, तुम्हारी भक्ति मौजूद हे. तुमकुं लगे के कोई दूसरेसु कराये तब कुछ होयगो. तुम्हारे अहंकारके अस्वस्थ होवेको ये दुष्परिणाम हे. बाकी थियोरेटिकली अपने यहां घबरावे जैसी कोई बात हे ही नहीं. सब जगह पुरुषोत्तम हे. एक जगह वाकुं कन्फाइन्ड् करनो, ये भ्रान्ति हे. या रहस्यकुं समझो अच्छी तरहसु.

(अहंकारको स्वाभाविक रूप)

वो बात महाप्रभुजी कहें हें के **''स्वभावतो अयं तामसः प्रलयकर्ता च''** (सुबो.३।२६।२५) ये संकर्षण क्या हे? ये तामस हे. तामसको मतलब क्या? तमोगुण यदि बुद्धिमें पैदा होवे तो चीज एक्टिव् होवेके बजाय इनर्शियामें चली जाय. ऑलमोस्ट् जो ब्लॅकहोल्को प्रिन्सिपल् हे के सब चीजकुं एबसोर्ब् करके इनर्शिया पैदा कर दे. **''अहंकारेण उत्पादितं नाशकमेव''** (वहीं) याके लिये अहंकारसु कोई चीज पैदा करी तो वो नाशको ही साधन होयगी! अब देखो यहां कौनसे अहंकारकी बात कर रहें हें. **''अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्'' ''अहंकारेण उत्पादितं नाशकमेव. तस्य अनेकधा उत्पत्तिज्ञापनार्थं देवतायाम् अनन्तानि शिरांसि निरूपयन्ते''** (वहीं) यही संकर्षण देवता भी हें, शेष हें. शेष संकर्षण एक ही चीज हें. ये देवता हें. और वाकुं

देवता बतावेके लिये वाके अनन्त शीर्ष बता रहें हें. "**अतएव अहंकारेण कालनिरूपितकर्माणि सफलानि अनन्तानि.**" सफल होवे हें वे तीन तरहकें हें. पहलो अपने अहंकारमें कुछ [१]ऑब्जेक्ट् दिखलाई दे हे. कुछ अहंकारमें अपनकुं [२]इन्स्ट्रुमॅन्ट् दिखलाई दे हे और कुछ अपने अहंकारमें अपनकुं [३]एटॅन्शनको फॅक्टर् दिखलाई दे हे. वाके लिये वाके तीन कारण बता रहें हें के [१]इन्द्रिय [३]मन और [२]तन्मात्रा, वे अहंकारके कार्य हें. तो या तरहसु अहंकारको ये लक्षण बतायो.

(अहंकारको आधिभौतिक लक्षण)

"**आधिभौतिकं लक्षयति**" (सुबो.३।२६।२६) अहंकारको अधिभौतिक लक्षण क्या हे? तो महाप्रभुजी बहोत सुंदर बतावें हें. "**कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं च इति लक्षणम्**" (भाग.पुरा.३।२६।२६) अहंकारके आधिभौतिक लक्षण तीन हें. आधिदैविक लक्षण हतो के वो संकर्षण हे. आध्यात्मिक लक्षण हतो अहंकारको के वो राजस तामस सात्त्विक त्रिविध क्रियात्मक हे. तीन तरहकी क्रियाकी मोशनको प्रिन्सिपल् हे. वो वाको आध्यात्मिक लक्षण हे. आधिभौतिक लक्षण अहंकारको क्या हे? के "**कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं च इति लक्षणम्**" वामें अहंकारके कारण तुम्हारेमें अपने भीतर कर्तृत्वको बोध होवे हे. अहंकारके कारण तुमकुं अपनेमें यों लगे हे के मैं याको कारण बन सकूं के मोसु ये चीज पैदा हो सके हे. और अहंकारके कारण तुमसु कोई कार्य वस्तुतः पैदा होवे भी हे. ये तीन वा कार्यरूप अहंकारके लक्षण हें.

('कर्तृत्व' आधिभौतिक अहंकारको सात्त्विक लक्षण)

वामें महाप्रभुजी कहें हें के "**कर्तृत्वं प्राणीषु विद्यमान अहंकारस्य सात्त्विकस्य लक्षणम्**" (सुबो.३।२६।२६) प्राणीमें विद्यमान अहंकारको सात्त्विक पहलूको लक्षण क्या हे? वो कर्ता हो सके हे ये वाको सात्त्विक लक्षण हे. मतलब एक बात ध्यानसु समझो के तुम सिर्फ क्रिया ही नहीं हो. तुम कन्सोलिडेट् क्रियाकुं

करवेवाले कर्ता भी हो.

(क्या कर्तृत्व या कर्ता, क्रियाको समाहार हे?)

ये बहोत डिस्प्युटेड् इश्यु हे फिलोसॉफीमें के जो भी काम चल रह्यो हे वो काम कर्ताके कारण चल रह्यो हे के कर्ता सिर्फ क्रियाको लम्सम् होल् हे. बुद्ध भगवान् यों कहें हें के कर्ता नामको कोई फिनोमिना हे ही नहीं. मल्टिपल् मोशन्सको एक संघात हे वाकी एक युनिट् बन जाय हे, वाकुं अपनेमें कर्ता मानवेको भ्रम होवे हे. जैसे बुद्धके उदाहरणके हिसाबसु समझा रह्यो हूं के एक कारकुं चलवेके लिये सिर्फ कारके मॅकेनिज्मके हिसाबसु सोचो के कितनी क्रियायें उत्पन्न होनी चहियें. जैसे टायर् गोल फिरनो चहिये. पिस्टन्को मुवमॅन्ट् होवे हे. पॅट्रोल्को कम्बशन् होयगो. वे सारी क्रियान्को समाहार टोटल्, द होल् ऑफ् मल्टीपल् मोशन्स् = कार. अब एक बात ध्यानसु समझो के ये कार क्योंके अपन् यहां बैठे भयें हें, अपन् चला रहें हें यालिये अपनकुं लगे के कार कर्ता नहीं हे. पर समझोके ऊपरके लोकसु कोई व्यक्ति टॅलिस्कोप् लगाके देखे के मरीन-ड्राइव्पे कार ही कार घूम रहीं हें तो वो क्या सोचेगो? पृथ्वीपे अलग-अलग रंगकें, अलग-अलग साइज्कें, बड़े-बड़े जीवजंतुयें रेंग रहें हें. ऐसो लगेगो के नहीं लगेगो? वाकुं लगेगो के कार कोई वेहीकल् हे? अपन् भी दूरसु कोई चीजकुं ऐसे चलती देखेंगे तो क्या समझेंगे? जा तरहसु मलबार हीलसु मरीन-ड्राइव्पे कार चलती दीखे वा तरहसु अपनकुं कोई चीज रेंगती भयी दीखे तो अपन् क्या समझेंगे के बहोत जीव-जंतु भर गये. तो वो एक्जॅक्ट् कर्ता हे के क्रियाको समटोटल् कर्ता हे? ये डिस्प्युटेड् इश्यु रह्यो हे. वामें बुद्ध भगवान्ने ये स्टॅन्ड् लियो के कर्ता जैसो कोई फिनोमिनो होवे ही नहीं हे. क्रियाको समटोटल् हे वामें कर्ताकी भ्रान्ति होवे हे.

महाप्रभुजी ऑलवेज् बुद्ध भगवान्के सामने खड़े ही हें. नहीं

नहीं नहीं!! ऐसी बात नहीं हे. कर्ता एक हे. कर्ता हे और क्रिया भी हे. रसेल् कहे के माइन्ड्के कारण मॅटर्कुं गायब कर दो और मॅटर्के कारण माइन्ड्कुं गायब कर दो!! महाप्रभुजी ऑलवेज् प्रोटेस्ट् करें हें के नहीं नहीं!! कर्ताके कारण क्रिया गायब नहीं होयगी. क्रियाके कारण कर्ता गायब नहीं होयगो. उदाहरण क्या? कार कर्ता होय के नहीं होय, इन द् सॅन्स् ऑफ् ह्यूमन् सायकोलोजी. पर कार चलवेकी क्रियाको कर्ता यदि नहीं होय तो वो सारी क्रिया डिस्-ऑरगेनाइज्ड् (अनायोजित) होती होय तो कार चलेगी? वो सारी क्रियायें कहीं एक ऑरगेनाइज्ड् वे (आयोजित प्रकार) में जा बखत कुछ कर रही हें तब चलवेकी क्रिया सम्पन्न हो रही हे. वो चलवेकी क्रिया तो कार ही सम्पन्न कर रही हे और वा चलवेकी क्रियाके समाहारके कारण कारमें एक कर्तृत्व प्रकट होवे हे.

ऐसे ही एग्ज़ेक्टली अपनेमें भी बहोत सारी क्रियायें काम कर रहीं हें वो कारकी तो कुछ क्रिया नहीं हे पर; अपने शरीरके भीतर बत्तीस फंक्शन्श् मानें जायें हें. मानें ब्लड्- सर्क्युलेशन् रॅस्पिरेशन् डायजेशन् विगेरे. बत्तीस फंक्शन्श्की क्रिया ही तो चल रहीं हें. वामें अपन् कर्ता कैसे कहवायेंगे. एक क्रिया ड्रॉप् भयी और "चलन चहत कृपानिधान" हो जायगो. ब्लड्-सर्क्युलेशन् क्रिया बन्द भयी या रॅस्पिरेशन् गयो तो "चलन चहत कृपानिधान" हो जायगो. सब क्रियान्को समाहार होवेके बाद अपनेमें कर्तृत्व प्रकट हो रह्यो हे के नहीं? हो रह्यो हे तो ये क्रियायें कहां हो रही हें? याको तो खुलासा करनो पडेगो न! जामें क्रिया प्रकट हो रही हे वो ही तो कर्ता हे. यालिये पाणिनिने बहोत सुंदर बात समझाई **"स्वतन्त्रः कर्ता"** (पा.सू.१।४।५४) "स्वतन्त्रः कर्ता"को मतलब क्या? बहोत सारी क्रियायें अपने आप ऑटोमेशन्में चल सकती होंय वो डिपॅन्डेन्ट् होंयगी. एक-दूसरेपे म्युच्युअली डिपॅन्डेन्ट् होंयगी. क्यों म्युच्युअली डिपॅन्डेन्ट् होंयगी? समझो के रॅस्पिरेशन् सिस्टम् तुम्हारी डिस्टर्ब् हो गई तो

ब्लड्-सर्क्युलेशन् बंद हो जायगो. ब्लड्-सर्क्युलेशन् बंद हो जायगो तो डायजेशन् बंद हो जायगो. डायजेशन् बंद हो जायगो तो रॅस्पिरेशन् भी अन्तमें बंद हो जायगो.

क्रियायें अक्सर म्युच्युअली डिपेन्डेन्ट् हे. एक-दूसरेपे निर्भर हे पर यामें जा लेवल्पे जाके तुमकुं अपनो कहीं इन्डिपेन्डेन्स् समझमें आ रह्यो हे के अच्छा मैं सांस ले सकू हूँ. मैं पचा सकू हूँ. जैसे नहीं पचतो होय; हमारे यहां बड़े मन्दिरमें क्या होतो के जो लोग बिचारे चलवेके शौकीन हते, वे शामकुं खाके बड़े-मन्दिरसु मरीन-ड्राइव् तक चलतें, पर जो इतनो दूर जावेके शौकीन नहीं हतें वे भोजनके बाद गिरिराजकी परिक्रमा करतें. मुख्य सिद्धान्त क्या? गिरिराजकी परिक्रमा नहीं, डायजेशन् सुधर जाय. रातकुं भोजन कियो और गिरिराजकी भक्तिभावसु परिक्रमा! कोई पचास कर रह्यो हे, कोई एकसो आठ कर रह्यो हे. अपनेकुं लगे के बड़ो भावुक भक्त हे. भाव-भक्ति कुछ नहीं, खाली डायजेशन्को प्रिन्सिपल् हे. भई! बैठे-बैठे पचेगो नहीं तो कैसे करनो? गिरिराजकी परिक्रमा करनी. डायजेशन् तो हो जाय न! **"स्वतन्त्रः कर्ता"**! डायजेशन् डिपेन्डेन्ट् हे पर गिरिराजकी परिक्रमा करके डायजेशन् करनो यामें वो इन्डिपेन्डन्ट् हे. गिरिराजकी परिक्रमा गिरिराजकी भक्तिसु करें हें के डायजेशन्के लिये करें हें? जो पाणिनिने कही **"स्वतन्त्रः कर्ता"** हे. जो परतन्त्र हे म्युच्यअली डिपेन्डेन्ट् हे वो 'क्रिया'.

मजेदार बात आपकुं बताउं. जुनागढ़वाले बेटीजीके ब्याहमें मैं गयो हतो. वहां बहोत भीड़ और कहीं पैर धरवेकी जगह नहीं. मैं एक ठिकाने जाके बैठ गयो चुपचाप. पुरुषोत्तम काकाजीके पास एक 'देवी द्विज' करके कवि हतो. वो भी बिचारो मेरी तरह परेशान हतो. और रातके दो-ढ़ाई बज गये. शादीको प्रकरण चलतो रह्यो. मैं एक बहोत सिलेक्टेड् कोनामें जाके बैठ्यो के अब यहां कोई

तकलीफ नहीं हे. देवी द्विजने आके मोकुं साक्षात् दंडवत् लगाई. मैंने कही "बड़ो भक्तिवालो हे ब्रजवासी". दो मिनिट पांच मिनिट् उठ ही नहीं रह्यो! मैंने कही "गयो लगे हे ये तो!" तो मोकुं घबराहट भई. मैंने जगायो. मैंने कही "भई देवी द्विज, तबियत तो अच्छी हे न!" (वाने कही) "नहीं कृपानाथ तबियत तो अच्छी हे पर आपके सामने सोवेको अविवेक कैसे कर सकूं. दंडवत् तो कर सकूं न!" "एक्शन् (क्रिया) सर्वापि सैवात्र परं भावो न विद्यते". दंडवत्की ही क्रिया पर दंडवत्को भाव नहीं हतो. पर बिचारो क्या करे, थक गयो तो सो गयो. ये "**स्वतन्त्रः कर्ता**" कर्ता चहिये जैसे करे. "करवानुं य करे, न करवानुं य करे. पुरुषोत्तम चाहे सो करे. बालक सब ब्रह्म जानिये" ऐसो सोमाभाई केहतो "**स्वतन्त्रः कर्ता**" क्रियायें सब एक-दूसरेपे डिपेन्डेन्ट् हें. उन म्युच्यअली डिपेन्डेन्ट् क्रियान्में जहां स्वतन्त्रताको एलिमॅन्ट् आ रह्यो हे वा एलिमॅन्ट्को नाम, वा फॅसेट्को नाम 'कर्ता' हे और वा कर्तामें जहां म्युच्युअली डिपेन्डेन्ट् फंक्शन् प्रगट हो रहे हे उन फॅसेट्स्को नाम 'क्रिया' हे. तो अहंकार कर्ता भी हे और अहंकारकी क्रिया भी हे. या तरीकेको अहंकारको स्वरूप महाप्रभुजी समझा रहें हें. पर अहंकारमें सिर्फ कर्ता और क्रिया हें इतनो नहीं. अहंकारको कार्य भी हे. वो अपन्ने यहां देख्यो. महाप्रभुजीके हिसाबसु ये सारो स्वरूप हे. अपन्ने ग्राफिकली भी देख्यो. आपकुं कोई डिफीकल्टी होय तो आप पूछ सको हो. खैर! कोई प्रश्न आयो हे. वाकुं देख लें.

प्रश्न:

आपे 'भागवती अहंक्रिया'मां पुष्टिना स्टॅप्मां भक्ति समझावी. तेमां 'बालबोध'नो रेफरन्स् लीधो के जे जे देवताना भक्त होय ते देवनी भक्ति करे. तो ए पुष्टिनां अर्न्तगत भक्ति करे तो केवी रीते समझवुं?

उत्तर:

सबसु मुख्य बात यामें ये हे के महाप्रभुजीके भागवतके अथवा गीताके कोई भी वचन अप्रमाण नहीं हें. ये एक कथा. इन विभूतिन्के कोई भी वचन अप्रमाण नहीं हें, वो एक कथा हे पर कौनके लिये प्रमाण हे वो दूसरी कथा हे. दो कथान्कुं कन्फ्युज् नहीं करनो चहिये. वचन कोई भी अप्रमाण नहीं हे, पर वचन कौनके लिये प्रमाण हे? जब अपन् अधिकारको विवेक नहीं करें तब वो ही कन्फ्युजन् पैदा कर सके. जब अपन् अधिकार-विवेक करें, याही लिये धर्मके अंग बताये; देश-काल-द्रव्य-कर्ता-मन्त्र-कर्म, उनके विवेकसु जा बखत अपन् कोई भी क्रिया करें हें, तो वो क्रिया स्पेसिफिकली अपने लिये 'धर्म' बने हे. "**षड्भिः संपद्यते धर्मः**" (त.दी.नि.२।२१४) धर्म नामकी कोई एक क्रिया ऐसी हे ही नहीं दुनियामें के जो सबके लिये धर्म होय. एक क्रिया मोकुं ऐसी दिखाओ. मैं एक उदाहरणके तौरपे आपकुं बात कहूँ 'सच बोलनो'. एक गुंडा निरीह प्राणीके पीछे मर्डर्के लिये पड़यो भयो हे. अपन् सच बोलेंगे के वो यहां छूप्यो भयो हे. धर्म हे के अधर्म हे? सच बोलनो धर्म हे पर यदि वो गुंडा वाको मर्डर् कर रह्यो हे तुम्हारे सच बोलवेके कारण तो वा मर्डर्के अपराधी तुम भी हो. तो सच बोलनो कौनके लिये धर्म हे? कब धर्म हे? कहां धर्म हे? कैसे धर्म हे? उन सारे फॅक्टर्सको जब तक अपन् विश्लेषण नहीं करें तब तक अपने आपमें कोई भी क्रिया 'धर्म' नहीं हे. मर्डर् अधर्म हे पर देशकी सीमापे लड़वेवालो सैनिक यदि ये सिद्धान्त मानके चले के नहीं नहीं! मर्डर् तो अधर्म हे, जो भी टेररिस्ट् आये उनकुं आवे दो, उनको स्वागत हे. भारत तो सबको स्वागत करतो आयो हे. टेररिस्टन्को भी दिलसु स्वागत करें. तो धर्म हे के अधर्म हे? अधर्म हो गयो. कोई भी क्रियाको एग्ज़ाम्पल् लो. कोई क्रिया दुनियामें ऐसी नहीं हे के जो क्रिया सबके लिये सब जगह सब हेतुसु धर्म ही होय. जो भी क्रिया धर्म हे वो एक साधनसु करी जाय तो धर्म हे. दूसरे साधनसु करी जाय तो अधर्म हे.

ये जो आज इश्यु हे के जैसे; सेवा एक क्रिया हे. तनुवित्तजासु करो तो धर्म हे. तनुवित्तजाके बायफर्केशन्सु करो तो वो सेवा अधर्म हे. वो ही सेवा घरमें करो तो धर्म हे. कहीं हवेलीन्में भटकके कर रहे हो तो अधर्म हे. कोई मोकुं एक क्रिया ऐसी बताओ के जो क्रिया सबके लिये सब जगह सर्वत्र धर्म होय. ऐसी कोई क्रिया हो ही नहीं सके. अभी एक सामान्य बात बताऊं. अपन् कहें के महाप्रभुजीकी वाणीको अवगाहन प्रत्येक वैष्णवके लिये धर्म हे. पर वल्लभपंथीएं क्या करें? सुबोधिनीको पाठ करें फिर युरिन्-आउटपुट् क्या आयो? ब्लड्-प्रेशर् टेस्ट् करें के कितनो रह्यो? अब महाप्रभुजीकी वाणीको पाठ करके युरिन्-आउटपुट् क्या आयो, स्टुल्-आउट्पुट् क्या आयो और ब्लड्-प्रेशर् क्या आयो, ये टेस्ट् करनो धर्म हे के अधर्म हे? या हेतुसु कर रहे हो तो महाप्रभुजीकी वाणीको पाठ अधर्म हे. बेवकूफ हें या लिये करते रहें ऐसे ऊटपटांग काम.

तो एक बात समझवेकी हे के कोई चीज धर्म हे के अधर्म हे. अपने आपमें कोई क्रियाके आधारपे कोई कर्म न तो धर्म हे. वाही छुरासु कोईको पेट चीरनो अधर्म हे और वाही छुरासु कोईको ऑपरेशन् करनो धर्म हे. बोलो धर्म क्या हे अधर्म क्या हे? वाको मापदंड कभी भी क्रिया हो नहीं सके हे. ऐसे ही ज्ञान क्या हे? अज्ञान क्या हे? वाको मापदंड कभी प्रमाण नहीं हो सके हे. कौनसी चीज कौनके लिये प्रमाण हे और कौनसी चीज कौनके लिये प्रमाण नहीं हे वामें कर्ता साधन प्रयोजन, इन सबको होलिस्टिक् एप्रोच् जब-तक अपन् नहीं अपनावें तब-तक अपनकुं नेट् कोई सच्चो रिज़ल्ट् मिल नहीं सके.

'मुंबई महाराष्ट्र जाला च पाईजे' ये दंगा भयो हतो तब हमारें बड़े मन्दिरमें चांदी बजारकुं लूटवे गुंडायें आयें हतें. अब बड़ी भारी प्रॉब्लेम् हो गई. कोई तरहसु पत्थर मार-मार सबकुं भगाये वा बखत.

तब फिर थ्रेटनींग्/रुमर ऐसी आ रही हती के वो रातकुं फिर लूटवे आयेंगे तो बड़े मन्दिरके कॉम्प्लेक्सके सब लोगन्ने नक्की कियो के रात भर अपन् गस्त देंगें. गस्तके लिये कितनो (रखनो) : एक सीटी बॅटरी और डंडा. कहीं भी कोई गुंडा आवे तो बॅटरीसु देखो और सीटी बजाओ. अब ये धर्म हतो. एक भाईसाहबने कोईके घरमें बॅटरी डालके देखनी शुरु करी. घरवालेंने कही "क्या करता हे?" वाने कही "गुंडा तो नहीं आया देखता हूँ." "अरे भाई! गुंडा आया तो मैं बोलूंगा के तू बोलेगा?" जो बॅटरी दी हती वो गस्त लगावेके लिये हती के कोईके घरमें डालवेके लिये हती? जबरदस्ती कोईके घरमें बॅटरी डालके देख रहे हो. वो बॅटरी जोड़के देखनो, जो धर्म हे वो अधर्म हो गयो के नहीं. रातकुं इतनो झगड़ा भयो के सचमुच सब लोग जग गये के कहीं गुंडा तो नहीं आ गयें पाछें! फिर पता चल्यो के कोई बाहरके गुंडा नहीं हते घरके ही गुंडायें बॅटरी जोड़के देख रहें हतें के गुंडा तो नहीं आयो. तो कोई क्रिया कोई साधन कोई भी चीज, कर्ता करण संप्रदान अपादान अधिकरण काल देश के विवेकके बिना कभी धर्म नहीं हो सके.

ये एक शिलालेख लिखके रखो. *जो भी धर्म हे वो कोई देशमें, कोई कालमें, कोई कर्ताके लिये, कोई कारणसु, कोई प्रयोजनसु, कहीं धर्म हे वो ही चीज कहीं अधर्म भी हो सके.* बालबोधमें आज्ञा कर रहें हें के ऐसो भजन करो. वो वचन पर जिनके लिये हे उनके लिये प्रमाण हे. अपने लिये वो वचन वा अर्थमें प्रमाण नहीं हे. या अर्थमें प्रमाण हे. महाप्रभुको दृष्टिकोण कितनो उदात्त हे के जो जाको भजन करनो चाह रहें हें वाकुं वाको भजन करवे दे रहे हे. जैसे गुंसाईजीने तुलसीदासजीकुं केह दी के तुम कृष्णके पद मत गाओ. तुम्हारे जैसे मेरे पास बहोत हें पर जैसो तुम रामको भजन करो ऐसो दुनियामें कोई नहीं हे. यासु तुम रामको भजन

करो. वो गुसांईजीकी विशालता हती. वा विशालताकुं समझवेके बजाय अपन् भलती बात समझ जायें के यहां केह दियो तो अपने लिये भजन हे. अपने लिये वो भजन नहीं हे या बातकुं ध्यानसु समझो. आजको अपन् यहां रखें. कल अपन् थोड़ोसो कर्ताको फिरसु सिंहावलोकन करकें और अहंक्रियापे जायेंगे. जो उपादेय क्रिया अपन्ने यहां तक महाप्रभुजीके (वचनन्सु) और ग्राफिकली या सारे कन्सेप्ट्कुं देख्यो.

कल अपन्ने पुरुषोत्तमसु या पुरुषोत्तमके अहंकारसु पुरुषके अहंकार तककी डॅवलपमॅन्ट्के ग्राफिकल् इलस्ट्रेशन् और वाकुं टेक्स्ट्सु कैसे टॅली करनो वो देख्यो. मूलमें यामें समझवेकी बात ये हती. (चार्ट दिखाते भये) ये जो पुरुषोत्तम हे याकुं अपन् 'अक्षर-शरीरी' भी केह सके. क्योंके जो सायटोप्लाज़्म् बतायो वाके भीतर पुरुषोत्तम हे. वो (अक्षर) वाके (पुरुषोत्तमके) शरीरकी तरह हे. तो 'पुरुषोत्तमशरीर' (अक्षरकुं) (पुरुषोत्तम = शरीरी) केह सकें और याके कॉन्ट्रास्ट्में यदि पुरुषको कोई तरहसु डिस्क्रिप्शन् आपकुं करनो होय, पुरुष हे नहीं अभी यहां, अहंकार तक ही अपन्ने लियो हे. (चार्ट् दिखाके) वो पुरुष यहां हे. पुरुषको डिस्क्रिप्शन् करनो होय तो अभी तो अपन्ने वो माइटॉटिक् और मेटोटिक् प्रोसेस्सु डिविज़न् देख्यो और रिप्रोडक्शन्की सारी स्टेजिज़् देखी पर फाइनल् स्टेज् याकी देखी नहीं. अभी यहां अपन्ने वाको ग्राफ नहीं बनायो हे पर वाकुं संक्षेपमें समझ सकें हें के पुरुषोत्तम जैसे 'अक्षर-शरीरी' हे, ऐसे पुरुष 'क्षर-शरीरी' हे. पुरुषोत्तम अक्षर-शरीरी हे क्योंके अक्षर वाको शरीर हे और ये पुरुष हे वाकुं अहंकारके ओनवई कुछ रिप्रोडक्शन् या वा तरहको उत्तरोत्तर आवरण चढ़तो जाय वाके कारण वो क्षर-शरीरी बन जाय हे. ये वाको खास पहलू हे और वाके या नेचर्के कारण पुरुषोत्तमको जो भी कुछ आत्मविभाजन हे वो विभाजन और पुरुषोत्तमके अहंकारके जो गुणधर्मन् हें, उन गुणधर्मन्कुं अपन् मायटोटिक्-वे में देख सकें पर पुरुषके सब गुणधर्म अपन्कुं मायोटिक्में समझने पड़ेंगे. ये मूल बात अपन्ने यहां तक देखी क्योंके ये क्षर-पुरुष (मायोटिक् सन्दर्भमें) हे वो अक्षर-पुरुष (माइटोटिक्के सन्दर्भमें) हे. क्षर-शरीरी पुरुष हे वो अक्षर-शरीरी पुरुषोत्तम हे. वाके कारण ये मौलिक अन्तर आ रह्यो हे. वाके अन्तर्गत आज अपन् थोड़ो ध्यान देंगे. क्योंके क्षर-शरीरी अहंकर्ताकि क्षरत्वके अनुरूप वाकुं हर चीज एक-दूसरेके साथ कॉम्प्लेक्सिटीमें संघात बनके मिली हे. एक सामान्य नियम ये हे के जो चीज जुड़े वो छूटी भी पड़े हे. जो जुड़े हे वाकुं 'उत्पत्ति' कहे हे और छुट्टी पड़े

हे वो वाको 'विनाश' कहे हे. विनाशकुं/विनाशवानकुं अपन् 'क्षर' कहें हें. ''**क्षरति इति क्षरः**'' ''**विनश्यति = क्षरति** '' वाको जो शरीर हे वो क्षर हे. और क्षर-शरीरमें वो होवेके कारण अहंकारके जो कुछ पहलू हें, वो समझवे लायक पहलू हे.

(अहंकारके तीन पहलू)

वा अहंकारकुं मुख्य अपन् यों समझ सकें हें, वाके तीन-डायमेन्शन् समझ लो. वो मैं थोड़ोसो आपकुं दिखा दऊं.

(१)को अहम्
(२)कुत्र अहम्
(३)कुतो अहम्

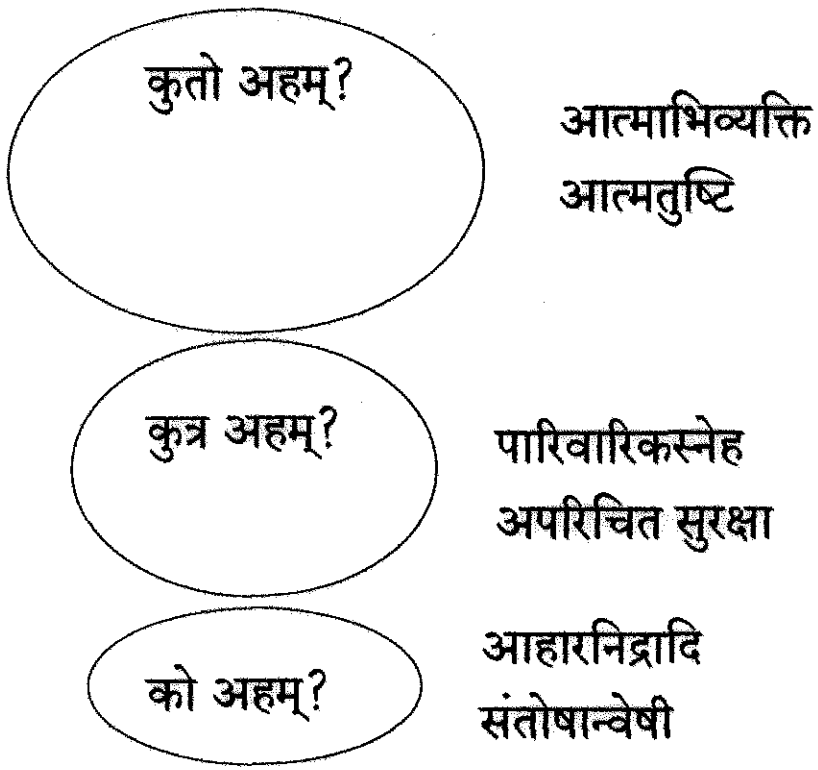

(को अहम्)

सबसु पहले वाके अहंकारको डायमेन्शन् एक या प्रश्नमें 'मैं कौन हूँ?' ये एक अहंकारको सबसु पहलो डायमेन्शन् हे. जब ये प्रश्न उठे के 'मैं कौन हूँ?' वाकुं अपन् जान रहें हें के वाको क्षर-शरीर हे और क्षर-शरीर होवेके कारण वाको जवाब अपनेकुं क्या मिले हे? जो बड़ो प्रसिद्ध जवाब हे. ''**आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यम् एतत् पशुभिः नराणाम्**''. पशुकी और मनुष्यकी क्षर-शरीरकी जो मांग हे जैसे आहार निद्रा भय मैथुन वगेरे. वे संतुष्ट होवें तो वाको 'को अहम्?' संतुष्ट होवे. याकुं सायकोलॉजीमें 'ड्राईव्' कहें हें. कभी 'अर्ज' कहें हें. कभी 'इन्स्टिंक्ट्' कहें हें. एक तरीकेकी शरीरकी मांग के शरीरकुं ये चहिये ही हे. खानो चहिये ही हे, सोनो चहिये ही हे. आराम चहिये ही हे. शरीरकी इन मांगनूपे अपनो कंट्रोल नहीं हे और वे मांगें अपनी इच्छासु नहीं पैदा हो रही हे. वो मांग शरीरके स्वभावसु पैदा हो रही हे. अपन् इच्छासु वाकुं मेनिप्युलेट् कर सकें. मेनिप्युलेशन् एक अलग चीज हे पर इच्छासु वो मांग पैदा नहीं हो रही हे. पैदा हो रही हे वो शरीरके स्वभावसु.

'को अहम्' मानें आहार-निद्रादि इन्द्रियादिकको संतोष खोजवेवालो. यदि इन्द्रियादिककुं संतोष मिलतो रहे तो वाको अहं संतुष्ट रहे हे. जिन् बच्चानकुं बचपनसु ही मिलनो बंद हो जाय या बड़े होवेके बाद भी, जिनकी या तरीकेकी मांग कोई कारणसु असंतुष्ट रेह जाय तो वो अस्वाभाविक रूपसु बढ़ जावे. जो संतुष्ट ही नहीं हो सकती होय उनके अहं अस्वस्थ हो जाते होंय हें. अहंकी अस्वस्थताकी सबसु पहली नींव यामें रहवे हे. जैसे अभी-अभी रिसेन्टली मैंने पढ्यो के जो बच्चा ज्यादा सो नहीं सके वो चिढ़-चिढ़ो हो जाय. वाकी डायाबिटिज् भी बढ़ जाय. वाके कारण बहोत सारे रोग बढ़ जायें. जाकुं अक्सर ठीकसु खानो नहीं मिलतो होय तो वाकुं मॉरालिटि

पीछे ख्यालमें आवे, चोरी करवेकी वृत्ति पहले जग जाती होवे हे. ये जो शरीरकी मांगें हें उन मांगन्सु वो संतुष्ट रेह पावे हे. अब आउट् ऑफ् प्रपोर्शन् कोईकी मांग कोई कारणसु बढ़ सके हे. और वो संतुष्ट नहीं हो सके तो फिर पाछी वो अहंकुं अस्वस्थ करेगी पर विदिन् प्रपोर्शन् वा तरीकेके मांग संतुष्ट हो पाती होय तो वाको अहं स्वस्थ रहे हे. ये सायकॉलोजीको मूल प्रिन्सिपल् हे. ये मैं धर्मके एंगल्सु नहीं पर सायकॉलॉजीके एँगल्सु बता रह्यो हूँ के अहंके अस्वस्थ होवेकी शुरुआत कैसे होवे हे. तो वाकी बायोलॉजीकल् शुरुआत होवे हे. पीछे लॉजीकल् शुरुआत हे, अहंके अस्वस्थ होनेकी पहले पहलूमें.

(कुत्र अहम्)

(२) दूसरो पहलू सायकोलोजीमें यों माने हे 'मैं कहां हूँ?' अहंकी अवेरनेस् जगे हे. वो इन्हीं डायमेन्शन्में, इन्हीं प्रोस्पेक्टिव्में जागती होवे. सबसु पहली मांग ये नहीं होवे के 'मैं कहां हूँ?' क्योंके कहां हूँ की मांग तो कब हो सके के जब पहले 'को अहम्' ये समझमें आवे. 'को अहम्'के बारेमें वाकी थोड़ी भी अवेरनेस् क्लिअर् होवे तब वाकुं 'कुत्र अहम्'की मांग होयगी. तो सबसु पहली वाकी मांग होवे के 'को अहम्' क्योंके दिखलाई दे रह्यो हे और 'मैं हूँ' यामें दिखलाई दे रह्यो हे वाकुं देखवेवालो 'मैं' हूँ. ये दिखलाई दे रह्यो हे वाके वीसा-वीस् वाकुं अपनो अहं कन्फर्म करनो पड़े. जो मैने कल आपकुं विस्तारसु समझाई बात. ये जो 'को अहम्' हे वो शुद्ध बायोलॉजिकल् फिनोमिना हे क्योंके शरीर जो मांग रह्यो हे वा मांगसु वाको 'अहम्' कन्फर्म होतो चल्यो जाय. भूख लगे हे, नींद आवे हे, वगैरे वगैरे जो भी कुछ वाकुं चहिये हे वाके अहंके सवालके जवाबके रूपमें. जब ये जवाब वाको स्वस्थतया संतुष्ट होवे तब धीरेसु वाकुं ये सवाल होवे के मेरे 'को अहम्' के सवालके जवाब देवेवाली सप्लाय् कहांसु हो रही हे?

तब वाकुं अचानक ये अवेरनेस् आवे ('अहम्'में) के 'कुत्र अहम्?'

अहंको ये बहोत बड़ो एक डायमॅन्शन् धीरेसु बच्चामें खुले हे, वो कौनसे दिन कौनसे महीनामें खुले हे वो नहीं केह सके. इन्डिविज्युअल् वॅरिएशन्के (व्यक्तिगत भिन्नता) हिसाबसु पर खुले सबको हे. 'कुत्र अहम्'वालो पहलू अचानक खुलने लगे हे. और वो पहलू खुले हे तो वा अहंकुं स्वस्थ रखवेकी जो आवश्यकता हे ('कुत्र अहम्'के सवालके जवाब रूपसु अहंकुं स्वस्थ रखवेकी) वो देखो; सायकॉलॉजीमें बहोत सुंदर बताई हे. जा परिवारमें बच्चा रेह रह्यो हे वा परिवारसु वाकुं स्नेह मिलतो रहे, तो वाको अहं अस्वस्थ नहीं होवे. ये स्नेहके बारेमें थोडीसी भ्रांत धारणा बहोत लोगन्में काम करे हे. 'स्नेह'को एक मतलब अपन् समझें हें जो बच्चाकी जायज-नाजायज डिमान्ड्कुं पूरी करनो स्नेह हे. वो तो बच्चाके विनाशको हेतु बने हे क्योंके जब अपन् बच्चाकुं ये बात नहीं समझा पावें के ये तुम्हारी नाजायज डिमान्ड् हे तब बच्चाके अहंके साथ क्या होवे हे? मैं जो भी कुछ मागूं वो मेरी मांग पूरी होनी ही चहिये. वो मांग वाकी परिवारमें पूरी हो सकेगी. जैसे ही परिवारके बाहर निकल्यो और या मांगके कारण वाकुं लप्पड़ें पड़नी शुरु भई तो वो एकदम ट्रॉमेटिक् (मानसिक आघात) एक्सपिरीअन्स् हो जायगो के ये क्या हो गयो? और वो अपने आपकुं फिर समाजमें फिट् नहीं कर पावे. अक्सर् बहोत लाड़ले बच्चायें क्यों मिस-फिट् हो जायें हें? वाको मूल कारण ये हे. अपन् वा बच्चाकुं बिचारेकुं मिस-फिट् मानें हें पर मूल कारण माँ-बापन्के द्वारा कियो गयो स्नेहको खोटो प्रकार. स्नेहको सच्चो प्रकार वाकी हर मांगकुं सप्लाय् करनो नहीं हे. सॅटिस्फाय् करनो नहीं हे पर वाकी हर लॅजिटिमेट् (जायज/उचित) मांगकुं या तरहसु कन्वे करते भये के "भई! ये तेरी मांग लॅजिटिमेट् हे और ये तेरी मांग लॅजिटिमेट् नहीं हे. हम क्यों कर रहे हें क्योंके तू हमारो प्रिय हे". ये वाकुं कन्वे

होनो चहिये. ये तुम्हारे लिये योग्य हे.

बच्चाके साथ सबसु पहली तकलीफ क्या होवे? बच्चाकुं कुछ पता तो चले नहीं न! दूसरो कोई बच्चा घरमें आयो तो वाकी चीज मोकुं चहिये. चहिये वापे झगड़ा शुरु करे. अब अपन् वाकुं दिवा दें. कोई चीज बच्चा सच्ची-खोटी मांग रह्यो हे वाकुं अपन् दिवाते चले जाएँ. हर वाकी मांग या तरहसु पूरी करते चले जाओ. बच्चाको ईगो या तरहसु बिगड़ जाय के वो फिर यों समझे के "सब कुछ मेरे लिये हे". "सब कुछ जब मेरे लिये हे" ये एक बखत बच्चाकुं कन्वे हो गयो तब वाके बाद बच्चाकुं दुनियाकुं फेस् करवेमें तकलीफ आवे. घरमेंसु जैसे ही बाहर निकल्यो वाकुं फ्रस्ट्रेशन् पैदा करेगो क्योंके सारी दुनिया वाके लिये हे नहीं. वाके हिसाबसु कुछ होयगो नहीं.

ईगोकी मांग हे वाकुं पूर्ण करे पर वाकी अयोग्य मांगपे वाके साथ अपन् इतनो त्रास नहीं गुजार दे के वाकुं अपनी मांगके बारेमें गिल्ट् फील् होवे लग जाय. ये पहली मुख्य बात हे. बच्चाके अहंकुं स्वस्थ रखवेके लिये के वाकी जो योग्य-अयोग्य मांग हे, कुछ मांग होवे ही हे बच्चाकी. बच्चाकुं विवेक होतो तो बच्चा ही क्यों केहवातो! पर वाकी जो अयोग्य मांग हे उन अयोग्य मांगनुकुं अपनुकुं फुल-फिल् नहीं करनी हे. वहां तकको माता-पिताको परिवारको रोल् सच्चो और अच्छो हे पर वा अयोग्य मांगपे हर वक्त अपनुने पनिशमॅन्ट्को एप्रोच् अपनायो. वासु बच्चाके अहंकारमें फिर स्प्लिट् पर्सनालिटी पैदा होवे के भई! जो कुछ मोकुं अच्छो लगे हे वो मेरे बड़ेनुकुं अच्छो नहीं लगे हे. याके लिये मोकुं अच्छो लगे वाकुं बड़ेनुके सामने प्रकट नहीं करनो पर बड़े एब्सॅन्ट् होंय तब वाकुं कोई तरहसु पूरो करनो. और या तरीकेको वाके अहंमें द्वैतभाव

पैदा हो जाय के बड़ेनुके सामने एक अपनो मुखौटा रखनो हे और एब्सॅन्स्में दूसरो मुखौटा रखनो हे.

अक्सर घरके नौकरके लिये ऐसे कह्यो जाय के वो मालिककी चीज वापर नहीं सके तो ये ही बाट देखते होंय के कब मालिक बाहरगाम जाय और वो खुद जाके पलंगपे सो जाय. जो-जो चीजें नहीं वापर सकते होंय सब चीज वापरके एक बखत देख ले के हम भी मालिक हे! कोई साधारण बात थोड़ी हे! हर नौकरकी यह सहज वृत्ति होवे के मालिक गयो नहीं और मालिककी सब चीज वापरनी शुरु करें क्योंके मालिककी अच्छी चीज वापरवेको फ्रस्ट्रेशन् उनके दिलमें बढ़तो ही चल्यो जाय. मालिककुं हर चीज वापरते देखके और खुदके डिप्राइवेशनुकुं (वंचित) देखके वो बात बच्चामें पैदा होवे हे के बच्चा जब या बातकुं समझ जाय के बड़े तो ये कर सके, अपन् नहीं कर सकें तो वाकुं कोई न कोई तरहसु डिप्राइवेशन्को बोध होवे के मोकुं डिप्राइव् कियो जा रह्यो हे. जो मेरी डिमान्ड्स् हें, जो मेरी अर्ज हे उनसु मोकुं डिप्राइव्ड् कियो जा रह्यो हे और मैं इनके प्रेजेन्स्में सॅटिस्फाय् नहीं कर सकुंगो. सो फिर वो बाट देखनी शुरु करे. कभी तो बाहर जाओगे न! जब बाहर जाओगे तब सब करेंगे. जैसे चॉकलेट्की छोटीसी बात ले लो. बच्चाकुं ज्यादा चॉकलेट् खावेकी ना पाड़ें तो बच्चा बाट देखतो रहे के जब बाहर गये तो खोलके चॉकलेट् खानी. इतने छोटेसे लेवल्पे वो बात स्टार्ट होवे पर वो आगे जाके अक्सर यों कह्यो जायके बच्चाकुं कोई काम करवावेके लिये जा बखत अपन् चॉकलेट् देके वासु काम करवावें तो बच्चाकुं घूंस खावेकी पहली ट्रेनिंग मिले. क्योंके जा बखत छोटो हे वा बखत चॉकलेट् मांग रह्यो हे. बड़ो हो जायगो वा बखत पेटी मांगेगो. बात तो वो की वो हे. प्रिन्सिपल् वो ही काम कर रह्यो हे. दो प्रिन्सिपल्

काम नहीं कर रहें हें. बच्चाकुं अपन् जब बड़े होके वा ट्रेनिंगके हिसाबसु डिमान्ड् करे तो अपन् कहें के करप्शन् बढ़ गयो. करप्शन् तो बढ़ेगो ही. क्योंके बच्चाकुं ट्रेइन् ही अपन्ने ऐसो कियो हे. हर बखत सावधानी बरतनी चहिये के बच्चाकुं अच्छो काम कभी भी लोभ और भय देके नहीं करवानो चहिये. वाके अहंकुं स्वस्थ रखवेकी पहली शर्त ये हे. लोभ और भय सु बच्चासु अपन्ने अच्छो काम करवायो नहीं और बच्चाकी अहंता दूषित भई. हो सके इतनो वाके साथ समझा-बूझाके अपन् करें तो वो बच्चाकी अहंता स्वस्थ रहवे.

अपने यहां तो नहीं हें पर मुसलमानन्में एक बहोत अच्छी या बारेमें कथा हे के कोई कुरानके बहोत बड़े जानकार हते और एक संत रज़िया हती. वाकुं कोईने कही के कुरानको बहोत अच्छो एक्सप्लेनॅशन् दें हें वो और कुरानकी हर आयातकुं बहोत अच्छे ढंगसु समझावे हे. तो चलनो चहिये. वाने कही जरूर चलेंगें. तो जब वो गये वहां तो वो जानकार उनके घोड़ाकुं (वो रस्सी छोड़के भाग गयो हतो घोड़ा, तो वाकुं) ललचावेके लिये घास दिखा-दिखाके पाछो तबेलामें लावेकी केह रहे हते. वा रज़ियाने कही यासु कुरानकी आयात नहीं सीखूंगी. वाने कही के घोड़ाकुं ललचाके तबेलामें लावेकी वृत्ति हे तो ये जैसे घोड़ाके साथ खेल-खिलवाड़ कर रहे हे तो ये मेरे साथ भी ऐसो खिलवाड़ नहीं करे!!(रज़ियाकी, जो उनके यहांकी बड़ी सूफी संत भयी बहोत करके वाही के ही लाइफ्की ही बात हे.) वाने कही "कुरानको अर्थ मोकुं जाननो हे, एकबार नहीं सौ बार. सच्ची बात हे! मगर या पंडितके पाससु मैं कुरानको अर्थ नहीं समझूंगी क्योंके घोड़ाकुं जब घास देके ललचा रह्यो हे मतलब वाकी वृत्ति तो वाने साफ कर दी!" अपनी बात समझावेके लिये लालच देवे हे तो बात सच्ची नहीं रह गई.

बालककुं स्वस्थ रखवेकी सावधानी हे. कौनसे लेवलपे? 'को अहम्'के लेवलपे नहीं. 'कुत्र अहम्'के लेवलपे के जब वो अपने परिचितनसु स्नेह पा रह्यो हे, तो वो स्नेह, लोभ और भय सु रहित होनो चहिये. जब वाकुं लोभ और भय सु रहित स्नेह मिलेगो तो वाकी भक्ति भी निरुपाधिक स्नेह लिये भयी होयगी. यदि बचपनमें अपन्ने वाकुं लोभ और भय सु ट्रेनिंग् दी हे और बड़े होके अपन् वाकुं समझायें के भगवान्की भक्ति निरुपाधिक करो तो वो बात वाके लिये परदेशी भाषा हो जाय हे. क्योंके वाकुं ये ही बात समझमें आवे हे के मोकुं ऐसो ही काम करनो हे के जामें या तो मोकुं थप्पड़ पड़े या जासु मेरो पूरो लाभ होय. भगवान्सु भी वो अपने अहम्की डिलिंग् याही तरहसु करतो होय के यदि मेरो काम करतो होय तो तो भगवान्, नहीं तो काहेके भगवान्.

राय साहबकी बात मैंने बताई न आपकुं. राय साहबको ये नियम हतो के रोज सुबह सब मंदिरनमें जाते. हमारे बालकृष्णलालके यहां भी आते और नमस्कार करते फिर बाजुमें गर्दनको झटका देते. वो कोई फिल्म्डायरॅक्टर्के असिस्टेंट् डायरेक्टर् हते. मैंने उनसु पूछी के आप ऐसे बाजुमें गर्दनको झटका क्यों दो हो तो उनने मोसु कही के "नमस्कार तो यालिये करूं के वो भगवान् हे और बाजुमें गर्दनसु झटका यालिये दऊं के कोई फाइनेंसर् नहीं मिल रह्यो हे. राय साहबकी प्रॉब्लेम् येही हती के वो भगवान्सु डरते यालिये नमस्कार करते और अपनी अहंताकुं वाके सामने झुकावेके बावजूद क्योंके उनकुं फाइनेंसर् नहीं मिलतो हतो या लिये गर्दनकुं झटका देते के काहेके भगवान्. ये जो वृत्ति हे; बच्चाकुं अपन् या तरहसु ही तो समझावें हें. जब या तरहसु समझावें तो बच्चा बड़े होवेके बाद या वृत्तिकुं सुधार नहीं सके क्योंके वाकी अहंताने वो कलर् ले लियो होवे हे. स्नेहको मतलब बच्चाकुं भयभीत करनो नहीं हे, वाकुं लालच देनो नहीं हे; भय और लालच सु रहित जब

अपन् बच्चाकुं स्नेह दे पावें तब बच्चाके मनमें शुद्ध स्नेहको भाव स्थिर हो पावे. वाके स्नेहकुं स्वस्थ करवेको 'कुत्र अहम्'के रूपमें, ये पहलो स्टॅप् हे. ये तो वाके परिवारके लोगन्की बात भयी. अब जो वाके घरके नहीं हें उनके बीचमें वाकुं सुरक्षा फील् होनी चहिये. अक्सर क्या होवे हे के अपन् एक-दूसरेके प्रति वर्ग-विद्वेषके कारण, समुदाय-विद्वेषके कारण एक-दूसरेसु डरते होवें हें. वा डरकुं अपन् बच्चामें इम्प्लांट् (जमा देनो) करतें होवें वासु क्या होवे के बच्चा अपने आपकुं असुरक्षित समझतो होवे. वा कारणसु वाको अहम् स्वस्थ नहीं रेह जाय हे.

मैं अपनी बात बताऊं. मेरो एक बहोत अच्छो मित्र हतो आसिफ. मैं वाके घर जातो पढ़वे. वाके एक भतीजा हतो, जाकुं सब 'पोंगा पंडित' कहते. एक दिन आसिफ घर नहीं हतो तो मैंने वासु कही के "पोंगा पंडित कैसे हो." वाने कही के "हम पोंगा पंडित नहीं हें." मैंने पूछी के "क्यों पोंगा पंडित नहीं हो?" वाने कही के "नहीं! पोंगा पंडित बहोत खराब होता हे. सबकुं छुरा मार देता हे." मैंने कही "अरे! मैं पंडित हूँ" वाने कही के "नहीं! आप तो डियर् अंकल् हो." अब देखो के एक फिक्टीशियस् कॅरेक्टर् (अवास्तविक चरित्र) गढ़के वो बच्चा डॅवलप् हो रह्यो हे. तो या तरहसु बच्चानमें अपन् भय प्लांट करतें होवें हें. बचपनमें वो भयभीत होवे फिर बड़ो होके वो द्वेष करतो हो जाय हे. अपन् अपने भयकुं बच्चानमें जा बखत प्लांट् करें तो बच्चा समाजमें अपने आपकुं असुरक्षित समझे हे. यासु वो डरतो हो जाय हे. ये सबसु बड़ी बात बच्चाके अहमकुं अस्वस्थ करवेकी हे.

मैं अपने घरकी बात आपकुं बताऊं. एक दिन ढब्बू और टीकू में चर्चा चल रही हती. ढब्बु केह रही हती के "ये लाल चींटी हे न! ये मुसलमान होवे और काली चींटी हिंदू होवे."

मैंने वासु पूछी के "लाल चींटी क्यों मुसलमान होवे." तो वाने कही के "काटे हे न काका." मैं वाकुं आसिफके घर ले गयो और वासु कही के "देख आसिफ तोकुं कितनो प्यार करे!" तो समझो के जब तक अपन् बच्चान्को डर नहीं निकालें तब तक वे समाजमें स्वस्थतया एन्ट्री नहीं ले सकें हें. वे डरवें लग जांय हें. जब तक वो बच्चा हे तब तक डरेगो. जब बड़ो होयगो तो वो द्वेष करेगो. वाके बाद वो षड्यंत्र करेगो, वाके बाद सत्यानाश करेगो. वो एक साइकल् चले हे. बच्चाकुं सबसु पहले सुरक्षितताको अनुभव होनो चहिये. जैसे घरमें और परिचितन्में वाकुं भीति और लालच रहित स्नेहको अनुभव होनो चहिये. एसे ही जब वो समाजमें प्रवेश कर रह्यो हे तो वाकुं सुरक्षाको अनुभव होनो चहिये.

मैं एक घरमें जातो हतो. महीना-महीना भर रेहतो वहां. वा घरके सब बच्चाएँ मेरे पास इकट्ठे हो जातें, कहानी सुनतें. एक दिन उन बच्चान्के चचेरे भाई घरमें आये. आते ही मोकुं देखके, मेरी लम्बी दाढ़ी, मूंछ, धोती देखके थरथर कांपवे लगे और सब बच्चान्कुं बुलाके पूछवे लगे के ये साधु-बाबा कहांसु आ गये. तो बच्चा उनसु केहवे लगे के "ये साधु नहीं हे, ये तो बहोत अच्छे आदमी हे." मानें जैसे साधु कोई गुंडा या बदमाश होय. अब कोई 'साधु' केहके बच्चान्कुं डरातो होय तो बच्चा तो ये ही समझेंगे न के वो कोई बहोत खतरनाक प्राणी होयगो जो समाजमें विध्वंसके अलावा कोई काम करे ही नहीं हे. अपन् या तरहसु बच्चान्के मनमें भय पैदा करें हें के बाबा आयगो तोकुं पकड़के ले जायगो. बच्चाके मनमें भय पैदा हो जाय. जब तक वो बच्चा हे तब तक भय रहे हे. जब बड़ो होवे तो वो ही भय द्वेषको रूप ले-ले हे. फिर वो साधुसु एसोशियेटेड् जो भी बात होयगी उनसु द्वेष करेगो. अक्सर अपन् देखें हें के कोई क्रिश्चन् बच्चा पादरीसु डरे नहीं हे. पर अपने बच्चाएं क्यों साधुसु डरें हें? क्योंके

अपन् महाराजन्को डर एसो बिठा दें. बच्चा सोचे के पता नहीं महाराज आयो हे, तो क्या बवंडर करेगो? वो बात बच्चान्के सामने कन्वे नहीं होनी चहिये. अपन् डरतें भी होंय तो भी बच्चाके सामने अपनो डर जाहिर नहीं होनो चहिये. पुरानो नियम याही लिये ऐसो हतो के रोनो तुमकुं आ रह्यो हे तो रो लो वामें कोई बुरी बात नहीं हे पर बच्चान्के सामने मत रोओ. क्योंके बच्चाके सामने यदि तुम रोओगे तो बच्चाकी मानसिकतापे बहोत खराब असर पड़ जाय हे. या भावसु अपने यहां ठाकुरजीके सामने रोवेकी मनाई हे. तुमकुं रोनो हे तो कहीं और जाके रो लो ठाकुरजीके सामने मत रोओ. अपने ठाकुरजीको अहम् क्यों अपन् बिगोड़ें? अपन् रोयेंगे, एक बार नहीं हजार बार रोयेंगे पर अपने ठाकुरजीके सामने अपने दु:खड़ा नहीं रोयेंगे क्योंके ठाकुरजीको अहम्, अपने अहम्के साथ इन्टॅरॅक्शन्में कहीं बिगड़ न जाय. बच्चाके अहम्कुं स्वस्थ रखवेकी पहली आवश्यकता ये हे के बच्चा जब समाजमें पहलो कदम रखे तो वाकुं असुरक्षा अनुभव नहीं होनी चहिये.

हमारे बचपनकी बात मैं आपकुं बताऊं. सन पेंतालीससु पचासके बीचमें जब हम बच्चान्में झगड़ा होतो तो हम एक-दूसरेकुं गाली क्या देते के "जा तू गांधी हे." क्योंके गांधी और मंदिरन्में येही झगड़ा चलतो के आज गांधीने यहां हरिजनन्कुं प्रवेश करवायो, आज वहां प्रवेश करा दियो. तो दूसरो केहतो के जा तू मुसलमान हे. क्योंके वा समय हिन्दु-मुसलमानको भी झगड़ा चलतो हतो. हमारे झगड़ामें निरंतर येही गाली-गलोच चलती के 'तू गांधी हे' के 'तू मुसलमान हे'. तो मनमें वा तरीकेको भय घर कर जाय के बहोत खतरनाक बात हे. जबकि गांधी तो बिचारो बहोत सीधो आदमी हतो पर घरमें निरंतर ये ही चर्चा चलती, या तो गांधीकी या मुसलमानन्की. हमकुं येही लगतो के ये कोई बहोत खराब प्राणी हे. ये लगतो के अपने घरमें अपन् सेफ् हें, बाहर निकले नहीं

के गांधी और मुसलमान आ जायेंगे. या तरहसु एक असुरक्षाको भाव आवे और वा भावसु बच्चाको अहम् अस्वस्थ हो जाय. अपनकुं चर्चा करनी चहिये. चर्चा करनी कोई बुरी बात नहीं हे पर बच्चाके सामने इतनी सावधानी रखनी चहिये के बच्चाके मनमें कोई असुरक्षाको भाव घर न कर जाय. एक बार वो असुरक्षाको भाव आयो तो फिर बड़े होवेपे द्वेष आवे और फिर काम क्रोध लोभ मोह की प्रोसेस् वहांसु शुरु हो जाय. फिर अहंता-ममताकी लगाम अपने हाथमें नहीं रेह जाय.

अनागारक लामा गोविंदकी मैंने डायरी पढ़ी हे. वामें वाने बहोत अच्छी बात लिखी हे के जाकुं पढ़के मोकुं रोमांच हो गयो. वो जर्मन हतो और आजसु सवासौ साल पुरानी बात हे के वो पहलो बाहरसु आयो भयो व्यक्ति हतो जो तिब्बत गयो हतो. वहां वासु पहले हिन्दुस्तानसु राहुल सांकृत्यायन गयो हतो और वो वहां वाकुं मिल्यो हतो. वो लिखे हे के "जा बखत मैं तिब्बतकी सीमामें घुस्यो और एक चट्टानपे बैठ्यो तो वहां सारी चिड़ियायें मेरे कंधापे आके बैठ गयीं." वाने लिख्यो हे के "मैंने अपने जीवनमें कभी इतनो रोमांच अनुभव नहीं कियो के कभी चिड़िया मनुष्य जातिपे इतनो विश्वास कर सके!!" चिड़िया गधापे बैठे, भैंसपे बैठे पर मनुष्यपे बैठवेको विश्वास चिड़िया नहीं करे. वाको मूल कारण हे के चिड़ियान्के जो माँ-बाप होंयगे वो अपने बच्चानकुं डरा देते होंयगे के "ये मनुष्य बहोत खतरनाक प्राणी हे, यासु बचो. भैंससु बचवेकी जरूरत नहीं हे." वो भैंसके कानमेंसु मैल साफ करे, वाके बदनके कीड़ा खा जायें. उनकुं भैंसपे इतनो विश्वास पर मनुष्यपे विश्वास नहीं हे. कई चिड़ियायें तो मगरपे जाके बैंठ जायें. उनके दांतके बीचको कचरा साफ करे. अब सोचो के मगरकुं चिड़ियाकुं खावेमें कितनो टाइम लगे. पर उनकुं मगरपे भी विश्वास होवे क्योंके उनके माँ-बापकुं विश्वास होवे. मनुष्यपे उनकुं विश्वास नहीं हे. जो

पेरेन्टल् फियर् हे वो बच्चापे कन्वे नहीं होवे देनो चहिये. ये पहली शर्त हे. यदि याको पालन आप कर रहे हो तो बच्चाके अहंको विकास ठीकसु होवे दे रहे हो. आपकुं डर लग रह्यो हे तो कोई बात नहीं, आप डरो भले पर बच्चाके सामने वा डरकुं प्रकट मत होवे दो. वो आपके दिलकी चोरी बच्चाके सामने प्रकट नहीं होनी चहिये. ये 'कुत्राहम्'को खास पहलू हे.

प्रायः या बातपे कोई भी सायकॉलॉजिस्ट्को मतभेद नहीं हे और मोकुं नहीं लगे के कोई भी धार्मिक सिद्धांत भी या सिद्धांतसु विवाद कर सके क्योंके ये तो युनिवर्सल् फॅक्ट् हे. जरासु भी ध्यानसु देखो तो समझमें आ सके हे. अपन् विचारें नहीं हें. विचारें तो विरोधको कोई प्रसंग आ ही नहीं सके यामें और धार्मिक सिद्धांतन्में.

(कुतो अहम्)

अहम्को तीसरो पहलू के कैसे अपनो अहं स्वस्थ रहे हे और कैसे अस्वस्थ हो सके हे वामें सायकॉलॉजिस्टन्को ये अभिप्राय हे; पहलो 'मैं कौन हूँ', दूसरो 'मैं कहां हूँ' और तीसरो 'मैं क्यों हूँ.' जब बच्चाकुं स्वस्थतया ये समझमें आ जाय के 'मैं कौन हूँ', जब वाकुं ये समझमें आ जाय के 'मैं कहां हूँ' स्वस्थतया तब वाके सामने ये प्रश्न उपस्थित होवे हे के 'मैं क्यों हूँ'. मेरे होवेको प्रयोजन क्या हे? अपन् यों समझें हें के ये प्रश्न सायकॉलॉजिस्ट्के ही दिमागमें आवे हे ऐसो नहीं हे. ये प्रश्न हर व्यक्तिके दिमागमें आवे हे. अन्तर कितनो पड़े हे के सायकॉलॉजिस्ट् वाकुं थियॉराइज्ड् करके सामने लावे हे और अपने सामने जब कभी ये प्रश्न खड़ो होवे तो अपन् वाकुं स्थगित कर दें हें के अभी छोड़ो याकुं फिर कभी सोचेंगे या विषयपे. जैसे कोर्टमें केस स्थगित करते रहें हें वैसे ही 'मैं क्यों हूँ' या बातकुं अपन् स्थगित करते रहें हें. इन्टेशनली वा प्रश्नकुं अपन् पोस्ट्पोन् करते रहें हें. जब निरंतर ऐसो करें तो

एक समय ऐसो आ जाय के जैसे कोर्टमें केस स्थगित होते-होते दोनों पार्टियें मर जायें और केस वहां कायम रेह जाय वैसे ही अपन् मर जायें और 'कुतोहं' वहां कायम ही रेह जाय. अपनुकुं पता ही नहीं चले के अपन् यहां क्यों आये. *''लायी हयात आयी कज़ा ले चली चले. अपनी खुशी न आये न अपनी खुशी चले.''* वा तरहसु पोस्टपोन् करते-करते ऐसो हो जाय. पर जा व्यक्तिकी चेतनामें ये बात स्पष्टतया उभरके आवे के 'मैं क्यों हूँ', और या बातको उत्तर यदि वो खोज सके तो वाको अहम् कभी अस्वस्थ नहीं होयगो. ये साइकॉलोजिस्ट् कहें हें.

('को अहम्'को मॅनेजमॅन्ट्)

ये देखो! (चार्ट देखें) जो छोटो सर्कल् हे वासु बड़ो एक और हे और वासु बड़ो भी एक और हे. नींव छोटी हे और वापे भवन धीरे-धीरे बड़ो खड़ो होतो जाय हे. ये ईश्यु धीरे-धीरे बड़ो होतो जाय हे. वाको कारण समझो के अपने शरीरकी जो डिमान्डस् हें, आहार निद्रा आदि, उन डिमान्डस्की अपने मनुष्य जगत्में अपन्ने सोसायटी फॉर्म करी हे, सोशियल् इन्टॅरॅक्शन्में अपन् पार्टी हें, सो या कारण अपनी वे डिमान्डस् वा सेट्-अप्सु पूरी होती रहें हें. वे वा सेट्-अप्सु पूरी होवे या कारण उनकुं पूरी करवेकी अपनी स्ट्रगल् उतनी इन्टेंस् नहीं होवे जितनी के जानवरन्में होवे. क्योंके उनके यहां वैसी सोसायटी नहीं हे. हर जानवरकुं अपनी खुराक खुद खोजनी पड़े हे. हर जानवरकुं खुद अपनो साथी खोजनो पड़े हे. न तो वहां कोई कोर्ट-मॅरेज् हे और न गोर महाराज पुरोहित हे. चिड़िया वाकुं स्पष्ट केह देवे हे के घोंसला बनाके बता तो अपनो मॅरेज् होवे नहीं तो नहीं होवे. पॅन्विन्की कुछ सेमी सोसायटी जैसी कल्चर् होवे. उनमें जो नर होवे वो बिलकुल स्त्री टाइप्को होवे. जब तीन-चार मादाएँ आ जायें तो उनमें झगड़ा होवे के ये नर मेरो के तेरो? वे एक-दूसरेसु लड़ती रहें हें और वो नर

खड़ो देखतो रहे हे. जो मादा जीते वो वा नर पॅन्विनकुं ले जाय. ले जाय मतलब मर गयो पॅन्विन्. क्योंके अंडा देवेके बाद कोई मादा अपने अंडापे बैठे नहीं. उनपे नरकुं बैठनो पड़े. फंस गयो गरीब. अंडा देते ही मादा तो चली जाय. उनके यहां कुछ ऐसो सेट्-अप् हे.

शेरके यहां कुछ मनुष्य टाइप्को सेट्-अप् हे. जब दो शेर इकट्ठे हो जायें तो उनमें शेरनीके लिये लड़ायी होवे. वामें जो शेर जीते वाके चारों ओर शेरनीएँ घेरा डालके खड़ी हो जायें और घुर्रावें. पता नहीं क्या बोलें? जो शेर जीते सब शेरनी वाकी. उनके यहां ऐसो सेट्-अप् हे. पर ये सारो प्रयास उनकुं खुदकुं करनो पड़े. न कोई गोर महाराज हे, न कोई मॅरेज्-ब्यूरो हे. टॅरिटेरीको भी जानवरन्में बड़ो भारी ईश्यु हे. वो अपनी टॅरिटेरी बनाके रहते होवें और अपनी टॅरिटेरीमें वो कोईकुं घुसवे नहीं दे हे. मैंने नॅशनल् जियोग्राफीमें एक बखत देख्यो हतो के जा बखत सहाराके रेगिस्तानमें पानीकी कमी आवे वा बखत शेर अपने परिवारके सहित पहलेसु ही वहां डेरा डाल देवे हे. बिलकुल मनुष्यकी तरह वो वहां अपनो अधिकार जमाके बैठ जाय. कोई भी जानवर वहां पानी पीवे आवे तो शेरनिएँ उनकुं भगाती रहें हें. शेर कुछ नहीं करे. केवल एक सुपर्वाइज़र्की तरह बैठके देखतो रहे. पर जब हाथी आवें पानी पीवे तब शेरनी उनसु डरे और केवल गुर्राती रहे. ये देखके शेर अपनी आंख मीच ले हे के जावा देओने, व्यर्थमें झगड़ा करके फायदा क्या? खोटो झगड़ा क्यों करनो. शेरको ऐसो मस्त सिद्धांत होवे मनुष्यके जैसो.

ऐसो ही मैंने एक जोक सुन्यो हतो के एक शेरकुं थोड़ो कॉन्फिडेन्स् हिल गयो तो वाने एक जानवरसु पूछी के ''जानता हे मैं कौन हूं.'' वाने कही के ''महाराज आपकुं कौन नहीं जानता.

आप तो जंगलके राजा हो.'' वा शेरने कही ''ठीक हे, जाओ.'' ऐसे वाने कई जानवरनसु पूछी. सबने येही उत्तर दियो. फिर वहां हाथी आयो. वासु भी वा शेरने यही पूछी तो हाथी जोरसु बोल्यो के ''क्या केहता हे.'' और वा शेरकुं वाने सूंड़में उठाके फेंक दियो. वा शेरने कही के ''अरे भाई! नाराज क्यों होते हो. अगर तुम्हें नहीं पता हे तो पूछ लो के मैं कौन हूं. मैं जंगलको राजा हूं, पुरुषोत्तम हूं. इसमें गुस्सा होनेकी क्या बात हे.'' या तरीकेकी व्यवस्था जानवरनमें भी होवे पर वो सारी व्यवस्था वाको कोई समाधानी नहीं करे. वा बिचारे खुदकुं ही सब करनो पड़े, ये मॅनेजमेंट् ऑफ पुरुषोत्तम. जैसे मॅनेजमेंट् ऑफ बिज़नेस् होवे, जैसे मॅनेजमेंट् ऑफ ईवेंट् होवे, ऐसे पुरुषोत्तमताको मॅनेजमेंट् हर जानवरकुं खुदकुं करनो पड़े. वहां कोई समाधानी और मुखिया नहीं होवे सावधान सावधान! करवेवालो. तो ये तकलीफ हे उनकुं अपने अहंकुं कायम रखवेकी.

('कुतो अहम्'को मॅनेजमॅन्ट्)

पर जहां तक 'कुतोहं'को प्रश्न हे वो मनुष्यकी सोसायटीमें एकदम सामने उभरके आवे. तब सबसु पहली वाकी आवश्कता ये होवे हे के वाने अपनो स्वरूप सोच्यो हे के 'मैं ये हूं'; अब वो स्वस्थ होय के अस्वस्थ होय, पर वाने जैसो सोच्यो हे; वाकी हकीकतमेंसु जो वाके अहंकी कहानी बनी, वा कहानीकुं यदि वो जी सकतो होय तो वाको अहं संतुष्ट होवे. और यदि वा कहानीकुं क्लाइमेक्स् तक नहीं पहोंचा सकतो होय तो वा आदमीको अहं खंडित होवे, दुःखित होवे, त्रस्त होवे और वोही अपने अहंकुं अस्वस्थ बनावेको सबसु बड़ो कारण बने. आज ही एक प्रोफेसर् मोसु पूछ रहे हते के आज-कल आपको काहेपे लॅक्चर् चल रह्यो हे. तो मैंने वासु कही के आज-कल मेरो प्रवचन मॅनेजमेंट् ऑफ् ईगो पे चल रह्यो हे. ये सब्जेक्ट् आज-कल बहोत बड़ो ईश्यु हे के कैसे अपने ईगोकुं मॅनेज् करनो. ये एक अपनी लाइफ्की बहोत बड़ी समस्या

हे. जा बखत अपन् अपने अहंकुं अच्छी तरहसु मॅनेज् कर पा रहें हें तो वामें सबसु पहले ये आयगो के वाने सबसु पहले अपने बारेमें सोच्यो हे के 'मैं ये हूं', यदि वो कर पा रह्यो हे तो वाको अहं संतुष्ट होयगो और यदि वो नहीं कर पा रह्यो हे तो वाको अहं असंतुष्ट रहेगो, अस्वस्थ रहेगो. वा अस्वस्थताके कारण वो समाजमें कोई न कोई उपद्रव करेगो करेगो और करेगो ही. आदमीको ईगो मॅनेजमेंट्को ये एक बहोत बड़ो ईश्यु हे. यामें आत्माभिव्यक्ति; वो शरीर और आत्मावाली आत्मा नहीं. 'आत्मा' मानें खुदको; मानें जा तरहसु वाने अहंकुं बीज मानके खुदकी कहानी गढ़नी चाही हे, वाकुं क्लाइमेक्स् तक पहोंचानो मानें आत्माभिव्यक्ति और वा आत्माभिव्यक्तिसु होवेवाली आत्मतुष्टि, वो प्राइमरी ईश्यु हे, 'कुतोहं'वाले डायमेंशनकुं स्वस्थ रखवेके लिये. वामें जो सफल हो जाय, वो व्यक्ति बाय् डिफोल्ट् सुखी रहेगो. जामें असफल रह्यो वाके अहंमें, वाके व्यवहारमें तो अस्वस्थता आनी स्वाभाविक हे. वो तो गड़बड़ाध्यायमें बढ़तो ही चल्यो जाय हे.

('कुतोहम्'को अस्वास्थ्य : 'शेम् टू यु')

अंग्रेजीमें एक बहोत अच्छी कहावत हे के तुम वॉवेल्को (स्वर) उच्चारण ठीक तरहसु करो, कॉन्सोनेंट् (व्यंजन) तो अपने आप प्रोनाउन्स् (उच्चरित) हो जायगो. क्योंके अंग्रेजीकी जो सबसु बड़ी तकलीफ हे वो ये हे के जैसे टॅस्ट् (test) (जांच) और टेस्ट् (taste) (स्वाद); युरिन् टॅस्ट् और युरिन् टेस्ट्; बहोत फरक पड़ जा रह्यो हे. वहां मुरारजीभाई आ जा रह्यो हे. अपन् वो सावधानी नहीं रखें तो बहोत लफड़ा हो जाय. याही लिये अंग्रेजीकी डिक्शनरीमें लिख्यो भयो होय हे के वॉवेल्को उच्चारण ठीकसु करो, कॉन्सोनेन्ट् अपनी कॅयर् अपने आप लेयगो. ये बात ठीकसु समझनी चहिये के यदि अपन् अपने अहंकी कॅयर् ठीकसु लेंगे तो अहं अपनी क्रियाकी कॅयर् लेयगो. वो अपने आप नॅचरल् कोर्समें आवे लगेगो.

पर यदि अहंकी कॅयर्में अपन्ने कुछ गड़बड़ाध्याय कर दियो तो विचित्र-विचित्र उच्चारण आते रहेंगे. ये एक बड़ो भारी रहस्य हे.

वेसे एक बात सच्ची हे के अहंको इतनो प्राइमरी रोल् हे वॉवेल्के जितनो, तो अपन्कुं कॉन्सोनेन्ट्की कॅयर् लेनी ही नहीं; जैसे के बंगाली 'स'कुं 'श' बोलें हें तो एक बंगालीकुं कोईने कही के ''कॉन्ग्रेच्युलेशन्स्''. तो बंगालीने जवाब दियो ''शेम् (शरम) टू यू.'' तो थोड़ी बहोत कॅयर् अपन्कुं कॉन्सोनेंन्ट्की भी लेनी पड़ेगी नहीं तो 'शेम टू यू'' हो जाय. ये एक तकलीफ हे पर खास तकलीफ वॉवेल्के उच्चारणकी हे. वो पहले कॅयर् लो. वो लोगे तो शेम् टू यू नहीं होयगी.

ये मूल सायकॉलॉजीकी बात हे और यालिये अपन् देख सकें हें के जब अहंकी स्वस्थताको, अहंके अस्वाथ्यको प्रश्न उठे हे तो सायन्स्की बहोत सारी थियरीज् अपने-अपने प्रॅपोज़िशन्के साथ आगे आवें हें. वो इश्यु केवल एक सायकॉलॉजीको नहीं हे, सायकॉलॉजी तो अहंको फाइनल् कल्मिनेशन् हे जामें अहंकी इवॅल्युएशन् अपन् करेंगे. अपन् जानें हें के सेल्युलर् बायोलॉजीको अहंके साथ कुछ न कुछ संबंध हे. फिज़ियोलॉजीको अहंके साथ संबंध हे. फिज़ियो-एन्थ्रोपोलॉजीको सोशियोलॉजीको और पॉलिटिक्स्को अहंके साथ संबंध हे. इकोनॉमिक्स्को अहंके साथ संबंध हे. स्वस्थ और अस्वस्थ अहंके बहोत सारे ईश्यु इकोनॉमिक्स्सु सॉल्व् हो सकें हें, सोशियोलॉजीसु सॉल्व् नहीं हो सकें. याही तरह बहोत सारे अहंके ईश्यु सोशियोलॉजी सॉल्व् कर सके हे, इकोनॉमी सॉल्व् नहीं कर सके हे. अहंके कुछ आस्पॅक्ट्स् ऐसे हें जिनकुं सायकॉलॉजी ही डिल् कर सके हे. तो अपन् ये सोच सकें हें के विषयकी गंभीरता कितनी हे और उन सारे अहंके विषयन्कुं अपन् सायन्स्के हिसाबसु सॉल्व् करवें बैठें तो रामायण ही पूरी नहीं हो पायगी. या कारण अहंके जा पहलूकुं

अपन् पूरे फोकस्के साथ समझनो चाह रहें हें, वाको अपन्ने ग्राफिकली देख्यो, वा अहंके सारे पहलून्में वाको मॅटाफिज़िकल् पहलू भी अपन्ने देख्यो जो अहंकी उपादान-कर्ता और उपादान-क्रिया के हते. वाके अलावा धर्मवाले पहलू अपन्ने देखें तो नहीं पर अपन् समझ सकें हें के यदि ईश्वर पार्टी हे तो वाके साथ इन्टॅरॅक्शन्में धर्मवाले पहलू तो आ ही जा रहे हे. अहंसु रिलेटेड् कुछ न कुछ ईश्यु तो अपन्कुं सोचने ही पड़े हे. फाइनल् जो अपन्ने जा ईश्युके बारेमें सोच्यो, जोके मन बुद्धि चित्त और अहंकार हे, जो महाप्रभुजीके कॉन्टेक्स्ट्सु अपन्ने देख्यो. जो केवल सायकॉलॉजिकल् ईश्यु हे और वो सायकॉलॉजिकल् होवेके कारण मॉडर्न सायकॉलॉजी या बारेमें क्या सोचे हे वे सबकुं तो अपन् यहां ला नहीं सकें पर या बखत जो अपनी बातसु रिलेटेड् सायकॉलॉजीने कह्यो हे वा बातकुं अपन् जरूर यहां लेवेको प्रयास करेंगे.

(महाप्रभुजीको अहंकारको सायकॉलॉजिकल् सिद्धान्त)

(चार्ट ११)

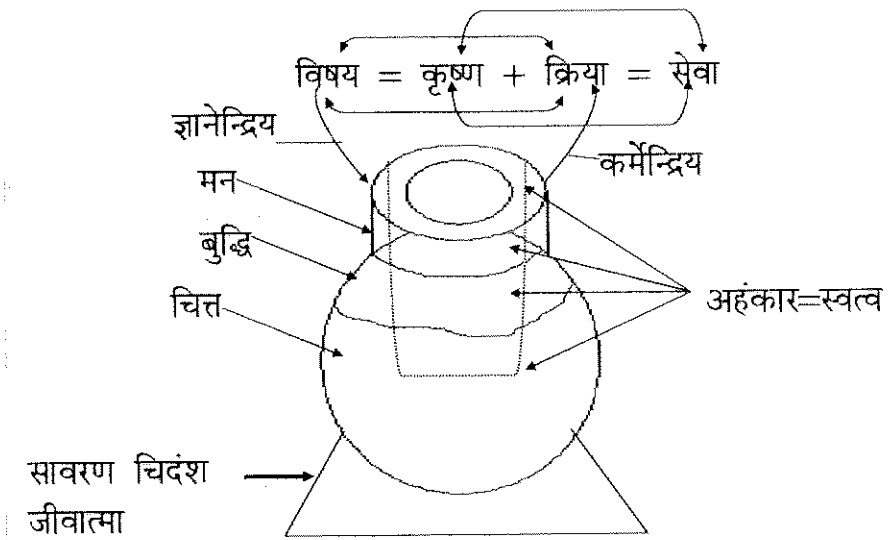

एक बार अपन् या चार्ट्कुं रिफर् करें तो अपन् जो केहनो चाह रहें हें वाकुं मॉडर्न् सायकॉलॉजीके साथ कहां रिलेट् करें हें वाकुं अपन् ठीकसु समझ सकेंगे. अपनो सायकॉलॉजीको सिद्धांत हे वो मैंने गये बरस भी समझायो हतो के 'चिदंश' मानें जीवात्मा और ये वाके चारों ओरको सायकॉलॉजिकल् स्ट्रक्चर्. वा स्ट्रक्चर्में विषय ज्ञानेन्द्रियसु आवे हे और वा विषयके बारेमें क्रिया कर्मेन्द्रियसु प्रकट होवे हे. वा बखत कृष्ण और सेवा को विषय हतो या कारण वाकुं दूसरे रूपमें समझायो हतो पर या बातकुं या तरह समझो के विषय ज्ञानेन्द्रियसु प्रकट होवे और क्रिया कर्मेन्द्रियसु प्रकट होवे हे. इन दोनोंन्में या तरहसु इन्टॅक्शन् होवे हे. ये पहलो प्राइमरी सॅन्सिटिविटी और सॅन्सेशन् को ईश्यु हे.

जब विषय ज्ञानेन्द्रियसु आवे हे तो घड़ामें (घड़ाकी किनारी दिखाते भये) सबसु पहले मन वाकुं अटॅन्ड् करे हे. जैसे जा बखत कोई विषय अपनकुं अपनी अनुभूतिमें एन्टर् होते भये दीख रह्यो हे, वा बखत भी अहंकार स्वयंकुं और वा विषयकुं कन्फर्म करे हे. ये बात मैं कल भी बता चुक्यो हूं के अपन् अपने अहंकुं, विषयकुं देखके कन्फर्म करें हें और जब अपनो अहं कन्फर्म हो जाय तो विषयकुं वासु (अहंसु) कन्फर्म करें हें. देखो या लेवल्पे भी अहंकार काम कर रह्यो हे. ये घड़ाकी किनारी हे, वो ज्ञानेन्द्रियकी और कर्मेन्द्रियकी किनारी हे. वाके भीतर जो घड़ाको गला हे वामें मन अपने हिसाबसु रहे हे. वामें भी अहंकार अपनो अटॅच्ड् हे. अहंकार वासु अन्-अटॅच्ड् नहीं हे. मन संकल्प-विकल्प करे हे. 'संकल्प'को मतलब कोई क्रियाको संकल्प करे और 'विकल्प'को मतलब के जो ज्ञानेन्द्रियसु इन्फॉर्मेशन् सप्लाय् भयी हे वाके प्रोज् एन्ड् कॉन्स् के (पक्ष और विपक्ष) बारेमें मन विचारे. जैसे कोई कालो मोटो डिल-डोलवालो पशु दीख्यो तो वो भैंस हे के हाथी हे के गेंडा हे, ये सारे विकल्प मन विचारे हे. ये सारे एक फ्रॅक्शन् ऑफ सॅकन्डमें (तत्क्षण) होवे हे और इनमेंसु कौन क्या हे या बातको विचार मन करे

हे. मनकी परिभाषामें महाप्रभुजीने बहोत सुंदर बतायो हे के "**यत् संकल्पविकल्पाभ्याम्**" (सुबो.३।२६।२७) मन सबसु पहले विकल्प करे के जो इन्फॉर्मेशन् सप्लाय् भयी हे वामें वो चयन करे हे के ये या ये,ये या ये, ये या ये. जैसे कोई भी इच्छा शरीरमें पैदा भयी तो या इच्छाकुं मैं या तरहसु पूरो करूं के वा तरहसु पूरो करूं. और उन विकल्पन्सु रिलेटेड् संकल्पन्कुं भी मन ही करे हे. ये मनको रोल हे जो या घड़ाकी गर्दनमें दिखायो गयो हे.

वा घड़ाकी गर्दनके नीचे जो घड़ाको ऊपरी भाग हे वामें बुद्धि हे. वामें भी अहंको एक रोल् हे. बुद्धिको फंक्शन् हे संशय विपर्यास (भ्रम) निश्चय स्मृति स्वप्न और निद्रा वगैरह, ये सब बुद्धिको काम हे. वो सारे काम बुद्धि करे हे और अहंकार हर बखत वाके साथ अटॅच् रहे हे. संशय होवे तो मोकुं लगे के मोकुं संशय हो रह्यो हे. निश्चय हो रह्यो हे; जैसे ये घड़ा हे ये निश्चय हो रह्यो हे तो मोकुं लगे के ये घड़ा ही हे. भ्रम भी बुद्धिको ही फंक्शन् मान्यो गयो हे अपने यहां क्योंके सीपपे अपनकुं चांदी दीख रही हे, रस्सीपे अपनकुं सांप दीख रह्यो हे. तो भ्रम बुद्धिमें होवे हे और अहंकार वहां सब जगह अटॅच्ड् हे. और वे सब जब हो जायें मानें संशय निश्चय विपर्यास स्मृति निद्रा या स्वप्न तो वाके संस्कार अपने चित्तमें जाके बैठ जाय हे, स्टोर्ड हो जाय हे. और रिक्वायरमेंट्के हिसाबसु वे सब बाहर; जैसे रहट चले हे वैसे बाहर आतो रहे हे. ये अपने यहांकी सायकॉलॉजीके हिसाबसु वाको स्वरूप हे अपनी अहंताकुं संभालवेवालो और अहंताकी हर चीजसु क्लब् होवेको.

कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय की रिलेशन्शिप क्या हे? कर्मेन्द्रिय; अपनेकुं जो इच्छा हो रही हे, वाके हिसाबसु अपन् चेष्टा करें हें. वो चेष्टा सबसु पहले मनसु प्रादुर्भूत होवे संकल्पके रूपमें. मन वाकुं मोटिवेट् करे हे. वाके बाद कर्मेन्द्रिय जैसे हाथ हे, पैर हे,

जीभ हे, ये सारे मोटर् ऑर्गन्स् हें. सेन्सरी ऑर्गन् और मोटर् ऑर्गन्, ऐसे अपने शरीरमें दो प्रकारके ऑर्गन् हें. तो जो मोटर् ऑर्गन्में मनसु पहले अपनुकुं संकल्प होवे. मन संकल्प करके मोटर् ऑर्गन्कुं काम करवेकी एक प्रकारकी डाइनेमिक् फोर्स् देवे हे. वो क्रिया कर्मेन्द्रियसु होवे हे ज्ञानेन्द्रियके द्वारा अनुभूतिके इन्टॅरॅक्शन्सु. ऐसी सारी प्रक्रिया बराबर चलती रहे हे, ये अपने यहां बतायो गयो हे. ये अपने यहांकी सायकॉलॉजीको रूप हे.

(मॉडर्न साइकॉलॉजिस्ट् फ्रॉइड्की दृष्टिसु अहंकारको स्वरूप)

अब याही ग्राफ्कुं प्रिजर्व करते भये मॉडर्न सायकॉलॉजी क्या केह रही हे, वो बतानो चाह रह्यो हूँ. मॉडर्न सायकॉलॉजिस्ट् ऐसे सोचें हें के; या विषयकी सबसु पहली सुव्यवस्थित सोच फ्रॉइड्की हे. और भी हें जैसे एड्लर्, जुंग्, पर उन सबकुं यहां लाके व्यर्थ विषयकुं बढानो नहीं चाह रह्यो हूं. अपन् यहां फ्रॉइड्कुं ही लेंगे.

(चार्ट १३)

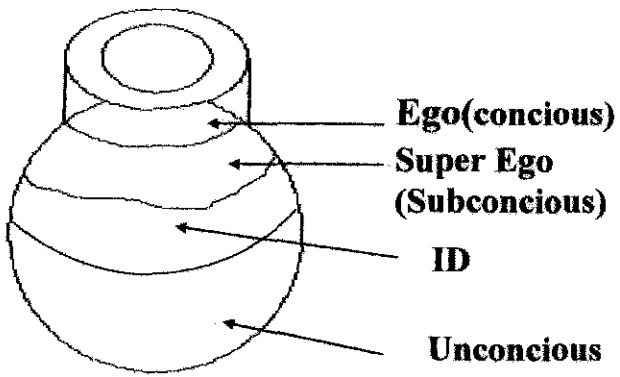

अभी अपन् कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय के कॉन्टेक्स्टकुं थोड़ी देरके

लिये रख दें क्योंके वो अपन्ने वाकुं अपनी थियरीके हिसाबसु देख लियो हे. मॉडर्न सायकॉलॉजी या बारेमें ज्यादा अलग नहीं कहे हे, थोड़ो ही अलग कहे हे. मॉडर्न सायकॉलॉजीमें चिदंश नहीं हे. वो जैसे अपने यहां बतायो हे के "सावरण चिदंश जीवात्मा". वो भी नहीं हे मॉडर्न सायकॉलॉजीमें. पर मॉडर्न सायकॉलॉजीमें अपनो जो कॉन्शियस्नेस् हे और अपनो अहं हे वाके विश्लेषण फ्रॉइड्के बहोत अच्छे हे.

('ईड्' : शारीरिक अहंता)

अपन्ने अपने यहां 'कोहम्' देख्यो हतो. आपकुं 'कोहम्' याद होयगो तो मेरी बात समझवेमें जरा भी तकलीफ नहीं होयगी. 'कोहम्'वालो बेज़में रह्यो भयो जो बायोलॉजिकल् आस्पॅक्ट् हे, वो 'कोहम्'की जितनी डिमान्डस् हें के मोकुं ये चहिये ये चहिये, उन सारे डिमान्ड्ससु एसोसियेटेड् एक 'ईड्' होवे हे. चहिये मानें चहिये. वामें कॉम्प्रोमाइज़को कोई सवाल ही नहीं हे क्योंके वो बायोलोजीसु गवर्न होतो फिनोमिना हे. 'ईड्'को या अपनी अहंतामें के मोकुं भोजन चहिये, मोकुं नींद चहिये हे, मोकुं आराम चहिये हे, कोई मोकुं अच्छो लग रह्यो हे, कोई मोकुं बुरो लग रह्यो हे वगैरह वगैरह. जो भी कुछ **"आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यम् एतद् पशुभिः नराणाम्"** मानें पशुके समान जो भी कुछ अपनी आवश्यकता हें, वो अपनी 'ईड्' नामके अहंकारसु गवर्न होवें हें. अपने अहंकारको एक पहलू ईड् हे.

साइकॉलॉजीके हिसाबसु ये ईड् अपनी इन्स्टिक्टिव् नॅचरल् (सहज स्वभाव) अहंता हे. याकुं अपन् अहंताको रॉ-मटिरियल् केह सकें. वा ईड्के हिसाबसु बच्चा सारो अपनो बिहेवियर् स्टार्ट करे हे. जो चहिये सो चहिये, जो नहीं चहिये सो नहीं चहिये. वाके हितमें होय, अहितमें होय, ये ईश्यु नहीं हे. ईड् जो केह रह्यो हे वो बच्चाकुं चहिये. बच्चानुकुं मीठो क्यों भावे? क्योंके बढ़ते बच्चाके

शारीरिक विकासके लिये शुगरकी जरूरत होवे हे. या लिये वाकुं शक्कर भावे. बूढ़ो शक्कर खावे तो डाइबिटीज़् बढ़े क्योंके शरीर ना पाड़ रह्यो हे के अब बहोत हो गयो, अब विकासकी आवश्यकता नहीं हे. तो सारो या तरीकेको हे के जो कुछ चहिये अपनुकुं, वाकी शरीर मांग करे हे. याकी खूबसूरती समझो के मांग तो शरीरके दूसरे अंग कर रहे हे. शरीरके अलग-अलग फंक्शन् मांग कर रहें हें पर वाको को-रिलेशन् अपनी ईड्सु होवे के नहीं! जैसे अपनुकुं भूख क्यों लगे? क्योंके अपने डाइजेशन्के जो एन्ज़ाइम् हे वो कुछ नहीं मिलवेपे पेटकी भीतकुं कुतरनो शुरु करें. वहां पेटमें कुछ दर्द हो रह्यो हे पर अपनी इन्टर्प्रिटेशन् ये होवे के मोकुं भूख लग रही हे. जब पानी अपने शरीरमें कम हो जाय तो शरीरकी ऑरगेनिज़म् पानीकी डिमान्ड् करे हे. पर अपन् वाकुं कैसे कहें हें के "मोकुं प्यास लग रही हे." ऐसे शरीरकी जो मांग हे वाको अपने अहंमें एक इमोशनल् पहलू होवे हे जो अपनी ईड्सु एसोसिएटेड् होके अपने सामने प्रकट होवे हे. "मोकुं प्यास लगी हे, मोकुं भूख लगी हे, मोकुं नींद आ रही हे, मोकुं डर लग रह्यो हे, अब मोकुं जागनो हे," वगैरह वगैरह. ये सारी बायोलॉजिकल् डिमान्ड् हें वे ईड्के द्वारा रिवील् होवें हें. एक्चुअली ईड्कुं अपन् एसो चमचा समझ लें के जो अपनी बायोलॉजिकल् डिमान्ड्सु वाकुं चमचा भरके अपनी कॉन्शियसनेसकुं सोंप दे वो अपनुकुं लगे के ये अपनुकुं चहिये. पर वा ईड्के साथ दिक्कत ये हे; क्योंके बच्चा परिवारमें जी रह्यो हे, समाजमें जी रह्यो हे तो वाकुं ईड्के द्वारा जो डिमान्ड् पेश की जा रही हें, वो सब फुल्-फिल् तो हो नहीं सकें हें.

जैसे एक सामान्य उदाहरण बताऊं के अपन् बच्चाकुं लेके दोस्तसु मिलवे चले जायें. अपनी और वाकी जिगर-जान दोस्ती हे पर अपनी बातें वा बच्चाके तो समझमें नहीं आ रही हें न! तो बच्चा बाहर जावेकी जिद्द करे तब अपनुकुं गुस्सा आवे. पर वामें बच्चाकी क्या गलती हे? एसी बात बच्चा क्यों कर रह्यो

हे? क्योंके वाकुं ईड्के लेवल्पे वो सारी बातें समझमें नहीं आ रही हें. वो वहां डिस्कम्फर्ट् फील् कर रह्यो हे क्योंके वाकुं लगे के मेरे होवेको यहां क्या प्रयोजन? जा सिच्युएशन्में वाकी डिमान्ड् पूरी नहीं हो रही हे, वाकुं अटॅन्ड् करें नहीं तो वो रोनो शुरु करे के "बाहर जानो हे." बच्चाकी सबसु पहली आवश्यकता हे के वाकुं कोई अटॅन्ड् करवेवालो चहिये. पर जब दो बड़े मिल जायें तो बच्चाकुं अटॅन्ड् करें नहीं तो बच्चा नर्वस् फिल् करे के मेरो क्या भयो यामें. बच्चाकी प्राइमरी आवश्यकता हे सुरक्षाकी के मोकुं कोई अटॅन्ड् करे क्योंके कहीं न कहीं बच्चाकी ईगोमें एक अवेयरनेस् होवे हे के मैं डिपॅन्डेन्ट् हूँ. कोई यदि मोकुं अटॅन्ड् कर रह्यो हे तो मैं सुरक्षित हूँ. यदि मोकुं कोई अटॅन्ड् नहीं कर रह्यो हे तो मैं असुरक्षित हूँ. जैसे ही वो अपने आपकुं अन-अटॅन्डेड् फिल् करे तो वो असुरक्षित महसूस करे हे. वो जो असुरक्षित होवेकी फिलिंग् हे वासु वाकुं रोनो आवे हे.

अक्सर अपने ठाकुरजी भी याही लिये असुरक्षित फिल् करें क्योंके अपन् हवेलीनूमें चक्कर मारतें रहें, वाकुं अटॅन्ड् नहीं करें तो वो भी रोवे लग जायें के मोकुं मथुरा जानो हे और याही लिये वो ग्वाल-मंडलीमें पधार जायें. बच्चाकी अहंता इतनी अस्वस्थ हो जाय, वा तरहसु ही अपने ठाकुरजीकी ईगो भी इतनी हर्ट होके ऐसी हो जाय के वो सोचे के "भई! तुम मोकुं अटॅन्ड् नहीं कर रहे हो, हवेलीमें जा रहे हो तो वहां क्या हे?" वो सोचके भी फिर वहां चल्यो जाय. वाको ईगो डिस्टर्ब हो जाय क्योंके अपन् अपने घरमें बिराजते ठाकुरजीकुं अटॅन्ड् नहीं कर रहें हें. बेसिक् ईश्यु ये हे. बाल-भाव होवेके कारण वो असुरक्षित महसूस करे हे.

(सुपर्-ईगो : परम अहंता)

जो ईड्की डिमान्ड् हे वाकुं जब प्रस्तुत करी जाय वा बखत जो एल्डरली एन्वायरमॅन्ट् हे, वो कभी वाकुं संतुष्ट करे कभी संतुष्ट

नहीं भी करे हे. यासु बच्चापे निरंतर एक प्रकारकी हॅमरिंग् होती रहे हे के कुछ बातें ऐसी हें जो मैं केह सकू हूं और कुछ बातें ऐसी हें जो मैं केह नहीं सकू हूं और सह भी नहीं सकू हूं. या कारण बच्चामें एक सुपर्-ईगो डॅवलप् हो जाय के मोकुं यों चहिये पर बड़ेनुकुं यों चहिये. जब भी मोकुं कोई काम करनो हे तो मोकुं ये ख्याल रखनो पड़ेगो के बड़ेनुकुं क्या चहिये. वो बच्चाको 'सुपर्-ईगो' केहवावे. सुपर्-ईगो, ईड्के ऊपर सुपर्-इम्पोज़ होके आवे हे. ये फ्रॉइड्की बहोत अच्छी ॲनेलॅसिस् हे.

अपन् याकुं यों समझ सकें हें के एक डायरेक्टर् एक फिल्म् बनावे और सॅन्सर्-बोर्ड वापे 'ए' या 'यू' को बोर्ड लगावे के ये सीन् काटो वो सीन् काटो. ये सॅन्सर्-बोर्ड डायरेक्टर्के ऊपर सुपर्-ईगो हे. वो सुपर्-ईगो बच्चान्में बहोत सारी अस्वस्थता भी पैदा कर सके हे पर सुपर्-ईगोके डॅवलप्मॅन्ट्की स्टेज़्पे यदि बच्चाकुं एक स्वस्थ वातावरण प्रदान कियो गयो हे तो वाको सुपर्-ईगो भी स्वस्थ होयगो. जब ऐसो होयगो तो बच्चाके सुपर्-ईगो और ईड् में कन्फ्रन्टेशन् नहीं होयगो. वो दोनों एक-दूसरेसु कॉ-ओर्डिनेटेड् होंयगे. तब वा बच्चाकी अहंता या ईगोके अस्वस्थताकी संभावना बहोत कम हो जाय हे. फ्रॉइड्ने वाको नाम 'सुपर्-ईगो' दियो हे. 'ईड्' मानें शारीरिक अहंता और 'सुपर् ईगो' मानें परम-अहंता मानें बड़ेनुके द्वारा अपने ऊपर लाद्यो भयो जो ईगो हे वो.

('ईगो' : अहंता)

अब ईड् और सुपर्-ईगो के जा बखत कन्फ्रन्टेशन् शुरु होवें तो जैसे-जैसे बच्चा बड़ो होवे तो इन कन्फ्रन्टेशनुकी वजहसु वामें इन झगड़ानुके कारण एक नये तरीकेको अहं डॅवलप् होवे. जाकुं अपन् अपनी भाषामें 'शुद्ध या मध्यस्थ अहंता' केह सकें हें समझवेके लिये. वो अहंता कैसी होवे? ईड् और सुपर्-ईगो के झगड़ा मिटावेके लिये पैदा भयी वामें अहंता हे. ये अहंता अपने व्यवहारकुं समाजमें

संभालवेको सबसु बड़ो कारण बने हे क्योंके अपने भीतर; बड़ेनसु, यहांसु, वहांसु, धर्मसु आते भये सुपर्-ईगो हें वो अपनी ईड्के साथ निरंतर महाभारत ठाने भये हे. याकुं यों समझें के जैसे महाभारतमें पांच पांडव और सौ कौरव हते वैसे यहां भी ईड् यदि सौ हें तो सुपर्-ईगो भी हजारसु ऊपर हें. ईड्के और सुपर्-ईगोके आस्पॅक्ट् इन्युमेरेबल् (असंख्यात) हें और उन दोनोंनूके बीचमें मध्यस्थता करवेवालो जो अहं हे वो अपनो सच्चो अहं हे. वो अपने व्यवहारकुं कन्ट्रोल् करे हे. आज अपन् जो भी व्यवहार कर रहें हें वाकुं फेस्-वॅल्युपे कन्ट्रोल् करवेवालो अपनो अहं हे. वो न ईड् होवे हे न सुपर्-ईगो होवे हे क्योंके ईड् कुछ केह रह्यो हे और सुपर्-ईगो कुछ और केह रह्यो हे. उन दोनोंनूकुं बॅलेन्स् करके प्रस्तुत करनो, वाकुं बाहर आउट-लेट् देनो वो काम अपने अहंको हे. प्रकट व्यवहारमें सबसु ज्यादा रोल या अहंको हे. न वो ईड्को हे और न वो सुपर्-ईगोको हे. यदि वो इन दोनोंनूके झगड़ाकुं संभाल सकतो होय, इन दोनोंनूके टॅन्शनूकुं झेल सकतो होय तो वो स्वस्थ अहं हे. पर वा ईगोके साथ प्रॉब्लेम् ये होवे के वो इन दोनोंनूके झगड़ामें जब वो खुद स्प्लिट् होवे लग जाय तब वामें अपने व्यवहारकुं मॅनेज् करवेमें बहोत भारी तकलीफ पैदा होवे लग जाय हे. ये फ्रॉइड्की सायकॉलॉजीको सिद्धांत हे.

कन्फ्रन्टेशन् क्यों होवे हे क्योंके जितनी ईड्की स्पोन्टेनियस् डिमान्ड् हे उतनो स्पोन्टेनियस् अपन् समाजमें उन डिमान्ड्सकुं जी नहीं सकें हें. प्रॉब्लेम् ये हे.

जैसे एक बात बताऊं के जानवरनूमें कितनी अच्छी व्यवस्था हे के कोई जानवरकुं अपनेसु डर लग रह्यो हे तो या तो वो भाग जायगो या वो अपनी शक्तिको माप-तोल करेगो. और जरा भी वाकुं ये समझमें आयो के अपन् कमजोर पड़ रहें हें तो वो

अपनेपे अटॅक् करेगो. वाकुं दो ही भाषा आवें हें. वो कभी अपनी निंदा नहीं करेगो के प्रतीक बड़ो घमंड़ी लग रह्यो हे अमेरिका जाके आयो हे करके. प्रतीक काहेकुं अमेरिका गयो? क्योंके हिन्दुस्तानूमें चली नहीं. ये सारे लफड़ा जो अपने ईगोमें पैदा हो रहे हें. ये क्योंके मैं तोकुं सींग मारनो चाह रह्यो हूँ, पर मार तो नहीं पा रह्यो हूँ तो अब क्या करूं? कुछ तो करूं के नही करूं? फिर मैं ऐसी बातें खोज-खोजके लाऊं के प्रतीक या ढंगसु लायक नहीं हे और प्रतीक वा ढंगसु लायक नहीं हे. अब तू समझ ही नहीं पावे के मूल हेतु क्या हे? तू समझे के मैं गाली दे रह्यो हूँ. एक्च्युअली गाली नहीं दे रह्यो हूँ. पर क्योंके मोकुं वो व्यक्ति माफिक नहीं आ रह्यो हे. ये जो कन्फ्रन्टेशन् हे ईड्को और सुपर्-ईगोको के मोकुं पता हे के प्रतीककुं थप्पड़ मारुंगो तो पुलिसमें कम्प्लेन् करेगो. फिर क्या करनो? मैं देखतो रहूँ के क्या करवेसु थप्पड़ भी लग जायगी और पुलिसमें कम्प्लेन् करवेके चान्स् भी नहीं रहेगो.

मैं कॉलेज्में हतो तब मैं याही ड्रेस्में जातो. हमारो एक प्रॉफेसर् हतो. वो मेरेपे बहोत नाराज रेह. वाकुं बहोत गुस्सा आतो के ऐसे धोती-उपरना पहरके कॉलेज्में क्यों आ जाय? कोई-कोई बहाना बनाके मोसु लड़तो. जा पोईन्ट्पे आओ वा बात पे गाली दे. मैंने कही अब या प्रॉफेसर्को करनो क्या? कुछ तो करनो न! तो मैंने अपने दोस्तनूसु शर्त लगानी शुरु करी के याके मुंहमें दांत नहीं हें. क्लास्मॅट् केहते "नहीं नहीं ऐसा कैसे हो सकता हे गोस्वामी?" मैंने कही "देख! दस-रुपया चल शर्त लगा."(वो पठ्ठा देखते हंसते) वो इतनो कॉन्शियस् हो गयो मुंह ढकवे लग गयो. अपनो तो दस-रुपया हारनो ही हतो. पर कुछ बदला तो लियो के नहीं? अब झाड़ तो नहीं सकें प्रॉफेसरकुं पर ये तो कर सकें के सब वाके मुंहमें जाके देख रहें हें. वाकुं समझ ही नहीं आतो के क्यों सब यहां देख रहें हें? गॅम्ब्लिन्ग् अच्छी हती वासु रिवेन्ज् लेवेकी. ऐसो होवे

आदमी क्या करे! 'सच् इज् द् लाईफ्'.

प्रश्न :

वो जो ईगो सॅपरेट् हे वो डॅवलप् अपने आप होवे?

उत्तर :

नहीं, वो थप्पड़ खा-खाके ही डॅवलप् होवे. एक बाजुसु ईइ खींचे. एक बाजुसु सुपर्-ईगो खींचे. फिर करे क्या? आदमीकुं अपनो ईगो डॅवलप् करनो ही पड़े. देखो मैं बड़ी मजेदार बात बताऊं.

जयपुरमें मुंदड़ाजीके वहां मैं गयो. एक बार ओर गयो तो अपरसमें नहायो. उनके यहां निधिस्वरूप बिराज रहें हें. उनने बड़े दैन्यभावसु मोसु कही के सेवामें कोई गल्ती होय तो आप सुधारो. कोई गल्ती दीखी नहीं. मैंने कही कोई गल्ती नहीं हे. बहोत अच्छे ढंगसु सेवा हो रही हे. उननें कही नहीं हमारे पिताजी ऐसे आज्ञा कर गये "जो बालक आवें वो जो आज्ञा करे वा बालकके सामने वा तरहसु सेवा करनी. बालक चल्यो जाय फिर अपने ढंगसु सेवा करनी. आप कुछ आज्ञा करो." मैं समझ गयो रहस्य. क्योंके सब बालकें अलग-अलग आज्ञा करें. अब वो जावें कहां? उनको कोई ईइ हे बिचारेन्को सेवा करवेको. हर बालक वहां जा-जाके नई-नई आज्ञा करें. वासु एक सुपर्-ईगो होवे के भई ये बालक आ गयो. वो केह दे के ऐसे नहीं ऐसे करनो. अब वो बालककुं ना पाड़ें तो बालकको ईगो हर्ट हो जाय. तो वाके पिताजी पहलेसु ही आज्ञा दे गये के जो बालक आवे वाके सामने वैसे सेवा करनी. बालक जाय फिर अपने ढंगसु सेवा करनी. और फिर मोसु कही के कुछ आज्ञा करो. मैंने कही "हे ही नहीं कुछ आज्ञा." अब तो ब्रह्मज्ञान मिल गयो मोकुं. अब काहेकी आज्ञा! ये ईगो डॅवलप् होवे ही हे क्योंके जब दोनों साईइमें कन्फ्रन्टेशन् आते होंय, टेन्शन् आतो होय तो आदमीकुं ईगो डॅवलप् किये बिना छूटकारा ही नहीं हे.

जब तक अपने भीतर जो बायोलॉजिकल् डिमान्ड् हे उनकुं मॅनेज् करनो आप खुद नहीं सीखो, तब तक ईइ डॅवलपिंग् प्रोसेसमें रेहवे हे. जब आप वाकुं मॅनेज् करनो सीख जाओ, विद् द् कॉन्ट्राडिक्शन् ऑफ् द् सुपर्-ईगो, तब ऑल्मोस्ट् ईइ आपकी स्टेबल् हो जाय हे क्योंके आप जानो हो के कौन प्रकारकी ईइकुं एक्सप्रेस् करवेसु सुपर-ईगो सॅन्सर् होयगी और वाके कारण फिर अपनी लाईफ्में कन्फ्रन्टेशन् आवे हे. उन कन्फ्रन्टेशनकुं अपन् मॅनेज् करें हें. जैसे-जैसे अपन् मॅच्योर् होते जायें, वा तरहके अपने ईगोज् डॅवलप् होवें हें. वो ईगो कोईकुं सपोर्ट नहीं करे. ईगो तो सिर्फ मध्यस्थता करे, दलाली. दलाल कैसे तेरेसु भी पैसा ले मकान दिलावेके. वासु भी पैसा ले ले मकान बिकवावेके. दोनोंन्सु दलाली खावे. ऐसे ईगो दोनोंकी दलाली खावे. ईइकी भी दलाली खावे. वाकी (सुपर्-ईगो) भी पीठ थपथपा आवे. वो इकतरफा दलाली नहीं करे.

हमारे यहां किशनगढ़में होलकर लूटवे आये. किशनगढ़ बिचारो छोटो स्टेट्. लूटवे आये तो किशनगढ़ होलकरसु लड़ कैसे सके? किशनगढ़ने कही लड़ेंगे तो अपन् मरेंगे. होलकरसु जाके मिले. शिवाजीके बखत शिवाजीने चोथकर लागू कियो हतो. वाके सक्शेसन्में मराठान्ने फिर जो-जो मुगल टॅरेटरी हती या मुगलके सपोर्टर् हते उनकुं लूटवेको एक प्रोग्राम् बनायो. वैसे ही अपने नाथद्वारा किशनगढ़ भी लूटवे आये हते. किशनगढ़ दरबारने कही देखो, हमकुं लूटोगे तो तुमकुं कुछ नहीं मिलेगो. चेंटी खानी मिलेगी. एक काम करो. अपन् दोनों दोस्ती करके जयपुर लूटें. होलकर चक्करमें आ गयो गरीब. वाकुं पता नहीं क्या लफड़ा हे. वाने कही ठीक हे अपन् दोनों मिलके जयपुर लूटवें चलें. दोनों जयपुर लूटवेके लिये जयपुर टॅरेटरी आवेके पहले रुक गये के पहले जाके देख आयें जयपुरको एटमोस्फियर् कैसो हे? जयपुर दरबारकुं कही के "होलकर लूटवे आयो हे इतने पैसा लाओ." वहांसु जयपुरसु ले लिये. यहांसु होलकरसु ले लिये.

हमारे किशनगढ़में वो बांदरसींदरी गाँव जयपुरसु लियो भयो हे, जो होलकरसु डराके ले लियो हतो. उन दोनोंन्को समझौता करवा दियो. वहां जाके केह दियो के अभी जयपुरमें आर्मी एलर्ट हे. अभी लूटवे जाओगे तो प्रॉब्लेम् हो जायगी. कुछ वासु भी ले लियो. कुछ वासु भी ले लियो. शान्तिसु निवृत्त कर दियो होलकरकुं. ईगो या तरीकेको काम करे. वाकुं एक बाजुकी टॅन्शन्कुं फेस् नहीं करनी हे न! दोनों बाजुके टॅन्शन्कुं देखनो पड़े. बड़े क्या केह रहें हें वाकुं भी देखनो हे और मैं क्या केह रह्यो हूँ याकुं भी देखनो हे और दोनोंके बीचमें कॉम्प्रोमाईज़ करवानी हे. वो सोल्युशन् तो अपनेकुं ही लानो पड़े.

प्रश्न :

वो ईगो स्वस्थ रहेगो ?

जवाब :

स्वस्थ तो कैसे रहेगो. या दलालीके काममें तो सबके हाथ काले होवें न! दलालके तो बिचारेके स्वस्थ रेहवेके चान्स् ही नहीं हें. पर वो ईगो सुपर्-ईगोकी और या बाजु ईड्की भी पूरी कॅअर् ले.

(फ्रॉइड्की दृष्टिसु चेतनाको स्वरूप)

या तरीकेको अहंताको रोल् फ्रॉइड्ने बहोत खूबसूरत बतायो हे. वीसा-विस फ्रॉइड् अपनी अहंताके बारेमें एक और बात बतावे हे. फ्रॉइड् अपनी चेतनाके तीन तरहके लॅवल् बतावे हे. एक अन्-कॉन्शिअस् लॅवल्, दूसरो सब्-कॉन्शिअस् लॅवल् और तीसरो कॉन्शिअस् लॅवल् होवे हे. ऑलमोस्ट् ईगो कॉन्शिअस् लॅवल्पे काम करे हे और जो सुपर्-ईगो हे वो सब्-कॉन्शियस् लॅवल्पे काम करे हे. वो सब्-कॉन्शियस् लॅवल्पे अपने भीतर प्लान्टेड् हो जाय हे. जब भी अपन् कोई कॉन्शियस् डिसिज़न् लेवें जायें तो वो अन्तरात्माकी आवाज हे, वो

सब्-कॉन्शिअस् आवाज हे के जो अपनेकुं सुनके करनी हे.

और एक वाको अन्-कॉन्शिअस् लॅवल् हे. अन्-कॉन्शिअस् लॅवल्में ऑल्मोस्ट् वो ही लॅवल् हे जाकुं अपन् 'चित्त' केह रहें हें के जामें सब चीज स्टोर् होवे हे. संस्कार अपने स्टोर् होवे हे. जो भी कुछ ज्ञान भयो, इच्छा भयी, जो भी कुछ अपन् करनो चाह रहें हें या नहीं करनो चाह रहें हें या जो कुछ अपनेसु हो रह्यो हे या नहीं हो रह्यो हे वो सारो भाव अपने अन्-कॉन्शिअस्में स्टोर् हो जाय हे और वो ईड्कुं प्रोवॉक् करे हे. वो अन्-कॉन्शिअस्में रह्यो भयो भाव ईड्कुं प्रोवॉक् करे. खुद सामने नहीं आवे. और ईड् फिर झगड़ा करे. सब्-कॉन्शिअस् क्या हे? सुपर्-ईगोकुं प्रोवॉक् करे के "भई! याकी तो मना हे. कैसे करेंगे?" और कॉन्शिअस् लॅवल्पे अपन् वाको ईगोसु तोड़ निकालें के "अच्छा ऐसे कर लो तो न ये गुस्सा होंयगे न वो गुस्सा होंयगे. और दोनों काम अपने हो जायेंगे." अन्-कॉन्शिअस् बिलकुल बॉटम्पे रहे हे और बहोत बड़ो हे.

सबसु ज्यादा अपने भीतर अन्-कॉन्शिअस्को ही पार्ट हे. वासु थोड़ो सब्-कॉन्शिअस्को पार्ट हे क्योंके अन्-कॉन्शिअस् जो लॅवल् हे, अपने चित्तकी तरह वो तो अपने बायोलॉजिकल् स्ट्रकचरसु को-रिलेटेड् फिनोमिना हे अपनी कॉन्शिअस्नेस्को. वाको बहोत बड़ो रोल् हे. वाके भीतर सारी इन्फॉर्मेशन् स्टोर्ड हे. अपनी सारी अनुभूति, भावना, करवेकी इच्छा, अनिच्छा, राग द्वेष काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य सबको भंडार अन्-कॉन्शिअस्में भर्यो रहे हे और वो स्वयं सामने नहीं आवे हे पर ईड्कुं प्रोवॉक् करे हे. "ये करके देख वो करके देख." और वो ईड् जा बखत करवेके लिये जावे वा बखत तुरंत सब्-कॉन्शिअस् वाकुं एलार्म बजाके जगावे के "देख! कुछ आ रही हे बात. सावधान हो. चोरकुं कहे चोरी कर साहुकारकुं कहे

जागतो रेह. अपनो कॉन्शिअस् या तरहसु काम करे हे. अन्-कॉन्शिअस् चोरकुं चोरी करवेकी कहे और साहुकारकुं सुपर्-ईगोकुं कहे के जागतो रेह. वो सब्-कॉन्शिअस् लॅवल्पे जाके वाके बटन् दबाय आवे. अन्तमें कॉन्शिअस् लॅवल्पे अपनेकुं वाकुं रिज़ोल्व् करनो पड़े "के भई! इन दोनोंन्के प्रोज़् एन्ड् कोन् विचार. मेरे लिये सेफेस्ट् क्या कोर्स हे वो मैं करूं. अब यदि वाने कोई सेफेस्ट् कोर्स एडॉप्ट् कर लियो, बराबर कल्क्युलेशन्के साथ के ये सेफेस्ट् कोर्स हे और वा कोर्सकुं करके वो सॅटिस्फाईड् हो गयो तो ईगो वाको कन्फर्मड् हो जाय के हां याकुं करवेको ये तरीका हे. यदि वामें कोई फ्रस्ट्रेशन् आ गयो फिर अपनो ईगो झटका खा जाय. फिर वो टूटनो शुरु होवे, कई-कई तरहकी क्रियाएँ शुरु होवें.

ऐसे मॉडर्न सायकोलॉजीमें ईगोकी सॅल्फ् डिफेन्स् मॅकेनिज़म्की बड़ी इन्ट्रेस्टींग् पंद्रह क्रियायें बताईं हें. और उन क्रियान्के अगॅइन्स्ट्स् कैसे अपनेकुं बचानो वाके बारेमें सायकॉलॉजीके जो उपाय हे वो एज् वेल् एज् अपने महाप्रभुजीने जो उपाय बताये हे; वो आज तो टाईम् नहीं हें मेरे पास. पर पॉसिबल् भयो तो कल उन क्रियान्कुं देखेंगे के (ईगो डिफेन्स् मेकेनिज़म्;) जा बखत ईड् और सुपर्-ईगो के टॅन्शन्के कारण ईगोमें या तरीकेकी प्रॉब्लेम् क्रिएट् होवे हे, काउन्टर् टेन्शन्के कारण वा बखत ईगो जो प्लान् आउट् करे हे, वा प्लान्-आउट्के सक्सेस् और अन्-सक्सेसफुल् होवेके, दोनों चान्स् हें. वाके कारण वामें जो तकलीफ पैदा होवे हे, वाके कारण फिर ईगो अस्वस्थ होनो शुरु होवे हे. साइकॉलॉजीको ईगो-डिफॅन्स् मॅकेनिज़म् बहोत इन्ट्रेस्टिंग् चेप्टर् हे. वो अपन् साइकॉलॉजीसु भी पढ़ सकें हें. पर उनके वा प्रॉब्लेम्की सॉल्युशन् महाप्रभुजीने कैसे सोची हे वो अपनी प्रॉब्लेम् हे. वो अपन् देखें तो अपनेकुं पता चले के अपनो ईगो मॅनेज्मॅन्ट्को महाप्रभुजीको क्या प्रोग्राम् हे? पर वो आज नहीं हो सकेगो. कल बताउंगो. थोड़ो आज ईन्टरवल् कर लें वाके बाद करेंगे.

(अन्-कॉन्शिअस्को रोल्)

अन्-कॉन्शिअस्के बारेमें मोकुं एक बहोत मजेदार बात याद आ गई. वासु अन्-कॉन्शिअस्को स्वरूप समझमें आ जायगो के कैसो हे? हमारे बड़े जमाई अंकितजीने मोकुं बतायो के उनके उदयपुरमें एक वोहराजी हे. वो एक दिन अंकितजीके साथ ट्रेन्में यात्रा कर रहे हते. अपर्-बर्थपे वोहराजीने दूधकी बॉटल् मंगवाई और वाकुं पीके सोये. सत्तर-अस्सी बरसके वोहराजी और दूधकी बॉटल्सु दूध पीके सोये. इनकुं हंसी आ गई के ये क्या नाटक हे! तो वो गुस्सा हो गये. "हंसते क्या हो! इसमें कोई बुरी बात हे क्या दूध बॉटल्से पीना?"

अपन्कुं हंसी आवे वाको मूल रहस्य आपकुं बताऊं. कैसे अन्-कॉन्शिअस् ईगो काम करे वाको एक परफॅक्ट् एग्ज़ाम्पल् हे क्योंके बचपनमें बच्चाके दांत आने शुरु होवे वा बखत वाकुं मसूड़ान्में कुचर आवे. वा कुचरकुं मिटावेके लिये वाकुं कुछ चाबवेके लिये चहिये और वासु वाकी कुचर मिटे. अब वामें जो दूध और आनो शुरु हो जाय तो बच्चा दूध पीवे लग जाय वासु. अब वाकुं कोई जंक्शन्पे रिमूव् नहीं करी तो वो आदत सत्तर-अस्सी बरस तक चले फिर नींद भी आनी बंद हो जाय यदि दूधकी बॉटल्में दूध नहीं पीवे तो. वो अन्-कॉन्शिअस् अब या तरहसु अपनेकुं गर्वन् करे के वो दूध बॉटल्सु पीवे तब वाकुं नींद आवे. ऐसे बहोत सारे अपने पॉइन्ट् भी होंयगे. अपनेकुं वोहराजीपे हंसी आवे पर अपने भी बचपनके बहोत सारे पॉइन्ट् होंयगे के जो अपने हेंग्-ओवर् होवें हें. जिन् हेंग-ओवर्के कारण अपनेकुं सोनो खानो; अक्सर सास-बहुन्के झगड़ा क्या बातके लिये होवें? क्योंके माँ कोई एक तरहको टेस्ट् डॅवलप् कर दे बेटामें और वो टेस्ट् बिचारी औरत बना नहीं पाती होय. फिर ऐसो झगड़ा होवे और वो कहे के 'नथी गमतुं' और वो कहे के 'नथी गमतुं शुं मावड़ीयो छे सालो'.

वो बिचारी अपने वहांसु कोई टेस्ट् डॅवलप् करके आयी होवे जो वाके माँ-बापने वाको डॅवलप् कियो होय. अब वो दोनों टेस्ट्नके कन्फ्रन्टेशन् होवें. यहां वाकुं एप्रिसियेशन् नहीं मिले तो वाको ईगो हर्ट हो जाय के एक तो सुबहसु बाट देखूं और वो पाछो पसंद नहीं आवे. माँकी ही बनाई भयी रसोई पसंद आवे. वो भी बिचारो क्या करे? वाने वो ही टेस्ट् लियो हे तो वाकुं वो ही सॅटिस्फॅक्टरी लगे. बहुकी बनी रसोई पसंद नहीं आवे तो क्या करे? तो या तरहसु अपनो ईड् अपने भीतर काम करतो होवे, अन्-कॉन्शिअस् प्रेशर्के कारण क्योंके बात जब अन्-कॉन्शिअस्में चली जाय तो वो पार्ट ऑफ् द् पर्सनालिटी हो जाय हे. और बहोत डीपर् पार्ट ऑफ् द् पर्सनालिटी हो जाय करके वो अपने आखे कोर्सकुं गवर्न करती होवे हे. और कोर्सकुं गवर्न करे तो नॅचरली फिर वो दूसरेसु कॉम्प्रोमाइज् करनो आदमी नहीं चाहे. सीधोसो वाको रहस्य ये हे.

मैं समझूं के कॉन्शिअस् अन्-कॉन्शिअस् ईड् और सुपर्-ईगो की बात आपकुं समझमें आ गई होय तो अपन् आगे बढ़ें क्योंके अपन्ने ये बात या लिये नहीं करी हे के अपनेकुं फ्रॉइड् समझनो हे पर अपनेकुं ये समझनो हे के फ्रॉइड् क्या केह रह्यो हे और अपन् क्या केह रहें हें? कम्पॅरेटिव् व्यू वाको समझनो हे. सो पाछे अपने बिषयपे आवें. ये तो अपन् खाली पिक्निक्के लिये गये वहां. पाछे घर लौटें. लौटवेके लिये एक बात आपकुं समझानो चाह रह्यो हूँ. ये समझोगे तो बात मेरी पूरी समझमें आयगी. देखो बात अपनी स्टार्ट् कहांसु भई हती?

(फ्रॉइड्के और महाप्रभुजीके 'अहंकार'के स्वरूपमें तरतमता)

ब्रह्मकी कोई हकीकत हे और वा हकीकतके कारण वामें अहंकी जो अवेयरनेस् आयी. ब्राह्मिक अहं फिर कैसे पारमात्मिक अहं बन्यो और वो कैसे भागवती अहं बन्यो? कैसे काण्णी अहं बन्यो? कैसे

घरके ठाकुर तक वाको एक प्रोग्रेसिव् डॅवलप्मॅन्ट् अपन्ने देख्यो, वो अपनी मूल बात हती. जैसे यहां भी आप समझ सको हो के जो अपनी अहंताको स्वरूप हे वो क्रियात्मक नहीं होके तत्त्वात्मक हे. अपने भीतर बायोलॉजिकल् अपनी डिमान्ड्स् हें वे क्रियात्मक नहीं हें. वे तो अपने बिल्ट्-इन् सिस्टम्के तहत अपने भीतर काम कर रही हे. वो अपन् कर नहीं रहें हें. वो तो अपने भीतर हें ही. अपन् क्या कर रहें हें? सुपर्-ईगो पाछो अपन् नहीं कर रहें हें. सुपर्-ईगो अपनेपे कोई दूसरो कर रह्यो हे.

अपन् जो अहंकार कर रहें हें, वो कौनसो हे? ईगोवालो. अब देखो बात समझमें आयगी के कुछ अहंकार अपने भीतर तत्त्वात्मक होवें हें. कुछ अहंकार अपने भीतर क्रियात्मक होवें हें. कुछ अपने भीतर अहंकार कार्यात्मक होवें जो कल मैंने महाप्रभुजीकी बात आपकुं बताई, कर्ता कारण कार्य और जब कार्य अपन् केह रहें हें तो कार्य और कारण के बीचमें क्रिया इन्वॉल्व् हो रही हे करके अहंकारके चार फॅसेट् बनें हें वो मैंने अपने पहलेके प्रवचनमें भी बताई के कर्ता क्रिया कारण और कार्य ऐसे अहंकारके चार पहलू बन रहें हें, अहंकर्ता अहंक्रिया अहंकार और अहंकार्य. (चार्ट फ्रॉइड्वालो घड़ाको चार्ट) वो देखो यहां भी आपकुं समझमें आ सके हे ऐसी एनलेसिस् हे के ये अन्-कॉन्शिअस् लॅवल्पे अपनो ईड् काम कर रह्यो हे वो तो अपनो उपादानात्मक हे. ब्राह्मिक् रॅफरेन्स्में नहीं पर अपनो जो बायोलॉजिकल् स्ट्रक्चर् हे और अपनो जो सायकॉलॉजिकल् ईगो हे और बायोलॉजिकल् ईगो हे; तो बायोलॉजिकल् ईगो अपने सायकॉलॉजिकल् ईगोको उपादान बने हे. और कॉन्शिअस् लॅवल्वालो ईगो उपादेय ईगो हे और ये सुपर्-ईगो ईम्पोज्ड् ईगो हे, जो अपनेमें प्लान्ट् हो रह्यो हे. वो अपनेमें भीतरसु भी नहीं हे, बाहरसु भी नहीं हे. अपन्में अपनी क्रियात्मकता भी नहीं हे पर वो क्योंके मैंने कॉम्प्लॅक्सिटी बताई.

अपने आखे ईगोकुं कॉम्प्लॅक्स् बनावेवालो वो फॅक्टर् हे के अपन् अपने ईगोमें खुद ही नहीं हें और भी बहोत सारे मौजुद हें. जब मैं कोई ईगो अपनो समझ रह्यो हूँ के 'मैं ये हूँ'. तो बात निश्चित् समझो के मेरे 'मैं' होवेमें बहोत सारी कॉम्प्लॅक्सिटी इन्वॉल्व् हे और वामें मेरे दादाजी, मेरी माँ, मेरे काका, मेरे भतीजा, मेरे बड़े तातजी वगैरह और जिन-जिन लोगनूसु मैं मिल्यो होउंगो बचपनमें, उन-उननें जो-जो कुछ सुपर्-ईगो मेरेमें तैयार किये वो सब मेरे ईगोके भीतर मेरे कॉन्शिअस्नेस्में सब्-कॉन्शिअस्में मौजूद हें. और वो मेरे ईगोके साथ, ईड्के साथ जब कन्फ्रन्टेशन्में आ रहें हें तो उनकुं मैं रिज़ोल्व् करूं हूँ. मेरे हर ईगोमें एक ईड् और सुपर्-ईगो छूप्यो भयो हे और हर सुपर्-ईगोकुं और ईड्कुं ट्रीट् करवेमें मेरो कहीं न कहीं ईगो छूप्यो होयगो. वैसे वो हकीकत और कहानी की कॉम्प्लॅक्सिटी बढ़ती चली जाय हे. ये मूल मुद्दा मैंने पहलेसु खुलासा कर दियो हतो. या लिये अब आप याकुं अच्छी तरहसु यहां देख सको हो के कैसे वो कॉम्प्लॅक्सिटी अपने ईगोमें आ रही हे. वो सिम्पल् ईगो नहीं हे. ये कॉम्प्लॅक्स् ईगो हे. जो मैंने पहले दिन टेबल् बनायो हतो वामें मैंने बतायो हतो के ये मिश्रित हे. वो सिर्फ अपन् केह रहें हें ऐसी बात नहीं हे, फ्रॉइड् भी वाकुं वा ही ढंगसु केह रह्यो हे ये बात रियलाईज़् करो.

जब ये बात रियलाईज़् करोगे तब आपकुं एक और; अपने पाछे घर लौटवेके लिये मैं बतानो चाह रह्यो हूँ क्योंके अपन्को जो उपादान हे वो अपन् बायोलॉजीमें समाप्त नहीं कर रहें हें. अपन् जब उपादानकी चर्चा कर रहें हें तो अपन् ब्रह्म तक जा रहें हें. उन लोगन्की उपादानचर्चा बायोलोजीमें आके समाप्त हो जा रही हे. अपने उपादानकी चर्चा बायोलोजीमें समाप्त नहीं हो रही हे. अपनी चर्चा उपादानसु ब्रह्म तक जा रही हे. सो अपनेकुं जब उपादान और उपादेय के रिलेशन् आपसमें कम्पॅरेटिव् इवॅल्युएशन्के

लिये देखने पड़ेंगे तो ब्रह्म तक जानो पड़ेगो और पाछो लौटके अपनी सायकॉलॉजी तक आनो पड़ेगो. तो अपनो कोर्स काफी लम्बो हे! उनको कोर्स शोर्ट हे. एक थोड़ेसेमें फ्रॉइड् बात समाप्त कर सके. बायोलॉजी और बायोलॉजीके बाद फिज़ियोलॉजी और फिज़ियोलॉजीके बाद एन्थ्रोपोलॉजी, फिजीकल् एन्थ्रोपोलोजी और सोशियॉलॉजी और फिर सायकॉलॉजी और सायकॉलॉजीपे आके सर्कल् पूरो हो जाय. पर अपनो सर्कल् तो इतनो छोटो नहीं हे. अपने सर्कल्की यात्रा काफी लम्बी हे करके वो अपनेकुं पूरी अब या फ्रेमवर्कमें समझनी पड़ेगी के ईगो कैसे अपनो स्वस्थ रहे और ईगो कैसे अपनो अस्वस्थ होवे? वो मैं आपकुं थोड़ो बतानो चाह रह्यो हूँ. अपनी बात शुरु भई हती अहंकी लीलासु. वो अपनो स्टार्टिंग् पॉइन्ट् हतो.

(अहंलीलावालो चार्ट १[illegible])

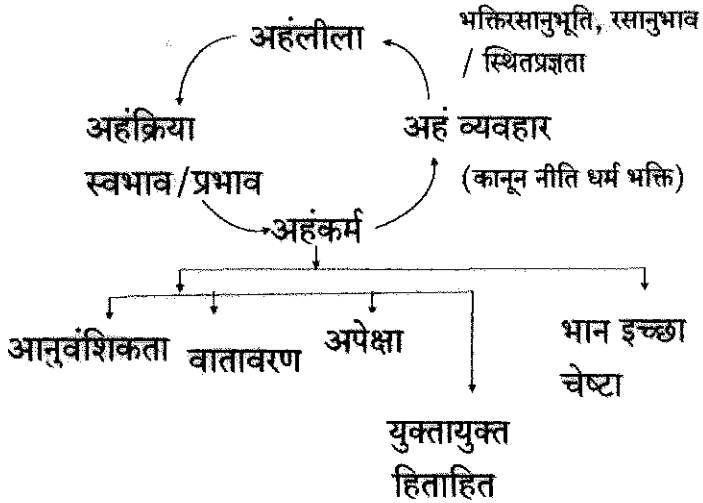

(अहंकी लीला)

अपने भीतर और अपन् जा पदार्थसु बनें हें और वा पदार्थके भीतर भी; कल मैंने याही लिये आपकुं ये पॉइन्ट्पे खुलासा कियो हतो के **''चेष्टाम् आहु चेष्टते यस्य विश्वम्''** जड़ चेतनात्मक विश्व जो भी कुछ चेष्टा कर रह्यो हे, वो चेष्टा कैसी चेष्टा हे? मिनिट्के या सॅकन्ड्के कांटाके जैसी चेष्टा हे और वो जो चेष्टा वाने करी हे वो कैसी चेष्टा हे? जैसे घड़ीयालमें क्वार्टस्के जैसी या कमानके जैसी. वा तरीकेकी चेष्टा हे. अब वो चेष्टा अपने यहां तक आते-आते इतनी कॉम्प्लॅक्सिटी एक्वायर् कर ले हे. तो वो **''चेष्टाम् आहु चेष्टते यस्य विश्वम्''**. जो बात बताई वाके आधारपे अपन् जिन-जिन तत्त्वन्सु गढ़े भयें हें उनमें भी तो वो क्रिया पैदा हो रही हें. एक डेढ़ साल पहले मैंने *'गीतगोविन्द'की भूमिका लिखी हती. कहींसु मिले तो लेके पढ़ियों. वामें मैंने ये सारी बात बताई हे के कैसे कहांसु वो डॅवलप्मॅन्ट् हो रह्यो हे. वा विषयपे मैं अभी जा नहीं पाऊंगो. अन्-नेसेसरी विस्तार होयगो पर कोईकुं जिज्ञासा होय तो वहां याकुं देखोगे तो पता चलेगो के कैसे डॅवलप्मॅन्ट् होवे सारी बातको? पर अपन् समझ सकें हें जैसे फिज़िक्सके लॅवल्पे कॅमेस्ट्रीके लॅवल्पे, सब लॅवल्पे कैसे ह्युमन् पर्सनालिटीकी और मधुरभावकी डॅवलप्मॅन्ट् हे. वो मैंने एक साइकल् वामें बताई हे.

(अहंक्रिया)

अभी यहां अपनेकुं इतनो जाननो पर्याप्त हे के वो अहंलीलाके कारण जड़ चेतन दोंनोंमें कुछ अहंक्रिया उत्पन्न होवे हे. अब तुम यों कहोगे के जड़में अहंक्रिया क्यों उत्पन्न हो रही हे? जड़में तो अहं हे नहीं. भई! जड़में 'अहं नहीं हे'को मतलब जड़में अहं तिरोहित हे. रिसेसिव् (अप्रभावशाली) हो गयो हे. डॉमिनेन्ट् (प्रभावशाली)नहीं हे पर हे नहीं ऐसो मत समझ लीजियो क्योंके वो अपनी थियरी

(* द्र.परिशिष्ट 'गीत-गोविंद' भूमिका)

नहीं हे. वो रिसेसिव् / साइलॅन्ट् हो गयो हे. साइलॅन्ट् कैसे हो गयो? जैसे अपन् समझ सकें के अपनो बच्चा माँ-बापके ट्वेन्टी-फोर् क्रोमोज़ोम्, माँके ट्वेन्टी-फोर् क्रोमोज़ोम् और बापके ट्वेन्टी-फोर क्रोमोज़ोम्, या तरहसु फोर्टी-एइट् हो जायें. पर अपने कोन्स्टिट्युशन्में जो क्रोमोज़ोम्स् वाने लिये नहीं हें. दूसरे चौबीस और वो चौबीस वामें नहीं हें ऐसी बात नहीं हे क्योंके यदि वामें नहीं होंय तो दादाको रंग, दादाकी हाईट्, नानीकी नाक खुदमें कहांसु आ सके! पर आवे हे के नहीं आ रही हे! दादाकी हाईट् आ जाय. नानीको रंग आ जाय. नानीकी नाक आ जाय अचानक पोतामें, नातीमें. कहांसु आ रही हें? माँ-बापमें आयी कहांसु? क्या एक्सिडेन्ट्ली आयी? एक्सिडेन्ट्ली नहीं आयी. वो जो नाक हाईट् हती बच्चाने अपने माँ-बापकी हाईट् पकड़ी, मा-बापको रंग पकड़यो समझो पर अचानक पोता या नातीमें आके दादा और नानी के जो कॅरेक्टर् आ रहे हें. वो कॅरेक्टर् क्रोमोज़ोम्में डॉमिनेटिंग् नहीं हते, रिसेसिव् हते करके वो साइलॅन्ट् हते. वो बोल नहीं रहे हे, चुप रेह रहे हे. वो अचानक नाती और पोता में प्रकट होवे हे.

एज़ेक्ट् वो ही प्रिन्सिपल् यहां भी काम कर रह्यो हे के ब्रह्मको जो ब्राह्मिक अहं हे, पारमात्मिक अहं हे, भागवती अहं हे वो जा बखत ब्रह्म जड़रूप ले हे वा बखत वे सारे अहं वहां रिसेसिव् हो जायें हें पर वाकी क्रिया प्रकट होवे हे. जैसे अपनो बायोसायकॉलॉजिकल् अहं अपने नख और केशन् में बोलनो बंध कर दे पर बढ़े और खुदके रंग-रूप अपनी आनुवंशिकताके हिसाबसु निभावे. वा अहंसु जो पैदा होवेवाली क्रिया हे वो प्रकट होवे पर; अहं रिसेसिव् हो जाय. क्रिया डोमिनेटिंग् रहे करके अहंलीलामें जो क्रिया प्रकट भयी, वो जड़ पदार्थमें क्रियाके तरीके डॉमिनेटिंग् प्रकट होवे हे. चेतनामें क्रिया प्रकट होवेसु पहले अहं प्रकट हो जाय हे डॉमिनेटिंग् होके, क्रिया बादमें प्रकट होवे. या तरीकेको

मायोटिक् रिप्रोडक्शन् हे. ये वाकी खूबसूरती समझो.

(स्वभाव और प्रभाव सु अहंक्रिया)

अहंक्रिया पैदा होवे हे और ये जो अहंक्रिया पैदा हो रही हे (ये अहंक्रिया बेसिक् अहंक्रिया हे.) वो स्वभावसु या प्रभावसु पैदा होवे हे. स्वभाव और प्रभाव को अन्तर क्या? जैसे पानीको बहनो स्वभाव हे. पर बहनो स्वभाव होवेके बावजूद भी पानी या दिशामें बहे के वा दिशामें, वो पानी नहीं डिसाईड् करे, स्लोप् डिसाईड् करे. वो स्लोप्के प्रभावके कारण पानी अपनी दिशा सिलॅक्ट् करे. पानीको बहनो स्वभाव हे और दिशा वाकुं कौन देवे? ग्राउन्ड्को स्लोप्. जा तरहको स्लोप् हे वा दिशामें पानी बहवे लग जाय. अब अपन् ये समझे के पानीको बहनो स्वभाव हे. पर बहनो स्वभाव होते भये भी दिशाको बहवेमें सिलेक्शन् प्रभाववश हे स्वभाववश नहीं हे.

मैं अक्सर बतातो रहूँ आपकुं के एक 'बारुक स्पिनोज़ा' हॉलेन्ड्को भयो. वाने ये बात बहोत दम-खमसु कही हे. महाप्रभुजीके कुछ चालीस बरस बाद वो जन्म्यो हतो. वा जमानामें वो बिचारो केह रह्यो हे या बातकुं के पत्थर यदि पहाड़पेसु गुड़कतो होतो और चेतन होतो तो कभी वो नहीं केहतो के मैं 'लॉ ऑफ ग्रेविटेशन्' के कारण नीचे जा रह्यो हूँ. पत्थर यों सीना तानके केहतो के मोकुं नीचे जानो हे और जा रह्यो हूँ. तुमकुं ऊपर रेहनो होयगो मोकुं नीचे जानो हे. या तरीकेकी वाकी इन्टिग्रल् सिस्टम् हती. वा जमानामें वो प्रोमिनेन्ट् शुद्धाद्वैती भयो. बल्कि कुछ अर्थमें तो महाप्रभुजीसु ज्यादा स्टॉन्च् शुद्धाद्वैती हतो. वाके तो शुद्धाद्वैतमें खाली ब्रह्म और परमात्मा ही हे. भगवान् नदारद हे. और महाप्रभुजीके शुद्धाद्वैतमें ब्रह्म परमात्मा के बाद एडिशनल् भगवान् और हें. कृष्ण आ गयो वाके लिये थोड़ो अपन् वासु अलग भाषा बोलें हें. बाकी जहां तक

ब्रह्म और परमात्मा को सवाल हे तो वो महाप्रभुजीकी भाषा बोल रह्यो हे, जो अपन् बोल रहें हें. वरबेटम् (शब्दशः) मिलाके अपन् देख सकें दोंनोंकी एक ही बात हे. स्पिनोज़ाने यों कही हे के पत्थर चेतन होके गुड़कतो होय तो वो यों कहेगो के मैं लॉ ऑफ् ग्रेविटेशन्सु नहीं गुड़क रह्यो हूँ. वो फ्रिडम् ऑफ् विल्की मजाक उड़ावेके लिये केह रह्यो हे. क्रिश्चियन् कॉन्सेप्ट् जो फ्रिडम् ऑफ विल् हे वापे वो केह रह्यो हे. स्पिनोज़ाके बहोत साल बाद फ्रॉईडने ये सब्-कॉन्शिअस् और ईड्स् खोज्यो. पर स्पिनोज़ा वा बखत ये बात केह गयो हतो के फ्रिडम् ऑफ् विल् खाली ढ़कोसलाकी बात हे. ये तुम्हारे भीतर रह्यो भयो अन्-कॉन्शिअस् माईन्ड् हे वो तुमकुं कम्पॅल् कर रह्यो हे. तुम्हारेमें एक कॉरस्पॉन्डिंग् कोई फिलिंग् जग गई हे सो तुम समझ रहे हो के फ्रिडम् ऑफ् विल्के कारण मैं कर रह्यो हूँ. फ्रिडम् ऑफ् विल्के कारण तुम नहीं कर रहे हो. जा तरहसु बिहेव् करवेको तुम्हारो कॉन्स्टिट्युशन् हे वा तरहसु तुम बिहेव् कर रहे हो. वापे वाने ये मजाक उड़ायी हे.

जाकुं भगवान् गीतामें केह रहे हे के

यद् अहंकारम् आश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति

(भग.गीता.१८।५९)

और

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन! तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥

(भग.गीता.१८।६१)

वो बात स्पिनोज़ाने भी वा बखत कही हती. तो ये एक अलग पहलू हे. पर वा लॅवल्पे स्वभाव और प्रभाव सु क्रिया प्रकट होवे हे.

(अहंकर्म)

वाके बाद साइकल्को एक पहलू हे 'अहंकर्म'. ये अब अपन् शुद्धाद्वैतकी बात कर रहें हें! पर शुद्धाद्वैतकी ऐसी बात कर रहें हें के जो फ्रॉइड्कुं आप समझे होओगे तो आपकुं अच्छी तरह समझमें आयेगी. और नहीं समझे होओगे तो बराबर नहीं समझमें आयगी. वालिये मैंने फ्रॉइड् पहले समझायो. ये अहंकर्म जो हे; 'कर्म'को मतलब क्या? जो क्रिया हो रही हे वा क्रियाको यदि आपकुं भान हे, वा क्रियाके विसा-विस् कोई इच्छा हे, जैसे स्पिनोज़ा केह रह्यो हे के मोकुं नीचे जावेकी इच्छा हे, नीचे गिरवेको भान हे, नीचे जावेको पुरुषार्थ भी प्रकट हो जाय तो इच्छा आपकी क्रिया नहीं केहवाके 'कर्म' केहवायगो. कर्मकी पहली शर्त हे के अपन् जो काम कर रहें हें वाको भान हे के नहीं, वाकी इच्छा हे के नहीं, वा बारेमें अपनेमें चेष्टा हे के नहीं. तो भान इच्छा और चेष्टा ये तीन फॅक्टर् मिलते ही क्रियामें वो कॉम्प्लॅक्सिटी पैदा होवे हे के वो क्रियाके बजाय तुरत कर्म बन जाय. अहंकर्म अहंको एक कर्मात्मकरूप हे. अहंको एक जैसे क्रियात्मकरूप हे. फ्रॉइड्के ईड्में और अन्-कॉन्शिअस्में बिल्कुल क्रियात्मकरूप देख सकें के वो क्रियात्मकरूपसु अहंकारक्रिया पैदा भई हे. पर जा बखत वो ईगोके लॅवल्पे आ रही हे तब अहंकर्म बन रही हे. वो अहंक्रिया नहीं हे क्योंके वो जो करवे जा रह्यो हूँ वाको मोकुं ज्ञान हे वाकी मोकुं इच्छा हो रही हे और वा इच्छाके हिसाबसु मैं कुछ एफर्ट् भी कर रह्यो हूँ, पुरुषार्थ भी कर रह्यो हूँ चेष्टा भी कर रह्यो हूँ तो वो कर्म बन जाय.

प्रश्न:

आपने 'ज्ञान' नहीं 'भान' कह्यो. कर्ममें ज्ञानेच्छाप्रयत्न आवे हे तो क्या कारण हे?

उत्तर:

ज्ञान नहीं और भान या लिये के बुद्धिसु ज्ञान आवे. ये तो कॉन्शिअस्के विसा-विस् बात बता रह्यो हूँ. या लिये भान केह रह्यो हूँ. वैसे भानमें मैं बहोत हाई एन्ड् फास्ट् वापरनो नहीं चाह रह्यो हूँ. पर अभी कॉन्शिअस्नेस्की बात चल रही हे करके 'ज्ञान' नहीं केहके 'भान' केह रह्यो हूँ.

या बाजु वाको फॅक्टर् हे भान इच्छा और चेष्टा या प्रयत्न. वा बाजु वाके और थोड़े मजेदार फॅक्टर्स् हें, उनकुं देखो. जैसे जब भी अपन् अहंकर्म कर रहें हें तब वो अहंकर्ममें पहली बात क्या आयगी? अपनो कर्म गवर्न कहांसु होवे हे? जैसे एक वाको सायकोलॉजिकल आस्पॅक्ट् हे, भान इच्छा और प्रयत्न ये वाको रिज़ल्ट् हे. और वाकी कन्डिशन् कैसे हे?

सबसु पहले आनुवंशिकताके कारण कर्म होवे हे. जाकी जैसी हॅरिडिटरी होयगी वैसो कर्म वामें प्रकट होयगो. जैसे अपनकुं में..में.. करनो होय तो सीखनो पड़ेगो पर; बकरीके बच्चाकुं में..में.. करनो होय तो सीखनो नहीं पड़ेगो. बाय् हॅरिडिटरी वो में...में...हे. क्यों? क्योंके वाकुं वो अनुवंशसु आ रह्यो हे. बाय् हॅरिडिटरी वो आ रह्यो हे. आनुवंशिकताकुं अपन् स्वभाव ले लें. जो अहंकर्ता हे वाको स्वभाव ले लें, तो वातावरण प्रभावको काम करेगो. वाके बाद अहंकर्म जा बखत अपन् कर रहें हें वामें सिर्फ स्वभाव और प्रभाव क्रियामेंसु आ रह्यो हे. वहां (अहंक्रियामें) जो स्वभाव और प्रभाव हे वो यहां आनुवंशिकता और वातावरण बनके आ रहें हें. वाके बाद ये अहंकर्म जो हे वो अपनी इच्छा मानें अपनी अपेक्षा या निरपेक्षा; कोई चीजकी अपनेकुं अपेक्षा हे याकुं फलाकांक्षा अपन् समझ सकें. कोई चीजकी फलाकांक्षा नहीं हे तो जैसो फल चहिये होयगो वैसो कर्म अपन् पैदा करेंगे. जैसो कर्म नहीं चहिये वैसो कर्म पैदा नहीं करेंगे.

और जो अपने युक्तायुक्तको, हिताहितको संस्कार हे जैसे पहले अपन्ने ऐसे कियो वा बखत ये घटना हो गई हती. अरे भई! संभलके रहो. कौन या लफड़ामें पड़े. वो युक्त हे के अयुक्त हे, हित हे के अहित हे सुख हे के दुःख हे, वो जो कर्म अपन् करवे जा रहें हें वामें क्या हो रह्यो हे, वाके अपने संस्कार फ्रॉइड्के हिसाबसु सब्-कॉन्शिअस्में रहे हे. अपने हिसाबसु चित्तमें रहे हे. अपनी अपेक्षा मनमें रेह रही हे. स्वभाव और आनुवंशिकता अपने मनमें नहीं रहें हें. अपने शरीरके आखे संस्थानमें रेह रहें हें. क्योंके शरीर मांग रह्यो हे वा तरहसु और वा प्रभावमें शरीर वैसे ही व्यवहार करेगो, करके अहंकर्मके ये सारे फॅक्टर् हें. अपन् समझें के अहंकर्ममें ज्ञान इच्छा और चेष्टा के कारण अपनो स्वातंत्र्य हे. फिरसु मैं आपकुं याद दिलाऊं. स्वातंत्र्य कितनो हे? इतनो स्वातंत्र्य हे के चलते श्वासमें प्राणायामके भस्त्रा करवेको अपनो स्वातंत्र्य हे. कर रहे हो तो कर भी सको हो और नहीं कर रहे हो तो वो अपने आप करेगो. ये सारी बातें अपने आप कॅअर् लेंगी (अहंकर्मको). ये अहंकर्मको कॉन्स्टिट्यूशन् हे. मैं समझुं हूँ के अब कोई तकलीफ नहीं होनी चहिये याकुं समझवेमें.

(अहंव्यवहार)

यदि ये अपन् समझ गये तो कर्मके बाद मैंने याही लिये बताई के अहंको जो विषय हे वो कितनो कॉम्प्लॅक्सिटी लियो भयो हे के वामें बायोलॉजी इन्वॉल्ड् हे, माइक्रोबायोलॉजी इन्वॉल्ड् हे और कई सारी सायन्स्की ब्रान्चिस् इन्वॉल्ड् हें. अपन् याकुं यहां देख सकें हें. (वो साइकल् पाछो अहंव्यवहार.) अहंकर्म और अहंव्यवहार को मतलब क्या? कर्म अपने भीतरके जो रिसोर्सिस् हें वाके आधारपे कर रहे हो. वो कर्म हे पर भीतरके रिसोर्सिस् नहीं, आप बाहर कैसे इन्टॅरॅक्ट् करनो चाह रहे हो, उन रिसोर्सिसुकुं कैसे चेनलाईज् करनो चाह रहे हो वा लॅवल्पे जाके वो कर्म, कर्म नहीं रेहके

आपको 'व्यवहार' कह्यो जाय. अपन् कहें के "फलाना भाईनो व्यवहार सारो नथी". अपन् यों नहीं कहें के "फलाणा भाईनुं कर्म सारुं नथी". क्योंके जब अपने प्रति वो इन्टॅरॅक्शन्में कोई कर्म हो रह्यो हे तो अपन् वाकुं कर्म नहीं केहके फिर 'व्यवहार' केहते होवें. सो एक अहंकर्ममेंसु पाछो एक अहंव्यवहार प्रकट होवे हे.

और वो अहंव्यवहारके विषयमें कानून नीति धर्म और भक्ति भी आयगी क्योंके अपन् तो अपने अहंकी बरातमें बराती हें न! अपनो व्यवहार अपने ठाकुरके साथ, अपने कृष्णके साथ, अपने भगवान्के साथ, परमात्माके साथ और ब्रह्मके साथ जो कर रहे हे वो अपनो भक्तिमय व्यवहार हे. अब जैसे ही ये आयो तो आप देखो के सुपर्-ईगोको कितनो रोल् आ रह्यो हे? कैसे बच सकोगे सुपर्-ईगोसु. अहंकर्मसु जा बखत अहंव्यवहारके फेस्में आप आये और तुरत सुपर्-ईगोको रोल् आ ही जायगो. अब वो स्वस्थ अस्वस्थ भी सुपर्-ईगो हो सके, कानूनमें नीतिमें धर्ममें और भक्तिमें भी. कानून अपन् जान रहें हें के ऐसो हे.

हर कानूनको नीति होनो जरूरी नहीं हे. क्योंके वॉलेन्टरी डिस्क्लोज़र् स्किम्में ब्लॅक्सु भी कमायो भयो होय तो वो पैसा व्हाइट् हो जाय. कानूनी हो जाय. पर यदि आपमें मॉरल् हे तो कॉन्शिअस् बाईट् करेगी. तो कानून और नीति एक चीज नहीं हें. कानून एक अलग चीज हे, नीति एक अलग चीज हे. मॉरल् एक अलग चीज हे. मॉरल्में आपकुं जज् नहीं पनिश् करे हे. मॉरल्में आपकुं कॉन्शिअस्नेस् पनिश् करे हे. केस आपको हाईकोर्टमें नहीं चले हे. आपके भीतरकी साइको-कोर्टमें चले हे केस के तेने यों कियो. वाने बहोत अच्छो कह्यो *"अपनी नज़रोंमें गुनहगार न क्यों होते, फाकीर दिल ही दुश्मन हे मुखालिफके गवाहोंकी तरह"*. मेरो दिल कबूल कर रह्यो हे के मैंने गुनाह कियो हे. तो अपनी नजरमें

मैं गुनहगार कैसे नहीं होतो. *"अपनी नज़रोंमें गुनहगार न क्यों होते फाकीर दिल ही दुश्मन हे मुखालिफके गवाहोंकी तरह"*. जो मेरे दुश्मन हे उनकी तरह दिल मेरो मोकुं केह रह्यो हे के यार तु बदमाश हे. *"दिल ही दुश्मन हे मुखालिफके"* जो विरोधी पार्टीवालें हें उनके द्वारा लायी गई साक्षीकी तरह मोकुं मेरो दिल केह रह्यो हे के तू यार बदमाश आदमी हे. अच्छो आदमी नहीं हे. तो नीतिके प्रश्न अहंतासु जुड़े भये नहीं हे? वाको केस कोर्टमें नहीं चले हे पर भीतर चले हे. और गवाहीमें अपनो दिल ही पाछो आ जाय के "दिल ही दुश्मन हे मुखालिफके गवाहोंकी तरह". तो नीति एक अलग चीज हे कानून एक अलग चीज हे.

और वाके बाद धर्म एक अलग चीज हे. क्योंके बहोत सारी चीजें नीतिसु जायज हो सकें पर हर धर्मके अपने-अपने विधि और निषेध हें. वो नीतिके हिसाबसु जायज होते भये भी धर्म वामें कुछ अपनी बात केहनो चाह रह्यो हे.

और वा धर्मसु भी ऊपर जाके अपनो एक भक्तिको इश्यु आ रह्यो हे. अपन् जाकुं धर्मके तरह खपानो नहीं चाह रहें हें. आज पुष्टिमार्गकी प्रॉब्लेम् ये हे के अपन् अपनी भक्तिकुं धर्म समझ रहें हें यालिये प्रॉब्लेम् आ रही हे. भक्ति धर्म नहीं हे. महाप्रभुजीके हिसाबसु भक्ति तो धर्मसु ऊंचो पंचम पुरुषार्थ हे. व्यवहारमें अपने गड़बड़ाध्याय आ रह्यो हे. क्योंके भक्तिमय व्यवहारकी अपनी अहंता अस्वस्थ हो गई हे. वाको मूल कारण ये हे. अहंव्यवहारको एक इश्यु यामें हे जामें बहोत सारी सोशियल्-सायन्स्की ब्रान्चिस् आ रही हें. वो अपन् देख सकें.

(पुष्टिअस्मिताको क्लाइमॅक्स् क्या ?)

और वाके बाद ये अहंव्यवहार; जो मॉडर्न सायकॉलॉजी, मॉडर्न

इकोनॉमिक्स् हे, मॉडर्न सोशियॉलॉजी हे, मॉडर्न पॉलिटिक्स् हे वो यहां आके रुक जा रही हे पर अपनी बात यदि यहां रुक गई तो अपन् भी फिर "**प्रवाहेण क्रियारताः**" (पु.प्र.म.१५) हो गये. अपन् तो प्रवाहेण क्रियारता नहीं हें. मानें "**भगवद्-रूप-सेवार्थं तत्सृष्टिः नान्यथा भवेत्.**" (पु.प्र.म.१२) अपन्में यदि पुष्टिकी अस्मिता हे तो अपनी कहानी और आगे बढ़ेगी. यहां अपनी कहानीको क्लाइमॅक्स् नहीं आ जाय हे. ये तो अपनी कहानीको एक इन्टरवल् हे. अपनी कहानीको क्लाइमॅक्स् तो अभी आनो बाकी हे. पुष्टिजीवकी पुष्टिअस्मिताकी कहानीको क्लाइमॅक्स् यहां नहीं आवे. पुष्टिजीवकी पुष्टिअस्मिताको जो क्लाइमॅक्स् हे वो या लॅवल्पे आवे हे के जा बखत परब्रह्मकी लीला हे, ब्राह्मिकी अहं, पारमात्मिक अहं, भागवती अहं, कार्ष्णी अहं और अपने घरके ठाकुरके अहं तक लीलासु आपको अहं ट्युन्-अप् होवे. जा बखत वो ट्युन् होवे और वा तरीकेके सुर यामेंसु निकलवे लगें तब आपकी जो पुष्टिअस्मिता हे वाको क्लाइमॅक्स् आयो. तब आपको पुष्टिजीव होवेको अहं हे, वाको क्लाइमॅक्स् आयो. वो साइकल् वहांसु आपकुं पाछो वो अहंलीलापे पहोंचा दे हे. जहांसु ये साइकल् शुरु भयो हतो. या तरहसु अहंको एक साइक्लिकल् सरक्युलर् पाथ् हे.

यदि अपन् भक्तिमार्गी हें तो लीलाकी रसानुभूतिकी बात अपन् समझ सकें. यदि भक्तिमार्गी नहीं हें और ज्ञानमार्गी या कर्ममार्गी हें तो गीताकी स्थितप्रज्ञता और विद् इन् द् भक्तिमार्ग यदि अपन् भक्तिकुं एज् ए सेवा जी रहें हें तो रसानुभूति नहीं पर रसानुभावकता अपनेमें आनी चहिये के अपन् भगवान्कुं भक्तिरसको अनुभव करावें. भई! तू भी थोड़ो समझ के हमारे भीतरके भक्तिरसके क्या अनुभाव हे? वहां भगवान्कुं अपन् दर्शक बनावें हें और अपन् फिर भगवान्के दर्शक बनें हें. रसानुभाव अपन् प्रकट करें हें जाको एस्थेटिक् एप्रिसियेशन् भगवान् करें हें. भई, इनने या तरहको अपनो भाव प्रकट कियो

और ये भावकी मोकुं मजा आ रही हे. जो मैंने प्रभुदासके बारेमें बताई के *"आज प्रभुदासने भोग नहीं धर्यो तासों मैं भूखो रेह गयो."* वो रसानुभाव प्रकट करवेको जो अहं हे वहां तक भी अपन् सेवा कर रहें हें तो वो बात आयगी. बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जायेगी. या तरहसु बहोत दूर तक ये बात पहोंची हे. ये सारो सायक्लिकल् प्रोसेस् अपन् समझ सकें. थोड़ोसो विषय यामें और रेह गयो.

'रसानुभाव' मानें लीलाको जो जोय् हे वाकुं अपन् अनुभव करें. वो तो प्रभुकी अहंतासु प्रकट होती लीलाको मजा अपन् ले रहें हें. पर अपन् जब सामने कोई ऐसी भक्तिकी लीला करके दिखावें के जाकी मजा प्रभु लेवे लग जायें, वो अपने अहंके डॅवलप्मॅन्ट्की पराकाष्ठा हे के जहां प्रभु अपने अहंकी मजा ले रहें हें. डोकरीके बच्चाएं मर गयें और ठाकुरजी वाकुं समझाते "मत रो न". अब वो यों समझाती हती ठाकुरजीकुं "भई! मैं मेरे लिये थोड़ी रो रही हूँ. तेरे लिये रो रही हूँ के तेरे खिलौना कहां गये सब." और फिर ठाकुरजी भी मान जाय के "हां हां! ठीक हे ठीक हे ये तो बहोत दुःखकी बात हो गई." मरनो और जीनो भगवान् गीतामें केह रहें हें के "**न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे**" (भग.गीता.२।२०) पर ठाकुरजी भी दुःखी होके बैठते होंय के "हां भई! कहां गये डोकरीके बच्चायें सब." तो लीलाको मजा लेवेकी जो ठाकुरजीकी वृत्ति हे, जो भक्त उनकुं भक्तिभावमें दे रह्यो हे, वो एक अहंता डॅवलप् होनी के मोकुं भगवान्कुं खुश करनो हे और भगवान् भी *"ये तेरी ये मेरी ये बाबानन्दजुकी यह बलभद्रभैयाकी यह ताकी जो झुलावे तेरो पलना."* और भोलेपनसु भगवान्की कोई एक अंगुली पकड़के दिखावे के ये देख मेरो अहं यहां फस्यो भयो हे. अपन् भक्तिरसको, लीलारसको अनुभव कर

रहें हें और अपनी भक्तिरसको अनुभव भगवान् करवें लग गयें. वा तरीकेके अहंको एक मोस्ट् एडवान्स् वर्ज़न् भी अपने यहां मान्यो गयो हे. अपन्ने ये सायकल्सु अहंके सारे स्वरूप देखें.

लिहाजा अपन् कन्क्लुड् करवेके पहले एक बात और देख लें.

(अहंके स्तर)

ये अहंकी डॅवलपमेन्ट् बताई. अब मैं आपकुं समझा रह्यो हूँ स्टेजिज़् क्या हें वो देखो. बहोत मजेदार पहलू हे.

१) जीवोहं = तव अंशो अहम् (ब्रह्मसंबन्ध)
२) तदीयोहं = आत्मनिवेदन (ममता+आत्मरतिसंबन्ध)
३)त्वद्दासोहं = भगवते कृष्णाय स्वीयसमर्पणम् (भजनीयसंबंध)
४)त्वत्सेवोकोहं = स्वीयविनियोग अंह (सेव्यसंबंध)

(जीवोहं = तत्त्वात्मक अहं)

एक स्टेज् हे 'जीवोहं' 'मैं जीव हूँ' अब अपने यहां जीवको मतलब अलग हे. वो अपन्ने ग्राफ्में देख लियो. वो मायूटोटिक् और मायोटिक् प्रोसेस्में के जीव क्या हे? जब अपन् 'जीवोहं' केह रहें हें, वो अहं क्या हे? ''तेरो मैं अंश हूँ''. महाप्रभुजी क्या कहें हें के जड़ जीव और अन्तर्यामी, तीन भगवान्के अंश हे. **''अंशो नानाव्यपदेशात्''** (ब्र.सू.२।३।४३) **''यथा अग्नेः क्षुद्राः विस्फुलिंगाः व्युच्चरन्ति, एवमेव अस्माद् आत्मनः सर्वे प्राणाः सर्वे लोकाः सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि व्युच्चरन्ति'' ''सर्वएव आत्मनः व्युच्चरन्ति''** (बृह.उप.२।१।२०) तो जड़ जीव और ईश्वर, भगवान्के अंश हे और जा बखत अपन् 'जीव' केह रहें हें वा बखत अपनो एक अहं हे के ''मैं जो भी कुछ हूँ वाको अंश हूँ''. ये अहं अपनो

तत्त्वात्मक अहं हे. ये क्रियात्मक अहं नहीं हे. ये तो फॅक्ट् हे. ये अपनो डिफॅक्टो अहं हे. (ये तो अपन् हें ही.) याके कोई अस्वस्थ होवेको सवाल ही नहीं पैदा हो रह्यो हे क्योंके क्रियात्मक अहं नहीं हे. यामें कोई कॉम्प्लॅक्सिटी नहीं हे. ये तो अपन् मॅटोटिक् प्रोसेस्सु बनें हें.

(तदीयोहं = आत्मरत्यात्मक अहं)

वाके बाद जब अपनुकुं लग्यो के अपन् वाके अंश हे. तब एक अहं और पैदा हो रह्यो हे 'तदीयोहं'. यदि 'मैं वाको अंश हूँ'को मतलब मैं वाको हूँ. जाको मैं अंश हूँ वाको ही तो हूँ न. वो अहं अपनो डॅवलप् हो रह्यो हे. वो अहं ब्राह्मिक अहं नहीं हे पर वो पारमात्मिक अहंकुं रिस्पॉन्स् देतो भयो अपनो अहं हे के वो परमात्मा अपनो शरीरी हे. और अपनो आत्मा वाको शरीर हे. मैं 'तदीयोहं' जा बखत सोच रह्यो हूँ वा बखत मोकुं लग रह्यो हे के मैं अपनी आत्माकुं वाकुं निवेदन कर रह्यो हूँ के भई! मैं तो तेरो हूँ. गुसांईजी कहें हें **''तदीयोहं न चान्यथा''** ''मैं तेरो हूँ तेरो हूँ और तेरो ही हूँ''. और कुछ तरहसु मेरेमें भाव जग्यो तो वो मेरे लिये दुर्गति हे. ये तदीयोहंको भाव अपनी आत्माकुं परमात्माके सामने एक्सपोज़् करवेको, निवेदित करवेको हे.

आज-कल निवेदनको मतलब यों समझें हें के तुलसीपत्र हाथमें लेके कुछ बोलनो. 'निवेदन'को मुख्य मतलब हे ''नितरां वेदनं निवेदनम्''. टु मेक् सम् वन् अंडरस्टेन्ड्. परमात्माके सामने अपन् या बातको क्लेम् करें हें के मैं तेरो हूँ. जब मैं तेरो हूँ तो वा परमात्माकुं समझानो चाहें के भई तू मेरे भीतर बैठ्यो हे या लिये मैं तेरो हूँ और जा बखत अपन्ने या तरहसु परमात्माके सामने आत्मनिवेदन कियो वा बखत अपन् क्या कर रहे हें; देखो! ये ब्रह्मसम्बन्ध हे अपनो. मैं याके एक्सप्लेनेशन्में नहीं जाऊंगो पर जा बखत 'जीवोहं' = 'तव

अंशो अहम्' केह रहें हैं तब अपनो ब्रह्मसम्बन्ध भयो और जा बखत अपन् 'तदीयोहं' आत्मनिवेदन करके केह रहें हैं तब अपनी ममताकुं वाकी आत्मरतिसु इक्वेट् कर रहें हैं. आत्मरतिसु अपनी ममताको सम्बन्ध कर रहें हैं. परमात्माकी आत्मरति **''अहम् आत्मा आत्मनां धातः प्रेष्ठः सन् प्रेयसामपि अतो मयि रतिं कुर्याद् देहादिः यत्कृते प्रियः''**. (भाग.पुरा.३।९।४२) सो अपनी जो ममता हे; भगवान् खुद वहां केह रहें हैं के ''मैं तुम्हारी आत्मामें भी आत्माकी तरह बैठ्यो भयो हूँ. याके लिये तुम्हारी ममताकुं मेरी आत्मरतिसु ट्युन्-अप् करो. जब तुम्हारी ममता मेरी आत्मरतिसु ट्युन्-अप् हो गई तो अपनी आत्मरति और परमात्माकी आत्मरति एक-दूसरेके साथ एक सुरमें बोलवे लगेगी. वो जैसे ब्रह्मसम्बन्ध हे ऐसे ये परमात्मसम्बन्ध हे, परमात्मरतिसम्बन्ध हे. ये एक तदीयोहंको अपने अहंकारको भाव हे.

(त्वद्दासोहं = भजनात्मक अहं या समर्पणात्मक अहं)

और वाके बाद जो मैंने आपकुं प्रोग्रेसिव् डॅवलप्मेन्ट् बताई वाहीके ही आधारपे ही चलते रहोगे तो तकलीफ नहीं पाओगे. वाके बाद आ रह्यो हे ''त्वद्दासोहं''. त्वद्दासोहंमें अपन् केह रहे हे 'स्वीय(सर्वस्व)समर्पणम्' क्योंके 'दास'को शुद्ध मतलब हे जापे मैं अपनी ऑनर्शिप् मान रह्यो हूँ वो मेरी ऑनर्शिप् तेरी ऑनर्शिप् हे. जापे मेरी ऑनर्शिप् हे वापे तेरी ऑनर्शिप् आ गयी. अपनी ऑनर्शिप्की वस्तुनपे वाकी ऑनर्शिप्कुं कन्फर्म करनो वो 'स्वीयसमर्पण' हे. आत्मनिवेदन नहीं पर आत्मीयनिवेदन हो गयो. जा बखत अपन्ने वाके सामने 'दासोहं' केहके वा तरहसु अपने अहंकुं कन्फर्म कियो. जैसे माताकुं देखके बच्चा अपनो अहं कन्फर्म करे, अपने अहंकुं कन्फर्म करके फिर ये मेरी माँ हे ऐसे कन्फर्म करे हे. वाही तरहसु अपन् ठाकुरजीकुं देखके अपनो अहं कन्फर्म करें के मैं वाको दास हूँ. जब अपन् दासपनो कन्फर्म करें वाके बाद ठाकुरजी कन्फर्म करें के अच्छा ये मेरो हे. जा बखत अपन् केह रहें हैं के ये मेरो कृष्ण हे,

जा बखत 'दासोहं' केह रहे हे वा बखत अपन् थोड़ोसो सुधारनो होय तो वा तरहसु सुधार सकें हैं 'भगवते कृष्णाय स्वीयसमर्पण' क्योंके दास कौनके रॅफरॅन्समें आयेगो? परमात्माके कोई थोड़े दास होंयगे? ब्रह्मके अपन् दास नहीं हो सकें हैं, ब्रह्मके तो अपन् अंश हैं. परमात्माके तो अपन् शरीर हैं. पर यदि वो भगवान्को रूप धारण कर रह्यो हे, यदि वो कृष्णको रूप धारण कर रह्यो हे तो फिर अपन् वा स्थितिमें तेरे दास हैं. 'भगवते कृष्णाय स्वीय समर्पणम्' ये जो अपनो अहं हे वो अहंभजनीयसम्बन्ध हे. ये ब्रह्मसम्बन्ध आत्मरतिसम्बन्ध और आत्मरतिमेंसु भजन जो डॅवलप् हो रह्यो वो भजनीयसम्बन्ध प्रकट हो रह्यो हे.

(त्वत्सेवकोहं = विनियोगात्मक अहं)

वाके बाद लास्ट् 'त्वत्सेवकोहं'. मैं तेरो सेवक हूँ. यामें मैं सिर्फ भक्त नहीं हूँ. मैंने जो कछु वाकुं अपनी ऑनर्शिप् सरेन्डर् करी हे वो नहीं हूँ. पर जो कुछ मैं और मेरो हे वो सेवामें वापरतो हो जाऊं तब तो सेवकता आयी. तब जाके अपनो सेवाको कन्सॅप्ट् फुल्-फिल् हो रह्यो हे. भक्तिवर्धिनी निरोधलक्षण सिद्धान्तमुक्तावली क्यों गृहसेवा पर भार दे रही हे. सिद्धान्तमुक्तावली **''तत्सिद्धयै तनुवित्तजा''**पे क्यों भार दे रही हे? क्यों निरोधलक्षण अपने भगवान्में विनियोगपे भार दे रह्यो हे? क्यों सिद्धान्तरहस्य सर्वसमर्पणपे भार दे रह्यो हे? कारण वाको समझो के महाप्रभुजीके भीतर अहं बोल रह्यो हे 'त्वत्सेवकोहं'. इन उपदेशनमें निरन्तर महाप्रभुजी या बातकुं एम्फेसाइज् कर रहें हैं. वो अहं बोल रह्यो हे. आज अपन्में कोई कारणसु वो अहं खंहित हो गयो हे. स्वस्वीयको विनियोगी अहं हे अपनो. और ये अपनो सेव्यसम्बन्ध हे.

अपने यहां ब्रह्मसम्बन्ध टर्मिनोलॉजी प्रयुक्त भयी हे ऐसे आत्मरतिसम्बन्ध या भजनीयसम्बन्ध या स्वीयसम्बन्ध टर्म् यूज् नहीं करी हे पर ग्रन्थ

देखोंगे तो इन सम्बन्धनको विवेचन मिले हे. ब्रह्मसम्बन्धकी डॅवलप्मॅन्ट् कैसे आत्मरतिमें कैसे भजनीयसम्बन्धमें और कैसे सेव्यसम्बन्धमें होनी चहिये और वाके विसा-विस् अपनो अहं कैसो डॅवलप् होनो चहिये! वाकी कथा समझावेके लिये अहंकारके कर्ता जो अपन् हें वामें कैसे ढंगकी क्रियाएं पुष्टिमार्गकि रॅफरन्समें प्रकट होनी चहिये वा सम्बन्धमें ये बात समझाई.

भक्तिकी अहंताकी जो कॉम्प्लॅक्सिटी हे वाको काव्यात्मक वर्णन एक उर्दू गज़लमें हे.

'ये हकीकत हे जहां मैं यहां ठोकर खाकर,
मैं गिरा हूँ संभल जाऊंगा चलने दो मुझे,
बिन जफाके(अपकार) मैं मुहब्बतको भी निभा न सका,
इस सुलगते हुअे एहसासमें जलने दो मुझे,
इश्क हे बारेगरां (वजनदार) और ये हवस (वासना) लाहिब (धधकती),
तंगफुरसत हूँ तअम्मुलमें(इम्प्लिमेन्टेशन्) भी ढलने दो मुझे,
खुदको पहचान न पाया न खुदाको देखा,
तुमको चाहा हे चाहो तो संभलने दो मुझे.

''ये हकीकत हे जहांमें हरेक ठोकर खाकर'' : अपनी अहंताकुं हर विषयकी ठोकर लगे और जैसे ही विषयके आकर्षणकी ठोकर लगे तो अपनी अहंता तुरत गिर जाय ये हकीकत हे.

''मैं गिरा हूँ संभल जाऊंगा चलने दो मुझे'' : मैं गिरा हूं पर मुझे भक्तिमार्गपि चलने दो मैं संभल जाउंगा.

''बिन जफाके(अपकार) मैं मुहब्बतको भी निभा न सका'' : तेरो अपकार किये बिना मैं स्नेह नहीं निभा सक्यो.

''इस सुलगते हुए एहसासमें जलने दो मुझे'' : ये सुलगतो भयो

एहसास हे (तापक्लेशानन्दमें) जलने दो मुझे.

इश्क हे बारेगरां (वजनदार) और हवस (वासना) लाहिब (धधकती) : जा तरहको मेरो अहं हे वामें इश्क करनो वेइट्लिफ्टिंग्के जैसो लगे हे. स्नेहको वजन कमरतोड़ हे. विषयासक्तिसु पैदा भयी वासनासु जल रह्यो हूं.

''तंगफुरसत हूँ तअम्मुलमें (इम्प्लिमेन्टेशन्) भी ढलने दो मुझे'' : स्नेहको वजन उठावेके लिये समयकी मर्यादा हे. वजन उठावेकी प्रॅक्टिस् तो मुझे करवे दो.

''खुदको पहचान न पाया न खुदाको देखा तुमको चाहा हे चाहो तो संभलने दो मुझे.'' : मैं क्या हूं वो जान नहीं पा रह्यो हूं. ब्रह्म भले न दीखे पर जगत्रूपसु बन्यो हे वो तो दीख रह्यो हे. परमात्मा भगवान् कृष्ण कहां दीख रहें हें! पर अपने ठाकुरजीकुं केह दो के मैंने ब्रह्मकुं देख्यो और तोकुं देख्यो हे. ''खुदको पहचान न पाया'' मानें तदीयोहं और त्वद्दासोहं में नहीं पहचान पायो पर 'सेवकोहं'के बारेमें अपनी अवेरनेस् जगा सकूं तो मैं संभल जाऊंगो.

(रूपरेखाके आधारपे अहंकारकी दोषरूपता या निर्दोषता)

कल जो पोइन्ट् छूट गयो हतो वामें ये बात समझनी जरूरी हे के अहंताको जो तत्त्वात्मक स्वरूप हे वो निर्दोष या विशुद्ध उपादानात्मक हे. वाको क्रियात्मक स्वरूप हे वो भी विशुद्ध हे. दोष अपने भीतर अनुभव करवेमें हे और वासु अपन् गढ़े भये हें. वासु अपन् कॉन्स्टिट्युटेड् हें यामें कोई दोष नहीं हे. वाकुं दोषरूप मानेंगे तो गड़बड़ फैलेगी. थियॉरिटिकली पॉसिबल् नहीं हे के वाकुं अपन् एवोइड् (टालना) कर सकें. अपने भीतर जो अहंकर्ता हे वामें भी दोष नहीं हे. पर वा अहंकर्ताके नेचर्की कॉम्प्लेक्सिटी हे वामें जा बखत अहंता और ममता अहंमोहमें और विषयमोहमें पनपे, वामेंसु काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य पनपें हें. वा तरीकेको विकृत क्रियात्मकरूप प्रकटे हे वामें दोष आवे हे. अहंकारकुं वा रॅफरन्समें क्यों कह्यो जा रह्यो हे ये बात अपन् संक्षेपमें समझ चुकें.

वामें अहंमोह और विषयमोह ऐसे दो मानके चलें तो महाप्रभुजीने अहंसु पैदा होते भये जितने भी मोह हें वाके एन्टिडोज् 'विवेकधैर्याश्रय'में बतायें हें वामें 'विवेक'के चारों उपाय जब अपन् अपनावें तो बहोत सारे अहंकारके विकृत होवेके दोषन्सु अपन् बच सकें हें. दूसरेके हिसाबसु दोष हो सके पर कोई भी अहं दोष हे के निर्दोष हे वो तो कोई न कोई फ्रेम्-वर्कमें पता चलेगो. क्योंके एक ही अहं, दोष हो सके हे और वो ही अहं, निर्दोष भी हो सके हे. जैसे कोई आर्मीको सोल्जर् कोईकुं मार रह्यो हे वो दोष नहीं हे पर वाकुं परमवीरचक्र मिलेगो. अपन् कोईकुं मार रहें हें तो हत्या केहवायगी. ऐसे अहंकार कोईके लिये दोष हो सके हे पर कोईके लिये वो निर्दोष हो सके हे. अपनो अहंकार भगवत्शरणागति भगवद्भक्ति के वा प्रोग्राम्में दोषरूप नहीं रेह जायेगो. इतनो कल देख्यो हतो.

(अहंता-ममताके स्वस्थ रखवेको प्रोग्राम् : विवेकधैर्याश्रय)

अपने विषयमोहकुं भक्तिमार्गके अनुकूलतया अपन् कैसे कन्ट्रोल्में ला सकें? या लिये महाप्रभुजीने विवेकधैर्याश्रयमें 'धैर्य'को उपदेश दियो हे. **''त्रिदुःखसहनं धैर्यम्''** (वि.धै.आ.६) बहोत इम्पोसिबल् टास्क् लगे हे. **''विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति''** (वि.धै.आ.१) वाको एक्सेप्टेन्स् भी डिफिकल्ट् हे पर यासु भी डिफिकल्ट् **''त्रिदुःखसहनं धैर्यम् आमृतेः सर्वतः सदा''** हे; पर वो डिफिकल्टी महाप्रभुजीने किन उपायन्सु सरल बनाई हे उन उपायन्पे ध्यान दें तो समझमें आयगो के *''तंगफुरसद हूँ तअम्सुलमें भी ढलने दो मुझे''* इन उपायनुकुं अपन् करेंगे तो कर सकेंगे. मूलमें तो सारे अहंताके मोह और ममताके मोहके काउन्टर्-डोज् तरीके अपने यहां महाप्रभुजीने इनकुं सुधारवेके, स्वस्थ रखवेके लिये विवेक और धैर्य बतायें हें. उनके अन्तर्गत इनसु रिलेटेड् षोडशग्रन्थकी टॉपिक् हे. वो सब इन्हीं बातन्को मॅन्युअल् हे. इनकुं कैसे इम्प्लिमॅन्ट् करनो वाके सब मॅन्युअल्स् हें. विवेकधैर्यको प्रोग्राम् हे; पर इनकुं अपन् एडॉप्ट् नहीं कर पा रहें हें तो 'आश्रय' करनो. वो आश्रयकी भी सारी बातें देखेंगे के किन-किन सिच्युएशन्में करनो. वो देखवेसु अपन्कुं निश्चित पता चल सके के विवेक-धैर्यकुं भी सुधारवेको उपाय आश्रयमें रह्यो भयो हे. वैसे आश्रयकी स्वस्थता विवेकधैर्याश्रयसु अच्छी होवे हे. वो या तरीकेकी इन्टर्-डिपॅन्डन्सी, म्युच्युअल् डिपॅन्डन्सी (परस्पराश्रितता) विवेकधैर्य विसाविस् आश्रय की हे ये अपने अहंता-ममता-मोहकुं सुधारवेको प्रोग्राम् हे. ये सारी बात महाप्रभुजीने भगवद्गीतासु हासिल करी हे.

('अहंता-ममता' स्वस्थ रखवेको महाप्रभुजीको प्रोग्राम् गीतासु)

संक्षेपमें थियरीके तौरपे बताउं के भगवद्गीतामें सत्रहवें और अठारवें अध्यायमें कई बातन्के सात्त्विक राजस तामस प्रभेद बतायें हें **''त्रिविधा भवति श्रद्धा''** (भग.गीता.१७।२) उनकी जो आइटम् हे और त्रिविधताको जो भेद देखें तो उन भेदन्में कैसे तामस नुकसान पहोंचावे हे तो

कैसे अविवेक जागे हे. कैसे सात्त्विककी प्रभु प्रशंसा कर रहें हें. तो उन सात्त्विकताके उपदेश प्रभुने गीतामें दियें हें. अपनो विवेक कैसे प्रकट हो रह्यो हे वो सिर्फ को-रिलेट् करें तो अपन् देख सकें हें के महाप्रभुजीने उन सारे विस्तारनुकुं सूत्रीकृत कियो हे. सूत्रके रूपमें ले लियो हे. भेद या तरीकेको हे. सब आइटमुकुं आपके सामने एन्युमरेट् करूंगो.

जैसे आहार श्रद्धा तप दान यज्ञ कर्म बुद्धि धृति सुख इन सबको त्रैविध्य भगवान् बता रहें हें के ये सात्त्विक राजस तामस भी होवें हें. हर वक्त वाकी सम याही तरहसु आवे हे. श्रद्धाके आहारके तपके दानके यज्ञके कर्मके बुद्धिके धैर्यके तामस प्रकार आवें हें. उन प्रकारनमें अपन् जब उलझ जायें वा बखत अपनी अहंता-ममताकुं अस्वस्थ करवेको कार्यक्रम अपन् एडॉप्ट् कर रहें हें. और उनके सात्त्विक प्रकारकुं अपन् अपनेमें कल्टिवेट् करवेको प्रयास करें तो अहंता-ममताकुं स्वस्थ करवेको प्रोग्राम् कर रहें हें.

वो सबको-सब एक साथ तो होवेवालो नहीं हे तो पाछी वोही बात *''तंगफुरसत हूँ तअम्मुलमें भी ढलने दो मुझे.''* पर जहांसु अपन् सात्त्विक प्रकार स्टार्ट् कर सकतें होंय; कई लोगनुकुं सहज-सम्भव होय के सुखसु नहीं करते होय उनकुं कर्मसु करनो चहिये. कर्मसु नहीं करते होय तो बुद्धिसु करनो चहिये. बुद्धिसु नहीं कर सकतो होय तो श्रद्धाके लेवलपे वाको सुधार करनो चहिये. जहांसु अपने आपकुं पकड़वेको पॉइन्ट् मिलतो होय, वहांसु उठानो चहिये. जहां बॅगको हॅन्डल् लग्यो हे वहांसु उठानो हे. अहंताकुं उठाने या सुधारवे के ये सब हॅन्डल् जैसे हें. आहार श्रद्धा तप दान यज्ञ वगरह, सबमें अहंकार गुथ जाय हे. कल याही लिये आपकुं बतायो के कैसे ईइ ईगो सुपरईगो अपने कॉन्शियसमें घर करके बैठ जाय! अपने पुष्टिमार्गकी मानसिकताको जो घड़ा हतो वामें चित्त बुद्धि मन

इन्द्रिय क्रिया ज्ञान सबमें अहंकार कैसे सब जगह फैल रह्यो हे ऑल्मोस्ट् जा तरहसु वटवृक्ष फैल रह्यो हे. वटवृक्षकी जड़ इतनी स्ट्रोन्ग् होवे के छूट नहीं सके. ऐसे अहंकारकी पकड़ वटवृक्षकी जड़के जैसी हे. सिर्फ पकड़े नहीं, पूरी तरहसु वाकुं चिपकके जमीनमें घुस जाय. अपने हिसाबसु चित्तमें या चित्तसु भी प्रायमरी स्टेज् प्रकृतिके गुणनकी हे. वा लेवल् तक घुसवेकी सामर्थ्य वो रखे हे. इन्द्रिय तन्मात्रा मन तकमें अपनो अहंकार घुस सके हे. वो चार्टमें देख्यो हतो. वो कमजोर हो जाय पर ये वाकुं गिरवे नहीं दे. अहंकारकी ये सिफत हे. हर सिफतको सदुपयोग भी हो सके हे और दुरुपयोग भी हो सके हे. ऐसे अहंकारकी सिफत हे. (चार्ट बतातें भयें) अपने मन तन्मात्रा इन्द्रिय में अहंकारको घुसनो स्वाभाविक कथा हे क्योंके मैं सुन रह्यो हूँ, मैं कर रह्यो हूँ पर तन्मात्रा जो विषय हे वामें अहंकार कैसे घुसे?

हर विषय अपनुकुं तन्मात्राकी बदौलत दीख रह्यो हे और जो तन्मात्राएं हें वे हर द्रष्टाकी एकदम पर्सनल् एसॅट् हे. वाको कारण क्या? जैसे मैं आपके सामने पॅन् रखूं तो आपकुं दीखेगो के मैं पॅन् देख रह्यो हूँ. और यदि आप या पॅनकुं देखवे लग जाओ तो आपके फेसकुं देखके मैं पहचान सकूं के आपकुं ये पॅन् दीख रही हे. ये बॅरियर् आ गई. मैं ये देख सकूं के आपकुं पॅन् दीख रही हे. आप ये देख सको के मोकुं पॅन् दीख रही हे; पर मैं ये नहीं देख सकूं के आपकुं पॅन् कैसी दीख रही हे, क्या दीख रही हे. वो आपकी पर्सनल् एसेट् हे वो तन्मात्रा हे. तन्मात्रा मेरी चेतनाकी सम्पत्ति हे. मेरे अहंकी सम्पत्ति हे जो मैं खुद ही जान रह्यो हूँ. अपनो अहंकार अपनी तन्मात्रा तकमें अपनी जड़ पसारे हे. जैसे अपन् अपनो अहंकार शॅअर् नहीं कर सकें, वैसे ये भी शॅअर् नहीं कर सकें. अहंकारकी जड़ें बाह्यविषय तक जा रहीं हें. ये वाकी खास खासियत हे.

इतनी पकड़वाले अहंकारकुं अपन् कहांसु सुधारवेको प्रयास करेंगे! आपके पास जो हॅन्डल् होय वहांसु प्रोग्राम् स्टार्ट् हो सके हे. आपकुं लगतो होय के आपके सुखको स्वरूप तामस हे और वा स्वरूपके अनुरूप अहंकारकुं सुधारवे जाओगे तो अहंकारकुं ज्यादासु ज्यादा तामस बनातें जाओगें. पर आपकुं लग रह्यो हे के सुखकी अपेक्षा भले तामस होय; पर मेरी कर्म करवेकी जो अपेक्षा हे, करवेको जो संकल्प हे वामें तामसता नहीं हे तो चलो कर्मकुं पकड़ लो. आपकुं कर्ममें लग रह्यो हे के आदत खराब पड़ी भयी हे वो सुधरवेवाली हे नहीं तो यज्ञकुं पकड़ो.

कर्म अपन् जो कर रहें हें वामें आनुवंशिकताको, वातावरणको, फलाकांक्षाको, पूर्वकर्मके संस्कार या वासना को भी रोल् होवे हे जाके कारण अपनकुं कर्म करनो पड़े हे. अक्सर कोई आदमी जब कोईकुं लूटवे जाये और वामें प्रतिबन्ध आवे तो वाको मर्डर् भी करे. मर्डर् करवेके लिये मर्डर् नहीं कर रह्यो होवे हे; पर लूटवेको कर्म एडॉप्ट् कियो वाकी कोरोलरीमें वाकुं मर्डर् भी करनो पड़े हे. वो कर्म करवेकी अपनी वस्तुतः आकांक्षा नहीं होवे हे. वो कर्म, कर्मके कारण करनो पड़तो होवे हे. ऐसे कर्म भी पाछे कर्मकुं जनरेट् करतो होवे हे. उन सब कर्मनमें कर्मके द्वारा जनरेट् होतें कर्म हें. उन कर्मनमें जा बखत अहंकारकुं फंसनो पड़े वा बखत अपनो साथ तो अहंकार ही दे. दिल भी केहतो होय के ये काम नहीं करनो हे पर जा बखत अपनो अहंकार केह रह्यो हे के ये कर्म करनो हे तो वा कर्मकी कोरोलरीमें कोई दूसरो भी कर्म करनो पड़े. वो कर्म जा बखत करे वा बखत अपन् गिल्टी भी फील् करते होवें हें क्योंके अपन् ये कर्म करनो चाहतें होंय और वो कर्म करनो नहीं चाहतें होंय. पर एक कर्म जो अपनने गलत अपनायो हे वा कर्मके परिणामस्वरूप अपनकुं दूसरो कर्म करनो पड़े हे, ऐसो के जो अपन् करनो नहीं चाहें हें. वहां साथ देवेवालो अहंकार हे.

मेरे ये कर्मकुं साथ देवेके लिये रिज़ल्ट् तक पहोंचवेके लिये मोकुं ये कर्म भी करनो पड़ेगो. जैसे ही अहंकारने ये बात समझाई तो अपन् वाकुं जस्टिफाय् कर दें के अपन् करनों नहीं चाहतें हतें; पर कर्म ही ऐसो करवा रह्यो हे.

अपनकुं हिन्दुस्तानमें बिज़नेस् करनो होय तो टॅक्सकी चोरी करनी ही पड़ेगी. कोई उपाय नहीं हे. टॅक्सेशनको प्रकार या तरीकेको हे के चोरी नहीं करे तो बिज़नेस् करनो होय तो भी नहीं कर सके. क्योंके कई ऑफिसरनकुं खवानो हे वो पैसा व्हाइट्मेंसु कहांसु खवाओंगे! नॅचरली ब्लॅक् जनरेट् करनो पड़ेगो. बिज़नेस् कर रहें हें तो वाकी कोरोलरीमें आतो कर्म हे. याके कारण पूर्वकर्मके संस्कार और वासना भी कर्मकुं जनरेट् करती होंय हें. कर्मकुं पकड़के यदि अहंकारकुं नहीं सुधार पा रहें हें तो ठीक हे यज्ञकुं पकड़के सुधारो. यज्ञमें नहीं सुधार सके क्योंके यज्ञमें लोगनकी आदत बिगड़ी भयी हे. तो कोई चिन्ताकी बात नहीं, श्रद्धाकुं पकड़के सुधारो. श्रद्धा भी त्रिविध होवे हे. कहांसु आपकुं हॅन्डल् मिल रह्यो हे जो आपको पॉइन्ट् (सात्त्विक) हे. आहार श्रद्धा तप दान यज्ञ कर्म बुद्धि धृति सुख ऐसी आइटम्स् भगवान्ने एन्युमरेट् करी हें. उनमेंसु आपकुं जो चीज सात्त्विक लगती होय वा सात्त्विकताकुं पकड़के धीरे-धीरे सबकुं सुधारो और अहंकार तकको सुधारवेको कोर्स् हो सके; पर जामें आप खुद तामस हो तो अहंकारकुं सुधारवेके लिये समर्थ नहीं हो सको हो. वो तो अहंकारकुं और(ज्यादा) तामसी बनायगो.

हर वक्त मजाक करूं ऐसे के अहंकार मत करो दीन रहो, दैन्य रखो. तो कितनो दैन्य रख्यो? **''के यूयं? हरिपादपद्मनिरत-श्रीपादपायूदक-क्लिद्यन्मूत्रलुठत्-पिपीलवधूदासाः''** मूलमें वृत्ति खराब हे तो दैन्यमें भी अहंकार प्रकट हो जायगो. वहांसु नहीं सुधर पायगो. अपनकुं कोईने कही के ''दैन्य करो'' मतलब क्या? वाणी दीनताकी बोलो. अब

दीनताकी वाणी बोलवेमें अहंताको हाइड्रोजन् बम्बके जैसो एक्सप्लोज़न् हो जाय. दीनताकी बोल वाणी रहें हें पर यामें विस्फोट अहंकारको हो रह्यो हे. या तरीकेकी सिच्युएशन् आवे हे. अपनुकुं कहांसु सुधारनो वो पॉइन्ट् विवेकसु अच्छी तरहसु सिलॅक्ट् करनो पड़ेगो. ये प्रोग्राम् महाप्रभुजीने गीताजीमेंसु डिराइव् कियो हे. वामें या मॅथड्कुं एडॉप्ट् करके डिराइव् कियो हे के हर इन चीजनके त्रिविध भेद बताये गयें हें. उन भेदनमेंसु कहांसु सात्त्विकतासु अपनुकुं सुधारनो वो उपाय विवेकधैर्यके अन्तर्गत हे. बाकी आश्रयके अन्तर्गत हे. उनकी कुछ दस-बारह सर्कमस्टेन्सिस् बतायी गयी हें. महाप्रभुजीने अपनी अहंता-ममताकुं सुधारवेके लिये ये प्रोग्राम् बनायो हे. जब विवेकधैयाश्रयको उपदेश महाप्रभुजी दे रहें हें तो वा कर्मके अन्तर्गत महाप्रभुकुं नवरत्न, अन्तःकरणप्रबोध केहनो पड़ रह्यो हे, या बाजु कृष्णाश्रय भी केहनो पड़ रह्यो हे क्योंके एक बखत नक्की कियो के विवेकधैर्याश्रय समझानो हे तो वाकी अवान्तर टॉपिक् समझानी पड़ेगी. कर्ममेंसु कर्म कैसे जनरेट् होवे वो अपन् षोडशग्रन्थ देखें तो समझमें आयगो. विवेकधैर्याश्रय समझानो हे तो विवेकके सारे पहलू समझाने पड़ेंगे, धैर्यके सारे पहलू समझाने पड़ेंगे, आश्रयके सारे पहलू समझाने पड़ेंगे. विवेकधैर्यके ग्यारह पहलू हें, वे नहीं समझा पायें तो कृष्णाश्रयमें समझा दिये.

(ज्ञान ज्ञेय परिज्ञान सु 'कर्मविधि' और करण कर्म कर्ता सु 'कर्मसंग्रह')

या तरह एक कर्म अपन् पकड़ें तो वाके अन्तर्गत दूसरो कर्म भी अपनुकुं पकड़नो पड़े हे; पर इनमें खास ध्यान देवे लायक बात हे गीताके अन्तर्गत. गीतामें भगवान्ने बड़ी अच्छी बात कही हे. **''ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना, करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः''** (भग.गीता.१८।१८) ज्ञान ज्ञेय और परिज्ञाता, कोई भी कर्मकी विधि शास्त्र जा बखत करवेको आदेश दे हे तो वो कौनसे आधारपे शास्त्र तुमकुं आदेश दे हे? सबसु पहले भगवान् केह रहें हें **''ज्ञानं ज्ञेयं और परिज्ञाता''**. कौनसे तरीकेको ज्ञान हे?

कौनसे तरीकेको ज्ञेय हे और वा ज्ञेयके साथ जो ज्ञाता हे वो कौनसे तरीकेके ज्ञानसु इन्टॅरॅक्ट् कर रह्यो हे वा बातकुं उद्देश्यमें रखके कर्मकी विधि होवे हे.

महाप्रभुजीके दर्शनके हिसाबसु सोचनो होय तो क्रियाकी विधि नहीं होवे हे. क्रिया तो अपने आप स्वभावसु चले या प्रभावसु चले. वामें विधि नहीं हे. अपनुकुं हवाकुं केहनो नहीं पड़े के चलो रे चलो. न पानीकुं केहनो पड़े के बहो. अपनी बॉडीके अन्तर्गत भी जितनी क्रियाएं चल रही हे; चरकने बहोत अच्छी बात कही **''अल्पं हि प्रत्यक्षं अनल्पम् अप्रत्यक्षम् अस्ति''** मानें प्रत्यक्ष बहोत कम हे. अप्रत्यक्ष ज्ञान बहोत ज्यादा हे. रेशियो ८० टु २० को हे. अपनो अप्रत्यक्ष ज्ञान ८० परसेन्ट् होय तो वाके कम्पॅरिज़नमें अपनो प्रत्यक्ष ज्ञान २० परसेन्ट् होवे हे. ''अल्पं हि प्रत्यक्षम् अनल्पम् अप्रत्यक्षम् अस्ति'' वामें चरक बहोत अच्छी बात कहे हे **''यैः इन्द्रियैः तावत् प्रत्यक्षं गृह्यते तान्येव खलु अप्रत्यक्षाणि.''** जिन इन्द्रियनसु तुमकुं प्रत्यक्ष हो रह्यो हे वो इन्द्रिय कहां प्रत्यक्ष हे? आंखसु दुनिया दीख रही हे वो आंख कहां दीख रही हे? कानसु जो दुनिया सुनाई दे रही हे वो कान कहां सुनाई दे रह्यो हे? जीभसु स्वाद आ रह्यो हे वो जीभको स्वाद कहां आ रह्यो हे? चरकने नहीं कही हे पर चरकके सिद्धान्तसु अपन् अच्छी तरहसु समझ सकें हें के ''अल्पं हि कर्म अनल्पा हि क्रिया अस्ति.'' कर्म अपने शरीरमें बहोत कम हे क्रियाएं अनल्प हें. ८० और २० को रेशियो मिलेगो. अपन् या शरीरसु जो भी कुछ कर्म कर सकें वे २० परसेन्ट् होय और ८० परसेन्ट् ऐसी क्रियाएं चल रहीं हें जापे अपनो कुछ भी कन्ट्रोल् नहीं हे. जैसे ब्लड्-सर्क्युलेशन्, डायजेशन्, कितनी सारी क्रियाएं शरीरमें चल रहीं हें उनपे हमारो कहां कन्ट्रोल् हे? ८० परसेन्ट् ऐसी क्रियाएं हें जिनसु अपनो परिज्ञाता तरीके कोई रिलेशन् नहीं हे, वे क्रियाएं अपनी ज्ञेय नहीं बन रहीं हें. डॉक्टर् अपनो

ब्लड्-प्रेशर् मापे तब पता चले बाकी तो अपनो माथा दुःख रह्यो हे. अपन् कुछ समझें और भीतर क्रियाएं कुछ और हो रहीं हें. बच्चाकुं नींद आती होय तो भी समझमें नहीं आवे हे. इतनी क्रियाएं अपनी भीतर चल रहीं हें. क्रियाको ८० परसेन्ट् रेशियो ऐसो हे जा क्रियाकुं अपन् ज्ञेय नहीं बना सकें हें, जा क्रियाको ज्ञान होवे हे तो कोई न कोई साधनसु पता चले. एसी अनल्प क्रियाएं चल रहीं हें. उनमें ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता की कर्मविधि पॉसिबल् नहीं हे.

पर कुछ कर्म करवेके साधन हे. जैसे लिखनो होय तो पॅन् करण हे. या पॅनकुं हाथमें लेके चलानो कर्म हे और मैं वाको कर्ता. कर्मसंग्रह हे वो करण कर्म कर्ता सु होयगो. पर कर्मकी विधि ज्ञान ज्ञेय और ज्ञाता सु होवे हे. ये बात भगवान्ने बड़ी खूबसूरत बताई हे. जो भी कर्मकी विधि हे वो इन् रॅफरेन्स् ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता हे पर कर्मकुं जो तअम्मुलमें ढालवेकी बात हे वहांसु तो समझमें आ सकेगो पर कर्मको करनो हे तो **''करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः''** (वहीं) तो इन तीन फॅक्टरकुं पाछो लानो पड़ेगो. वहां ज्ञान ज्ञेय परिज्ञाता काम नहीं आयेंगे. ये बात समझाते भगवान्ने बड़ी मस्त बात कही हे. गीतासु सुनाऊं तो बड़ी मजा आयगी.

(तामसकर्ताके लक्षण)

''मुक्तसंङ्गोनहंवादी'' (भग.गीता.१८।२६) कौनसे कर्ताकुं मैं सात्त्विक केह रह्यो हूँ? तामस समझ जाओगे तो और सात्त्विक समझमें आ जायगो. **''अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकः अलसः विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता 'तामस' उच्यते''** (भग.गीता.१८।२८) कर्ता हूँ पर क्रियामें अपने आपकुं एप्लाय् करनो नहीं चाहूँ. जैसे चल रह्यो हे वैसे चलवे दो तो 'प्राकृतः'. 'स्तब्ध' = या तरीकेको ईगोइस्ट्. शठः = बदमाश पाछो कॅल्क्युलेशन् करे. नैष्कृतिकः = कोईने अपनो काम कियो वाकी निष्कृति करनी. कोईने मोकुं दियो वाको धन्यवाद देनो. अलसः = आलसी.

विषादी = हर बखत रोतो ही रहे. अपने या सारे दुर्गुणनके टोपला अपने माथेपे नहीं डालके गामपे डाले के जमाना कलियुगको आ गयो. या तरीकेको विषाद निरन्तर करतो रहे. और दीर्घसूत्री = काम करवेको मोका आवे तो पचास बखत अंगड़ाई लेगो, पचास बखत उठेगो. तब जाके कुछ काम हो सके. ऐसे जो कर्ता होंय वो 'तामस' कह्यो जाय. अब देखो याको ऑपोज़िट् भगवान् क्या केह रहे हें के तामसकर्ता समझो तो सात्त्विककर्ता तुरत समझमें आ जायगो.

(सात्त्विककर्ताके लक्षण)

भगवान् बता रहें हें के **''मुक्तसंङ्गोऽनहंवादी''** (वहीं) काम करनो हे तो कोई साथ दे तो करनो हे और कोई साथ नहीं दे तो भी करनो हे. काम करनो सो तो करनो ही हे. मोकुं अकेलेकुं करनो पड़े तो वाको मैं अहंवाद नहीं कर रह्यो हूँ. अनहंवादी होके करूं. **''धृत्युत्साह-समन्वितः''** मनमें ध्यान-धारणा बराबर हे के ये काम मोकुं करनो हे. हॅफेज़ाईली नहीं के कहां जा रहे थे और कहां आ गये किसीकी निगाहोंमें टकरा गये, ऐसे नहीं. अधृति अनुत्साह सु समन्वित नहीं के कहीं भी टकरा गये.

एक लड़की जा रही हती वाकुं देखते-देखते एक लड़का भी जा रह्यो हतो. देखते-देखते वो कचराके डब्बामें गिर गयो. एकने कही के ''ऐसो भी क्या ताकनो लड़कीकुं के कचराके डब्बामें गिर्यो?'' लड़काने कही ''तू समझे नहीं हे के यदि ये लड़की नहीं मिली तो कचराको डब्बा ही मेरी नियति हे''. ताकनो बुरी बात नहीं हे पर कचराके डब्बाकुं नियति माननो बुरी बात हे. मतलब लफड़ा हे. **''धृत्युत्साह-समन्वितः सिद्ध्यसिद्ध्योः निर्विकारः''** (भग.गीता.२८।२६) सिद्धि और असिद्धि में जाको मन विकृत नहीं होतो होय. सिद्धिके कारण जाकुं अहंकार नहीं होतो होय. असिद्धिके कारण डिस्हार्टन् नहीं हो जातो होय ऐसो जो कर्ता हे वो 'सात्त्विक' हे.

ये पाछो *"इश्क हे बारेगरां और ये हवस लाहिब"* कर्ता नहीं सुधार सके तो कर्मकुं सुधारो. कर्मकुं नहीं सुधार सकते हो तो करणकुं सुधारो. करणकुं सुधारोगे तो वाके संपर्कसु क्रिया सुधरेगी. क्रिया सुधरेगी तो कर्ता सुधरेगो. कोई कारणसु तुम्हारे पास तामसकरण अवेलेबल् हे और करणकुं सुधारवे जाओगे तो रोग फैलायगो. पर तुम्हारे पास यदि कोई कर्म सुधार्यो जा सकतो होय तो वाकुं सुधारो. अल्टिमेट्ली वो करणकुं और कर्ताकुं सुधारेंगे. ये भगवान्की सुधरवेकी और बिगड़वेकी पॉलीसी हे जामें अपनो अहं उलझ्यो होवेके कारण सुधर या बिगड़ सके हे.

(अहंमानीवालो चार्ट १६)

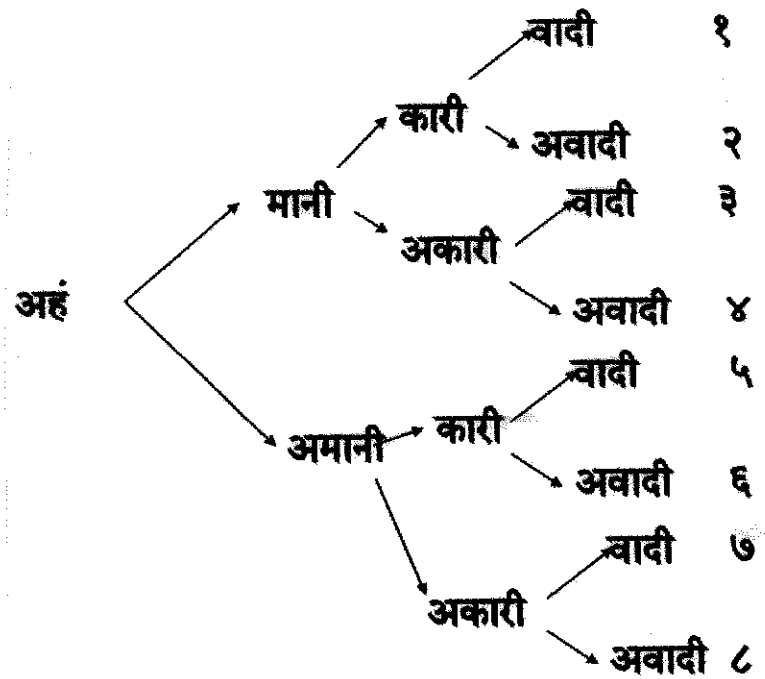

यामें एक मजेदार पहलू उभर रह्यो हे. कितनी जातकी पॉसिबिलिटी हें वो देखो. कर्ता जब क्रिया करे हे, क्योंके आज अपन् 'अहंक्रिया'को विश्लेषण करवे जा रहें हें. कर्ता अहंमानी हो सके हे. 'मान' मानें निरन्तर वा मूड्में रहवेवालो.

(कर्ताके अहंमान अहंकार अहंवाद के कारण प्रकट होती अहंकी सक्रिया या विक्रिया)

'अहंमानी' मानें निरन्तर अहंके मूड्में रहवेवालो. 'अहंअमानी'को मतलब वामें अहं हे पर निरन्तर अहंके मूड्में नहीं रहे. जो मैंने पहले दिन सुगन्धकी बात बताई. सुगन्ध अपन्ने शरीरपे लगाई तो दो मिनिट् सुगन्ध आवे फिर अपन्कुं रिटेइन् हो जाय. दूसरेकुं आवे और अपन्कुं नहीं आवे वो 'अहंअमानी'. अहं नहीं हे ये मतलब नहीं हे. हे अहं पर वाकुं हर बखत अहंके ही मूड्में हर काम नहीं करनो हे. तो वो अहंअमानी हे. कोई बखत अहंमानी होवे हे.

वो अहंमानी पाछो अहंकारी और अहंअकारी हो सके हे. 'अहंकारी' और 'अहंअकारी' को मतलब क्या? माने के नहीं माने पर वाकी क्रियामें अहंकार झलके.

हमारे एक मॅनेजर् दुर्वासा हते. उनकी तकलीफ ये हती के कोई काम बिना फटकारे कर नहीं सके. हम लोग मुंबईसु दूर जाके दवा बांटते. बड़े मन्दिरसु बैठते ही वहांसु फायरिन्ग् स्टार्ट होवे. डॉक्टरकुं नर्सकुं सबकुं फायर्. एक दिन क्या भयो, गरमीके दिन हते. हम लोग जब बससु निकले तब कम्पाउन्डरने कही "शेठ, मटका फूटा हुवा हे." तो मॅनेजरने कही "लास्टमें बोलता हे मटका फूटा हुवा हे, फूटे मटकेमें पानी लेके चलो. हम लोग वहां पहोंचे तब-तक सब पानी रिस गयो. अब सब प्यासे. खुद तो आइस्-बॉक्स्

लायो हतो. मेरे पास थर्मस् हतो. वामें जल लेके गयो हतो. वो बाहर गयो तो मैंने कही के सब लोग जल पी लो. सबने जल पी लियो पर सिस्टर् पकड़ा गई. आते ही वाने फायर् करनो शुरु कियो ''समझ नथी पड़ती महाराजना थर्मस्मांथी जल पीवे छे!'' मैंने कही ''मेरे थर्मसमेंसु जल मैंने पीवायो हे''. वाने कही ''शुं समझीने तमे आपो छो?'' अरे! मेरे बापकी गाड़ी, प्रोजेक्ट् मेरे बापको, पानी मेरे बापको, थर्मस् मैं लेके आयो, सब कुछ तो मेरे बापको हे पर ''शुं समझीने बैठा छो?'' फिर मैंने कही ''काममां जे जिम्मेदारी तमने आपी ते तमने बहु भारे पड़ती लागे छे. वो बोले ''कांई भारी नथी पड़ती, काम करवानी पद्धति ज आ''. सबकुं फायर् करतो रहे. वाके मनमें ये धारणा घर कर गई के अच्छो मॅनेजमॅन्ट् करनो होय तो फायरिन्ग् करते रहो तो बराबर अच्छो होवे. बिचारो व्यक्ति अहंकारी नहीं हतो पर निरन्तर अहंवादी हतो.

कोई अहंमानी होवे हे, कोई अहंअमानी होवे हे. कोई अहंकारी होवे हे कोई अहंको अकारी होवे हे. वो अकारिन्में भी कोई वादी होवे हे कोई अवादी होवे हे. अपने पास पॉसिबल् क्रियाकुं प्रकट करवेमें आठ रेडिमेड् मॉडेल् तो हे. ज्यादा वर्क्आउट् करो तो पता चले के क्रियामें कितनो विकार पैदा होवे हे और कहां विकार पैदा नहीं होवे हे. जामें तीनों इकट्ठे हो गये तो महान विकृत क्रिया हो जायेगी. अहंमानी भी हे अहंकारी भी हे और अहंवादी भी हे तो सत्यानाश. वो मॅनेज् ही नहीं कर पायगो. हिटलर् टाइप्को हो जायगो. कोई वादी नहीं हे पर कारी हे, कोई कारी नहीं हे पर वादी हे, वामें जितनो कम भयो उतनी स्वस्थ क्रिया प्रकट होयगी. तकलीफ अहंकी नहीं हे; पर अहंमान अहंकार और अहंवाद की हे. ''**मुक्तसंङ्गोनहंवादी**'' भगवान् केह रहें हें मुक्तसंग हे वो 'सात्त्विक' कह्यो जाय हे.

वामें सबसु अच्छो कर्ता कौनसो? मध्यम कक्षाको कर्ता कौनसो? अधम कक्षाको कौनसो? वो वर्क्आउट् करनो हे. अपनी क्रिया या तरहसु विकृत होवे हे. जब वो मॅजोरिटी या बातकी आ जाय तो अहंकी क्रिया विकृत हो जाय. और जब मॅजोरिटी वाकी नहीं हे तो बॅलेन्सेबल् हो जाय हे, मॅनेजेबल् हो जाय हे. अपनी क्रिया, अपनी बोल-चाल और अपनी फीलिन्ग् में जब अहं शाउटिन्ग् करवे लग जाय तब मॅनेजेबल् कोर्स् नहीं रेह जाय. कैसे वाकुं मॅनेज् करनो और कैसे विकृत और अविकृत होवे हे ये फोर्म्युला समझो. हर बातमें कोई मॉडेल्कुं ध्यानमें रखनो चहिये. अपन् अपने कोर्स समझें तो अहंकर्ताकुं अहंकरणकुं और अहंक्रियाकुं विकारसु बचा सकें हें. शुद्ध रखवेमें समर्थ हो सकें हें; जैसे कबीर कहे के *''जसकी तस रख दीनी चदरिया, झीनी रे झीनी झीनी चदरिया''* सबने ओढ़ी पर सबने वाकुं मैली कर दी. कबीर खुदके लिये क्या कहे के ''जैसे रामने चदरिया ओढ़ाई वैसी ओढ़ी और जाते बखत जसकी तस रख दी.'' जो अहंकारकी चदरिया हे वो ओढ़नी बुरी बात नहीं हे पर वाकुं मलिन बनानो बुरी बात हे. पहनो कपड़ा पर ऐसे ढंगसु पहनो के मैलो न हो जाय. वाकी सफाईको काम भी तुम्हारे जिम्मे होनो चहिये. ये अहंकारके कपड़ा पहन रहें हें तो वाकी सफाई भी अपनकुं रखनी चहिये. और वो सफाईकी गाइड्-लाइन् गीतामें भगवान्ने बताई हे.

प्रश्न :

अहंमानीकी फीलींग् कहां होयगी? चित्तमें होयगी?

उत्तर :

सब जगह होयगी. बहोत दिन अहंवाद करते रहो तो चित्तमें चली जायगी. निरन्तर ऐसी क्रिया करो के जा क्रियामें तुम्हारो अहं प्रकट होवे. तो वो वासना पैदा करती चली जायगी और अल्टिमेट्ली तुम्हारे चित्तमें अहं घुस जायगो. बुद्धिमें नहीं रेह जायगो. कोई बखत

अहंकार कल्क्युलेशन्सु करनो पड़े. जैसे नारदजी और साँप की कथामें आवे कैसे साँप नारदजीके सामने काटवेके लिये आयो तो नारदजीने कही ''क्यों व्यर्थमें इतनो फुंकार करे? साँपने कही ''क्या करूं?'' तो नारदजीने कही ''व्यर्थमें हर बखत फुंकाड़ अपनो मत फुलाया कर, शांत रेह.'' वाने कही ''कलसु नहीं करुंगो.'' बच्चाने देख लियो के फुंकार नहीं करे तो सबने पत्थर फेंकनो शुरु कियो. तो बिचारेको माथा ही खराब हो गयो. तो नारदजीकुं वाने कही के आपके उपदेशसु जीनो ही मुश्किल हो गयो. नारदजीने कही ''मैंने काटवेकी मनाई करी हती, फुंकार मारवेकी मनाई थोड़ी करी हती!'' पर वाकी एक लिमिट् हे. वा लिमिट्को होश अपनेकुं होनो चहिये के फूंक कितनी देर तक करनो, नहीं तो याकी पोल खुले बिना रहे नहीं. प्रपोर्शनेट् करें तो एज् एन् इन्स्ट्रुमॅन्ट् आ रही हे.

(स्वस्थ अहंकार या ममकार के लिये विवेककी महत्ता)

हर वक्त अहंकार होय, चाहे काम होय, चाहे क्रोध होय, चाहे लोभ होय, चाहे मद हाय, चाहे मात्सर्य होय, जितने भी दुर्गुण हे उन दुर्गुणनकुं जा बखत अपन् अपने विवेकके आधारपे कर रहें हें; अपनो विवेक क्या होयगो? देश-काल-कर्म-कर्ता-मन्त्र-स्वभाव ये छओं फॅक्टरकुं ध्यानमें रखके अपन् विवेकके आधारपे कर रहें हें तो वो कभी तुम्हारी चेतनाकुं नुकसान नहीं पहोंचायगी. क्योंके वो कॉन्टेक्स् हट्यो नहीं और वो अपने आप सब्-साइड् हो जायगी. पर जब तुम वाको ऑब्सेशन् (धुन लगनो) डॅवलप् कर लो; काम-क्रोध-लोभ वगरहकी बात नहीं हे, अहंकारसु ही शुरु हो रह्यो हे और ममकारसु ही शुरु हो रह्यो हे के जब अपन्ने वाको ऑब्सेशन् डेवलप् करनो शुरु कियो; वाके बाद एक स्थिति ऐसी आ जाय के अपन् करें नहीं पर बाय्-ऑटोमेशन् अपने आप हो जाय. जब ऐसे हो जाय तबसु अपने सारे स्वरूपमें खराबी पैदा होवे हे. जब तुम अपने विवेकसु प्रयोग कर रहे हो तो कोई खराबी नहीं हे. गीताको उपदेश

याही बातको हे. जब तुम विवेकसु कर रहे हो; स्थितप्रज्ञतासु कोई काम कर रहे हो तो कोई खराबी नहीं हे. पर अच्छो काम भी तुमने स्थितप्रज्ञताके बिना कियो मानें अपनी प्रज्ञाकुं स्थिर नहीं करी और काम करनो शुरु कर दियो वो अच्छो काम भी खराब परिणाम तुमकुं देगो. वाके लिये निरन्तर भगवान् अर्जुनकुं गीतामें हेमर् कर रहें हें. अपनूकुं अच्छो काम करनो के बुरो काम करनो ये इश्यु नहीं हे जितनी स्थितप्रज्ञतासु अपनो विवेक करके करनो वासु उचित अनुचित को ख्याल आ जाय.

हर बखत अहं 'होवेके' मूड्में ही बन्यो रहे. मूड् (अहंको मनोभाव) नहीं होय तो भी क्रियामें अहंकार ही प्रकट होवे. ऐसी-ऐसी क्रिया करें जामें हर बातमें अहंकार ही प्रकट होवे. तो वो अहंकारी हो जायगो. क्रिया करे सो 'कारी' और मान करे वो 'मानी', बोले वो 'वादी'. अहंमानी अहंकारी और अहंवादी वो तो फिर अनूमॅनेजेबल् कोर्स् हो गयो.

हमारे बड़े मन्दिरमें एक दरजीकी दुकानमें रातकुं अचानक आग लगी. रातकुं सब सोयें भयें हतें. अचानक कोईकुं शूरातन चढ्यो के आग लगी, आग लगी, बंबावालेकुं फोन करो. दरजीको छोटोसो बांकड़ा हतो वामें थोड़ेसे कपड़ा हतें वो जल-जलाके आग बुझ गई. बंबावालेने आके थोड़ो और पानी छांट दियो. वो जो हो-हल्ला मच्यो यामें ऊपरके जितने भाडूत हते उनमें सबमें अहंकार जग गयो के अब आग बुझायेंगे. जाके पास मटका टंकी में जो पानी हतो वो सब वहां डाल दियो. काम करवेको जब शूरातन चढ़े तो समझें नहीं के बुझी आगमें पानीकुं क्यों वेस्ट् करो हो? ये 'अविवेकपूर्ण उत्साह' या 'तामस उत्साह' केहवावे. बंबावालेने चीखके कही के अब पानी मत डालो. हम बुझी भयी आगके लगवेको कारण खोज रहें हें. तब तक तीसरी मंजीलपेसु एक मटका भरके पानी बंबावालेपे ढोल दियो! कौन ऊधम कर रह्यो वो देखवेके लिये ऊपरी तरफ

टॉर्च जोड़के देखनो चाह्यो तो एक बाल्टी वापे भी ऊपरसु कोईने ढोल दी! याको नाम 'तामसी उत्साह'!

(चेतनाके चरणरूप या करणरूप अहंता-ममता)

भगवान्ने अपनूकुं मॅन्युअल् बतायो हे के अपने अहंकारकुं कैसे स्वस्थ रख सकें! याही लिये कबीर भी बहोत अच्छी बात कहे हे. *''माया त्यजी तो क्या भया मान त्यजा नहीं तोय''* माया तो त्याग दी पर मान तो त्याग्यो नहीं. ममता छोड़ दी और वाको अहंकार पनपा दियो. हमने ममता छोड़ दी. रिवर्समें ये भी केह सके ''मान त्यजा तो क्या हुआ माया त्यजी न तोय.'' माया और मान कुं 'अहं' और 'मम' केह दें. वे अपने चलवेके दो पैर हें और दोनों पैर अपनी चेतनाके चलवेके लिये अच्छे हें. पर इनकी हड्डी बढ़नो नुकसान हे. एक लंबी हो जाय एक टूंकी हो जाय या दोनोंनूमें आर्थराइटिस्के कारण मुड़वेकी सामर्थ्य खतम हो जाय. तो फ्लॅक्सिबिलिटी होनी चहिये क्योंके वे चलवेके इन्स्ट्रुमॅन्ट् हें. चलवेकी मुख्य क्रिया फ्लॅक्सिबिलिटीपे रही भयी हे.

बराबर ये ही बात अहंता-ममतापे लागु होवे के अहंता-ममता प्रपोर्शनेट् हे, व्यर्थमें कोईकी हड्डी बढ़ नहीं रही हे, उनमें फ्लॅक्सिबिलिटी होनी चहिये. तुमकुं स्वतन्त्रता हे के एक पैर उठा सको. पर एक पैर कब उठा सकोगे? जब दूसरो पैर टिक्यो भयो होय तो!! अहंताके जोरपे ममताकुं एवोइड् कर सको हो. ममताके जोरपे तुम अहंताकुं एवोइड् कर सको हो. पर तुम ये डिमान्ड् करो के अहंता-ममता दोनों साथमें खतम हो जायें तो जीवित नहीं रहोगे, मुक्त हो जाओगे. तब तो बात खतम हो जायगी. चेतनाकुं जीवित रहवेके लिये अहंता-ममता रूप दो पैर हें. पैरको स्वस्थ होनो काहे बातमें हे? मुड़ पा रहे हे के नहीं, सीधे हो पा रहे हे के नहीं, फ्लॅक्सिबिलिटी हे के नहीं? चलवेके उपकरण होवेके गुणधर्म हें वा तरीकेके अपनी चेतनामें

अहंता-ममता रूपी चरण हें. वा तरीकेको गुण हे तो स्वस्थ रहें हें. वो गुण बिगड़े तो काम बिगड़्यो. ये रहस्य हे इनकुं स्वस्थ रखवेको. अहंकुं सत्क्रिया बनावेको और अहंकुं विक्रिया बनावेके सारे फिनोमिना या रहस्यमें रहे भयें हें. कर्ताको करणके ऊपर कन्ट्रोल् होनो चहिये, करणको कर्ताके ऊपर कन्ट्रोल् नहीं. अक्सर स्पीड्में आती गाडीमें करणको कर्ताके ऊपर कन्ट्रोल्के कारण एक्सिडॅन्ट् होवे हे. जा बखत ड्राइवर्को कारके ऊपर कन्ट्रोल् होवे हे वा बखत एक्सिडॅन्ट् नहीं होवे हे, पर कार जा बखत ड्राइवर्पे कन्ट्रोल् करवे लग जाय तो एक्सिडॅन्ट् होनो ही हे. सबसु पहले करणके कन्ट्रोल्में कर्ता नहीं होनो चहिये ये पहली शर्त हे. ये स्वस्थताको मूल रहस्य हे. ये समझे तो सारी स्वस्थता और अस्वस्थता समझमें आयगी. अहंकी विक्रिया जा बातसु हे वो समझमें आयगी.

(अहंविक्रियाको सायकॉलॉजिकल् एप्लाइड् फॉर्म)

आज अपन् अहंकारकी विकृत क्रियाको जो स्वरूप हे मानें विक्रियाको स्वरूप डिस्कस् करनो हे. और वाके लिये अपने यहांके विकारके स्वरूप आपकुं बता दिये के अहंभानसु अहंमोह, अहंमोहसु क्रोध, फिर मद मात्सर्य वगरह. मैंने सायकॉलॉजीकी दृष्टिसु भी आपकुं बतायो, वामें अहंकारकी क्रियाको जो विकृत स्वरूप हे वो सायकॉलॉजिकली कैसे एक्सप्लेन् कियो गयो हे वो बतानो चाहूंगो. ये तो टिप् ऑफ् आईस्बर्ग हे. क्योंके सायकॉसॉमेटिक् प्रॉब्लेम् होवे, सायकॉन्युरोटिक् प्रॉब्लेम् होवे, वामें फिर अनेक प्रभेद होवें. पर मैं अहंके डिफॅन्स् मेकेनिज्मकी जो प्रॉब्लेम् हे वो आपके सामने अहंकारकी विक्रियाके रूपमें; जैसे मेलेन्कलि हे फोबिया हे वो अपन् यहां चर्चा नहीं कर रहें हें. अपन् या बखत चर्चा करवे जा रहें हें वा अहंकी डिफॅन्स्मॅकेनिज्मके तहत अहंमें क्या क्या विक्रियाएं पैदा होवें हें वो खास बात देखनी हे. सायकॉलॉजीमें याको बहोत विस्तार हे पर थोड़ोसो विषय मैं आपकुं समझानो चाह रह्यो हूँ.

(अहंविक्रिया और वाके लक्षण उदाहरण उपाय)

१.डिनायल् ऑफ् रियालिटी २.फॅन्टसी ३.रिप्रेशन्
४.रॅशनलाइज़ेशन् ५.प्रोजेक्शन् ६.रिएक्शन् फॉर्मेशन्
७.डिस्प्लेस्मॅन्ट् ८. अन्डुइंग् ९.आइडॅन्टिफिकेशन्
१०.इन्ट्रोजॅक्शन् ११.कम्पेन्सेशन् १२.एक्टिंग्-आउट्.

यामें सायकॉलॉजिस्ट्ने विस्तारमें अठारह आइटम्स् गिनाई हे. पर संक्षेपके लिये सिर्फ बारह ले रहें हें. साथ ही साथ एक और खुलासा कर दऊं के अहंकी विक्रिया सायकॉलॉजीमें जा तरहसु डिफाइन् भयी हे वा तरहसु मैं आपके सामने एक्सप्लेन् नहीं करुंगो. वाको मूल कारण क्या? क्योंके इड् ईगो और सुपर-ईगो की टर्मिनॉलॉजीमें सारो एक्सप्लेनेशन् हे. अपन् इनकुं अहंता और ममता की टर्मिनोलोजीमें देखेंगे. याको एप्लाइड् स्वरूपमें अपनो जो फ्रेम्वर्क् हे, अपनी जो प्रॉब्लेम् हे, जो महाप्रभुजी आज्ञा कर रहें हें के **''अहंकारं न कुर्वीत''** अहंकार मत करो. या कर्मकी (गीताके संदर्भमें) आज्ञाके तहत जो अपनो कोर्स हे वा कोर्समें वाको एप्लिकेशन् या एप्लाइड् सायकॉलॉजीकी तरह वाकुं डिस्कस् करनो चाह रह्यो हूँ, प्योर् थियॉरेटिकल् नहीं. उनकी व्याख्यामें थोड़ो बहोत अन्तर हे वो एप्लाइड् सेन्समें समझें तो समझमें आयगो. अपनी अहंता-ममताके कॉन्टेक्समें ये समझवेको प्रयास करेंगे, जासु अहंकारकी विक्रियाको सच्चो स्वरूप समझमें आवे. और विसा-विस् **लक्षण उदाहरण और** महाप्रभुजीके बताये भये **उपाय** के क्या करो तो प्रॉब्लेम् नहीं होवे वो मैं आपकुं बतानो चाह रह्यो हूँ. क्योंके अपन् सायकॉलॉजीकी क्लास् नहीं चला रहें हें. महाप्रभुजीकी **''अहंकारं न कुर्वीत मानापेक्षां विवर्जयेत्''**की क्लास् चला रहें हें. सायकॉलॉजीकुं अपन् एप्लाइड् फोर्म्में ले रहें हें, थियॉरेटिकल् फोर्म्में नहीं.

([१] डिनायल् ऑफ् रियालिटीको लक्षण)

सबसु पहली ईगो-डिफॅन्स्-मॅकॅनिज़म्की तकलीफ हे डिनायल् ऑफ् रियालिटी. वो क्या हे वाकुं ध्यानसु समझो. कहीं न कहीं अपनो अहं कोई जातकी इन्-सिक्योॅरिटी फील् करे हे. क्यों? पर जिन विषयमें इतनी ममता नहीं हे वो विषय अपने अहंपे हावी होवे लगे हे. कल बच्चाकी बात बताई हती. बच्चाकुं जबरदस्ती ले जाये और बड़ें आपसमें बात-चीत करवें लग जाय वामें बच्चाकी ममता इन्वॉल्व् होवे नहीं करके बच्चा हल्ला मचावे. ऐसे अपनी ममताको विषय नहीं हे वो विषय अपनी अहंतापे हावी होवे लगे तो अपनी अहंता इन्-सिक्योॅर् फील् करे हे. वो वा बखत रियालिटीकुं डिनाय् करवेके एक्सटेन्ड् तक जावे हे. क्योंके वाके पास चारा नहीं होवे हे. कोई भी अपने अहंकारकुं इन्-सिक्योॅर् रखनो नहीं चाहेगो. अहंकारकुं इन्सिक्योॅर् रखनो मानें ऑल्मोस्ट् स्युसाइड् जैसी कथा हो जाय. अहंकारकी सिक्योॅरिटीके लिये अपने ममताके विरोधी वस्तुनमें निरन्तर वाकुं घिरनो पड़े. वो एक्सेप्ट् नहीं कर पाये तो वाकुं वो अपने अहंकारके बलपे रियल् होते भये, अन्-रियल् मानवे लग जाय. मैंने आपकुं खड़े होकर बतायो के वो ('अहं ब्रह्मास्मि'के उपासक) ममताकुं छोड़ दे हे और अहंताके पैरपे खड़ो होके वो कहे के ये जो कुछ हे सब कुछ मिथ्या हे. जगत् मिथ्या हे वामें मूल रहस्य ये हे. अपन् जैसे चाहें हें वैसे अपन् जगत्में जी नहीं सकें हें. जगत्के विषयाकर्षण हे पर जहांसु विषय पैदा हो रह्यो हे वासु वो मिथ्या माने हे. मिथ्या मानके अपने अहंकी सुरक्षा करो. ये एक्च्युअली डिनायल् ऑफ् रियालिटीको ईगो-डिफॅन्स्-मॅकॅनिज़म् हे. सायकॉलॉजीमें बहोत सारे उदाहरण हे. अभी याकुं अपन् एप्लाइड्में अपने सम्प्रदायके अर्थमें देखेंगे.

(पुष्टिमार्गीय रियालिटी)

सबसु मजेदार बात बताउं हम बालकन्की. महाप्रभुजीके प्रोग्राम्की खूबसूरती देखो. कोई भी सम्प्रदायमें कोई तो गुरु शिष्य या अनुयायी

अनुगामी होयगो. नॉर्मली हर धर्मसम्प्रदायमें हर बखत गुरुको दूसरो स्वरूप या दूसरे क्वॉलिफिकेशन् दिये गये हे. वाके विसा-विस् शिष्यके कुछ लोअर् या सबोर्डिनेट् क्वॉलिफिकेशन् दिये गये हे. और कह्यो जाय के या तरीकेको अपनो रोल्-मॉडेल् हे और या तरहसु अगर तुम एडॉप्ट् नहीं कर पा रहे हो तो इनके तुम अनुगामी बनो.

या विषयमें एक अपने महाप्रभुजी ऐसे हें. गुरुकी क्वॉलिफिकेशन् क्या? 'कृष्णसेवापर'. वो वैष्णवमें होनी चहिये के नहीं? 'श्रीभागवततत्त्वज्ञं', वो वैष्णवकुं भी होनो चहिये. 'दंभादिरहितं', गुरुकी थोड़े ही मॉनोपॉलि हे के हमकुं ही दंभ नहीं करनो चहिये! तुमकुं भी दंभ नहीं करनो चहिये. गुरुकी ऐसी क्वॉलिफिकेशन् नहीं हे जो शिष्यसु अलग होय. कन्सेप्ट्की ब्युटी देखो. जो गुरुको क्वॉलिफिकेशन् हे वो शिष्यको कर्तव्य हे. या तरीकेको महाप्रभुजीने प्रोग्राम् दियो हे वामें अहंकार कहांसु और कैसे डॅवलप् हो सके! गुरुको क्वॉलिफिकेशन् हे वो शिष्यकुं कर्तव्यतया एडॉप्ट् करनो हे. कोई एक्स्ट्राऑर्डिनरी क्वॉलिटी नहीं हे. कृष्णसेवा सबकुं करनी हे, भागवत सबके लिये बता रहे हे. **''प्रेम्णो अन्यत् साधनं लोके नास्ति मुख्यं परं महत्, श्रीभागवतमेव अत्र परं तस्य हि साधनम्''** (त.दी.नि.२।३२६) वो भी शिष्यके लिये बतायो. दंभ नहीं करनो वो तो गुरु-शिष्य दोनोंन्के लिये कही जाती बात हे. सेवा करनी हे वामें दंभ करवेको प्रश्न कहांसु आयो? अपने यहां गुरु और शिष्य के क्वॉलिफिकेशन् एक हें. अपने पुष्टिमार्गको बहोत रिमार्केबल् फिचर् हे.

(डिनायल् ऑफ् रियालिटीको उदाहरण और वाको दुष्परिणाम)

सुप्रीम्-कोर्टमें जूनागढ़के केसमें पिटिशन् करी हती तो वकीलने कही हती के ''हमारे पुष्टिमार्गके जो गुरु हे उनकुं वैराग्य नहीं होनो वो क्वॉलिफिकेशन् हे!'' वैराग्य हे नहीं पर भगवान्में वैराग्यगुण हे तो वो गुण अपनकुं इन्-कॉर्पोरेट् करनो पड़ेगो के नहीं? उनने

सुप्रीम्-कोर्टमें केह दियो. यासु ज्यादा भयंकर घटना अमेरिकामें भयी. पेन्सिलवेनियामें मन्दिर खोल्यो. वहां कही के महाराजकुं तो ब्रह्मचारी होनो चहिये. अब महाराज घबरा गये. उनने कही ये बात कहांसु लाये तुम? नास्तिक हो पाखंडी हो अनाचारी हो धूर्त हो. पर ब्रह्मचारी होनो कोई बुरी बात थोड़ी कही हती! महाराजको ईगो हर्ट हो गयो. या तरीकेके फॉल्स् ईगो पनपाके रखें हें. डिनायल् ऑफ् रियालिटीमें देखो, **''कृष्णसेवा परं वीक्ष्य''** ये अपने पुष्टिमार्गकी रियालिटी हे. या रियालिटीकुं एक्सॅप्ट् करवेमें वैष्णव और बालक दोनों कतरानो चाहें हें करके हवेली चले हे. दोनोंमेंसु कोईकुं सेवा नहीं करनी हे. दोनों छुट्टे. वहांसु वैष्णव छुट्टो हो गयो कृष्णसेवाकी रियालिटीसु. यहांसु महाराज छुट्टो हो गयो क्योंके नौकर तो कर ही रहे हे. अब तकलीफ होवे हे. अब ये सेट्-अप् डॅवलप् कियो तो वाके बाद प्रॉब्लेम् आयो के कृष्णके प्रति सेवापरता नहीं हे, भागवततत्त्वज्ञता नहीं हे तो गुरु माननो के नहीं माननो? दूसरी डिनायल् ऑफ् रियालिटी क्या भयी? नहीं नहीं गुरु तो महाप्रभुजी हें. बराबर मान लियो. फिर तुम कौन? साक्षात् पुरुषोत्तम. जहां गुरु होवेकी लायकात नहीं हे तो अचानक पुरुषोत्तम हो गये! ये 'डिनायल् ऑफ् रियालिटी' हे.

अपने गुरु होवेकी रियालिटीको डिनाय् करवेके लिये फॉल्स् क्लेइम् शुरु कियो. ''श्रीमद्वल्लभवंशमें सब ही वल्लभरूप''. कुछ भी वल्लभके गुण नहीं हे, वल्लभके उपदेश पालवेके लिये तुम्हारे भीतर कमिट्मॅन्ट् नहीं हे. तुम वा तरीकेको उपदेश देवेमें कतरा रहे हो और अचानक वल्लभवंशमें सब ही वल्लभरूप हो कैसे गये!!! खतरा कहां पैदा भयो? डिनायल् ऑफ् रियालिटीको जो ईगो-डिफॅन्स्-मॅकॅनिज़म् हे वामें अपने पुष्टिमार्गमें कैसे ब्लन्डर् पैदा कियो वो बता रह्यो हूं. क्योंके अपन् अहंक्रियाकी एप्लाइड् सायकॉलॉजी देख रहें हें. राइट् पर्सपॅक्टिव्में समझो. पुष्टिमार्गमें मॉर् और लेस् तीन-चार पार्टी हें. एक पार्टी हे महाराज, एक पार्टी हे गोस्वामीके इनलॉज्,

(लालाजी) एक पार्टी हे वैष्णव. अब तकलीफ क्या होवे के सेवा हमसु निभे नहीं, भागवत पढ़वेमें कन्टाला आवे, टीवी देखनो, नॉवेल् पढ़नो अच्छो लगे, कोई वैष्णव कोई लालाजी सेवामें ज्यादा तत्पर हो जाए तो महाराजन्को इन्द्रासन डामा-डोल होवे. कहीं एसो तो नहीं हो जायेगो के हमकुं मानवेके बजाय सब इनकुं मानवें लग जायें!

कट्-ऑफ् करो, कितनो कट्-ऑफ् कियो लालाजीनूकुं; देखो, ये 'डिनायल् ऑफ् रियालिटी'की कितनी भयंकर कारस्तानी भई पुष्टिमार्गमें के बेटीजी सेवामें नहा सकें पर लालाजीको गर्भ बेटीजीके पेटमें होवे तो वो सेवामें नहीं नहा सके. अरे यार तुम कहाँसु पैदा भये! कोई लालीके पैदाइश हो के कहीं आकाशमेंसु टपके! लालीमें भी तो लालाजी बोल तो रह्यो हे के नहीं! तब बोले वो चर्चा मत करो, हम अलग हें हम साक्षात् पुरूषोत्तम हें. ये डिनायल् ऑफ् रियालिटी के अपनी माँकुं डिनाय् कर देनो. तुम्हारी माँ बेटीजी तो हो नहीं सके, माँ तो कोई न कोई लालाजीकी लड़की होयगी. बहुजी नहा सके बेटीजी नहीं नहा सके, लालाजीको बच्चा पेटमें हे न या लिए! डर लालाजीको नहीं हे, पर यदि लालाजीकुं सेवाके संस्कार आ गये और सेवा करवे लग गये तो! अपने तो सेवा करनी नहीं हे, करवानी हे. अब वो सेवा करवे लग गयो और वैष्णवन्में वो चमक गयो तो फिर मेरो क्या? इन्द्रासन डामा-डोल हो गयो. इतनो सचमुचमें लालाजी यदि अछूत हे तो वासु क्यों शादी करनी, वाकी बेटी क्यों लेनी? वाकुं अपनी बेटी देनी क्यों? ये डिनायल् ऑफ् रियालिटीको दुष्परिणाम भयो. याको परिणाम ये आयो के हर लालाजी आज पुष्टिमार्गको द्वेषी हे. क्यों द्वेषी हे क्योंके या तरहसु लालाजीके साथ बदसलूक कियो गयो.

वैष्णव कोई सेवामें नहावे लग जाये और जरा भी ज्यादा सेवा करवे लग जाये तो हम लोगन्को इन्द्रासन डामा-डोल हो

जाये के अरे हम इतनी सेवा नहीं करें और तेने करी कैसे! पचास लफड़ा वापे लगा दें के अपरस नहीं पल रही हे, शृंगार नहीं हो रह्यो हे, झारीको नेवरा खुल्यो भयो हे. जयंत काग्के तीन जन्मकी वार्तामें अभी आयो हे के झारीको नेवरा बांधनो नहीं आवे और झारीयें भर रहें हें. अरे भई! क्या बात हे, सब महाराजनकुं कौनसो झारीके नेवरा बांधनो आवे हे क्या? कोई महाराजकुं झारीको नेवरा बांधनो आयो? बेवकूफ बनावेकी बात, शुद्ध एजन्सीकी बात. नेवराको क्या इतनो रोल् हे? नेवरा कोई एक ढंगसु थोड़े ही बांध्यो जाय, कई ढंगसु नेवरा बांध्यो जाय. वा बातको इतनो ईश्यु उछाल दियो के नेवरा बांधनो नहीं आवे तो झारी कैसे भर रहें हें! कोई तरहसु वैष्णवनकुं सेवा नहीं करवे देनो, नहीं करवे देवेको हेतु क्या के कहीं हमसु ज्यादा कर ले तो? ये प्रॉब्लेम् के कृष्णसेवा परता, दम्भादिरहितता, श्रीभागवतत्वज्ञता में हम रोल्-मॉडेल् नहीं रेहके तुम रोल्-मॉडेल् हो गये तो? न मैं करुं न तोकुं करवे दऊं. अपने संप्रदायमें डिनायल ऑफ् रियालिटी करवेको नॅट्-रिजल्ट् ये आयो के वैष्णवमें सेवा करवेकी आस्था खंडित हो गई और सेवा खरीदवेकी आस्था पैदा हो गई. हम लोग पॅरासाइट्की तरह पुष्टिमार्गमें एक जीवन जीवें लग गयें. वा तरीकेको स्वाभिमान, महाप्रभुजीको जो स्वस्थ अहंकार हे वो नहीं झलक रह्यो हे. अस्वस्थ अहंकार, जाकुं गुजरातीमें 'बीकण' कहें, वे तो भीतरसु डर रहें हें और बाहरसु खाली घौं घौं घौं घौं कर रहें हें. याके लिये डिनायल् ऑफ् रियालिटीके कारण सारो सेट्-अप् बिगड्यो. ये एक रहस्य समझो.

(रियालिटी स्वीकारवेको महाप्रभुजीको स्वस्थ अहम्)

याके विसा-विस् महाप्रभुजीकुं देखो. जा स्केल्की सेवा सेठ दामोदरदास करतें हतें, महाप्रभुजीने एक दिन भी नहीं करी और कभी महाप्रभुजीने जेलस्(ईर्ष्या) फील् नहीं कियो. दामोदरदासकुं हर बखत ग्लोरिफाय् कियो के जिनने अम्बरीष राजा नहीं देख्यो होय वो दामोदरदासके

दर्शन करो. स्वीकारवेको माद्दा हतो. वा स्केल्की सेवा महाप्रभुजीने कभी नहीं करी. नहीं करी तो नहीं करी, भई! महाप्रभुजीको सिद्धान्त ही स्पष्ट हतो के जितनी आपसु सहज हो सके उतनी सेवा करो. दामोदरदासजीसु वो सहज हो सकती हती उनने करी, करी तो वाकुं महाप्रभुजीने एप्रिशियेट् करी, वामें महाप्रभुजीने भीतरसु नर्वस् फील् नहीं कियो के हमसु ज्यादा सेवा करवेकी तेरी हिम्मत कैसे पड़ी बता. क्योंके उनमें डिनायल् ऑफ् रियालिटीको ईगो नहीं हतो.

महाप्रभुजीमें रियालिटीकुं स्वीकारवेको ईगो हतो. गुसांईजीमें डिनायल् ऑफ् रियालिटी डिस्टॉर्टेड् (विकृत) ईगो नहीं हतो करके गुसांईजी निरंतर समर्पितको ही भोग लेवेके, प्रसादको भोग लेवेके आग्रही हतें पर आसकरणदासजीके लिये गुसांईजीने ये आज्ञा कर दी के "उनकुं अनप्रसादी भी दे दो तो प्रसाद हो जायगो." आसकरणदासकी इतनी महत्ता स्वीकारवेको माद्दा गुसांईजीमें हतो. वार्ता पढ़ो तो ख्यालमें आयगो के श्रीनवनीतप्रियजीने वा दिन कबूल कियो के आज तो मैंने दो बार राजभोग आरोग्यो जबके श्रीनवनीतप्रियजीकुं राजभोग आयो ही नहीं हतो. राजा आसकरणदास आयें हतें और उनकुं अनप्रसादी दे दियो गयो हतो और श्रीनवनीतप्रियजीने कही दो बार आरोग्यो. ये हिम्मत गुसांईजीकी क्यों नहीं पड़ी के श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगे वाके पहले मैं अरोग जाऊं और नवनीतप्रियाजीने दो बार राजभोग अरोग्यो केहवावे. नहीं, क्योंके रियालिटीमें आसकरणदासमें वा तरीकेकी व्यसनदशा, वा तरीकेकी भक्तिकी तन्मयता हती. वा रियालिटीकुं स्वीकारवेको गुसांईजीमें माद्दा हतो. वा रियालिटीकुं अस्वीकार करवेको डिस्टोर्टेड् ईगो नहीं हतो करके वो वार्ता प्रकट भयी.

(डिनायल् ऑफ् रियालिटीको उपाय)

देखो! डिनायल् ऑफ् रियालिटीके कारण अपने यहां कितने-कितने कौभाण्ड भये! ये एप्लाइड् साइकॉलॉजीकुं अपन् देखेंगे तो पता चलेगो.

ईगो-डिस्टोर्शन्को एक प्रकार हे डिनायल् ऑफ् रियालिटी. ये गंभीर विषय हे और प्रोब्लेमेटिक् हे. अपन् निंदा या स्तुति के अर्थमें न ले, ये न आपकी समस्या हे न मेरी समस्या हे, ये अपनी समस्या हे, पुष्टिमार्गकी समस्या हे. जो याकुं मानतो होय, नहीं मानतो होय, उन सबकी ये समस्या हे. अपने अहंकारमें फ्लॅक्सिबिलिटी लाके याको सॉल्युशन् भी अपन्कुं खोजनो चहिये. या लिये मैंने आपके सामने सारे डॅमोन्स्ट्रेशन् दिये के अपने अहंकारके पैरमें वो फ्लॅक्सिबिलिटी होनी चहिये के कोईमें कुछ रियालिटी हे तो वाकुं अपन् स्वीकार करें. जब अपनेमें स्वीकारवेको पावर् खतम हो जाय हे वा बखत रियालिटीकुं अस्वीकार करवेकी टॅन्डेन्सी अपने ईगोमें आवे हे और वो डिस्टोर्टेड् ईगो हो जाय हे और अपन् सायकॉलॉजिकली बीमार पड़ जायें हें. सायकॉसोमॅटिक् सायकॉन्यूरेटिक् प्रॉब्लेम् होवे हे. ये एक जबरदस्त रहस्य हे.

प्रश्न : रॅकॉर्ड नहीं भयो.

जवाब :

ये उदाहरण और लक्षण मैंने दिये के अपने अहंकारकी रक्षा अपनी ममतासु, जो विरुद्ध जाके अपनेपे जब अटॅक् कर दे तो अपनो अहंकार अपनेकुं असुरक्षित लगे. वा बखत अपन् रियालिटीकुं अस्वीकार करें हें वो वाको लक्षण हे. डिनायल् ऑफ् रियालिटी जो अपनो ईगो डिफॅन्स मॅकेनिज़म् हे, ये वाको लक्षण हे. वाको उदाहरण भी मैंने पुष्टिमार्गी दियो, सायकॉलॉजीमें ये उदाहरण नहीं हे पर मैंने खास पुष्टिमार्गीय उदाहरण दियो के जासु अपनेकुं वाको एप्लाइड् स्वरूप समझमें आवे. और वाको उपाय भी मैंने बतायो के अपने ईगोकुं इतनो फ्लॅक्सिबल् रखनो पड़ेगो के कोई ज्यादा एसो हो सके के नहीं हो सके हे? क्यों नहीं हो सके ज्यादा, वामें स्वीकारवेमें अपनो क्या गयो? महाप्रभुजीको क्या गयो? एक सीधीसी बात समझो दामोदरदासकुं उतनो ग्लोरिफाय् करवेमें या आसकरणदासकुं

उतनो ग्लोरिफाइ करवेमें गुसांईजीको क्या गयो? दामोदरदासकी इन्सल्ट् करी? कोई उनकुं इन्सिक्यॉरिटी फील् नहीं होती हती. महाप्रभुजीकुं गुसांईजीकुं इन्सिक्यॉरिटी फील् नहीं होती हती करके वे ग्लोरिफाय् कर सकें. अपनेकुं इन्सिक्यॉरिटी फील् होवे हे. कोई वैष्णव ज्यादा सेवा करे तो अपन् वाकुं मना करनो चाहें के मत करो सेवा. अब पचास लफड़ा खड़े कर दें जैसे अपरस नहीं हे, कुआको जल नहीं हे, राग-भोगको विस्तार नहीं हे, पचास लफड़ा करके वाकुं कोई तरहसु रोको. रोकवेसु नॅट्-रिज़ल्ट् ये आ रह्यो हे के वैष्णवमेंसु पुष्टिसम्प्रदायको आग्रह शिथिल होतो जा रह्यो हे. वो आग्रहके शैथिल्यको भी जो विनाश हे वाकुं (वहोरके)वोहोरके भी अपन् अपने ईगोकुं सिक्यॉर् करनो चाह रहें हें के "वर मरो के कन्या मरो पर गोरनुं तरभाणु भरो" बस वा तरीकेकी जो इन्सिक्यॉरिटी अपन्कुं फील् हो रही हे वाकी ये सारी प्रॉब्लेम् हे डिनायल् ऑफ् रियालिटीके साथ.

([२] फॅन्टसीको लक्षण)

'फॅन्टसी' क्या हे बला? अपनो ईगो, अपनी जो अहंता हे वो कैसे छले हे अपन्कुं? अपनी कोई अहंता हे के 'मैं ये हूँ', वा अहंताके कारण कोई विषय अपन्कुं ज्यादा अपनो लगे हे. "ये तो मेरो ही हे, मेरेकुं होनो ही चहिये" ऑल्मोस्ट् नॉन्-कॉम्प्रोमाइज़िन्ग् वे में. और वा बखत अपनी अहंता डिप्राइव् हो जाये, फॉर् एक्स् वाय् ज़ॅड् रिज़न्, फिर अपन् फॅन्टसीमें जावें. रियालिटीमें जीवेके बजाय कल्पनालोकमें जानो शुरु करें, डिप्राइवेशन्के कारण क्योंके अपनी अहंताकुं सॅटिस्फॅक्शन् तो चहिये के वो मोकुं होनो चहिये और वो जब मोकुं नहीं मिल रह्यो हे तो वाकुं फॅन्टसाइज़् करके जीयो, रियालिटीमें नहीं जी पा रहे हो तो. वा तरहसु अपनी अहंता फॅन्टसीमें फंसी भयी होनेके कारण डिस्टॉर्ट हो जाती होवे. थोड़ो बहोत पर्सन्टेज्में हर आदमी फॅन्टसाइज़् करतो होवे क्योंके फॅन्टसाइज़् नहीं करे तो

आदमी जी नहीं सके. ये सारो सिद्धांत थोड़ी बहोत फॅन्टसीको नहीं हे पर फॅन्टसीको रोग बन जावेको हे के फॅन्टसी जा बखत करण तरीके नहीं पर अपनो स्वभाव तरीके प्रकट होवे लग जाये के निरंतर अपन् फॅन्टेसीमें जीयें तो वो फॅन्टसी 'अहंताको डिस्टॉर्शन्' केहवावे.

(फॅन्टसीको उदाहरण)

अक्सर मैं याको एक उदाहरण आपकुं देतो रहूं के मिस्टर् वी.आर.कापडीया. वो फॅन्टसीवालो उदाहरण हतो. क्योंके दांतें सब टूटे भयें, एक-दो दांत वो भी पीले-पीले, सारे शरीरमें खुजली, मोहड़ापे करचली, अब ये जो अपनो स्वरूप हे याकुं कैसे जस्टिफाय् करनो! अब नहीं जस्टिफाय् हो पा रह्यो हे तो ये कल्पनालोक शुरु करें के वैजयन्तीमालाको पति मैं ही हूँ. और जब आतो तब मोकुं यही केहतो "श्यामबावा, देखा! नयी फिल्म् आयी हे उसमें वैजयन्तीमाला नहीं लिखा हुआ हे, मिसेस् वी.आर.कापडीया लिखा हे!" मैंने कही "मैं पिक्चर् देखने जाता नहीं हूँ, क्या करें." "अरे तो देखा करो, खाली बड़े मंदिरकी चार दीवारमें क्यों रहते हो!"

गोवाको झगड़ा भयो तो आके ऐसे पड़यो तो मैंने कही "रामदासभाई क्या हो गया" बोले "अरे क्या बताउं श्यामुबावा बड़ी तकलीफ हे." "क्यों क्या तकलीफ हुयी?" बोले "नेहरूजीने कहा के 'गोवा जीतवेके बाद जब अपन् टेक्-ओवर् करें तब रामदास तुमकुं वहां रेहना हे.' वैजयन्तीने ना पाड़ दी के 'रामु मैं तोकुं जाने नहीं दुंगी!' अब मैं दोनों बाजुमें घिर गया के नेहरूजीकी बात मानूं के वैजयन्तीकी बात मानूं. फिर मेरेको नहेरूजीसु केहना पड़ा के यदि मोकुं गोवा भिजवानो हे तो मोकुं वैजयन्तीके साथ भेजो. फिर हम दोनों गये तब आज आयें हम, थक गये". फिर सो गयो.

कौनसो कल्पनालोक हे, कौनसी वैजयन्ती, कौनसो गोवा!! क्योंके

आदमीकुं अपनी जो हकीकत हे, पीले-पीले दो दांत, चेहरापे करचली और यहांसु यहां तक सब खुजली क्योंके अपनी जो तकलीफ हे कहीं न कहीं; नॅचरली यंग् होयेगो तब स्मार्ट हॅन्डसम् होयगो मगर बुढ़ापाको ये जो स्वरूप आयो वो स्वीकारवेके लिये तैयार नहीं होवेसु ईगोने या तरहसु सारी फॅन्टसी क्रियेट् करी. और पाछो गुस्सा हो गयो मेरेपे, मैंने कही "सब आपकुं बेवकूफ बनातें हें" तो बोल्यो "तुम बेवकूफ हो. बड़े मंदिरकी चार दीवारमें पड़े रहते हो. बाहरकी कुछ पता हे?" मैंने कही "नहीं पता हे", वाने कही "जाओ देखो बाहर", मैंने कहा "अच्छा जायेंगे कभी देख लेंगे के क्या हे", यों और आके केह जातो के "आज तो पता हे क्या हुआ", मैंने कही "क्या हुआ"? "वैजयन्तीने दो लप्पड़ मार दी बालीकुं 'यु आर् नॉट् माय् हस्बन्ड्', रामी इज् माय् हस्बन्ड्"! ये क्या लफड़ा हे, कौनने देखी, कौनने सुनी, कौनसे टीवी कॅमेरावाले वहां हते के "यु आर् नॉट माय् हस्बन्ड्, रामी इज् माय् हस्बन्ड्" वो अपनी हकीकत नहीं स्वीकारवेके कारण या तरीकेकी फॅन्टसीमें जीये.

अब अपन् समझें ये बिचारे रामदासकी तकलीफ हे, ऐसे नहीं हे, मोस्ट् ऑफ दी पुष्टिमार्गीयन्की ये तकलीफ हे के जो-जो अपने उधम होवें अपन् कहें "नहीं नहीं एमां लीलाभाव करो"! अरे भई! "भगवान्नी लीलामां भगवल्लीलाभाव करो के तमारी गिलिंडरीमां लीलाभाव करवानो"! वो तुरंत फॅन्टसीमें अपन् चलें जायें. वो अपनो डिफॅन्स् मॅकेनिज्म् हे के अपन् वा तरहसु अपनी ईगोकुं सेव् (बचानो) करनो चाहें.

(फॅन्टसीको उपाय)

एक बात ध्यानसु समझो के लीलाभावना अच्छी बात हे पर भगवान्की जो कृत्तियें हें उनमें लीलाभावना धीरे-धीरे डिड्युस् होते भये जगत्की हर बातमें आवें तब तो वो हेल्थी लीलाभावना हे

पर इन्ड्यूस् करते भये अपन् अपने क्षुद्र व्यक्तिनसु इन्डक्शन् करतें भयें भगवान्में ले जानो चाहें तो कहीं न कहीं वो नुकसान पहुंचावेवाली हे.

डिडक्शन्को और इन्डक्शन्को भेद समझो, 'डिडक्शन्' मतलब सारो जगत् भगवल्लीला हे, प्रकृति-पुरुष भी एक लीला हे, प्रकृतिसु गढ़्यो भयो शरीर भी एक लीला हे, पुरुषके जो अंश हें वो भी लीला हे और वा प्रकृति-पुरुष के संयोगके कारण प्रकट होती भयी कोई क्रिया भी एक लीला हे. ये अपन्ने लीलाको डिडक्शन् कियो. तो डिडक्टेड् लीला तो सच्चो लीलाबोध हे, और एक-एक आदमीके ऐसे इन्डिविज्युअल् कॅरेक्टर् हे, उनमेंसु अपन् इन्डक्शन् करें के ये लीला हे. कहो लीला! पर नेट् -रिज़ल्ट् वाको क्या आयगो के तुमकुं भगवान्की लीलाके बजाय इन लीलान्में आकर्षण बढ़ जायेगो और सफर् क्या करेगो के सारे जगत्कुं एक भगवान्की लीलाके रूपमें देखवेकी तुम्हारी सामर्थ्य खंडित हो जायेगी या इन्डक्टिव् प्रोसेस्सु यदि तुम लीलाकुं देखवे जाओगे. अपन्कुं लीलाबोध डिडक्टिव् प्रोसेस्सु लानो हे, इन्डक्टिव् प्रोसेस्सु नहीं क्योंके जा स्केल्पे अपन् इन्डक्शन् करनो चाह रहें हें वो तो कमजोर जंपिंग् पॅड् हे. वापेसु लीलाको इन्डक्शन् हो नहीं सकेगो और जब वापेसु करवें जायेंगे तो कुछ न कुछ होयगो.

(फॅन्टसीको उदाहरण)

मैंने आपकुं पहले भी एक बात सुनाई हती के एक बड़ी प्रतिष्ठित औरत हती. मेरे पीछे पड़ गई के मोकुं ठाकुरजी पधराओ. निरंतर वाके उधम, आज ये कल वो. मैंने वाकुं ब्रह्मसंबंध नहीं दियो, मैंने वाकुं ठाकुरजी नहीं पधराये. एक दिन मोकुं लेटर् लिख दियो के "तमे ठाकुरजी नथी पधरावता पण ठाकुरजी मारे छापरे जन्म्या. एक मोर आवीने इंडु मूकी गयो, मोर अने ढेल, एमां राधा अने

कृष्ण बन्ने जन्म्या छे. अने छापरामांथी नीचे पड़ी गया तो में मारा सिंघासन ऊपर पधराव्या." करो सेवा! अब वो मोर अपने बच्चाकुं जा तरहसु दाना चुगाके जिन्दो रखे वा तरहसु तो उनकुं जिन्दो रखनो आवे नहीं, तीन-चार दिनमें मर गये वो दोनों बच्चा. फिर मोकुं लिख्यो के "राधा-कृष्ण मरी गया." तो मरी ज जाय ने! तमें लीलाबोध त्यांथी नथी शरु करता, मोरना इंडामांथी लीलाबोध शरु करो तो ए लीलाबोध मरशे ज! लीलाविहारी कृष्ण अने राधा पण मरी जशे! ज्यांथी शरु करवानुं होय त्यांथी शरु नहीं करो अने उलटु शरु करो तो केवी रीते लीलाबोध टकशे! फिर मोकुं कही के "हवे हूँ शुं करुं?" मैंने कही "मैं तो तमने राधा-कृष्ण पधराव्या न हता. तमारा छापरामांथी टपक्या हता. ए मरी जाय तो स्वाभाविक छे, एमां आपणे शुं करी शकीये." फिर वृंदावन गई तो वहांसु प्लास्टर् ऑफ् पॅरिस्के राधा-कृष्ण ले आयी! "तमे पधरावता नथी तो क्यां सुधी सेवा विना रहुं? एटले प्लास्टर् ऑफ् पॅरिस्ना राधा-कृष्णनुं बहु ज खूबसूरत, मनमोहक स्वरूप मने मळी गयुं अेटले में पधरावी लीधा." दोनोंके स्वरूपकुं स्नान करावेमें एक दिन दोनोंन्की डोकी अलग हो गई! प्लास्टर् ऑफ् पॅरिस्के राधा-कृष्ण अच्छे लगे तुमने सेवामें पधरा लिये वो स्नान कराते-कराते उनकी मुंडी अलग हो गई.

ये तो ऐसो भयो के गुरुजी शालीग्रामजी पधराके गये, चेलाकुं कही के इनकी बराबर रोज पूजा करियो, चंदन चढ़ाइयो, दूध चढ़ाइयो. उनने कही जरूर चढ़ायेंगे. एक दिन पता नहीं कौन चूहा के बंदर उठाके ले गयो. वाने कही अब शालीग्राम लाने कहांसु. जाके देख्यो जंगलमें कालो जामुन पड़्यो हतो. शालीग्रामजी पधरा दिये! बिराजो महाराज. अब वो शालीग्रामजीके ठिकाने जामुनजी बिराजे तो कितने दिन बिराजे? गुरुजी आये तब तक वो शालीग्रामजी सड़ गये. गुरुजीने कही "ये शालीग्रामजी ऐसे कैसे हो गये?" तो वाने कही *"पुनी*

पुनी चंदन, पुनी पुनी पानी, सड़ गये ठाकुर हम का जानी!'' रोज-रोज पानी चढ़ानो रोज-रोज चंदन चढ़ावेपे ठाकुरजी सड़ गये हमकुं क्या पता!''

अपनी सब तकलीफ या तरीकेकी के सोचे समझे बिना कछु भी कहीं भी लीलाभाव प्रकट कर देनो के जामुन पड़्यो मिल्यो बोले 'ठाकुरजी!'. भाखरीमें श्रीनाथजी, मार्बल्में श्रीनाथजी और जहां देखुं वहां श्रीनाथजी! घट घटमां श्रीनाथजी, महाप्रभुजी, यमुनाजी! संडासकी टाइल्में श्रीनाथजी, श्रीयमुनाजी, श्रीमहाप्रभुजी!! ये क्या लफड़ा हे यार! *''या इलाही ये माजरा क्या हे''* ये कोई पुष्टिमार्ग हे? ये क्या हे? फॅन्टसीमें निरंतर जीवेकी एक प्रणाली अपन्ने एडॉप्ट् कर ली हे. लीला वहांसु नहीं, लीलाकी जो प्रिस्क्राइब्ड् मॅथड् हे, लीलाबोधकी, वा प्रोसिजरसु अपन् लीलाबोध डॅवलप् करें तो सचमुचमें लीलाबोध डॅवलप् हो सके पर ये उलटी प्रक्रियासु जा बखत अपन् लीलाबोध डॅवलप् करें तो नुकसानके अलावा कुछ नहीं हो सके.

(फॅन्टसीको उपाय)

पर महाप्रभुजीने अपने पुष्टिमार्गी सेवाके संदर्भमें अपन् देखें तो सारो नवरत्न कैसे लीलाबोध करनो, वाके कितने सारे ऑल्टर्नेटिव्-उपाय सजॅस्ट् करके अपन्कुं नवरत्न समझायो हे. 'नवरत्न मानस विश्लेषण' पढ़ोगे तो आपकुं ख्यालमें आ जायगो के अपनी लीलाबोध करवेकी मॅथड् क्या हे. वो अपन्कुं महाप्रभुजीने ऑल्रेडी नवरत्नमें समझायी हे वा तरहसु लीलाबोध नहीं करके उट्पटांग तरहसु लीलाबोध करवेमें या तरीकेके लफड़ा होवें ही हें ये बात खास समझनी.

([३] रिप्रेशन्को लक्षण)

अगलो अपने ईगोको जो डिस्टोर्शन् हे वो हे रिप्रेशन्. ये रिप्रेशन् बड़ो मजेदार एक पहलू हे. डिस्टोर्शन् ऑफ ईगोको या रिप्रेशन्में

क्या होवे हे के अपने भीतर सहज रूपसु एक विकृत टॅन्डेन्सी आवे हे क्योंके अपनो अहं निरंतर ऑप्शनन्कुं तोलतो रहे हे. जब भी अपने सामने कोई कर्मको प्रसंग आयो तो अपन् तोलें हें ये करुं, ये करुं, ये करुं. अपन् कर्ममें तोलें हें के ये मेरे लिये अच्छो के ये मेरे लिये अच्छो, ये ऐसे करनो अच्छो के ऐसे करनो अच्छो, या हेतुसु करनो अच्छो के वा हेतुसु करनो अच्छो, या तरहसु अपन् निरंतर तोलतें रहें हें. निरंतर तोलवेमें अक्सर क्या होवे हे के जैसे अभी मैं आपकुं केह दऊं के पीछे मुड़के मत देखियो, अब बेचैनी हो जायेगी आपकुं के क्या बात हे जाके लिये पीछे मुड़के देखवेकी मना कर दी. तुरंत इच्छा होयगी के एक बखत तो देख लो. अब सामने नहीं देख सकते हो तो हाथ जोड़वेके लिये आंख मीचे वा बखत पीछे देख लो. फिर पाछो मोहड़ा सीधो कर लेंगे. या तरीकेकी एक सहज क्युरियॉसिटी(कुतूहलता) होवे हे. आवश्यक नहीं हे के वो अपराधवृत्तिसु ही होय पर या तरीकेकी क्युरियॉसिटी निरंतर अपन् पॅम्पर् करतें रहें तो वो धीरेसु अपराधिक वृत्ति बन जाये हे. क्योंके एक बखत एसो अपनेकुं करनो पड़ें के निरंतर कोईके साथ अपनेकुं एन्काउन्टर् करवेमें, या सिच्युएशन्कुं फेस् करनो पड़े के निरंतर वो कोई बातकी ना पाड़ रह्यो हे और निरंतर अपनेकुं लगे के हे क्या मॅटर्? और फिर देखते-देखते अपनेमें एक अपराधको भाव जगे हे के भई! इनकी हर बात एसी होवे हे के जाको अपने पास काट नहीं होवे हे और काट नहीं होवे करके अपन्कुं इनसु छुपके वो काम तो करनो ही पड़े. जैसे बच्चाकुं चॉकलेट्र खानी हे, अपन् ना पाड़ दें तो बच्चाके मनमें भाव जगेगो के मम्मी-पप्पा होवें तब नहीं खानो, जाते ही चॉकलेट् खानी. वो एक अपराधको भाव बच्चाके दिलमें जगे.

(रिप्रेशन्को कारण)

अब वो एक सहज बात हे, नॅचरल् फिनॉमिना हे. हर एकके

भीतर होवे पर कोई बखत अपराधको भाव दो तरहसु अपनूकुं त्रास देवे लगे. दो तरहसु कैसे त्रास देवे? एक बाजु वो अपने ईड्की जो बात हे वो अपनूकुं कहे के खा ले, देख ले पीछे क्या हे, और सुपर्-ईगो केहतो रहे के हट ऐसे नहीं करनो, वैसे नहीं करनो. बिटवीन् ईड् एन्ड सुपर्-ईगो टॅन्शन् क्रियेट् होवे हे.

अब देखो वो बात समझाऊंगो तो आपकुं समझमें आ जायेगी. फ्रॉइड् अपनूने क्यों समझ्यो वाको हेतु आज आपकुं समझमें आयेगो के ईड् और ईगो को आपसमें जो टॅन्शन् होवे हे वा टॅन्शनूके कारण आदमी खुद क्या सोचवे लग जाये के कहीं मोकुं वो ईड्के अन्डरूमें नहीं आ जानो पड़े नहीं तो सुपर्-ईगोसु मोकुं पनिश्मॅन्ट् मिलेगी करके वो ईड्के लेवलूपे क्या करे के अपने अहंकारकी सुरक्षा रखवेके लिये ऑपोज़िट टॅन्डेन्सी ॲडॉप्ट् करे. खायेंगे ही नहीं चॉकलेट्, जो चॉकलेट् खा रहें हें सब बदमाश हें, जो चॉकलेट् खा रहें हें वे मम्मी-पप्पाकी आज्ञा मानवेवालें नहीं हें, जो चॉकलेट् खा रहें हें उनकुं लप्पड़ मारो.

ये जो इस्लाम नहीं मान रहें हें, जो इस्लामके बंदे नहीं हें वे सभी काफिर हें. या तरीकेकी रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी आवे के वे सभी काफिर हें. वे क्या करें? जैसे *''धरमना छेतरमां ने कुरुना छेतरमां ई घड़ीकमां बाजी मरे. मारा छोकरा ने मारा भाईनां छोकरा बेउ भेगा थईने हुं करे हंजयडा? हाहरोए मुए ने हाळोए मुए ने बाधी-बाधीने मरी जाय. तुं तो तारा तीर दीधे राखने एमां तारा बापनुं हुं जाय!!''* रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सीके कारण या तरीकेको एक झगड़ा निरंतर पैदा करतें रहें. घोर अशांतिके ये कारण होवें रिप्रेसिव् डिस्टॉर्शन्वाले अहंकारमें. क्योंके वे खुदकुं बचावेके लिये एक्सट्रिम् पॉइंट्पे जाके उनको नॅगेशन् करतें होवें.

(रिप्रेशन्को उदाहरण)

जैसे एक सीधीसी कॉमन्सेंस्की बात आपकुं बताऊं के इस्लाममें मोहम्मदकी ही नहीं कोई भी मनुष्यकी मूर्ति बनावेकी मना हे, अच्छी बात हे निराकारकी उपासना करनी हे तो वा तरीकेको अपनूकुं उधम नहीं करनो चहिये. मूर्ति बनावेसु अपनेमें कहीं न कहीं साकार उपासनाको कुभाव पैदा होयगो. उनके सॅट्-अपूमें बड़ी अच्छी बात हे. भई! तुमकुं मना हे वो हमपे कैसे लागु करोगे. जैसे अपन् अच्छी तरहसु जाने के काकाकी लड़कीसु शादी करनो अपने यहां मना हे. अपने यहांकी सॅट्-अपूमें वो बात ठीक हती. मुसलमाननूमें इसाईयनूमें काकाकी लड़कीसु शादी सबसु अच्छी शादी केहवावे. अब अपन् मुसलमाननूके पीछे पड़ जायें के ''हट! पापी हें, नालायक हें, धूर्त हें, पिशाच हें.''. क्यों? काकाकी लड़कीसु ब्याहे! अरे भई! तुमकुं मना हे, उनकुं थोड़े ही मना हे. यदि या टॅन्डेन्सीसु तुमने अपनो मॉरल् सबपे इम्पोज़् करनो शुरु कियो तो कल तो तुम जानवरनूकुं पकड़ोगे. क्या जानवरनूकुं पता हे कि काकाकी लड़की कौन हे और मामाकी लड़की कौन हे? तुम तो जानवरसु भी या तरहसु मॉरल् इम्पोज़् करेंगे. अब तुम वहाँ भी पाप देखोगे, फिर जानवरनूकुं भी मारो. ''हट पापी हे.'' या सिच्युएशन्को अंत कैसे आ सके?

ये रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी हे. तुमकुं जो अधर्म हे वो डॅफिनेटली तुम्हारे लिये अधर्म हे, वाकुं तुम मत करो. बातकुं वहाँ स्टॉप् कर दो. रिप्रेसिव् टेन्डेन्सीके कारण तुम क्या करो हो के वाको ऑपोज़िट् तुम पकड़ो हो के ''नहीं नहीं, ये तो हर सिच्युएशन्में करनो खराब हे'' सो इतनो ज्यादा करो के आदमी त्रस्त हो जाये. अक्सर कई बहुनूकुं सास-ससुरकुं अटेन्ड् करवेमें तकलीफ होती होवे हे और जब उनकुं पता चल जाये के पति, सास-ससुरको अटॅन्शन् डिमान्ड् कर रह्यो हे तो उनमें गिल्टी फील् होवे हे के ''तो हम गिल्टी हें'' साइकॉलॉजीमें ये उदाहरण दियो हे. बहु अपनेकुं

घिस डालें वा हद्द तक सास-ससुरकी सेवा ही करती रहे. और जो बहुएं सास-ससुरकी सेवा नहीं करें वे सब नालायक बहुएं हें, ये कैसी बहु हे. अरे भई! तोकुं करनी हे सास-ससुरकी सेवा तो कर न शांतिसु. कोई कर रही हे के नहीं वामें तेरे बापको क्या गयो! वा तरीकेकी रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी अपने भीतर डॅवलप् होवे हे.

(रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी और उदाहरण)

डिस्टॉर्शन् अपने ईगोको होवे हे के अपन् अपने भीतरसु गुनाह कबूल कर रहें हें. अब वा गुनाहको तुमकुं डर लग रह्यो हे के कहीं ये गुनाह मोसु न हो जाये. वा डरके मारे अपन् सत्कर्म आउट् ऑफ् प्रपोर्शन् जाके करवें लग जायेंगे तो वो 'रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी' केहवावे. तुमने अपने आपकुं कहीं न कहीं सॅल्फ्-टॉर्चर् करवेको एक उपाय खोज निकाल्यो. धर्मकी आज्ञाको जो स्वस्थ स्वरूप हतो वो तुमने निभायो नहीं पर एसो अस्वस्थ स्वरूप निभायो और वा रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सीको साइकॉलॉजीमें बहोत मुश्किलसु सुधार्यो जा सके हे.

जैसे अपनकुं मूलमें सेवामें अरुचि हे. रिप्रेशन्को एग्ज़ाम्पल् समझो; जैसे मूलमें सेवामें मन लगे नहीं क्योंके "इश्क हे बारेगरां" वो तो एक फॅक्ट् हे ही. तो अपन् फिर काय बातमें मन लगावें? अपनकुं अपराधबोध भी होवे के "सेवामें क्यों नहीं मन लग रह्यो हे" जो देखो वो आदमी ये ही कम्प्लेइन् करतो रहे हे के "सेवामां मन नथी लागतु", "मन नथी लागतु" याकुं कॉम्पेन्सेट् करवेके लिये एकदम सेवाको स्केल् बढ़ाके रख दें के आदमी देखके ही घबड़ा जाये, मानें घरवालें भी सब भग जायें. उतने अनेसेसरी स्केल्पे सेवा बढ़ा लें, वो सिर्फ काहेके लिये "लागे छे के मन नथी लागतु". या तरीकेकी अपनी एक रिप्रेशनकी टॅन्डेन्सी होवे हे.

(रिप्रेशन्को उपाय)

वा रिप्रेशन्की टॅन्डेन्सीकुं अपने महाप्रभुजीने, अपने गुसांईजीने कैसे

ओवरकम् करी हती के या तरीकेकी रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सीके डिस्टॉर्टेड्-ईगो अपनी सेवामें नहीं पनपें वाके लिये महाप्रभुजी-गुसांईजीने सबने ये बात कही हती के सहज सेवा करो **"सेवनं स्वयोग्यानुसारेण, न तु अल्पं बहु वा प्रयोजकम्"** (त.दी.नि.प्र.२।३१६) जितनी कर सकते हो उतनी सेवा यदि तुम करोगे तो ये रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सीको तुम्हारेमें सवाल नहीं आयेगो. गुसांईजीने या ही लिये वहां स्पष्ट केह दी के **"जलादिसेवानिर्वाहः सेवकैः कार्यः तदपि नातिश्रमेण मत्स्वामिनः कोमलस्वभावात्"** (गुसां.पत्र) मेरो स्वामी बहोत कोमल स्वभावको हे. जल भले नौकरनसु भरवा लो, भरे भये जलसु सेवा तुम करो, पर व्यर्थमें अपनी सेवाको इतनो बड़ो विस्तार मत कर दो के जो इम्प्रॅक्टिकल् हो जाये और टॉर्चरस् हो जाये वैसी सेवा ठाकुरजीकुं पसंद नहीं हे. एग्ज़ेक्टली वा तरहकी सेवा भल्लाजी करते हते करके श्रीनाथजीने महाप्रभुजीकुं कही के **"तिहारे सेवक मोकुं खिजावत हे"**. सेवाकुं अपने सेल्फ्-टॉर्चरिंग्को मुखोटा नहीं बनानो चहिये. बहोत बखत क्या होवे हे के अपन् बाह्य जगत्कुं कोप्-अप् नहीं कर पावें तो अपनकुं सेल्फ्-टॉर्चरिंग्की रिप्रेसिव् टॅन्डेन्सी आ जाये हे, तब अपन् अपने आपकुं टॉर्चर् करवें लगें. जो करनो हे यहां (लोकमें) करो न यार, सेवामें काहेकुं करो हो! एक घर तो डाकिनी भी छोड़े. एसे सेवाकुं अपने सेल्फ-टॉर्चर्को हेतु मत बनाओ, सेवाकुं सहज रेहवे दो. जितनी सहज सेवा करोगे, तुम्हारे ईगोमें कभी भी रिप्रेसिव् डिस्टॉर्शन् आयेगो नहीं. ये बात महाप्रभुजीने कही के सहज करो **"सेवनं स्वयोग्यानुसारेण अल्पं वा बहु न प्रयोजकम्"** ये अपनो रिप्रेसिव् डिस्टॉर्शन्के अगेइन्स्ट् महाप्रभुजीके द्वारा लियो गयो एक प्रिकॉशन् हतो. अपने महाप्रभुजी सायकॉलॉजीके डिप्में कितने घुसें भयें हें. या बातसु अपनकुं समझ आवे के ये सारे रोग हें; वा बखत नहीं हतें, पर इन रोगन्के इलाज महाप्रभुजीने कैसे खोज रखें हें ये अपनकुं महाप्रभुजीके उपदेशन्मेंसु स्पष्ट दिखाई दे हे के या तरीकेके रोगनकुं ओवर-कम् कैसे करने! ये महाप्रभुजीकी वाणीकी गंभीरता हे.

''**विक्षेपाद् अथवा अशक्त्या प्रतिबन्धादपि क्वचित्, अत्याग्रहप्रवेशे वा परपीडादि संभवे**' (त.दी.नि.२।२४७) ''**तत्र पूजा (सेवा) त्यक्तव्या**'' (त.दी.नि.प्र.२।२४७) महाप्रभुजी केह रहें हें के तुमकुं अत्याग्रह प्रवेश हो जाय तो सेवा छोड़ो, वा एक्स्टेन्ट् तक महाप्रभुजी जावेकुं तैयार हें, सेवा छोड़ो पर अत्याग्रहसु सेवा मत करो. ये प्रिकॉशन् हतो. अपनो ईगो प्रिसिव् नहीं हो जाय या लिये अपनी सेवामें वो प्रिकॉशन् महाप्रभुजीने लियो हे. याकी खूबसूरती देखो.

अहंक्रिया मैं आपकुं समझा रह्यो हतो के ''**अहंकारं न कुर्वीत**'' कैसे-कैसे अहंकार हो सके ये वाकी सारी ''**एकोहं बहुस्यां प्रजायेय**''की वॅराइटी हे. एक 'अहं' कितनी 'बहुस्यां प्रजायेय' विकृतिमें फैल सके वो समझने लायक हे. महाप्रभुजीको प्रिकॉशन् क्या हे वो देखवे लायक हे.

(ऱॅशनलाइज़ेशन्को लक्षण)

अगलो अपनो हे 'ऱॅशनलाईज़ेशन्'. हर ईगोकी ऱॅशनलाईज़ेशन्को जो डिस्टॉर्शन् हे वो कैसे होवे हे, वा बातकुं समझो के अपने अहंकारके कारण या अपने ममकारके कारण कुछ व्यवहार अपनकुं करने ही पड़ते होंय. अपनो अहं ऐसो हे, अपनो मम ऐसो हे वो अपनकुं समझमें आ रही हे के बात ठीक नहीं हे पर अपनो विवेक अपने अहं-ममकुं जीत नहीं पा रह्यो हे, रिसेसिव् हो जा रह्यो हे और अपनो अहं-मम अपने विवेकपे डॉमिनेटिंग् जा बखत हो जाय, एक या तरहको डिस्टॉर्शन् ईगोमें आवे. मैं समझ रह्यो हूँ के बात सच नहीं हे पर जा तरीकेको मेरो अहं पनप्यो हे, या जा तरीकेको मेरो मम पनप्यो हे वाके अंतर्गत मोकुं वो काम करनो ही पड़े हे. वो करनो पड़े वा बखत ईगो क्या करे तुरंत के ''अच्छा! करनो ही पड़ रह्यो हे न बेटा तोकुं, मैं याके खोटे-सच्चे जस्टिफिकेशन् खोज निकालुं.'' अहं खोज निकाले, या कारणसु सच्चो

हे वा कारणसु सच्चो हे, ऐसे नहीं करें तो कैसे हो सके ऐसे ही तो हो सके.

(ऱॅशनलाइज़ेशन्को उदाहरण)

पुष्टिमार्गमें ऱॅशनलाइज़ेशन्को चक्कर कैसे भयो हे वो आपकुं बताउं. सब लोग या रहस्यसु अच्छी तरहसु अवगत हें के सेवा महाप्रभुजीके हिसाबसु घरमें करनी चहिये. सेवा अपने परिवारजननके सहयोगसु करनी चहिये. सेवा तनुवित्तजासु करनी चहिये. सेवाको एग्ज़िबिशन् नहीं होनो चहिये पर ऱॅशनलाइज़ेशन् कैसो करें ''वो बात तो सच हे, खोटी नहीं हे, उत्तमाधिकारीन्के लिये हे जघन्याधिकारी बिचारे कहाँ जायेंगे''. ये जस्टिफिकेशन् आयो कहाँसु! अरे तुमकुं खाली जघन्याधिकारीकी ही चिन्ता हे और कोईकी चिन्ता नहीं! एक जघन्याधिकारीके जघन्याधिकारकुं कोप्-अप् करवेके लिये सिद्धांतकुं इतनो विकृत करनो! ''जघन्याधिकारी कहाँ जायेंगे'' तो सिद्धांत क्या केह रह्यो हे वो देखनो के जघन्याधिकारीकुं क्या करनो वो देखनो. सिद्धांत थोड़े ही ये केह रह्यो हे के जघन्याधिकारीकुं सेवा करनी. सिद्धांत तो ये केह रह्यो हे के जघन्याधिकारी शरणागति करे, स्मरण करे. सेवाकी वाकुं जरूरत ही नहीं हे. वो बात छुपा लेंगे पाछी. ऱॅशनलाइज़ेशन् कैसे करेंगे के ''सब बात तो सच्ची हें, याही तरहको सिद्धांत महाप्रभुजीने कह्यो हे पर बिचारे जघन्याधिकारी कहाँ जायेंगे''. अभी ऑरकुट्पे भी यही बात कही के ''महाप्रभुजीकी दृष्टि कितनी विशाल हती के जघन्याधिकारीन्के लिये उनने हवेली चलाई.'' जघन्याधिकारीन्को तुमकुं इतनो ऑब्सेशन् क्यों भयो, तुम जघन्य हो या लिये. ''**मृगाः मृगैः संगम् अनुव्रजन्ति, गावोश्च गोभिः तुरगास्तुरंगैः, मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियो सुधीभिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम्**'' (सुभा.) घोड़ा घोड़ाके साथ फिरे, गधा गधाके साथ फिरे, जघन्य जघन्यके साथ फिरे यालिये तुम भी ऐसे केह रहे हो. तो वे कहे ''नहीं नहीं हम पुरुषोत्तम.'' अरे! यार तुम पुरुषोत्तम हो तो ये जघन्याधिकारीकी इतनी चिन्ता क्यों सता रही हे! ये ऱॅशनलाइज़ेशन्.

आयो न ख्यालमें. अपने डिस्टॉर्टेड् ईगोकुं या तरहसु रॅशनलाइज़् करनो.

(रॅशनलाइज़ेशन्को उपाय)

महाप्रभुजी या बारेमें स्पष्ट क्या कहें हें ये बात देखो, रॅशनलाइज़ेशन् करवेसु पहले महाप्रभुजी स्पष्ट आज्ञा कर रहें हें के डोन्ट् रॅशनलाइज़् इट् "**धर्माधर्माग्रदर्शनम्**", (वि.धै.आ.५) धर्म क्या हे, अधर्म क्या हे ये पहले देखो वाके बाद अपने बिहेवियर्को जस्टिफाय् करो. धर्म-अधर्मकुं देखे बिना अपने बिहेवियर्कुं जस्टिफाय् मत करो. महाप्रभुजीने विवेकधैर्याश्रयमें "**धर्माधर्माग्रदर्शनम्**"को उपदेश क्यों कियो के अपन् खोटे रॅशनलाइज़ेशन् न करें, अपनी पॅटी डिज़ायर्कुं जस्टिफाय् करवेके लिये अपन् खोटे रॅशनलाइज़ेशन् न करें ये महाप्रभुजीने "**धर्माधर्माग्रदर्शनम्**"के तहत यहां उपाय बतायो हे.

(५ प्रोजेक्शन्को लक्षण)

अगलो आवे हे 'प्रोजेक्शन्'. ये प्रोजेक्शन् गजबको डिस्टॉर्शन् हे. 'प्रोजेक्शन्' क्या होवे हे? प्रोजेक्शन्की सबसु बड़ी प्रॉब्लेम् ईगोके डिस्टॉर्शन्की या तरीकेकी होवे हे के जा बखत अपन् कन्विन्स्ड् हो जायें के जो मैं कर रह्यो हूँ वो मोकुं स्वीकार्य नहीं हे पर करनो तो पड़ ही रह्यो हे. (+अपन् क्या करें, अपनी गलती दूसरेपे थोप दे. हम नहीं चाह रहे थे पर उनकी इच्छाके कारण हम कर रहें हें.)

(प्रोजेक्शन्को उदाहरण)

वैष्णवें भी बहोत सारे यों सोचें के हवेली नहीं चलायें तो बालकन्को खाना-खर्चा कैसे चलेगो. अरे भई! क्या बात केह रहे हो, शर्म आ रही हे सुनके के खाना-खर्चा चलावेके लिये हवेली चलानी! एक वैष्णवने तो मोकुं यहां तक कही के "आटला बधा लालजीओ प्रकट थाय अने हवेलीओ न होय तो बिचारा क्यां जाय."

"अरे भाई! बूटपॉलिश् करे, कोई बीजी ट्रेनिंग् लई ले, कई बधा भूखे मरे छे जेनी हवेली नथी होती." वैष्णवन्कुं भी पाछी दया आ जाय गुसांईयन्पे के "जाय क्यां?" तो सबसु पहली बात तो ये के जब अपन् पाल नहीं सकतें होंय तो जनम नहीं देनो चहिये. अब पैदा कियो ये एक बड़ी भूल करी. अब पैदा कियो हे तो वाकुं बड़ो करवेके लिये, पालवेके लिये एक हवेली खड़ी करो.

नहीं तो बिचारो जाय क्यां लालजी. अब क्या प्रिंसिपल् चल गयो के जितने बालकके लालजी उतनी हवेली तो मिनिमम् होनी चहियें. फिर एक-एक कुं दो-दो होवें वो नफामें. लालजीके हिसाबसु हवेलीको प्रिंसिपल् खोजें तो वामें महाप्रभुजीको सेवाको भक्तिको प्रिंसिपल् कहां गयो? वो तो लालजीकी सेवाको प्रिंसिपल् भयो. कृष्णसेवाको इश्यु तो नहीं रेह गयो! सब्-ऑर्डिनेट् हो गयो. पर अपन् करें क्या हें वैष्णवकुं भी कन्विंस् कर दियो के "सात लालजी तो सात हवेली तो जोईए ज ने". "अरे पण एटला जणवा ज न्होता जोयता. कोणे कह्युं एटला बधा लालजी जणवानुं?" "जणी काढ्या तो पछी जाय क्यां भूखे ज मरे!" "अरे पण दुनियामां केटली बधी जॉब् ऑपर्च्युनिटिज छे भणो-गणो अने जॉब् करो, एना माटे संप्रदायने वगोववानो अधिकार कोणे आप्यो तमने. एक तो वधारे अनूनेसेसरी जणवा पछी हवेलीओ खोलवी."

ये कहांको सिद्धांत हे पर अपन् या तरीकेके वामें ट्रॅप् हो गयें हें. क्यों ट्रॅप् हो गयें हें? वाको मूल कारण हे के अपन्कुं खुदकुं स्वीकार्य नहीं हे पर अपन् फिर पाछो क्या करें हें के "वैष्णव सेवा कैसे सीखेगो? हम हवेली नहीं चलावें तो वैष्णव हमारे पास आयेगो नहीं, आयगो नहीं तो फिर सेवाकी पता कैसे चलेगी. हमारे कारणसु हवेली नहीं चला रहें हें, वैष्णवके प्रेशर्के कारण हवेली चला रहें हें". वा आरोपकुं खुदके माथेपे लेवेके बजाय दूसरेपे ढोल

(ढुर) देनो, याको नाम 'प्रोजेक्शन्' हे. रॅशनलाइज़ेशन् एक अलग बात हे. रॅशनलाइज़ेशन्में तुम खुद अपने दमखमपे अपने कामकुं रॅशनलाइज़् कर रहे हो, और प्रोजेक्शन्में तुम अपनी गलतीकुं दुसरेपे थोप रहे हो के हम तो सिद्धांत पालनो चाह रहें हें पर आजकी तारीखमें वैष्णव मानेंगे ही नहीं. ये वो बम्बईया फिल्मवालो सिद्धांत हे. फिल्मवालेंकुं पूछें तो कहें के पब्लिक्-ऑडियन्स्को टेस्ट् बिगड़ गयो हे याके लिये हमकुं ऐसी फिल्म् बनानी पड़ें हें. पब्लिक्को टेस्ट् बिगाड्यो कौनने, बंबईया फिल्मवालेंने. वो एक-दूसरेपे अन्योन्याश्रित चले हे.

जो गड़बड़ हो गई हे वो तो हो गई हे पर वाकुं सुधारवेके लिये भी कोई तो होनो चहिये के वो गड़बड़को ही प्रमोट् करते रेहनो! इश्यु यामें ये हे. गड़बड़ हो जाय आदमीसु पर मैंने वो कल गज़ल सुनायी के *"ये हकीकत हे जहां मैं यहां ठोकर खाकर, मैं गिरा हूँ संभल जाऊंगा चलने दो मुझे."* मार्गपे चलवेको तो दृष्टिकोण रखो. गिरे हे वो कोई बुरी बात नहीं हे, गिर जाय आदमी. चलवेवालो ही तो गिरेगो, सोयो आदमी तो नहीं गिरेगो. पर फिर अपनो एप्रोच् क्या होनो चहिये के वा मार्ग पर अपनकुं चलनो हे या लिये, नहीं के अपन् गिर जायें. टांग फसा-फसाके सबकुं गिरावें के अब हम गिर गये सो तुम भी गिरो. ये एप्रोच् अस्वस्थ अहंताको हे. अपनो अहं डिस्टॉर्टेड् हो गयो करके दूसरेके भी अहंकुं डिस्टॉर्ट करो. जानकरके स्वस्थ मत रेहवे दो ये अपने रोगकुं दूसरेकुं चेप लगावेको तरीका हे.

(प्रोजेक्शन्को उपाय)

पर ये प्रोजेक्शन्के एन्टिडोज़् तरीके महाप्रभुजीने विवेकधैर्याश्रयमें क्या कह्यो हे **"दुःखहानौ तथा पापे भये कामद्यपूरणे, भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चातिक्रमे कृते. अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः"** (वि.धै.आ.१०।११) यदि तुम्हारेसु कोई ऐसी मिस्टेक्स्/गलतियां

हो रहीं हें तो वे गलतीन्में तुम भगवान्की शरण लो, नहीं के दूसरेकुं या तरहसु डिस्टॉर्ट करके बताओ. यदि एक बखत अपन् वो महाप्रभुजीको प्रिस्क्राइब्ड् उपाय एडॉप्ट् कर दें के गलती भयी हे, कौनसी *"ये हकीकत हे जहां मैं यहां ठोकर खाकर, मैं गिरा हूँ"* पर सिद्धांत तो कबूल करें के नहीं के *"संभल जाऊंगा चलने दो मुझे"* मार्गपे तो चलवे दो. वो नहीं करके क्या उधम करनो हे? प्रोजेक्शन् करनो हे के "हम क्या करें हम तो चाहें हें पर लोग नहीं चाहें हें". यार, क्यों खोटे प्रोजेक्शन् करो हो! या तरीकेके डिस्टॉर्शन्सु तुम कौनकुं बेवकूफ बना रहे हो! कब तक बेवकूफ बना सकोगे! एक दिन पोल खुल जायगी. पोल खुल जायगी वा दिन सत्यानाश होयगो. ये डिस्टॉर्शन्कुं अपनकुं ठीकसु सुधारनो चहिये और वो सुधारवेको उपाय क्या हे? महाप्रभुजीने स्पष्ट बतायो हे के दुनियामें गलती कौनसु नहीं होवे. क्राइस्ट्ने बताई हे के जाने गलती नहीं करी होय वो पथ्थर मारे. फॅअर् और फ्रॅन्क् रहो न! गलती हे तो हे, दुनियामें सबने गलती करी.

(डिस्टॉर्टेड् प्रोजेक्शन्को दुष्परिणाम)

गलती हो गई वाकुं ढाक-पिछोड़ करवेके लिये इतनो बड़ो प्रोजेक्शन् करनो के वैष्णव सीखेगो कहांसु और वैष्णवकी डिमांड् ही ये हे और नहीं होयगो तो संप्रदायको क्या होयगो. अरे क्या संप्रदाय! जब तुम संप्रदायको सिद्धांत तोड़के संप्रदाय चला रहे हो फिर संप्रदाय चल कहां रह्यो हे. संप्रदायको सिद्धांत तोड़के; आर्ममिं सबकुं साड़ी पहरके नाचतो कर दो और फिर अपन् कहें के या बखत युद्ध तो हो नहीं रह्यो हे और युद्ध करवेसु व्यर्थमें हिंसा बढ़ेगी, विनाश बढ़ेगो करके सब आर्मिके सोल्जरनकुं साड़ी पहरा-पहराके नचवानो शुरु करो और फिर कहो के ये आर्मीवालेनकुं साड़ी पहनाके नचवायेंगे नहीं तो ये भूखे मर जायेंगे. भई! आर्ममिं साड़ी पहरके सोल्जरकुं नचवाओगे तो जा दिन युद्ध भयो वा दिन क्या होयगो वो तो

सोचो! ये नहीं सोचें. ये कोई प्रोजेक्शन्को सिद्धांत हे? बेवकूफी हे. अपने ईगोको ये बहोत भयंकर डिस्टॉर्शन् हो गयो के अपन् या तरीकेको प्रोजेक्शन् कर रहें हें. या प्रोजेक्शन्सु अपनुकुं बाज आनो चहिये.

अभी जैसे कानपुरके पुलिस् ऑफिसरकुं राधाजीकुं आवेश आ गयो और टीकी चूड़ी पहर ली और राधाजी बनके नाचवे लग गयो, ठीक हे आदमीमें कोई बखत आ जाय या तरहसु डिस्टॉर्शन्. आ जाय तो कोई बुरी बात नहीं हे पर वाकुं सब पुलिस्वालेनूके लिये आदर्श बनानो के सब या तरहसु राधाजी बन जाय. भई! चक्कर क्या हे ये, पुलिस् सब राधाजीयें बन जायेंगी तो आखिर पुलिस्को क्या होयगो ये तो सोचो! सब पुलिसें राधाजी बनकें नाचती रहेंगी के "मारुं मन मोह्यु रे गिरधरलालने" पर आर्मीमें या पुलिस्में ये सब लटके-मटके कुछ चलेगो नहीं, एक गोली मारेंगे सब खतम हो जायेंगे. तुम्हारो माद्दा नहीं हे, ताकत नहीं हे और "मारुं मन मोह्युं" करके साड़ीयें पहर-पहरके नाचोंगे, ये माजना क्या हें तुम्हारे ये तो सोचो. साड़ी पहरके नाचवेकी ऐसी स्त्रैण वृत्ति प्रकट कर रहे हो एक बखत सोचो शांतिसु. ये रोल् नहीं हे तुम्हारो, जिनको रोल् हे उनके लिये ये बात अच्छी हो सके. ये अपने ईगोको डिस्टॉर्शन् हे. आज नहीं तो कल समझनो पड़ेगो, जरूरत नहीं हे के आज ही याको खुलासा हो जाय. पर यदि अपनुकुं पुष्टिमार्ग तरीके जीनो हे तो इन डिस्टॉर्शननूकुं फिरसु रॅक्टिफाय् करने पड़ेंगे, नहीं तो अपन् पुष्टिमार्गीयिकी तरह जी नहीं सकेंगे.

आपकुं पुष्टिमार्गके ही संदर्भमें एक बात बताउं. क्योंके अपन् डिस्टॉर्शन्को एप्लाइड् विचार कर रहें हें. अभी मोकुं चार-छः दिन पहले पत्र मिल्यो हे. निरंतर मैं वल्लभपंथकी बात करतो रहूँ तो वल्लभपंथी मेरेपे नाराज हो गयें हें. उन्होंने लंबो-चौड़ो पत्र मोकुं

भेज्यो हे. पत्रमें बड़ी मजेदार बात कही हे के "गुसांईजीने महाप्रभुजीको सिद्धांत छोड़के कृष्णभक्तिको सिद्धांत प्रचारित कियो हे. और वा गुसांईजीकी तुम लोग सब औलाद हो और तुम गुसांईजीके भगत हो महाप्रभुजीके भगत नहीं हो. महाप्रभुजीके सारे सिद्धांतकुं गुसांईजीने विकृत किये हे". प्रूफ् क्या? बोले "लायबल् केस्! तुम्हारी फजीहत भयी के नहीं. गुसांईजी केह गये हते के "**अस्मत्कुलं निष्कलंकम्**" (ललि.त्रिभं.स्तो.१) तो कलंक क्यों लग्यो याके लिये तुम गलत हो. तुम क्यों गलत हो क्योंके महाप्रभुजी तो खुद साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तम हें और कृष्ण तो उनके एक अवतार हें और अवतारीको भजन करनो चहिये अवतारको भजन नहीं करनो चहिये और तुमकुं गुसांईजीने बहका दियो हे के तुम अवतारको भजन करो". चलो वो भी बात ठीक. फिर क्या केह रहें हें के "यदि तुम गुसांईबालक लायक होते तो तुमकुं कृष्णसेवाकी हवेलीकुं धंधाके लिये चलावेकी जरूरत क्यो पड़ती!" मेरी बात मेरे मुंहमें डाल दी. "तुमकुं धंधाके लिये हवेली चलावेकी जरूरत पड़ रही हे, ये प्रूफ हे के तुम महाप्रभुजीके भगत नहीं हो. और हम क्यों महाप्रभुजीके भगत हें क्योंके कृष्णसेवा करे ही नहीं हें महाप्रभुजीकी सेवा करें हें. वहां तो सर्व सामग्री रसरूपा हे. भोग धरवेकी, झारी भरवेकी जरूरत नहीं हे, खाली सुबोधिनीको पाठ करवेकी जरूरत हे. हम चतुर्मासमें दिन-रात सुबोधिनी पाठ करें हें या लिये तुम सब भ्रष्ट हो".

ये वल्लभपंथियें महाप्रभुजीके अलावा कोईके भी भक्त हें. ये लोग महाप्रभुजीके जानी दुश्मन हें. गुसांईजीने कबूल कियो के "**वस्तुतः कृष्णएव**" (वल्लभलष्टकम्-८) महाप्रभुजी वस्तुतः कृष्ण हें और ये कृष्ण (ठाकुरजी) हें वो वस्तुतः कृष्ण नहीं हें आर्टिफिशियल् कृष्ण हें. चलो ये बात भी मानें. मैंने उनकुं लेटरमें लिख्यो के "**वस्तुतः कृष्णएव**" जा स्तोत्रमें लिख्यो भयो हे वामें ये लिख्यो हे के "**त्वदुदितवचनाद् अन्यथा रूपयन्ति, भ्रान्ता ये ते निसर्गत्रिदशरिपुतया केवलान्धन्तमोगाः**"

(वल्लभाष्टकम्-३) यदि महाप्रभुजी **"वस्तुतः कृष्णएव"** हें या वचनकुं तुम प्रमाण मानते हो के वामें गुसांईजीको ये वचन प्रमाण हे तो गुसांईजी साथमें ये भी केह रहें हें के जो कृष्णसेवा महाप्रभुजीके उपदेशके प्रकारसु नहीं करे वो अन्धन्तम् नरकमें जायगो. तुम अन्धन्तम् नरकमें जाओगे के नहीं, याको खुलासा करो. और मैंने कही चलो या बातकुं भी अपन् थोड़ी देरके लिये पोस्ट्पोन् कर दें क्योंके गुसांईजीकी वाणी प्रमाण नहीं मानें हें. वल्लभवाणीकुं ही प्रमाण मानें हें. मैंने कही महाप्रभुजी खुद या बातकुं केह रहें हें के **"दत्वा आज्ञां च कृपावलोकनपटुः यस्माद् अतो अहं मुदा"** (सुबो.मं.५) भगवान्ने मोकुं आज्ञा दी यालिये मैं भागवतपे सुबोधिनी लिखवेके लिये आयो हूँ. तो वो आज्ञा देवेवालो बड़ो के आज्ञा पालवेवालो बड़ो, याको खुलासा करो. जा कृष्णकी आज्ञाको उल्लंघन करवेके कारण महाप्रभुजीकुं 'अंतःकरणप्रबोध' लिखनो पड़्यो के **"अंतःकरण मद्वाक्यं सावधानतया शृणु. कृष्णात् परं नास्ति दैवं वस्तुतो दोषवर्जितम्. चाण्डाली चेद् राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता"** (अन्त.प्र.१-२) महाप्रभुजी अपनो कितनो डिफेमेशन् कर रहें हें!! तकलीफ क्या हे के कोई कारणसु कृष्णसेवा माफक नहीं आ रही हे. महाप्रभुजीके सब ग्रंथनमें कृष्णसेवाको उपदेश हे, वो पल नहीं रह्यो हे, पालनो हे नहीं, प्रोजेक्शन् गोस्वामीपे करनो हे के तुमने हवेली क्यों चलाई, तुमने गुसांईजीकुं फॉलो क्यों कियो, तुमने महाप्रभुजीकुं फॉलो क्यों नहीं कियो. पर महाप्रभुजीने कहां ऐसी कही हे!

यदि महाप्रभुजी **"इति श्रीकृष्णदासस्य वल्लभस्य हितं वचः"** (अन्त.प्र.१०) केह रहें हें तो वो कृष्ण कौन हे जाको वल्लभ 'दास' हे, ये तो खुलासा करो! वो कृष्ण कौन हे? तुम तो केह रहे हो के ये महाप्रभुजी कृष्ण हें और वो कृष्ण अवतार हे. तो एक बात समझो के वा कृष्णने महाप्रभुजीके चौरासी बैठकनपे सुबोधिनी टीका लिखवेके लिये नहीं अवतार लियो हे, महाप्रभुजीने

कृष्णलीलाकी व्याख्या करवेके लिये, सुबोधिनी लिखवेके लिये अवतार लियो हे. तो जाकी लीला, जाकुं गानी पड़ती होय वो कृष्ण बड़ो के ये कृष्ण बड़ो! या तरीकेकी बेवकूफीकी बातें करें. दूःख कहीं और रह्यो हे, "दूःखे पेट और कूटे माथा" वा तरीकेको ये बेवकूफनको प्रिंसिपल् हे. ये सारो प्रोजेक्शन्को सिद्धांत हे. खुदकी गलतीकुं गुसांईजीपे प्रोजेक्ट् करनो, हम गुसांईनपे प्रोजेक्ट् करनो, कृष्णपे प्रोजेक्ट् करनो. ये डिस्टोर्टेड् ईगोको अपने पुष्टिमार्गमें बिलकुल स्पष्ट उदाहरण हे, ये अपन् समझ सकें हें. कैसे तरहसु गड़बड़ फैले हे.

(६ रिएक्शन् फॉर्मेशन्को लक्षण)

अपन्ने प्रोजेक्शन् देख्यो. अब रिएक्शन् फॉर्मेशन्. डिस्टोर्टेड् ईगोको रिएक्शन् फार्मेशन् क्या हे. कहीं न कहीं, कुछ न कुछ अपनकुं पुण्य और पाप को बोध तो होवे ही हे. और दुर्योधनकी तरह **"जानामि धर्मं न च मे प्रवृतिः, जानामि अधर्मं न च मे निवृतिः"** ये प्रॉब्लेम् सिर्फ दुर्योधनकुं हती ऐसी बात नहीं हे, अपन् सबके भीतर होयगी के धर्म क्या हे? वाको सच्चो ज्ञान हे, पर ज्ञान होवेके बावजूद वा धर्मकुं अपन् सच्चाईसु पाल नहीं सकें. अधर्म क्या हे वाको भी अपनकुं सच्चो ज्ञान हे पर वा अधर्मकुं अपन् फुल्फ्लेज् छोड़ नहीं पा रहें हें ये अपनी डिफिकल्टी हे. वो डिफिकल्टी तो समझमें आ सके के अपनी डिफिकल्टी क्यों हे क्योंके अपनो ईगो ही प्यॉर् ईगो नहीं हे कॉम्प्लेक्स् ईगो हे तो वामें बहोत सारी कॉम्प्लॅक्सिटी मिली भयी हें. ये तो बात समझमें आ सके हे.

पर रिएक्शन् फॉर्मेशन्में क्या होवे हे के जा बखत अपनकुं लगे के मेरो ईगो गिल्टी फील् कर रह्यो हे, अपने ईगोमें गिल्टी फीलिंग् जा बखत बढ़े हे, वा बखत अपन् क्या करें के वा गिल्टी फीलिंगकुं कोई तरहसु दबावेके लिये अनेसेसरी रिएक्ट् करें, वा फॅशन्में जाकुं अपन् कर नहीं पा रहें हें, और आर्टिफिशियली वामें इन्वॉल्व्

हो रहें हें. वाकुं 'रिएक्शन् फॉर्मेशन्' केहवें हें. जो तुम काम कर रहे हो वो सच्चो हे, पर वो एक्शन्की तरह नहीं कर रहे हो पर तुम्हारे भीतर जो गिल्ट् फीलिंग् हे वापे तुम रिएक्ट् कर रहे हो खाली. वो यालिये नहीं कर रहे हो के सचमुचमें तुमकुं वो काम करनो हे, पर तुमकुं कहीं भीतरसु तुम्हारो ईगो काट रह्यो हे. तो वा काटते ईगोकुं काटतो बंद करवेके लिये अपन् रिएक्शन् फॉर्मेशन् करें, और डेढ़ो काम करें.

(रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उदाहरण)

जैसे देखो, सबके भीतर रिएक्शन् फॉर्मेशन्को माइल्ड् अटॅक् आतो ही होवे हे. मैं गामकी चर्चा क्यों करुं, मैं अपनी चर्चा करुं. भूलतो नहीं होउं तो मैं अठार-उन्नीस बरसको होउंगो तबकी बात हे. बचपनसु सुन रख्यो हतो के वेद-गीता भगवान्की वाणी हें. हमारो फुफेरो भाई स्कूल जातो हतो. हम लोगन्की तो स्कूलिंग् भयी नहीं. मैं और वो ऐसे एकदम क्लोज् हतें. दिन-रात साथ बैठनो, साथ खानो, साथ उठनो. एक दिन मैंने वाकी हिस्ट्रीकी किताब पढ़ी. वामें लिख्यो भयो हतो के "ये वेद भगवद्वाणी नहीं हती, वो तो आर्यलोग वहांसु आये जो चरवाहा हते, गड़रिया हते, उनके लिखे भये गीत हें." मेरो भीतरसु ईगो डामा-डोल हो गयो. मैंने मेरे फुफेरे भाई गोपालसु पूछी के "यामें ये क्या बात हे यार!" वाने कही "तोकुं हिस्ट्री नहीं पता हे, हिस्ट्री ऐसी ही हे!" मैं भी कन्विंस्ड् हो गयो के हिस्ट्री ऐसी ही हे तो अपने यहां बहोत लोचा हे.

अब दिन-रात मोकुं विचार आवें के जो वेद ही सच्चो नहीं और गड़रियाके गीत हे तो भगवान् कहांसु सच्चो होयगो. अब मोकुं डर लग्यो के भगवान् सच्चो नहीं तो अपन् जो सेवा कर रहें

हें वो क्या कर रहें हें क्यों पाठ कर रहें हें, कौनकी संध्या कर रहें हें. भीतरमें भारी ट्रबल् हो गई. कोईने मोसु कही के ऐसी ट्रबल् हो जाये तो सर्वोत्तमको पाठ करो. मैंने कही चलो ट्राय् करो. अब जा दिन विचारके अटॅक् आवें तुरंत सर्वोत्तमको पाठ करतो **"प्राकृतधर्मानाश्रयम् अप्राकृत-निखिलधर्मरूपमिति"** (सर्वो.१) फिर देखतो के विचार आ रहें हें के नहीं. थोड़ी देर नहीं आतें क्योंके पाठ करतो उतनी देर नहीं आतें, पाठ बंद कियो फिर पाछे विचार आतें. फिर मोकुं लगतो के आ गये विचार फिर पाठ करो "आनंदः परमानंदः"! वो सर्वोत्तमस्तोत्र या लिये नहीं के महाप्रभुजी प्रिय हतें. वो जो विचार पढ़ लिये हते स्कूलकी किताबमें के वेद गडरियान्के गीत हे, निरंतर बरसन् मोकुं तकलीफ देतें रहें. वो तो फिर फिलॉसॉफी जब मैंने व्यवस्थित पढ़ी तब मोकुं ये सारे संदेह दूर भये के सारी बेकारकी बातें हें, ये लोग अपनकुं बेवकूफ बनावें हें. पर एक बात समझो के या तरहसु सबकुं रिएक्शन् फॉर्मेशन् हो जाय तो? मैंने उन दिनन्में एक-एक दिनमें एकसौ-आठ सर्वोत्तमस्तोत्र पाठ किये. थोड़ी देर बैठुं शान्तिसु फिर पाछे विचार आ जायें के ये सब बकवास हे, बंडल हे, फिर "आनंदः परमानंदः". या तरहसु रिएक्शन् फार्मेशन्में सर्वोत्तमस्तोत्र; बिचारे महाप्रभुजी भी घबराते होयेंगे के व्यर्थमें काहेकुं मेरो लोही पीये हे यार! नास्तिक होनो होय तो हो, भगवान्ने तो त्रिविध सृष्टि प्रकट कर ही रखी हे— पुष्टि-प्रवाह-मर्यादा वामें तु और प्रवाही हो जाये तो क्या नुकसान होनेवालो हे. कोई नुकसान तो हे नहीं. व्यर्थमें या लिये महाप्रभुजीको माथा चाटनो के "आनंदः परमानंदः" वामें आनंद ही नहीं हतो, न परमानंद हतो और न श्रीकृष्णको आस्य हतो केवल एक भीतरको फिअर् काम करतो हतो "आनंद परमानंद श्रीकृष्णास्य" और फिर कोई देख नहीं ले वाके लिये, कोई देखे नहीं ऐसी जगह जाके बैठके पाठ करतो हतो. शर्म और आती के अपन् इतनो पाठ करें, कोई क्या पूछेगो चक्कर क्या हे. अपरसकोठामें जाके बैठके सर्वोत्तमको पाठ करतो.

(रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उपाय)

ये 'रिएक्शन् फॉर्मेशन्'. बादमें वाकी व्यर्थता मोकुं समझमें आयी. ध्यानसु समझो, सर्वोत्तमकुं व्यर्थ नहीं केह रह्यो हूँ माइन्ड् इट्, 'सर्वोत्तम' तो अपनो सर्वोत्तम स्तोत्र हे पर या रिएक्शन् फॉर्मेशन्में सर्वोत्तम करनो वा सर्वोत्तमको मिस्-युज हे. या रिएक्शन् फॉर्मेशन्में हम सर्वोत्तम करें के सेवा करें, मंगलासु लेके शयन तक कोल्हूके बैलकी तरह लगे भयें हें क्योंके कहीं नास्तिक खयाल न आ जाय अपनुकुं. अरे भई! नास्तिक विचार आ गयो तो आ जावे दे न यार, दस्त आ गई तो आ जायें. दो दिन संडासमें बैठके पेट साफ हो जाय फिर सेवामें नहाओ. वाके लिये इतनो सब लफड़ा क्यों! पर आदमी क्या हे तुरंत या तरहसु अपनी सेफ्टीके लिये रिएक्शन्-फॉर्मेशन् कर ले हे.

श्रीगोकुलनाथजीने याके लिये बहोत अच्छी बात कही. जब काश्मीरसु पधारके आ रहे हते और उनके सेवकने कही के "नींद आ रही हे कुछ भगवत्चर्चा करो". उनने कही "क्यों भगवत्चर्चा करनी, अपन् लौकिकचर्चा करेंगे, नींद उड़ जायगी तब भगवत्चर्चा करेंगे. नींद उड़ावेके लिये भगवत्चर्चा नहीं करेंगे." ये देखो स्वस्थतासु भगवत्चर्चा भगवद्नाम लेवेको अपनो मॅसेज् हतो. रिएक्शन्-फॉर्मेशन्की तरह भगवत्चर्चा नहीं करनी. या प्रॉब्लेमकुं टॅकल् करवेकी ये अपनी इन्साइट् हती के नींद उड़ावेके लिये भगवत्चर्चा करनी, गोकुलनीथजीने ना पाड़ दी और कही "लौकिकचर्चा करेंगे". नींद ही तो उड़ानी हे न आनंदसु करो लौकिकचर्चा; कौनकी पत्नी कौनके साथ भग गई, वाने कहांसु पाछी ढूंढी. सब कर लो लौकिक चर्चा नींद उड़ जायगी. इतनो बोलें और नींद उड़ जाय फिर आनंदसु भगवत्चर्चा करो पर नींद उड़ावेके लिये भगवत्चर्चा करनी ये रिएक्शन्-फॉर्मेशन् हे. अपनो ईगो डिस्टॉर्ट् नहीं होवे या लिये गोकुलनाथजीने वा बखत ये कॅअर् ली हे. हर बातकी अपन्ने कितनी कॅअर् ली हे. ये

साइकॅट्रिस्ट् क्या करेंगे कुछ नहीं करेंगे.

प्रश्न : रिप्रेशन् एटले शुं?

उत्तर : जे वस्तु आपणने त्रासप्रद होय, तेने आपणे आपणां कर्तव्य तरीके एक्सेप्ट् करी लेतां होइए छिए. खरेखर आपणने त्रास आपी रही छे. माइन्ड् इट्, सर्वोत्तम मने त्रास नो'तो आपी रह्यो. त्रासथी मारो त्राण करी रह्यो हतो पण में रिएक्शन् फॉर्मेशन् तरीके तेनो उपयोग कर्यो. रिप्रेशन्मां जे वस्तु तमने तकलीफ आपे छे ए वस्तु तमे करवा लागी जाओ छो. अने रिएक्शन्-फॉर्मेशन्मां जे वस्तु तमने तकलीफ आपी रही छे एनाथी बचवा माटे एनो एन्टिडोज़ तमे रिएक्शनरी-वेमां करो छो, एक्शन्ना लेवल् ऊपर नहीं.

(रिएक्शन् फॉर्मेशन्को उदाहरण)

जैसे सर्वोत्तमस्तोत्रको पाठ मैं एक्शन्के लेवल् पर करूं तो वो रिएक्शन्-फॉर्मेशन् नहीं केहवावे. महाप्रभुजीके प्रति स्नेहके कारण, श्रद्धाके कारण, भाव-भक्तिके कारण मैं सर्वोत्तमको पाठ करूं तो वो १०८ नहीं १००८ करूं वो भी ठीक हे. पर जब मैं रिएक्शन्-फॉर्मेशन्के कारण के वो एक पेसेज् हिस्ट्रीको पढ़ लीयो के ये सब गडरियान्के गीत हतें और फिर मनमें भय लग रह्यो हे और फिर पाठ बढ़ाते जा रहे हे, वामें क्या होवे हे; मोकुं याद नहीं हे कोई तो एक फिल्म आयी हती यामें पहले एक कॉमेडियन् होतो थो गोप एसो मोटो-मोटो हतो. फिल्ममें वा गोपकुं कोई लड़कीसु शादी करनी हती. कोईने बता दियो के "श्मशानमें बैठके और ये मंत्र-जप करेगा तो तेरी शादी हो जायगी और डरना मत बिलकुल." एक तो श्मशानमें बैठो और फिर डरनो नहीं, कैसे पॉसिबल् हो सके! फिर जाके श्मशानमें बैठ गयो, जप कर रह्यो हे. जप करते देखतो रहे के भूत तो नहीं आ रह्यो हे प्रेत तो नहीं आ रह्यो हे. और वाको बाप वाकुं लेवे आयो. वाकुं कही "तू भूत हे!" वो बोल्यो "तेरा

बाप हूँ'', बोले ''नहीं तू भूत हे!'' रिएक्शन्-फॉर्मेशन्में या तरीकेकी प्रॉब्लेम् होवे. ये सब रिएक्शन्-फॉर्मेशन् के उदाहरण हें.

अपन् खुद भीतरसु डरपोक हें वा डरकुं अपन् या तरहसु रिएक्शन्-फार्मेशन्सु आउट्-लेट् देनो चाहें. अक्सर अपन् सबने देख्यो होयगो ठंडीमें जब व्रजमें जावें और ठंड लगती होवे तब दांत कटकटाते होवे तो दांत नहीं कटकटायें वाके लिये **''नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा मुरारी-पद-पंकज..''** नहाते ही अपन् पाठ शुरु कर दें क्योंके दांत कटकटा रहें हें वा बखत कोई तरहसु अपनकुं गर्मी लानी होवे. लानी कैसे गर्मी? नहायो नहीं, ठंडो पानी पड़यो नहीं और ''नमामि यमुनामहं सकलसिद्धि...'' दांत नहीं कटकटावें वाके लिये अपन् ''नमामि यमुनामहं'' करतें होवें! अरे भई! पौंछ लो शरीर, बैठ जाओ, ठंड लगती होवे तो गद्दल पहन लो, शाल ओढ़ लो वाके बाद ''नमामि यमुनामहं..'' करो. नहाते ही ठंडो पानी पड़यो और तुरंत पाठ शुरु होवे ''श्रीयमुनाजी श्रीमहाप्रभुजी यमुने-गंगे हूँहुंहुं...'' वो मूलमें ठंड लग रही हे वाको रिएक्शन्-फॉर्मेशन् हे. सबके साथ यह प्रॉब्लेम् दिखेगी. ठंडो पानी पड़यो नहीं और तुरंत रिएक्शन्-फार्मेशन् तरीके भगवान् याद आवे. एक्च्युअली वो भगवानकुं नहीं याद कर रह्यो हे पर ठंडो पानी सहन नहीं हो रह्यो हे. ठंडो पानी सहन नहीं होतो होय तो मत नहाओ. नहानो पाछो ठंडे पानीसु और वामें रिएक्शन्-फॉर्मेशन्में भगवन्नाम लेनो ये अनहेल्धी टॅन्डेन्सी हे. ठंडो पानी पड़ते ही कछु त्रास तो होवे ही हे पर वाको रिएक्शन्-फॉर्मेशन् ऐसो नहीं करनो चहिये. मूल रहस्य ये हे वाको. तो मैं समझुं के रिप्रेशन्सु अलग रिएक्शन्-फॉर्मेशन्को भेद समझमें आयो होयगो.

(डिस्प्लेसमॅन्ट्को लक्षण)

वाके बाद हे 'डिस्प्लेस्मेन्ट्'. 'डिस्प्लेसमेंट्'में क्या होवे हे? जा चीजसु अपनकुं बहोत नफरत होवे और वा चीजको अपन् कुछ

कर नहीं सकें तो अपन् वाके सिम्बॉल् ढूढें और वाके सिम्बॉल्सु नफरत करनो शुरु करें. मानें यहांसु नफरतकुं तुमने वहां ट्रांस्फर् करी. अब तुम वामें अपनी सेफ्टी समझ रहे हो क्योंके यहांकी नफरत प्रकट करवेकी तुम्हारी शक्ति नहीं हे और जो तुमने सिम्बॉल् गढ़्यो हे वो इनोसेंट् हे मानें वो रिएक्ट् कर नहीं रह्यो हे तो तुम वहां सारी नफरत प्रकट कर रहे हो.

(डिस्प्लेसमॅन्ट्को उदाहरण)

अपने पुष्टिमार्गको एक कॉमन् डिस्प्लेसमेंट्को उदाहरण बताउं. ये समझवे लायक बात हे. जहां भी शास्त्रमें अपन् देखें वहां ये बात दिखे हे के जैसे प्रणामके कितने भेद हें. 'प्रणाम' मानें नमन. 'नमन'को अर्थ क्या? माथाकुं दोनों हाथ जोड़के नीचे झुकाओ. अपने यहां ये सबसु पहले दर्जेको नमन हे. 'नमन' मानें झुकानो. क्या झुकानो? माथाकुं झुकानो. कहां तक? दोनों हाथ जब जोड़ें तो वाके ऊपरके छेड़ाकुं छुअे. अपने यहांको ये सबसु पहलो नमन हे. वाके बाद आवे हे पचांग नमन. वाके बाद साष्टांग नमन. ये नमनकी सब वॅरायटी हतीं. इनके भाव सब अलग-अलग हें के कौनसी परिस्थितिमें अपन् कौनसो नमन करें. कौनसी स्थितिमें अपन् दंडवत् प्रणाम करें. जैसे खड़ो भयो डंडा गिर जाय वैसे गिरके प्रणाम करनो वाकुं 'दंडवत् प्रणाम' कह्यो जाय हे. ये अपनी बॉडी-लॅग्वेज् हे. सायकॉलॉजीमें याकुं 'बॉडी-लॅग्वेज्' कह्यो जाय हे. मानें बोले बिना अपनी बॉडीसु अपन् अपने भाव प्रकट करें. वाको कॉम्युनिकेशन् भी बॉडी-लॅग्वेज्सु ही करनो पड़े हे. जैसे दांत पीसनो गुस्सा प्रकट करवेकी बॉडी-लॅग्वेज् हे. वा तरहकी ये अपनी एक जातकी बॉडी-लॅग्वेज् हे. कोईके प्रति अपनो आदरभाव, महत्ताको भाव, अपनो दैन्यभाव प्रकट करवेकी अपनी बॉडी-लॅग्वेज् हे. यामें कोई बुरी बात नहीं हे. जब भाव हे तो प्रकट करनो चहिये.

प्रॉब्लेम् कब आ गयी; देखो ध्यानसु समझो के ये बॉडी-लॅग्वेज्

मुसलमान लोग नमाज़ पढ़वेमें वापरें और मुसलमाननसु अपनो झगड़ा हे. याके लिये एक जांघ ऊंची रखनी. अरे एक जांघ ऊंची रखवेसु क्या होयगो? ये पंचाग दंडवत् तो भयी नहीं, चतुरंग दंडवत् हो गयी. या चतुरंग दंडवत्को विधान कहां हे? तो कहें के पचांग दंडवत् करवेसु वो मुसलमानी अंदाज हो जाय. अब यदि मुसलमान 'श्रीकृष्णः शरणं मम' बोलवे लग जायगो तो अपन् 'श्रीकृष्णः शरणं मम' छोड़ देंगे? वा द्वेषकुं तुम मुसलमान तक ही सीमित रखो. एक जांघ ऊंची करवेसु फरक क्या पड़ जायगो? जो तुम्हारी बॉडी-लॅग्वेज्को जो स्टॅन्डर्ड पॅटर्न हतो वो तो तुमने बिगाड़ दियो न! क्यों बिगाड़्यो? क्योंके मुसलमान नमाज़ ऐसे ही पढ़े हे यालिये वा तरहसु दंडवत् नहीं करनी. अरे! वो कर रह्यो हे तो वाकुं करवे दो न, तुम क्यों वाकी चिंता कर रहे हो? ये तकलीफ सबकुं हे, बड़े-बड़े प.भ.कुं भी ये ही तकलीफ हे. यामें सबसु बड़ो फायदा क्या होवे? देखो, आदमी बड़ो चतुर हे क्योंके दोनों घुटन झुकाके उठवेमें बहोत तकलीफ होवे. एक घुटन उठवेकी मुद्रामें होय तो आसानीसु उठ्यो जाय. जाकुं मेरे जैसी तकलीफ हे वो तो तुरंत राजी हो जायगो के हां हां ये ही तरीका ठीक हे. फिर तो या तरीकेको संप्रदाय ही खड़ो हो जायगो के हमारे बाप-दादा सभी या ही तरह दंडवत् करतें हतें तो हम भी या तरहसु ही करेंगे. अरे भई! शास्त्र केह रह्यो हे के पंचांग दंडवत् करो तो फिर क्यों एक घुटनो उठाके कर रहे हो? ये क्या हे?

ये अपने अहम्को डिस्टोर्शन् हे. अपनो अहम् अपन् स्वस्थ नहीं रख पायें हें, ये या बातको प्रमाण हे. अपन् अपने अहम्को डिस्प्लेसमेंट् कर रहें हें, मुसलमानसु नफरतकुं अपनी दंडवत्पे काढ़ रहें हें. यासु फायदा क्या? मैं अक्सर एक बात बताउं के हमारे यहां एक मुखियाजी हते. उनकी पत्नी उनकुं रोज पीटती हती. अब बेचारो पति मार तो खा ले, क्या करे. तो एक दिन उनकी पत्नी

कहीं बाहर गयी हती तो उनने बैंत लेके घरके तकियाकुं, भींतकुं मारनो शुरु कर्यो के "जा साली पीहर, मोकुं नहीं रहनो तेरे साथ." ऐसो शोर सुनके पास पड़ोसवाले सब दहल गये के आज तो मुखियाजीके शौर्यकी पराकाष्ठा हो गयी. इतनेमें मुखियानीजी आ गयी और बोली के "क्या शोर मचा रख्यो हे भीतर. खोलो दरवाजा." सारो शौर्य धर्यो रेह गयो. बैंत-वैंत छोड़के भाग खड़े हुए मुखियाजी क्योंके मुखियानीजी पीटती हती उनकुं. ये अहम्को डिस्प्लेसमेंट् हे. गुस्सा तुम्हें पत्नीपे आ रह्यो हे और गाली-मार तुम तकिया और भीत कुं कर रहे हो. तो डिस्प्लेसमेंट्की पोल खुलते देर नहीं लगे. अपने अहंकुं अपन् डिस्प्लेस् कर तो दे पर वो ज्यादा दिन चलवेवालो नहीं होवे.

(डिस्प्लेसमॅन्ट्को उपाय)

तो अच्छो तो ये हे के वापे अपनेकुं कॉन्ट्रोल् आनो चहिये और वो कॉन्ट्रोल पावेके लिये महाप्रभुजीकी इन्स्ट्रक्शन् हे के "**भार्यादीनां तथान्येषाम् असतश्चाक्रमं सहेत्.**" (वि.धै.आ.७) वा आक्रमणकुं सहन कर लो. डिस्प्लेस् क्यों करो वाकुं. सहन कर लोगे तो अपने आप वो प्रॉब्लेम् सॉल्व् हो जायगी. सहन नहीं करनो, ये ईगो अपन्ने बना रखी हे के मैं पति, मोकुं मेरी पत्नी कैसे पीट सके! अरे भई! जाके हाथमें ताकत होयगी वो ही तो पीटेगो. वामें पति क्या और पत्नी क्या? यदि पत्नीके हाथमें ताकत हे तो वो पीट सके हे. पतिके हाथमें ताकत हे तो वो पीटेगो. नहीं ताकत हे तो कहांसु पीटेगो! वा बखत शांतिसु मार खा लो. वामें क्या बड़ी बात हे? जब तुमने एक-दूसरेकुं पति-पत्नी तरीके स्वीकार कियो हे तो कभी याने वाकी मार खा ली और कभी वाने याकी मार खा ली. यामें कौनसी बड़ी बात हो गयी! पर क्योंके अपनो ईगो अपन्कुं ये स्वीकारवे नहीं दे हे के पति भी कभी पत्नीकी मार खा सके हे! या तरीकेके डिस्प्लेसमेंट्सु फायदा कुछ होवे नहीं हे

और विकृतिकी पोल खुल जाय. तो यासु अपनेकुं बचनो चहिये. महाप्रभुजी अपनूकुं कहें हें के ईगोकुं स्वस्थ रखो और वाकुं स्वस्थ रखवेके लिये सहन करवेको माद्दा अपनेकुं होनो चहिये. ये नॅचरल् उपाय हे और वो अनूनॅचरल् उपाय हे जहां अपनूकुं द्वेष हो रह्यो हे.

(‘अनूडुइंग्‌को उदाहरण)

अगलो हे ‘अनूडुइंग्’. ये भी बड़ो मजेदार फिनोमिना हे. सायकॉलॉजीमें याके बहोत सारे उदाहरण हें. क्योंके मैं आपकुं एप्लाइड् बता रह्यो हूँ यालिये केवल पुष्टिमार्गके ही उदाहरण दे रह्यो हूँ.

तीन पीढ़ी पहलेके जो-जो वैष्णव यूरोप अमेरिका गये, बालकनूने उन-उन वैष्णवनूकुं जात बाहर निकलवायो हतो. इतिहास पढ़के देख लो. गांधीजीकुं भी ये ही प्रॉब्लेम् भयी हती क्योंके गांधीजीकी मां वैष्णव हती और उनकुं इंग्लॅन्ड् पढ़वे जानो हतो. जब वो अपनी माँसु जावेकी पूछवे गये; तो पढ़के देख लो, अपने यहाँकी वा समयकी सारी मॅगज़िननूने गांधीजीकी थू-थू करी हती के काहेकुं इंग्लॅन्ड् पढ़वे जावेकी जरूरत हे, पढ़ाई यहां नहीं हो सके क्या? मेरे पास वो सारी फाइल् मौजूद हें. खैर! गांधीजी तो हिम्मती आदमी हते, पढ़ ही आये. माँने उनसु एक प्रॉमिस् ली हती के "तू कभी कंठी तोड़ेगो नहीं." वो बहोत चतुर हते. उनने कभी कंठी तोड़ी नहीं पर टूटवेके बाद फिर कभी पहरी भी नहीं. खैर! वो बात जावे दो. केहवेको अर्थ ये हे के वा समयके सब बालक वैष्णवनूकुं इतनो प्रेशराइज़् करतें हतें बाहर नहीं जावेके लिये. आज सब बालकें सपना देख रहें हें के कब इंग्लॅन्ड् अमेरिका जावें. और बाहर जावेको गिल्ट् फील् भी कायम हे. बड़े-बड़ेनूकुं जात बाहर निकलवायो. कई फॅमिलीमें झगड़ा करवायो के सेवामें नहीं नहा सकें, जातमें बैठके खाना नहीं खा सकें. सौ साल पहले या प्रश्नकुं लेके बहोत झगड़ा

भयो. आज सब बालकें जावें लग गयें. अब रोको. और (ज्यादा) अब जावे लग गयें. अपन् या इश्युपे नहीं जावें.

आज बालकनूके दो तरीकेके माइन्ड्-सेट् हें. जब भी अमेरिका जाओ तो प्रायश्चित्त करो. बेवकूफीकी पराकाष्ठा कितनी के अमेरिका जाके वहाँके मंदिरमें नहानो होय तो प्रायश्चित्त करो के ‘म्लेच्छ देशागमने दोषः निवृत्तिः अर्थं प्रायश्चित्तम् अहं करिष्ये." अरे तुम अमेरिकामें ही तो बैठे भये हो. और प्रायश्चित्त कितनो? सौ रुपया. यहां आओ तो पांच हजार हे. और हम बालक लोग इतने गिलिंडर् हें के उपाध्यायजीकुं कहें के प्रायश्चित्त करवा दो और पैसा चुकावें ही नहीं. अरे भई! नक्की करो के पवित्र हे के अपवित्र हे. यदि अपवित्र हे तो जाओ मत. और जानो हे तो; क्योंके सबकुं टोक्यो हतो, सबकुं जात बाहर निकलवायो हतो पर आज सबके मनमें दूध क्या उफान लेगो जैसो अपनो मन वहां जावेके लिये उफान ले रह्यो हे के कोई वैष्णव कब बुलावे और कब हम जावें. कई बार तो वैष्णव मना करे के "अभी-अभी कोई और बालक पधारके गये हे, अभी मत पधारो." तो कहें के "नहीं नहीं, हमें तो पधराओ ही." अरे जानो हे तो जाओ पर फिर प्रायश्चित्त काहेकुं करो! और करें कितनो, बारह हजार गायनूको. बारह हजार गायनूकी न्योछावर कितनी निकालें? सवा रुपया. अब ये बाललीला नहीं हे तो क्या हे सोचो? बारह हजार गायनूकी कीमत सवा रुपया!! सवा रुपयाकी तो एक प्लास्टिककी गाय भी नहीं आयगी. बस धुल गये अमेरिका जावेके सारे पाप. ये कम अकलकी पराकाष्ठा नहीं हे तो क्या हे. याको नाम ‘अनूडुइंग्’.

(अनूडुइंग्‌के लक्षण)

जान करके वो काम करनो जोके नहीं करनो चहिये. फिर वाकुं अनूडुइंग् करनो. मानें पहले वो काम करनो फिर वाकुं अनूडन् करनो

और फिर ये विश्वास भी करनो के हमने वाको प्रायश्चित्त कर तो लियो. अरे यार!! ये क्या स्प्लिट् पर्सनालिटी हे! ये कौन तरहकी बेवकूफी हे! पर ऐसो बालक नहीं करे तो कौन करे! डुइंग् और अनडुइंग् की ऐसी सब लीलायें हम सब करते रहें हें.

(अनडुइंग्को उपाय)

महाप्रभुजीको स्पष्ट यामें सिद्धांत हे के जब तुम 'कृष्ण' नाम बोल रहे हो, या जब तुम कृष्णभक्ति कर रहे हो तो "**प्रायश्चित्तानि जीर्णानि नारायण परांगते**" जब तुम नारायणके अभिमुख हो तो प्रायश्चित्तकी जरूरत नहीं हे और नारायण सन्मुख नहीं हो तो तुम्हारे सारे प्रायश्चित्त बेकार हें. जो बात अपनकुं बतायी गयी हे वा बातकुं फोलो करें के दूसरी बातकुं फोलो करें. तुम नारायणके अभिमुख रहो, तो हो गयो तुम्हारो प्रायश्चित्त. पर वो नहीं करके ऐसे खोटे-सच्चे उपद्रव करें.

(अनडुइंग्को उदाहरण)

याको बहोत प्रसिद्ध उदाहरण हे अपने भारतमें जाकुं 'पेशवाई प्रायश्चित्त' कहें हें. पुराने जमानामें रोज रातकुं पेशवा लोग शराब पीतें और रोज सुबह प्रायश्चित्त करतें, फिर रातकुं शराब पीतें. अरे ऐसे प्रायश्चित्तको मतलब क्या? पर निरंतर डुइंग् और अनडुइंग् को चक्र चलतो रेहनो चहिये. ये अपनी स्प्लिट् पर्सनालिटीको उदाहरण हे. ये बात खास समझनी चहिये. ये डिस्टोर्शन् हे.

(अनडुइंग्को उपाय)

जबकि महाप्रभुजीने स्पष्ट आज्ञा करी हे के "**दुःखहानौ तथा पापे भये कामाद्यपूरणे**" (वहीं) जब तुमसु पाप भी हो गयो तो भगवदाश्रयकी भावना करो, वो तुम्हारो सच्चो प्रायश्चित्त हे. भगवदाश्रयकुं छोड़के अनडुइंग् करवेसु क्या फायदा होयगो? ये बात हती.

(आइडेन्टिफिकेशन्को लक्षण)

अगलो हे 'आइडेन्टिफिकेशन्'. यामें क्या हे के जब आदमी भीतरसु सुनिश्चित हे के मैं कोई कामको नहीं हूँ. पर या बातकुं जब स्वीकार नहीं पावे तो वो ये मान ले हे के मैं बहोत कामको व्यक्ति हूँ. वो कोई ऐसे व्यक्तिसु अपने आपकुं आइडेन्टिफाय् कर ले हे; जैसे कल मैंने आपकुं जॉन् लिनेन्की बात बताई. जब अपन् भीतरसु टूटे भयें हें तो अपन् कोई ऐसे व्यक्तिसु आइडेन्टिफाय् कर लें के जासु अपनेकुं लगे के "नहीं, मैं भी कुछ हूँ."

(आइडेन्टिफिकेशन्को उदाहरण)

याको सबसु बड़ो ज्वलंत उदाहरण हे पुष्टिमार्गमें गोस्वामीन्को खुदकुं पुरुषोत्तम सोचनो. अरे भई! तुम गुरु ही नहीं बन पाये तो पुरुषोत्तम कहांसु हो गये! बैठे बिठाये अपने आपकुं पुरुषोत्तमसु आइडेन्टिफाय् कर लियो के हम सब पुरुषोत्तम हें. चलो अच्छी बात हे के तुम पुरुषोत्तम हो पर अपने यहांको सिद्धांत हे के हरि-गुरु-वैष्णव एक समान समझने. तो तो वैष्णव भी पुरुषोत्तम हे. अब कोई वैष्णव यदि गलतीसु भी केह दे के हम भी पुरुषोत्तम हें तो तुरत केह देंगे के अहंकारी हे. वैष्णव यदि पुरुषोत्तम बनवेसु अहंकारी हो जातो होय तो बालक क्यों नहीं अहंकारी होयगो? अपने यहांको तो सिद्धांत एकदम साफ हे के हरि-गुरु-वैष्णव सरखे जानने. यदि वो पुरुषोत्तम हे तो तुम भी पुरुषोत्तम हो. यदि वो पोंड्रक वासुदेवकी तरह फॉल्स् आइडेन्टिफिकेशन्के कारण पुरुषोत्तमको क्लेइम् कर रह्यो हे क्योंके भीतरसु वाकुं कहीं सॅन्स् ऑफ इन्फिरियारिटी कचोट रही हे तो बाहरसु वो अपने आपकुं पुरुषोत्तमसु आइडेन्टिफाय् करके अपने आपकुं ग्लोरिफाय् करनो चाह रह्यो हे.

अब सीधीसी बात आपकुं बताउं के अपने पुष्टिमार्गमें याके कैसे-कैसे उधम हें. 'अखंड भूमंडलाचार्य' बड़ी अच्छी बात हे. भले

कोई मानतो होय के नहीं पर अपन् तो ये दावा कर रहें हें के हम अखंड भूमंडलके आचार्य हें. वाके बाद कहें के जगद्गुरु. अरे, अखंड भूमंडलाचार्य होवेसु जगद्गुरु कैसे हो गये? गुरु तो नीचेकी स्टेटस् हे. आचार्य तो गुरुसु बड़े होवें हें. खुदकुं ही अपनी स्टेटस् पता नहीं हे. वाके बाद कहें हें के 'अनंत श्रीविभूषित'. मानें अपने पास श्री भी अनंत हो गयी, अब तो कुछ बाकी नहीं रह्यो न! पर वाके बाद लिखें 'गोस्वामी श्रीमहाराजश्री'. अरे भई! अनंत श्रीके बाद फिर ये दो बार श्री कहांसु आ गयी, अनंतमेंसु बाहर निकलके! अपने नाममें अपनुकुं सेल्फ-कॉन्फिडेन्स् नहीं हे, या कारणसु ये सब लगाने पड़ें. ये सब क्या नाटक हे? समझ नहीं आवे. पाछे जो भी ये सींगड़ा पूछड़ायें लगा रहे हो वो कोई सेन्स् नहीं रखें हें. क्योंके जगद्गुरु हो तो अखंड भूमंडलाचार्य नहीं हो सकोंगे और यदि अखंड भूमंडलाचार्य हो तो जगद्गुरु नहीं हो सकोंगे. कोई भी जज्कुं लिखते भये देख्यो के 'सुप्रीम्कोर्ट-जज् एडवोकेट् मिस्टर् सो एन्ड् सो' अरे, यदि तुम सुप्रीम्कोर्टके यदि तुम जज् हो तो यामें तो कोई सोचवेवाली बात ही नहीं हे के तुम एडवोकेट् तो होओंगे ही. सचमें अपनी तो अकल ही चकरा जाय इन सबकुं देखके. अपने यहाँ ईगोके डिस्टोर्शन्की आइडेंटिफिकेशन्की क्राइसिस्की कैसी-कैसी प्रॉब्लेम् हें ये देखो.

(आइडेन्टिफिकेशन्को उपाय)

महाप्रभुजीके हिसाबसु याकुं ट्रीट् करवेको तरीका हे के सबकुं समान मानो. सबकुं समान मानोगे तो या तरीकेके आइडेंटिफिकेशन्को रोग ही नहीं होयगो. वयन्ता मानें तो अपनुकुं ये आइडेंटिफिकेशन्की क्राइसिस् होवे ही नहीं. ये क्राइसिस् अहंताके कारण आ रही हे.

([१०] इन्ट्रोजेक्शन्को लक्षण)

ऐसे ही एक ईगोको डिस्टोर्शन् होवे 'इन्ट्रोजेक्शन्'. ये क्या हे?

जासु तुम हार गये वाकी तुम कॉपी करवे लग जाओ, अपनी हारकुं छुपावेके लिये. जाने तुमकुं जीत लियो वाकी तुम कॉपी करो. याकुं 'इन्ट्रोजेक्शन्' कह्यो जाय हे. जो के एक तरीकेको ईगोको डिस्टोर्शन् हे.

(इन्ट्रोजेक्शन्को उदाहरण)

जैसे अंग्रेजन्सु अपन् हार गयें, उनसु जीत नहीं पाये तो सारी अंग्रेजी कल्चर् अपन्ने ग्रहण कर ली. एक फिल्मी गाना हतो. ''टाई लगाके माना बन गये जनाब हीरो. रहे पढ़ाई और लिखाई में तो जीरो-जीरो.'' ये एक गाना हतो. अब अंग्रेज लोग टाई लगावें वाकी अपने यहां क्या जरूरत हे? पर सब लोग, चाहे पढ़ें के नहीं पढ़ें पर टाई लगायेंगे. और जो अंग्रेजीकी पढ़ाई हती वामें सब जीरो हते पर टाई जरूर लगावें. तो ये इन्ट्रोजेक्शन् हे के वे टाई लगातें हतें और अपन् उनसु हार गये तो अपन् भी टाई लगावें लगें. अपने क्लाइमेट्के हिसाबसु अपने यहां टाईकी और मोजाकी जरूरत नहीं हे. मोजामें तो मरे चूहाकीसी कितनी बास आवे! मोजा पहरवेवालो कोई आवे तो पता चल जाय. तो जिनसु अपन् हार जायें उनकी कॉपी करें. ये 'इन्ट्रोजेक्शन्' हे. वाके कारण अपन् सोचे समझे बिना बहोत सफर् करतें होवें.

पुष्टिमार्गमें भी कुछ या तरहको ही भयो के एक फेज्में हमने खूब जोर लगायो के हर पुष्टिमार्गी अपने घरमें रेहके सेवा करें. हर वैष्णव भागवतपारायण करें. पर कोई तरहसु अपन् मर्यादामार्गसु हार गयें और अपन्ने हवेलीयें खोल लीं, भागवतकी कथाएं शुरु कर दीं. ये अपनो इन्ट्रोजेक्टरी डिस्टोर्शन् ऑफ् ईगो हे. क्योंके गामसु अपन् हार गयें और गामकी अपन्ने कॉपी करनी शुरु कर दी. अपने यहां हवेलीकी पद्धति नहीं हती पर क्योंके अपन् मर्यादामार्गके सामने टिक नहीं सकें या लिये अपन्ने उनकी कॉपी करनी शुरु

कर दी. अपन्ने बहोत जोर लगायो के हर व्यक्ति भागवत पढ़े पर यदि ऐसो होतो तो समझो प्रॉब्लेम् कहां आयी के यदि कोई व्यक्ति भागवत नहीं कर सकतो होय तो वाकुं दीक्षा मत दो. यदि दीक्षा देनी हे तो वाके पीछे इतनो टाइम् लगाओ के वो भागवत पढ़े और सेवा करे. दोनों ही नहीं करने. दीक्षा भी देनी हे, चेला भी मूंड़नो हे और वो भागवत पढ़ सके वा लायक भी वाकुं नहीं बनानो हे तो आखिरमें क्या होवे के वो दूसरेकी कथा सुनवे जातो और वासु क्या भयो के गोस्वामी बालकें सब भागवतकथा करवें लग गयें. गोस्वामी बालकें इन कथक्कड़ व्यासनसु हार गयें हें. वे कथक्कड़ व्यासन्की कॉपी करें (जोके एक सूतवृत्ति हती, ब्राह्मणवृत्ति भी नहीं हती) वो अपन्ने एडॉप्ट् करी क्योंके अपन् डिफिटेड् हें. या कारण जो जीत्यो भयो हे वाकी अपन् कॉपी कर रहें हें. अपने ईगोको सायकॉलॉजीके हिसाबसु इन्ट्रोजेक्टरी डिस्टोर्शन् हे. ये बात अपनेकुं समझमें आवे.

(इन्ट्रोजेक्शन्के उपाय)

अब याको उपाय महाप्रभुजी बता रहें हें के **"अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः"** (वि.धै.आ.११) हारको इतनो क्यों रोना रोओ हो के तुमकुं दूसरेकी कॉपी करनी पड़े! क्यों तुम अपने कामकुं नहीं कर सको हो! अपनी हार स्वीकार लो. विवेकधैर्याश्रयमें वे सारे प्रॉब्लेम्स् महाप्रभुजीने बतायें हें.

([११] कॉम्पेन्सेशन्को लक्षण)

अगलो 'कॉम्पेन्सेशन्'. जब अपन् कन्विंस्ड् हें के अपनो ईगो अच्छी कॅलिबर्को नहीं हे तो वाकुं अपन् आर्टिफिशियल् ग्लोरिफिकेशन् प्रोवाइड् करें.

(कॉम्पेन्सेशन्को उदाहरण)

ये मेरी हर समयकी समस्या हे के रिसॅप्शन्में जाऊं, आशीर्वाद

दे आऊं. जब आशीर्वाद दियो तब वो गोरी लड़की हती. पंद्रह बीस दिन बाद वो आके पूछे के "पहचानो". मैं कहूं के "नहीं पहचान्यो." अब चहेराकी कलई उतर गयी कैसे पहचानूं. गोरीके बजाय लड़की काली हो जाय तो वाकुं पहचाननो कैसे? अब वो कहे के "क्यों नहीं पहचानो? वा दिन रिसेप्शन्में तो आशीर्वाद दियो हतो." अरे! पर वा दिन तो तू गोरी हती तो कैसे पहचाने? अपने भीतर कहीं न कहीं एक हीन भावना भरी भयी हे के कालो दीखनो बुरी बात हे क्योंके अंग्रेज लोग गोरे हते तो कम-सु-कम अपने रिसेप्शन्में तो गोरे लगें तो कलई लगाके खड़े हो जायें. वामें मेरे जैसेकुं परेशानी हो जाय. अपन् मनमें चित्र बनाके आयें होंय के अपन् गोरी लड़कीकुं आशीर्वाद देके आयें हें पर वो पाछी भीतरसु काली निकले. फिर अपने गले और पड़ जाय के पहचानो क्यों नहीं. समझ ही नहीं पड़े कुछ. तो या तरहको अपनी ईगोको डिस्टोर्शन् हो गयो हे. पुष्टिमार्गमें भी अपने या तरीकेके ईगोके डिस्टोर्शन् हे.

याको उपाय महाप्रभुजीने क्या बतायो हे ये मैं आपकुं बादमें बताऊंगो.

([१२] एक्टिंग्-आउट्के लक्षण)

वासु पहले मैं 'एक्टिंग्-आउट्'के बारेमें बता दऊं. ये भी ईगोको एक डिस्टोर्शन् हे. अपने पुष्टिमार्गमें सबसु ज्यादा यदि कोई पॉप्युलर् डिस्टोर्शन् हे तो ये हे. यामें क्या होवे के जब अपन् समझ जायें के अपनो स्टेंड् गलत हे तो अपन् क्या करें के "लो करेंगे, ऐसो ही करेंगे. बोलो क्या कर लोगे." या फिनोमिनाकुं अपन् 'एक्टिंग्-आउट्' कहें हें. भीतरसु तुम्हारी हिम्मत टूट गयी हे और वाकुं छिपावेके लिये तुम एक्टिंग्-आउट् कर रहे हो.

(एक्टिंग्-आउट्को उदाहरण)

जैसे अपन् कहें के ''छप्पनभोग मत करो'' तो कहें के ''करेंगे छप्पनभोग. या गाममें वा गाममें, सब जगह छप्पनभोग करेंगे, बोलो क्या कर लोगे.'' ये 'एक्टिंग्-आउट्'हे. तुम छप्पनभोग यालिये नहीं कर रहे हो के तुमकुं ठाकुरजीकुं धरनो हे पर यालिये धर रहे हो के तुम या बातसु डर रहे हो के कहीं लोग समझ न जायें के छप्पनभोग अपनो सिद्धांत नहीं हतो. वाके लिये तुम एक्टिंग्-आउट् कर रहे हो. घरसेवाको सिद्धांत हतो तो जान करके एक गांवमें चार-चार हवेली खोलेंगे, बोलो क्या कर लोगे. खोलो हवेली, हम क्या कर सकें यामें. तुम खोलते जाओ और ट्रस्टी सब एक-एक करके लेतें जायेंगे. यामें हमारे करवेको क्या रेह जायगो? क्योंके जो करेंगे वो ट्रस्टी ही तो करेंगे. तो अपन् ये एक्टिंग्-आउट् करें हें के जो बात अपनकुं गिल्टी फील् हो रही हे, वा गिल्टकुं छिपावेके लिये अपन् वाकुं और लाउडली करें. तो आजकी तारीखमें ये एक्टिंग्-आउट् रूपी डिस्टोर्शन् अपने पुष्टिमार्गके ईगोमें भयंकर रूपसु हे. यामें हर बखत अपने महाप्रभुजी द्वारा बतायो भयो उपाय अपनेकुं ठीकसु समझनो पड़ेगो के अपन् क्यों ऐसो गलत काम करें के जो अपने सिद्धांतकी फ्रेममें नहीं बैठतो होय. क्यों न अपन् वाकुं वाही लिमिट्में करें के अपनकुं या हद तक जावेकी जरूरत नहीं पड़े.

ये अहम्की विक्रियाको मैंने आपकुं सायकॉलॉजिकल् सर्वे करायो. पुष्टिमार्गके रेफरेन्स्में एप्लाइड् सर्वे करवायो. जैसे मैंने पहले बतायो हतो के सायकॉलॉजीमें याके दूसरे बहोत सारे उदाहरण हें. वाके बहोत सारे उपाय भी सायकॉथेरेपीमें बताये गयें हें. पर वामें अपनकुं जावेको नहीं हे. अपनकुं केवल वो फ्रेम् देखवेको हे के अपने सिद्धांतके ठीकसु पालन नहीं करवेके कारण कहां अपन् सफर् कर रहें हें!

(महाप्रभुजीके द्वारा उपदिष्ट 'अहंकार'कुं स्वस्थ रखवेके उपाय)

अब टॅक्स्ट्पे अपन् आवें जामें महाप्रभुजीने इनके उपायके तहत ये आज्ञा करी के ''**यथा-यथा हरिः कृष्णो मनसि आविशते निजे, तथा-तथा साधनेषु परिनिष्ठा विवर्धते**'' (त.दी.नि.२।२४०) हरि जैसे-जैसे तुम्हारे मनमें निविष्ट होयेगो वैसे-वैसे साधनमें तुम्हारी निष्ठा बढ़ेगी. श्रीपुरुषोत्तमजी यहां एक बहोत अच्छी शंका खड़ी कर रहे हें के ''**ननु इदमपि न युक्तं**'' क्योंके ''**श्रवणादिकर्तृणामपि हृदि इदानीं प्रायः भगवन्निवेशो न अनुभूयते.**'' (आ.भं.२।२४०) जा तरहसु साधनमें परिनिष्ठा डॅवलप् कर रहें हें वाके बाद भी हृदयमें भगवान्को आवेश तो दीख नहीं रह्यो हे. तो महाप्रभुजीके उपदेशकी वॅलिडिटी कितनी? जब ये प्रश्न खड़ो भयो तो महाप्रभुजी दूसरी बात केह रहें हें के ये बात तो ठीक हे के जैसे-जैसे कृष्ण तुम्हारे मनमें आविष्ट होयगो ऐसे-ऐसे तुम्हारी साधनमें निष्ठा तो बढ़ेगी और जैसे-जैसे तुम्हारी साधनमें परिनिष्ठा बढ़ेगी वैसे-वैसे कृष्ण तुम्हारे मनमें आविष्ट होयगो. पर वाकी शर्त हे के तुमकुं आश्रय कृष्णको होनो चहिये. आश्रय साधनन्को नहीं, तो ये साधनन्के आवर्तनसु कृष्णमें निष्ठा बढ़ेगी. यदि तुमने साधनाभिमानसु ये साधन किये तो ये जो डिस्टोर्टेड् अहंकार हें उनमेंसु किसीके तुम शिकार हो जाओगे. ये बात पुरुषोत्तमजी यहां केह रहें हें. वे कितनी गहन सायकॉलॉजीके रॅफरेन्स्में केह रहें हें. यदि अपन् ये सायकॉलॉजी पढ़ें तो ही समझ आयगो.

वो ही साधनाकी परिनिष्ठा कृष्णनिष्ठासु भी हो सके और वो ही साधना-निष्ठा अहंनिष्ठासु भी हो सके. तो अहंनिष्ठ होके जा बखत तुम साधनन्को आवर्तन करोगे वा बखत कृष्ण तुम्हारे हृदयमें प्रविष्ट होयगो याकी गॅरंटी नहीं हे. तुम अपने अहंकारकुं ही बूस्ट् करते होओगे. अपने अहम्के बजाय कृष्णमें निष्ठा रखके साधनन्को आवर्तन करो तो कृष्ण तुम्हारे हृदयमें आविष्ट होयगो,

ये बात महाप्रभुजी यहां केह रहें हें के **''कृष्णे सर्वात्मके.''**

'सर्वात्मक'को प्रयोग महाप्रभुजीने बहोत बुद्धिमानीसु कियो हे. क्योंके जैसे पहले मैंने आपकुं बता दी हती के बम्बईके रहवेवालेकुं बम्बईमें रेहवेको अहंकार नहीं हो सके हे पर जब वो गाममें जायगो तब ''हम तो बम्बईके रहवेवालें हें.'' या तरहसु ही कृष्णके सामने तुम अहंकार करोगे तो वो क्या मायने रखे हे. बम्बईमें रेहवेवालेके सामने दूसरो बम्बईमें रेहवेवालो बम्बईमें रेहवेको अहंकार करे तो वाके मायने क्या? वाकी कोई कीमत ही नहीं हे. एक बखत या कृष्णके सर्वात्मक होवेको तथ्य तुम रियलाइज् करो तो तुमकुं अहंकारकी आवश्यकता और प्रोजेक्शन्की जरूरत ही नहीं रेह जायगी क्योंके कृष्णकी सर्वात्मकता तुमकुं ये रहस्य समझा देगी के या अहंकारकी कोई कीमत नहीं हे.

''जान दी उसने जो उसने बख्शी थी, हक तो ये हे के हक अदा न हुआ.'' अपने आप अहंकार डायल्युट् हो जायगो. या बातकुं 'सर्वात्मकता' समझावेके लिये कह्यो हे. या कृष्णकी सर्वात्मकताकी अवेयरनेस्के साथ तुम कृष्णमें दीनभावना करो. व्यर्थमें खुदकुं प.भ और पू.पा. दिखावेके लिये दीनभावना मत करो. **''अहंकारं न कुर्वीत''** कृष्णके सामने अपने कोई साधनको व्यर्थको अहंकार मत करो. अपनी भक्तिको के अपने दीन होवेको (अहंकार मत करो) तो अपने आप तुम्हारी सारी दिक्कतें दूर हो जायेंगी. **''मनसि स्वस्य दीनता भावनीया. सर्वाधिष्ठानेषु सर्वलोकेषु च यत्र-यत्र भगवद्बुद्धिः भवति बुद्धिश्च कर्तव्या''** (त.दी.नि.प्र.२।२४२) बुद्धि ऐसी करो के जहां-जहां तुम कृष्णकुं कृष्णकी तरह देख सकते हो, वहां-वहां कृष्णबुद्धि करवेको प्रयास करो के जासु वाकी सर्वात्मकता तुम्हारे सामने खुलती चली जाय. जैसे कली खिलके फूल बने हे, शुरुमें तो वो कली ही होवे हे पर जब

खिले तो वाकी हर पंखुड़ी खिल जाय हे. तो ऐसे जहां तुम कर सकते हो कृष्णभावना; ऐसे भी नहीं के मोरके बच्चा आ गये तो कृष्णकी भावना कर रहें हें, प्लास्टर् ऑफ् पॅरिस्के राधा-कृष्ण आ गये तो कृष्णभावना कर रहें हें!!! पर ऐसी जगह के जहां तुम अपने भजनको संबंध मेनटेइन् कर सकते हो, वहां पहले निभानो शुरु करो और धीरे-धीरे वाकुं पंखुड़ीकी तरह खिलवे दो, पंखुड़ीकुं फूल बनवे दो, अपने आप अहंकार डायल्युट् हो जायगो. और या प्रोसेस्में **''अन्यकर्तृकापमानेऽपि न अहङ्कारं कुर्याद्''** (वहीं) कोई और तुम्हारो इन्सल्ट् करतो भी होय तो ये मत सोचो के वाने तुम्हारो अपमान कियो हे. ऐसे सोचो के जैसे सरमद्ने सोच्यो के ''तू मेरे प्रेमकी परीक्षा ले रही हे तो चल मैं परीक्षा देवेकुं तैयार हूँ.'' क्योंके कृष्णकी सर्वात्मकताको कन्सॅप्ट् यदि तुमकुं डॅवलप् करनो हे तो ये कन्सॅप्ट् तुमकुं बाधक होयगो के ''हम कृष्णभक्ति करवें जा रहें हतें और फलानेने हमारो इन्सल्ट् कर दियो.'' अरे काहेको इन्सल्ट्. जब तुम सर्वात्मक कृष्णकी भावना डॅवलप् करवे जा रहे हो तो वामें कौन तुम्हारो इन्सल्ट् कर सके. कर सके तो कृष्ण खुद कर सकें हें और कोई कर ही नहीं सके हे. तो वालिये **''अन्यकर्तृकापमानेऽपि न अहङ्कारं कुर्याद्''** क्योंके **''भगवतः सकाशाद् मानापेक्षां च वर्जयेत्.''** (वहीं) भगवान्सु तुम भजनकी एवजमें मानकी अपेक्षा रखोगे तो तुम्हारो अहंकारको ईश्यु प्रबल होयगो. भजन कोई मान पावेके लिये नहीं पर भजन करवेके लिये भजन कर रहे हो, अन्मोटिवेटेड् भजन कर रहे हो. भगवान्सु जब तुमकुं मान नहीं चहिये तो तुम्हारो कोई अपमान करे तो तुम्हारो ईगो हर्ट् ही नहीं होयगो. ये बात महाप्रभुजीने समझाई.

''एतद्सिद्ध्यर्थम् उपायम् आह'' (त.दी.नि.प्र.२।२४२) अब याको थर्मामीटर् महाप्रभुजी बता रहें हें के भजनसिद्धिके लिये यदि तुम

भगवान्‌की सर्वात्मकताको भावन कर रहे हो तो वाको टच्-स्टोन् क्या? **''सर्वथा तद्‌गुणालापम्''** भगवान्‌के गुणनकुं सदा ग्लोरिफाय् करो. दूसरेनके गुणनकुं नहीं. **''नामोच्चारणमेव वा''** यदि भगवान्‌के गुणनकुं ग्लोरिफाय् नहीं कर पा रहे हो तो उनको नामोच्चार करो. **''सभायामपि कुर्वीत''** भरी सभामें करो, जहां भी ग्लोरिफाय् कर सकते हो निर्भय और निःस्पृह होके करो. याही लिये मैंने बतायो के अपने ईगोकी पहली डिस्टोर्शन्; श्रीगणेशाय नमः, भय और लालच सु होवे हे. भगवन्नामकुं लेवेमें या डिक्लेयर् करवेमें कोई प्रकारको भय या लालच अपने मनमें नहीं होनो चहिये. दुनियाकी बातनमें कोई भय या लालच रखनो होय तो रखो. वामें इतनी चिंताकी बात नहीं हे पर जा भगवन्नामके आधारपे तुम भगवान्‌की सर्वात्मकता समझवे जा रहे हो वा भगवन्नामके प्रोक्लेमेशन्‌में भय और अपेक्षा को भाव नहीं होनो चहिये. इतनो प्रोग्राम् यदि तुम अपना सको तो महाप्रभुजी केह रहें हें के **''सर्वथा सर्वत्र भगवद्‌उत्कर्षवर्णने पूर्वोक्तं सिद्धयति''** (त.दी.नि.प्र.२।२४२) तो तुमकुं निश्चित वा कृष्णको आवेश या साधनासु अपने हृदयमें अनुभूत होयगो.

ये प्रोसेस् यदि अपनाओगे, स्वस्थ अहम्‌की प्रक्रियासु जब साधनाचरण करोगे तो तुम्हारे भीतर कृष्णको आवेश होयगो. वोही साधनाचरण जब अस्वस्थ मनके साथ करोगे तो वोही तुमकुं ले डूबेगो. सिद्धांतमुक्तावलीमें श्रीआचार्यचरणने जा बातकी आज्ञा करी के **''भक्त्यभावेतु तीरस्थो यथा दुष्टैः स्वकर्मभिः, अन्यथाभावमापन्नः तस्मात् स्थानात् च नश्यति''** (सि.मु.२०) भक्तिभाव नहीं हे तो गलत इम्प्रेशन्‌में मत रहियो के भगवत्सेवा तुम्हारो उद्धार करेगी. भक्तिभावके बिनाकी सेवा तुम्हारे विनाशको कारण बनेगी. ये सिद्धांत अपनकुं महाप्रभुजी समझानो चाह रहें हें. निर्भय और निस्पृह होके जब तुम भगवत्सेवा करोगे तो निश्चित ही या साधनकी परिनिष्ठासु तुम्हारे हृदयमें वा कृष्णको आवेश बढ़ेगो.

एक संक्षेपमें बात बतानो चाहूं हूं के भगवान्‌ने गीतामें आज्ञा करी हे के **''समो अहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यो अस्ति न प्रियः, ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चापि अहम्.''** (भग.गीता.९।२९) कभी अपने महाप्रभुजीकुं ये बात केहनी होती तो कैसे केहते? यालिये मैंने या श्लोककी अपने महाप्रभुजीके सिद्धांतके हिसाबसु एक पॅरोडी बनाई. महाप्रभुजीके मुखारबिंदसु अपनेकुं यदि ये बात सुननी होती तो वो कैसे केहते? **''समो अहं पुष्टिजीवेषु न मे द्वेष्यो अस्ति न प्रियः कृष्णं भजन्ति ये भक्त्या मयि ते तेषु चापि अहम्.''** पुष्टिजीव जितने भी हें उनमें न मैं कोईको द्वेषी हूं, न मोकुं कोई प्रिय हे. जो मेरे उपदेशके अनुसार कृष्णभजन कर रह्यो हे तो महाप्रभुजी ये आज्ञा करते. ''समोहं पुष्टिजीवेषु न मे द्वेष्योस्ति न प्रियः, कृष्णं भजन्ति ये भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्.'' याके लिये जो कुछ भी अपन्‌ने अहंकारकी विवेचना करी, वो सच्ची हती के खोटी करी ये तो महाप्रभुजी जानें. पर जैसी आयी वैसी करी, महाप्रभुजी याकुं स्वीकार करें. याकुं आपश्रीके चरणार्विंदमें समर्पित करवेसु पहले अपन् आश्रयको पद गायेंगे.

रोम रोम रस झलके श्रीवल्लभ॥
रोम रोम रस झलके॥१॥
जे जे जा रसके अधिकारी॥
भरत सम्हाले न छलके. श्रीवल्लभ...॥२॥
रामदास पदकमल महारस॥
चाखनको जीय ललके. श्रीवल्लभ...॥३॥

दृढ इन चरणन केरो भरोसो॥
श्रीवल्लभनखचन्द्रछटा बिन सब जग मांझ अन्धेरो।१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो॥
'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरो बिना मोलको चेरो॥२॥

परिशिष्ट

"पुष्टि अस्मिता"

(गान)

अमे अेवा रे अमे अेवा रे वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे
निष्ठाथी वल्लभनी वाणी अनुसरता
अमने बहिर्मुख कहो छो तो तेवा रे,
अमे अेवा रे अमे अेवा रे
वळी बीजु जे कांइ कहो तेवा रे. (१)

मेवा मेळववा प्रभुने नथी सेवता
मेवाथी करवी प्रभुसेवा रे
अमे अेवा रे अमे अेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (२)

वाडीओमां भक्तिनां भवाडा गोठवीने
कृष्णविक्रयनां घन नथी लेवा रे,
नथी लेवा रे नथी लेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (३)

लक्ष्मीना नाथना नामे भीख मांगी
नथी करवा मनोरथो अेवा रे,
अमने अेवा रे अमे अेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (४)

देवनुं छे द्रव्य ते प्रसाद नथी लेता
जेओ लेता होय ते वैष्णवो केवा रे!
तेओ केवा रे अमे अेवा रे

वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (५)

भागवतथी भंडोळ भेगुं करवा
वडीलो तो नथी घुंघुकारी जेवा रे
तेओ केवा रे तमे केवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (६)

नाणाकीय भावो बांध्या सेवा सामग्रीना
पुष्टिप्रभुने नथी त्यां लेवा देवा रे.
लेवा देवा रे अमे अेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (७)

गूढ रसभावरूप घरमां ज सेव्य (प्रभु)
नथी जाहेर करवां जेवा रे
ते तो अेवा रे ते तो अेवा रे
वळी तमे जे कांइ करो तेवा रे. (८)

पोताना तनथी ने पोताना धनथी
घरमां करवी छे कृष्णसेवा रे,
कृष्णसेवा रे अमे अेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (९)

वल्लभनी वाणी पुष्टिजीवो केम वीसरे,
अमने पडया नथी अेवा कांइ हेवा रे,
जेवा तेवा रे अमे अेवा रे
वळी तमे जे कांइ कहो तेवा रे. (१०)

"अेक पुष्टिमार्गी"

※(पुष्टि-अस्मिताको प्रतिवर्षीय लेखाजोखा)※

(क्या पुष्टि-अस्मिताको गीत अहंकारको गीत है?)

कई लोग सोचे हे अस्मिता "अविद्या अस्मिता राग द्वेष और अभिनिवेश रूपा चित्तवृत्ति क्लेशवाली हे." अस्मिता तो रखनी ही नहीं चहिये. 'पुष्टि' होनी चहिये पर पुष्टिकी अस्मिता नहीं. और या लिये ये पुष्टिअस्मिताके गीतमें मैं अपनो अहंकार ही प्रकट कर रह्यो हूं.

आओ! आज अपन् सब मिलके कहें के हम अब महाप्रभुके सिद्धान्तकुं पूरी निष्ठासु निभायेंगे और जियेंगे, तो अपन् सभीको अहंकार खतम हो जायेगो! जो निष्ठा सभी निभाते होंय तो कोईके भीतर अहंकार क्यों और कैसे हो सकेगो? बम्बईमें रेहवेवालेकुं कभी बम्बईमें रेहवेको अहंकार हो नहीं सके. ऐसे सिद्धान्त सब पालते होयेगें तो "अमे एवा रे!" सिद्धान्तके गानमें अहंकार निभ नहीं सकेगो, ये रहस्य अपनकुं स्पष्ट समझ लेनो चहिये.

अपनकुं ये रहस्य क्यों नहीं समझमें आयो वाको एक सीधो सो कारण आपकुं बताउं. सम्प्रदायके अनुयायीन्की जीवनप्रणाली और सम्प्रदायके नेतान्की प्रचारप्रणाली आजकी तारीखमें ऐसी हो गई हे के पुष्टिमार्गीय आदर्शको अनुसरण करनो चाहवेवालेके लिये भी पुष्टिमार्गकुं जीवेके लिये कोई सिद्धान्तसंमत प्रेरक तत्त्व रेह नहीं गये हें. सिद्धान्तकी फ्रेम्वर्क्में बैठ सके ऐसो कोई प्रेरक तत्त्व जीवनमें अपने आस-पास दिखलाई नहीं दे हे. वाके कारण सब प्रॉब्लेम् हे.

अभी एक लड़की केनेडासु आई. वाने अपनी डॉक्टरेट्की थिसिस्के लिये ये विषय लियो हे के पुष्टिमार्गमें पुरुषें या मार्गकुं उतनो नहीं जी रहें हें, जितनी स्त्रियें जी रही हें. सबन्सु इन्टर्व्यू ले-ले के

पूछे के तुम्हारे घरमें पुरुषकी प्रधानता हे या स्त्रीकी प्रधानता हे? घरके ठाकुरजीकी सेवा पुरुष करें के स्त्रियें करें? यों सारे पुरुषन्की विकेट् डाउन् हो जाय वाके सवालके आगे; और, स्त्रियें ही आगे आ पावें. यासु पुष्टिमार्गमें स्त्रिअन्की ही प्रमुखता प्रकट लगे हे. पुरुषार्थी कोई पुरुष पुष्टिमार्गमें निष्ठावाले नहीं हे. ऐसी तो कई भ्रमणायें हें. यासु मैने भी ऐसे ही एक शगूफा वाके सामने छोड़ दियो के "तुम समझ रही हो के पुष्टिमार्गमें हवेली पब्लिक् टेम्पल् हे. तो उन हवेलीन्में तो कोई स्त्रीको कुछ अधिकार नहीं हे". अब रिवोल्ट् करवेवाली बेटीजीन्ने अधिकार लेने शुरु किये हें दादागीरीसूं. बाकी चालु खाताकी जितनी हवेली हें, वामें बेटीजीको कोई अधिकार नहीं हे. प्रायः मुखिया भीतरिया ही होवें. कोई मुखियाणी तो गामड़ामें सेवा करती होंय तो करती होंय. बाकी मन्दिरके सब सेट्-अप्में पुरुष ही पुरुष हें.

ये तो विठ्ठलदास बापोदराको भलो होय के वाने पुष्टिमार्गीय स्त्रिअनकुं कीर्तन गवानो शुरु कर दियो. यासु सब औरतें कीर्तन गावें लग गयीं. नहीं तो कुछ साल पहले कीर्तनिया कौन हते? सब पुरुष हतें, स्त्रियाँ हती नहीं. हवेलीको सेट्-अप् तो पुरुषप्रधान ही हे. अब रही बात घरकी, तो घरमें गृहिणी मुख्य नहीं होयेगी तो और कौन हो सके? यासु घरमें ठाकुरजी और बच्चान् की तरेह पतिकुं भी वो ही संभाले हे. जब विवाहके फेरा फिरें वा बखत स्त्री पुरुषके सामने ये शर्त रखती होवे के तेरो धर्म, तेरो अर्थ, तेरो काम में मेरो ५०% शेअर् रहेगो. मैं कुछ भी नहीं करूंगी. तु जो धर्म करे वामें ५०% मेरो शेअर्. जैसे बिसनेसमें स्लीपिंग् पार्टनर् होवें, वैसे हर स्त्री अपने यहां धर्ममें स्लीपिंग् पार्टनर् होवे. अपने अर्थमें स्लीपिंग् पार्टनर् होवे, अपने काममें स्लीपिंग् पार्टनर्.

खैर, अब तो जमाना बदल गयो के पुरुष कुछ करे ही

नहीं. पुरुष धर्म न करे तो स्त्री नहीं करे तो करे क्या? तो आखो रिवर्सल् ऑफ् ऑर्डर् हो गयो. पुरुष फेरा फिरते बखत ये प्रॉमिस् करतो हतो के ऑलराइट् तेरी शर्तें मोकुं मंजूर हे, तु धर्म अर्थ काम में अर्धांगिनी होयगी. तु मेरी और मेरे परिवारकी परवाह करेगी. शादीमें सिच्युअेशन् कैसी होवे, लड़काको हाथ नीचे होवे लड़कीको हाथ वाके हाथके ऊपर होवे. वाको भाई सूपड़ासु यव-तिल डाले. भाई और पति कन्फर्म करें हें. ये दोनोंके बीच पत्नी भी कन्फर्म करे के ये टर्म्स् एग्रीमेन्ट्में हम दोनों अर्धांग और अर्धांगिनी होने जा रहें हें. और वो अग्निदेवताकी साक्षीमें ये शपथ ली जाती थी. धर्मकी प्रणाली जा ढंगकी हती वामें स्त्री अर्धांगिनी हती, धर्म-अर्थ-काममें स्लीपिंग् पार्टनर् हती. पर मॉडर्न सोसायटीमें डिविज़न् ऑफ् लेबर् हो गयो वाके कारण अर्थ पुरुषार्थ स्त्रियाँ करवें लग गईं. या सिच्युएशन्में अपनकुं पता नहीं चले के अपने ऑरिजिनल् कन्सेप्ट् क्या हते! कैसे ढंगसु अपन् धर्मार्थकामकुं जीते हतें! कैसे ढंगसु अपन् भक्तिकुं जीते हतें. ये मॉर्डन् स्टाइल्में सब मिस्-मॅच् होती जा रही हे.

वा मिस्मॅच् होनेके कारण या स्टाइल्में सबसु बड़ी नर्वस् सिन्ड्रोम् हम गुसांईयन्में पैदा भयी. अब हम ये सोचें हें के जो तुम वैष्णवन्कुं अच्छो लगे वो हम बतावें तो हमारे दाना-पानीको जुगाड़ बैठेगो, नहीं तो हम भूखे मर जायेंगे, समाजमें हम टिक ही नहीं पायेंगे. जनता हमकुं फेंक देगी तो हम जायेंगे कहां? वा तकलीफके कारण जो भी पब्लिकूकुं अच्छो लगे हे ऐसो सिद्धान्त बतानो. जो महाप्रभुको अच्छो लगे हे वो सिद्धान्त केहवेमें न तो हमारे भीतर इन्टेलॅक्च्युअल् गट्स् हे न हमारेमें मॉरल् करेज् हे; और न पुष्टिसम्प्रदायके प्रति हम गुसांईयन्में ऐसो स्ट्रोंग् कमिट्मेन्ट् ही अब बच गयो हे.

पुष्टि-अस्मिताको अकाउन्ट् ऑडिट् करनो होय तो ये पहेलु हें. वाकुं कैसे संभालनी वो जबरदस्त प्रॉब्लेम् खड़ी हो गई हे.

ये चर्चा आरोप लगाके भी हो सके हे और शान्तिसु भी सब तरहसु हो सके हे. मगर आजकी तारीखमें हर पुष्टिमार्गीकुं अपने परिवारमें, अपने समाजमें, अपने सम्प्रदायमें या ईश्युकुं गम्भीरतासुं लेवेकी आवश्यकता हे, यदि अपनेकुं एज् अ पुष्टिमार्गी सर्वाइव् करनो हे तो. नहीं तो अपन् सर्वाइव् नहीं कर सके, ये बेज़िक् इश्यु हे. क्योंके जा तरहकी लाइफ्-स्टाइल् बनती जा रही हे वामें पब्लिकूकुं जो अपेक्षा हे वा अपेक्षाकुं पूरी करनेके लिये सिद्धान्तकुं छोड़नो पड़ रह्यो हे.

वो केनेडियन् लड़कीने मोकुं परसों फोनपे बताई के "गोस्वामी एवरीबडी नोज़् यु वेरी वेल् बट् नो बडि एग्रीस् विथ् यु" मैंने कही "अमे एवा रे!" ये तकलीफ होय; के फेक्ट् होय, या फेक्टकुं एप्रीशिएट् करनो हे तो एप्रीशिएट् करो, एक्सेप्ट् करनो हे तो एक्सेप्ट् करो. कन्फेस् करनो हे तो कन्फेस् करो. एवरीबडि नोज़् वोट् महाप्रभु एक्पेक्ट्स् फ्रॉम् अस् बट् नो बडि एग्रीस् विथ् व्हॉट् महाप्रभु आस्कस् अस् टु फोलो.

अभी एक बालकने बहोत अच्छी बात कही "श्याममनोहरजी कहे वो बात सब सच्ची हे, सिद्धान्त भी सब सच्चे पर हम क्यों मानें बात उनकी? हम क्या उनके गुलाम हें? हम तो पुष्टिमार्गमें प्रिन्स् ऑफ वेल्स् हें". अरे! राजाओंके राज्य रहे नहीं और हम अचानक प्रिन्स् ऑफ् वेल्स् कैसे हो गये? ये क्या लफड़ा हो गयो हे? कोई वापीनरेश हो रह्यो हे, तो कोई कुछ पापीनरेश. भई तुम नरेश हो कैसे गये? अपने देशमें छोटे-छोटे राज्य तो सभी अबॉलिश् हो गये. भारत एक अखंडराज्य हो गयो. तो तुम नरेश भये कहांसु? कोई कहे के हमारे गांवके हम युवराज धर्माचार्य हें. इन सब बातनको निर्णय कैसे करनो? अपने पास कोई न कोई कॉन्स्टिट्युशन् तो होनो चहिये. वाके आधार पर अपन् डिसाइड

कर सकें.

आजकी आपकी पर्सनल् लाइफस्टाइल् और हमारी प्रचारकी स्टाइल् ऐसी हो गयी हे. वो एक-दूसरेसु बराबर अनुरूप हो गई हे. मगर अपन् दोनों महाप्रभुके सिद्धान्तके अनुरूप नहीं रेह गयें हें. या प्रॉब्लेम्को क्या सोल्युशन् हे? वो अपनुकुं विचारनो पड़ेगो ये मुख्य विषय हे.

एक मजाकिया बात बताउं. जो बूढ़े होयेंगे उनकुं याको रहस्य पता होयेगो. १७५६ १८५६ या १९५६ में एक बहोत बड़ो अकाल पड्यो हतो ऐसे कह्यो जाय हे 'छप्पनियो दुष्काल'. शायद १९५६में पड्यो होयगो. वा अकालमें हिन्दुस्तानके कई लोग भूखके मारे, अनाजके दाना-दानाके लिये तड़प-तड़पके मर गये हते. और भगवान् गीतामें मज़ेदार आज्ञा करे हें **''यं-यं वापि स्मरन् भावं त्यजति अन्ते कलेवरं तं-तमेव एति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः''** (भग.गीता.८।६) मरते बखत जा चीजको ध्यान अपने मनमें रेह जाय (वैसो स्वरूप अपनुकुं सदा प्राप्त होवे). तो जो भूखसु तब तड़प रहें हतें, उन बिचारेनुके मनमें ध्यान क्या होयगो? मोहनथालको मठड़ीको बुंदीको... सबके मनमें वोही तड़प हती. यों छप्पनिया दुकालमें सब बिचारे मर गये तब ''अन्ते या मति सा गतिः'' जो अन्तमें मति हती सो गति भयी.

वो सब पुष्टिमार्गमें जनम गये! क्योंके चित्रगुप्तकुं ये रहस्य पता हतो के यदि उनकुं जैनमें भेजेंगें तो दुबारा पर्युषण कर-करके मरनो पड़ेगो. यासु जैनसम्प्रदायमें नहीं भिजवायो. मुसलमानमें जावे तो वहां तो नमाज़ बक्षाने जावें रोज़ा गले पड़ जावें. शैविज़म्में खाली पानी शिवलिंगपे टपकतो रहे कुछ मज़ेदार भोग आवे नहीं. क्रिश्चियनुमें भेजे तो चर्चमाउस् सबसु कमजोर मान्यो जावे. चर्चमें

खावेको मिले ही नहीं, खाली प्रेयर् ही प्रेयर् होवे! वासुं छप्पनिया दुकालमें मरवेवाले सबनुकुं चित्रगुप्तने पुष्टिमार्गमें भिजवा दिये!

निरन्तर सब तड़प रहें हें ''छप्पनभोग कहां हो रह्यो हे?... छप्पनभोग कब होयगो?'' अब डिमान्ड् हे तो सप्लाय् तो होयेगी ही. छप्पनिया दुकालके मरे भये अकाल पीड़ितकी डिमान्ड् छप्पनभोगकी हे तो सप्लाय् भी छप्पनभोग होयेगी. अब वैष्णव वा बातसु उभर नहीं सके. वामें 'अमे एवा रे' करो तो करो, गाते होय तो गाते रहो. हू कॅअर्स फॉर् यु. तमे कहो छो ने के ''वाड़ीओमां भक्तिना भवाड़ा गोठवीने कृष्णविक्रयना धन नथी लेवा रे' अरे जावा द्यो खोटी खट-पटने छप्पनभोग लाव. छप्पनिया दुकाळमां अमे आज वात करी करी ने मरी गया हता. हवे नहीं आपो तो बीजो भव लेवो पड़शे अमारे''. वैष्णवनुके मनमें ये श्रद्धा घुस गई के जब तक प्रसाद नहीं देखेंगे, ये छप्पनिया दुकालकी जीवात्माएं मुक्त नहीं हो पायेंगी.

उन जीवात्मानुकुं यदि सचमुचमें ठाकुरजीके दर्शनको भाव होय तो घरमें क्यों नहीं सेवा करें. हवेलीके दर्शनको भाव होय तो वहां नित्यप्रति सेवा क्यों नहीं करें? सबकुं ऑफिस् जानो हे, काम करनो हे, पर छप्पनभोग करो तो सब आ जाय. सबकुं एक्स्ट्राऑर्डिनरी एक्साइट्मेन्ट् हो जाय, ये एक रहस्य हे. डिमान्ड् या तरीकेकी हे तो सप्लाय् भी वा तरीकेकी करनी पड़े.

यामें हकीकत सोचें के कहानी सोचें तो फिर पाछी वोही बात आ रही हे, *''कुछ हकीकत हे कुछ कहानी हे कितनी पेचीदा ज़िंदगानी हे.''* पुष्टिमार्गकी बड़ी पेचीदा ज़िंदगानी हो गई हे. कुछ यामें हकीकत हे क्यों हकीकत हे? एक बात तो ठीक हे के ठाकुरजीके मनोरथमें अपन् हाजिर नहीं रहे तो अपने जैसो अपराधी

कौन? ठाकुरजीके मनोरथमें हाजिर रेहनो यदि हम महाराजन्को भाव होय तो हम अपने ठाकुरजीको मनोरथ कर सकें वामें तुमकुं इन्वाइट् करवेकी क्या जरूरत हे? तुमकुं इन्वाइट् कर रहें हें मतलब शायद ऐसो भाव होय, हमारे ठाकुरकुं छप्पनभोगकी जरूरत नहीं हे पर तुमकुं जरूरत हे. तुम्हारे आत्मोद्धारके लिये छप्पनभोगकी जरूरत हे. श्रीनाथजीमें बड़ी अच्छी प्रक्रिया हे अन्नकूट होवे वा दिन वा सखड़ी-भातकुं भील लोग लूंट जाय, ऐसे छप्पनभोग वैष्णवन्कुं लूंट जावे दो. जो प्रसाद चख लेंगे वो सबकी मुक्ति हो जायेगी. सबको नित्यलीला प्रवेश होयगो. वो पाछो लूंटवे नहीं दे छप्पनभोगको प्रसाद. कौनने कितने रुपियाकी सामग्री जमा कराई वा हिसाबसु वा प्रपोर्शन्में सामग्री समाधानमें मिले. जनताके उद्धारके लिये छप्पनभोग नहीं हे. यदि छप्पनभोग धरनो गोस्वामी और अनुयायी दोनोंके लिये अनिवार्य या आवश्यक होय तो दर्शन करावेकी क्या जरूरत हे? सबकुं केह दो सब करें. यासु पाछी दूसरी तूत घड़ रखी हे के महाराजके ठाकुरजीको ही छप्पनभोग होवे. वैष्णव बहोत समझदार हो गयो हे. वो केह रह्यो हे तुम्हारे ठाकुरजीको छप्पनभोग आवे तो हमारे द्रव्यसु ही हे सो अब हम स्वयं व्यापारिक हवेली खोलके चलायेंगे. वैष्णव भी छप्पनभोग करवे लग गयो. अब ना कैसे पाड़नी फंस गये. पुष्टिमार्गमें ये सब गंभीर समस्या आ गयी हें.

वैष्णव छप्पनभोग कर सकें के नहीं कर सकें एक हिस्टॉरिकल् बात आपको बताउं : आखो लायेबल् केस् सिर्फ या क्षुद्र झगड़ाके कारण भयो हतो के भूलेश्वर महादेवजीके भक्त महादेवजीको छप्पनभोग कर सकें के नहीं? बिचारे शैव लोगन्ने वा बखत ऐसी सोची थी के पुष्टिमार्गवालेन्ने छप्पनभोग कर-करके सब शैवन्कुं वैष्णव बनवेकुं ललचा लियो तो क्यों अपन् भी इन बिटले भयेन्में दुबारा महादेवजीकुं भी पॉप्युलराइज् नहीं करें! यासु भूलेश्वर महादेवजीकुं भूलके जो पुष्टिमार्गमें भटकते हो गये उन वैष्णवन्कुं फिरसु भूलेश्वर महादेवजीके

दर्शन करवेके लिये एक छप्पनभोगको आयोजन सोच्यो गयो. उनने छप्पनभोगकी घोषणा कर दी. सब गुसांई दंडा-झंडा लेके खड़े हो गये के महादेवजीकुं छप्पनभोग नहीं धर्यो जा सके. पर महादेवजी छप्पनभोग क्यों नहीं अरोग सके? नहीं; वो हमारे पुष्टिमार्गकी मॉनोपॉली हे. वापेसु झगड़ा बढ़ते-बढ़ते लायेबल् केस तक पहोंच गयो! मूल झगड़ा शुरु वहांसु भयो. वो जो शैव-ब्राह्मण हतें वे अपनेपे नाराज़ हो गयें. और तबसु उन लोगन्ने जिद्द पकड़ी के महाराजन्को खतम करके रहेंगे. ऐसी पुष्टिमार्गकी सबसु बड़ी ट्रेजडी हे जापे अपन्कुं ध्यान देनो पड़ेगो.

महाप्रभुको जीवनचरित्र पढ़ें तो पता चले के महाप्रभुने श्रीनाथजीकुं छप्पनभोग कभी नहीं धर्यो. न नवनीतप्रियजीकुं छप्पनभोग धर्यो. छप्पनभोग तो महाप्रभुजीने जगदीशजीकुं धर्यो हतो. वो भी क्यों धर्यो? जगन्नाथपुरीके राजाने जितनी भेंट धरी हती वो लेके कौन जावे? तो जगदीशजीकुं छप्पनभोग अरोगा दियो. महाप्रभुने कभी नवनीतप्रियजीको या श्रीनाथजीको या मदनमोहनजीको छप्पनभोग कियो ऐसो उल्लेख नहीं मिले.

अपने भीतर ऐसी नर्वसनेस् आ गई हे के छप्पनभोग नहीं करें तो वैष्णव आयेगो नहीं हमारे पास. हमारी शादी होय तो खर्चा निकालवेकुं छप्पनभोग एनाउन्स् कर दें. बच्चाकी जनोई होय तो छप्पनभोग एनाउन्स् कर दें. कोई मन्दिरकुं प्रमोट् करनो होय तो छप्पनभोग एनाउन्स् कर दें. माथेपे कर्जा हो गयो होय तो छप्पनभोग करवेपे तुरत चुक जाये. कितनो सीधोसो उपाय हे! एक छप्पनभोग एनाउन्स् कर दो तो सब कर्जा चुकतो हो जाय. कोईसु मांगवेकी जरूरत नहीं पड़े. क्योंके महाराजन्कुं भी पता हे के छप्पनिया दुष्कालकी मरी भई सारी प्रेतात्मा आज पुष्टिमार्गमें भटक रहीं हें. ये तो एकदम फिट् और नॉन्-टॅक्सेबल् फोर्म्युला हे. यासु अच्छो और कोई धंधा हो नहीं सके. हम लोग केहवेमात्रकुं गोस्वामिबालक हें पर बड़े चालाक

बनिया बन गयें हें. बनियान्के गुरु होवेके कारण बनियान्सु ड़ेढ़े बुद्धिमान हो गयें हें. भगवत्स्वरूप और भगवत्सेवा के मनोरथ और भगवत्कथा को धंधा कैसे प्रमोट् करनो वाको रहस्य जितनो हम जानें वाकी तुम कल्पना भी नहीं कर सको. आज अपन्कुं महाप्रभुके सिद्धान्तकी गरज नहीं हे. पब्लिक् डिमाण्ड् क्या हे वाकी गरज हे. एक बात सच हे यामें के ये रहस्य किरीटभाईकुं पता नहीं चल्यो यालिये वो बिचारो भागवतसप्ताह करतो फिरे हे, व्यर्थमें ब्रह्मसम्बन्ध देतो फिरे हे. एक हवेली खोलके छप्पनभोग कर दे तो सब वैष्णव वाकुं वल्लभराजकुमार झटपट मान लेंगे! मान लेंगे के वो साक्षात् गोस्वामी बालक पूर्णपुरुषोत्तम हे.

सम्प्रदायको गम्भीर ऐतिहासिक रहस्य आपकुं बता रह्यो हुं. यद्यपि यामें कोई दुराशय तो नहीं हतो, फिरभी महाप्रभुने वर्णाश्रमधर्मकी विफलताकुं साक्षात् निहारी और कह्यो :

''वर्णाश्रमवतां धर्मे मुख्ये नष्टे छलेन तु क्रियमाणे न धर्मः स्याद् अतः तस्मात् न मोचनम्. अथापि धर्ममार्गेण स्थित्वा कृष्णं भजेत् सदा''.

(त.दी.नि.२।२२३-२१५)

वर्णाश्रमधर्मको सारो सेट्-अप् कॉलेप्स् हो गयो हे. अब तुम वाको अनुसरण करो चाहे मत करो. तुम वाके भरोसे अपनो आत्मोद्धार नहीं कर पाओगे. महाप्रभु वर्णाश्रमविरोधी नहीं हतें, दुःखी हतें वर्णाश्रम धर्मके नष्ट होवेसु. याके लिये महाप्रभु आज्ञा करें हें **''अथापि धर्ममार्गेण स्थित्वा कृष्णं भजेत् सदा''** (वहीं) फिरभी जो बने उतनो करो. मर रह्यो हे वाके लिये वाको मर्डर् मत करो. मरनो वाकी नियति हो सके हे. अपने घरमें अपनो बाप या पति कॅन्सरसु सफर् करतो होय तो अपन् मर्डर् थोड़े ही करें? जब तक जीये तब तक वाको

इलाज ही तो करें. ऐसे वर्णाश्रमधर्म यदि खतम होने जा रहयो हे तो वाको मर्डर् मत करो. तुम अपने बनते प्रयास करो. तुमसु बने इतनो पालो, पर पकड़ो तुम कृष्णकुं ही. क्योंके—

सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि।
पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्णएव गतिः मम॥

(कृष्णाश्र.१)

कृष्णकुं पकड़ेंगे तो अभी भी अपनो उद्धार हो सके हे. ये बात महाप्रभुने ब्राह्मणन्के विरोधमें नहीं कही हती पर सम्-हाउ ये बात ब्राह्मणन्के विरोधमें चली गई. क्यों गई? वाको कारण समझो. क्योंके कृष्णभजनमें महाप्रभुने ब्राह्मणकी मध्यस्थता अनिवार्य नहीं गिनी. हर व्यक्ति, ब्राह्मणसु लेके मुसलमान तक, जो कृष्णकी सेवा करनो चाहतो होय, वो अपने घरमें अपने परिवारजनके साथ कृष्णकी सेवा कर सके हे. वामें ब्राह्मणकी मध्यस्थता अनिवार्य रेह नहीं गई. वाके कारण अपने यहां ब्राह्मणवर्ग पुष्टिमार्गके अगेइन्स्ट् हो गयो. क्योंके पुष्टिमार्गमें ब्राह्मणको रोल् क्या? वा बखत ये ट्रेजडी भयी.

वार्ता पढ़ोंगे तो ख्याल आयेगो. वासुदेवदास छकड़ाकी वार्तामें आवे के श्राद्धमें वैष्णवकुं बुलानो के ब्राह्मणकुं बुलानो? वा बखत पाछो ये नक्की हो गयो के ब्राह्मण माजनाके मिले नहीं हे, ब्राह्मणकुं बुलावेके बजाय वैष्णवकुं बुलाके प्रसाद लिवा दो. वो अगेइन्स्ट् ब्राह्मण नहीं हते पर बात ब्राह्मणन्के अगेइन्स्ट्में चली गई. जिन व्यक्तिन्में ब्राह्मणत्वको थोड़ो बहोत अहंकार रेह गयो हतो, उनने या सिस्टम्के सामने रिवोल्ट् कियो. पुष्टिमार्ग और ब्राह्मणन् को संघर्ष तबसु चल रह्यो हे.

रिवोल्ट् कैसे कियो? बहोत सारे स्वधर्माचरणमें, जाकुं अपन्

'पुष्टिमार्गीय धर्माचरण' कहें हें, वामें ब्राह्मणको प्रॅक्टिकली कोई रोल् नहीं हे. यहां तो पता नहीं पर गुजरातमें मैंने देख्यो हे या लिये बता रह्यो हुं. ये भरम गुजरातीमें भर गयो के रसोई तो महाराज बनावे. 'महाराज' मानें ब्राह्मण. लखपति करोड़पति अच्छेसे कुक् लाके रसोई बनवा सके. खुद होटल्में खा ही रहें हें पर घरमें रसोई ब्राह्मण महाराज बनावे. पुष्टिमार्गमें ब्राह्मणनूकुं बनियानूके नोकर बना दियो गयो. ब्राह्मणनूको भारी डिग्रेडेशन् यामें हो गयो. हम ब्राह्मणनूकी अस्मिता खंडित हो गई. कौनसे एक्सटेन्ट् तक? 'महाराज' शब्दको मतलब रसोईया हो गयो. ब्राह्मणनूकुं राजानूके राजा तरीके बिरदायो जातो हतो वो 'महाराज'को अर्थ अब रसोईया हो गयो.

मैं तुलसीविलामें रेहतो हतो तब मेरे यहां कुछ लोग आयें हतें. तब उन्होंने पूछ्यों "तमे महाराज छो?" मैंने कही "हा महाराज छुं". उनने कह्यो "अमारे त्यां वीस जणा गुजरातथी आवी रह्या छे तमे रसोई बनावी आपशो?" मैंने कही "एवो महाराज हुं नथी. कोई जुदो महाराज छुं". तब उनने पूछी "तो तमे कई जातना महाराज छो?" मैंने कही "महाराजनी पांच-दस वॅरायटी होय तेमांनो एक हुं छुं पण रसोई बनावनारो महाराज हुं नथी". तब वो बोले "तमने नुकसान नहीं थवा दईए!". ये दुर्गति ब्राह्मणनूकी भयी.

क्योंके तुम लोगनूके मनमें कहीं न कहीं एक भ्रान्त धारणा घर कर गई. स्वामी विवेकानन्दने एक बहोत अच्छी बात कही हती के हिन्दुधर्म किचनूमें कनूफाइन्ड् हो गयो हे. अपनूकुं सारी शुद्धि और अशुद्धि को आधार बस किचन् लगे हे. किचनूमें महाराज होनो चाहिये. बाकी हम तो फाइवस्टार् रेस्टोरांमें कोईके भी हाथको भोजन कर सकें हें. चाइनीज् मेक्सिकन् फूड् और बर्गर् भी खा सकें पर रसोई बनावेवालो महाराज ही चहिये. जाकुं तुम 'महाराज' केह रहे हो वो न तो महाराज रेह गयो, ऑर्डिनरी एक सर्वन्ट्

हो गयो एज् सच् वो रोल् ब्राह्मणको कभी हतो नहीं. "**ब्राह्मणस्य ही देहो अयं क्षुद्रकामाय न इष्यते**" (भाग.पुरा.११।१७।४९) शास्त्र स्पष्ट आज्ञा करे हे के ये ब्राह्मणको देह तुमकुं मिल्यो हे वो वा तरीकेकी नोकरी करवेके लिये नहीं मिल्यो हे. "**ऋतामृताभ्यां जीवेत् तु मृतेन,प्रमृतेन वा! सत्यानृताभ्यामपि न वा श्ववृत्या कदाचन.**"(मनु.स्मृ.४।४) कुत्ताको जीवन जीवेके लिये तुमकुं ब्राह्मणकी देह नहीं दी गई. जब तुम नोकरी कर रहे हो तो कुत्ताको जीवन जी रह्यो हो. शास्त्र इतनी स्ट्रोन्ग् गाली दे. पर अपन् यों समझें के धर्म किचनूमें कनूफाइन्ड् हे तो महाराज तो चहिये ही चहिये. महाराज बिना रसोई कौन बनावे? ये दुर्गति ब्राह्मणनूकी अपनूने पुष्टिमार्गमें कर दी.

महाप्रभुकुं ऐसो इन्टेन्डेड् नहीं हतो पर सम्-हाउ ये दुर्गति हो गई. अपन् ये भी नहीं केह सकें के पुष्टिमार्गमें ब्राह्मण स्वीकार्य नहीं हे. क्योंके महाप्रभुके कालमें देखें तो बहोत सारे ब्राह्मण महाप्रभुके शिष्य हतें. आजकी तारीखमें सत्य हे के पर्सेन्ट्वाइज् ब्राह्मण मिनिमम् पुष्टिमार्गमें हें.

और बनिया पर्सेन्ट्वाइज् मेक्सिमम् पुष्टिमार्गमें हें. पर महाप्रभुके वक्त ये स्थिति नहीं हती. तब ब्राह्मण पुष्टिमार्गमें उतनो ही पर्सेन्ट्में हतो जितनी ओर कॉम्युनिटीके लोग हते. महाप्रभु ब्राह्मणद्वेषी नहीं हतें. महाप्रभु तहेदिलसु या बात स्वीकारतें हतें के वर्णाश्रमधर्मको जो सेट्-अप् हे वो खतम हो गयो हे करके आत्मोद्धारके लिये हर व्यक्तिकुं अपनो साधन अपनानो पड़ेगो. अपने घरमें "**नन्दनन्दन कर घरको ठाकुर आप होय रहे चेरो यामें कहा घटेगो तेरो**" या सेट्-अपूमें महाप्रभु-प्रभुचरणने पुष्टिमार्ग बतायो हे. वो केवल ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रन् कुं ही नहीं प्रत्युत म्लेच्छनूकुं भी बतायो. यासु महाप्रभुके मनमें कोई ब्राह्मणद्वेष हतो ऐसे अपन् सोच नहीं सकें.

पर याके कारण एक दुर्घटना ये और भयी के जिनमें ब्राह्मणत्वकुं ही या ब्राह्मणत्वकुं भी निभावेको अभिमान हतो उनकुं ब्राह्मण होनेके अनुरूप कोई रोल् एसाइन् हो नहीं पायो. यासु यदि कोई ब्राह्मण पुष्टिमार्गमें ब्राह्मण तरीके जीनो चाह रह्यो होय तो पुष्टिमार्गके पास वाकुं वाकी ब्राह्मण होवेकी सामाजिक हेसियतमें देवेके लिये क्या हे? कोई ठोस प्रोग्राम् हे नहीं. लिहाजा ब्राह्मणन्ने अपने साथ दो तरीकेके षड्यन्त्र किये. एक ये हतो के पुष्टिमार्गीय भगवत्सेवाकथारूप धर्मन्के साथ-साथ जो अपने यहांके वर्णाश्रमीय षोड़शसंस्कार अवर्जनीय और अनुष्ठेय हतें, उन संस्कारन्में तो ब्राह्मण मोजुद रहते ही हते सो या तरहसु उपस्थित ब्राह्मणन्ने पुष्टिमार्गीय जनतामें अन्याश्रयत्यागकी भावनाकुं शिथिल बनावेको निरन्तर प्रयास चालु ही रख्यो. जिनकुं अपन् 'पुरोहित' या 'गोरमहाराज' कहें उनकुं पुष्टिमार्गमें सबसु बड़ी ये ही आपत्ति लगे के उनको पुष्टिमार्गमें रोल् क्या हे?

दूसरो षडयन्त्र ये के उनने अपनी दुःखती नस दबा दी. **''प्रेम्णो अन्यत् साधनं लोके नास्ति मुख्यं परं महत् श्रीभागवतमेव अत्र परं तस्य हि साधनम्''** (त.दी.नि.२।३२६) भगवान्कुं पानेको प्रेमसु बढ़के कोई साधन हे नहीं और श्रीभागवत भगवत्प्रेमकुं जगावेको सबसूं बड़ो साधन हे. उनने कही जाओगे कहां दिल तोड़के, क्योंके भागवतकी कथा तो हम भी करेंगे. भागवतकी कथा ब्राह्मणें करवें लगें. एक्ज़ेक्टली महाप्रभुने कही याके अपोज़िशन्में. पुष्टिमार्गकुं खतम करवेके लिये ''मिंयाकी जूती मिंयाका सर''की तरह भागवत अपने यहां कही जाय. महाप्रभुने एडमीट् कियो हे के भागवतके अलावा प्रभुमें प्रेम जगावेको दूसरो कोई साधन हे नहीं और भागवत अपन् पढ़नो नहीं चाहें, बालकें पढ़ानो नहीं चाहें. सप्ताहकी विधि अपने यहां हती नहीं. महाराज लोग सप्ताहमें कभी भी जाते भी नहीं हतें. सो बरस पहेलेके जितने मॅगेज़िन् पढ़ो. सब महाराजन्की युनेनिमस् निन्दा वामें मिलेगी के महाराज भागवत-सप्ताहमें क्यों नहीं आवें? क्योंके महाराज

लोग अपठित हें, यासु महाराजन्कुं डर लगे हे के भागवत-सप्ताहमें जायेंगे और कोईने भागवतमेंसु कुछ सवाल कर दियो और वाको जवाब नहीं दे पाये तो इनकी पोल खुल जायेगी!

पहले भागवतकी सप्ताहमें महाराज जाते नहीं थे और अब खुद वल्लभकुलके बावा-बेटीजी-महाराजन्ने सप्ताह बिठानी शुरु करी. वाके बाद लोकोपकारार्थ चंदा इकट्ठे करवेकी भागवतसप्ताहको दोरा चल्यो. तब वा नामसु चंदा इकट्ठे करवेकी भागवतसप्ताह अब तो खुद हम वल्लभकुली बालक करवें लग गयें! क्योंके जब भगवान्कुं धनोपार्जनको हथकंडा बनायो जा सकतो होय तो भगवान्की कथाकुं क्यों नहीं? ये पुष्टिमार्गकी अस्मिताके ध्वस्त होवेकी दुर्गतिकी दास्तान हे.

अपन्ने ब्राह्मणन्की केॅर् नहीं ली और ब्राह्मणन्ने इतनो बड़ो रिवॅन्ज् अपन्सु ले लियो. अपन्ने ब्राह्मणन्कुं मुखिया बनाये, भीतरिया बनाये, दूधघरिया बनाये, जलघरिया बनाये. महाप्रभुकी वार्ता पढ़ो वामें आवे हे के **''तुम कैसे आचार्य हो के तुम्हारे यहां शूद्र जल भर रह्यो हे और बरतन मांज रह्यो हे''**. महाप्रभुने वार्तामें ये बात कही हे के **''नहीं! हमारे मतमें ब्राह्मण जो स्वधर्मनिर्वाह नहीं कर रह्यो हे और शूद्र जो भगवद्धर्मको निर्वाह कर रह्यो होय तो वो बेटर् हे''** ये बात ब्राह्मणन्के अगेइन्स्ट् नहीं कही हती, क्योंके महाप्रभु खुद ब्राह्मण हतें और ब्राह्मणधर्मकुं दम-खमसु पालतें हतें. पर उनकी फॉरसाइटेड्नेस् ये हती के महाप्रभु देख पायें थे के बात आगे चलवेवाली नहीं हे. वा लिये महाप्रभुने आज्ञा करी थी के स्वधर्मके निर्वाहसु वंचित ब्राह्मणन्के बजाय भगवद्धर्मको निभानेवालो शूद्र हमारे यहां शुद्ध हे. या लिये हम शूद्रसु जल भरा रहें हें. और शूद्रसु बर्तन मंजवा रहें हें. ये अपनो एप्रोच् हतो. जामें बिचोलियाकी जरूरत नहीं हती. जामें हर व्यक्ति परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण

कुं डायरेक्ट् एप्रोच् कर सकतो हतो.

पर अन्तमें दुर्गति ये भयी के ब्राह्मण हट गये और हम महाराज लोग अन्यान्य ब्राह्मणन्की तरह पुरोहिताई पंडागिरी कथक्कड़ी करवेवाले उनके सबस्टिट्युट् हो गये! एक्जेक्ट् वो ही काम अब हम कर रहें हें जो ब्राह्मण तुमकुं यज्ञ-यागादि द्वारा करवातो हतो और दक्षिणा लेतो हतो, कर्मके अनुष्ठानमें बिचौलिया बनतो हतो के अपनो मन्त्र तुम नहीं बोल सके करके तुम्हारो मन्त्र हम बोलेंगे. कौनसे एक्स्टेन्ट् तक? वर-कन्याको हस्तमिलाप हो रह्यो होय *"इमाम् सुकन्यां सर्वाभरणभूषितां धर्मार्थकामपुरुषार्थेषु सहधर्मचारिणीभार्यात्वेन तुभ्यम् अहं सम्प्रददे"* कन्याको बाप नहीं बोले ब्राह्मण बोले. *"इमां कन्याम् अहं प्रतिग्रह्णामि"* वो भी वरराजाकुं बोलवेको होश नहीं सो ब्राह्मण ही बोल देवे! ब्राह्मण क्या बोल गयो ये पता चल जाय तो दो थप्पड़ मारे के तु कैसे ले जा रह्यो हे? हस्तमिलाप करवे घोड़ापे चढ़के तो मैं आयो हुं. वर-वधूकुं पता नहीं हे के क्या मन्त्र बोले जा रहे हें!

या तरहकी आपाधापी अपने पुष्टिमार्गमें भी इन्ट्रोड्युस् हो गयी. तुमकुं पता नहीं हे के ब्रह्मसम्बन्धके बखत तुमने क्या समर्पण कियो! तुमने ठाकुरजीकुं समर्पण कियो के गुरुकुं समर्पण कियो? हम महाराजनकुं भी पता नहीं हे के ब्रह्मसम्बन्धको मतलब क्या. तुम वैष्णवनकुं ब्रह्मसम्बन्ध लेवेके बाद न तो ब्रह्मसम्बन्धको अर्थ और न लेवेको प्रयोजन ही पता चले हे. लेनेके बाद तुम्हारो कर्तव्य क्या ये भी तुमकुं पता नहीं हे और न ये बतावेकी हमकुं भी फुरसत हे. एक बस आरे-कॉलोनीकी दूधकी बोटल्की तरह जो बोटल् आयी वामें दूध भरो और ढक्कन बंद करते चले जाओ. ऐसे ही तुलसी हाथमें थमायी मंत्र बुलवायो और भेट धरके अपने घर चले जाओ. वैष्णवन्को ऐसो पॉप्युलेशन् बढ़तो जा रह्यो हे जाकुं हम सम्हाल

ही नहीं पावें हें.

भरतपुरके राजाकी प्रसिद्ध घटना हे वाकी ३०० रानी हती. बच्चाएं इतने हो गयें के उन सबनूके नाम नहीं पहेचाने. वाने नक्की कियो के जो बच्चा सुबहमें नमस्कार करवें आवे वाकुं एक रुपिया दउंगो. बच्चाने नमस्कार करनो शुरु कियो. गांववालेनूकुं पता चल गई के राजा नमस्कार करनेपे एक-एक रुपिया दे हे. सब दीनभावसु चले गयें नमस्कार करवें. राजाने उनकुं भी दे दियो रुपिया. कोईकुं पता चली के "हुजुर ये आपकी औलाद नहीं हे." "तो किसकी हे?" तो कही के "गांवके तेलीकी हे". उनने कही "जितनी रानी, उनके जितने बच्चां, उनके जितने पेलेस्, उनके टॅग् लगाओ और राजकुमारनूकुं पहनाओ. अच्छो हे टॅग् डुप्लिकेट् नहीं करवायो. किरीटभाईने तो टॅग् डुप्लीकेट् कर लियो. तुम टॅग् दिखा-दिखाके ब्रह्मसम्बन्ध दे रहे थे वाने भी डुप्लीकेट् टॅग् दिखा दियो. मैं भी ब्रह्मसम्बन्ध दे रह्यो हुं आ जाओ. मैं भी भागवतकथा कर रह्यो हुं आ जाओ. अब अपन् कहें के ये कुंभारकी औलाद हे ब्रह्मसम्बन्ध नहीं दे सके. अरे भाई! कुंभारकी औलाद क्यों नहीं दे सके? यदि महाराज ठाकुरजीकी सेवासु पैसा कमा सकें, तो महाप्रभु कहें हें के वो महाराज 'चांडाल' मानें जानवरकी खाल खींचवेवालेके बराबर अपवित्र हे! तो वासुं तो वो कुंभार पवित्र होयगो के नहीं! श्याममनोहर किरीटभाईके पक्षमें हो गयो ऐसो नहीं हे. मैं किरीटभाईके पक्षकी बात नहीं करूं हुं. पर आज नहीं तो कल-परसों कभी न कभी बैठके महाप्रभुको सिद्धान्त क्या हे ये शान्तिसु स्वस्थतासु समझनो तो पड़ेगो ही. अन्यथा अपन् पुष्टिमार्गकुं वा तरहसु नहीं जी पायेंगे जा तरहसु महाप्रभुने अपनेकुं जीवेकी प्रेरणा या आज्ञा दी हे. बस वा अर्थमें अपन् पुष्टि-अस्मिता गा रहें हें **"अमे एवा रे वळी तमे जे कांई कहो तेवा रे. निष्ठाथी वल्लभनी वाणी अनुसरतां."**

अपनो अहंकार बोल रह्यो हे वो अहंकारकी दुर्गन्ध, अपने

मोंहकी बासकी तरह अपनूकुं नहीं आती होय और दूसरेकुं ही आती होय ये सहज सम्भव हे. जो यामें, परन्तु, सम्भव नहीं हे वो बात ये हे के या पुष्टि-अस्मिताके गीतकी एक भी कड़ी ऐसी नहीं हे के महाप्रभुके संस्कृतमें कहें गये सिद्धान्तनूको गुजराती अनुवाद नहीं होय. तो आओ! सब मिलके गाने लग जाओ तो अहंकार खंडित हो जायेगो. अहंकारको बचवेको कोई चान्स् नहीं रेह जायेगो.

प्रश्न :

(१)ब्राह्मणद्वेषीके सन्दर्भमें मैं पूछनो चाह रह्यो हुं के कोईने मोसु पूछी के सो-कॉल्ड् वैष्णव-ब्राह्मण अयाचक-वृत्तिसु भागवत-सप्ताहकी दक्षिणा लेतें होंवे तो वो तो निषिद्ध नहीं हे, क्योंके गुसांई बालकनूकुं भी अयाचकवृत्तिसु जीविकाकी छूट हे ही. भागवतको उपदेश तो बालक भी कर रहें हें, तो हमकुं क्यों मना करो हो? वे सप्ताह-विधिसु उपदेश देवें हें और गो.बा. दूसरी रीतसु वो ही तो उपदेश देवें हें. और वाके एवजमें द्रव्य भी ले ही रहें हें. तो दोनोंके बीच डिफ्रेन्स् क्या हे?

(२) ब्रह्मसम्बन्धके द्वारा भी वो ही उपदेश दियो जा रह्यो हे. ब्रह्मसम्बन्धको जो भावार्थ हे वो एकादशस्कन्धसु प्रेरित हे तो अन्ततोगत्वा वो भी भागवतको ही उपदेश भयो. तो यामें क्या समझनो?

जवाब :

सबसु पहले खुलासाके तौरपे यामें जो एक बेज़िक् ईश्यु इन्वॉल्व् हो रह्यो हे वो अपनेकुं स्पष्ट समझ लेनो चहिये. अपन् शादीके बाद रिसॅप्शन् रखें, बहोत सारे अपने सगे सम्बन्धी लोग आके गिफ्ट् देवें. अब सवाल ये हे के रिसॅप्शन् रख्यो हे या लिये गिफ्ट् दे

रहें हें के गिफ्ट् लेनी हे या लिये रिसॅप्शन् रख रहें हें? यदि गिफ्ट् लेनी हे या लिये रिसॅप्शन् रख रहें हें तो सचमुचमें अपनी वृत्ति भी खराब हे. रिसॅप्शन् रख्यो हे वामें वो जो गिफ्ट् दे रह्यो हे वो अपने परिवारको सगो हे या मित्र हे. अपने परिवारमें फंक्शन् अपन् सॅलिब्रेट् कर रहें हें वामें वो भी अपने आनन्दकी अभिव्यक्ति उपहारके रूपसु करें हें. आनन्दके रूपसु उपहारकी अभिव्यक्ति करें वो एक अभिव्यक्ति और अपन्ने रिसॅप्शन् रख्यो यामें अपन्ने डिनर् रख्यो और समझोके कोई गेस्ट् वो गिफ्ट् या तरहसु देवे के तुम कुछ खवा रहे हो तो हम वाको डायरॅक्ट् पेमेन्ट् तो नहीं कर सके पर तुम्हारे वर-वधूकुं हम वाके एवजमें दे रहें हें तो कोई स्वाभिमानी लेनो पसंद करेगो? यदि वर-वधूके स्वाभिमानी माता-पिता लेनो पसंद नहीं करें तो ऐसे ही जो अपनेकुं ब्रह्मसम्बन्धके लिये दे रह्यो हे या भागवतकथाके लिये दे रह्यो हे वाकुं नहीं लेवेको अपनेमें माद्दा होनो चहिये. अब यों कहें के अपन्ने तो नहीं मांग्यो हतो, हमने तो नहीं कही हती. यदि इन्विटेशन् काईमें छापें के हम तुमकुं डिनर् देंगे और हमारे डिनरकी एवजमें तुम हमकुं ये दे जाईयो तो इन्सल्ट् नहीं भयो पर यदि नहीं छापें और वो अपनेकुं दे तो बताओ के ये इन्सल्ट् भयो के नहीं? जो स्वाभिमानी आदमी इन्सल्ट् फील् करे, ऐसे हर गुसांईकु फील् होनो चहिये के नहीं? याचित दे रह्यो हे के अयाचित दे रह्यो हे सवाल ये नहीं पर वो क्या हेतुसु दे रह्यो हे! वा हेतुसु देते भये पैसाकुं एक्सेप्ट् करवेमें अपनो ईगो हर्ट् होनो चहिये के नहीं? बेज़िक् ईश्यु ये हे. यदि अपनो ईगो हर्ट् नहीं हो रह्यो हे तो अपन् बहोत सारे वाके रॅशनल् जस्टिफिकेशन् खोज पायेंगे के हमने मांग्यो नहीं हतो, हमने कह्यो नहीं हतो, हमने तो खाली बुलायो हतो, वो दे गयो तो अब हम क्या करें?

अभी हमारे बड़े मन्दिरकी जमीनको सौदा भयो, वामें मोकुं

साइन् करवे जानो पड्यो. दो दिन गयो ऑफिसर् कुछ-कुछ बहाना करके ना पाड़ दे. लास्टमें पाछो गयो तो वो बहाना करके ना पाड़ दी के "जिसके लिये सौदा हुआ हे वो तो हाजिर हे नहीं तो सिर्फ इनकी (श्याममनोहरकी) सहीसु काम नहीं चलेगा?" वाको पॉवर् ऑफ् अॅटॉर्नी हतो वाने हाथकी पांचो उंगली खुली रखके हाथ हिलाके पूछी "तकलीफ क्या हे?" बस चमत्कार हो गयो. अभी तक सरकारी क्लर्क् ना पाड़ रह्यो हतो वाने कही "अच्छा चलेगा". मैं चकरा गयो के अचानक क्या हो गयो? हां कैसे पाड़े हे! क्या चक्कर हो गयो? वाके पॉवर् ऑफ् एटार्नीने कही "तुमने देख्यो नहीं मेरो हाथ?" वाने तकलीफ मिटा दी तो वाने कही "चलेगा सही कर दो". चक्कर हतो सिर्फ अर्थलोलुपता. ऐसे अपन् ब्रह्मसम्बन्ध देतें होय और कहें "महाराज तकलीफ क्या?" बोले "ग्यारह रुपिया चलेगा!" अपनो ईगो हर्ट् होनो चहिये. यदि अपनो ईगो हर्ट् नहीं हो रह्यो हे तो धंधा हे. जैसे ब्राह्मण करते थे वैसे ही अपन् भी कर रहें हें. कर रहें वामें कोई दोष नहीं हे. क्योंके वो तो अपनी ब्राह्मणवृत्ति ही हे.

यामें सवाल, परन्तु, ये हे के तब ब्राह्मणनकुं क्यों ना पाड़ी गई. मैं पुष्टिमार्गकी बात नहीं कर रह्यो हुं. मैं या बातकुं समझानो चाह रह्यो हुं के सिस्टेमेटीकली अपन्ने पुष्टिमार्गमें ब्राह्मणको रोल् खतम कियो. और जब अपन्ने खतम कियो तब अपन्ने ये सौगंद खायी थी के भगवान् और भक्त के बीचमें कोई बिचौलियाकी (मध्यस्थ) जरूरत नहीं हे वो सौगंदको क्या भयो? ब्राह्मणकुं हटाके अपन्ने अपने-आपकुं जब वा ठिकाने सबस्टिट्युट् कर दियो तो वा सौगंदको क्या भयो? जा सौगंदमें कही गयी हती के भगवान् और भक्त के बीच कोई बिचौलियाकी जरूरत नहीं हें. हर व्यक्ति अपने भगवानकी आराधना स्वयं कर सके हे. वा भक्तिकी गरिमाको क्या भयो? मोकुं मुख्य ये लगे हे.

अपन् कायकी दक्षिणा ले रहें हें और कायकी नहीं ले रहें हें? तो सीधीसी बात हे जो लड़की आ रही हे वो अपने पीयरसु कुछ न कुछ तो माल लेके आयेगी, पर मालके लिये लड़कीकुं ब्याह रहें हें के लड़कीके लिये मालकुं ब्याह रहें हें? ये तो खुलासा अपनकुं करनो पड़ेगो. कम माल लायी याके लिये झगड़ा हो रह्यो हे तो मालके लिये लड़की आयी हे और नहीं भी माल लेके आयी और अपन् वाकुं जीवनसंगिनी बनावे तैयार हें, मतलब माल लायी होय या माल नहीं लाई होय, अपनी जीवनसंगिनी हे तो हे. या तरहसु जो दे पा रह्यो हे या नहीं दे पा रह्यो हे अपन् सबकुं अपने पार्टमें या बातको खुलासा होनो चहिये के ब्रह्मसम्बन्ध पैसाके लिये नहीं दियो जाय हे.

आखो माहोल ऐसो हे के ब्रह्मसम्बन्ध लेनो होय तो ग्यारह रुपिया तो भेट धरनी पड़ेगी. अब अपन् भी केह रहें हें मांग तो नहीं रहें हें. आपकुं एक बात बताउं :

दादाभाईकी यात्रामें मैं गोकुल गयो हतो. वहां ठकुरानी घाटपे दुपहरकुं जाके बैठ जातो. पंडान्के द्वारा बिचारे यात्रीन्की बड़ी लूट-खसोट होती देखतो रेहतो. एक दिन न जाने क्यों, मेरो भी अहंकार जग गयो और एक पंडाकुं बुलाके मैंने कही के तुम इतनी लूट-खसोट करो तो लोगन्की धर्मसु ही श्रद्धा उठ जायेगी. वाने कही :

> ''महाराज! हमारे पास तुम्हारी तरह समाधानी रखिवेके पैसा नाय हें. सो हम लूट-खसोट करत हें. तुम लूट-खसोट करो नाय, तुम तो गादीपे बैठके आशीर्वाद देत हो और लूटखसोट हवेलीन्में तुम्हारो समाधानी करत हे''. मैंने कही, ''भागो यहांसु ठकुरानी घाटपे अब नहीं बैठनो'' दूसरे दिनसु बैठनो बंद कर दियो. कौन जावे वहां?

> व्रजवासीन्ने बात बड़ी पताकी कही. ''हमारे पास पैसा नाय तो हम समाधानी नाय रखत हें. तुम्हारे पास पैसा हे तो तुम बैठके आशीर्वाद देत हो और हवेलीन्में तुम्हारो समाधानी लूट-खसोट करत हे''.

बात तो वोही के वोही हो गई. हम धनवान भिखारी होवेके कारण कोई एजन्सिके (समाधानी) थ्रु मांग रहें हें. बिचारे ब्रजवासी खुद मांगे हें. ये माहोल अपनेकुं क्यों डिस्टर्ब् नहीं करे हे? ये मेरो प्रश्न हे.

सिद्धान्तके तहत यदि ये माहोल अपनेकुं डिस्टर्ब् नहीं करतो होय तो तो लेट् अस् बी ॲब्सोल्युटली क्लियर् के अपनेकुं सोसायटीमें ब्राह्मणको रोल् ही प्ले करनो हे. तब तो दूसरो जो ब्राह्मण, ब्राह्मणको रोल् प्ले करनो चाहतो होय वाकुं भी रिकॉग्नाईज् करनो पड़ेगो. क्योंके ब्राह्मणत्व हम गुसांईन्की कोई मोनोपोली तो हे नहीं. कोईभी शास्त्रके वचनके आधारपे अपन् ये वचन क्लेइम् नहीं कर सकें के वल्लभाचार्यके वंशज कोई स्पेशियल् ब्राह्मण हें और दूसरे ब्राह्मण ऑर्डिनरी ब्राह्मण हें. यदि अपन् क्लेइम् कर रहें हें तो अहंकार हे अपनो. अहंकारके अलावा कोई तथ्य प्रकट नहीं हो रह्यो हे. एज् ए ब्राह्मण हम सब ब्राह्मणके बराबर ही हें.

अपनो पुष्टिमार्गमें जो कुछ रोल् हतो, साधारण जनसमुदायकी बात नहीं कर रह्यो हूं, पुष्टिमार्गमें अपनो क्या रोल् हतो? भगवद्भक्तिकी सबकुं प्रेरणा दें. भगवद्भक्तिके मार्गके ऊपर सबकुं अग्रेसर करें. भक्तिकुं अपन् अपनो प्रोफेशन् नहीं बनावें. वामें बीचमें अपन् बिचौलिया न हो जायें. जो भी पंडित शादी करावें हें उनकी प्रेजन्स् विवाहसंस्कारके समय ही जरूरी हे. वर-वधू हनीमून् करवें जायें वा बखत वो ऐसे नहीं कह सके के हथलेवा मैंने करवायो यासु मोकुं भी साथ

लेके चलो! ब्रह्मसम्बन्ध करवायो तब तक कोई रोल् गुसांईन्को हतो. हतो तो हतो. जब ठाकुरजी पधराय दिये तब तो भक्तको और भगवान्को हनीमून् स्टार्ट हो गयो. वामें तुम बीचमें कहांसु आ गये! ओन् वॉट् ग्राउन्ड्? कहांसु आये? क्यों आये? जब आये हो मतलब, तुम कुछ दूसरी बात कर रहे हो. अब तुम सिर्फ प्रेरक तत्त्व नहीं रेहके कुछ दलालीको काम कर रहे हो. जब दलालीको काम कर रहे हो तो गलीच धंधा हो गयो. भगवान्के दलाल हो गये अपन्. गरिमा अपन्की वहां खंडित भयी. तो क्या भक्ति अपनो भगवान्की दलालीको धंधा हे? यदि सच होय तो स्वीकार लो के हम गुसांईन्को भगवान्की भक्तिकी दलालीको पेटर्नल् मोनोपॉलीको प्रोफेशन् हे. कौन मानेगो? कोई नहीं मानेगो ये बात. कोई गोस्वामीमें ऐसी गट्स् नहीं के वा बातकुं खुल्लेआम केह सके के जो वो प्रेक्टिस् कर रह्यो हे, कैसे जातकी प्रेक्टिस् हे! अपन् अपने सिद्धान्त, अपने आदर्शकुं खतम करके कोई तरहसु सर्वाइव् करनो चाह रहें हें.

एक मजेदार बात बताउं : कोई परिवारमें कोई बच्चाने कछुवा पाल्यो. कछुवाकी बायोलॉजीकल् क्लॉक् होवे हे. कछुवा हाइबरनेशन्में (सुषुप्तावस्था) या इनर्शियामें (निष्क्रियतामें) गयो. बच्चाकुं लग्यो के वो मर गयो. बच्चाने रोनो शुरु कियो के मैंने कछुवा पाल्यो और वो मर गयो. वाकु समझानो कैसे? वाके ईगोको प्रश्न हो गयो के जो कछुवा मैंने पाल्यो वो मर्यो कैसे? देखो अहंकारकी बात बता रह्यो हूं. बच्चाने रोनो-धोनो शुरु कियो तो मां-बापने उलटी-पट्टी पढ़ा दी "कोई चिन्ताकी बात नहीं अपन् ये कछुवाकी जुलुस निकालके दफनविधि करेंगे". और फिर उन्होंने जुलुसको वर्णन कियो के "जुलुसमें याकुं बुलायेंगे वाकुं बुलायेंगे, गाड़ीमें ले जायेंगे" बच्चाको ईगो भी तो पाछो हरजाई हे न! "तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश.' बच्चाको लग्योकी कछुवाको पाल्यो वामें

तो कोईने इतनो रिकग्निशन् नहीं दियो. कछुवा मर गयो वाकी दफनमें इतने सब लोग आयेंगे. तो बच्चाकुं तो मजा आ गई. वाने कही करो दफन. सब एनाउन्स् हो गयो. इतनेमें वो कछुवा चलके तालाबमें चल्यो गयो. वो तो जिंदा निकल्यो. सुषुप्तावस्था छोड़के जाग्रदवस्थामें आ गयो. बच्चा दोबारा रोवे लग गयो "याकु दफन करो, याकु दफन करो". बाय् धेट् टाइम् कछुवाको पालक होनेके बजाय कछुवाको दफन करनेको ईगो पनप गयो.

आज हम गुसांईनकुं भी ऐसे ही महाप्रभुके सिद्धान्तनकुं दफन करवेको ईगो पनप गयो हे. या प्रकारकी आज अपन् प्रॅक्टिस करें हें. ये एक नग्न सत्य हे. शुरुआत अपन्ने करी हती के हम महाप्रभुके सिद्धान्तको पालन करेंगे. पर आज अपन् या बातके लिये रो रहें हें के हम दफन क्यों नहीं कर सके हें? जो दफन नहीं करवे दें, जो दफनकी ना पाड़े वाकुं अहंकार हे. ईगो तो हरजाई हे *"तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाइश ए-दिले-नादां ये बदगुमांनी हे"*. क्योंके दिलको पता नहीं चले के कौनसी बातपे दिल कब चल जाय. जा बखत जा तरहसु दिल चल जाय वा तरहसु अपनो ईगो कन्वर्ट् हो जाय. ईगो अपनो मॅन्टेइन् तो होवे नहीं हे ये बेज़िक् ईश्यु हे.

प्रश्न :

आधुनिक बात चल रही हे वाकुं छोड़के अपने आइडियल् बात हे वाकुं पकड़के चलें.

जवाब :

या बारेमें थोड़ी हिन्ट् तो मैंने दी ही हे के अपन्ने पुष्टिमार्गमें पुष्टिजीवकुं प्रवृत्त करवेके लिये रिस्पोन्सिबिलिटी ली हे. ये तो ब्राह्मणको ही रोल् हे यजन-याजन अध्ययन-अध्यापन दान-प्रतिग्रह **"षट्कर्माणि**

दिने-दिने''में कह्यो ही गयो हे. याके अन्तर्गत अपन्ने याजन केन्सल् कियो हे. माइन्ड इट्. पुरुषोत्तमजी सिद्धान्तमुक्तावलीकी टीकामें वा ईश्युकुं पूरी तरह उछालके खुलासा करें हें के यदि ब्राह्मण यज्ञ करावेकी, होम करावेकी, पूजा करावेकी दक्षिणा ले सके तो अपन् सेवा करवेकी दक्षिणा क्यों नहीं ले सकें हें? और वाके खुलासामें श्रीपुरुषोत्तमजीने क्या बात कही. शास्त्रविहित कर्मन्के अनुष्ठानमें वो विहित हे, परन्तु अविहित भक्तिकी साधनामें वो विहित नहीं हे. या लिये नहीं लेनी चहिये. याजनकी बात भक्तिमें नहीं ले सकें हें.

जहांतक भक्तिमार्गपि प्रवृत्त करवेकी बात हे तो प्रवृत्त करनो ये तो अपन् अपनो रोल् मान रहें हें. षट्कर्मन्मेंसु उतनो ब्राह्मणन्को रोल् अपन् अपनो मान रहें हें. वो रोल् अपन्ने दूसरे ब्राह्मणन्को भी मान्य कियो होतो, जैसे अपन्ने एक्वायर् कियो, ऐसे दूसरे ब्राह्मणनकुं अॅलाउ करतें तो दूसरे ब्राह्मण भी वाकुं पुष्टिमार्गमें आनन्दसु निभातें. ब्राह्मण यहां जी सकते थे.

पर वामें अपन्ने पाछो लफड़ा कर दियो के ब्राह्मणन्के मुँहसु पुराणकथा नहीं सुननी. आज तो स्थिति बहोत बदल गई हे. अमृतवचनावलीमें मैंने पूरो दियो नहीं पर कामवनवाले श्रीदेवकीनन्दनाचार्य महाराजश्रीको एक अमृतवचन हे. उनने नवसारीमें दियो हे. आजसु सो सवासो साल पहलेकी बात हे के "हमारे यहां ये डिफिकल्टी आ गई हे के शास्त्री यदि बालककुं पढ़ावे तो वैष्णव यों कहे के 'शास्त्री बालकने बहु परिश्रम आपी रह्या छे'. वाके कारण हमारे गुसांई पढ़ नहीं रहें हें. पढ़ेंगे नहीं तो धर्मोपदेश कैसे करेंगे प्रवचन कौन करेगो?" शास्त्री प्रवचन करे और शास्त्री पॉप्युलर् हो जाय तो बालक तो मरे न. (शास्त्री पॉप्युलर् नहीं होवे) तो खुदमें पॉप्युलर् होवेके गट्स् नहीं हे क्योंके पढ़े ही नहीं हे. तो करें क्या?

फिर एक तीसरो चक्कर चलायो के प्रवचन सुननो नहीं, पुष्टिमार्गके भी सिद्धान्त सुनने नहीं. सिद्धान्त सुनो तो बहिर्मुख हो जाओ. प्रमाणमार्गी हो जाओगे. प्रमेयमार्गी नहीं रेह जाओगे. ये चक्कर अपन्ने चलायो और बूमरेन्ग् अपन्पे भयो. अब पोल खुल गई. अब सब शास्त्री भागवत कथाएं करवें लग गयें. टु दि एक्सटेन्ट् के खुद हम गुसांईनकुं कथाप्रवचन करवेके लिये और करवावेके लिये उनपे निर्भर होनो पड़ रह्यो हे. या दुर्गतिको उपाय क्या? अपन्ने भक्तिमार्गके तहत जो रोल् अपनायो वो रोल् ब्राह्मणकुं भी अपन् दे सकतें थे.

एक बात समझो के चाचा हरिवंशजी मार्गको प्रचार नहीं करते थे? चाचा हरिवंशजी क्या दीक्षा नहीं देतें थे? शेठ पुरुषोत्तमदास तो बनिया हतो तो भी दीक्षा देतें हतें. गोपालदास भी देते थे. और जो आठवें लालजी हते वो भी दीक्षा देते थे. सिस्टेमेटिक् एक ऐसो षड्यन्त्र फैलायो के बालकके अलावा कोई दीक्षा नहीं दे सके. बालकके अलावा कोईके वचनामृत सुना नहीं सको. बालक पाछो बोले नहीं. जनताकुं बेवकूफ बनावेको षड्यन्त्र करतो रहे. आवश्यकता या नेगेटिविटी खतम करवेकी हे. महाप्रभुके सिद्धान्तकुं समझके फिरसु या मार्गकुं स्वस्थ करनो हे. बूमरेन्ग् तो भयी हे यामें तो अपन् इन्कार नहीं कर सकें. बूमरेन्ग् तो इतनी भयी के तिलकायतके पाससु ब्रह्मसम्बन्ध लेवेवालो पाछो किरीटभाईसु ब्रह्मसम्बन्ध लेवे लग गयो. और वो यों कहे हे के तिलकायत महाराजसु ब्रह्मसम्बन्ध लेवेमें मोकुं संतोष नहीं भयो हे. अभी तो छप्पनभोग वो नहीं कर रह्यो हे, करेगो वा दिन आप देखियो ये छप्पनभोगकी भी हम गुसांईनपे भयंकर बूमरेन्ग् होयेगी.

एक ईसाई सॅमिनरीके एक पादरीने स्पष्ट ये लिख्यो हे के अपन् (क्रिश्चियन्) नासमझ हें. अपन् क्राइस्ट्के नामपे क्रिसमस्के दिन रो रहे हें. पुष्टिमार्गकुं कोट् कियो हे. पुष्टिमार्गसु समझो के

हिन्दुस्तानमें प्रचार कैसे करनो. वाने कही हे के "क्रिसमस्के दिन एककुं मॅरी बनाओ, एककुं जोसेफ् बनाओ, क्राइस्ट्को पलना झुलाओ, अधिकमासके मनोरथ करो. हिन्दुस्तानमें सबकुं ये ही पसंद आ रह्यो हे. अपनो रोनो-धोनो पसंद नहीं आवे हे." मर गयो रे! अरे सभी मर रहे हें तो यामें क्राइस्ट् भी मर गयो तो कौनसी बड़ी बात भयी? हिन्दुस्तानकी जनता उलटो सोच रही हे. यालिये ही बोलिवुड्की जितनी फिल्म् चलें उनमें ट्रॅजडीकी फिल्म् नहीं चले, कॉमेडीकी फिल्म चले. हर आदमी दु:खी हे कोई तरहसु सुखी होनो चाह रह्यो हे. मिर्च-मसाला सब होय तो चले. क्योंके हर आदमी सुखी होनो चाहे हे. अब धर्मके नामपर दु:खी करो तो वो कायकुं दु:खी होवे? क्राइस्ट् मर गयो तो मर गयो. वामें मेरो क्या ले गयो? यहां तो कुछ छप्पनभोगकी बात करो, कुछ लड्डुकी बात करो, कोई साज-सजावटके प्रदर्शनकी बात करो, कोई पिक्निक्की बात करो तो सबकुं धर्म अच्छो लग रह्यो हे. जब अपनी भोगप्रधान वृत्ति हो गयी होय वामें वो कैसे पॉप्युलर् होवे? अब समझो के क्रिश्चियन्ने चर्चमें छप्पनभोग करनो शुरु कर दियो तो अपने कितने बच्चाएँ कॉन्वेन्ट्में पढ़ रहें हें वो आयेंगे अपने यहां? वा दिन अपने बच्चा अपने मंदिरके बजाय चर्चके फास्ट्फुड्को प्रसाद जादा पसंद करेंगे. सबकुं केक् पसंद आ रही हे, सबकुं चॉक्लेट् पसंद आ रही हे. और तो और अपने गुसांईन्के बालकन्कुं भी, कुछ तो पितामह बन गये तो भी ईरोटिक् लिटरेचर् पसन्द आवे हे, चाइनीज् और मॅक्सिकन् बर्गर् पसंद आ रही हे, ऐसे अपनी ओरकुट्की आई-डी प्रॉफाईल्में बिनधास शेखी बघारे हें. तो अपने यहांके गुसांईन्कुं जब अपने यहांकी सामग्री पसंद नहीं आ रही हे तो बाहरके लोगन्कुं कैसे पसंद आयेगी? कॉनवेन्ट्में पढ़ते वैष्णव छोरा-छोरी कैसे पसंद करेंगे अपनी सामग्री? अपनी सामग्रीन्में वा तरहकी फ्लेवर् नहीं हे. मेकडोनाल्ड्वालो तो बीफ्की फ्लेवर् ड़ालतो हतो. यालिये के वा फ्लेवरसु लोग आइटम् पसंद करवें लग जाय. लोग खावें लग जायेंगे.

प्रिवेलिंग् एट्मोस्फियर्में कैसे कन्विन्स् करेंगे? ईश्यु ये हे.

अपने यहां ब्राह्मणवृत्तिके रूपमें शास्त्रविहित होवेपर भी भगवत्सेवाको याजन निन्दित मान्यो गयो हे. वाको अध्यापन एक अलग कथा हे और अध्यापनके जगह वाको अनुष्ठान करवानो एक अलग कथा हे. अपने यहां भागवत नित्यमें हती, अपने यहां सेवा नित्यमें हती, अपने यहां भगवत्सेवा या भगवत्कथा नित्य अनुष्ठानात्मक हती केवल नैमित्तिक नहीं हती. भगवत्सेवा या भगवत्कथा अपनेकुं अपने फॅमिलीके मेम्बरन्के साथ करनी हती. भागवतपठन भी नित्यक्रममें अनुष्ठेय हतो, सप्ताहिकी विधिसु नहीं. जब नित्य कर रहे हो तो वामें प्रॉफेशनल् मोटिवेशन्को प्रश्न नहीं उठेगो. अब, परन्तु सात दिनके लिये घोषणा करें के हम भागवतको श्रवण-प्रवचनको आयोजन करवें जा रहें हें याके लिये अपनो नाम दर्ज कराओ. वामें शास्त्रके यजमान, स्कन्धके यजमान, प्रकरणके यजमान, अध्यायन्के यजमान और अन्तमें वाक्यन्के पदन्के और अक्षरन्के यजमान अन्तमें कभी न कभी बुक् किये जायेंगे! ये तो अपनी धर्मोपदेशकी फेशन् बढ़ती जा रही हे.

प्रश्न :

कोई शास्त्री भागवतकथाको उपदेश दे रह्यो हे यामें कछु जीविका नक्की नहीं कर रहे हें तो फिर कैसे समझनो?

जवाब :

वो नहीं करे पर वा निमित्तसु ले रह्यो के नहीं?

प्रश्न :

वा निमित्तसु ले नहीं रह्यो हे. वो सिर्फ भागवतसप्ताह कर रह्यो हे.

जवाब :

तो ठीक हे.

प्रश्न :

वो ब्राह्मण और अपन् बालकें उपदेश दे रहें हें तो भक्तिको

वामें डिफ्रॅन्स् क्या हे?

जवाब :

अपनो जो ब्रह्मसम्बन्धमन्त्र हे वो भागवतोक्त मन्त्र नहीं हे. भागवतमें वा प्रिन्सिपल्की बात हे, वा मन्त्रकी बात नहीं हे. एक बात ये. अपन् खुद डिनाय् कर रहें हें के ब्रह्मसम्बन्धमंत्र भागवतोक्त पौराणिक मन्त्र नहीं हे. ये वैदिक मन्त्र नहीं हे ये तान्त्रिक मन्त्र नहीं हे. जहां तक आत्मसमर्पणकी बात हे तो वो सिर्फ भागवतमें ही नहीं उपनिषद्में भी कही गयी हे. गीतामें भी कही गयी हे, आगममें भी कही गयी हे, अन्यान्य पुराणन्में भी कही गयी हे, बाइबल्में भी कही गयी हे. और इवन् बौद्ध एवं जैन धर्मन्में भी कही गयी हे. कौनसो धर्म हे जहां समर्पणको सिद्धान्त नहीं कह्यो गयो हे बतावो! हर धर्ममें ये सिद्धान्त कह्यो हे. तुम कोई स्पेशियल् व्यक्ति नहीं हो. अपन् वा समर्पणकी दीक्षामें प्रेरित कर रहें हें. उपदेशकी बात कब आवे, जहां दीक्षाको सवाल आ रह्यो हे तब. पुरुषोत्तमजीको शंकानिरासवाद पढ़के देखो. स्पष्ट केह रहे हें कृष्णनामके अलावा अष्टाक्षर 'मन्त्र' नहीं हे. वो बात ब्रह्मसम्बन्धपे भी लागु नहीं होयगी क्या? खतम हो गई बात. कृष्णनाम यदि मन्त्र हे तो कृष्णके एक नाम नहीं हे एक सहस्रनाम हें, सभी नाम मन्त्र हें. वो तो स्क्रीनूकुं 'स्क्रीन्' केहने जैसी बात भयी.

सत्यजीत रायने 'कापुरुष महापुरुष' नामकी फिल्म् बनाई हती. वामें रेलमें एक साधुबाबा बैठो भयो हे. जब सूर्य उदय होनेवालो होय तब केहवे लग्यो *"आओ, ऊपर आओ. अरे! झिझकते क्यों हो! थोड़ा और ऊपर आओ"* थोड़ी देरमें सूरज उग गयो. सामने बैठे भये यात्रीन्ने कही *"ओहो आपमें इतनी सामर्थ्य के सूर्यको उगा देते हें!"*. उनने कही *"क्या करूं बेटा!, इस सूरजको थोड़ा संकोच हो रहा था. हमने कहा जो हमसे जगत्की भलाईका काम हो सके वो कर दें"*. अरे! सूरज तो उगनेवालो ही हे यामें "ऊपर

आओ ऊपर आओ" केहनेसु उग जातो होय और "अभी मत उगना थोड़ी देर रुक जाओ" केहवेसु नहीं उगतो क्या? अब कोई वामें गद्गद् हो जाय, कोईकुं बाबाजीकी अद्भूत सामर्थ्य लगे! वो तो एक दिन मेरे यहां भी ऐसो भयो. की-बोर्डमें इंग्लिश् लेटर् हें, मॉनिटरपे हिन्दी आ रही हती. एकने कही के *"आप इंग्लिश् अहींया करो छो ने त्यां हिन्दी केम बनी जाय छे? ओहो... आपना विना आवो चमत्कार कोण करी शके?"* ऐसे चमत्कार घड़ लेवेवालेनसु कैसे पार पाड़नो. अपन्ने माहोल ही ऐसो बना रख्यो हे. अपन् हाथ ऊंचो करें तो चमत्कार लगे, नाक ऊंचो करें तो चमत्कार लगे. मट्टीके मटकाके जितनो बूंदीको लड्डु बना दें तो लोगनूकुं चमत्कार लगे *"आ तो वल्लभकुल विना कोण करी शके!"* लाओ भेंट पाछी या चमत्कारकी. याको सॉल्युशन् क्या?

अपनी फोलोइन्गूकुं अपन् लोग जान करके बेवकूफीके माहोलमें जिवानो चाहें हें तो वो बेवकूफी एक दिन अपने गले पड़ेगी. यामें कोई ऐसी बात नहीं हे के जो हमारी मोनोपोली होय. वो भी महाप्रभुने खुलासासु कही हे :

"कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं नरं श्रीभागवततत्त्वज्ञं भजेद् जिज्ञासुः आदरात्. तदभावे स्वयं वापि मूर्तिं कृत्वा हरेः क्वचित्".

(त.दी.नि.२।२२७-२२८)

तो अपनो ये रोल् महाप्रभुने कम्पल्सरी कहां मान्यो हे. तो भी जबरदस्ती अपनी और भोले वैष्णवनूकी मिलीभगतने अपनूकुं भगवत्सेवार्थ कम्पल्सरी होनेको भ्रम ठसा रख्यो हे. या तरहसु कम्पल्सरी बनावें तब ये सारी प्रॉब्लेम् खड़ी होवें हें. बाकी कम्पलसरी नहीं बनाओ तो कोई ईश्यु नहीं हे.

एक बखत क्या भयो, एक आदमी मुर्गी पालतो हतो वाकी मुर्गी कोई तरहसु खो गई या वाकुं कुत्ता खा गयो. अब वाकुं लग्यो के या मुर्गिके अंडाको क्या करनो? तो वाने एक बतक भी पाल ली. वाने मुर्गिके सारे अंडा बतकके नीचे घुसा दिये. बिचारी बतककुं भी अहंकारप्रयुक्त ममताभ्रान्ति हो गई *''तू जो रखता हे हरजाईसे वफाकी ख्वाईश''*. वाकुं लग्यो ये अंडा मेरे ही दिये भये कहीं न होंय! वाने सेव्यो तो थोड़े दिनमें वामेंसु मुर्गी निकल आयी. अब बतकन्की खासीयत होवे 'क्वेक्-क्वेक्' करके जब चाहें तब पानीके तालाबमें उतर जावें. वो 'क्वेक्-क्वेक्' करके अपने चूजान्के साथ चली तो मुर्गिके बच्चा भी 'कुक्-कुक्' करके तालाबकी दिशामें चलवें लगें. पर जहां तालाबमें उतरवेकी बारी आयी तो बतकके बच्चा सब कूद गयें. मुर्गीको बच्चा बिचारो किनारेपे 'कुक्-कुक्' करतो उछलतो रेह गयो.

आज अपन् पुष्टिमार्गीय भी वहीं के वहीं रेह गयें हें. बतकें बिचारी कूद गयीं हें. अपन्ने गलतीसु मुर्गिके बच्चा होते भये अपने आपकुं बतक मान लियो के अपन् पुष्टिजीव होवेके कारण संसारसागर तैर जायेंगे. अपन् तो खुद डूब रहें हें. जा तरहसु अपन् अपने सिद्धान्तको बाध कर रहें हें तो अपन् दूसरेन्कुं क्या तिरा सकेंगे? या रहस्यकुं नहीं समझेंगे और निरन्तर पाखंड चालु रखेंगे तो नॅचरली बूमरेन्ग् होयगो. बट् नॅचरल् हे. बाकी जो अपनी आइडिअल् लाइफ्-स्टाइल् प्रॉफेशनल् नहीं हती. अपन्ने एज् ए प्रॉफेशन् आज भक्ति ॲडोप्ट् कर रख्खी हे. एज् ए प्रोफेशन् अपन्ने उपदेश क्यों नहीं अपनायो?

''भोजन कर विश्राम छिनक ले निज मंडली बुलायी, वेणुगीत पुनि युगलगीत की रसबरखा बरसाई, प्रकट व्हे मारग रीत दिखाई'' ये तो महाप्रभुकी डेइली-रुटिन् हती. कोईके लिये नहीं करतें हतें, खुदके लिये करतें थे. नेचरल् कोर्समें जो पार्टिसिपेट् करतें थे वो

ही करतें थे. जबके अपनी आज डेइली-रुटिन् **भोजन कर विश्राम कियो अरु टी.वी. देखन जाई** वाली बात हो गई हे. जैसे सेवा अपन्कुं अपने घरमें करनी चहिये दूसरेके लिये सेवा करनी पॅम्फ्लेट् छापके गामकुं बुलानो के आज हमारे ठाकुरजीको छप्पनभोग हे आज कुनवारा हे, ये तो सिद्ध करे के आप खुदके लिये नहीं कर रहे हो.

अध्यापनमें भी ऐसो ही हे. अध्यापन दो तरहसु होवे. एक ब्राह्मण कॅपॅसिटीको के जामें अपन् शास्त्राध्यापन करावें. वो बालकें कोई करावें नहीं. वो तो महाप्रभुजी करातें थे. कोईकुं व्याकरण पढ़ातें थे, कोईकुं गीता पढ़ातें थे. बालकन्में वो शास्त्राध्यापनकी लाइफ्-स्टाइल् तो बिलकुल गायब ही हो गयी. तो सम्प्रदायके सिद्धान्तग्रन्थ पढ़ावो! वामें तो सारे शास्त्र आ गयें. कौनसो शास्त्र वामें नहीं हे वो बताओ **''अर्थो अयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यैः, रामायणैः सहितभारतपञ्च-रात्रैः, अन्यैः च शास्त्रवचनैः सह तत्त्वसूत्रैः निर्णीयते सहृदयं हरिणा सदैव''** (त.दी.नि.१।१०४) कौनसो शास्त्र वामें नहीं हे? खाली भागवत थोड़ी हे? यामें भागवतको कहां सवाल आयो? बैठे बिठाये भागवत नहीं पढ़ पानेके कारण दुःखी लोग ऐसे मानें के तुम भी भागवत कर रहे हो तो वाको तो कोई चारा ही नहीं हे.

परमेश्वरकी अवज्ञाके दंडरूपेण मानवीय शरीरके मैथुनजन्य या मर्त्य होनेके अभिशापकी कथा न तो भारतीय आर्ष परंपरामें कहीं वर्णित हुई है और न किसी भी प्राणीके शरीरके पृथ्वी जल तेज वायु आकाश रूपी जड़ पदार्थोंके संघातरूप होनेमें किसी तरहके अपवित्रताकी कल्पना यहां मान्य की गई है. बृहदारण्यकोपनिषत् (२।३।१) स्वयं ब्रह्मके भी दो रूप स्वीकारता है : मूर्त मर्त्य अस्थायी और अमूर्त अमृत स्थायी. इसी तरह जड़ पदार्थोंकी उत्पत्ति तैत्तिरीयोपनिषद्(२।१-५)में परमात्मामें से आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी ओषधि अन्न और अन्नमय पुरुषशरीरके उत्पत्तिक्रममें स्वीकारी गयी है. इसी अन्नरसमय शरीरके भीतर क्रमशः प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनन्दमय सन्निहित हैं ऐसा भी माना गया है. अर्थात् परमात्माके भीतर ही आकाश आदि पंचमहाभूत पैदा हुवे और इस मानवीय पांचभौतिक शरीरके विभिन्न कोशरूप अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमयके क्रममें सबसे भीतर आनन्दमय परमात्मा बिराजमान रहता है, ऐसा माना गया है.

यों भारतीय आर्ष परंपरा न तो शरीरको धिक्कारती है और नहीं केवल शारीरिकताको ही हमारे अस्तित्वका प्रमुख रूप स्वीकारती है. हमारी शारीरिकताको हमारे अस्तित्वकी पूर्णता मानना अथवा केवल भौतिक विषयोंमें मिलते सुखको ही सर्वोपरि सुख मानना आर्ष दृष्टिकोणके अनुसार अज्ञानसे जन्य मनोवृत्ति होनेपर पशुतुल्यता है और आत्ममोहसे भरे होनेपर तो यह निश्चयेन आसुरी भाव है. हमारे अस्तित्वको उसकी संपूर्णता — आधिभौतिकता आध्यात्मिकता एवं आधिदैविकता — में स्वीकारना ही भारतके ऋषि-महर्षिओंके दृष्टिकोणकी व्यापकता है.

इस मूल मुद्देकी बातको समझ लेनेपर दैविक स्वरूपोंमें स्त्री-पुरुष आकारोंवाले शारीरिक भेद अथवा उन दैवी आकारोंके परस्पर प्रणय

या कलह के लीलाप्रसंगोंको पौराणिक गप्प (Myth) या मानवीय लौकिक कुण्ठाओंकी दैवीकरणद्वारा सन्तुष्टिकी विकृत मानसिकता मानना भी मूल आर्ष धारणाओंके साथ नितान्त अपरिचयका प्रकाशन है.

जागतिक अपूर्ण ऐश्वर्य, अपूर्ण सामर्थ्य, अपूर्ण सौन्दर्य, अपूर्ण ज्ञान या अपूर्ण वैराग्य की तरह अपूर्ण काम या अपूर्ण प्रेम की अपूर्णताको स्वीकार लेना एक बात है. यही अपूर्णता, परन्तु, हमारे भीतर परिपूर्ण ऐश्वर्य सामर्थ्य सौन्दर्य ज्ञान वैराग्य काम या प्रेम की अनुभूति प्राप्त करनेको प्रेरकबल भी बनती हैं, यह कभी भूलना नहीं चाहिए.

अतएव हमारे यहां आर्ष शास्त्रोंमें ब्रह्मके सृजनकारी दैविक पुरुषरूपको ब्रह्मा तो दैविक स्त्रीरूपको सरस्वती; अर्थात्, नूतन सृजनमें ज्ञानविज्ञानपूर्णता होनी अपेक्षित मानी गयी है. अन्यथा तो ज्ञान-विज्ञानके बिना सृजन आत्मविनाशका हेतु भी बन सकता है. ब्रह्मके पालनकारी दैविक पुरुषरूपको विष्णु तो दैविक स्त्रीरूपको लक्ष्मी; अर्थात्, पालनकारी स्वरूपका विष्णु=सर्वव्यापी होना तथा लक्ष्मी=धनधान्यपूर्ण होना आवश्यक माना गया है. ब्रह्मके संहारकारी दैविक पुरुषरूपके रुद्र होनेपर भी उसका अन्तिम प्रयोजन शंकर=कल्याणकारी होना तथा दैविक स्त्रीरूपको दुर्गा या काली अर्थात् दुर्गम कालजयी होना आवश्यक माना गया है. इसी तरह हमारे किसी भी उपक्रममें ब्रह्मके विघ्नहरणकारी दैविक रूपको गणपति तो दैविक स्त्रीरूपको ऋद्धि-सिद्धि होनेके रूपमें मान्य किया गया है. किसी भी उपक्रम या उद्यम में विघ्नवारणार्थ जैसे समृद्धि और सिद्धि अपेक्षित होती है; वैसे ही समृद्धि और सिद्धि का विघ्नरहित होना भी अपेक्षित होता है.

इसी तरह हमारे भीतर भरे कामभावका पुरुषरूप कामदेव तो प्रेमभावका स्त्रीरूप रतिदेवी के रूपमें स्वीकारा गया है. प्रणयकेलीमें

पुरुषका कामरहित होना तो स्त्रीका रति=प्रेमरहित होना प्रणयकेलीमें रसाभासजनक माना गया है.

हमारे यहां धर्म अर्थ काम और मोक्ष यों चारोंके पुरुषार्थ होनेकी स्वीकृति स्वयंमें इस बातका प्रबल प्रमाण है कि इन चारोंको एक-दूसरेसे विरोधी नहीं केवल विभिन्न ही माना जाता था. अतएव इनमें किसी भी एक पुरुषार्थके अतिरेककी मनोवृत्ति न केवल सामाजिक अस्वस्थता प्रत्युत आध्यात्मिक अस्वस्थता भी होती है. यही कारण है कि स्वयं परमात्मामें भी सृष्टि प्रकट करनेसे पहले कामभाव जगा था ऐसा ऋग्वेदमें कहा गया है. इसी कामभाववश उस एकाकी परमात्माने अपने-आपको दो स्त्री-पुरुषरूप भागोंमें विभक्त किया. वह दूसरा स्त्रीरूप रतिजनक था. यों सृष्टिके आरम्भमें ही काम और रति की सर्वप्रथम जो प्रणयकेली सम्पन्न हुई उससे यह सृष्टि प्रकट हुई. यह आधिदैविक काम आधिदैविक रति के बीच सम्पन्न हुई प्रणयकेली थी.

जो अनार्ष मनोवृत्तिवाले होते हैं उन्हें परमात्माके भीतर ऐसे काम-रतिके गुणधर्म होनेकी बात जुगुप्साजनक लगती है. परन्तु प्राणिओंके स्थूल शरीरके भीतर सूक्ष्म जीवकोशरूप शुक्र (sperm) और डिम्भ (ovum) में भी परस्पर काम और रति की प्रणयकेली न केवल पशु-पक्षी आदि प्राणिजगतमें भी अपितु वनस्पती जगत्में भी पायी जाती है. क्या उसे धर्म-अधर्म नीति-अनीति या पुण्य-पापके वर्गोंमें हम बांट पायेंगे? वस्तुतः तो रासायनिक अणु (chemical molecule) में भी धनविद्युदणु (positively charged cation) और ऋणविद्युदणु (negativily charged anion) के बीच भी जैविक नहीं परन्तु रासायनिक काम और रति के भावोंके व्यवहार होता ही है. इसे भी वर्ज्य या पापरूप माननेपर तो ऐसा विधान करनेवाले जैविक प्राणीको स्वयं अपने जैविक स्वरूप (biological form) को भी पापरूप स्वीकारना पड़ेगा!

इस परिप्रेक्ष्यमें आधिदैविक काम और रति के प्रति अपनी आधिभौतिक काम और रति के बारेमें पूर्वाग्रहग्रस्त वर्जनापूर्ण (inhibition) मूढ़तापर काबू पाना ही उपयुक्त होगा.

अतएव **''द्यौः पिता पृथ्वी माता''** का उद्घोष करनेवाला यजुर्वेद भी वर्षाद्वारा पृथ्वीको वनस्पतीगर्भा बनानेवाले द्यौका भौतिक पर्यावरणीय (ecological) कामभाव और पृथ्वीका रतिभाव ही प्रतिपादित करना चाहता है.

रसशास्त्रमें इस काम और रति के प्रणयको शृंगाररसात्मक माना गया है. शृंगाररसका रंग भी द्यौके जैसा नील माना गया है और इसका अधिदेव विष्णुको माना गया है. वैसे वेदमें 'राधस्' शब्द लक्ष्मीका वाचक है परन्तु वह लक्ष्मी भगवान् विष्णुके विविध अवतारोंमें यथायथ अनेक नामोंको धारण कर साथ ही साथ प्रकट होती है. अतएव भागवतपुराणमें भी **''निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणे रंस्यते नमः''** कहा गया है.

इन तथ्योंको दृष्टिगत करनेपर जयदेवके गीतगोविन्द काव्यमें राधामाधवकी प्रणयकेलीको सामान्य लौकिक काम-रतिके सीमित एवं क्षुद्र सन्दर्भमें देखनेके बजाय इस दिव्य गंभीर और व्यापक सन्दर्भमें देखनेपर ही इस महाकविके प्रति न्याय हो पाता है.

वे स्वयं अपने काव्यका रसात्मक मूल्यांकन करते हुवे कहते हैं कि उनकी काव्यभाषा 'मधुर' अर्थात् किसी दिव्य शृंगाररसके वर्णनार्थ है लौकिक शृंगाररसके नहीं **''श्रितकमलाकुचमण्डल धृतकुण्डल ए कलितललितवनमाल जय-जय देव! हरे! दिनमणिमण्डलमण्डन भवखण्डन ए मुनिजनमानसहंस जय-जय देव! हरे!''** .

ऐसे मधुरभावोंको अभिव्यक्त करनेको उन्होंने सहज ही कोमलध्वनि

प्रकट करते पदोंका विन्यास किया है. अर्थात् किसी भी तरहके हठात् आकृष्ट रूक्ष पदोंके चयनद्वारा नहीं प्रत्युत सहज कान्त अर्थात् कमनीय पदोंके प्रयोगद्वारा ही इस दिव्य शृंगारका वर्णन जयदेव करते हैं. यह तो जयदेवके गीतोंकी प्रथम पंक्ति **''ललित लवंग लता परिशीलन-कोमल मलय समीरे, मधुकर निकर करम्बित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे. हरिरिह विहरति सरस वसन्ते''** से ही स्पष्ट हो जाता है.

हम देख सकते हैं कि कितने प्रबल आत्मविश्वास और श्रीकृष्णके प्रति प्रगाढ़ भक्तिभावकी तन्मयतासे भरपूर वे कहते हैं कि संगीतगायनविद्यामें जो कुछ कौशल हो सकता है, जो कुछ भगवान् विष्णु या श्रीकृष्ण का अनुध्यान हो सकता है, जो कुछ शृंगाररसीय संयोग या विरह के मनोभावोंका सूक्ष्म चित्रण हो सकता है, वह सभी कुछ श्रीकृष्णमें नितान्त तल्लीन जयदेवके प्रस्तुत गीतगोविन्द काव्यके अनुशीलनमें प्राप्त हो जाता है!

पुष्टिभक्तिमार्गप्रवर्तक श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु और उनके पुत्र गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरण दोनोंको ही जयदेवके गीतगोविन्दसे कितना अधिक लगाव था, यह तो महाप्रभुके **''काव्यकथाअपि नीताः काव्योक्तप्रकारेण गीतगोविन्दोक्तन्यायेनापि रतिं कृतवान्''** (भाग.सुबो.१०।३०।२६). तथा गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथ प्रभुचरणद्वारा लिखी गई गीतगोविन्दकी व्याख्या भी उपलब्ध होती है. न केवल इतना प्रत्युत पुष्टिमार्गीय सेवाप्रणालीमें श्रीराम श्रीवामन और श्रीनृसिंह जयन्तीके अलावा वसन्त ऋतुमें भी जयदेवके पदोंका गायन इनके काव्यके प्रति अलौकिक लीलाके वर्णनकी पुष्टिभक्तिसम्प्रदायद्वारा प्रकट की गई स्वीकृति है.

उद्धृतवचनानुक्रमणिका

अंतःकरण मद्वाक्यं सावधानतया...	(अन्त.प्र.१-२)	३८६
अंशो नानाव्यपदेशात् ...	(ब्र.सू.२।३।४३)	३३५
अणोः अणीयान् महतो महीयान्...	(कठोप.२।२०)	१,१०४
अतः स्नेह पदार्थान्तरम्...	(सुबो.१।१९।१६)	२१८
अतः शिवश्च विष्णुश्च...	(बा.बो.११)	२२०
अत्ता हि अत्तनो नाथ को...	(धम्मप.१२।४)	१७३
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं...	(भग.गीता.१८।१४-१६)	१८०
अन्यकर्तृकापमानेऽपि न अहंकारं...	(त.दी.नि.प्र.२।२४१)	१५
अपरा इयम् इतस्तु अन्यां...	(भग.गीता.७।५)	१६०
अयुक्त प्राकृत स्तब्ध शठो...	(भग.गीता.१८।२८)	३४९
अर्थो अयमेव निखिलैरपि वेदवाक्यैः...	(त.दी.नि.१।१०४)	७६,४४२
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया...	(केनोप.११)	१७४
अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः...	(वि.धै.आ.११)	४०२
असन्नेव स भवति असद ब्रह्म...	(तैत्ति.उप.२।६)	१०५
अस्मत्कुलं निष्कलंकम्...	(ललि.त्रिभं.स्तो.१)	३८५
अहं कृत्स्नस्य जगत प्रभवः...	(भग.गीता.७।६-७)	१२३
अहं ब्रह्मास्मि...	(बृह.उप.१।४)	७३
अहंकार - विमूढात्मा 'कर्ताहम् ... '	(भग.गीता.३।२७)	१७८
अहंकारं बलं दर्पं कामं...	(भग.गीता.१६।१८)	१२२
अहम् अन्नम् अहम् अन्नम्!!...	(तैत्ति.उप.३।१०।६)	१२१
अहम् आत्मा आत्मनां धातः...	(भाग.पुरा.३।९।४२)	३३७
आत्मानन्दसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत् ...	(सि.मु.१६)	१७२,२७५
आत्मैव इदम् अग्र आसीत् पुरुषविधः...	(बृह.उप.१।४।१)	११३
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं...	(भग.गीता.६।३२)	१२२
आधिदैविकं लक्षयति...	(सुबो.३।२६।२५)	२७१

आनन्दांशस्तु पूर्वमेव तिरोहितः...	(ब्र.सू.भा.३।२।५)	१९३
आनन्दांशाभिव्यक्तौ तु तत्र...	(त.दी.नि.१।५४)	११८
आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात् ...	(तैत्ति.उप.३।६)	२३८
आविर्भावतिरोभावौ शक्ती वै...	(त.दी.नि.२।१४०)	१९२
इति श्रीकृष्णदासस्य वल्लभस्य हितं वचः...	(अन्त.प्र.१०)	३८६
इदम् एव इन्द्रियवतां फलं मोक्षोऽपि...	(सुबो.१०।१८।७)	१९०
इन्द्रादयो बाहवः आहुः उम्राः...	(भाग.पुरा.२।१।२९)	१३१
इमाम् अद्भि परिगृहीतां धनस्य...	(छान्दो.उप.३।११।६)	२२७
ईश्वर सर्वभूतानां हृद्देशे...	(भग.गीता.१८।६१-६२)	१२६,१६२
उत्कर्षश्च अपि वैराग्ये...	(सु.बो.१०।१८।२६)	१८६
उद्धरेद् आत्मना आत्मानं...	(भग.गीता.६।५)	१७३
ऋतामृताभ्यां जीवेत् तु मृतेन...	(मनु.स्मृ.४।४)	४२३
एतद् सिध्यर्थम् उपायम् आह...	(त.दी.नि.प्र.२।२४२)	४०७
एतेन भगवदर्थं निरूपधिस्वसर्वस्व...	(सि.मु.विवृति-२)	१९०
कर्तृत्वं कारणत्वं च कार्यत्वं...	(भाग.पुरा.३।२६।२६)	२७६
कर्तृत्वं प्राणीषु विद्यमान अहंकारस्य...	(सुबो.३।२६।२६)	२७६
काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः...	(भग.गीता.३।३७)	१७३
कामं क्रोधं भयं स्नेहम् ऐक्यं...	(भाग.पुरा.१०।२९।१५)	२०,२०४
कामात् क्रोधो अभिजायते...	(भग.गीता.२।६३)	१७३
कालेन हि गुणक्षोभे विकृतं...	(सुबो.३।२६।२३)	२६४,२६५
किन्तु अन्तर्भगवद्शक्तिरपि सार्वजनिका...	(सुबो.३।२६।२३)	२६९
कृष्णे सर्वात्मके नित्यं...	(त.दी.नि.२।२४१)	८
कृष्णसेवापरं वीक्ष्य दम्भादिरहितं...	(त.दी.नि.२।२२७)	७७
गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना...	(सि.र.८)	२१
गुर्वभावे गुरुपत्नीः तदभावे तत्पुत्रः...	(भाष्यप्रका.३।४।४७)	७८
चेष्टाम् आहु चेष्टते यस्य विश्वम् ...	(भाग.पुरा.१०।३।२६)	२६५
जगन्नाथे विट्ठले च श्रीरङ्गे...	(त.दी.नि २।२५९)	२२९
जलादिसेवानिर्वाह सेवकैः कार्यः...	(गुसां.पत्र)	३७७

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः...	(महा.भा.)	२०८
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा...	(भग.गीता.१८।१८)	३४७
ततः शंखा च भेर्य च पणवानकगोमुखाः...	(भग.गीता.१।१३)	२१६
तत्र पूजा (सेवा) त्यक्तव्या...	(त.दी.नि.प्र.२।२४७)	३७८
तत्र सद्रूपताम् आह-स्वच्छम् ...	(सुबो.३।२६।२१)	२६२
तत्रैव देवता-मूर्ति भक्त्या...	(सि.मु.७)	२६२
तत् सृष्टवा तदेव अनुप्राविशत् ...	(तैत्ति.उप.२।६)	१०७,१६१
तदभावे स्वयं वाऽपि मूर्तिं...	(त.दी.नि.२।२२८)	७७
तदाश्रय तदीयत्व बुद्ध्यै किञ्चित् ...	(बा.बो.१९)	२२०
तद् आत्मानमेव अवेद...	(बृह.उप.१।४।१०)	११७
तद्ध एके आहुः असदेव इदम् ...	(छान्दो.उप.६।२।१-२)	११३
तस्मादपि एतर्हि आमन्त्रितो...	(बृह.उप.१।४।१)	११६
तस्माद् मच्छरणं गोष्ठं...	(भाग.पुरा.१०।२५।१८)	१३०,१८८
त्रायते त्राति विश्वात्मा...	(त.दी.नि.२।१८४)	१६५
त्रिदुःखसहनं धैर्यम् ...	(वि.धै.आ.६)	३४२
त्रिविधा भवति श्रद्धा...	(भग.गीता.१७।२)	३४२
त्वं कुमार उत वा कुमारी !...	(ऋक्सं)	११४
त्वदुदितवचनाद् अन्यथा रूपयन्ति...	(वल्लभाष्टकम्-३)	३८५
दत्वा आज्ञां च कृपावलोकनपटुः...	(सुबो.मं.५)	३८६
दर्शनं स्पर्शनं स्पष्टं तथा कृतिगती...	(नि.ल.१७-१८)	१८३
दुःखहानौ तथा पापे भये...	(वि.धै.आ.१०।११)	३८२
दैवी ह्येषा गुणमयी मम...	(भग.गीता.७।१४)	१७३
धर्माधर्माग्रदर्शनम् ...	(वि.धै.आ.५)	३८०
धृत्युत्साह - समन्वित सिद्ध्यसिद्ध्योः...	(भग.गीता.२८।२६)	३५०
न अन्यद् आत्मनो अपश्यत् ...	(बृह.उप.१।४।१)	११६
न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं...	(भग.गीता.२।२०)	३३४
न पारये अहं निरवद्यसंयुजां...	(भाग.पुरा.१०।३२।२२)	१३१
न राज्यं न च राजा आसीत् ...	(महा.भा)	२१४,२१५

न स्त्री न षंडो न पुमान् न...	(भाग.पुरा.८।३।२४)	११५
नच त्वं नच अहं नच अयं प्रपंचः...	(दशश्लो.)	६८
नच मत्स्थानि भूतानि पश्य...	(भग.गीता.९।५)	१२३
नमो भगवते तस्मै कृष्णाय...	(त.दी.नि.१।१)	६३
नवा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं...	(बृह.उप.२।४।५, ४।३।२)	२१७
निष्ठाभावे फलं तस्माद् नास्त्येव...	(त.दी.नि.१।१८)	२७
प्रकृतिं स्वाम् अवष्टभ्य विसृजामि...	(भग.गीता.९।८)	१२४
प्रवाहेण क्रियारताः...	(पु.प्र.म.१५)	२३३
प्राकृतधर्मानाश्रयम् अप्राकृत-निखिलधर्मरूपमिति...	(सर्वो.१)	३८९
प्राप्तं सेवेत निर्ममः...	(वि.धै.आ.१५)	१७५
प्रेम्णो अन्यत् साधनं लोके नास्ति...	(त.दी.नि.२।३२६)	३६१
ब्रह्म इति परमात्मा इति...	(त.दी.नि.१।६)	११२
ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मा न शोचति...	(भग.गीता.१८।५४)	२५१
ब्राह्मणस्य ही देहो अयं क्षुद्रकामाय...	(भाग.पुरा.११।१७।४९)	४२३
भक्त्यभावेतु तीरस्थो यथा दुष्टैः...	(सि.मु.२०)	४०८
भगवतः सकाशाद् मानापेक्षां...	(त.दी.नि.प्र.२।२४१)	१६
भगवद् - रूप-सेवार्थं तत्सृष्टि नान्यथा...	(पु.प्र.म.१२)	३३३
भार्यादीनां तथान्येषाम् असतश्चाक्रमं सहेत्	(वि.धै.आ.७)	३९५
भूमिः आपो अनलो वायुः...	(भग.गीता.७।४-५)	१६०
मनसि स्वस्य दीनता भावनीया...	(त.दी.नि.प्र.२।२४२)	१४,४०६
मया ततम् इदं सर्वं जगद् ...	(भग.गीता.९।४)	१२३
महत्तत्त्वाद् विकुर्वाणाद् भगवद्वीर्यं...	(भाग.पुरा.३।२६।२३)	२६३
महत्-तत्त्वरूपमेव चित्तं तेन...	(सुबो.३।२६।२१)	२६३
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां...	(त.दी.नि.२।३०४)	१७३
मुक्तसंङ्गोनहंवादी...	(भग.गीता.१८।२६)	३४९
मुखाद् इन्द्रः च अग्निः च...	(ऋक्संहि.१०।९०।१३)	१३१
मृगा मृगै संगम् अनुव्रजन्ति...	(सुभा.)	३७९
यं-यं वापि स्मरन् भावं त्यजति...	(भग.गीता.८।६)	४१६

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते...	(तैत्ति.उप.३।१)	९९,१०४
यत्र येन यतो यस्य यस्मै...	(त.दी.नि.१।६९)	२७४
यत् संकल्पविकल्पाभ्याम् ...	(सुबो.३।२६।२७)	३०६
यथा आकाशस्थितो नित्यं वायुः...	(भग.गीता.९।६)	१२३
यथा-यथा हरिः कृष्णो...	(त.दी.नि.२।२४०)	८,९,११
यदा कृष्ण रोचते तदैव...	(सुबो.१।६।२७)	१८७
यदा ह्येव एतस्मिन् अदृश्ये...	(तैत्ति.उप.२।७)	१२०
यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः...	(चतु.३)	९
यद् अहंकारम् आश्रित्य ...	(भग.गीता.१८।५९)	१२२,३२७
या प्रीतिः अविवेकानां विषयेषु...	(विष्णु.पुरा.१।२०।१९)	१७७
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तान्...	(भग.गीता.४।११)	१३९
ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके...	(कठोप.१।१।२५)	२२५
यो अन्तः प्रविश्य मम वाचि...	(भाग.पुरा.४।९।६)	१५
यो अयम् वरो गूढम् अनुप्रविष्टः...	(कठोप.१।१।२९)	२२५
यो आध्यात्मिकोयं पुरुषः...	(भाग.पुरा.२।१०।८)	२६०
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं...	(भग.गीता.६।३०)	११८
वर्णाश्रमवतां धर्मे मुख्ये नष्टे...	(त.दी.नि.२।२२३-२१५)	४२०
वस्तुत कृष्णएव...	(वल्लभाष्टकम् - ८)	३८५
वासुदेवाविर्भावस्थानत्वात् ...	(सुबो.३।२६।२१)	२५४,२५७
विक्षेपाद् अथवा अशक्त्या प्रतिबन्धादपि...	(त.दी.नि.२।२४७)	३७८
विच्छिन्नतया न तिष्ठति...	(त.दी.नि.२।१०१)	२५९
विद्याया पञ्च पर्वाणि...	(त.दी.नि.१।४५)	१७४
विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः...	(वि.धै.आ.१)	३४२
विशुद्धसत्त्वं तव धाम शान्तं...	(भाग.पुरा.१०।२४।४)	२३७
विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः...	(सं.नि.६)	२२४
वैकारिकः सात्त्विकः...	(सुबो.३।२६।२४)	२७०
शरणं गृहरक्षित्रोः...	(अम.को.३।५।२४-४०)	१८९
श्रवणं कीर्तनं विष्णोः ...	(भाग.पुरा.७।५।२३)	१८५

श्रवणादिकर्तृणामपि हृदि इदानीं...	(आ.भं.२।२४०)	४०५
षड्भिः संपद्यते धर्मः...	(त.दी.नि.२।२१४)	२८१
स एकाकी न रमते ...	(बृह.उप.१।४।३)	१४९
स 'भूः' इति व्याहरत् सेयं...	(.बृह.उप.१।४।१-५)	१५९
स वै नैव रेमे... स द्वितीयम् ऐच्छत् ...	(बृह.उप.१।४।३)	८८
सएव परमकाष्ठापन्नः ...	(त.दी.नि.१।१)	१२९
सच्चिदानन्दरूपेषु पूर्वयोर...	(त.दी.नि.१।२९)	१६४
सति चिदानन्दधर्मयो तिरोभावः...	(त.दी.नि.प्र.१।२९)	१६४
सत्यं ज्ञानम् अनन्तं ब्रह्म...	(तैत्ति.उप.२।१)	६२,९०
समो अहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्यो...	(भग.गीता.९।२९)	१२५,४०९
सर्वं खलु इदं ब्रह्म...	(छान्दो.उप.६।।)	१२८
सर्वएव आत्मन व्युच्चरन्ति...	(बृह.उप.२।१।२०)	३३५
सर्वथा तद्गुणालापं नामोच्चारणमेव...	(त.दी.नि.२।२४२)	१६
सर्वथा सर्वत्र भगवद् उत्कर्षवर्णने पूर्वोक्तं...	(त.दी.नि.प्र.२।२४२)	४०८
सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः...	(चतुश्लो.१)	११२
सर्वभूतस्थितं यो मां भजति...	(भग.गीता.६।३१)	११९
सर्वभूतानि... प्रकृतिं यान्ति...	(भग.गीता.९।७)	१२४
सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य...	(श्रीकृष्णशरणाष्टकम्)	१७५
सर्वस्य च अहं हृदि सन्निविष्टो...	(भग.गीता.१५।१५)	१६३
सर्वोऽपि आत्मनो भावः...	(सुबो.१०।४४।२७)	१९०
सेवनं स्वयोग्यानुसारेण न तु अल्पं...	(त.दी.नि.प्र.२।३१६)	१८९,३७७
सो अनुवीक्ष्य न अन्यद् ...	(बृह.उप.१।४।१)	११५,२००
सो 'अहम् अस्मि' इति अग्रे व्याहरत् ...	(बृह.उप.१।४।१)	११५,१५९
स्वभावतो अयं तामसः प्रलयकर्ता च...	(सुबो.३।२६।२५)	२७५
स्वरूपस्थो यदा जीवः कृतार्थः...	(बा.बो.७)	२०५